अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ज़ाइल और पाकीज़ा ज़िन्दगी पर मुश्तमिल मदनी फूलों से मा'मूर एक जामेअ़, मुदल्लल व तख़रीज शुदा किताब

FAIZANE FAROOQE AA'ZAM, JILD-1 (HINDI)

फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

(पैदाइश से शहादत तक, इलावा ख़िलाफ़त) जिल्द अव्वल



शो'बए फ़ैज़ाने सहाबा व अहले बैत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ؕ اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : *ऐ* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।*

(المُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी इस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो ***मक्तबतुल मदीना*** *से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस '**अल मदीनतुल इल्मिय्या**' ने येह किताब '**उर्दू**' ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का '**हिन्दी' रस्मुल ख़त़** (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (Translation) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (Transliteration) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि (लिखाई) **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

किताब के हिन्दी **लीपियांतर** में क़रीबुस्सौत़ (या'नी मिलती झुलती आवाज़ वाले) ह़ुरूफ़ के आपसी इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस ह़ुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है जिस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **तराजिम चार्ट** का बग़ौर मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए Sms, E-mail या Whats App ब शुमूल सफ़ह़ा व सत़र नम्बर) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

नोट : इस्लामी बहनों को किसी भी त़रह़ से राबित़ा करने की इजाज़त नहीं है।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ का लीपियांतर ख़ाका

ا = अ	ب = ब	بھ = भ	پ = प	پھ = फ	ت = त	تھ = थ
ٹ = ट	ٹھ = ठ	ث = स	ج = ज	جھ = झ	چ = च	چھ = छ
ح = ह़	خ = ख़	د = द	دھ = ध	ڈ = ड	ڈھ = ढ	ذ = ज़
ر = र	ڑ = ड़	ڑھ = ढ़	ز = ज़	ژ = ज़	س = स	ش = श
ص = स़	ض = ज़	ط = त़	ظ = ज़	ع = अ़	غ = ग़	ف = फ़
ق = क़	ک = क	کھ = ख	گ = ग	گھ = घ	ل = ल	م = म
ن = न	و = व	ہ = ह	ی = य	آ = आ	ؤ = ु	ئ = ी

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, ☎ 09327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ

के फ़ज़ाइल और पाकीज़ा ज़िन्दगी पर मुश्तमिल मदनी फूलों से

मा'मूर एक जामेअ़, मुदल्लल व तख़रीज शुदा किताब

फै़ज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म

﴾जिल्द अव्वल, पैदाइश से शहादत तक, इलावा ख़िलाफ़त﴿

-: पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

शो'बए फै़ज़ाने सह़ाबा व अहले बैत

नाशिर

मक्तबतुल मदीना, देहली

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ الله وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ الله

नाम किताब : फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म (जिल्द अव्वल)
(पैदाइश से शहादत तक, इलावा ख़िलाफ़त)

पेशकश : शो'बा फ़ैज़ाने सहाबा व अहले बैत (मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

तब़ाअ़ते अव्वल : ज़िल क़ा'दतिल ह़राम, सिने 1437 हिजरी

ता'दाद : 1100

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 29 जुमादल उख़रा 1435 हि. हवाला नम्बर : 189

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْنَ

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

"फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म" (उर्दू)

(जिल्द अव्वल, पैदाइश से शहादत तक, इलावा ख़िलाफ़त)

(**मत़बूआ़ : मक्तबतुल मदीना**) पर मजलिस तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे मत़ालिब व मफ़ाहीम के ए'तिबार से मक्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم
مجلس
تفتیش کتب و رسائل
فیضان مدینہ پرانی سبزی منڈی باب المدینہ کراچی

मजलिस तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
(दा'वते इस्लामी)
02-03-2014

E - mail : ilmiapak@dawateislami.net
www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी

उ़नवान	सफ़्हा

उ़नवान	सफ़्हा

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "14 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ : मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (معجم کبیر، یحیی بن قیس، ج٦، ص١٨٥، حدیث:٥٩٤٢)

दो मदनी फूल :

.....बिगै़र अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

.....जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई अ़रबी इ़बारत पढ़ लेने से इन निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾6﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा ﴾8﴿ कु़रआनी आयात और ﴾9﴿ अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴾10﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ ﴾11﴿ और जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा ﴾12﴿ इस ह़दीसे पाक "تَهَادَوْا تَحَابُّوْا" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। ﴾موطا امام مالک ج٢ ص٤٠٧ حدیث ١٧٣١﴿ पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा ﴾13﴿ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। ﴾14﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी तौ़र पर मुत्तलअ़ करूंगा। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

(नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बता देना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّ حِیۡم ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡكَ یَارَسُوۡلَ اللّٰہِ

अबवाबे फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म (जिल्द अव्वल)

इजमाली फे़हरिस्त

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صلّى الله تعالىٰ عليه واٰله وسلّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और **इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त** को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये **मुतअ़द्दिद मजालिस** का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम** كثّرھم اللہ تعالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत ﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब

﴾3﴿ शो'बए इस्लाह़ी कुतुब ﴾4﴿ शो'बए तराजुमे कुतुब

﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब ﴾6﴿ शो'बए तख़रीज

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** علیہ رحمۃ الرحمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम **इस्लामी भाई** और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عزّوجلّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए । اٰمین بجاہِ النّبیِّ الاَمین صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 **हिजरी**

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

गुफ़्तार व किरदार के ह़क़ीक़ी गाज़ी

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان वोह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या हैं जिन्हों ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रुख़े रौशन से अपनी आंखों को ठन्डा किया, आप की रफ़ाक़त व सोह़बत का ला ज़वाल शरफ़ ह़ासिल किया, दीने ह़क़ को फैलाने, इस्लाम को सर बुलन्द करने के लिये इन के अ़ज़ीमुश्शान कारनामे क़ुव्वते ईमानी के ऐसे रौशन चराग़ हैं जो क़ियामत तक आने वाले इन्सानों को कामयाबी का सीधा रास्ता दिखाते रहेंगे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इन ह़क़ीक़ी आ़शिक़ों ने राहे ह़क़ में जो मसाइबो आलाम बरदाश्त किये उन्हें पढ़ कर जिस्म पर कपकपी त़ारी हो जाती है, उन्हों ने दीने मतीन की सरबुलन्दी के लिये हर मैदान में ऐसी बे मिसाल क़ुरबानियां दीं कि उन का इजतिमाई व इनफ़िरादी किरदार मुसलमानों के लिये मनारए नूर बन गया। शरफ़े सह़ाबिय्यत तो तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में मुश्तरक था, मगर उन के मरातिब में फ़र्क़ है, येह फ़र्क़ उन के ज़मानए क़बूले इस्लाम, बारगाहे नबवी में तक़र्रुब और बा'ज़ दूसरे ख़साइल व फ़ज़ाइल की बिना पर है, सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सब पर फ़ज़ीलत अ़त़ा फ़रमाई और ख़ुद सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने विसाल के वक़्त सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "इलाही मैं ने तेरी मख़्लूक़ पर रूए ज़मीन के सब से बेहतर इन्सान को ख़लीफ़ा बनाया।"

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुरादे रसूल थे, आप का क़ल्ब अन्वारे इलाही से रोशन था, शम्ए़ रिसालत से रौशनी पाने के बा'द वोह ख़ुद भी मम्बए़ नूर व हिदायत (रोशनी व हिदायत का सर चश्मा) बन गए थे, आप की बसीरत व दानिश जहां अ़क़्ल व ख़िरद को शादाबी और ताज़गी बख़्शती थी वहीं आप की फ़ह्मो फ़िरासत उन वाक़िआत व ह़क़ाइक़ का भी इदराक कर लेती थी जो मुस्तक़बिल के पर्दों में छुपे होते थे, सच और झूट की पहचान करने में महारते ताम्मा रखते थे, आप ने अपनी ज़ात को अ़मल के सांचे में इस त़रह़ ढाला था कि आप के अख़्लाक़ व किरदार तरबिय्यती

दुरूस की हैसिय्यत इख़्तियार कर गए थे, आप की जुरअत व बहादुरी, आ़जिज़ी व सादगी, हिम्मत व मर्दानगी, बुलन्द ह़ौसला व इस्तिक़ामत, दियानत व अमानत, ज़िहानत व फ़त़ानत और इनाबत व ख़शिय्यत (तौबा व ख़ौफ़े ख़ुदा) की मिसालें तारीख़ के सफ़ह़ात पर इस त़रह़ चमक रही हैं कि इन्हें देख कर आंखें चुन्धया जाएं।

शादी बियाह के मुआ़शरती मुआ़मलात, औलाद की मदनी तरबिय्यत, अहले ख़ाना के ह़ुक़ूक़ की पासदारी, अ़ज़ीज़ों व दीगर रुफ़क़ा के साथ मिलन सारी, इ़ज़्ज़त दारों की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त, एह़सासे ज़िम्मेदारी और रिआ़या की ख़बर गीरी, ग़ुलामों से ह़ुस्ने सुलूक और उन के ह़ुक़ूक़ की निगह दाश्त, ग़ैर मुस्लिम रिआ़या के ह़ुक़ूक़ की ज़मानत, ख़वातीन के मसाइल व मुश्किलात से बा ख़बरी और इन तमाम मसाइल के ह़ल में मदद व तआ़वुन, बच्चों में घुल मिल कर अपने साथ मानूस कर लेना, बैतुल माल का बेहतरीन निज़ाम, रियासत में अ़द्लो मुसावात का क़ियाम, ज़ुल्म व तशद्दुद की रोक थाम, ज़ालिमों व लुटेरों के एह़तिसाब का एहतिमाम, बे ज़बान जानवरों पर भी ह़द दरजा मेहरबान, क़ुरआनो सुन्नत की ता'लीमात और इन की तरवीज का बेहतरीन इन्तिज़ाम, सख़्ती के वक़्त ऐसी शिद्दत कि दरयाओं के दिल दहल जाएं, हिलती ज़मीन साकिन हो जाए, शैत़ान अपना रास्ता तब्दील कर दे और पहाड़ कांप उठें मगर नर्मी के वक़्त ऐसी नर्मी कि रेशम भी शर्मसार हो जाए, कमज़ोरों और बे कसों के सामने ह़ौसला पैदा करने वाली आ़जिज़ी व इन्किसारी, ज़ुल्मो जफ़ा के मुक़ाबले पर सलाबत (पुख़्तगी), अहले इ़ल्म व तक़्वा की इ़ज़्ज़त व तौक़ीर, अहले शर व फ़साद की बैख़ कनी, मश्वरा देने में जुरअत व सराह़त, इजतिमाई फ़ैसला क़बूल करने में कामिल वुस्अ़त, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से ऐसी क़वी उम्मीद कि अपने ही नफ़्स को जन्नत की नवीद, मगर उसी रब عَزَّوَجَلَّ के क़ह्‌रो जलाल व अ़ज़ाब से ऐसे लर्ज़ां व तर्सां कि अपने ही नफ़्स को जहन्नम की वईद, शहरी, मुल्की और बैनल अक़्वामी क़ानून साज़ी के बयक वक़्त माहिर व उस्ताज़। अल ग़रज़ हर मौज़ूअ़ पर "**सीरते फ़ारूके़ आ'ज़म**" एक ह़सीन मुरक़्क़अ़ है।

आप की ज़ाते मुबारका में भी इन्सानी ख़्वाहिशात मौजूद थीं मगर आप की अ़ज़मत येह थी कि न तो भूक की सूरत में कोई ना पसन्दीदा फे़'ल सादिर होता न ख़्वाहिशात की तक्मील में जल्दी फ़रमाते, ग़ुस्से में भी कभी ख़ौफ़े ख़ुदा से आ़री न होते, ख़ुशी में कभी यादे ख़ुदा से ग़ाफ़िल न पाए गए।

ख़लीफ़ा की हैसिय्यत से आप ने अपने अ़द्लो इन्साफ़, ज़ोह्दो तक़्वा, मरदम शनासी, तवाज़ोअ़, सादगी, अरबाबे कमाल की क़द्रदानी, ख़ैर ख़्वाहिये ख़ल्क़, इसाबते राए से मुजाहिदीन और आ़म्मतुल मुस्लिमीन की मुहय्यिरुल उ़क़ूल (अ़क़्ल को हैरान करने वाली) क़ियादत व रहनुमाई की ऐसी मिसाल क़ाइम की, कि आज भी मुस्लिम मुमालिक व रियासतों के हुक्मरान उन से सबक़ सीख कर कामयाबी व कामरानी की राह पर गामज़न हो सकते हैं। वाक़ेई आप رضی اللہ تعالٰی عنہ **"गुफ़्तार व किरदार के ह़क़ीक़ी ग़ाज़ी"** थे।

हर इन्सान दुन्या में दो बातों की बड़ी फ़िक्र करता है एक रिज़्क़ की, दूसरा ज़िन्दगी की। ह़ालांकि रिज़्क़ का ज़िम्मा खुद **अल्लाह** عزوجل ने ले लिया और मौत का वक़्त भी मुतअ़य्यन फ़रमा दिया। रिज़्क़ जितना क़िस्मत में लिखा है वोह ज़रूर मिल कर रहेगा और मौत जिस लम्हे आनी है आ कर रहेगी, न एक लम्हा आगे हो सकती है और न पीछे। दुन्या में कितने ही मालदार लोग हैं जिन को बे चैनी व बे इत़्मीनानी के सिवा कुछ ह़ासिल नहीं और कितने ही फ़क़ीर हैं जो इत़्मीनाने क़ल्ब से माला माल हैं। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने ज़िन्दगी के हर हर मुआ़मले में तरबिय्यत का ह़कीमाना उस्लूब और दिल नशीन अन्दाज़ इख़्तियार फ़रमाया। आज मुसलमान जिस सूरते ह़ाल से दोचार हैं उस के लिये **"सीरते फ़ारूक़े आ'ज़म"** इक्सीर की हैसिय्यत रखती है। काश ! तमाम मुसलमान सीरते फ़ारूक़ी पर अ़मल करने वाले बन जाएं।

या रब दिले मुस्लिम को वोह ज़िन्दा तमन्ना दे
जो क़ल्ब को गर्मा दे जो रूह़ को तड़पा दे
इस दौर की ज़ुल्मत में हर क़ल्बे परेशां को
वोह दाग़े मह़ब्बत दे जो चांद को शर्मा दे
बे लौस मह़ब्बत हो बे बाक सदाक़त हो
सीने में उजाला कर दिल सूरते मीना दे

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म" के बारे में

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" के शो'बे "**फ़ैज़ाने सह़ाबा व अहले बैत**" ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सीरते त़य्यिबा पर काम करने का बीड़ा उठाया। अव्वलन "**अ़शरए मुबश्शरा**" की सीरत पर काम शुरूअ़ किया गया। अ़शरए मुबश्शरा में से चारों ख़ुलफ़ाए राशिदीन के इ़लावा बक़िय्या छे सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सीरते त़य्यिबा पर काम की तक्मील के बा'द ख़लीफ़ए अव्वल, यारे ग़ार, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते त़य्यिबा बनाम "**फ़ैज़ाने सिद्दीके़ अक्बर**" पर काम करने की सई़ की और कमो बेश छे माह के क़लील अ़र्से में इस मुबारक किताब की तक्मील हो गई। بِحَمْدِاللّٰہِ تَعَالٰی इस किताब को तवक़्क़ोआ़त से बढ़ कर पज़ीराई मिली, मुख़्तलिफ़ इस्लामी भाइयों, मुबल्लिग़ीन व वाइ़ज़ीन, अइम्मा व मुअज़्ज़िनीन, ख़ुत़बा व प्रोफ़ेसर ह़ज़रात, उ़लमाए किराम व मुफ़्तियाने उ़ज़्ज़ाम की त़रफ़ से कसीर मक्तूब (ख़ुत़ूत़) मौसूल हुवे जिन में इस किताब के मवाद, तरतीब, तख़रीज, व त़बाअ़त वग़ैरा मुख़्तलिफ़ उमूर को सराहा गया। नीज़ कई लोगों की त़रफ़ से सिलसिलए "**फ़ैज़ाने अ़शरए मुबश्शरा**" की आइन्दा आने वाली किताब "**फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म**" का भी मुत़ालबा किया गया। वाज़ेह़ रहे कि किसी शै के मुत़ालबे के बा'द उस की अहम्मिय्यत में मज़ीद इज़ाफ़ा हो जाता है। येही वज्ह है कि "**फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म**" पर फ़िलफ़ौर काम शुरूअ़ कर दिया गया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" आ़लमी मे'यार की एक इ़ल्मी व तह़क़ीक़ी मजलिस है, इस की मुख़्तलिफ़ कुतुब दुन्या भर में आ़म हो रही हैं, इस के काम करने का इ़ल्मी व तह़क़ीक़ी अन्दाज़ उ़लमाए अहले सुन्नत की कुतुब को चार चांद लगा देता है, येही वज्ह है कि अ़वामो ख़वास बे शुमार लोग इस की मत़बूआ़ कुतुब पर ए'तिमाद करते हैं। मुअल्लिफ़ीन व मुसन्निफ़ीन इस बात से ब ख़ूबी आगाह हैं कि किसी भी ऐसे मौज़ूअ़ पर किताब लिखना या मुरत्तब करना जिस पर पहले ही से कई कुतुब लिखी जा चुकी हों एक मुश्किल काम है। लेकिन पहले से लिखी गई किताबों की ख़ूबियों और दीगर तमाम उमूर को सामने रखते हुवे जदीद दौर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ उसी मौज़ूअ़ पर एक नई किताब, इ़ल्मी व तह़क़ीक़ी त़र्ज़ पर मुरत्तब की जाए तो उस की इफ़ादिय्यत बढ़ जाती है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते त़य्यिबा बनाम "**फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म**" पर इसी अन्दाज़ में काम करने की सई़ की गई और कमो बेश बारह माह के क़लील अ़र्से में दो जिल्दों पर मुश्तमिल येह ज़ख़ीम किताब मुकम्मल की गई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस किताब पर शो'बए **"फ़ैज़ाने सहाबा व अहले बैत"** (अल मदीनतुल इल्मिय्या) के तीन इस्लामी भाइयों **अबू फ़राज़ मुहम्मद ए'जाज़ अत्तारियुल मदनी, नासिर जमाल अत्तारियुल मदनी** और **वली मुहम्मद अत्तारियुल मदनी** سَلَّمَهُمُ اللهُ الْغَنِی ने काम करने की सआदत हासिल की है। इस किताब पर अव्वल ता आख़िर कमो बेश 12 मुख़्तलिफ़ मराहिल में काम किया गया है जो इस किताब की खुसूसिय्यात में शुमार किये जा सकते हैं, तफ़्सील कुछ यूं है :

﴾1﴿.....मवाद जम्अ करने का मर्हला

तालीफ़ व तस्नीफ़ दोनों के लिये अव्वलन मवाद की मौजूदगी बहुत ज़रूरी है, जब तक मवाद मौजूद न हो किसी भी किताब को मुरत्तब नहीं किया जा सकता। **"फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म"** के मवाद के हवाले से दर्जे ज़ैल उमूर को पेशे नज़र रखा गया :

- .....अरबी, उर्दू और फ़ारसी तीनों तरह की मुख़्तलिफ़ कुतुब के इलावा ख़ास "सीरते फ़ारूक़े आ'ज़म" पर लिखी गई मश्हूरो मा'रूफ़ कुतुब को भी सामने रखा गया है नीज़ बा'ज़ कुतुब की अदम दस्तयाबी के सबब उन के मतबूआ कम्प्यूटर नुस्ख़े इन्टरनेट से भी डाउन लोड किये गए हैं।
- .....**"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** की कुतुब से मवाद के लिये मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या और मजलिसे आई टी की मुश्तरका पेशकश "अल मदीना लाइब्रेरी" सॉफ़्टवेर से मदद ली गई है।"
- .....अरबी मवाद के लिये मुख़्तलिफ़ मतबूआ अरबी कुतुब के इलावा अरबी कुतुब के कम्प्यूटर सॉफ़्टवेर्ज़ से भी मदद ली गई है।
- .....सीरते फ़ारूक़े आ'ज़म के हवाले से मश्हूरो मा'रूफ़ मगर मुस्तनद वाक़िआत को लिया गया है।
- .....जिस मक़ाम से मवाद लिया गया फ़क़त उसी मक़ाम पर इक्तिफ़ा नहीं किया गया बल्कि उस मवाद के अस्ली माख़ज़ कुतुबे अहादीस, शुरूहे हदीस, कुतुबे तफ़ासीर, कुतुबे सियर व तारीख़ व फ़िक़्ह वग़ैरा तक पहुंचने की हत्तल मक़्दूर कोशिश की गई है।
- .....जदीद दौर के तक़ाज़ों के मुताबिक़ इन्टरनेट के ज़रीए मुख़्तलिफ़ वेब साइट से भी मवाद लिया गया है।
- ....."सीरते फ़ारूक़े आ'ज़म" के हवाले से लिखे गए मुख़्तलिफ़ मज़ामीन (Articles) से भी मदद ली गई है।
- .....मवाद जम्अ करते वक़्त इस बात का खुसूसी ख़याल रखा गया है कि मौज़ूअ व मन घड़त रिवायात से एहतिराज़ किया जाए, नीज़ मवाद जम्अ करने के बा'द तख़्रीज करते वक़्त भी इस बात का खुसूसी ख़याल रखा गया है।

《2》.....जम्अ़ शुदा मवाद की तरतीब व उस्लूब

किसी भी किताब की अहम्मिय्यत और उस के मुसन्निफ़ या मुअल्लिफ़ की तस्नीफ़ी या तालीफ़ी सलाहिय्यत का अन्दाज़ा उस किताब की तरतीब व उस्लूब से होता है कि मुसन्निफ़ ने मौज़ूअ़ के ए'तिबार से मवाद को मुरत्तब किया है या नहीं ? "**फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म**" में मवाद की तरतीब व उस्लूब के ह़वाले से दर्जे ज़ैल उमूर को पेशे नज़र रखा गया :

❁.....اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** का एक इ़ल्मी व तह़क़ीक़ी शो'बा है, इस की किताबों को उ़लमाए किराम, मुफ़्तियाने उ़ज़्ज़ाम के इलावा चूंकि आ़म इस्लामी भाई भी कसरत से पढ़ते हैं इसी लिये इस किताब की तरतीब में तह़क़ीक़ी व इस्लाह़ी दोनों असालीब को पेशे नज़र रखा गया है।

❁....."**फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म**" को मुरत्तब करते हुवे मुश्किल और पेचीदा अल्फ़ाज़ से एह़तिराज़ करते हुवे आ़म फ़ह्म ज़बान इस्ति'माल की गई है। अलबत्ता जहां ज़रूरतन इस्त़िलाह़ात या मुश्किल अल्फ़ाज़ ज़िक्र किये गए हैं वहां हिलालैन "(......)" में उन का तर्जमा या तस्हील कर दी गई है।

❁.....सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सीरते त़य्यिबा को बयान करने का मुआ़मला निहायत ही ह़स्सास और एक तेज़ धार वाली तल्वार पर चलने के मुतरादिफ़ है जिस में छोटी सी ग़लत़ी किसी बड़े नुक़्सान का सबब भी बन सकती है, येही वज्ह है कि "**फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म**" समेत इ़ल्मिय्या की तमाम कुतुब में अदबो एह़तिराम से भरपूर इन्तिहाई मोह़तात़ ज़बान का इल्तिज़ाम किया जाता है।

❁.....सीरत को बयान करने के कई उस्लूब हैं : (1) तारीख़ के ए'तिबार से (2) वाक़िआ़त के ए'तिबार से (3) ह़ालाते ज़िन्दगी के ए'तिबार से (4) और मुख़्तलिफ़ अबवाब बना कर मुकम्मल ह़यात को बयान करना वग़ैरा। "**फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म**" में सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى की मश्हूर किताब "तारीखुल ख़ुलफ़ा" का उस्लूब या'नी "**मुख़्तलिफ़ अबवाब बना कर मुकम्मल ह़यात को बयान करना**" इख़्तियार किया गया है।

❁.....मवाद को मुरत्तब करते हुवे मुख़्तलिफ़ रिवायात व वाक़िआ़त के तह़्त इस्लाह़ी मदनी फूल भी पेश किये गए हैं।

❁.....जिस रिवायत या वाक़िए से कोई अ़क़ीदए अहले सुन्नत साबित होता है तो उस की निशान देही भी की गई है।

❁.....बा'ज़ जगह इख़्तिलाफ़ी अक़्वाल को बयान करने के साथ साथ उन में मुत़ाबक़त भी ज़िक्र कर दी गई है।

❁.....मवाद को मुरत्तब करते हुवे इस बात का ख़ास इल्तिज़ाम किया गया है कि किताब इ़ल्मी व तह़क़ीक़ी मवाद से भरपूर हो, फ़क़त़ सुर्ख़ियां (Headings) लगाने पर इक्तिफ़ा नहीं किया गया।

❁.....रिवायात व वाक़िआ़त को बयान करते हुवे ह़त्तल मक़्दूर इस बात की कोशिश की गई है कि क़ारी (या'नी किताब पढ़ने वाले) का ज़ौक़ व शौक़ बर क़रार रहे।

❁.....अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के अस्माए मुबारका के साथ दुआ़इय्या कलिमात का इल्तिज़ाम किया गया है।

❁.....उ़लमाए किराम, वाइ़ज़ीन व ख़ुत़बा ह़ज़रात के लिये मुख़्तलिफ़ रिवायात व वाक़िआ़त में मख़्सूस जुम्लों की अ़रबी इ़बारत मअ़ तर्जमा भी ज़िक्र कर दी गई है।

❁.....इस बात का ख़ास ख़याल रखा गया है कि जो बात जिस बाब से तअ़ल्लुक़ रखती है उसी बाब में ज़िक्र की जाए।

❁.....बा'ज़ जगहों पर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मन्सूब ग़लत़ बातों की निशान देही भी की गई है।

❁.....अगर किसी रिवायत या वाक़िए का तअ़ल्लुक़ चन्द अबवाब से है तो एक बाब में उसे तफ़्सीली बयान कर के दीगर अबवाब में इजमालन बयान किया गया है नीज़ बा'ज़ जगह तफ़्सीली वाक़िए वाले सफ़ह़े की त़रफ़ इशारा भी कर दिया गया है।

❁.....कई मक़ामात पर तह़क़ीक़ी व वज़ाह़ती, मुफ़ीद और ज़रूरी ह़वाशी भी लगाए गए हैं।

❁.....रावियों के अस्मा और दीगर कई मुश्किल अल्फ़ाज़ पर ए'राब का भी इल्तिज़ाम किया गया है नीज़ बा'ज़ पेचीदा अल्फ़ाज़ का तलफ़्फ़ुज़ भी बयान कर दिया गया है।

❁.....रिवायात बयान करने में अह़ादीस को तरजीह़ दी गई है ब सूरते दीगर मुस्तनद कुतुबे तारीख़ को इख़्तियार किया गया है।

❁.....मुख़्तलिफ़ अबवाब के शुरूअ़ में तम्हीदी कलिमात भी ज़िक्र किये गए हैं ताकि उस बाब के तह़त आने वाले उमूर की अहम्मिय्यत व इफ़ादिय्यत क़ारी पर वाज़ेह़ हो सके।

❁.....अ़वाम में मश्हूर ऐसे वाक़िआ़त या अक़्वाल जो हमें किसी मुस्तनद किताब में नहीं मिले उन्हें शामिल नहीं किया गया।

❁.....बसा औक़ात ऐसा भी होता है कि मुख़ात़ब को कोई बात ज़बानी कलामी समझ में नहीं आती लेकिन उसी बात को नक़्शा बना कर समझाया जाए तो फ़ौरन समझ में आ जाती है, नक़्शा बना कर बात को समझाना ख़ुद ह़दीसे मुबारका से साबित है।[1] येही वज्ह है कि **फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म** में बा'ज़ मक़ामात पर अहम उमूर की वज़ाह़त के लिये मुख़्तलिफ़ नक़्शे और चन्द मक़ामात की तसावीर भी दी गई हैं।

❁.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ह़याते त़य्यिबा के हर हर गोशे से मुतअ़ल्लिक़ कई कई रिवायात और वाक़िआ़त मिलते हैं लेकिन ज़ख़ामत के पेशे नज़र चीदा चीदा अहम रिवायात व वाक़िआ़त को ही लिया गया है।

﴾3﴿.....अ़रबी इ़बारात का तर्जमा

अ़रबी या फ़ारसी वग़ैरा कुतुब से मवाद ले कर उसे बि ऐ़निही उसी मफ़्हूम पर उर्दू ज़बान में ढालना एक बहुत बड़ा फ़न और निहायत ही मुश्किल अम्र है, मुतर्जिमीन के लिये इस में बहुत एह़तियात़ की ह़ाजत है कि बसा औक़ात तर्जमा करते हुवे नफ़्से मफ़्हूम ही तब्दील हो जाता है। "**फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म**" में अ़रबी व फ़ारसी इ़बारात के तर्जमे के ह़वाले से दर्जे ज़ैल उमूर को पेशे नज़र रखा गया :

❁.....अ़रबी व फ़ारसी इ़बारात में लफ़्ज़ी तर्जमे के बजाए मफ़्हूमी तर्जमा किया गया है।

❁.....तर्जमा करते वक़्त इस बात का ख़ास लिहाज़ रखा गया है कि नफ़्से मस्अला में कोई तग़य्युर वाक़ेअ़ न हो।

❁.....रिवायात व अह़ादीस का तर्जमा करते हुवे उ़लमाए अहले सुन्नत के तराजिम को भी सामने रखा गया है।

❁.....तर्जमा करते वक़्त शुरूह़ व लुग़ात की त़रफ़ भी रुजूअ़ किया गया है।

❁.....अह़ादीस व रिवायात के तर्जमे में त़वील सनद बयान करने के बजाए फ़क़त़ आख़िरी रावी के ज़िक्र पर इक्तिफ़ा किया गया है नीज़ बा'ज़ मक़ामात पर एक ही मौज़ूअ़ की मुख़्तलिफ़ रिवायात को भी ज़रूरतन बयान किया गया है।

❁.....दौराने तर्जमा मुश्किल मक़ामात पर "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" के शो'बे "तराजिमे कुतुब" के माहिर मुतर्जिमीन मदनी उ़लमाए किराम से भी मुशावरत की गई है।

---

1 ......بخاری، کتاب الرقاق، باب الامل وطوله، ج ۴، ص ۲۲۴، حدیث: ۶۴۱۷۔

﴾4﴿.....अ़रबी इ़बारात का तक़ाबुल

इ़बारत को ग़लती से मह़फ़ूज़ करने के लिये इस का तक़ाबुल करना (या'नी जिस अस्ल किताब से वोह इ़बारत ली गई है उस के मुत़ाबिक़ करना) बहुत ज़रूरी है, बा'ज़ औक़ात ऐसा भी होता है कि नक़्ल दर नक़्ल एक ग़लती आगे मुन्तक़िल होती रहती है लेकिन जब उस के अस्ल माख़ज़ की त़रफ़ रुजूअ़ किया जाता है तो वहां वोह इ़बारत मौजूद ही नहीं होती या मन्क़ूला इ़बारत के मुत़ाबिक़ नहीं होती। येह ग़लती उ़मूमन तक़ाबुल न करने और फ़क़त़ "नक़्ल" पर ए'तिमाद करने से वाक़ेअ़ होती है। "**फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म**" में अ़रबी इ़बारात के तक़ाबुल के ह़वाले से दर्जे ज़ैल उमूर को पेशे नज़र रखा गया है :

- .....अ़रबी कुतुब से जो तर्जमा किया गया है उस का अस्ल किताब से इन्तिहाई एह़तियात़ के साथ तक़ाबुल किया गया है।
- .....अगर किसी इ़बारत के तर्जमे में उर्दू किताब से मुआ़वनत ली गई है तो उस का अस्ल अ़रबी किताब से भी बिल इस्तीआ़ब तक़ाबुल कर लिया गया है।
- .....इ़बारत ज़िक्र करने के बा'द जिस किताब का ह़वाला दिया गया है उसी किताब से तक़ाबुल किया गया है।
- .....कुरआनी आयात और उन के तर्जमे का भी अस्ल नुस्ख़े से तक़ाबुल कर लिया गया है।

﴾5﴿.....अ़रबी इ़बारात की तफ़्तीश

कम्प्यूटर टेक्नोलोजी से जहां पूरी दुन्या में एक ह़ैरत अंगेज़ इन्क़िलाब आया है वहीं कुतुब की त़बाअ़त में भी उस ने अहम किरदार अदा किया है। कम्प्यूटर से पहले किताबें हाथ से लिखी जाती थीं जिन में वक़्त बहुत लगता था लेकिन जैसे ही कम्प्यूटर आया इस से मुसन्निफ़ीन व नाशिरीन को सब से बड़ा फ़ाइदा येह ह़ासिल हुवा कि क़लील वक़्त में कसीर कुतुब की त़बाअ़त होने लगी। लेकिन वाज़ेह़ रहे कि इस का एक नुक़्सान येह भी ज़ाहिर हुवा कि प्रुफ़ रीडिंग की अग़लात़ पहले की ब निस्बत अब ज़ियादा होने लगीं हैं। येही वज्ह है कि बा'ज़ औक़ात मुख़्तलिफ़ कम्प्यूटराइज़ कुतुब के जदीद और क़दीम नुस्ख़ों की इ़बारतों में भी काफ़ी फ़र्क़ आ जाता है। इस फ़र्क़ को वाज़ेह़ या दूर करने के लिये क़दीम नुस्ख़ों की मदद से अ़रबी इ़बारात की तफ़्तीश की जाती है। "**फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म**" में

भी मवाद को तरतीब देते वक़्त कई ऐसी इ़बारतें सामने आईं जिन में मुख़्तलिफ़ नुस्ख़ों की वज्ह से इख़्तिलाफ़ पाया गया लिहाज़ा उन इ़बारतों की रिवायत व दिरायत दोनों ए'तिबार से क़दीम नुस्ख़ों (मख़्तूतात) की मदद से तफ़्तीश की गई और फिर मुशावरत से दुरुस्त इ़बारत को ले लिया गया नीज़ उस इ़बारत का ह़वाला देते हुवे उस नुस्ख़े की वज़ाह़त भी कर दी गई है।

﴾6﴿.....इ़बारात की तख़्रीज

साबिक़ा अदवार में लोग ह़ुसूले इ़ल्म के लिये लम्बे लम्बे सफ़र तै़ करते थे, अह़ादीस की अस्नाद वग़ैरा पर उन्हें ऐसी महारत होती कि अगर किसी के सामने कोई ह़दीस सह़ीह़ सनद के साथ किताब का ह़वाला बयान किये बिग़ैर ज़िक्र कर दी जाती तो वोह फ़ौरन समझ जाता, लेकिन जूं जूं लोग इ़ल्म से दूर होते गए बिग़ैर ह़वाले के कोई बात करना दुश्वार होता गया। बा'ज़ औक़ात ह़वाले के बिग़ैर बयान कर्दा सह़ीह़ रिवायात को भी लोग कम इ़ल्मी की बिना पर रद कर देते हैं नीज़ कम इ़ल्मी की बिना पर बा'ज़ लोगों ने कई मौज़ूअ़ व मन घड़त रिवायात को भी बयान करना शुरूअ़ कर दिया लिहाज़ा आज के दौर में कोई भी ह़दीसे मुबारका, सह़ाबी का फ़रमान, बुज़ुर्ग का क़ौल या कोई भी रिवायत बिग़ैर मुस्तनद ह़वाले के बयान करना ख़त़रे से ख़ाली नहीं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **"फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म"** में भी मुख़्तलिफ़ आयाते मुबारका, अह़ादीसे मुबारका, अक़्वाले सह़ाबए किराम व बुज़ुर्गाने दीन वग़ैरहा की तख़ारीज का इल्तिज़ाम किया गया है। तख़ारीज के ह़वाले से दर्जे ज़ैल उमूर को पेशे नज़र रखा गया है :

- .....अ़रबी किताब की अ़रबी और उर्दू किताब की उर्दू रस्मुल ख़त़ में तख़्रीज दी गई है अलबत्ता अ़रबी कुतुब में उन के अस्ल और त़वील अ़रबी नाम के बजाए मा'रूफ़ और मुख़्तसर नाम दिये गए हैं।
- .....तख़्रीज में किताब का मुकम्मल ह़वाला (किताब, बाब, फ़स्ल, नौअ़, रक़मुल ह़दीस, जिल्द और सफ़ह़ा वग़ैरा के साथ) इस त़रह़ दिया गया है कि पढ़ने वाला बा आसानी उस मक़ाम तक पहुंच सकता है।
- .....तख़्रीज करते हुवे जिन कुतुब का ह़वाला दिया गया है, मौज़ूआ़त के ए'तिबार से उन के अस्मा, शहरे त़बाअ़त, मुसन्निफ़ीन के अस्मा ब ए'तिबार तारीख़े वफ़ात की तफ़्सील आख़िर में "फ़ेहरिस्त माख़ज़ो मराजेअ़" में दे दी गई है।

۞.....अगर किसी वज्ह से एक किताब के दो मुख़्तलिफ़ मत़्बूआ़ नुस्ख़ों का ह़वाला दिया गया है तो उन दोनों नुस्ख़ों की निशान देही भी आख़िर में कर दी गई है।

۞.....दो मुसन्निफ़ीन की एक ही नाम वाली कुतुब में ग़ैर मश्हूर किताब के साथ मुसन्निफ़ की वज़ाह़त कर दी गई है मसलन : ''सुनने कुब्रा'' नाम से दो किताबें हैं : एक इमाम बैहक़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की और दूसरी इमाम नसाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की। **''फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म''** में जहां मुत़्लक़न, ''सुनने कुब्रा'' लिखा होगा वहां इमाम बैहक़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की किताब मुराद होगी जब कि इमाम नसाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की किताब का ह़वाला देते हुवे नाम की सराह़त कर दी गई है।

۞.....तख़्रीज में किसी भी किताब का ऐसा ह़वाला दर्ज नहीं किया गया जो हमारे पास किसी भी ह़वाले से मौजूद न हो।

۞.....**''फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म''** में अह़ादीस, सियर व तारीख़ व फ़िक़्ह वग़ैरा सेंकड़ों कुतुब से मवाद लिया गया है लेकिन बत़ौरे तख़्रीज व माख़ज़ अक्सर अ़रबी व मुस्तनद उर्दू कुतुब ही को लिया गया है।

۞.....**''फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म''** (जिल्द अव्वल) में कमो बेश 1500 तख़्रीज की गई हैं।

﴾7﴿.....मुश्किल इबारात की तस्हील

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **''अल मदीनतुल इल्मिय्या''** की मुख़्तलिफ़ कुतुब उ़लमाए अहले सुन्नत की कुतुब से ही माख़ूज़ होती हैं, क़दीम उर्दू के सबब बा'ज़ औक़ात इन कुतुब में ऐसे मुश्किल मक़ामात भी आ जाते हैं जिन की तस्हील करना निहायत ज़रूरी होता है। **''फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म''** में भी मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर उ़लमाए अहले सुन्नत की कुतुब से मुख़्तलिफ़ इक़्तिबासात ज़िक्र किये गए हैं, क़ारिईन की आसानी के लिये मुश्किल इबारात की तस्हील भी हिलालैन ''(......)'' में कर दी गई है। तस्हील के लिये उ़लमाए अहले सुन्नत ही की कुतुब की त़रफ़ रुजूअ़ किया गया है।

﴾8﴿.....किताब की प्रुफ़ रीडिंग

''प्रुफ़ रीडिंग'' किसी भी किताब को लफ़्ज़ी, मा'नवी, किताबत वग़ैरा की ग़लत़ियों से मह़फ़ूज़ रखने का एक बेहतरीन अ़मल है, कुरआने पाक के इ़लावा अगर्चे कोई भी किताब ग़लत़ियों से मुबर्रा (मह़फ़ूज़) नहीं हो सकती लेकिन किसी किताब में ग़लत़ियों की कसरत उस की प्रुफ़ रीडिंग न होने की त़रफ़ इशारा है। **''फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म''** की कमो बेश 11 बार प्रुफ़ रीडिंग की गई है :

❁ मवाद जम्अ़ करते वक़्त कम्पोज़िंग के बा'द। ❁ किताब को मुरत्तब करने के बा'द। ❁ मुरत्तब शुदा मवाद की तख़रीज के दौरान। ❁ अ़रबी या उर्दू इ़बारात के तक़ाबुल के वक़्त। ❁ अग़लात़ की तस्ह़ीह़ करने के बा'द। ❁ "तन्ज़ीमी मुफ़त्तिश" की त़रफ़ से तफ़्तीश के साथ। ❁ "शरई़ मुफ़त्तिश" की त़रफ़ से दौराने तफ़्तीश। ❁ तन्ज़ीमी व शरई़ तफ़्तीश की अग़लात़ की तस्ह़ीह़ के बा'द। ❁ मक्तबतुल मदीना पर त़बाअ़त के लिये भेजने से क़ब्ल फ़ाइनल फ़ोरमेशन के बा'द। ❁ कोरल ड्रो पर मुकम्मल किताब की पेस्टिंग के बा'द। ❁ इ़ल्मिय्या के फ़ाइनल प्रुफ़ रीडर से कोरल ड्रो पर मुकम्मल किताब की पेस्टिंग के बा'द भी पूरी किताब की बिल इस्तीआ़ब (मुकम्मल लफ़्ज़ ब लफ़्ज़) प्रुफ़ रीडिंग की गई है।

﴾9﴿.....किताब की फ़ोरमेशन

किताब की बेहतरीन त़बाअ़त भी क़ारी के ज़ौक़े मुत़ालआ़ में इज़ाफ़े का एक बहुत बड़ा सबब है, बेहतर त़बाअ़त के साथ साथ अगर किताब के अबवाब वग़ैरा की अह़सन अन्दाज़ में फ़ोरमेशन की जाए तो किताब का ज़ाहिरी हुस्न मज़ीद निखर जाता है। "**फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म**" की फ़ोरमेशन के ह़वाले से दर्जे ज़ैल उमूर को पेशे नज़र रखा गया है :

❁.....इ़बारत के मआ़नी व मफ़ाहीम समझने के लिये "अ़लामाते तरक़ीम" का ख़ास एहतिमाम किया गया है।

❁.....कई मक़ामात पर एक ही मौज़ूअ़ के तह़त आने वाली मुख़्तलिफ़ बातों की नम्बरिंग कर दी गई है।

❁.....जली सुर्ख़ियों (Main Headings) और ख़फ़ी सुर्ख़ियों (Sub Headings) में इम्तियाज़ करते हुवे अ़लाह़िदा अ़लाह़िदा रस्मुल ख़त़ में लिखा गया है।

❁.....अ़रबी इ़बारात को ए'राब समेत अ़रबी रस्मुल ख़त़ "क़मर" में लिखा गया है ताकि क़ारी ए'राबी ग़लत़ी से मह़फ़ूज़ रहे जब कि फ़ारसी इ़बारत को "नस्ख़" फ़ोन्ट में लिखा गया है ताकि अ़रबी और फ़ारसी दोनों में इम्तियाज़ रहे।

❁.....आ़म अ़रबी के इ़लावा दुआ़इय्या अ़रबी इ़बारात का रस्मुल ख़त़ भी जुदा रखा गया है ताकि किताब पढ़ने वाले इस्लामी भाई इन दुआ़ओं को बा आसानी याद कर सकें।

❁.....आयाते मुबारका ख़ूब सूरत कुरआनी रस्मुल ख़त़ और मुनक़्क़श ब्रेकेट ﴿......﴾ में दी गई हैं।

❁.....तमाम दुआइय्या इबारात का रस्मुल ख़त **"अल मुस्हफ़"** रखा गया है।

❁.....मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआनी को हिलालैन "(.....)" में लिखा गया है।

❁.....तख़ारीज का रस्मुल ख़त अ़रबी, उर्दू व फ़ारसी इबारत से जुदा रखा गया है।

❁.....हर बाब के शुरूअ़ में एक अ़लाहिदा सफ़्हा दिया गया है जिस में बाब नम्बर, बाब का नाम और इस के तह़्त आने वाले तमाम मौज़ूआ़त की तफ़्सील दी गई है, नीज़ बाब का नाम तमाम मुतअ़ल्लिक़ा सफ़्हात के ऊपर भी दे दिया गया है।

❁.....किताब की इजमाली व तफ़्सीली दोनों त़रह़ की फ़ेहरिस्तें बनाई गईं हैं, इजमाली फ़ेहरिस्त में तमाम अबवाब और इन के तह़्त आने वाली जली सुर्ख़ियों (Main Headings) को ज़िक्र किया गया है, जब की तफ़्सीली फ़ेहरिस्त में अबवाब और जली सुर्ख़ियों समेत तमाम ख़फ़ी सुर्ख़ियों (Sub Headings) को भी ज़िक्र किया गया है नीज़ इजमाली फ़ेहरिस्त किताब के शुरूअ़ में और तफ़्सीली फ़ेहरिस्त आख़िर में दी गई है।

❁.....इस किताब में ह़याते फ़ारूक़े आ'ज़म को कमो बेश 300 जली सुर्ख़ियों (Main Headings) और 1100 ख़फ़ी सुर्ख़ियों (Sub Headings) के ज़रीए निहायत ही अह़सन अन्दाज़ में बयान किया गया है।

❁.....इस किताब को दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के मदनी उ़लमाए किराम دَامَتْ فُيُوْضُهُم ने शरई ह़वाले से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है।

﴾10﴿.....फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म की दो जिल्दें

शो'बा **फ़ैज़ाने सह़ाबा व अहले बैत** में अव्वलन अ़शरए मुबश्शरा में से चारों ख़ुलफ़ाए राशिदीन के इलावा बक़िय्या छे सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सीरते त़य्यिबा पर काम मुकम्मल किया गया जो छे मुख़्तलिफ़ रसाइल की सूरत में छोटे सफ़्हे (A5) पर था। **फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर** पर भी अव्वलन छोटे सफ़्हे ही में काम शुरूअ़ किया गया लेकिन देखते ही देखते सफ़्हात की ता'दाद एक हज़ार 1000 से तजावुज़ कर गई लिहाज़ा इसे बड़े सफ़्हे (A4) में तब्दील कर दिया गया जो कमो बेश सात सो बीस 720 सफ़्हात बन गए। **फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर** के बा'द जब **फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म** पर काम शुरूअ़ किया गया तो येही ख़याल था कि इस मुबारक किताब के भी ज़ियादा से ज़ियादा आठ सो 800 बड़े सफ़्हात (A4) बनेंगे, लेकिन मवाद जम्अ़ करने, मुरत्तब करने और

तख़रीज करने के बा'द ज़ाहिर हुवा कि **फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म** फ़ाइनल होने के बा'द कमो बेश उन्नीस सौ[1900] सफ़हात पर मुश्तमिल होगी। यक़ीनन नाशिरीन के लिये इतनी ज़ख़ीम किताब की जिल्द बन्दी (Binding) करना, इल्मी ज़ौक़ रखने वालों के लिये इसे ख़रीदना और इस की हिफ़ाज़त करना एक मुश्किल अम्र है। येही वज्ह है कि **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या** और **शो'बा फ़ैज़ाने सहाबा व अहले बैत** की मुश्तरका मुशावरत से **फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म** को दो जिल्दों में (मुख़्तलिफ़ अबवाब बना कर) तक़्सीम कर दिया गया।

फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म (जिल्द अव्वल) की अबवाब बन्दी

फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म (जिल्द अव्वल) में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की पैदाइश से ले कर विसाल तक (इलावा ख़िलाफ़त) मुकम्मल ह़याते त़य्यिबा, फ़ज़ाइल व दीगर उमूर को बित्तफ़्सील बयान किया गया है, जब कि दूसरी जिल्द में मुकम्मल ख़िलाफ़ते फ़ारूक़े आ'ज़म को तफ़्सील से बयान किया गया है। जिल्द अव्वल उन्नीस[19] अबवाब पर मुश्तमिल है जिन की तफ़्सील कुछ यूं है :

۞.....पहला बाब, तआ़रुफ़े फ़ारूक़े आ'ज़म

नामो नसब, कुन्यत व अल्क़ाबात और उन की वुजूहात, पैदाइश, जाए परवरिश व रिहाइश, जिस्मानी औसाफ़ का बयान, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुख़्तलिफ़ मुबारक अन्दाज़, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म का बचपन, जवानी, ज़मानए जाहिलिय्यत की ज़िन्दगी, क़बूले इस्लाम से क़ब्ल मुख़्तलिफ़ सलाहि़य्यतें और ज़रीअ़ए मआ़श वग़ैरहा।

۞.....दूसरा बाब, ख़ानदाने फ़ारूक़े आ'ज़म

वालिदैन का तआ़रुफ़, अज़्वाज और इन से होने वाली औलाद की तफ़्सील, बेटों और बेटियों का तआ़रुफ़, भाइयों और बहनों का तआ़रुफ़, ग़ुलामों और दीगर ख़ादिमों का तआ़रुफ़, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रिश्तेदारी, अहले बैत से रिश्तेदारी, पाको हिन्द के चन्द अकाबिरे फ़ारूक़ी बुज़ुर्गों का तआ़रुफ़।

۞.....तीसरा बाब, औसाफ़े फ़ारूक़े आ'ज़म

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की आजिज़ी, इन्किसारी, हि़ल्म व बुर्दबारी, सख़ावत, राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का बयान, आप की बा कमाल फ़िरासत व मुआ़मला फ़हमी का बयान,

इता़अ़ते बारी तआ़ला, नमाज़, रोज़ा, ए'तिकाफ़ व दीगर आ'माल का बयान, ख़ौफ़े ख़ुदा, दुन्या से बे रग़बती, फ़िक्रे आख़िरत, ह़क़ गोई, सदाक़त, हैबत, जलाल, इत्तिबाए़ सुन्नत का बयान, बद मज़्हबों से किनारा कशी, मरीज़ों की इ़यादत, लवाह़िक़ीन से ता'ज़िय्यत का बयान, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुख़्तलिफ़ उ़लूमो फ़ुनून का बयान, आप की क़ुरआन फ़ह्मी, मरवी तफ़्सीर, मरवी मुख़्तलिफ़ अह़ादीसे मुबारका।

۞.....चौथा बाब, मल्फ़ूज़ाते फ़ारूके़ आ'ज़म

मुख़्तलिफ़ इस्लाह़ी मदनी फूलों पर मुश्तमिल मदनी गुलदस्ते, मुख़्तलिफ़ नसीह़त आमोज़ ख़ुत़बात का बयान, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस्लाह़ी, सियासी, फ़लाह़ी व समाजी मक्तूबात (ख़ुत़ूत़) का बयान, मुख़्तलिफ़ इस्लाह़ी नसीह़तों व वसिय्यतों का बयान, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मन्क़ूल मुख़्तलिफ़ दुआ़एं।

۞.....पांचवां बाब, फ़ारूके़ आ'ज़म अ़ह्दे रिसालत में

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाहे नबवी व बारगाहे सिद्दीक़ी से तरबिय्यत, आप की फ़ज़ाइल में इनफ़िरादिय्यत, फ़ज़ाइल में शिराकत, आप का इ़ल्मी ज़ौक़ो शौक़, मिज़ाज शनासे रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, मुशीरे बारगाहे रिसालत व मदीनए मुनव्वरा के आ़मिले सदक़ात, ह़ज्जतुल वदाअ़ में रफ़ाक़ते रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, अ़ह्दे रिसालत में फ़ारूक़ी फ़ैसले, बारगाहे रिसालत में मदनी मुकालमे, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सय्यिदुना उवैसे क़रनी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मुलाक़ात।

۞.....छटा बाब, फ़ारूके़ आ'ज़म का क़बूले इस्लाम

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़बूले इस्लाम में मुआ़विन चन्द वाक़िआ़त, क़बूले इस्लाम के मुख़्तलिफ़ वाक़िआ़त, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चालीसवें मुसलमान, उन्तालीस अस्ह़ाब के अस्माए मुबारका, आप की क़ुव्वते ईमानी और दज्जाल, आप का इज़्हार व ए'लाने इस्लाम, आप के क़बूले इस्लाम से तक़्विय्यते इस्लाम व मुस्लिमीन।

۞.....सातवां बाब, फ़ारूके़ आ'ज़म का इ़श्के़ रसूल

येह सातवां बाब मज़ीद दर्जे ज़ैल चार ज़िमनी अबवाब पर मुश्तमिल है।

(1) रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात से मह़ब्बत :

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का अ़क़ीदए मह़ब्बत, **रसूलुल्लाह** की नाराज़ी का ख़ौफ़, **रसूलुल्लाह** की इत़ाअ़त, बारगाहे रिसालत का अदबो एह़तिराम, फ़ज़ाइले फ़ारूके़ आ'ज़म, आप की अफ़्ज़लिय्यत, मुह़द्दस होना, उख़रवी शाने मुबारका, बारगाहे रिसालत से अ़त़ाकर्दा बिशारतें, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म फ़ितनों का ताला और जहन्नम से बचाने वाले हैं, आप पर रब عَزَّوَجَلَّ का ख़ुसूसी करम, आप से मह़ब्बत व बुग़्ज़ रखने का सिला।

(2) रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की औलाद व दीगर अक़रबा से मह़ब्बत :

ह़सनैने करीमैन (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا), मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم), सय्यिदतुना फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا, सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ, बनी हाशिम, अज़्वाजे मुत़ह्हरात व उम्महातुल मोमिनीन से अ़क़ीदत व मह़ब्बत।

(3) रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब से मह़ब्बत :

सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ व दीगर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان व उ़श्शाक़ाने रसूल से मह़ब्बत, शाने फ़ारूके़ आ'ज़म ब ज़बाने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان शाने फ़ारूके़ आ'ज़म ब ज़बाने मौला अ़ली शेरे ख़ुदा, ब ज़बाने सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास, ब ज़बाने सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा, ब ज़बाने सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मसऊ़द। (رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن)

(4) रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मन्सूबात से मह़ब्बत :

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहरे मक्कए मुकर्रमा, मदीनए मुनव्वरा से उल्फ़त व मह़ब्बत, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मसाजिद से मह़ब्बत, मस्जिदे ह़राम की तौसीअ़, मस्जिदे नबवी के ता'मीरी काम, मसाजिद को आबाद करने का ख़ुसूसी एहतिमाम, ह़जरे अस्वद से कलाम, इस्लाम में निस्बत की बहारों का तफ़्सीली बयान।

❁.....आठवां बाब, हिजरते फ़ारूके़ आ'ज़म

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और हिजरते ह़बशा, हिजरते मदीना, हिजरते मदीना का अनोखा अन्दाज़, हिजरत का तफ़्सीली नक़्शा, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के रफ़ीके़ हिजरत व मदनी क़ाफ़िला, बा'दे हिजरत मदीनए मुनव्वरा में रिहाइश व रिश्तए मुवाख़ात, बा'दे हिजरत बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी का मा'मूल, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मश्वरे से मुअज़्ज़िन का तक़र्रुर।

۞.....नवां बाब, फ़ारूक़े आ'ज़म के ग़ज़्वात व सराया

ग़ज़्वात व सराया की ता'रीफ़, इल्मुल मग़ाज़ी की अहम्मिय्यत, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ग़ज़्वात, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के ग़ज़्वात, ग़ज़्वए बद्र, ग़ज़्वए उहुद, ग़ज़्वए बनु नज़ीर, ग़ज़्वए बदरुल मौइद, ग़ज़्वए बनु मुस्तलिक़, ग़ज़्वए ख़न्दक़, ग़ज़्वए हुदैबिया, ग़ज़्वए ख़ैबर, ग़ज़्वए फ़त्हे मक्का, ग़ज़्वए हुनैन, ग़ज़्वए ताइफ़, ग़ज़्वए तबूक और इन तमाम ग़ज़्वात में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को हासिल होने वाले फ़ज़ाइल, आप की जंगी मुहिम्मात का बयान।

۞.....दसवां बाब, फ़ारूक़े आ'ज़म और विसाले रसूलुल्लाह

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मुतअ़ल्लिक़ ह़दीसे क़िरत़ास की नफ़ीस वुजूहात, आप की मदनी सोच व बा कमाल फ़िरासत, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आख़िरी नमाज़ें, सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का नसीह़त आमोज़ ख़ुत़बा, बारगाहे रिसालत में शैख़ैने करीमैन (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) का सलाम, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी पर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के दर्दनाक जज़्बात, आप के सदमे की कैफ़िय्यत।

۞.....ग्यारहवां बाब, फ़ारूक़े आ'ज़म अ़ह्दे सिद्दीक़ी में

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और बैअ़ते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का नसीह़त आमोज़ ख़ुत़बा, सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के वज़ीर व मुशीर, लश्करे उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के बारे में आप की गुफ़्त्गू, अ़ह्दे सिद्दीक़ी में मदीनए मुनव्वरा के क़ाज़ी, जम्ए क़ुरआन में आप का अ़ज़ीमुश्शान किरदार, सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और ख़िलाफ़ते फ़ारूक़े आ'ज़म।

۞.....बारहवां बाब, करामाते फ़ारूक़े आ'ज़म

करामत की ता'रीफ़ और इस की अक़्साम, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ज़ाहिरी व मा'नवी करामात का बयान, सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की अ़ज़्मतो शान, शराबी मुअज़्ज़िन कैसे बना.......?

۞.....तेरहवां बाब, शाने फ़ारूके आ'ज़म में नाज़िल कर्दा आयात

सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शाने मुबारका में नाज़िल होने वाली 20 आयाते मुबारका की तफ़्सील, वोह आयात जो मुत़लक़न आप की फ़ज़ीलत में वारिद हुईं, वोह आयात जो शैख़ैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) दोनों के ह़क़ में नाज़िल हुईं, वोह आयात जो सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ साथ दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के ह़क़ में भी नाज़िल हुईं।

۞.....चौदहवां बाब, मुवाफ़िक़ाते फ़ारूके आ'ज़म

किताबुल्लाह और सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुवाफ़िक़त, आप की मुवाफ़िक़त में कुरआने पाक की इक्कीस आयात का तफ़्सीली बयान, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से आप की मुवाफ़िक़त, सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका से मदद त़लब करने का अ़क़ीदा, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की त़रफ़ से आप की मुवाफ़िक़त, आप की दीगर मुवाफ़िक़त का बयान।

۞.....पन्द्रहवां बाब, ख़ुसूसिय्याते फ़ारूके आ'ज़म

ख़ास्सा की ता'रीफ़, सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की 23 ख़ुसूसिय्यात, क़बूले इस्लाम, हिजरत, ह़क़ व सदाक़त, नुज़ूले आयात के ए'तिबार से ख़ुसूसिय्यात, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सूरए बक़रह की तफ़्सीर कितने अ़र्से में पढ़ी....?

۞.....सोलहवां बाब, अव्वलिय्याते फ़ारूके आ'ज़म

सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की 64 अव्वलिय्यात का बयान, ज़ाती अव्वलिय्यात, मज़हबी अव्वलिय्यात, फ़लाह़ी अव्वलिय्यात, इदारती अव्वलिय्यात, मआ़शी अव्वलिय्यात, जंगी अव्वलिय्यात और उख़रवी अव्वलिय्यात।

۞.....सत्तरहवां बाब, विसाले फ़ारूके आ'ज़म

सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत की दुआ़, आप की शहादत पर लोगों की इत्तिलाअ़, अपनी शहादत की ख़बर ख़ुद दे दी, आप पर क़ातिलाना ह़म्ला, आप के अख़ीर अय्याम के मुबारक मुआ़मलात, शहादत से क़ब्ल वसिय्यतें, नए ख़लीफ़ा के तक़र्रुर के लिये मजलिसे शूरा का

क़ियाम, आप की शहादत, गुस्ल, तक्फ़ीन, नमाज़े जनाज़ा व तदफ़ीन के मुआ़मलात, आप की शहादत के असरात, **फ़ैज़ाने मज़ाराते सलासा**, तीनो क़ुबूरे मुबारका की तफ़्सील व अहम मा'लूमात ।

۞.....अट्ठारहवां बाब, शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने औलियाए उम्मत

शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना इमामे जा'फ़र सादिक़, ब ज़बाने सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन, ब ज़बाने सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी, ब ज़बाने सय्यिदुना इमाम मालिक, ब ज़बाने सय्यिदुना इमाम सिराज तूसी, ब ज़बाने सय्यिदुना आ'ला ह़ज़रत, ब ज़बाने बरादरे आ'ला ह़ज़रत, ब ज़बाने मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी (رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने अमीरे अहले सुन्नत (دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

۞.....उन्नीसवां बाब, शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने मुस्तशरिक़ीन

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की ज़ाते मुबारका के बारे में ग़ैर मुस्लिमों व मग़रिबी मुमालिक के मश्हूरो मा'रूफ़ मुबस्सिरीन के तअस्सुरात ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन तमाम कोशिशों के बा वुजूद इस किताब में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ता, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की इनायत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शफ़्क़तों का नतीजा हैं और जो ख़ामियां हों उन में हमारी कोताह फ़ह्मी को दख़्ल है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ है कि वोह **दा'वते इस्लामी** की तमाम मजालिस ब शुमूल **''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** को मज़ीद बरकतें अ़ता फ़रमाए, और ह़क़ीक़ी मा'नों में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم की पैरवी करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए ।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰی عليه واٰله وسلَّم

शो'बा फ़ैज़ाने सह़ाबा व अहले बैत

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी)

पहला बाब

तआ़रुफ़े फ़ारूक़े आ'ज़म

इस बाब में मुलाहज़ा कीजिये..................

- .....मदीनए मुनव्वरा की एक सर्द रात, एक तारीख़ी और अ़ज़ीमुश्शान वाक़िआ़
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का नसब, नामे नामी इस्मे गिरामी
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत और उस की वुजूहात
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अल्क़ाबात और उन की वुजूहात
- .....फ़ारिक़, फ़ारूक़, फ़ारूक़ी और फ़ारूक़े आ'ज़म के मआ़नी
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की पैदाइश और जाए परवरिश
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का हुस्ने ज़ाहिरी
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुबारक अन्दाज़
- .....ज़मानए जाहिलिय्यत की ज़िन्दगी, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का बचपन
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की जवानी, कारोबार व ज़रीअ़ए मआ़श

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

एक बार **शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ज़ाए ह़ाजत के लिये बाहर तशरीफ़ ले गए, लेकिन उस दिन कोई भी आप के साथ न था। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने देखा तो घबरा कर उठे और पानी का एक मश्कीज़ा ले कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे रवाना हो गए, क्या देखते हैं **सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक छप्पर के नीचे बारगाहे इलाही में सजदा रैज़ हैं। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه पीछे हट कर एक त़रफ़ खड़े हो गए। जैसे ही **ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सजदे से सर उठाया तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की त़रफ़ देखा और इरशाद फ़रमाया :

اَحْسَنْتَ يَا عُمَرُ حِيْنَ وَجَدْتَّنِيْ سَاجِدًا فَتَنَحَّيْتَ عَنِّيْ اِنَّ جِبْرِيْلَ اَتَانِيْ فَقَالَ مَنْ صَلّٰى عَلَيْكَ مِنْ اُمَّتِكَ وَاحِدَةً صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ عَشْرًا وَرَفَعَهُ بِهَا عَشَرَ دَرَجَاتٍ

या'नी ऐ उ़मर ! तुम ने बहुत अच्छा किया जो मुझे सजदे में देख कर पीछे हट कर एक त़रफ़ खड़े हो गए, बेशक अभी जिब्रीले अमीन मेरे पास आए और अ़र्ज़ करने लगे कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप का जो भी उम्मती आप पर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस बार रह़मत नाज़िल फ़रमाएगा और उस के दस दरजात बुलन्द फ़रमाएगा।"[1]

हर दर्द की दवा है صَلِّ عَلٰى مُحَمَّد
ता'वीज़े हर बला है صَلِّ عَلٰى مُحَمَّد

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 ......معجم الاوسط، بقية ذكر من اسمه محمد، ج ٥، ص ٢٨، حديث: ٦٢٠٢ـ

मदीनए मुनव्वरा की एक सर्द रात

पूरा जज़ीरए अ़रब तक़रीबन पहाड़ी और रैतिले अ़लाक़े पर मुश्तमिल है, और इस में मुख़्तलिफ़ **''ह़राइर''** हैं। **''ह़राइर''** जम्अ़ है **''ह़र्रह''** की और अ़रबी ज़बान में **''ह़र्रह''** उस ज़मीन को कहते हैं जहां जले हुवे सियाह रंग के पथ्थरों की कसरत हो। अ़रब का मश्हूर व मुबारक शहर मदीनए मुनव्वरा ऐसे ही दो ''ह़र्रों'' के दरमियान वाक़ेअ़ है, एक का नाम **''ह़र्रए वबरह''** है जो मदीनए मुनव्वरा के मग़रिब में वाक़ेअ़ है, और दूसरे का नाम **''ह़र्रए वाक़िम''** है जो मदीनए मुनव्वरा के मशरिक़ में वाक़ेअ़ है ह़िजाज़ के पहाड़ी अ़लाक़ों का मौसिम उ़मूमन गर्म ही होता है और गर्मी के मौसिम में तो यहां गर्म लू भी चलती है। अलबत्ता ऐसे अ़लाक़ों में मौसिमे सर्मा में सर्दी भी बहुत शदीद होती है। और यहां के लोग मग़रिब के बा'द ही घरों में दबक जाते हैं अगर बाहर निकलते भी हैं तो फ़क़त़ इशा की नमाज़ या किसी ज़रूरी ह़ाजत के लिये।

येह एक ऐसी ही सर्द रात की बात है जब मदीनए मुनव्वरा में मौसिमे सर्मा उ़रूज पर था, इन्सान तो इन्सान, जानवर और चरिन्द परन्द भी अपने अपने घरों में सर्दी से बचने के लिये दबके हुवे थे, सख़्त सर्दी के साथ साथ रात की तारीकी ने माह़ोल को मज़ीद डरावना बना दिया था, हर त़रफ़ सन्नाटा छाया हुवा था और ऐसे वक़्त में बाहर निकलने का कोई सोच भी नहीं सकता था लेकिन तअ़ज्जुब की बात है कि ऐसे सख़्त मौसिम में भी मदीनए मुनव्वरा के दो मुक़ीम अफ़राद अ़लाक़ाई दौरा करने निकल खड़े हुवे, दोनों को एक नज़र देखने से येही अन्दाज़ा होता था कि इन में से एक शायद आक़ा है और दूसरा उस का ख़ादिम। अलबत्ता दोनों के ज़ाहिरी हुल्ये और लिबास में कोई ऐसा ख़ास फ़र्क़ न था जो इस इम्तियाज़ को वाज़ेह़ करता। शायद इस की एक वज्ह तो येह थी कि आक़ा ने कोई ख़ास लिबास ज़ैबे तन न किया था और दूसरी वज्ह आक़ा का अपने ख़ादिम से गुफ़्तगू करने का मुहज़्ज़ब और प्यारा अन्दाज़ था जो इस बात की अ़क्कासी करता था कि इस आक़ा ने कभी अपने ख़ादिम पर अपनी बरतरी जताने की कोशिश नहीं की होगी। इन दोनों के चलने का अन्दाज़ इस बात की त़रफ़ इशारा करता था कि दोनों फ़क़त़ चह्ल क़दमी के लिये इस वक़्त बाहर नहीं निकले बल्कि ज़रूर कोई ख़ास मक़्सद पेशे नज़र है। हां किसी ख़ौफ़ और शदीद सर्दी की परवाह किये बिग़ैर इस त़रह़ इन का बाहर निकलना शायद इन के रोज़ाना या हर दूसरे रोज़ का मा'मूल था। बहर ह़ाल आक़ा और ख़ादिम दोनों मदीनए मुनव्वरा की गलियों का मुशाहदा करते हुवे मदीनए मुनव्वरा से तक़रीबन तीन मील दूर मशरिक़ में **''ह़र्रए वाक़िम''** तक निकल आए। चलते चलते दोनों अचानक रुक गए। इन दोनों के रुकने की वज्ह बहुत दूर एक ख़ैमा था जिस में आग जल रही थी।

आक़ा ने अपने ख़ादिम की त़रफ़ देख कर कहा : "ऐ अस्लम ! इतनी सख़्त सर्दी में कौन हो सकता है ?" अस्लम ने ला इल्मी का इज़्हार किया तो आक़ा ने कहा : "मेरा ख़याल है शायद कोई क़ाफ़िला है, रात और सर्दी की वज्ह से यहीं ठहर गया होगा। आओ चल कर देखते हैं क्या मुआ़मला है ?" दोनों चलते हुवे जैसे ही ख़ैमे के क़रीब पहुंचे तो येह मन्ज़र देख कर हैरान रह गए कि वोह कोई ख़ैमा नहीं बल्कि एक टूटा फूटा कच्चा घर है, और उस में कोई क़ाफ़िला वग़ैरा नहीं था बल्कि वहां तो एक ख़ातून अपने नन्हे मुन्ने बच्चों के साथ मुक़ीम थी जिस ने चुल्हे पर एक हंडिया चढ़ा रखी थी जैसे खाना पका रही हो और बच्चे उस के साथ बैठे मुसलसल रो रहे थे, ग़ालिबन उन्हें बहुत भूक लगी थी।

आक़ा ने सलाम किया तो उस ख़ातून ने दोनों की त़रफ़ तवज्जोह किये बिग़ैर सलाम का जवाब दिया। आक़ा ने घर में दाख़िल होने की इजाज़त त़लब करते हुवे कहा : "क्या मैं अन्दर आ सकता हूं ?" ख़ातून ने जवाब दिया : "अगर किसी ख़ैर का इरादा है आओ वरना कोई ज़रूरत नहीं।" ग़ालिबन वोह ख़ातून बहुत दुखी थी, इस लिये बे रुख़ी से जवाब दे रही थी। लेकिन आक़ा का अन्दाज़ बता रहा था कि वोह इस दुखी ख़ातून के दुख में शरीक होना चाहता है।

उस ने ख़ातून से इस्तिफ़्सार किया : "ऐ बीबी ! तुम कौन हो और येह बच्चे क्यूं रो रहे हैं ?" ख़ातून ने जवाब दिया : "मैं मदीनए मुनव्वरा की रहाइशी हूं, इन बच्चों को शदीद भूक लगी है और येह इसी वज्ह से रो रहे हैं।" आक़ा ने कहा : "इस हंडिया में क्या है ?" ख़ातून ने कहा : "इस में तो सिर्फ़ पानी है, मैं ने बच्चों का दिल बहलाने के लिये इसे आग पर चढ़ा रखा है ताकि खाना पकने के इन्तिज़ार में बच्चे सो जाएं।" फिर उस दुख्यारी ख़ातून ने अपने दिल का दर्द बयान करते हुवे कहा : "मैं एक ग़रीब औ़रत हूं, मेरे पास इतने अख़राजात नहीं कि अपने बच्चों को खाना खिला सकूं, इन का दिल बहला रही हूं, लेकिन अमीरुल मोमिनीन को हमारी कोई ख़बर नहीं, हम उन के महकूम हैं, उन की रिआ़या हैं, उन का ह़क़ बनता है कि वोह हमारा ख़याल रखें, ख़ैर कोई बात नहीं हमारा वक़्त तो जैसे तैसे गुज़र ही जाएगा लेकिन कल बरोज़े क़ियामत अमीरुल मोमिनीन और हमारे दरमियान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही फ़ैसला फ़रमाएगा, और यक़ीनन आख़िरत की पकड़ बहुत सख़्त है।"

आक़ा ने उस दुख्यारी ख़ातून का दर्द सुना तो वोह भी आबदीदा हो गया और नर्म लहजे में कहने लगा : "ऐ बीबी ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़म फ़रमाए, तुम्हारी मुसीबतें और परेशानियां दूर फ़रमाए, लेकिन अमीरुल मोमिनीन को क्या मा'लूम कि तुम यहां इस ह़ाल में हो ?"

ख़ातून ने सुवालिया लहजे में कहा : "वोह हमारा ह़ाकिम है और हम से ग़ाफ़िल है ? उसे मा'लूम ही नहीं कि हम किस ह़ाल में हैं ?"

बहर ह़ाल आक़ा उस दुख्यारी ख़ातून की ह़ालते ज़ार सुन कर उस के घर से बाहर आ गया और अपने ख़ादिम अस्लम से कहा : "मेरे साथ जल्दी चलो।" फिर दोनों तेज़ी से चलते हुवे मदीनए मुनव्वरा की अन्दरूनी आबादी की त़रफ़ रवाना हो गए। आक़ा बहुत गहरी सोच में गुम था क्यूंकि उस ख़ातून की ह़ालते ज़ार और उस की बयान की गई आपबीती ने आक़ा की ज़ात पर बड़े गहरे नुक़ूश छोड़े थे, जो आक़ा पहले अपने ख़ादिम से गुफ़्तगू करते हुवे यहां तक पहुंचा था अब वोही आक़ा ख़ामोशी की चादर ताने तेज़ी के साथ रवां दवां था। थोड़ी देर के बा'द दोनों एक ग़ल्ले के गोदाम के क़रीब खड़े थे, ख़ादिम ने दरवाज़ा खोला, आक़ा ने जल्दी से एक बोरी आटा, खजूरें, कुछ रक़म और खाना पकाने के दीगर लवाज़िमात साथ लिये और ख़ादिम से कहा : "अस्लम ! इन्हें मेरी पीठ पर लाद दो।" ख़ादिम ने बड़ी आ़जिज़ी से अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! आप मुझे हुक्म फ़रमाएं मैं इसे अपनी पीठ पर लाद कर ख़ातून तक पहुंचा दूंगा।" आक़ा ने ख़ादिम की त़रफ़ देखा और एक आहे सर्द दिले पुर दर्द से खींच कर कहा : "आह...! आज इस दुन्या में तो तू मेरे हि़स्से का बोझ अपनी पीठ पर लाद लेगा, मेरी तक्लीफ़ को बरदाश्त कर लेगा लेकिन याद कर उस दिन को जिस दिन कोई जान किसी दूसरी जान का बोझ नहीं उठाएगी और किसी की तक्लीफ़ दूसरे को नहीं दी जाएगी, क्या उस दिन भी तू ही मेरा बोझ उठाएगा ?" ख़ादिम अपने आक़ा का फ़िक्रे आख़िरत से भरपूर जवाब सुन कर ख़ामोश हो गया और हुक्म की ता'मील करते हुवे सारा सामान आक़ा की पीठ पर डाल दिया। दोनों एक बार फिर मदीनए मुनव्वरा से बाहर उस दुख्यारी ख़ातून के घर की त़रफ़ रवां दवां थे। थोड़ी देर के बा'द दोनों घर तक पहुंच गए, ख़ातून उन दोनों को सामान के साथ देख कर ह़ैरान रह गई। आक़ा ने वोह सारा सामान उतारा और आटे की बोरी खोल कर उस ख़ातून से कहा : "इस में से आटा निकालो और इस पर नमक डालो ताकि मैं ह़रीरा (आटे से बनाया जाने वाला खाना) बनाऊं।" फिर आक़ा हंडिया के नीचे आग फूंकने लगा, यहां तक कि धुवां उस की दाढ़ी के दरमियान से निकलने लगा। आक़ा साथ साथ आग भी जलाता रहा और खाना भी पकाता रहा, बिल आख़िर खाना पक कर तय्यार हो गया। आक़ा ने हंडिया को चुल्हे से नीचे उतारा और ख़ातून से कहा : "कोई बड़ा और खुला बरतन लाओ।" वोह ख़ातून एक बड़ा सा प्याला ले आई। आक़ा ने उस में खाना डाला और अपने हाथों से उसे ठन्डा करने लगा जब खाना ठन्डा हो गया तो उस ने बच्चों को अपने क़रीब कर के अपने हाथों से खिलाना शुरूअ़ कर

दिया, यहां तक कि सब बच्चों ने पेट भर कर खा लिया और ख़ुश हो गए। फिर उस ने बच्चों की दिलजूई के लिये उन के साथ खेलना शुरूअ़ कर दिया, बच्चों की ख़ुशी में मज़ीद इज़ाफ़ा हो गया और वोह खेलते खेलते सो गए। आक़ा बक़िय्या खाना ख़ातून के पास छोड़ कर अपने ख़ादिम अस्लम के पास आ कर इस त़रह़ बैठ गया गोया उसे क़ल्बी सुकून मिल गया हो और उस के कन्धे से एक बहुत बड़ा बोझ उतर गया हो।

वोह ख़ातून उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हुई और कहने लगी : "तुम इतने शफ़ीक़ और रह़्म दिल, हो, इस मुसीबत की घड़ी में तुम ने हमारी मदद की, मेरे रोते हुवे बच्चों के चेहरों पर मुस्कुराहट के मोती बिखैरे, मैं किस मुंह से तुम्हारा शुक्रिय्या अदा करूं ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही तुम्हें इस की बेहतर जज़ा अ़त़ा फ़रमाएगा। ह़क़ीक़त तो येह है कि तुम ही अमीरुल मोमिनीन बनने के ह़क़दार हो।" अस्लम देख रहा था कि अब उस ख़ातून के लहजे में वाज़ेह़ तब्दीली आ चुकी थी, और वोह दिल से बहुत ख़ुश दिखाई दे रही थी।

उस आक़ा की जगह अगर कोई और शख़्स होता तो वोह अपनी इस ता'रीफ़ पर फूला न समाता और लोगों में जा कर सीना चौड़ा कर के अपने इस कारनामे को बयान करता लेकिन उस आक़ा ने तो इन ता'रीफ़ी कलिमात पर बिल्कुल तवज्जोह न दी बल्कि कहने लगा : "ऐ बीबी ! जैसा तुम कह रही हो वैसा बिल्कुल नहीं, मैं और अमीरुल मोमिनीन बनने का ह़क़दार ! येह तो बड़ी अ़जीब बात है, हां एक बात ज़रूर है अगर तुम कभी अमीरुल मोमिनीन के दरबार में आओगी तो मुझे वहां ज़रूर देखोगी।"

फिर आक़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते हुवे उठा और अपने ख़ादिम अस्लम की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर कहने लगा : "ऐ अस्लम ! भूक ने इन नन्हे बच्चों को जगा रखा था और भूक ही इन्हें मुसलसल रुला रही थी। जब मैं ने इन की येह ह़ालत देखी तो मुझे अपने बच्चे याद आ गए और मैं ने अपने दिल में तहिय्या कर लिया कि जब तक इन बच्चों की भूक को शिकम सैरी, रोने को हंसने और इन के ग़म को ख़ुशी व मसर्रत में तब्दील न कर दूं तब तक चैन से न बैठूंगा और न ही वापस अपने घर जाऊंगा। और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है कि मैं अपने मक़्सद में कामयाब हो गया।" बहर ह़ाल आक़ा और ख़ादिम दोनों मदीनए मुनव्वरा की मुबारक गलियों से होते हुवे वापस अपने घर आ गए।"(1)

---

(1)......كنزالعمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الجزء: ١٢، ج٦، ص ٢٨٩، حديث: ٣٥٩٧٣۔
الكامل فی التاریخ، ج ٢، ص ٤٥٣ ، فتاوىٰ رضویہ، ج ٢٢، ص ٣٨٩ ملخصاً ومفهوماً۔

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा हि़कायत को पढ़ कर हर शख़्स के ज़ेह्न में येह सुवाल पैदा होता है कि......मदीनए मुनव्वरा की सख़्त सर्दी की रात में येह कौन था ? जो अपने ख़ादिम के साथ शहरे मदीना का दौरा करने बाहर निकला......येह कौन था ? जिस ने अपने और ख़ादिम के दरमियान हर इम्तियाज़ को ख़त्म कर दिया था......येह कौन था ? जो अपने ख़ादिम के साथ भी हुस्ने अख़्लाक़ के साथ पेश आता था......येह कौन था ? जिस के दिल में प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुख्यारी उम्मत की ख़ैर ख़्वाही का जज़्बा कूट कूट कर भरा था......येह कौन था ? जिस ने रात गए एक ग़रीब व नादार औ़रत और उस के रोते बच्चों में ख़ुशियां तक़्सीम कीं......येह कौन था ? जिस की बातों के हर हर लफ़्ज़ से ख़ौफ़े ख़ुदा ज़ाहिर होता था.......येह कौन था ? जिस ने अपने हाथों से बच्चों को खाना खिलाया....येह कौन था ? जिस ने बच्चों के साथ खेल कर उन की दिलजूई की और उन्हें ख़ुश किया...येह कौन था ? जिस के अ़मल को देख कर वोह ख़ातून भी बे साख़्ता पुकार उठी कि **"तुम ही अमीरुल मोमिनीन होने के ह़क़दार हो !"**

जी हां मीठे इस्लामी भाइयो ! प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुख्यारी उम्मत की ख़ैर ख़्वाही का अ़ज़ीम जज़्बा रखने वाला येह शख़्स कोई और नहीं बल्कि **ख़लीफ़ए सानी, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ थे ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ारूके़ आ'ज़म का नसब

फ़ारूके़ आ'ज़म का नसब

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का नसब कुछ यूं है : "उ़मर बिन ख़त्ताब बिन नुफै़ल बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा बिन रयाह़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुर्त़ बिन रज़ाह़ बिन अ़दिय्य बिन का'ब बिन लुअय्य क़ुरशिय्य अ़दविय्य ।" का'ब बिन लुअय्य पर जा कर नवीं पुश्त में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का नसब दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नसब से जा मिलता है ।(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म के नसब की अफ़्ज़लिय्यत

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह अ़ज़ीम सआ़दत ह़ासिल है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का नसब नवीं पुश्त में ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन लुअय्य رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर जा कर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नसबे मुबारक से जा मिलता है ।

1......اسد الغابۃ، عمر بن خطاب، ج۴، ص۱۵۶۔

नक़्शा शजरए नसब

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه
हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه	ख़त्ताब
हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه	नुफ़ैल
हज़रते सय्यिदुना हाशिम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه	अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा
हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दे मुनाफ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه	रयाह़
हज़रते सय्यिदुना क़ुसिय्य رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه	अ़ब्दुल्लाह
हज़रते सय्यिदुना किलाब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه	क़ुर्त़
हज़रते सय्यिदुना मुर्रह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه	रज़ाह़
– – –	अ़दिय्य
हज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه	
हज़रते सय्यिदुना लुअय्य رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه	
हज़रते सय्यिदुना ग़ालिब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه	
हज़रते सय्यिदुना फ़हर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه	
हज़रते सय्यिदुना मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه	
हज़रते सय्यिदुना मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की 58 वीं पुश्त में थे।	

आप की वालिदा का नसब नामा

आप की वालिदा का मुकम्मल नाम **ह़न्तमह** बिन्ते हाशिम बिन मुग़ीरा बिन **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर मख़्ज़ूम है। आप अबू जह्ल की चचाज़ाद बहन हैं क्यूंकि हाशिम और हिशाम सगे भाई हैं और अबू जह्ल और ह़ारिस, **हिशाम** की औलाद हैं, जब कि हाशिम **ह़न्तमह** के वालिद और

फ़ारूक़े आ'ज़म के नाना हैं। लिहाज़ा अबू जह्ल आप का सगा भाई नहीं बल्कि आप के चचा या'नी हिशाम का बेटा है।[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म के क़बीले की शरफ़याबी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ क़बीलए अ़दिय्य बिन का'ब से तअ़ल्लुक़ रखते थे जो क़ुरैश का अ़दनानी क़बीला था। इस क़बीले की शराफ़त व बुज़ुर्गी ने उसे हाशिम, उमय्या, तैम और मख़्ज़ूम जैसे मुमताज़ क़बाइल में शामिल कर दिया था। अगर्चे उस क़बीले के पास कोई मज़हबी या सियासी मन्सब व मर्तबा नहीं था और न ही मालो दौलत में वोह इन क़बीलों के मुसावी थे अलबत्ता इ़ज़्ज़त, शरफ़ और बुज़ुर्गी में वोह क़बीलए बनी अ़ब्दे शम्स के मुक़ाबिल थे। येही वज्ह थी कि इन दोनों क़बाइल में सालहा साल से मुनाफ़रत (दुश्मनी) क़ाइम थी। आप के क़बीले वाले ता'दाद में थोड़े और बड़े क़बाइल के ह़रीफ़ न होने की वज्ह से इ़ल्मो ह़िक्मत और दूर अन्देशी में अपना एक ख़ास मक़ाम व मर्तबा रखते थे। नीज़ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को आप के इसी इ़ल्मो ह़िक्मत के सबब सिफ़ारत कारी और अ़दालत के ज़रूरी ओ़हदे दे दिये गए। येही वज्ह है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़ानदान में ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसी अ़ज़ीम शख़्सियात पैदा हुईं जिन्हों ने अपने ह़िक्मत व दानिश मन्दी से बुत परस्ती तर्क कर दी, बुतों का ज़बीह़ा खाना छोड़ दिया और पक्के मुवह्ह़िद (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तौह़ीद के क़ाइल) बन गए।[2]

फ़ारूक़े आ'ज़म का नामे नामी इस्मे गिरामी

फ़ारूक़े आ'ज़म का नामे नामी इस्मे गिरामी

दौरे जाहिलिय्यत और दौरे इस्लाम दोनों में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम ''उ़मर'' ही रहा। ''उ़मर'' के मा'ना हैं ''आबाद रखने वाला'' या ''आबाद करने वाला''। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सबब चूंकि इस्लाम आबाद होना था इस लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पहले ही आप को ''उ़मर'' नाम अ़ता फ़रमा दिया और इस्लाम आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सबब आबाद हुवा लिहाज़ा आप इस्मे बा मुसम्मा हैं। ''इन्सानी ज़िन्दगी की मुद्दत'' को भी ''**उ़म्र**'' कहते हैं या'नी

---

1 ......اسد الغابة، عمر بن خطاب، ج ۴، ص ۱۵۶ ملخصاً، تہذیب الاسماء، عمر بن خطاب، ج ۲، ص ۳۲۴۔

2 ......اخبار مکة للازرقی، ذکر رباع بنی عدی بن کعب، ج ۲، ص ۲۵۸، ریاض النضرة، ج ۲، ص ۳۳۷۔

''जिस्म की आबादी का ज़माना'' । सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का अ़ह्दे ख़िलाफ़त चूंकि इस्लाम की आबादी का ज़माना है इस ए'तिबार से भी आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस्मे बा मुसम्मा हुवे ।[1]

आस्मानों, इन्जील, तौरात और जन्नत में आप का नाम

मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का नाम आस्मानों में ''**फ़ारूक़**'' इन्जील में ''**काफ़ी**'' तौरात में ''**मन्त़क़ुल ह़क़**'' और जन्नत में ''सिराज'' है ।[2]

बारगाहे रिसालत से अ़त़ाकर्दा नाम

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है फ़रमाती हैं : ''**سَمَّی رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم عُمَرَ الْفَارُوْقَ**'' या'नी रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का नाम ''फ़ारूक़'' रखा ।[3]

फ़ारूक़े आ'ज़म की कुन्यत

फ़ारूक़े आ'ज़म की कुन्यत ''अबू ह़फ़्स''

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की कुन्यत ''अबू ह़फ़्स'' है अगर्चे आप की औलाद में से किसी का नाम ''ह़फ़्स'' नहीं है ।[4]

कुन्यत की वुजूहात

कुन्यत रखना सुन्नत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुन्यत रखना सुन्नते मुबारका है और इब्तिदाए इस्लाम से येह सिलसिला सह़ाबए किराम, ताबेईन, तब्ए़ ताबेईन और अस्लाफ़े किराम में चला आ रहा है और आज भी उ़श्शाक़ इस सुन्नत को ज़िन्दा करते हुवे अपने नामों के साथ कुन्यत रखते हैं। कुन्यत उ़मूमन बेटे या बेटी वग़ैरा के नाम पर रखी जाती है, बा'ज़ लोग किसी ख़ास वस्फ़ के साथ भी कुन्यत रखते हैं । अलबत्ता कई लोगों की कुन्यत इन दोनों से मुख़्तलिफ़ होती है । अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की कुन्यत भी इसी क़बील से है

---

1 .....मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8 स. 360, رياض النضرة،ج ا ،ص ۲۷۲

2 ......رياض النضرة،ج ا ،ص ۲۷۳۔

3 ......تهذيب الاسماء،عمر بن الخطاب،ج ۲،ص ۳۲۵۔

4 ......مستدرک حاکم، کتاب معرفة الصحابة، ذکر مناقب ابی حذيفه،ج ۴،ص ۲۳۹،حدیث:۵۰۴۲ ملتقطا۔

या'नी आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की कुन्यत आप की औलाद में से किसी बेटे या बेटी वग़ैरा के नाम पर नहीं है और न ही किसी ख़ास वस्फ़ की वज्ह से है, बल्कि आप رضی اللہ تعالٰی عنہ को येह कुन्यत बारगाहे रिसालत से अ़ता हुई है। चुनान्चे,

फ़ारूक़े आ'ज़म को बारगाहे रिसालत से कुन्यत अ़ता हुई

﴾1﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم ने बद्र के दिन ए'लान फ़रमाया कि "तुम में से जो कोई अ़ब्बास से मिले तो उन से ए'राज़ करे क्यूंकि उन्हें हम से जंग करने के लिये ज़बर दस्ती लाया गया है।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुज़ैफ़ा बिन उ़त्बा رضی اللہ تعالٰی عنہ ने येह सुना तो फ़र्ते जज़्बात से कहने लगे कि "हम अपने आबा, भाइयों और रिश्तेदारों को तो क़त्ल करें और अ़ब्बास को छोड़ दें हम ज़रूर उसे क़त्ल करेंगे।" रसूलुल्लाह صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم तक जब येह बात पहुंची तो आप صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رضی اللہ تعالٰی عنہ से इरशाद फ़रमाया : "يَا اَبَا حَفْصٍ! يُضْرَبُ وَجْهُ عَمِّ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالسَّيْفِ؟ या'नी ऐ अबू ह़फ़्स ! क्या रसूलुल्लाह के चचा पर तल्वार उठाई जाएगी ?" आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने जलाल में इरशाद फ़रमाया : "या रसूलल्लाह صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم ! मुझे हुक्म इरशाद फ़रमाइये मैं अबू हुज़ैफ़ा की गर्दन उड़ा दूंगा।" बहर ह़ाल बा'द में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुज़ैफ़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ इस बात पर बहुत शर्मिन्दा हुवे और आप رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाया करते थे कि "बद्र के दिन जो बात मैं ने की थी उस के सबब मैं ख़ौफ़ज़दा रहता हूं और ख़्वाहिश करता हूं कि काश ! मुझे शहादत नसीब हो जाए और मेरी शहादत इस बात का कफ़्फ़ारा हो जाए।" आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की येह ख़्वाहिश पूरी हो गई और आप رضی اللہ تعالٰی عنہ जंगे यमामा में शहीद हो गए।

जंगे बद्र के दिन हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ को इसी कुन्यत "**अबू ह़फ़्स**" के साथ पुकारा और आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने ख़ुद इरशाद फ़रमाया : "اِنَّهٗ لَاَوَّلُ يَوْمٍ كَنَّانِيْ فِيْهِ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِاَبِيْ حَفْصٍ" या'नी येह वोह पहला दिन था जब अल्लाह عزّوجلّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم ने ख़ुद मुझे अबू ह़फ़्स कुन्यत अ़ता फ़रमाई।"(1)

(1)......مستدرک حاکم، کتاب معرفة الصحابة، ذکر مناقب ابی حذیفه، ج ۴، ص ۲۳۹، حدیث: ۵۰۴۲۔

﴾2﴿.....हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अबी औफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार मस्जिदे नबवी में नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इरशाद फ़रमाया :

قَدْ كُنْتَ شَدِيْدَ الشَّغَبِ عَلَيْنَا اَبَا حَفْصٍ فَدَعَوْتُ اللّٰهَ اَنْ يُّعِزَّ الدِّيْنَ بِكَ اَوْ بِابْنِ جَهْلٍ فَفَعَلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ بِكَ

या'नी ऐ अबू हफ़्स ! इस्लाम लाने से क़ब्ल तुम हम पर बहुत सख़्त थे, फिर मैं ने रब عَزَّوَجَلَّ से दुआ की, कि वोह तुम्हारे ज़रीए या अबू जह्ल के ज़रीए दीन को इज़्ज़त अ़ता फ़रमाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे ज़रीए दीन को इज़्ज़त अ़ता फ़रमाई ।"[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म की कुन्यत बा मुसम्मा है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अ़रबी ज़बान में "हफ़्स" शेर के बच्चे को कहते हैं, इसी लिये शेर की कुन्यत "अबू हफ़्स" है । अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी चूंकि इस्लाम के शेर हैं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़बूले इस्लाम से ले कर विसाले ज़ाहिरी तक जितना फ़ाइदा आप की ज़ात से इस्लाम को हुवा इतना किसी और ख़लीफ़ा या हाकिम से न हुवा इस वज्ह से आप की येह कुन्यत आप पर कुल्लियतन सादिक़ आती है और आप को "अबू हफ़्स" कहा जाता है ।[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़ारूक़े आ'ज़म के अल्क़ाबात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! "अल्क़ाबात" जम्अ़ है "लक़ब" की । लक़ब से मुराद वोह नाम है जो अ़वाम में किसी ख़ास वस्फ़ के बाइ़स मश्हूर हो जाए, नीज़ लक़ब अस्ल नाम के इ़लावा वोह नाम होता है कि जिस में किसी ख़ूबी या किसी ख़ामी का पहलू निकले । क़ुरआने पाक में बुरे अल्क़ाबात व नामों से पुकारने की मुमानअ़त फ़रमाई गई है । चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ﴾ (پ۲۶، الحجرات:۱۱) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो ।"

---

1 .....معجم كبير، زيد بن ابی اوفی اسلمی، ج۵، ص۲۲۰، حديث:۵۱۴۶۔

2 .....مناقب امير المؤمنين عمر بن الخطاب، الباب الثانی، ص۱۴۔

सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : "बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि किसी मुसलमान को कुत्ता या गधा या सुवर कहना भी इसी में दाख़िल है। बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि इस से वोह अल्क़ाब मुराद हैं जिन से मुसलमान की बुराई निकलती हो और उस को ना गवार हो लेकिन ता'रीफ़ के अल्क़ाब जो सच्चे हों ममनूअ़ नहीं जैसे कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र का लक़ब "अ़तीक़" और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर का "फ़ारूक़" और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी का "ज़ुन्नूरैन" और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली का "अबू तुराब" और ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद का "**सैफ़ुल्लाह**" (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم) और जो अल्क़ाब ब मन्ज़िलए अ़लम हो गए (या'नी नाम की जगह ले ली) और साहि़बे अल्क़ाब को ना गवार नहीं वोह अल्क़ाब भी ममनूअ़ नहीं जैसे कि आ'मश, आ'रज।"

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के भी कई अल्क़ाबात हैं। बा'ज़ अल्क़ाबात तो आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को ख़ास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह से अ़ता हुवे और कई ऐसे अल्क़ाबात हैं जो आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की ह़याते त़य्यिबा की मख़्सूस सिफ़ात की अ़क्कासी करते हैं। आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के 11 अल्क़ाबात मअ़ वुजूहात पेशे ख़िदमत हैं।

(1).....लक़ब "फ़ारूक़" और इस की वुजूहात

"फ़ारूक़" लक़ब अल्लाह ने अ़ता फ़रमाया

ह़ज़रते सय्यिदुना नज़्ज़ाल बिन सबरह رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि एक रोज़ हम ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) से अ़र्ज़ किया :

"ऐ अमीरुल मोमिनीन ! हमें सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के मुतअ़ल्लिक़ कुछ इरशाद फ़रमाइये।" आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : "अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه वोह शख़्सिय्यत हैं जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने "फ़ारूक़" लक़ब अ़ता फ़रमाया क्यूंकि आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने ह़क़ को बात़िल से जुदा कर दिखाया।"[1]

"फ़ारूक़" लक़ब बारगाहे रिसालत से अ़ता हुवा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से पूछा कि "आप को फ़ारूक़ क्यूं कहा जाता

---

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۵۰۔

है ?" इरशाद फ़रमाया : "ह़ज़रते अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुझ से तीन रोज़ क़ब्ल इस्लाम लाए। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरा सीना इस्लाम के लिये खोल दिया और मैं बे साख़्ता पुकार उठा : اَللّٰہُ لَا اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ لَہُ الْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰی "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं उसी के हैं सब अच्छे नाम।" उस वक़्त सारी रूए ज़मीन पर हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बढ़ कर कोई शख़्सिय्यत मेरे लिये मह़बूब न थी। मैं ने पूछा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कहां तशरीफ़ फ़रमा हैं ?" मेरी हमशीरा ने कहा : "दारे अरक़म बिन अबी अरक़म में जो सफ़ा पहाड़ी के नज़दीक है।" ह़ज़रते अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان घर के अन्दर सेह़न में और दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आगे कमरे में तशरीफ़ फ़रमा थे। मैं ने दरवाज़े पर दस्तक दी तो मेरी आमद पर सब सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان इकठ्ठे हो गए। ह़ज़रते अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बोले : "क्या बात है ?" वोह कहने लगे : "उ़मर आ गया है।" येह सुन कर ख़ुद **ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ ले आए और जैसे ही मैं अन्दर दाख़िल हुवा मेरा गिरेबान पकड़ा और ज़ोर से झन्झोड़ कर फ़रमाया : "उ़मर ! तुम बाज़ नहीं आओगे ?" तो मैं बे साख़्ता पुकार उठा : اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ "या'नी मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं।" येह सुन कर दारे अरक़म से सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने इस ज़ोर से ना'रए तक्बीर बुलन्द किया कि इस की आवाज़ **का'बतुल्लाह** शरीफ़ में सुनी गई। मैं ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या ह़यात और मौत दोनों सूरतों में हम ह़क़ पर नहीं ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्यूं नहीं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम लोग ह़क़ पर हो, ज़िन्दगी में भी और मरने के बा'द भी।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फिर हम छुप छुप कर क्यूं रह रहे हैं ? उस रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस ने आप को रसूल बना कर भेजा हम ज़रूर बाहर निकलेंगे।" चुनान्चे, हम दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस त़रह़ बाहर ले आए कि हमारी दो सफ़ें थीं, अगली सफ़ में ह़ज़रते अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और पिछली सफ़ में मैं था और मेरी ह़ालत येह थी कि मेरे ऊपर आटे जैसा गुबार था। हम मस्जिदे ह़राम में दाख़िल हुवे तो कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने एक नज़र मुझे

और दूसरी नज़र हज़रते अमीरे हम्ज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा तो उन पर ऐसा ख़ौफ़ तारी हुवा जो इस से क़ब्ल कभी न हुवा था। उस दिन **ख़ातमुल मुर्सलीन, रहमतुल्लिल आलमीन** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरा नाम "फ़ारूक़" रख दिया, क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे सबब से हक़ व बातिल में इम्तियाज़ फ़रमा दिया।[1]

"फ़ारूक़" का लक़ब किस ने दिया ?

हज़रते सय्यिदुना अबू अम्र व ज़क्वान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا ने उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा : **مَنْ سَمَّى عُمَرَ الْفَارُوْقَ؟** "या'नी हज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़ारूक़ का लक़ब किस ने दिया ?" फ़रमाया : **اَلنَّبِیُّ** "या'नी ग़ैब की ख़बरें देने वाले (नबी) ने।"[2]

हक़ व बातिल में फ़र्क़ करने के सबब "फ़ारूक़"

हज़रते सय्यिदुना इमाम शा'बी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی से रिवायत है कि एक मुनाफ़िक़ और एक यहूदी के माबैन झगड़ा हो गया। यहूदी ने कहा : "फ़ैसले के लिये तुम्हारे नबी मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास चलते हैं।" मुनाफ़िक़ बोला : "नहीं बल्कि यहूदियों के सरदार का'ब बिन अशरफ़ के पास जाना चाहिये।" यहूदी ने येह बात न मानी और हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास चला आया और बारगाहे रिसालत में पहुंच कर सारा माजरा बयान कर दिया। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यहूदी के हक़ में फ़ैसला कर दिया। जब दोनों बाहर आए तो मुनाफ़िक़ कहने लगा : "उ़मर बिन ख़त्ताब के पास चलते हैं।" दोनों सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में पहुंच गए और सारा माजरा बयान कर दिया और यहूदी ने येह भी वज़ाहत कर दी कि हमारे इस झगड़े का फ़ैसला आप के नबी मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे हक़ में कर दिया है और उस फ़ैसले के बा'द येह शख़्स आप के पास आने पर इसरार करने लगा तो हम यहां आ गए। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब येह सारा मुआमला सुना तो इरशाद फ़रमाया : "तुम दोनों ज़रा यहीं ठहरो, मैं अभी आता हूं।" आप अन्दर तशरीफ़ ले गए और तल्वार नियाम से बाहर निकालते हुवे वापस आए और फ़ौरन उस मुनाफ़िक़ का

---

1 ......حلیة الاولیاء، عمر بن الخطاب، ج ۱، ص ۷۵، الرقم: ۹۳۔

2 ......اسد الغابة، عمر بن الخطاب، ج ۴، ص ۱۶۲۔

सर तन से जुदा कर दिया और साथ ही इरशाद फ़रमाया : هٰكَذَا اَقْضِىْ بَيْنَ مَنْ لَمْ يَرْضَ بِقَضَاءِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ "या'नी जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ैसले से राज़ी नहीं मैं उस का फ़ैसला यूं करूंगा।"(1)

आस्मानों में आप का नाम "फ़ारूक़" है

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि **ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं मस्जिद में बैठा जिब्रीले अमीन से बातें कर रहा था कि अचानक उ़मर बिन ख़त्ताब आ गए। जिब्रीले अमीन ने कहा : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या येह आप के भाई उ़मर तो नहीं हैं?" मैं ने कहा : "जी हां। और ऐ जिब्रील ! क्या ज़मीन की त़रह़ आस्मानों में भी इन का कोई ख़ास नाम है?" जिब्रील बोले :

اِنَّ اِسْمَهُ فِى السَّمَاءِ اَشْهَرُ مِنْ اِسْمِهٖ فِى الْاَرْضِ اِسْمُهُ فِى السَّمَاءِ فَارُوْقٌ وَ فِى الْاَرْضِ عُمَرُ

या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आस्मानों में जो इन का नाम है वोह ज़मीन की निस्बत ज़ियादा मश्हूर है, ज़मीन में इन का नाम उ़मर है और आस्मानों में इन का नाम फ़ारूक़ है।(2)

जन्नती दरख़्त के पत्तों पर आप का नाम फ़ारूक़ लिखा है

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

فِى الْجَنَّةِ شَجَرَةٌ مَا عَلَيْهَا وَرَقَةٌ اِلَّا مَكْتُوْبٌ عَلَيْهَا لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ اَبُوْ بَكْرٍ نِ الصِّدِّيْقُ عُمَرُ الْفَارُوْقُ عُثْمَانُ ذُوْ النُّوْرَيْنِ

या'नी जन्नत में एक दरख़्त है जिस के हर पत्ते पर येह लिखा है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं **मुह़म्मद** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं, अबू बक्र सिद्दीक़ हैं, उ़मर फ़ारूक़ हैं, उ़स्मान जुन्नूरैन हैं।"(3)

क़ियामत में आप को "फ़ारूक़" नाम से पुकारा जाएगा

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़ियामत के दिन अपना और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का मक़ाम

---

1 ......انوار الحرمين على تفسير الجلالين، پ۵، النساء، تحت الآية: ۵۹، ج ۱، ص ۱۴، مدارک، پ۵، النساء، تحت الآية: ۵۹، ص ۲۳۴۔

2 ......رياض النضرة، ج ۱، ص ۲۷۳۔

3 ......معجم كبير، مجاهد عن ابن عباس، ج ۱۱، ص ۶۳، حديث: ۱۱۰۹۳۔

बयान फ़रमाया। फिर इरशाद फ़रमाया : ''क़ियामत में यूं निदा आएगी ''उ़मर फ़ारूक़'' कहां हैं ?'' चुनान्चे, उन्हें हाज़िर किया जाएगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : ''ऐ अबू ह़फ़्स ! तुम्हें मुबारक हो, येह है तुम्हारा आ'माल नामा, चाहो तो इसे पढ़ लो या न पढ़ो क्यूंकि मैं ने तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमा दी है।''(1)

फ़ारिक़, फ़ारूक़, फ़ारूक़ी और फ़ारूक़े आ'ज़म

''फ़ारिक़'' किसे कहते हैं ?

''फ़ारिक़'' का मा'ना है ''फ़र्क़ करने वाला'' क़त्ए़ नज़र इस के कि वोह ह़क़ व बात़िल दोनों में फ़र्क़ करे या कोई सी भी दो अश्या में फ़र्क़ करे। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी इस लिये ''फ़ारिक़'' कहते हैं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जिस त़रह़ ह़क़ व बात़िल के दरमियान फ़र्क़ फ़रमाया इसी त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी ख़िलाफ़ते राशिदा में हर हर शै को उस की मुतबादिल अश्या से जुदा कर के बिल्कुल वाज़ेह़ कर दिया।

आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن इरशाद फ़रमाते हैं :

फ़ारिक़े ह़क़्क़ो बात़िल इमामुल हुदा
तैग़े मस्लूले शिद्दत पे लाखों सलाम

शर्ह़ : ह़क़ को बात़िल व गुमराही से जुदा करने और हिदायत देने वाले इमामे बर ह़क़ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस तल्वार की मिस्ल हैं जो इस्लाम की ह़िमायत में सख़्ती से बुलन्द की जाती है आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर लाखों सलाम हों।

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब इस्लाम ले आए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की, कि : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अब हम छुप कर नमाज़ वग़ैरा अदा नहीं करेंगे।'' लिहाज़ा तमाम मुसलमानों ने **का'बतुल्लाह** शरीफ़ में जा कर नमाज़ अदा की तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़क़ को बात़िल से जुदा करने के सबब आप को ''**फ़ारूक़**'' लक़ब अ़त़ा फ़रमाया।(2)

---

(1) ......رياض النضرة، ج ١، ص ٢٧٣۔

(2) ......تاريخ الخلفاء، ص ٩٠۔

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों को हिदायत का रास्ता दिखाया और कुफ़्रो शिर्क की गुमराहियों के ख़िलाफ़ और दीने इस्लाम की रौशनियों व रा'नाइयों की हि़मायत में सख़्ती से तल्वार बुलन्द फ़रमाई जिस से चहार सू इस्लाम का बोल बाला हो गया । आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इन ही तमाम वाक़िआ़त की त़रफ़ इशारा फ़रमाया है :

तर्जुमाने नबी हम ज़ुबाने नबी
जाने शाने अ़दालत पे लाखों सलाम

शर्ह़ : आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हम ज़बान हैं कि कई दफ़्आ़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुने बिग़ैर कोई बात कही और वोह बि ऐ़निही वैसी ही निकली जैसा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया था । इसी त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तर्जुमान हैं कि कोई मस्अला बयान फ़रमाया और बा'द में सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से जब इस के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बि ऐ़निही वोही ह़दीसे मुबारका मिली जैसा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मस्अला बयान फ़रमाया था । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़द्लो इन्साफ़ की रूह़ को शानो शौकत ह़ासिल हुई बल्कि अपने अ़ह्दे ख़िलाफ़त में ऐसा अ़द्लो इन्साफ़ क़ाइम फ़रमाया जो क़ियामत तक आने वाले हुक्मरानों के लिये मश्अ़ले राह है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर लाखों सलाम हों ।

"फ़ारूक़" किसे कहते हैं ?

"फ़ारूक़" उसे कहते हैं जो ह़क़ व बात़िल के दरमियान फ़र्क़ कर दे ।

चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی इरशाद फ़रमाते हैं : قِیْلَ لِعُمَرَ فَارُوْقٌ لِفُرْقَانِہٖ بَیْنَ الْحَقِّ وَالْبَاطِلِ بِاِحْکَامٍ وَاِتْقَانٍ "या'नी कहा गया है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़ारूक़ इस लिये कहते हैं कि इन्हों ने ह़क़ व बात़िल के दरमियान पुख़्तगी और यक़ीन के ज़रीए़ फ़र्क़ फ़रमाया ।"(1)

"फ़ारूक़ी" किसे कहते हैं ?

"फ़ारूक़ी" का मत़लब है "फ़ारूक़ वाला" । जिस शख़्स का सिलसिलए नसब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से जा मिलता हो उसे "फ़ारूक़ी" कहते हैं

1 ......فیض القدیر، ج۵، ص۵۸۸، تحت الحدیث: ۷۹۲۰ ملتقطا۔

जिस त़रह़ किसी का सिलसिलए नसब अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से जा मिलता हो तो उसे "सिद्दीक़ी" कहते हैं।

"फ़ारूक़े आ'ज़म" किसे कहते हैं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हर सह़ाबी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह ख़ुसूसिय्यत है कि वोह ह़क़ व बात़िल के माबैन "**फ़ारिक़**" (या'नी फ़र्क़ करने वाला) हैं, लेकिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को "फ़ारूक़े आ'ज़म" इस वज्ह से कहा जाता है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से ज़ियादा इस फ़रीज़े को सर अन्जाम दिया और इस की सब से बड़ी वज्ह येह थी कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़क़ व बात़िल के दरमियान येह फ़र्क़ करने की सलाह़िय्यत बारगाहे रिसालत से ख़ास त़ौर पर अ़त़ा हुई थी। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जिस दिन इस्लाम लाए उसी दिन आप ने मुसलमानों के साथ ए'लानिय्या **का'बतुल्लाह** शरीफ़ में नमाज़ अदा की और त़वाफ़े **बैतुल्लाह** भी किया। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं कि "उस दिन दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद मेरा नाम "फ़ारूक़" रख दिया, क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे सबब से ह़क़ व बात़िल में इम्तियाज़ फ़रमा दिया।"[1]

(2).....लक़ब "अमीरुल मोमिनीन" और इस की वुजूहात

सब से पहले आप ही ने अमीरुल मोमिनीन का लक़ब पाया

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को तो ख़लीफ़ए रसूले ख़ुदा कहा जाता था, जब कि मुझे येह नहीं कहा जा सकता क्यूंकि मैं तो सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़लीफ़ा हूं और (अगर मुझे ख़लीफ़ए ख़लीफ़ए रसूले ख़ुदा कहा जाए तो) यूं बात त़वील हो जाएगी। येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शुअ़्बा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बोले : आप हमारे अमीर हैं और हम मोमिनीन, तो आप हुवे "**अमीरुल मोमिनीन**"। येह सुन कर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "येह सह़ीह़ है।"[2]

---

1 .....حلیۃ الاولیاء، عمر بن الخطاب، ج ۱، ص ۷۵، الرقم: ۹۳۔

2 .....الاستیعاب، عمر بن الخطاب، باب عمر، ج ۳، ص ۲۳۹ वाज़ेह़ रहे कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में भी मन्क़ूल है कि सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें "अमीरुल मोमिनीन" का लक़ब अ़त़ा फ़रमाया, लेकिन आप ख़ुलफ़ा में से न थे और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़लीफ़ा थे। (زرقانی علی المواهب، ج ۱، ص ۳۹۷)

लक़ब "अमीरुल मोमिनीन" की दूसरी वज्ह

हज़रते सय्यिदतुना शिफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا जो पहले हिजरत करने वाली औ़रतों में से हैं रिवायत करती हैं कि हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अमीरे इराक़ को लिखा कि मेरे पास दो तन्दुरुस्त व दाना इराक़ी आदमी भेजो जो मुझे यहां के ह़ालात से आगाह करें। तो इराक़ के गवर्नर ने हज़रते सय्यिदुना लबीद बिन रबीआ़ आ़मिरी और सय्यिदुना अ़दी बिन ह़ातिम त़ाई (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को भेजा। वोह मदीनए मुनव्वरा आए और अपनी सुवारियों को बिठा कर मस्जिद में दाख़िल हुवे जहां हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ मौजूद थे। उन्हों ने सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा : "आप अमीरुल मोमिनीन से हमारे ह़ाज़िर होने की इजाज़त त़लब करें।" येह सुन कर सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा : "खु़दा की क़सम ! तुम ने इन का सह़ीह़ नाम तजवीज़ किया है, हम मोमिनीन हैं, और वोह हमारे अमीर हैं।" सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ अन्दर गए और हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सामने यूं गोया हुवे : "**या अमीरल मोमिनीन** !" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सुना तो फ़रमाया : "येह नाम तुम कहां से ले आए हो ?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "लबीद बिन रबीआ़ और अ़दी बिन ह़ातिम त़ाई (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) आए हैं, इन्हों ने अपनी सुवारियां बाहर बिठाईं और मस्जिद में आ कर मुझ से कहा : "अमीरुल मोमिनीन के पास ह़ाज़िर होने की इजाज़त त़लब की जाए।" मैं ने उन से कहा : "तुम ने दुरुस्त नाम तजवीज़ किया है, वोह अमीर हैं और हम मोमिनीन।" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस से पहले अपने मक्तूबात (या'नी ख़ुत़ूत़) में "ख़लीफ़ए ख़लीफ़ए रसूल" लिखते थे, फिर आप ने "**मिन उ़मर अमीरिल मोमिनीन**" लिखना शुरूअ़ कर दिया।[(1)]

(3)......लक़ब "मुतम्मिमुल अरबईन" और इस की वज्ह

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का एक लक़ब "**मुतम्मिमुल अरबईन**" भी है, जिस का मा'ना है चालीस को पूरा करने वाला। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के इस्लाम लाने से क़ब्ल उन्तालीस लोग इस्लाम क़बूल कर चुके थे और आप ने क़बूले इस्लाम कर के चालीस मुकम्मल कर दिये इस लिये आप को "**मुतम्मिमुल अरबईन**" चालीस को पूरा करने वाला कहते हैं।[(2)]

---

1 ......اسد الغابہ، عمر بن الخطاب، ج ۴، ص ۱۸۱۔

2 ......معرفۃ الصحابۃ، باب الارقم بن ابی الارقم، ج ۱، ص ۲۹۳ ملتقطا۔

आ'ला ह़ज़रत अ़ज़ीमुल बरकत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इरशाद फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه उस वक़्त ईमान लाए जब कुल मर्द व औ़रत 39 मुसलमान थे। आप चालीसवें मुसलमान हैं, इसी वासिते़ आप का नाम "**मुतम्मिमुल अरबईन**" है या'नी चालीस मुसलमानों के पूरा करने वाले।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर 39 अफ़राद इस्लाम ला चुके थे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के मुसलमान होने पर चालीस की ता'दाद मुकम्मल हो गई तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام को भेज कर येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई : ﴿يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝﴾ (پ۱۰، الانفال:۶۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) **अल्लाह** तुम्हें काफ़ी है और येह जितने मुसलमान तुम्हारे पैरू हुवे।"(2)

(4)......लक़ब "आ'दलुल अस्ह़ाब" और इस की वज्ह

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه सब से ज़ियादा अ़द्लो इन्साफ़ फ़रमाने वाले थे, इसी सबब से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को "**आ'दलुल अस्ह़ाब**" कहा जाता था और ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को "**आ'दलु**"(सब से ज़ियादा अ़द्लो इन्साफ़ करने वाला) इरशाद फ़रमाया। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि **सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اَبُوْبَكْرٍ اَرَقُّ اُمَّتِيْ وَاَرْحَمُهَا وَعُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ

اَخْيَرُ اُمَّتِيْ وَاَعْدَلُهَا وَعُثْمَانُ اَحْيٰى اُمَّتِيْ وَاَكْرَمُهَا وَعَلِيُّ بْنُ اَبِيْ طَالِبٍ اَلَبُّ اُمَّتِيْ وَاَشْجَعُهَا

या'नी अबू बक्र मेरी उम्मत में सब से ज़ियादा नर्म व रह़्म दिल और उ़मर बिन ख़त़्त़ाब मेरी उम्मत में सब से बेहतर व सब से ज़ियादा अ़द्लो इन्साफ़ करने वाले और उ़स्मान मेरी उम्मत में सब से ज़ियादा बा ह़या और इ़ज़्ज़तदार जब कि अ़ली बिन अबी त़ालिब मेरी उम्मत में सब से ज़ियादा अ़क़्लमन्द और सब से ज़ियादा बहादुर हैं।"(3)

1.....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 397

2.....معجم كبير، احاديث عبدالله ابن عباس، ج ۱۲، ص ۴۷، حديث: ۱۲۴۷۰۔

3.....اتحاف الخيرة المهرة، كتاب المناقب، فيما اشترك فيه۔۔۔الخ، ج ۹، ص ۲۱۴، حديث: ۸۸۴۷ملتقطا۔

(5)......लक़ब "इमामुल आ़दिलीन" और इस की वज्ह

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में अ़द्लो इन्साफ़ का ऐसा अ़ज़ीमुश्शान निज़ाम क़ाइम फ़रमाया कि क़ियामत तक اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ तमाम हुक्मरान इस से फ़ैज़याब होते रहेंगे। और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द आने वाले कई हुक्मरानों ने आप ही के अ़द्लो इन्साफ़ से अ़द्ल करना सीखा। इसी वज्ह से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को "इमामुल आ़दिलीन" कहा जाता है। आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, आ़शिक़े माहे नबुव्वत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن ने भी "फ़तावा रज़विय्या शरीफ़" में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस लक़ब से याद फ़रमाया है।[1]

(6).....लक़ब "ग़ैज़ुल मुनाफ़िक़ीन" और इस की वज्ह

क़ुरआने मजीद पारह 26 सूरतुल फ़त्ह़ आयत नम्बर 29 में सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की ख़ुसूसिय्यात को वाज़ेह़ तौ़र पर बयान फ़रमाया गया है, जो पहली ख़ुसूसिय्यत बयान की गई है वोह है "اَشِدَّآءُ عَلَی الْكُفَّارِ" या'नी सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان कुफ़्फ़ार के मुआ़मले में बहुत सख़्त हैं। कुफ़्र की बदतरीन क़िस्म मुनाफ़क़त है, जिस का ज़ाहिर ईमान और बाति़न कुफ़्र हो वोह मुनाफ़िक़ है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह शान थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी ख़ुदादाद फ़ह्मो फ़िरासत से फ़ौरन मुनाफ़िक़ीन को पहचान लेते और उन की हर त़रह़ से पकड़ फ़रमाते नीज़ उन की इस्लाम दुश्मनी को बिल्कुल नाकाम बना देते। येही वज्ह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को "**ग़ैज़ुल मुनाफ़िक़ीन**" कहा जाने लगा या'नी मुनाफ़िक़ीन पर बहुत सख़्ती फ़रमाने वाले।

चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मश्हूर वाक़िआ़ है कि एक यहूदी और मुनाफ़िक़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास फ़ैसला करवाने गए तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यहूदी के ह़क़ में फ़ैसला फ़रमा दिया। इस के बा'द मुनाफ़िक़ ने फ़ारूक़े आ'ज़म की बारगाह से फ़ैसला कराने पर इसरार किया, जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उस के मुतअ़ल्लिक़ इल्म हुवा तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़ैसला न मानने के सबब उस मुनाफ़िक़ की गर्दन तन से जुदा कर दी।[2]

1.....फ़तावा रज़विय्या, जि. 6 स. 531

2.....مدارک، پ۵، النساء، تحت الآیۃ: ۵۹، ص ۲۳۴ ملخصا، درمنثور، پ۵، النساء، تحت الآیۃ: ۶۰، ج ۲، ص ۵۸۲۔

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن ने फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में जगह जगह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इसी लक़ब "**ग़ैज़ुल मुनाफ़िक़ीन**" को आप के नाम के साथ ज़िक्र फ़रमाया है, नीज़ आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल ख़ुत़बात बनाम "ख़ुत़बाते रज़विय्या" में भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नाम के साथ येह लक़ब मौजूद है।

(7)....लक़ब "सय्यिदुल मुह़द्दसीन" और इस की वज्ह

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को "**सय्यिदुल मुह़द्दसीन**" भी कहा जाता है। "**मुह़द्दस**" अ़रबी ज़बान में उस शख़्स को कहा जाता है जिसे सह़ीह़ और दुरुस्त बात का इल्हाम (या'नी रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से इशारा) हो। वोह जब भी कोई बात करे तो ह़क़ के मुवाफ़िक़ हो और यक़ीनन किसी बन्दे के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से येह बहुत बड़े मर्तबे और शरफ़ की बात है और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत से तमाम लोगों में सब से ज़ियादा मुशर्रफ़ फ़रमाया। और ख़ुद ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को "**मुह़द्दस**" इरशाद फ़रमाया।

चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "पिछली उम्मतों में कुछ लोग मुह़द्दस होते थे, अगर मेरी उम्मत में उन में से कोई होगा तो वोह बिलाशुबा उ़मर बिन ख़त़्त़ाब है।"[1]

अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی इरशाद फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़ास त़ौर पर ज़िक्र करने का सबब येह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कलाम की मुवाफ़िक़त में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़मानए मुबारका में ही बहुत सी आयात नाज़िल हो गई थीं। और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़मानए मुबारका के बा'द भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए हमेशा ह़क़ के मुवाफ़िक़ ही रही।[2]

---

1 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عمر بن الخطاب۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۵۲۷، حدیث: ۳۶۸۹۔

2 ......فتح الباری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عمر بن الخطاب۔۔۔الخ، ج ۸، ص ۴۴، تحت الحدیث: ۳۶۸۹ ملخصا۔

(8)....लक़ब "मुरादे रसूल" और इस की वज्ह

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को "मुरादे रसूल" भी कहा जाता है। क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुराद हैं और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मांगा। चुनान्चे, उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि शफ़ीउ़ल मुज़निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में यूं दुआ़ फ़रमाई : **اَللّٰھُمَّ اَعِزَّ الْاِسْلَامَ بِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ خَاصَّةً** या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ खुसूसन उ़मर बिन ख़त्ता़ब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) से इस्लाम को इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमा।[1] मा'लूम हुवा कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह हस्ती हैं जिन की इस्लाम आवरी के लिये दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से खुसूसी दुआ़ फ़रमाई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ गोया मुरादे रसूल हैं।

(9)....लक़ब "मिफ़्ताहुल इस्लाम" और इस की वज्ह

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप को "मिफ़्ताहुल इस्लाम" बनाया है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि दो जहां के ताजवर, सुल्ता़ने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक दिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देख कर मुस्कुरा दिये और इरशाद फ़रमाया : "ऐ इब्ने ख़त्ता़ब ! तुम्हें मा'लूम है कि मैं क्यूं मुस्कुराया ?" अ़र्ज़ किया : "**اَللّٰہُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم** या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही बेहतर जानते हैं।" फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अ़रफ़ात की रात तुम्हारी त़रफ़ शफ़्क़त व रह़मत की नज़र फ़रमाई और तुम्हें **मिफ़्ताहुल इस्लाम** (या'नी इस्लामी की चाबी) क़रार दिया।"[2]

(10)....लक़ब "शहीदुल मेह़राब" और इस की वज्ह

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक लक़ब "शहीदुल मेह़राब" भी है, इस की वज्ह भी बिल्कुल ज़ाहिर है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर क़ातिलाना ह़म्ला नमाज़े

---

1 ......ابن ماجه، كتاب السنة، فضل عمر رضی الله تعالی عنه، ج ۱، ص ۷۷، حديث: ۱۰۵۔

2 ......رياض النضرة، ج ۱، ص ۳۰۸۔

फ़ज्र में उस वक़्त हुवा जब आप ने इमामत शुरूअ़ करवाई यक़ीनन उस वक़्त आप मेह़राब में मौजूद थे और उसी से आप की शहादत हुई इसी लिये आप को **''शहीदुल मेह़राब''** कहा जाता है। आप की शहादत के तफ़्सीली वाक़िआ़त इसी किताब में विसाल के बाब में मुलाह़ज़ा कीजिये।

(11)....लक़ब "शैख़ुल इस्लाम" और इस की वज्ह

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर शैख़ुल इस्लाम हैं

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुह़म्मद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم) की बारगाह में एक क़ुरशी शख़्स आया और अ़र्ज़ करने लगा : हम आप को ख़ुत़बे में येह दुआ़ मांगते हुवे सुनते हैं : اَللّٰھُمَّ اَصْلِحْنَا بِمَا اَصْلَحْتَ بِهِ الْخُلَفَاءَ الرَّاشِدِیْنَ الْمَھْدِیِّیْنَ ''या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें भी उन ख़ूबियों के साथ आरास्ता फ़रमा जिन के साथ तू ने हिदायत याफ़्ता और हिदायत देने वाले ख़ुलफ़ा को आरास्ता फ़रमाया। तो उन ख़ुलफ़ा से मुराद कौन सी मुबारक हस्तियां हैं ?'' येह सुन कर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ग़मगीन हो गए और आप की आंखों से आंसू जारी हो गए, इरशाद फ़रमाया :

هُمْ حَبِیْبَایَ اَبُوْ بَكْرٍ وَعُمَرُ اِمَامَا الْهُدٰی وَشَیْخَا الْاِسْلَامِ وَرَجُلَا قُرَیْشٍ وَالْمُقْتَدٰی بِهِمَا بَعْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ مَنِ اقْتَدٰی بِهِمَا عُصِمَ وَمَنِ اتَّبَعَ آثَارَهُمَا هُدِیَ الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ وَ مَنْ تَمَسَّكَ بِهِمَا فَهُوَ مِنْ حِزْبِ اللّٰهِ وَحِزْبُ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ

''या'नी मेरी मुराद मेरे दो मह़बूब व दोस्त ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) हैं, येह दोनों हिदायत के इमाम हैं, शैख़ुल इस्लाम हैं, मर्दाने क़ुरैश हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द इन ही दोनों की इक़्तिदा की जाती है, जिस ने इन दोनों की इक़्तिदा की वोह मह़फ़ूज़ हो गया और जिस ने इन दोनों की सीरते त़य्यिबा पर अ़मल किया वोह सिरात़े मुस्तक़ीम पर चल पड़ा और जिस ने इन दोनों की ज़ाते मुबारका को मज़बूत़ी से थाम लिया तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के गुरौह में शामिल हो गया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही का गुरौह फ़लाह़ पाने वाला है।''(1)

(1)......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب التاسع عشر، ص ۱۴۔

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं : مَنْ رَاَيْتُمُوْهُ يَذْكُرُ اَبَابَكْرٍ وَعُمَرَ بِسُوْءٍ فَاقْتُلُوْهُ فَاِنَّمَا يُرِيْدُ الْاِسْلَامَ ''या'नी जिसे तुम देखो कि वोह शैख़ैन या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बुराई बयान कर रहा है तो उसे क़त्ल कर दो क्यूंकि वोह इस्लाम की बुराई कर रहा है।''(1)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इस ह़दीसे मुबारका की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : ''या'नी उस शख़्स ने सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर व सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की बुराई कर के इस्लाम की बुराई की है और इस में ऐ़ब निकाला है क्यूंकि येह दोनों **शैख़ुल इस्लाम** हैं और इन ही के ज़रीए़ दीन की बुन्यादें क़ाइम हैं, गोया इन की बुराई करना इस्लाम की बुराई करना है, क़त्ल का हुक्म उस शख़्स के लिये जो इन की शान में ऐसी तौहीन आमेज़ बकवास करे जो कुफ़्रिय्यात पर मुश्तमिल हो।''(2)

वाज़ेह़ रहे कि मज़्कूरा गुस्ताख़ शख़्स को क़त्ल करने का इख़्तियार ह़ाकिमे इस्लाम को है आ़म शख़्स के लिये नहीं।

अल्क़ाबाते फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने आ'ला ह़ज़रत

आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, आ़शिक़े माहे नबुव्वत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इन ग्यारह अल्क़ाबात के साथ याद फ़रमाया है : (1) अमीरुल मोमिनीन (2) ग़ैज़ुल मुनाफ़िक़ीन (3) इमामुल आ़दिलीन (4) इस्लाम की इ़ज़्ज़त (5) इस्लाम की शौकत (6) इस्लाम की क़ुव्वत (7) इस्लाम की दौलत (8) इस्लाम के ताज (9) इस्लाम की मे'राज (10) **इ़ज़्ज़ुल इस्लामि वल मुस्लिमीन** या'नी इस्लाम और मुसलमानों की इ़ज़्ज़त (11) **सय्यिदुल मुह़द्दसीन**।(3)

अल्क़ाबाते फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने अमीरे अहले सुन्नत

आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, अमीरे अहले सुन्नत, शैख़े त़रीक़त, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने रिसाले ''**करामाते**

---

1 ......جامع صغیر، حرف المیم، ص ۵۲۷، حدیث: ۸۲۹۱۔

2 ......فیض القدیر، ج ۶، ص ۱۷۳، تحت الحدیث: ۸۲۹۱ ملخصا۔

3 .....फ़तावा रज़विय्या, जि. 22, स. 404, 643, जि. 10 स. 767, जि. 15, स. 575.

फ़ारूक़े आ'ज़म'' में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उन के चालीसवें नम्बर पर मुसलमान होने की अ़ज़ीम निस्बत से इन चालीस अल्क़ाबात के साथ याद फ़रमाया है : (1) अमीरुल मोमिनीन (2) वज़ीरे रिसालत मआब (3) आस्माने सह़ाबिय्यत के दरख़्शां माहताब (4) निज़ामे अ़द्ल के रौशन आफ़्ताब (5) ह़ामिये दीने मतीन (6) नासिरे दीने मुबीन (7) मोह़सिने उम्मत (8) गोहरे नायाब (9) फ़ैज़ाने नबुव्वत से फ़ैज़याब (10) ख़लीफ़ए रिसालत मआब (11) बारगाहे नबुव्वत से फ़ैज़याब (12) आस्माने रिफ़्अ़त के दरख़्शां माहताब (13) **मुह़िब्बुल मुस्लिमीन** (14) **ग़ैज़ुल मुनाफ़िक़ीन** (15) **इमामुल आ़दिलीन** (16) **मुतम्मिमुल अरबईन** (17) फ़ातेह़े आ'ज़म (18) वज़ीरे शहनशाहे नबुव्वत (19) रुक्ने क़स्रे मिल्लत (20) जा नशीने रसूले मक़्बूल (21) गुलशने सह़ाबिय्यत के महकते फूल (22) जा नशीने पैग़म्बर (23) वज़ीरे नबिय्ये अत़्हर (24) मम्बए़ इल्मो हुनर (25) निगाहे नबुव्वत से फ़ैज़ याफ़्ता (26) बारगाहे रिसालत से तरबिय्यत याफ़्ता (27) मुद्दआए रसूल (28) रफ़ीक़े रसूल (29) **मुशीरे रसूल** (30) जा निसारे रसूल (31) मह़बूबे जनाबे सादिक़ो अमीन (32) **सय्यिदुल ख़ाइफ़ीन** (33) करामत व अ़द्ल की आ'ला मिसाल (34) साह़िबे अ़ज़्मतो जलाल (35) **हुज्जतुल्लाहि अ़लल आ़लमीन** (36) वज़ीरे सय्यिदुल मुर्सलीन (37) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के प्यारे (38) आस्माने हिदायत के चमकते दमकते सितारे (39) दुखी दिल के सहारे (40) गुलामाने मुस्त़फ़ा की आंखों के तारे।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ारूक़े आ'ज़म की पैदाइश और जाए परवरिश

फ़ारूक़े आ'ज़म की पैदाइश

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आ़मुल फ़ील के तेरह साल बा'द पैदा हुवे, यूं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तारीख़े विलादत 583 ईसवी तक़रीबन 41 साल क़ब्ले हिजरत है। ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आ़मुल फ़ील के ढाई साल बा'द पैदा हुवे यूं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से उ़म्र में तक़रीबन साढ़े दस साल छोटे हैं और सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चूंकि आ़मुल फ़ील के साल दुन्या में तशरीफ़ लाए यूं आप रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से उ़म्र में तक़रीबन तेरह साल छोटे हैं।[2]

---

1 .....करामाते फ़ारूक़े आ'ज़म, अज़ अमीरे अहले सुन्नत (دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ)

2 ......اسد الغابۃ، عمر بن خطاب، ج۴، ص۱۵۷ ماخوذاً۔

फ़ारूके़ आ'ज़म की पैदाइश पर ख़ुशी का इज़्हार

हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पैदाइश पर आप के घर वालों ने ख़ुशी का इज़्हार किया। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक दिन हम बैठे थे कि अचानक हम ने शोर की आवाज़ सुनी, दरयाफ़्त करने पर मा'लूम हुवा कि ख़त्ताब के घर बेटा पैदा हुवा है।[1]

अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन वह्ब और वोह मालिक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ह़वाले से बयान करते हैं कि एक रात हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़त्ताब के घर में रौशनियां नज़र आईं, पूछने पर मा'लूम हुवा कि ख़त्ताब के घर बेटा पैदा हुवा है।[2] (या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पैदा हुवे।)

फ़ारूके़ आ'ज़म की जाए परवरिश

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मक्कए मुकर्रमा में ही पैदा हुवे और मक्कए मुकर्रमा ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जाए परवरिश है, बचपन से ले कर जवानी तक, नीज़ मदीनए मुनव्वरा हिजरत से क़ब्ल तक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मक्कए मुकर्रमा में ही ज़िन्दगी गुज़ारी।

दौरे जाहिलिय्यत में फ़ारूके़ आ'ज़म का घर

हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन सा'द رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उमूरे मक्का के आ़लिम हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन मुह़म्मद मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی से पूछा : "ज़मानए जाहिलिय्यत में अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का घर कहां था ?" आप ने फ़रमाया : "सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रिहाइश गाह उस पहाड़ पर थी जो आज कल "जबले उ़मर" के नाम से मश्हूर है, ज़मानए जाहिलिय्यत में इस का नाम "आ़क़िर" था फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नाम से मन्सूब कर दिया गया, इसी पहाड़ पर क़बीलए बनू अ़दिय्य (सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़बीला) आबाद था।[3]

---

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۱۶۔

2 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الاول، ص ۱۳۔

3 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۰۱۔

फ़ारूके आ'ज़म का हुस्ने ज़ाहिरी

फ़ारूके आ'ज़म की मुबारक रंगत

हज़रते सय्यिदुना इब्ने कुतैबा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि "कूफ़ा के लोगों ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का जो हुल्या बयान किया है उस के मुताबिक़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का रंग गहरा गन्दुमी था। जब कि अहले हिजाज़ ने जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हुल्या बयान किया है उस के मुताबिक़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रंगत बहुत सफ़ेद थी बल्कि ऐसी सफ़ेद थी जैसे चूना होता है और लगता था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जिस्मे मुबारक में ख़ून ही नहीं हैं।"(1)

अ़ल्लामा वाक़िदी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि "जिन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के गन्दुमी रंग होने का क़ौल किया है उन की बात दुरुस्त नहीं कि उन्हों ने आप को "**आ़मुर्रमादा**" या'नी क़हूत़ साली वाले साल देखा था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस साल दूध और चर्बी वग़ैरा खाना छोड़ दिया था सिर्फ़ ज़ैतून का तेल इस्ति'माल फ़रमाते जिस के सबब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रंगत गन्दुमी हो गई थी।" अ़ल्लामा इब्ने हजर अ़स्क़लानी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने भी बा'ज़ फ़ारूक़ी हज़रात से येही क़ौल नक़्ल किया है।(2)

फ़ारूके आ'ज़म का क़द्दे मुबारक

हज़रते सय्यिदुना ज़र बिन हुबैश رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और अक्सर लोगों ने येही बयान किया है कि **كَانَ عُمَرُ طَوِيْلًا جَسِيْماً** या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लम्बे क़द वाले और भारी जिस्म वाले थे।" चन्द लोगों में जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खड़े होते तो यूं मा'लूम होता था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दीगर लोगों को ऊपर से देख रहे हैं।(3)

फ़ारूके आ'ज़म की मुबारक आंखें और रुख़्सार

हज़रते सय्यिदुना ज़र बिन हुबैश رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आंखें लाल-सुर्ख़ और रुख़्सार बहुत ही पतले और कमज़ोर थे।(4)

---

1 ......معرفة الصحابة، معرفة نسبة الفاروق، معرفة صفة عمر، ج ۱، ص ۶۹، الرقم: ۱۷۰ ملتقطا، رياض النضرة، ج ۱، ص ۲۷۴۔

2 ......تاريخ الخلفاء، ص ۱۰۳، الاصابة، عمر بن الخطاب، ج ۴، ص ۴۸۴، الرقم: ۵۷۵۲۔

3 ......معرفة الصحابة، معرفة نسبة الفاروق، معرفة صفة عمر، ج ۱، ص ۶۹، الرقم: ۱۷۰، رياض النضرة، ج ۱، ص ۲۷۴، تاريخ الخلفاء، ص ۱۰۳۔

4 ......معرفة الصحابة، معرفة نسبة الفاروق، معرفة صفة عمر، ج ۱، ص ۶۹، الرقم: ۱۷۰ ملتقطا۔

फ़ारूक़े आ'ज़म की दाढ़ी मुबारका

हज़रते सय्यिदुना अबू उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ''كَانَ كَثَّ اللِّحْيَةِ'' या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दाढ़ी मुबारका घनी व घुंगरियाली थी।''[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म की दाढ़ी घनी थी

आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ''शैख़े मुहक़्क़िक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मदारिजुन्नबुव्वत में फ़रमाते हैं :

عادت سلف دریں باب مختلف بود آوردہ اند کہ لحیہ امیر المومنین علی پر می کرد سینہ اُورا وھمچنیں
عمر وعثمان رضی اللہ تعالی عنہم اجمعین و نوشتہ اند کان الشیخ محی الدین رضی اللہ تعالی عنہ طویل اللحیۃوعریضھا

या'नी अस्लाफ़ की आ़दत इस बारे में मुख़्तलिफ़ थी चुनान्चे, मन्क़ूल है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दाढ़ी इन के सीने को भर देती थी इस त़रह़ हज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म और हज़रते उ़स्मान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की मुबारक दाढ़ियां थीं, और लिखते हैं कि शैख़ मोह़युद्दीन सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लम्बी और चौड़ी दाढ़ी वाले थे।''[2]

फ़ारूक़े आ'ज़म की मूंछें

(1) अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मूंछें दरमियान से पस्त और दाएं बाएं से बढ़ी हुई थीं। हज़रते सय्यिदुना ज़र बिन हुबैश رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : سَبَلَتُهُ كَثِيْرَةُ الشَّعْرِ اَطْرَافُهَا صَهْبَةٌ ''या'नी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मूंछों के बाल दाएं बाएं से काफ़ी बढ़े हुवे थे और उन में भूरा पन भी था।''[3]

---

1 ..... الاستیعاب، عمر بن الخطاب، ج ٣، ص ٢٣٦۔

2 ..... फ़तावा रज़विय्या, जि. 22, स. 584

3 ..... معرفۃ الصحابۃ، معرفۃ نسبۃ الفاروق، معرفۃ صفۃ عمر، ج ١، ص ٦٩، الرقم: ١٧٠۔ الاستیعاب، عمر بن الخطاب، ج ٣، ص ٢٣٦۔

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं : كَانَ عُمَرُ اِذَا غَضِبَ فَتَلَ شَارِبَهُ "या'नी अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जलाल आता तो अपनी मूंछों को ताव देते थे।"[1]

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना अस्लम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि "अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जब जलाल आता तो अपनी मूंछों को अपने मुंह की त़रफ़ करते और इन में फूंक मारते।"[2]

फ़ारूके़ आ'ज़म मेहंदी से ख़िज़ाब फ़रमाते

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं :

قَدِ اخْتَضَبَ اَبُو بَكْرٍ بِالْحِنَّاءِ وَالْكَتَمِ وَاخْتَضَبَ عُمَرُ بِالْحِنَّاءِ بَحْتًا يَعْنِىْ خليفۂ رسول الله

"ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मेहंदी और कतम दोनों का ख़िज़ाब लगाया और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़क़त़ मेहंदी का ख़िज़ाब लगाया।"[3]

(2) एक रिवायत में यूं है फ़रमाया : كَانَ عُمَرُ يُرَجِّلُ بِالْحِنَّاءِ "या'नी सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने बालों को मेहंदी से आरास्ता किया करते थे।" ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन अबी बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं : كَانَ عُمَرُ يُصَفِّرُ لِحْيَتَهُ وَيُرَجِّلُ رَأْسَهُ بِالْحِنَّاءِ "या'नी सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी दाढ़ी और सर में मेहंदी लगाया करते थे।"[4]

फ़ारूके़ आ'ज़म से मुशाबे सहाबी

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाहिरी शक्लो सूरत के मुशाबे थे।[5]

---

1 ......معجم کبیر، صفۃ عمر بن الخطاب، ج ۱، ص ۶۶، حدیث: ۵۴، الاستیعاب، عمر بن الخطاب، ج ۳، ص ۲۳۶۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۴۸۔

3 ......مسلم، کتاب الفضائل، باب شیبۃ صلی اللہ علیہ وسلم، ص ۱۲۷۶، حدیث: ۱۰۳۔

4 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۴۹۔

5 ......الاصابۃ، علقمۃ بن علاثۃ، ج ۴، ص ۴۵۸، الرقم: ۵۶۹۱۔

फ़ारूके़ आ'ज़म के मुबारक अन्दाज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुस्ने ज़ाहिरी को पढ़ कर ऐसा लगता है जैसे उन का प्यारा सरापा हमारे सामने मौजूद है, साथ ही दिल में येह भी ख़याल आता है कि इस प्यारी हस्ती के चलने, खाने, सोने वग़ैरा के भी कितने ही प्यारे और मुबारक अन्दाज़ होंगे ! अगर्चे इसी किताब में आगे येह तमाम बातें बित्तफ़्सील ज़िक्र की जाएंगी लेकिन क़ारिईन के ज़ौक़ को बर क़रार रखने के लिये इजमालन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के चन्द मुबारक अन्दाज़ पेशे ख़िदमत हैं।

﴾1﴿.....फ़ारूके़ आ'ज़म के चलने का मुबारक अन्दाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना सिमाक बिन ह़र्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं : كَانَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ اَرْوَحَ كَاَنَّهٗ رَاكِبٌ وَالنَّاسُ يَمْشُوْنَ ''या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कुशादा क़दमों के साथ चला करते थे और चलते हुवे ऐसा लगता गोया आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किसी सुवारी पर सुवार हैं और दीगर लोग पैदल चल रहे हैं।''(1)

﴾2﴿.....फ़ारूके़ आ'ज़म के खाने का मुबारक अन्दाज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत ही मुत्तक़ी और परहेज़गार थे, क़त्ई जन्नती होने के बा वुजूद हमेशा फ़िक्रे आख़िरत दामन गीर रहती थी और येही फ़िक्र आप को भूका रहने पर उक्साती रहती थी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़ुरािक निहायत ही क़लील थी, कभी जव की रोटी के साथ जै़तून, कभी दूध, कभी सिर्का, कभी सुखाया हुवा गोश्त तनावुल फ़रमाते, ताज़ा गोश्त बहुत ही कम इस्ति'माल करते थे, कभी दो खाने इकठ्ठे नहीं खाए। मन्सबे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन होने के बा'द तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ऐसी खुश्क रोटी खाया करते थे कि आ़म लोग उसे खाने से आ़जिज़ आ जाएं। नीज़ खाना खाते हुवे रोटी के किनारों को अ़लाहिदा कर के खाना आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सख़्त ना पसन्द था।(2)

1.....رياض النضرة، ج ا، ص ۲۷۴، الاصابة، ذكر من اسمه عمر، ج ۴، ص ۴۸۵، الرقم: ۵۷۵۲۔

2.....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सादगी से भरपूर मुबारक खानों की तफ़्सील के लिये **''फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म''** जिल्द दुवुम, स. 80 का मुत़ालआ़ फ़रमाइये।

﴾3﴿.....फ़ारूक़े आ'ज़म के गुफ़्तगू करने का मुबारक अन्दाज़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बोलने और बात करने का निहायत ही मुबारक अन्दाज़ था, आ़म मुआ़मलात में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की गुफ़्तगू का अन्दाज़ बहुत नर्म था लेकिन आप के चेहरए मुबारका की वजाहत और रो'ब व दबदबे की वज्ह से उस में शिद्दत मह़सूस होती। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त में लोगों को सब से ज़ियादा ह़क़ बात कहने का हौसला मिला। लेकिन जहां कहीं शरई मुआ़मले की ख़िलाफ़ वर्ज़ी होती वहां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सख़्ती फ़रमाते और यक़ीनन येह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ग़ैरते ईमानी का मुंह बोलता सुबूत था। बीसियों वाक़िआ़त ऐसे मिलते हैं कि जहां कहीं इस्लामी ग़ैरत का मुआ़मला आता वहां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ौरन जलाल में आ जाते।

﴾4﴿.....फ़ारूक़े आ'ज़म के बैठने का मुबारक अन्दाज़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुकम्मल सीरते त़य्यिबा पर नज़र डाली जाए तो येह बात ज़ाहिर होती है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बैठते बहुत कम थे हर वक़्त किसी न किसी काम में मसरूफ़ रहा करते थे, अलबत्ता जब बैठते थे तो चार ज़ानूं बैठा करते थे, चुनान्चे, इमाम ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है : كَانَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ يَجْلِسُ مُتَرَبِّعاً "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उ़मूमन चार ज़ानूं बैठा करते थे।"[1]

﴾5﴿.....फ़ारूक़े आ'ज़म के सोने का मुबारक अन्दाज़

बसा औक़ात आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लेटते तो एक टांग को दूसरी टांग पर चढ़ा लिया करते थे। चुनान्चे, इमाम ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है : كَانَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ يَسْتَلْقِيْ عَلٰى ظَهْرِهٖ وَيَرْفَعُ اِحْدٰى رِجْلَيْهِ عَلَى الْاُخْرٰى "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब लेटते तो एक टांग को दूसरी टांग पर चढ़ा लिया करते थे।"[2]

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۲۳۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۲۳ ملتقطا۔

ज़मीन पर ही आराम फ़रमाते

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उ़मूमन ऐसा होता है कि जिसे कोई मन्सब मिल जाए अगर्चे वोह उस मन्सब पर मुतमक्किन होने से पहले सादा ज़िन्दगी गुज़ारता हो लेकिन मन्सब मिलने के बा'द उस के त़ौर त़रीक़े में कुछ न कुछ तब्दीली ज़रूर वाक़ेअ़ हो जाती है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी जैसे ही मन्सबे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन हुवे उन की ह़याते मुबारका में भी काफ़ी तब्दीली आ गई लेकिन येह तब्दीली फ़िक्रे आख़िरत से भरपूर थी, पहले आप आ़म ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे लेकिन जैसे ही मन्सबे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन हुवे तो ज़मीन पर कुछ बिछाए बिग़ैर ही आराम फ़रमा हो जाते और दौराने सफ़र कोई साइबान या ख़ैमा वग़ैरा साथ न रखते बल्कि कहीं पड़ाव करना होता तो कपड़ा दरख़्त पर लटका कर या चमड़े का टुकड़ा दरख़्त पर डाल कर उस के साए में आराम कर लेते। जैसा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते त़य्यिबा का मश्हूर वाक़िआ़ है कि रूम का ऐलची आप के बारे में दरयाफ़्त करता हुवा जब आप के पास पहुंचा तो आप ज़मीन पर आराम फ़रमा रहे थे। वोह येह देख कर ह़ैरान व शशदर रह गया कि मुसलमानों का अमीर कितने सुकून से ज़मीन पर आराम फ़रमा है ह़ालांकि इस के रो'ब और जलाल से क़ैसरो किसरा कांपते हैं।(1)

﴾6﴿.....फ़ारूक़े आ'ज़म के काम करने का मुबारक अन्दाज़

बसा औक़ात हुक्मरानों में ऐसा भी होता है कि अपने हाथ से बहुत ही कम काम करते हैं अक्सर हुक्म दे कर अपने मा तह़तों से काम लेने को तरजीह़ देते हैं लेकिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते मुबारका में ऐसी कोई आ़दत न थी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दोनों हाथों से बयक वक़्त काम करने में महारत रखते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान बिन अक्वअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं : **كَانَ عُمَرُ رَجُلًا اَعْسَرَ يَعْنِي يَعْتَمِدُ بِيَدَيْهِ جَمِيْعاً** ''या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने दोनों हाथों से अच्छी त़रह़ काम करने वाले थे।(2)

1.....تاریخ الاسلام، ج۳، ص۲۶۹، تفسیر کبیر، پ۱۵، الکهف، تحت الآیة:۹، ج۷، ص۴۳۳۔

2.....تاریخ الخلفاء، ص۱۰۳۔

﴾7﴿.....फ़ारूक़े आ'ज़म के सफ़र करने का मुबारक अन्दाज़

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसे हज़र या'नी सफ़र के इलावा ज़िन्दगी में निहायत ही सादगी इख़्तियार फ़रमाते थे बि ऐ़निही सफ़र में भी आप की येही आ़दते मुबारका थी, न तो आप अपने साथ कोई ख़ैमा वग़ैरा लेते और न ही कोई साइबान, जहां क़ियाम करना होता तो कहीं ज़मीन पर कपड़ा बिछा कर उसी पर लेट जाते और कभी तो दरख़्त पर चादर डाल कर उस के साए में आराम फ़रमाते। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ ह़ज अदा किया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सफ़र में जहां कहीं पड़ाव किया न तो वहां ख़ैमा लगाया और न ही साइबान, बस दरख़्त पर चादर और चमड़े का बड़ा टुकड़ा डाल देते और उस के साए में बैठ जाते।(1)

﴾8﴿.....फ़ारूक़े आ'ज़म के लिबास का मदनी अन्दाज़

अमीरुल मोमिनीन होने के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कभी शाहाना लिबास को तरजीह़ न दी हमेशा सादा लिबास ही पहना। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सिर्फ़ एक जुब्बा पहना करते थे और उस में भी जगह जगह पैवन्द लगे हुवे थे, कहीं कहीं उस में चमड़े का भी पैवन्द लगा होता था। बा'ज़ औक़ात ऐसा भी देखने में आया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़मीस पर तीन पैवन्द जब कि तेहबन्द पर बारह पैवन्द लगे हुवे थे। यहां तक कि जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बैतुल मुक़द्दस तशरीफ़ ले गए तो आप के लिबास पर चौदह पैवन्द लगे हुवे थे।(2)

﴾9﴿.....फ़ारूक़े आ'ज़म की मुस्कुराहट

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन हुक्मरानों के सरदार थे जिन पर फ़िक्रे आख़िरत ही ग़ालिब रहती थी, फ़िक्रे आख़िरत के सबब उन्हें कभी कोई ऐसा मौक़अ़ ही न मिलता था कि वोह खिल खिला कर हंसते। अ़ह्दे रिसालत में जब बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर होते तो बसा औक़ात रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मुस्कुराहटों का

---

1 .....تاریخ الاسلام، ج۳، ص۲۶۹۔

2 .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुबारक मदनी लिबास की तफ़्सील के लिये **"फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म"** जिल्द दुवुम, बाब फ़ारूक़े आ'ज़म ब हैसिय्यते ख़लीफ़ा, स. 89 का मुतालआ़ फ़रमाइये।

तबादला हो जाता था। क्यूंकि इन की ख़ुशी महबूब की ख़ुशी में थी, जब येह देखते कि आज महबूब ख़ुश हैं तो येह भी ख़ुश हो जाते। अलबत्ता आप के अ़ह्दे ख़िलाफ़त की कोई ऐसी वाज़ेह़ रिवायत नहीं मिलती कि जिस में आप के हंसने का तज़्किरा हो अलबत्ता उ़लमाए किराम ने इस बात को ज़रूर बयान फ़रमाया है कि आप बहुत ही कम हंसते थे। चुनान्चे, अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی फ़रमाते हैं : كَانَ قَلِيْلَ الضِّحْکِ "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बहुत ही कम हंसने वाले थे।"(1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ज़मानए जाहिलिय्यत की ज़िन्दगी

फ़ारूक़े आ'ज़म का बचपन

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का बचपन निहायत ही तक्लीफ़ों में गुज़रा आप का वालिद त़बीअ़त के ए'तिबार से बहुत सख़्त और अपने कुफ़्रिय्या मज़्हब के मुआ़मले में बहुत शिद्दत रखता था। और ख़ुसूसन ता'लीमो तरबिय्यत से तो उसे बहुत शदीद नफ़रत थी और येह सिर्फ़ उसी की ख़ासिय्यत नहीं थी बल्कि पूरे अ़रब में ही पढ़ने पढ़ाने को बहुत मा'यूब समझा जाता था, और अपनी इसी जाहिलिय्यत की वज्ह से पूरा अ़रब कुफ़्र की अ़मीक़ तारीकियों के साथ साथ अख़्लाक़े रज़ीला की पस्तियों में गिर रहा था।

फ़ारूक़े आ'ज़म बचपन में ऊंट चराया करते थे

आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه गुज़र बसर के लिये अपने वालिद के ऊंट चराया करते थे। और जब कुछ बड़े हुवे तो वालिद के ऊंटों के साथ साथ क़बीलए बनी मख़्ज़ूम के ऊंट भी चराया करते। वाज़ेह़ रहे कि अ़रब में ऊंटों या बकरियों को चराना कोई मा'यूब अ़मल नहीं था बल्कि येह उन का क़ौमी शिआ़र था। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जिस मैदान में ऊंट चराया करते थे उस का नाम "ज़जनान" था जो मक्कए मुकर्रमा से तक़रीबन पन्दरह मील दूर है। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अपनी ह़याते त़य्यिबा का आख़िरी ह़ज अदा कर के उसी मक़ाम से गुज़रे तो आप को अपना बचपन याद आ गया और इरशाद फ़रमाया :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يُعْطِىْ مَنْ
يَّشَاءُ مَا يَشَاءُ لَقَدْ كُنْتُ بِهٰذَا الْوَادِىْ يَعْنِىْ ضَجْنَانَ اَرْعَى اِبِلاً لِلْخَطَّابِ وَكَانَ فَظًّا غَلِيْظًا يُتْعِبُنِىْ
اِذَا عَمِلْتُ وَيَضْرِبُنِىْ اِذَا قَصَرْتُ وَقَدْ اَصْبَحْتُ وَاَمْسَيْتُ وَلَيْسَ بَيْنِىْ وَبَيْنَ اللّٰهِ اَحَدٌ اَخْشَاهُ

1 ......مناقب امیر المؤمنین لابن الجوزی، الباب الثالث، ص ۱۴۔

"या'नी तमाम ता'रीफ़ें उस रब عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह जिसे चाहता है जो चाहता है अ़ता फ़रमाता है, एक वोह ज़माना था कि मैं इसी वादी ज़जनान में अपने वालिद ख़त्ताब के ऊंट चराया करता था और वोह बहुत सख़्त तबीअ़त का मालिक था, मुझ से काम करवा कर थका देता, जब मैं कोई कोताही करता तो मुझे मारता, मेरे सुब्ह़ो शाम यूं ही गुज़रते और आज (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से) वोह दिन है कि मेरे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के माबैन कोई ऐसा शख़्स नहीं जिस का मुझे ख़ौफ़ हो।"[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म की जवानी

दौरे जाहिलिय्यत में फ़ारूक़े आ'ज़म की सिफ़ात

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के शबाब (जवानी) का जब आग़ाज़ हुवा तो उन उमूर की त़रफ़ तवज्जोह की जो शुरफ़ाए अ़रब का मा'मूल थे, अ़रब में उस वक़्त जिन चीज़ों की ता'लीमो तरबिय्यत दी जाती थी और जो उमूर शराफ़त के लिये लाज़िम ख़याल किये जाते थे उन में नसब दानी, सिपह गरी, पहलवानी और ख़ित़ाबत जैसी सिफ़ात सरे फ़ेहरिस्त थीं। दौरे जाहिलिय्यत में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी ज़ात में येह तमाम सिफ़ात पैदा कर लीं थीं जिन का उस वक़्त शुरफ़ाए क़ुरैश व रुअसाए क़ुरैश में पाया जाना ज़रूरी था, बा'ज़ सिफ़ात तो आप को विरसे में मिली थीं, जब कि बा'ज़ आप ने ख़ुद ही कोशिश कर के अपने अन्दर पैदा कर लीं थीं। ज़मानए जाहिलिय्यत में आप की ज़ात में पाई जाने वाली चन्द सिफ़ात का तज़किरा पेशे ख़िदमत है :

फ़ारूक़े आ'ज़म और लिखने पढ़ने की सिफ़त

जवानी में क़दम रखते ही आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले इस बात की त़रफ़ तवज्जोह की, कि लिखना पढ़ना सीखना चाहिये लिहाज़ा आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लिखना पढ़ना सीख लिया। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़मानए जाहिलिय्यत में ही लिखना पढ़ना जानते थे इस बात का अन्दाज़ा आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ईमान लाने वाले वाक़िए से भी लगाया जा सकता है जब आप की सगी बहन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे जमील फ़ातिमा बिन्ते ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़ुरआनी सह़ीफ़ा दिया जिस में सूरए त़ाहा की आयात वग़ैरा लिखी थीं तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बिग़ैर किसी

1 ......الاستيعاب، عمر بن الخطاب، ج ٣، ص ٢٤٣ ، معجم البلدان، باب الضاد والجيم، ج ٣، ص ٢٢٥-

की मदद के उसे रवानी से पढ़ना शुरूअ़ कर दिया और क़ुरआनी आयात की मिठास आप के रगो पै में फ़ौरन सरायत कर गई, जो आप के क़बूले इस्लाम का बाइ़स बनी।[1]

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश में इम्तियाज़ी ख़ुसूसिय्यत

मुअर्रिख़ीन व सीरत निगारों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिखने पढ़ने को एक इम्तियाज़ी ख़ुसूसिय्यत के तौ़र पर बयान किया है इस की दो बुन्यादी वुजूहात हैं एक तो येह कि जिस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लिखना पढ़ना सीखा उस वक़्त लिखने पढ़ने को बहुत मा'यूब समझा जाता था। दूसरा येह कि क़ुरैश में जब इस्लाम दाख़िल हुवा उस वक़्त क़रशी क़बाइल में सिर्फ़ सतरह आदमी लिखना जानते थे इन ही में से एक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी थे।[2]

﴾2﴿.....फ़ारूके़ आ'ज़म और अ़बरानी ज़बान का इ़ल्म

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में तौरात का एक नुस्ख़ा लाए और अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह तौरात का नुस्ख़ा है।" सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ामोश रहे और कोई जवाब न दिया तो आप ने उसे पढ़ना शुरूअ़ किया। सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए मुबारका का रंग मुतग़य्यिर होना शुरूअ़ हो गया, आप को इस कैफ़िय्यत का मा'लूम न था, जब सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तवज्जोह मबज़ूल करवाई तो आप डर गए और बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ करने लगे : "मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ज़ब से रब तआ़ला की पनाह मांगता हूं, हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रब होने, इस्लाम के दीन होने और मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नबी होने पर राज़ी हैं।"[3]

मज़्कूरए बाला रिवायत से मा'लूम होता है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अ़रबी के साथ साथ अ़बरानी ज़बान भी जानते थे।

﴾3﴿.....फ़ारूके़ आ'ज़म और सिफ़ारत कारी के फ़राइज़

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने दस्त व बाज़ू पर बड़ा ए'तिमाद रखते थे, क्यूंकि आप सरदाराने क़ुरैश में से थे, दौरे जाहिलिय्यत में क़ुरैश की त़रफ़ से शहनशाही दरबारों, या किसी भी क़िस्म के दीगर

1.....تاریخ الخلفاء، ص۸۸۔

2.....فتوح البلدان، ج۳، ۵۸۰، الرقم:۱۱۰۴۔

3.....دارمي، باب مايتّقي من تفسير۔۔۔إلخ، ج۱، ص۱۲۶، حديث:۴۳۵۔

क़बाइल से जंगी मुआ़मलात निमटाने के लिये आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ही सफ़ीर का फ़रीज़ा सर अन्जाम देते थे, और जब कुरैश का किसी दूसरी क़ौम से तनाज़ोअ़ खड़ा होता तो आप ही अपनी क़ौम की नुमाइन्दगी करते।(1)

﴾4﴿.....फ़ारूक़े आ'ज़म और मुख़्तलिफ़ क़बाइल की नसब दानी

आप رضی اللہ تعالٰی عنہ आप के वालिद और दादा तीनों बहुत बड़े माहिरे अन्साब थे। इस की वज्ह येह थी कि आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के ख़ानदान में सिफ़ारत कारी और फ़ैसलए मुनाफ़रत दोनों मौरूसी उमूर थे और इन दोनों की अन्जाम देही के लिये यक़ीनन अन्साब का जानना निहायत ज़रूरी था। नसब दानी आप ने अपने वालिद से सीखी, येही वज्ह है कि जब नसब से मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्तगू फ़रमाते तो अपने वालिद का ह़वाला दिया करते थे।(2)

﴾5﴿.....फ़ारूक़े आ'ज़म की पहलवानी और कुश्ती के फ़न में महारत

आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने पहलवानी और कुश्ती के फ़न में भी कमाल ह़ासिल किया, "**उ़काज़**" के दंगल में मा'रिके की कुश्तियां लड़ते थे, "**उ़काज़**" जबले अ़रफ़ात के पास एक मक़ाम था जहां हर साल इस ग़रज़ से मेला लगता था कि अ़रब के तमाम अहले फ़न जम्अ़ हो कर अपने कमालात के जौहर दिखलाते थे, इस लिये इस मेले में सिर्फ़ वोही लोग पेश पेश होते थे जो किसी न किसी फ़न में कमाल रखते थे। जलीलुल क़द्र सह़ाबी सना ख़्वाने बारगाहे रिसालत ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित, ह़ज़रते सय्यिदुना क़ुस बिन साइदा, सय्यिदतुना ख़न्सा (رضی اللہ تعالٰی عنہم) जैसे शुअ़रा की शोहरत का बाइस भी येही मेला था।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुत्तय्याह رضی اللہ تعالٰی عنہ ने सय्यिदुना ह़सन رضی اللہ تعالٰی عنہ की मजलिस में इस बात को बयान किया कि उन की मुलाक़ात एक चरवाहे से हुई तो उन्हों ने उस से फ़रमाया : "क्या तुम्हें मा'लूम है कि जो शख़्स दोनों हाथों से काम किया करता था **या'नी उ़मर** उस ने इस्लाम क़बूल कर लिया है ?" चरवाहे ने कहा : "क्या तुम उस शख़्स की बात कर रहे हो जो उ़काज़ के मेले में कुश्ती लड़ा करता था ?" फ़रमाया : "जी हां ! मैं उसी की बात कर रहा हूं।"(4)

---

1 ......اسد الغابة، عمر بن الخطاب، ج ۴، ص ۱۵۷۔
2 ......البيان والتبيين، باب أسجاع، ج ۱، ص ۳۰۴۔
3 ......تاريخ مدينه منورة، ج ۱، ص ۲۹۱، ۲۹۴ ماخوذا۔
4 ......طبقات كبرى، ذكر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۴۷۔

﴾6﴿.....फ़ारूक़े आ'ज़म और फ़न्ने शहसुवारी

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहसुवारी में महारत भी एक मुसल्लमा सिफ़त है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहसुवारी में महारत का अन्दाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی फ़रमाते हैं : **يَثِبُ عَلٰى فَرَسِهٖ فَكَاَنَّمَا خُلِقَ عَلٰى ظَهْرِهٖ** "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ घोड़े पर उछल कर सुवार होते तो ऐसा लगता था कि आप पैदा ही घोड़े की पीठ पर हुवे हैं।"[1]

﴾7﴿.....फ़ारूक़े आ'ज़म और फ़न्ने शाइ़री

जिस त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पहलवानी और शहसुवारी में महारत रखते थे इसी त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शाइ़री का भी बहुत ही उ़म्दा ज़ौक़ रखते थे। "**उ़काज़**" और दीगर मक़ामात पर बड़े बड़े शुअ़रा के कलाम समाअ़त फ़रमाते, जो अश्आ़र पसन्द आते उन्हें अपने ज़ेहन में मह़फ़ूज़ कर लेते, सेंकड़ों अश्आ़र आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़बानी याद थे। उस वक़्त अ़रब के बड़े बड़े शुअ़रा जैसे सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित, सय्यिदतुना ख़न्सा, सय्यिदुना क़स बिन साइ़दा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) वग़ैरा से भी आप की शाइ़री के ह़वाले से बात चीत होती रहती थी। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबरक़ान बिन बदर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हिजू वाले मुक़द्दमे में आप ने सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुशावरत की। हो सकता है आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़न्ने शाइ़री "**उ़काज़**" के मेले से ही ह़ासिल किया हो क्यूंकि क़बूले इस्लाम के बा'द ख़ुसूसन ख़िलाफ़त के ज़माने में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ऐसे मसरूफ़ हो गए थे कि इस क़िस्म के मुआ़मलात से दूर ही रहते थे। अलबत्ता बा'ज़ औक़ात त़बीअ़त के मुवाफ़िक़ कुछ शे'री कलाम सुन लेते थे।

मज़ीद तफ़्सील के लिये "**फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म**" जिल्द दुवुम, बाब अ़ह्दे फ़ारूक़ी में इ़ल्मी सरगर्मियां, स. 522 का मुत़ालआ़ कीजिये।

---

1 .....الاصابة، عمر بن الخطاب، ج٤، ص٤٨٥، الرقم: ٥٧٥٢۔

﴾8﴿.....फ़ारूके़ आ'ज़म और फ़न्ने तक़रीर व ख़िताबत

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पढ़े लिखे होने की वज्ह से बेहतरीन ख़त़ीब व मुक़र्रिर भी थे। इसी वज्ह से कुरैश को जब किसी मुआ़मले में नफ़रत दिलानी होती या कोई फ़ख़्र वग़ैरा का मुआ़मला होता तो भी बत़ौरे मुक़र्रिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही को भेजा जाता। आप के बेहतरीन मुक़र्रिर व ख़त़ीब होने की ताईद इस बात से भी होती है कि कुरैश ने आप को सिफ़ारत का मन्सब दे दिया था और यक़ीनन इस मन्सब का लाइक़ सिर्फ़ वोही शख़्स हो सकता है जो बात करने में कमाले महारत रखता हो नीज़ बेहतरीन ख़त़ीब होने के साथ साथ मुआ़मला फ़ह्मी पर भी दस्त रस रखता हो और आप इन दोनों सिफ़ात के जामेअ़ थे।[1]

फ़ारूके़ आ'ज़म का कारोबार व ज़रीअ़ए मआ़श

फ़ारूके़ आ'ज़म तिजारत किया करते थे

ज़मानए जाहिलिय्यत में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुख़्तलिफ़ फ़ुनून में महारत ह़ासिल करने के बा'द ज़रीअ़ए मआ़श की त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाई। पूरे अ़रब में ज़ियादा तर मआ़श का ज़रीआ़ तिजारत था, इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी तिजारत शुरूअ़ कर दी और इस में आप ने इतना नफ़्अ़ कमाया कि आप का शुमार मक्कए मुकर्रमा के अग़्निया या'नी मालदारों में होने लगा। रिवायात से येही मा'लूम होता है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तिजारत को जारी रखा यहां तक कि आप ख़लीफ़ा बन गए और बा'दे ख़िलाफ़त भी आप तिजारत करते रहे। चुनान्चे, इमाम इब्राहीम नख़ई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि كَانَ عُمَرُ يَتَّجِرُ وَهُوَ خَلِيْفَةٌ "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़लीफ़ा होने के बा वुजूद तिजारत किया करते थे।"[2]

गर्मियों में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ब ग़रज़े तिजारत मुल्के शाम का रुख़ फ़रमाते और सर्दियों में मुल्के यमन को इख़्तियार फ़रमाते। और ग़ालिबन इन्हीं तिजारती सफ़रों की वज्ह से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ात में ख़ुद्दारी, बुलन्द हौसला, तजरिबाकारी, मुआ़मला फ़ह्मी, मरदुम शनासी, फ़ह्मो फ़िरासत जैसे बा कमाल औसाफ़ पैदा हो गए थे।

---

1 .....اسد الغابة، عمر بن الخطاب، ج ۴، ص ۱۵۷۔

2 .....انساب الاشراف، عمر بن الخطاب، ج ۱۰، ص ۳۱۵، تاریخ الاسلام، ج ۳، ص ۲۷۳۔

फ़ारूके़ आ'ज़म के तिजारती सफ़र

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के तिजारती अस्फ़ार का ज़िक्र मो'तबर कुतुबे सियर व तारीख़ में बहुत ही कम मिलता है बल्कि न होने के बराबर है, अ़ल्लामा बलाज़ुरी ने "अन्साबुल अशराफ़" में मुल्के शाम की त़रफ़ आप के फ़क़त़ एक तिजारती क़ाफ़िले का ज़िक्र किया है। अलबत्ता चन्द एक क़राइन ऐसे हैं जिन से ज़ाहिर होता है कि आप तिजारती ह़वाले से मुल्के शाम व इराक़ वग़ैरा के सफ़र किया करते थे। मसलन : येह बात मुसल्लमा है कि आप तिजारत किया करते थे, उस ज़माने में उ़मूमन ताजिर मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों की त़रफ़ तिजारती सफ़र भी किया करते थे लिहाज़ा आप भी तिजारती सफ़र करते होंगे। नीज़ मन्सबे ख़िलाफ़त संभालने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुख़्तलिफ़ मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों के नक़्शे बनाए और उन के मुख़्तलिफ़ मक़ामात की निशान देही की जो इस बात पर दलालत करती है कि आप उन शहरों से वाक़िफ़ थे इस का एक सबब उन अ़लाक़ों में तिजारती सफ़र भी हो सकते हैं।

फ़ारूके़ आ'ज़म और खालों का काम

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 868 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "इस्लाहे़ आ'माल"[(1)] जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा 748 पर है : "अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खालों का काम किया करते थे।"

फ़ारूके़ आ'ज़म और ज़राअ़त

बा'ज़ रिवायात से येह भी मा'लूम होता है कि मदीनए मुनव्वरा में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़मीनें भी बटाई पर दिया करते थे जैसा कि बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीसे मुबारका में है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों से इस पर मुज़ारअ़त फ़रमाते कि अगर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी त़रफ़ से बीज लाएं तो उन के लिये निस्फ़ पैदावार होगी और अगर वोह लोग ख़ुद बीज लाएं तो उन के लिये इतना ही होगा।[(2)]

1.....''इस्लाहे़ आ'माल'' अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी बिन इस्माईल नाबुलुसी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की अ़रबी किताब ''अल ह़दीक़तुन्नदिय्या'' का उर्दू तर्जमा है।

2.....بخاری، کتاب الحرث والمزارعة، باب المزارعة بالشطر ونحوه، ج ۲، ص ۸۷، حدیث: ۲۳۲۷ ملتقطا، ارشاد الساری، کتاب الحرث و المزارعة، باب المزارعة بالشطر ونحوه، ج ۵، ص ۳۴۹، تحت الباب: ۸ ملتقطا۔

कसब करना अम्बियाए किराम की सुन्नत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रिज़्क़े हलाल कमाना अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की सुन्नते मुबारका है। हुसूले रिज़्क़ के लिये कोशिश की अहम्मिय्यत का अन्दाज़ा इस से किया जा सकता है कि हज़राते अम्बियाए किराम और रुसुले उ़ज़्ज़ाम عَلَيۡهِمُ السَّلَام भी कसब या'नी हुसूले रिज़्क़ के लिये कोशिश किया करते थे। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام गन्दुम बोते, इसे सैराब करते, इस की कटाई करते, इसे गाहते, फिर इसे पीसते, फिर इस का आटा गूंध कर रोटी तय्यार फ़रमाते। यूं आप खेतीबाड़ी का काम करते। हज़रते सय्यिदुना नूह़ **नजिय्युल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام बढ़ई का काम किया करते। हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام कपड़े बुन कर गुज़ारा करते। हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ज़िरहें बनाते। हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام खजूर के पत्तों से टोकरियां बना कर फ़रोख़्त किया करते थे और हमारे आक़ा व मौला रसूलों के सालार, बिइज़्ने परवर दगार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहनशाहे अबरार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी बकरियां चराया करते (और तिजारत किया करते) थे और येह तमाम आ़ली रुत्बा हज़रात कसब कर के ही खाते थे।[1]

ख़ुलफ़ाए राशिदीन के पेशे

"हज़राते अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रह़ ख़ुलफ़ाए अरबआ़ رِضۡوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن भी कसब किया करते थे। चुनान्चे, अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ कपड़ों की तिजारत करते थे। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ खालों का काम करते थे। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ताजिर थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ख़ुर्दो नोश की अश्या एक जगह से दूसरी जगह ले जा कर फ़रोख़्त करते और अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡہَہُ الۡکَرِیۡم) मज़दूरी किया करते थे।"[2]

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1.....इस्लाहे आ'माल, जि. 1 स. 748

2.....इस्लाहे आ'माल, जि. 1 स. 748

दूसरा बाब

ख़ानदाने फ़ारूक़े आ'ज़म

इस बाब में मुलाह़ज़ा कीजिये........

- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिदैन का तआ़रुफ़
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अज़्वाज (बीवियां)
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की औलाद का मुबारक तज़्किरा
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटों का तआ़रुफ़, बेटियों का तआ़रुफ़
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पोते, पोतियां और नवासों का तआ़रुफ़
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म के भाइयों का तआ़रुफ़, बहनों का तआ़रुफ़
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के चन्द ग़ुलामों और ख़ादिमीन का तआ़रुफ़
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रिश्तेदारी
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अहले बैत से रिश्तेदारी
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का फ़ैज़ान पाको हिन्द में, चन्द फ़ारूक़ी बुज़ुर्गों का तआ़रुफ़

ख़ानदाने फ़ारूक़े आ'ज़म

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुछ अ़र्से पहले ऐसा होता था कि किसी शख़्स की सीरत में सिर्फ़ उस की ज़ातो सिफ़ात या वोह मुआ़मलात जिन का तअ़ल्लुक़ बिला वासित़ा उस की ज़ात से होता सिर्फ़ उन ही को बयान किया जाता और अगर किसी को उस शख़्सिय्यत के ऐसे मुआ़मलात के मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात तलाश करना होतीं जिन का तअ़ल्लुक़ उस की ज़ात से बिल वासित़ा है तो वोह अ़लाहि़दा से उन की सीरत पर लिखी गई कुतुब में तलाश करता, लेकिन वक़्त के साथ साथ जहां मुत़ालए़ और तलाशे मवाद (Data Searching) में दिलचस्पी कम होती गई वहीं सीरत बयान करने के अन्दाज़ में भी तब्दीली आती गई। फ़ी ज़माना किसी शख़्सिय्यत की सीरत को बयान करते हुवे उस के ख़ानदानी पस मन्ज़र को पेश न किया जाए तो कुछ तिश्नगी बाक़ी रह जाती है। उ़मूमन ख़ानदान में वालिदैन, अज़्वाज, औलाद, औलाद की औलाद वग़ैरा का तज़्किरा किया जाता है लेकिन हम ने उन के ज़िक्र के साथ साथ सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़ुद्दाम का तज़्किरा भी किया है। क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कई ख़ुद्दाम ऐसे हैं जिन की सीरत में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मदनी तरबिय्यत ब त़रीक़े अह़सन निखर कर सामने आती है।

फ़ारूक़े आ'ज़म के वालिदैन का तआ़रुफ़

फ़ारूक़े आ'ज़म के वालिद ख़त्त़ाब बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वालिद क़ुरैश के रुअसा में से था, क़बीलए अ़दिय्य और बनू अ़ब्दुश्शम्स में जद्दी पुश्ती अ़दावत चली आ रही थी, अ़ब्दुश्शम्स का ख़ानदान बड़ा था इस लिये ग़लबा भी उन्हीं को ह़ासिल रहता था अ़दिय्य के तमाम ख़ानदान जिन में ख़त्त़ाब बिन अ़म्र भी शामिल था मजबूर हो कर बनू सहम के क़बीले में पनाह गुज़ीं हो गए। अ़दिय्य का तमाम ख़ानदान मक्कए मुकर्रमा में मक़ामे सफ़ा में रहता था लेकिन जब उन के बनू सहम से मरासिम मज़बूत़ हुवे तो उन्हों ने अपने तमाम मकानात उन के हाथ फ़रोख़्त कर दिये लेकिन ख़त्त़ाब बिन अ़म्र के कई मकानात सफ़ा में बाक़ी रहे, और इन ही मकानात में से एक मकान अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को विरसे में मिला जिस का अह़ादीसे मुबारका में भी ज़िक्र मिलता है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वालिद बुत परस्ती में बड़ा मुतशद्दिद

था, इस्लाम की दौलत से महरूम रहा अलबत्ता उस के भाई या'नी सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सगे चचा ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत ही नेक परहेज़गार शख़्स थे, आप ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिदे गिरामी हैं जो उन खुश नसीब सह़ाबए किराम में से हैं जिन्हें दुन्या में ही बारगाहे रिसालत से जन्नत की खुश ख़बरी सुना दी गई थी। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बिअ़सते नबवी से क़ब्ल ही बुत परस्ती को तर्क फ़रमा दिया था और सच्चे पक्के मुवह़्ह़िद बन गए थे। दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्ही के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया कि "कल बरोज़े क़ियामत येह मेरे और ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के दरमियान एक पूरी उम्मत की ह़ैसिय्यत से उठाए जाएंगे।"(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म की वालिदा ह़न्तमा बिन्ते हाशिम

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म की वालिदए माजिदा का मुकम्मल नाम ह़न्तमा बिन्ते हाशिम बिन मुग़ीरा बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर मख़्ज़ूम है। आप अबू जह्ल की चचाज़ाद बहन हैं क्यूंकि हाशिम और हिशाम सगे भाई हैं और अबू जह्ल और ह़ारिस हिशाम की औलाद हैं, जब कि हाशिम **ह़न्तमा** के वालिद और फ़ारूके़ आ'ज़म के नाना हैं। लिहाज़ा अबू जह्ल आप का सगा भाई नहीं बल्कि आप के चचा या'नी हिशाम का बेटा है।(2)

फ़ारूके़ आ'ज़म की अज़्वाज (बीवियां)

निकाह़ करना अम्बियाए किराम की सुन्नत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! निकाह़ करना अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की सुन्नते मुबारका है, बा'ज़ सूरतों में निकाह़ करना वाजिब, बा'ज़ में सुन्नते मुअक्कदा और बा'ज़ में मुस्तह़ब, नीज़ बा'ज़ सूरतों में ममनूअ़ भी होता है, जिस की तफ़्सील कुतुबे फ़िक़्ह में मौजूद है, बहर ह़ाल कोई भी सूरत हो अगर निकाह़ से मक़्सूद ह़राम से बचना या इत्तिबाए़ सुन्नत व ता'मीले हुक्म या औलाद ह़ासिल होना है तो सवाब भी पाएगा और अगर मह़ज़ लज़्ज़त या क़ज़ाए शहवत मन्ज़ूर हो तो निकाह़ तो हो जाएगा लेकिन सवाब नहीं मिलेगा। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते

---

1 ......فضائل الصحابۃ للنسائی، زید بن عمرو بن نفیل، ص ۸۱، الرقم: ۸۴۔

2 ......اسد الغابۃ، عمر بن الخطاب، ج ۴، ص ۱۵۷، تہذیب الاسماء، عمر بن الخطاب، ج ۱، ص ۳۲۴۔

सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी कसीर निकाह़ फ़रमाए मगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी हुस्ने निय्यत का एहतिमाम फ़रमाया जिस का आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुद तज़्किरा फ़रमाया। चुनान्चे,

फ़ारूक़े आ'ज़म की निकाह़ में हुस्ने निय्यत

﴾1﴿.....आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : مَا اٰتِی النِّسَاءَ لِلشَّهْوَةِ وَلَوْلَا الْوَلَدُ مَا بَالَيْتُ اِلَّا اَرَى اِمْرَاَةً بِعَيْنِي "या'नी मैं सिर्फ़ क़ज़ाए शहवत की निय्यत से अपनी अज़्वाज के पास नहीं जाता, बल्कि मेरी निय्यत औलाद का हुसूल है, अगर येह मक़्सूद न होता तो मेरी एक ही ज़ौजा होती।"(1)

﴾2﴿.....एक मरतबा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया :

اِنِّیْ اُكْرِهُ نَفْسِیْ عَلَى الْجِمَاعِ رِجَاءَ اَنْ يُّخْرِجَ اللّٰهُ مِنْ نَسَمَةٍ تُسَبِّحُهُ وَتُذَكِّرُهُ

"या'नी मैं ख़ुद को जिमाअ़ करने पर इस लिये मजबूर करता हूं कि मुमकिन है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे ऐसी नेक सालेह़ औलाद अ़ता फ़रमाए जो उस की तस्बीह़ करे और हर वक़्त उस की याद में मगन रहे।"(2)

﴾3﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं :

كَانَ اَبِیْ اَبْيَضَ لَا يَتَزَوَّجُ النِّسَاءَ لِشَهْوَةٍ اِلَّا لِطَلَبِ الْوَلَدِ

"या'नी मेरे वालिदे गिरामी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सफ़ेद रंग के थे और आप शहवत के लिये निकाह़ नहीं करते थे बल्कि औलाद के हुसूल के लिये निकाह़ किया करते थे।"(3)

फ़ारूक़े आ'ज़म जल्दी निकाह़ को पसन्द फ़रमाते

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जल्दी निकाह़ करने को पसन्द फ़रमाते और इस की तरग़ीब दिलाते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : زَوِّجُوْا اَوْلَادَكُمْ اِذَا بَلَغُوْا وَلَا تَحْمِلُوْا اٰثَامَهُمْ "या'नी जब तुम्हारी औलाद बालिग़ हो जाए तो उन का जल्दी निकाह़ कर दो और उन के गुनाहों का बोझ अपने कन्धों पर मत उठाओ।"(4)

---

1 ......انساب الاشراف، عمر بن الخطاب، ج ١٠، ص ٣٤٣۔

2 ......سنن کبری، کتاب النکاح، باب الرغبة فی النکاح، ج ٧، ص ١٢٦، حدیث: ١٣٤٦٠۔

3 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ٣، ص ٢٤٧۔

4 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الستون، ص ١٩٩۔

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुल आठ अज़्वाज और दो बांदियां हैं, इन से पैदा होने वाली औलाद की ता'दाद चौदह है, जिन में दस बेटे और चार बेटियां हैं तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

﴾1﴿.....पहला निकाह़ और इस से औलाद

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का पहला निकाह़ ''ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते मज़ऊ़न رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا'' से हुवा जो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊ़न, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मज़ऊ़न और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्र कु़दामा बिन मज़ऊ़न (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم) की सगी बहन हैं। इन की कुन्यत ''उम्मे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर'' है।

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की लाडली शहज़ादी और तमाम मुसलमानों की मां ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पैदा हुवे।[1]

﴾2﴿.....दूसरा निकाह़ और इस से औलाद

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का दूसरा निकाह़ ह़ज़रते सय्यिदतुना जमीला बिन्ते साबित बिन अक़्लह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से हुवा। ज़मानए जाहिलिय्यत में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम ''आ़सिया'' था हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तब्दील फ़रमा कर ''जमीला'' नाम रख दिया। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बैअ़त होने का शरफ़ भी ह़ासिल हुवा। इन से सिर्फ़ एक बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पैदा हुवे इसी वज्ह से ह़ज़रते जमीला बिन्ते साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا को ''उम्मे आ़सिम'' भी कहा जाता है, जो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की कुन्यत है।[2]

एक अहम वज़ाह़त

बा'ज़ रिवायात में येह है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक बेटी ''आ़सिया बिन्ते उ़मर'' थीं जिन का नाम रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

---

1 ......الاصابة، كتاب النساء، حرف الزاى المنقوطة، ج٨، ص ١٦٣، الرقم: ١١٢٥٦، حرف العين المهملة، ج٤، ص٢٨٥، الرقم: ٥١٨٩۔

2 ......طبقات كبرى، ومن النساء ـــ الخ، ج٨، ص ٢٦٠، الاستيعاب، كتاب النساء وكناهن، باب الجيم، ج٤، ص ٣٦٥۔

الاصابة، كتاب النساء، حرف الجيم، ج٨، ص٤٧، الرقم: ١٠٩٨٩۔

तब्दील फ़रमाया था । अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى ने इन के माबैन यूं मुत़ाबक़त फ़रमाई है कि हो सकता है सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की ज़ौजा व बेटी दोनों का नाम "आ़सिया" हो और इन दोनों के नामों को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तब्दील फ़रमा दिया हो ।[1]

﴾3﴿.....तीसरा निकाह़ और इस से औलाद

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का तीसरा निकाह़ ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मतुज़्ज़ह्‌रा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا और मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) की लाडली शहज़ादी ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम बिन्ते अ़ली बिन अबी त़ालिब رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से हुवा । अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) को निकाह़ का पैग़ाम भेजा और इरशाद फ़रमाया :

زَوِّجْنِىْ يَا اَبَا الْحَسَنْ فَاِنِّىْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ كُلُّ نَسَبٍ وَصِهْرٍ مُنْقَطِعٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اِلَّا نَسَبِىْ وَصِهْرِىْ

या'नी ऐ अ़ली ! आप अपनी बेटी का निकाह़ मुझ से कर दीजिये क्यूंकि मैं ने सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि कल बरोज़े क़ियामत हर नसब और रिश्ता मुन्क़तेअ़ हो जाएगा सिवाए मेरे नसब और रिश्ते के ।" (लिहाज़ा आप मुझे अपना रिश्तेदार बना लीजिये) तो मौला अ़ली (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने अपनी बेटी सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का निकाह़ आप से फ़रमा दिया । सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने उन के ह़क़्क़े महर में चालीस हज़ार दिरहम अदा किये । उन से एक बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद अक्बर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه और एक बेटी ह़ज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا पैदा हुईं । ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद अक्बर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه और ह़ज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا वालिद की निस्बत से "उ़मरी" या "फ़ारूक़ी" हैं ।[2]

﴾4﴿.....चौथा निकाह़ और इस से औलाद

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का चौथा निकाह़ "मुलैका बिन्ते जरवल बिन ख़ुज़ाइय्या" से हुवा, कुन्यत "उम्मे कुल्सूम" है, आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की येह

---

1 ......الاصابة، جميلة بنت عمر، ج٨، ص٧٥، الرقم:١١٠١٢۔

2 ......الاستيعاب، ام كلثوم بنت على، ج٤، ص٥٠٩، تاريخ ابن عساكر، ج١٩، ص٤٨٢، الاصابة، ام كلثوم بنت على، ج٨، ص٤٦٤، الرقم:١٢٢٣٧۔

ज़ौजा मुशरिका थी, इसी वज्ह से आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इसे ग़ज़्वए हुदैबिय्या के साल त़लाक़ दे दी। इस से आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दो बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद असग़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पैदा हुवे।[1]

﴾5﴿.....पांचवां निकाह़ और इस से औलाद

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का पांचवां निकाह़ "कु़रैबा बिन्ते अबू उमय्या" से हुवा। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह ज़ौजा मुशरिका थी लिहाज़ा आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इसे त़लाक़ दे दी। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के त़लाक़ देने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन से निकाह़ कर लिया था उस वक़्त आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ईमान नहीं लाए थे। बा'द में सुल्ह़े हुदैबिय्या के मौक़अ़ पर येही "कु़रैबा बिन्ते अबू उमय्या" इस्लाम ले आई थीं।[2]

एक अहम वज़ाहत

कु़रैबा बिन्ते अबू उमय्या उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बहन थीं, और फ़त्ह़े मक्का के मौक़अ़ पर येह इस्लाम ले आई थीं। बा'ज़ रिवायात में येह भी है कि कु़रैबा बिन्ते अबू उमय्या का निकाह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से हुवा और इन से ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पैदा हुवे। ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی इरशाद फ़रमाते हैं : "हो सकता है कि उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की दो बहनें हों और दोनों का ही नाम कु़रैबा हो। एक बहन पहले ही इस्लाम ले आई थीं और येही ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के निकाह़ के वक़्त मौजूद थीं और इन्ही से ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने निकाह़ फ़रमाया हो जब कि दूसरी बहन बा'द में फ़त्ह़े मक्का के मौक़अ़ पर इस्लाम लाई हों जिन से ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़बूले इस्लाम से क़ब्ल निकाह़ फ़रमाया था।" अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی की इस तौजीह की ताईद ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने सा'द رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के इस क़ौल से भी

---

1 ......الاصابة، ام كلثوم بنت على، ج۸، ص ۴۶۴، الرقم: ۱۲۲۳۴۔

2 ......بخاری، کتاب الشروط، الشروط فی الجهاد والمصالحة مع اهل الحرب، ج ۲، ص ۲۲۷، حدیث: ۲۷۳۱، ۲۷۳۲۔

فتح الباری، کتاب الطلاق، باب نکاح من اسلم من المشرکات، ج ۱۰، ص ۳۵۸، تحت الحدیث: ۵۲۸۶۔

होती है जिसे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा का ज़िक्र करते हुवे इरशाद फ़रमाया कि : ''कुरैबा सुग़रा बिन्ते अबू उमय्या उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बहन और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा हैं और उन से अ़ब्दुल्लाह, ह़फ़्सा और उम्मे ह़कीम पैदा हुवे।''(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म का अपनी दो अज़्वाज को त़लाक़ देने का सबब

सुल्ह़े हुदैबिय्या से मुतअ़ल्लिक़ा बुख़ारी शरीफ़ की एक त़वील ह़दीसे मुबारका में मज़्कूर है कि जब सूरए मुमतह़िना की येह आयते मुबारका नाज़िल हुई तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी इन दोनों मुशरिका अज़्वाज को त़लाक़ दे दी :

﴿ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِیْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ؕ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَ لَا هُمْ یَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ؕ وَ اٰتُوْهُمْ مَّاۤ اَنْفَقُوْا ؕ وَ لَا جُنَاحَ عَلَیْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَاۤ اٰتَیْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ؕ وَ لَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَ سْـَٔلُوْا مَاۤ اَنْفَقْتُمْ وَ لْیَسْـَٔلُوْا مَاۤ اَنْفَقُوْا ؕ ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ ؕ یَحْكُمُ بَیْنَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِیْمٌ حَكِیْمٌ ۝۱۰ ﴾ (پ۲۸، الممتحنة: ۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''ऐ ईमान वालो जब तुम्हारे पास मुसलमान औ़रतें कुफ़्रिस्तान से अपने घर छोड़ कर आएं तो उन का इम्तिह़ान कर लो **अल्लाह** उन के ईमान का ह़ाल बेहतर जानता है फिर अगर वोह तुम्हें ईमान वालियां मा'लूम हों तो उन्हें काफ़िरों को वापस न दो न येह उन्हें ह़लाल न वोह इन्हें ह़लाल और उन के काफ़िर शोहरों को दे दो जो उन का ख़र्च हुवा और तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि उन से निकाह़ कर लो जब उन के महर उन्हें दो और काफ़िरनियों के निकाह़ पर जमे न रहो और मांग लो जो तुम्हारा ख़र्च हुवा और काफ़िर मांग ले जो उन्हों ने ख़र्च किया येह **अल्लाह** का हुक्म है वोह तुम में फ़ैसला फ़रमाता है और **अल्लाह** इ़ल्म व ह़िक्मत वाला है।''(2)

---

1 ......فتح الباری، کتاب الطلاق، باب نکاح من اسلم من المشرکات، ج ۱۰، ص ۳۵۸، تحت الحدیث: ۵۲۸۷ ماخوذا۔
طبقات کبری، قریبة الصغری بنت ابی امیة، ج ۸، ص ۲۰۶ ماخوذا۔

2 ......بخاری، کتاب الشروط، الشروط فی الجهاد والمصالحة مع اهل الحرب، ج ۲، ص ۲۲۷، حدیث: ۲۷۳۱، ۲۷۳۲۔
فتح الباری، کتاب البیوع الی السلم، باب الصلح، ج ۱، ص ۲۹۰۔

﴾6﴿.....छटा निकाह़ और इस से औलाद

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का छटा निकाह़ ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़कीम बिन्ते ह़ारिस बिन हिशाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से हुवा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़त्ह़े मक्का के मौक़अ़ पर इस्लाम ले आई थीं और ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करमा बिन अबी जह्ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजिय्यत में थीं। जब ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़ह्दे सिद्दीक़ी में जंगे यमामा में शहादत नसीब हुई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने निकाह़ फ़रमाया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की वालिदा का नाम "ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मा बिन्ते वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا"[1] है और आप ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की भांजी हैं। इन से एक बेटी फ़ाति़मा बिन्ते उ़मर पैदा हुईं।[2]

﴾7﴿.....सातवां निकाह़ और इस से औलाद

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सातवां निकाह़ ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़तिका बिन्ते ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से हुवा। बा'ज़ रिवायात में आप का नाम आ़इशा भी आया है। पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के निकाह़ में थीं, इन की शहादत के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप से निकाह़ फ़रमाया। इन से एक बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना इयाज़ बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पैदा हुवे।[3]

﴾8﴿.....आठवां निकाह़ और इस से औलाद

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का आठवां निकाह़ ह़ज़रते सय्यिदतुना सईदा बिन्ते राफे़अ़ बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से हुवा। इन से एक बेटे अ़ब्दुल्लाह असग़र पैदा हुवे।[4]

1.....एक रिवायत में यूं भी है कि ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मा बिन्ते वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने निकाह़ फ़रमाया था, लेकिन अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی और अ़ल्लामा इब्ने असीर जज़री عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के नज़्दीक येह रिवायत दुरुस्त नहीं। الاصابة، فاطمة بنت وليد، ج۸، ص۲۷۸، الرقم: ۱۱۶۱۴، اسد الغابة، فاطمة بنت وليد، ج۷، ص۲۵۱۔

2.....طبقات کبری، تسمية النساء المسلمات۔۔۔الخ، ج۸، ص۲۰۵، البدایہ والنہایۃ، ج۵، ص۲۱۹۔

3.....طبقات کبری، تسمية النساء المسلمات۔۔۔الخ، ج۸، ص۲۰۸۔ الاصابة، عاتكة بنت زيد بن عمرو، ج۸، ص۲۲۸، الرقم: ۱۱۴۵۲۔

4.....معرفة الصحابة، معرفة انه اول من سمى امير۔۔۔الخ، ج۱، ص۷۷، الرقم: ۲۱۰۔

﴾9﴿.....हज़रते सय्यिदतुना फ़कीहा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और इन से औलाद

हज़रते सय्यिदतुना फ़कीहा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا येह अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बांदी हैं। इन से एक बेटे हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान असग़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और एक बेटी हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पैदा हुवे।(1)

﴾10﴿.....हज़रते सय्यिदतुना लहीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और इन से औलाद

हज़रते सय्यिदतुना लहीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا येह भी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बांदी थीं। येह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बेटी उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा बिन्ते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत पर मा'मूर थीं। इन से एक बेटे हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन उ़मर औसत़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पैदा हुवे और इन ही की कुन्यत "अबू शह़मा" है।(2)

वाज़ेह़ रहे कि इस्लाम में बयक वक़्त फ़क़त़ चार निकाह़ ही हो सकते हैं।

तज़्किरए औलादे फ़ारूक़े आ'ज़म

औलाद का तज़्किरा फ़ज़ीलत से ख़ाली नहीं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! औलाद का तज़्किरा अगर्चे सीरत के लवाज़िमात में से नहीं, मगर जब किसी का नसब बयान किया जाए तो औलाद की त़रफ़ ज़ेह्न माइल हो ही जाता है इसी लिये **औलाद का तज़्किरा भी फ़ज़ीलत से ख़ाली नहीं**। औलाद का नेक होना भी वालिदैन की सरफ़राज़ी, इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत और फ़ख़्र का बाइ़स होता है। हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

"اِذَا مَاتَ الْاِنْسَانُ انْقَطَعَ عَمَلُهُ اِلَّا مِنْ ثَلَاثٍ اِلَّا مِنْ صَدَقَةٍ جَارِيَةٍ اَوْ عِلْمٍ يُنْتَفَعُ بِهٖ اَوْ وَلَدٍ صَالِحٍ يَدْعُوْ لَهٗ"

या'नी जब किसी शख़्स का इन्तिक़ाल हो जाता है तो सिवाए तीन आ'माल के उस के तमाम आ'माल मुन्क़त़ेअ़ कर दिये जाते हैं : (1) सदक़ए जारिय्या (2) या ऐसा इ़ल्म जिस से नफ़्अ़ उठाया जाता रहे (3) या वोह नेक औलाद जो उस के लिये दुआ़ करती रहे।"(3)

---

1 .....الاصابة، زينب بنت عمر۔۔۔الخ، ج۸، ص۱٦٧، الرقم:١١٢٦٨۔

2 .....الاصابة، لهيعة، ج۸، ص۳۰۲، الرقم:١١٧٠٨۔

3 ..... مسلم، كتاب الوصية، باب ما يلحق الانسان من الثواب۔۔۔الخ، ص٨٨٦، حديث:١٤۔

फ़ारूके़ आ'ज़म की औलाद की ख़ुसूसिय्यत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की औलाद की एक सब से बड़ी ख़ुसूसिय्यत येह भी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सारी की सारी औलाद اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुसलमान थी ।(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म के बेटों का तआ़रुफ़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बेटों की कुल ता'दाद दस है । जिन के अस्माए गिरामी येह हैं : (1) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (2) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (3) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (4) ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद असग़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (5) ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (6) ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (7) ह़ज़रते सय्यिदुना इयाज़ बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (8) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह असग़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (9) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान औसत़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (10) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान असग़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ।

﴾1﴿.....पहले बेटे, सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ 2 बिअ़्सते नबवी में पैदा हुवे और अपने वालिद अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ ही बचपन में इस्लाम क़ुबूल फ़रमाया, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबी होने का शरफ़ ह़ासिल किया । तक़रीबन दस साल की उ़म्र में हिजरते मदीना भी अपने वालिदैन ही के साथ की । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत अबू अ़ब्दुर्रह़मान है । ग़ज़्वए बद्र व ग़ज़्वए उहुद के इ़लावा तमाम जंगों में सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ शरीक रहे । ग़ज़्वए बद्र में तो आप का शरीक न होना इजमाई है कि उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत छोटे थे लिहाज़ा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को वापस भेज दिया, अलबत्ता ग़ज़्वए उहुद के बारे में इख़्तिलाफ़ है । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आ़लिमे बा अ़मल, मुज्तहिद, आ़बिदो ज़ाहिद, सुन्नतों के पाबन्द, बिदआ़ते क़बीह़ा से नफ़रत करने वाले और लोगों को वा'ज़ो नसीह़त फ़रमाने वाले थे । शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ता'रीफ़ करते हुवे इरशाद फ़रमाया : اِنَّ عَبْدَاللّٰہِ بْنَ عُمَرَ رَجُلٌ صَالِحٌ या'नी अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर नेक आदमी हैं ।"(2)

1 .....رياض النضرة، ج ۱، ص ۴۲۵۔

2 .....بخاری، كتاب التعبير، باب الاستبرق ودخول ... الخ، ج ۴، ص ۴۱۴، الحديث: ۷۰۱۶۔

येह भी कहा जाता है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस वक़्त तक दुन्या से तशरीफ़ न ले गए जब तक अपने वालिदे गिरामी की ह़याते त़य्यिबा का मज़हर न बन गए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुलफ़ाए राशिदीन समेत कमो बेश तीस सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की एक हज़ार छे सो तीस अह़ादीसे मुबारका रिवायत की हैं। मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की नस नस में बसी हुई थी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इ़श्क़ को अ़ल्लामा नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इन अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमाते हैं :

"كَانَ شَدِيْدَ الْاِتِّبَاعِ لِاٰثَارِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتّٰى اَنَّهُ يَنْزِلُ مَنَازِلَهُ وَيُصَلِّيْ فِيْ كُلِّ مَكَانٍ صَلّٰى فِيْهِ وَيُبْرِكُ نَاقَتَهُ فِيْ مُبْرَكِ نَاقَتِهٖ"

"या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ के शैदाई थे यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जहां तशरीफ़ फ़रमा हुवे येह भी वहीं बैठते, जहां रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ अदा फ़रमाई येह भी वहीं नमाज़ अदा फ़रमाते, जहां आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ऊंटनी बिठाई येह भी वहीं अपनी ऊंटनी बिठाते।"(1)

गोया जिस चीज़ की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत हो जाती आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस की बेह़द ता'ज़ीमो तौक़ीर फ़रमाते। अ़ल्लामा नववी मज़ीद फ़रमाते हैं :

وَنَقَلُوْا اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَزَلَ تَحْتَ شَجَرَةٍ فَكَانَ ابْنُ عُمَرَ يَتَعَاهَدُهَا بِالْمَاءِ لِئَلَّا تَيْبَسَ

"या'नी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में येह भी मन्क़ूल है कि एक बार नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक दरख़्त के नीचे तशरीफ़ फ़रमा हुवे तो बा'द में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस को पानी लगा दिया करते थे ताकि वोह मुबारक दरख़्त कहीं ख़ुश्क न हो जाए।" अपने वालिदे गिरामी सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते त़य्यिबा सब से ज़ियादा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बयान की है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तक़रीबन 73 हिजरी में 84 साल की उ़म्र में वफ़ात पाई।(2)

---

1 .... تہذیب الاسماء، حرف العین المھملة، ج ۱، ص ۳۲۶۔

2 .... الاصابة، عبد اللہ بن عمر، ج ۴، ص ۱۶۱، الرقم: ۴۸۵۲، تہذیب الاسماء، عبد اللہ بن عمر، ج ۱، ص ۲۶۲۔

अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म के तरबिय्यत याफ़्ता

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वालिदैन के औसाफ़ का असर उन की औलाद में भी होता है, जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तो वोह थे जिन की मदनी तरबिय्यत अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खुद फ़रमाया करते थे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह इ़श्के़ रसूल और सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आसारे मुक़द्दसा की ता'ज़ीमो तौक़ीर अपने वालिदे गिरामी सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ही मिली थी। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खुद उन के लिये दराज़िये उ़म्र की ख़्वाहिश फ़रमाया करते थे। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन सई़द رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

مَامِنْ اَھْلٍ وَلَا وَلَدٍ وَلَا مَالٍ اِلَّا وَاَنَا اُحِبُّ اَنْ اَقُوْلَ عَلَیْہِ اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ اِلَّا عَبْدَ اللّٰہِ بْنَ عُمَرَ اُحِبُّ اَنْ یَّبْقٰی فِی النَّاسِ بَعْدِیْ

"या'नी मेरे घर वालों, औलाद और माल में हर कोई ऐसा है कि मैं उस पर اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْن कहना पसन्द करूंगा (या'नी चाहे वोह ज़िन्दा रहे या न रहे) मगर अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर के बारे में मैं येह पसन्द करूंगा कि वोह मेरे बा'द भी ज़िन्दा रहें।"[1]

(2).....दूसरे बेटे, सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुकम्मल नाम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब क़रशी अ़दवी है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी शरफे़ सह़ाबिय्यत पर फ़ाइज़ हैं, अ़ल्लामा शरफु़द्दीन नववी, अ़ल्लामा इब्ने अ़ब्दुल बर्र, अ़ल्लामा अबू नुऐ़म अस्फ़हानी वग़ैरा अकाबिर अइम्मए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام ने आप को सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में शुमार किया है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर, उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के सगे भाई हैं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदा का नाम ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते मज़ऊ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

---

[1] .....مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب السادس والاربعون، ص ۱۴۱۔

है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोहबत पाई मगर आप से कोई ह़दीस रिवायत न की।(1)

﴾3﴿.....तीसरे बेटे, सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुकम्मल नाम उ़बैदुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ताब बिन नुफ़ैल क़ुरशी है। ज़मानए नबवी में ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत हुई अलबत्ता आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कोई ह़दीस रिवायत न की, अपने वालिदे गिरामी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वग़ैरा अजिल्ला अकाबिर सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से अह़ादीसे मुबारका सुनी। बहुत त़वील क़दो क़ामत के मालिक थे, क़ुरैश के बहादुर और साह़िबे फ़िरासत लोगों में आप का शुमार होता था। सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ जंगे सिफ़्फ़ीन में शिर्कत की और वहीं आप की शहादत हुई।(2)

﴾4﴿.....चौथे बेटे, सय्यिदुना ज़ैद असग़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुकम्मल नाम ज़ैद बिन उ़मर बिन ख़त्ताब क़ुरशी अ़दवी है।(3) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदा का नाम उम्मे कुल्सूम मुलैका बिन्ते जरवल है। येह मुशरिका थी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इसे सुल्ह़े हुदैबिय्या के साल त़लाक़ दे दी थी और उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत हो चुकी थी, इस से येह बात भी वाज़ेह़ होती है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत अ़ह्दे रिसालत ही में हुई थी।(4)

---

1 ......تهذیب الاسماء، عبدالرحمن بن عمر، ج ۱، ص ۲۸۰۔

2 ......اسد الغابة، عبید اللہ بن عمر، ج ۳، ص ۵۴۵۔ الاستیعاب، عبید اللہ بن عمر۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۱۳۲۔

3 .....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद असग़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दोनों की वालिदा का नाम "मुलैका बिन्ते जरवल ख़ुज़ाइय्या" है। (الریاض النضرة، ج ۱، ص ۴۲۵) अ़ल्लामा इब्ने क़ुतैबा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़क़त़ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को "मुलैका बिन्ते जरवल ख़ुज़ाइय्या" का बेटा क़रार दिया है। (المعارف، ص ۷۹) जब कि अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इन को ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का भाई क़रार दिया है। (الاصابة، ج ۲، ص ۵۱۹، الرقم: ۲۹۶۶)

4 .....الاصابة، زید بن عمر، ج ۲، ص ۵۱۹، الرقم: ۲۹۶۶۔

﴾5﴿.....पांचवें बेटे, सय्यिदुना आ़सिम बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का पूरा नाम आ़सिम बिन उ़मर बिन ख़त्ताब अ़दवी क़ुरशी है। सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी से दो साल क़ब्ल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत हुई। आप की कुन्यत अबू उ़मर है, बहुत त़वील क़दो क़ामत के मालिक होने के साथ साथ आ़लिम, फ़ाज़िल व निहायत ही मुत्तक़ी परहेज़गार थे। बेहतरीन शाइ़र भी थे, कहा जाता है कि नफ़ीस कलाम करने का जैसा मलका आप को ह़ासिल था वैसा किसी और को न था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने भाई ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से क़ब्ल सत्तर साल की उ़म्र में विसाल फ़रमाया।[1]

आप की परहेज़गार ज़ौजा सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म की बहू कैसे बनीं ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अस्लम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अक्सर रात के वक़्त रिआ़या की ख़बर गीरी व ह़ाजत रवाई के लिये मदीनए मुनव्वरा का दौरा फ़रमाया करते थे कि कहीं कोई मुसीबत ज़दा या मज़्लूम मदद का मुन्तज़िर तो नहीं, या किसी की कोई ह़ाजत हो तो उसे पूरा फ़रमाएं। ह़ज़रते सय्यिदुना अस्लम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि एक रात मैं भी इस मदनी दौरे में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चलते चलते अचानक एक घर के पास रुक गए, अन्दर से एक ख़ातून की आवाज़ आ रही थी : ''बेटी दूध में पानी मिला दो।'' बेटी बोली : ''अम्मीजान ! क्या आप को मा'लूम नहीं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दूध में पानी मिलाने से मन्अ़ फ़रमाया है !'' मां ने येह सुन कर कहा : ''बेटी ! इस वक़्त तुम्हें अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तो नहीं देख रहे, उन्हें क्या मा'लूम कि तुम ने दूध में पानी मिलाया है या नहीं, जाओ और दूध में पानी मिला दो।'' येह सुन कर उस की बेटी ख़ौफ़े ख़ुदा से भरपूर जवाब देते हुवे यूं गोया हुई : ''ऐ मां ! रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं हरगिज़ ऐसा नहीं कर सकती कि अमीरुल मोमिनीन के सामने तो उन की फ़रमां बरदारी करूं और उन की ग़ैर मौजूदगी में उन की ना फ़रमानी करूं। इस वक़्त अगर्चे मुझे अमीरुल मोमिनीन नहीं देख रहे लेकिन मेरा रब عَزَّوَجَلَّ तो मुझे देख रहा है, मैं हरगिज़ दूध में पानी नहीं मिलाऊंगी।'' अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मां बेटी के दरमियान

---

1 ......اسد الغابۃ، عاصم بن عمر، ج۳، ص۱۱۱۔

होने वाली तमाम गुफ़्त्गू सुन रहे थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से फ़रमाया : ''ऐ अस्लम (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ! इस घर को अच्छी त़रह़ पहचान लो।'' फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सारी रात इसी त़रह़ गलियों में दौरा करते रहे। जब सुब्ह़ हुई तो मुझे अपने पास बुलाया और फ़रमाया : ''ऐ अस्लम (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ! उस घर की त़रफ़ जाओ और तमाम मा'लूमात ले कर आओ कि वोह घर किस का है और वहां कौन कौन रहता है ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना अस्लम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''मैं उस घर की त़रफ़ गया और उन के बारे में मा'लूमात ह़ासिल कीं तो पता चला कि उस घर में एक बेवा औ़रत और उस की ग़ैर शादी शुदा बेटी रहती है। मैं अमीरुल मोमिनीन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और सारी तफ़्सील आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के गोश गुज़ार कर दी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''मेरे तमाम बेटों को मेरे पास बुला कर लाओ।'' मैं गया और सब को बुला लाया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से फ़रमाया : ''क्या तुम में से कोई शादी करना चाहता है ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : ''हम तो शादी शुदा हैं।'' ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : ''अब्बा जान ! मैं ग़ैर शादी शुदा हूं।'' चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस लड़की के घर शादी का पैग़ाम भिजवाया जो ब ख़ुशी क़बूल कर लिया गया। इस त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शादी उस नेक परहेज़गार लड़की से हो गई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से उन के हां एक बेटी उम्मे आ़सिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا पैदा हुई जिस से ''उ़मरे सानी'' ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत हुई।(1)

सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ सीरते फ़ारूक़ी के मज़हर

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के परपोते और मुसलमानों के ख़लीफ़ा भी थे। बचपन में घोड़े की कारी ज़र्ब लगाने के सबब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की पेशानी पर ज़ख़्म का निशान था। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी ह़याते त़य्यिबा ही में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के इसी ज़ख़्म की त़रफ़ इशारा करते हुवे आप की पैदाइश का ज़िक्र इन अल्फ़ाज़ में फ़रमा दिया था कि

1.....उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़, स. 10

مِنْ وُلْدِیْ رَجُلٌ بِوَجْهِهٖ شَجَّةٌ یَمْلَأُ الْاَرْضَ عَدْلًا

"या'नी मेरी औलाद में से एक ऐसा शख़्स होगा जिस के चेहरे पर ज़ख़्म का निशान होगा और वोह रूए ज़मीन को अ़द्लो इन्साफ़ से मा'मूर कर देगा।"

एक रिवायत में यूं है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया :

لَیْتَ شَعْرِیْ! مَنْ ذُو الشَّیْنِ مِنْ وُلْدِی الَّذِیْ یَمْلَؤُھَا عَدْلًا كَمَا مُلِئَتْ جَوْراً

"या'नी काश ! मैं अपनी औलाद में से चेहरे पर ज़ख़्म रखने वाले बेटे का ज़माना पाता जो अपने ज़माने में ज़मीन को ऐसे ही अ़द्लो इन्साफ़ से भर देगा जिस त़रह़ उस से पहले ज़मीन ज़ुल्मो सितम से लबरेज़ होगी।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं :

اِنَّا كُنَّا نَتَحَدَّثُ اَنَّ ھٰذَا الْاَمْرَ لَا یَنْقَضِیْ حَتّٰی یَلِیَ ھٰذِهِ الْاُمَّةَ رَجُلٌ مِنْ وُلْدِ عُمَرَ یَسِیْرُ فِیْھَا بِسِیْرَةِ عُمَرَ

"या'नी हम आपस में गुफ़्त्गू किया करते थे कि दुन्या उस वक़्त तक ख़त्म न होगी जब तक आले उ़मर में एक ऐसा शख़्स तशरीफ़ न ले आए जो अपने जद्दे अमजद सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सीरत व किरदार के मुत़ाबिक़ आ'माल सर अन्जाम दे।"(1)

﴿6﴾.....छटे बेटे, सय्यिदुना ज़ैद अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुकम्मल नाम ज़ैद बिन उ़मर बिन ख़त्ताब क़रशी अ़दवी है आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदए माजिदा का नाम ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम बिन्ते अ़ली बिन अबी त़ालिब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जलीलुल क़द्र ताबेई हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़याते त़य्यिबा के आख़िरी अय्याम में पैदा हुवे। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौर में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बिल्कुल जवान थे उस वक़्त मदीनए मुनव्वरा के वाली ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और आप की वालिदा दोनों का एक ही दिन इन्तिक़ाल हुवा। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की औलाद के ख़ादिम ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन अस्लम से क़त्ले ख़त़ा के सबब आप शहीद हुवे आप की वालिदा आप की शहादत का सदमा न सह सकीं और वोह भी इन्तिक़ाल फ़रमा गईं।

---

(1) ......طبقات کبری، عمر بن عبد العزیز، ج۵، ص ۲۵۴، تاریخ الخلفاء، ص ۱۸۳۔

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की सीरते त़य्यिबा के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 590 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की 425 ह़िकायात" का मुत़ालआ़ कीजिये।

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की नमाज़े जनाज़ा आप के अ़ल्लाती (बाप शरीक) भाई जलीलुल क़द्र सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अदा की और आप के जनाज़े में आप के मामूं सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी शरीक थे।(1)

﴾7﴿.....सातवें बेटे, सय्यिदुना इयाज़ बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुकम्मल नाम इयाज़ बिन उ़मर बिन ख़त्ताब क़रशी अ़दवी है, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदए माजिदा का नाम ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़तिका बिन्ते ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا है जो कि ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बहन हैं, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के तफ़्सीली ह़ालात कुतुब में मज़्कूर नहीं हैं।

﴾8﴿.....आठवें बेटे, सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह असग़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुकम्मल नाम अ़ब्दुल्लाह असग़र बिन उ़मर बिन ख़त्ताब क़रशी अ़दवी है। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदए माजिदा का नाम ह़ज़रते सय्यिदतुना सईदा बिन्ते राफ़ेअ़ बिन उ़बैदुल्लाह (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا) है जो क़बीलए बनी अ़म्र बिन औ़फ़ से तअ़ल्लुक़ रखती थीं। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के तफ़्सीली ह़ालात भी कुतुब में मज़्कूर नहीं हैं।

﴾9﴿.....नवें बेटे, सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान औसत़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुकम्मल नाम अ़ब्दुर्रह़मान औसत़ बिन उ़मर बिन ख़त्ताब क़रशी अ़दवी है। आप की कुन्यत अबू शह़मा है। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर मिस्र के वाली ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़द्दे ख़म्र जारी फ़रमाई बा'दे अज़ां आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिदे माजिद अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी आप पर ता'ज़ीर फ़रमाई जिस के सबब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बीमार हो गए और तक़रीबन एक माह बा'द ही विसाल फ़रमा गए।(2)

﴾10﴿.....दसवें बेटे, सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान असग़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुकम्मल नाम अ़ब्दुर्रह़मान असग़र बिन उ़मर बिन ख़त्ताब क़रशी अ़दवी है। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को **''अबुल मुजब्बर''** भी कहा जाता है। **''मुजब्बर''** उस शख़्स को कहते हैं जिस शख़्स की टूटी हुई हड्डी दुरुस्त हो जाए। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे बचपन में नीचे गिर गए जिस

---

1 ......الایثار، حرف الزاء، الرقم: ۷۵، ج ۱، ص ۷۹، تاریخ ابن عساکر، ج ۱۹، ص ۴۸۲۔

2 ......اسد الغابة، عبد الرحمن الاکبر بن عمر، ج ۳، ص ۴۹۳۔

के सबब उन की हड्डी टूट गई थी, लोग उन्हें उठा कर उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में ले आए और अ़र्ज़ किया : "अपने मुकस्सर बेटे (या'नी भतीजे) की त़रफ़ देखिये या'नी जिस की हड्डी टूट गई है।" तो आप ने फ़रमाया : "**मुकस्सर** नहीं **मुजब्बर** या'नी वोह नहीं जिस की हड्डी टूट गई है बल्कि वोह जिस की टूटी हुई हड्डी जुड़ गई है।"(1)

फ़ारूके आ'ज़म की बेटियों का तआ़रुफ़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बेटियों की कुल ता'दाद पांच है। जिन के अस्माए गिरामी येह हैं : (1) ह़ज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या बिन्ते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) (2) ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा बिन्ते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) (3) ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) (4) ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा बिन्ते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) (5) ह़ज़रते सय्यिदतुना जमीला बिन्ते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا)

पहली बेटी : ह़ज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या बिन्ते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की वालिदए माजिदा का नाम सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम बिन्ते अ़ली बिन अबी त़ालिब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का निकाह़ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन नुऐ़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से हुवा और आप उन की ह़यात में ही इन्तिक़ाल फ़रमा गईं और जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़ून हुईं, इन से सिर्फ़ एक बेटी पैदा हुई लेकिन वोह भी फ़ौत हो गई बा'दे अज़ां कोई औलाद नहीं हुई।(2)

दूसरी बेटी : सय्यिदतुना फ़ात़िमा बिन्ते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की वालिदा का नाम उम्मे ह़कीम बिन्ते ह़ारिस बिन हिशाम बिन मुग़ीरा है। आप का निकाह़ आप के चचा के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से हुवा और उन से एक बेटे अ़ब्दुल्लाह पैदा हुवे। बा'ज़ अह़ादीसे मुबारका में भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का तज़्किरा मिलता है।(3)

---

1 ......اسد الغابة، عبد الرحمن الاكبر بن عمر، ج ٣، ص ٤٩٣، الاستيعاب، عبد الرحمن الاكبر، ج ٢، ص ٣٨٥۔

2 ......تاريخ ابن عساكر، ج ١٩، ص ٤٨٢، كتاب الثقات، ذكر وفاة رسول الله، ج ١، س ١٦١۔

3 ......تاريخ ابن عساكر، ج ٧٠، ص ٢٢٥۔

तीसरी बेटी : सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की औलाद में से सब से छोटी थीं। आप की वालिदा का नाम ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़कीहा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا है जो कि उम्मे वलद थीं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का निकाह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन सुराक़ा अ़दवी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से हुवा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अपनी बहन उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से अह़ादीस भी रिवायत की हैं।[1]

चौथी बेटी : सय्यिदतुना ह़फ़्सा बिन्ते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की लाडली और बुलन्द इक़्बाल शहज़ादी हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की वालिदा का नाम ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते मज़ऊन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस ज़ौजा होने की वज्ह से उम्मुल मोमिनीन या'नी तमाम मुसलमानों की मां भी हैं। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म तीन हिजरी में निकाह़ फ़रमाया। इस से पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा सहमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के निकाह़ में थीं जिन्हों ने जंगे बद्र में शिर्कत की और बा'दे अज़ां जंगे बद्र में लगने वाले ज़ख़्मों के सबब मदीनए मुनव्वरा में शहादत पाई। इन की शहादत के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से निकाह़ की बात की लेकिन उन्हों ने सुकूत इख़्तियार फ़रमाया। फिर उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से निकाह़ की बात की तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि फ़िलहाल मेरा निकाह़ का इरादा नहीं है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शिकायत बारगाहे रिसालत में ले कर गए तो ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

يَتَزَوَّجُ حَفْصَةَ مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِنْ عُثْمَانَ وَيَتَزَوَّجُ عُثْمَانَ مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِنْ حَفْصَةَ

"या'नी ऐ उ़मर ! तुम्हारी बेटी ह़फ़्सा का निकाह़ उस से होगा जो उ़स्मान से अफ़्ज़ल है और उ़स्मान का निकाह़ उस से होगा जो ह़फ़्सा से अफ़्ज़ल है।" फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे

---

[1] ......الاصابة، کتاب النساء، القسم الثانی، ج۸، ص۱۶۷، الرقم:۱۱۲۶۸۔

رياض النضرة، ج۱، ص۳۲۶، طبقات کبری، بقية الطبقة الثانية۔۔۔الخ، ج۵، ص۱۸۸۔

हबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सय्यिदतुना हफ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के लिये निकाह का पैग़ाम भेजा जिसे आप ने क़बूल कर के अपनी बेटी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के निकाह में दे दी और चार सौ दिरहम हक़्क़े महर मुक़र्रर हुवा। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुलाक़ात हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से हुई तो उन्हों ने वज़ाहत करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

لَا تَجِدْ عَلَیَّ فَاِنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ ذَکَرَ حَفْصَۃَ فَلَمْ اَکُنْ لِاُفْشِیَ سِرَّ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ وَلَوْ تَرَکَھَا لَتَزَوَّجْتُھَا

"या'नी ऐ उ़मर ! आप मुझ से ख़फ़ा न हों क्यूंकि मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से आप की बेटी हफ़्सा के बारे में बात की थी और मुझे येह गवारा नहीं कि मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का राज़ किसी दूसरे के सामने इफ़्शां करूं, अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم निकाह न फ़रमाते तो मैं उन से ज़रूर निकाह कर लेता।"

सय्यिदतुना हफ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बहुत ही बुलन्द हिम्मत और सख़ी औ़रत थीं। फ़हमो फ़िरासत, हक़गोई और हाज़िर जवाबी में अपने वालिद ही का मिज़ाज पाया था अक्सर रोज़ादार रहा करतीं और तिलावते क़ुरआने मजीद और दीगर क़िस्म की इबादतों में मसरूफ़ रहा करती थीं इबादत गुज़ार होने के साथ साथ फ़िक़्ह व हदीस के उ़लूम में भी बहुत मा'लूमात रखती थीं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कई अहादीसे मुबारका रिवायत की हैं और आप से आप के भाई हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और दीगर कई अस्हाब ने अहादीस रिवायत की हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का विसाल हज़रते सय्यिदुना इमामे हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त के आख़िरी अय्याम में शा'बान सिने 45 हिजरी या ब इख़्तिलाफ़े रिवायत जुमादल ऊला सिने 41 हिजरी मदीनए मुनव्वरा में हुवा। हाकिमे मदीना मरवान बिन हकम ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और इन के भतीजों ने क़ब्र में उतारा और जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न हुईं ब वक़्ते वफ़ात इन की उ़म्र साठ[60] या तिरसठ[63] बरस थी।(1)

---

(1)......اسد الغابۃ، حفصہ بنت عمر، ج۷، ص۷۴۔
طبقات کبری، حفصۃ بنت عمر، ج۸، ص۶۸۔
الاصابۃ، حفصۃ بنت عمر، ج۸، ص۸۵، الرقم: ۱۱۰۵۳۔
تھذیب التھذیب، کتاب النساء، حرف الحاء، ج۱۰، ص۴۶۵، الرقم: ۸۸۶۱۔

पांचवीं बेटी : सय्यिदतुना जमीला बिन्ते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का नाम "आ़सिया" था, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे तब्दील फ़रमा कर "जमीला" रख दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की एक बेटी का नाम "आ़सिया" था रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तब्दील फ़रमा कर "जमीला" रख दिया।[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म के पोते, पोतियां वग़ैरा

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के बेटों में से सिर्फ़ तीन बेटे ऐसे हैं जिन से आप की औलाद का सिलसिला आगे चला उन में सब से ज़ियादा जिन की औलाद हुई वोह आप के लाडले और तरबिय्यत याफ़्ता बेटे सहा़बिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ हैं। कुतुब में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की जितनी औलाद का सराह़तन तज़्किरा मिलता है इस की तफ़्सील कुछ यूं है :

फ़ारूक़े आ'ज़म के बाईस 22 पोतों के नाम

﴾1﴿.....बिलाल बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब
﴾2﴿.....मुजब्बर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब
﴾3﴿.....आ़सिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब
﴾4﴿.....अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब
﴾5﴿.....ज़ैद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब
﴾6﴿.....सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब
﴾7﴿.....उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब
﴾8﴿.....ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब
﴾9﴿.....वाक़िद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब
﴾10﴿.....अबू उ़बैदा बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब
﴾11﴿.....अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब
﴾12﴿.....उ़स्मान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब
﴾13﴿.....अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब
﴾14﴿.....उ़मर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब
﴾15﴿.....अबू उ़बैद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब

1 ......مسلم، کتاب الآداب، باب استحباب تغییر الاسم۔۔۔الخ، ص ۱۱۸۱، حدیث: ۱۵۔

﴾16﴿.....अबू बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब

﴾17﴿.....उ़मर बिन आ़सिम बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब

﴾18﴿.....उ़बैदुल्लाह बिन आ़सिम बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब

﴾19﴿.....ह़फ़्स बिन आ़सिम बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब

﴾20﴿.....अबू बक्र बिन आ़सिम बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब

﴾21﴿.....सुलैमान बिन आ़सिम बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब

﴾22﴿.....हुर बिन उ़बैदुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब

फ़ारूक़े आ'ज़म की पांच पोतियों के नाम

﴾1﴿.....उम्मे सलमा बिन्ते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब

﴾2﴿.....आ़इशा बिन्ते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब

﴾3﴿.....सौदह बिन्ते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब

﴾4﴿.....ह़फ़्सा बिन्ते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब

﴾5﴿.....उम्मे आ़सिम बिन्ते आ़सिम बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब

फ़ारूक़े आ'ज़म के आठ परपोतों के नाम

﴾1﴿.....मुह़म्मद बिन ज़ैद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब

﴾2﴿.....मुह़म्मद बिन सौदह बिन्ते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब

﴾3﴿.....अबू बक्र बिन सौदह बिन्ते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब

﴾4﴿.....उसैद बिन सौदह बिन्ते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब

﴾5﴿.....इब्राहीम बिन सौदह बिन्ते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब

﴾6﴿.....अ़ब्दुल्लाह बिन ह़फ़्स बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब

﴾7﴿.....अबू बक्र बिन हुर बिन उ़बैदुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब

﴾8﴿.....उ़मर बिन उम्मे आ़सिम बिन्ते आ़सिम बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब

(येही मुसलमानों के ख़लीफ़ा "उ़मरे सानी" सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।)

फ़ारूक़े आ'ज़म की तीन परपोतियों के नाम

﴾1﴿.....अस्मा बिन्ते सौदह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब

﴾2﴿.....उम्मे सलमह बिन्ते अबू बक्र बिन हुर बिन उ़बैदुल्लाह बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब

﴾3﴿.....फ़ाति़मा बिन्ते उ़मर बिन आ़सिम बिन उ़मर बिन ख़त्ता़ब।(1)

---

1 ......طبقات کبری، عبد الرحمن بن زید، ج۵، ص۷ ۳، انساب الاشراف، ولد عبید اللہ بن عمر، ج ۱۰، ص۴۵۸، طبقات کبری، عبد اللہ بن عمر، ج۵، ص۳۳۴۔

फ़ारूके़ आ'ज़म के नवासे

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सिर्फ़ दो बेटियों से आप की औलाद का सिलसिला आगे चला, इस लिये आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के नवासे, नवासियों का ज़िक्र बहुत कम मिलता है।

फ़ारूके़ आ'ज़म के दो नवासों के नाम

﴾1﴿.....अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैनब बिन्ते उ़मर बिन ख़त्ताब

﴾2﴿.....अ़ब्दुल्लाह बिन फ़ाति़मा बिन्ते उ़मर बिन ख़त्ताब[1]

फ़ारूके़ आ'ज़म के भाइयों का तआरुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़क़त़ दो भाइयों का तज़्किरा कुतुब में मिलता है, तआरुफ़ पेशे ख़िदमत है :

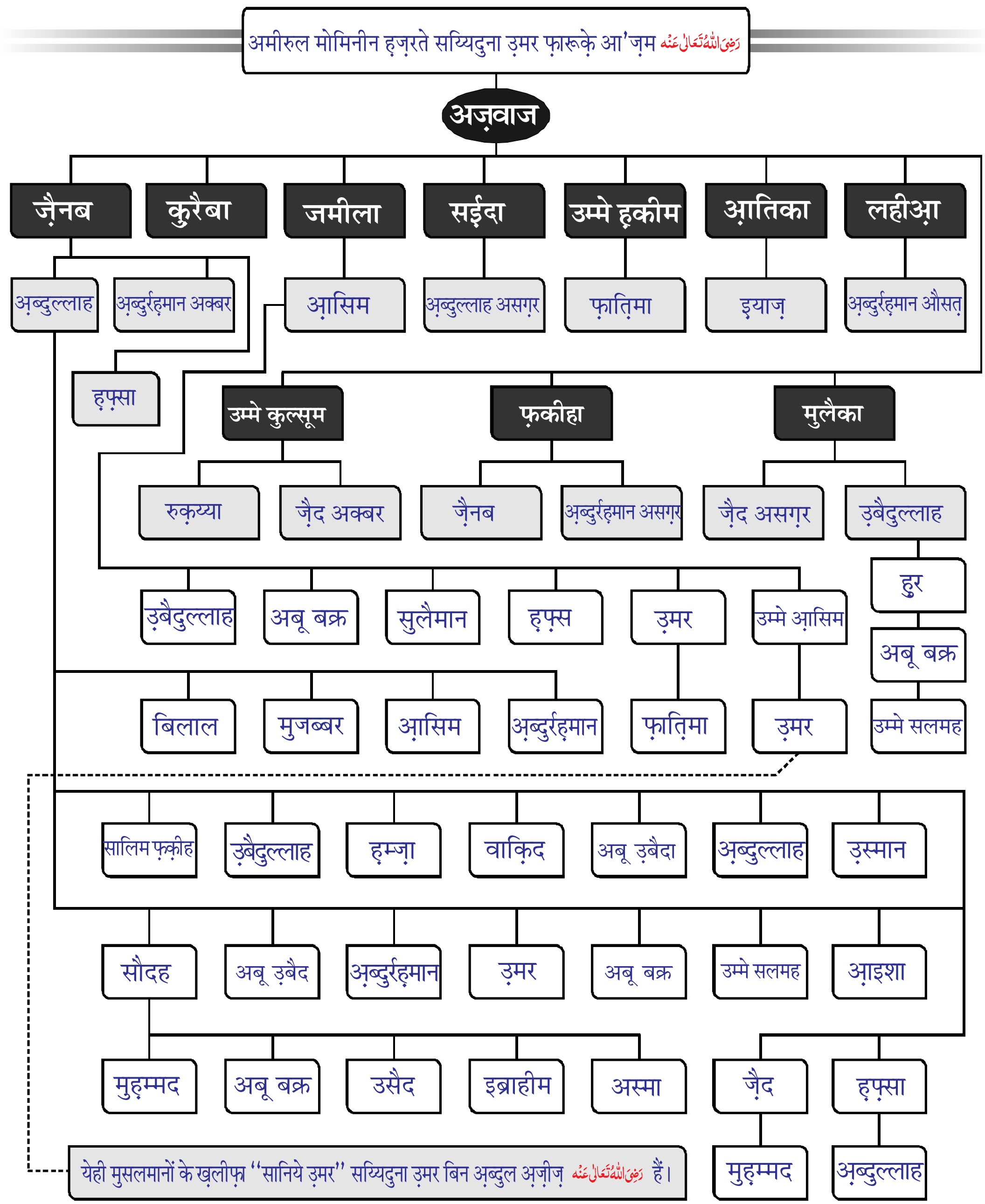
पहले भाई : सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ल्लाती या'नी बाप शरीक भाई हैं कि इन दोनों के वालिद एक और वालिदा जुदा जुदा हैं। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के येह भाई आप से उ़म्र में बड़े थे और इन का क़द मुबारक भी काफ़ी लम्बा था। इन्हों ने इस्लाम भी आप से पहले क़बूल किया था, अव्वलीन मुहाजिरीन में से हैं। ग़ज़्वए बद्र, ग़ज़्वए उहुद, ग़ज़्वए ख़न्दक़, ग़ज़्वए हुदैबिय्या वग़ैरा तमाम ग़ज़्वात में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ शरीक हुवे। रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप का रिश्तए मुवाख़ात ह़ज़रते सय्यिदुना मा'द बिन अ़दिय्य अन्सारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ क़ाइम फ़रमाया था। इमाम बुख़ारी, इमाम मुस्लिम और इमाम अबू दावूद (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن) ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की रिवायात ली हैं। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे ख़िलाफ़त में जंगे यमामा में रबीउ़ल अव्वल सिने ग्यारह या बारह हिजरी में शहीद हुवे। उस जंग का झन्डा आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ही के हाथ में था। आप के शहीद होने का सब से ज़ियादा अफ़्सोस आप के छोटे भाई अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को था। जंगे उहुद में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें अपनी ज़िरह देना चाही तो

---

1 ......الاصابۃ، عبد اللہ بن عبد اللہ بن سراقۃ، ج۵، ص۱۵، الرقم: ۶۱۹۲، تاریخ ابن عساکر، ج۷۰، ص۲۲۵۔

शजरए ख़ानदाने फ़ारूक़े आ'ज़म



आप ने येह कह कर इन्कार कर दिया कि : اِنِّیْ اُرِیْدُ مِنَ الشَّھَادَۃِ مَا تُرِیْدُ "या'नी मैं भी आप ही की त़रह़ राहे ख़ुदा में शहादत ह़ासिल करना चाहता हूं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत पर सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : رَحِمَ اللّٰہُ اَخِیْ سَبَقَنِیْ اِلَی الْحُسْنَیَیْنِ اَسْلَمَ قَبْلِیْ وَاسْتُشْھِدَ قَبْلِیْ "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे भाई पर रह़म फ़रमाए जो दो अच्छी बातों में मुझ से सबक़त ले गए, मुझ से पहले इस्लाम क़बूल किया और मुझ से पहले शहादत ह़ासिल कर ली।"(1)

फ़ारूके आ'ज़म को ग़मज़दा करने वाली शख़्सिय्यत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत ही मज़बूत क़ल्ब वाली शख़्सिय्यत थे लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को आप के भाई ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत ने बहुत ज़ियादा ग़मज़दा किया था, यहां तक कि जब हवा चलती तो आप फ़रमाया करते थे : اِنَّ الصَّبَا لَتَھُبُّ فَتَاْتِیْنِیْ بِرِیْحِ زَیْدِ بْنِ الْخَطَّابِ "या'नी जब हवा चलती है तो ज़ैद बिन ख़त़्त़ाब की ख़ुश्बू मेरे पास ले आती है।" ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत ही जलीलुल क़द्र और बहादुर सह़ाबिये रसूल थे, सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे ख़िलाफ़त में मुसैलमा कज़्ज़ाब के ख़िलाफ़ लड़ी गई मश्हूर जंग "जंगे यमामा" में शहीद हो गए थे।(2)

दूसरे भाई : सय्यिदुना उ़स्मान बिन ह़कीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के येह भाई आप के ह़क़ीक़ी नहीं बल्कि मजाज़ी भाई हैं, या'नी येह आप के भाई सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अख़्याफ़ी (मां शरीक) भाई हैं कि इन दोनों की वालिदा एक ही हैं। बा'ज़ ने इन के सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के रिज़ाई भाई होने का क़ौल भी किया है। इन के वालिद अव्वलीन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में से हैं, सय्यिदुना उ़स्मान बिन ह़कीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस्लाम में इख़्तिलाफ़ है लेकिन राजेह़ इस्लाम ही है।(3)

फ़ारूके आ'ज़म की बहनों का तआ़रुफ़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सिर्फ़ दो ही बहनें हैं जिन का तआ़रुफ़ कुछ यूं है :

---

1 ......تهذیب الاسماء، زیدبن الخطاب، ج ۱، ص ۲۰۰۔

2 ......طبقات کبری، زیدبن الخطاب، ج ۳، ص ۲۸۹۔

3 ......فتح الباری، کتاب الادب، ج ۱، ص ۳۲۸، عمدة القاری، کتاب الادب، باب صلة الاخ المشرک، ج ۱۵، ص ۱۵۲، حدیث: ۵۹۸۱۔

पहली बहन : सय्यिदतुना फ़ाति़मा बिन्ते ख़त्ता़ब رضی اللہ تعالٰی عنہا

आप رضی اللہ تعالٰی عنہا का लक़ब "उमैमा" है इन को "रमला" भी कहते हैं, इन की कुन्यत "उम्मे जमील" और नाम "फ़ाति़मा" है। आप رضی اللہ تعالٰی عنہا अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की सगी बहन और जन्नत की ख़ुश ख़बरी पाने वाले जन्नती सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رضی اللہ تعالٰی عنہ की ज़ौजा हैं। उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رضی اللہ تعالٰی عنہا और आप की बेटियों के बा'द आप पहली ख़ातून हैं जो मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुईं। इस त़रह़ ख़वातीन में आप رضی اللہ تعالٰی عنہا दूसरे नम्बर पर इस्लाम लाईं। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की येह वोही बहन हैं जो इन के क़बूले इस्लाम का सबब बनीं। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ के ईमान लाने से क़ब्ल आप और आप के शोहर अपने घर में छुप कर कु़रआनी मसाहि़फ़ की तिलावत किया करते थे, जब सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ को इस बात की ख़बर हुई तो वोह आप के घर आए और दोनों को मार मार कर लहू लुहान कर दिया बिल आख़िर पाको साफ़ हो कर जब उन ही कु़रआनी सह़ाइफ़ की तिलावत की तो दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो गई और बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर इस्लाम क़बूल फ़रमा लिया।(1)

दूसरी बहन : सय्यिदतुना सफ़िय्या बिन्ते ख़त्ता़ब رضی اللہ تعالٰی عنہا

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की दूसरी बहन ह़ज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या बिन्ते ख़त्ता़ब رضی اللہ تعالٰی عنہا हैं। आप ह़ज़रते सय्यिदुना कु़दामा बिन मज़ऊ़न رضی اللہ تعالٰی عنہ के निकाह़ में थीं। ह़ज़रते सय्यिदुना कु़दामा बिन मज़ऊ़न رضی اللہ تعالٰی عنہ वोही हैं जिन की बहन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते मज़ऊ़न رضی اللہ تعالٰی عنہا सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की ज़ौजिय्यत में थीं। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने सय्यिदुना कु़दामा बिन मज़ऊ़न رضی اللہ تعالٰی عنہ को बह़रैन का आ़मिल मुक़र्रर फ़रमाया था।(2)

फ़ारूके़ आ'ज़म के ग़ुलामों का तआ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तारीख़ के मुता़लए़ से येह बात भी सामने आती है कि दौरे जाहिलिय्यत में लोग अपने ग़ुलामों और ख़ादिमों के साथ बहुत ना रवा सुलूक रखते थे, उन्हें त़रह़ त़रह़ की तक्लीफ़ें देना उन का मह़बूब तरीन मश्ग़ला था, ख़ुसूसन जब कि वोह ग़ुलाम

1 ......الاصابة، فاطمة بنت الخطاب، ج٨، ص ٢٧١، الرقم: ١١٥٩٤، طبقات كبرى، فاطمة بنت الخطاب ـــ الخ، ج٨، ص ٢٠٩، فتح البارى، كتاب الأكراه، باب من اختار ـــ الخ، ج ١٣، ص ٢٧١، تحت الحديث: ٦٩٤٢ـ

2 ......الاستيعاب، باب قدامة، ج٣، ص ٣٤٠، الاصابة، قدامة بن مظعون، ج٥، ص ٣٢٣، الرقم: ٧١٠٣ـ

या ख़ादिम मुसलमान होता तो उस का आक़ा उस पर ज़ुल्मो सितम की इन्तिहा कर देता। सहाबिये रसूल हज़रते सय्यिदुना बिलाल हबशी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का मशहूर वाक़िआ इस रवय्ये की अक्कासी करता है। लेकिन जैसे ही दुन्या में इस्लाम की रौशनी फैली, अवाम व ख़वास, आक़ा व ग़ुलाम के इम्तियाज़ के बिग़ैर तमाम लोगों के हुक़ूक़ यक्सां हो गए। ख़ातमुल मुर्सलीन, रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द आप के जां निसार सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अपने ग़ुलामों के साथ हुस्ने अख़्लाक़ की आ'ला मिसालें क़ाइम कीं। खुसूसन अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ तो ऐसे हाकिम थे जिन के अपने ग़ुलामों के साथ बेहतरीन रवय्ये और हुस्ने अख़्लाक़ की पूरी तारीख़ में मिसाल नहीं मिलती, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के तक़्वा व परहेज़गारी देख कर आप के ग़ुलाम भी अपनी ग़ुलामी पर रश्क करते। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के कई ख़ुद्दाम व ग़ुलामों का कुतुब में तज़्किरा मिलता है अलबत्ता बा'ज़ ख़ुद्दाम ऐसे हैं जो सफ़र व हज़र में हर वक़्त आप के साथ रहते थे, येही वज्ह है कि इन के कुछ न कुछ हालात सीरत व तारीख़ की किताबों में मिल जाते हैं लेकिन बा'ज़ ग़ुलाम वोह हैं जिन के नाम बतौरे रावी के अहादीस व रिवायात में मिलते हैं तफ़्सीली तज़्किरा कुतुब में मज़्कूर नहीं। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के तक़रीबन 32 ग़ुलाम थे, मुख़्तसर तआरुफ़ पेशे ख़िदमत है :

﴾1﴿.....हज़रते सय्यिदुना अस्लम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की कुन्यत अबू ख़ालिद है। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को "अबू ज़ैद" भी कहा जाता है। ऐनुत्तम्र की जंग में हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथों क़ैदी बन कर आए और ग्यारह हिजरी में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ग़ुलामी में आ गए। सफ़र व हज़र में आप के साथ रहे, आप की पसन्द व ना पसन्द का इन्हें बहुत तजरिबा था। मुख़्तलिफ़ उमूरे ज़िन्दगी में सीरते फ़ारूक़ी के मज़हर थे। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ताबेई हैं और कसीर सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से अहादीस भी रिवायत की हैं जिन में चारों ख़ुलफ़ाए राशिदीन के इलावा सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जर्राह, सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल, सय्यिदुना अबू हुरैरा, सय्यिदुना अमीरे मुआविय्या (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم) सरे फ़ेहरिस्त हैं। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मरविय्यात सिहाहे सित्ता में भी मौजूद हैं। आप का विसाल 114 साल की उम्र में सिने 80 हिजरी में हुवा।(1)

---

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج۸، ص۳۲۶، تہذیب الاسماء، حرف الالف، ج۱، ص۱۲۱۔

الوافی بالوفیات، ج۳، ص۱۸۹، الکامل فی التاریخ، ثم دخلت سنۃ خمسین، ج۴، ص۱۹۴۔

﴾2﴿.....हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हज़रते सय्यिदुना अस्लम رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बेटे हैं। और अपने वालिद से कई अहादीस रिवायत की हैं। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ग़ुस्ल के लिये क़ुमक़ुमे (सुराही नुमा बरतन) में पानी गर्म किया करते थे।(1)

﴾3﴿.....हज़रते सय्यिदुना मिह्जअ़ बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का तअ़ल्लुक़ क़बीला "अ़क" से था इसी लिये "अ़क्की" कहलाते थे। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के येह वोह ग़ुलाम हैं जिन्हों ने जंगे बद्र में सब से पहले जामे शहादत नोश किया। हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मिह्जअ़ मेरी उम्मत के शुहदा के सरदार हैं।"(2)

﴾4﴿.....हज़रते सय्यिदुना यसार बिन नुमैर मदनी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के हां आटा साफ़ करने पर मा'मूर थे। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौर में हज़रते यसार बिन नुमैर رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ गोदाम के मुहाफ़िज़ व मुन्तज़िम भी थे इसी लिये आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को "ख़ाज़िने उ़मर" भी कहा जाता है।(3)

﴾5﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन राफ़ेअ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात के हां क़ुरआनी मसाहिफ़ नक़्ल करने पर मा'मूर थे।(4)

﴾6﴿.....हज़रते सय्यिदुना नुऐ़म बिन अ़ब्दुल्लाह मुजमिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत "अबू अ़ब्दुल्लाह" और लक़ब "अल मुजमिर या'नी सुलगाने वाला" है। चूंकि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये अंगेठी में ऊ़द सुलगाया करते थे, नीज़ सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन्हें मस्जिदे नबवी में हर जुमुआ़ को

---

1 ......دارقطنی، کتاب الطھارۃ، باب الماء المسخن، ج ۱، ص ۵۲، حدیث: ۸۲۔

2 ......تھذیب الاسماء، مھجع، ج ۲، ص ۴۱۸، الاصابۃ، مھجع العکی، ج ۶، ص ۱۸۲، الرقم: ۸۲۷۸۔

3 ......الاصابۃ، یسار بن نمیر، ج ۶، ص ۵۵۵، الرقم: ۹۴۴۳۔

مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الفضائل، ماذکر فی۔۔۔الخ، ج ۸، ص ۱۴۸، حدیث: ۱۲۔

4 ......سنن کبری، کتاب الصلاۃ، باب من قال۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۶۷۸، حدیث: ۲۱۷۵۔

ख़ुश्बू सुलगाने की ज़िम्मेदारी दे रखी थी इसी लिये आप "**अल मुजमिर** या'नी सुलगाने वाले" के लक़ब से मश्हूर हो गए। आप का इन्तिक़ाल 120 हिजरी में हुवा।(1)

﴾7﴿.....हज़रते सय्यिदुना सा'द जारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना सा'द अल जारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम "सा'द बिन नौफ़ल" है। कुल्ज़ुम के क़रीब एक शहर है जिसे "अलजार" कहते हैं इसी निस्बत से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ "अल जारी" कहलाते हैं। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन को "अल जार" का गवर्नर बनाया था।(2)

﴾8﴿.....हज़रते सय्यिदुना हुनय رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को "हि़मा" का गवर्नर बनाया था और नसीह़त करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ऐ हुनय ! मुसलमानों के साथ नर्मी से पेश आना और मज़्लूम की बद दुआ़ से हमेशा अपना दामन बचाना क्यूंकि मज़्लूम की दुआ़ क़बूल की जाती है।"(3)

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के चन्द दीगर ग़ुलामों के नाम

﴾9﴿ हज़रते सय्यिदुना उ़मैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾10﴿ हज़रते सय्यिदुना अबू सालेह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾11﴿ हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान सुलैमानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾12﴿ हज़रते सय्यिदुना हुरमुज़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾13﴿ हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन सा'द رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾14﴿ हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सा'द رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾15﴿ हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन अस्लम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾16﴿ हज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾17﴿ हज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन हुनैन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾18﴿ हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ बिन हुनैन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

---

1 ......الثقات لابن حبان، ج ٣، ص ٩٠، حدیث: ٦٢٠٢، اللباب فی تهذیب الانساب، ج ٢، ص ٣٠١۔
مصنف ابن ابی شیبة، کتاب صلاۃ۔۔۔الخ، فی تخلیق المساجد، ج ٢، ص ٢٥٨، حدیث: ٥۔

2 ......معجم البلدان، حرف الجیم، ج ٢، ص ٢٢۔

3 ......بخاری، کتاب الجهاد والسیر، اذا اسلم قوم فی دار الحرب ولهم مال وارضون فهی لهم، ج ٢، ص ٣٢٨، حدیث: ٣٠٥٩ ملتقطا۔

﴾19﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन कसीर رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾20﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन इयाज़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾21﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना नजदा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾22﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द ह़ारिसी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾23﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमय्या رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾24﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾25﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन बेलमानी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾26﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ख़ुनास رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾27﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अनस क़ुरशी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾28﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उसामा क़ुरशी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾29﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन फ़र्रूख़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾30﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना फ़रक़द رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾31﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना ज़कवान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾32﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

फ़ारूक़े आ'ज़म के मुअज़्ज़िनीन

कुतुबे अह़ादीस व सियर व तारीख़ में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के तीन मुअज़्ज़िनीन का तज़किरा मिलता है जिन के अस्माए गिरामी दर्जे ज़ैल हैं :

﴾1﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मसरूक़ बिन अजदअ़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾2﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अक़रअ़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾3﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म की रसूलुल्लाह से रिश्तेदारी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी इन्सान की ह़यात में उस के रिश्तेदारों की अहम्मिय्यत से कौन वाक़िफ़ नहीं ? बीसियों मुआ़मलात ऐसे होते हैं जिन में अपने रिश्तेदारों से रुजूअ़ करना पड़ता

1.....جامع المسانید والسنن، مسروق مؤذن عمر۔۔۔الخ، ج۱۸، ص۲۴۸، حدیث: ۴۲۸۔
ابو داود، کتاب السنة، باب فی الخلفاء، ج۴، ص۲۸۱، حدیث: ۴۶۵۶۔
جامع الاصول، الباب الثانی فی۔۔۔الخ، ج۴، ص۸۰، حدیث: ۲۰۸۱۔
معجم کبیر، سعد القرظ عن بلال، ج۱، ص۳۵۳، حدیث: ۱۰۷۵۔

है, ख़ुसूसन जब कोई मुश्किल वक़्त पेश आए तो अव्वलन इन्सान अपने क़रीबी रिश्तेदारों ही की त़रफ़ रुजूअ़ करता और इस्तिआ़नत (मदद) चाहता है। रिश्तेदारों से हुस्ने अख़्लाक़ की मुतअ़द्दिद अह़ादीसे मुबारका भी वारिद हुई हैं। बा'ज़ औक़ात येही रिश्तेदार किसी शख़्स की इ़ज़्ज़त व ज़िल्लत का बाइ़स भी बनते हैं। जिन रिश्तेदारों का किरदार मुआ़शरे में अच्छा नहीं होता उ़मूमन लोग अपनी त़रफ़ उन की निस्बत करना पसन्द नहीं करते और जिन रिश्तेदारों का किरदार मुआ़शरे में बहुत अच्छा होता है, उन्हें इ़ज़्ज़त की निगाह से देखा जाता है तो लोग भी अपनी त़रफ़ उन की निस्बत करने में फ़ख़्र मह़सूस करते हैं। येही वज्ह है कि कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन व मुनाफ़िक़ीन और ऐसे तमाम फ़ासिक़ लोग जो दीनी व दुन्यवी मुआ़शरे की बदनामी का बाइ़स बनते हैं न तो उन्हें अच्छे अल्फ़ाज़ में याद किया जाता है और न ही उन की ता'ज़ीम व तौक़ीर का कोई एहतिमाम किया जाता है, जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सच्चे अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام व दीगर ऐसे लोग जो दीनी व दुन्यवी मुआ़शरे की नेक नामी का बाइ़स बने, जिन्हों ने मुआ़शरे को इ़ज़्ज़त बख़्शी بِحَمۡدِ اللہِ تَعَالٰی आज उन की सीरते त़य्यिबा को सुन्हरी हुरूफ़ से न सिर्फ़ लिखा जाता है बल्कि निहायत ही ज़ौक़ो शौक़ से पढ़ा भी जाता है, नीज़ उन के मज़ारात मरजए़ ख़लाइक़ हैं।

दुन्या की तमाम रिश्तेदारियों में सब से अ़ज़ीम रिश्तेदारी दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़्रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم व सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان की रिश्तेदारी है। जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिश्तेदारी नसीब हो जाए उस की सआ़दत मन्दी के क्या कहने ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ के बा'द वोह सआ़दत मन्द हैं जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिश्तेदारी नसीब हुई। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان ताबेई़न व दीगर मशाहीरे आ'लाम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام से रिश्तेदारी मुलाह़ज़ा कीजिये :

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ की बेटी का रसूलुल्लाह से अ़क़्दे मुबारक

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने अपनी लाडली बेटी ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का निकाह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म तीन हिजरी (एक क़ौल के मुत़ाबिक़ दो हिजरी) में फ़रमाया यूं आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا उम्मुल मोमिनीन या'नी तमाम मुसलमानों की मां बन गईं। हुज़ूर नबिय्ये पाक,

साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाले ज़ाहिरी ग्यारह सिने हिजरी में हुवा। यूं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की कमो बेश सात साल आठ माह रफ़ाक़त नसीब हुई।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बेटी चूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजा हैं लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सुसराली रिश्तेदार हुवे और सुसराली रिश्ते का दोज़ख़ में दाख़िल न होना, क़ियामत में इस का बाक़ी रहना नीज़ इस सुसराली रिश्ते के मुख़ालिफ़ीन की मुख़ालफ़त (Boycott) का ख़ुद सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म इरशाद फ़रमाया। चुनान्चे,

सुसराली रिश्तेदार कभी दोज़ख़ में दाख़िल न होगा

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : سَأَلْتُ رَبِّیْ اَنْ لَّا یَدْخُلَ النَّارَ مَنْ صَاهَرْتُهُ اَوْ صَاهَرَنِیْ या'नी मैं ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से सुवाल किया कि वोह उस शख़्स को दोज़ख़ में न डाले जिस से मैं ने सुसराली रिश्ता जोड़ा या जिस ने मुझ से येह रिश्ता क़ाइम किया।"[2]

सुसराली रिश्ता क़ियामत में भी बाक़ी रहेगा

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) से रिवायत है कि मैं ने शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : "हर नसबी और सुसराली रिश्ता रोजे़ क़ियामत ख़त्म हो जाएगा, मगर मेरे येह दोनों रिश्ते बाक़ी रहेंगे।"[3]

सुसराली रिश्ते के मुख़ालिफ़ीन की मुख़ालफ़त का हुक्म

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मह़बूबे रब्बे दावर, शफ़ीए रोजे़ मह़शर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّ اللّٰهَ اخْتَارَنِیْ وَاخْتَارَلِیْ اَصْحَابِیْ وَاَصْهَارِیْ وَسَيَاْتِیْ قَوْمٌ يَسُبُّوْنَهُمْ وَيَنْتَقِصُوْنَهُمْ فَلَاتُجَالِسُوْهُمْ وَلَاتُشَارِبُوْهُمْ وَلَاتُوَاكِلُوْهُمْ وَلَاتُنَاكِحُوْهُمْ

1 ......المنتظم، ج ٣، ص ١٦٠، تهذيب التهذيب، كتاب النساء، حرف الحاء، ج ١٠، ص ٤٦٤، الرقم: ١١٨٦١ـ

2 ......سيرة حلبيه، باب ذكر مغازيه، غزوة تبوک، ج ٣، ص ١٨٤، الاستيعاب، عثمان بن عفان، ج ٣، ص ١٥٦ـ

3 ......مستدرک حاکم، کتاب معرفة الصحابة، نکاح عمر بام کلثوم۔۔۔الخ، ج ٤، ص ١١٩، حديث: ٤٧٣٨ـ

या'नी बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे पसन्द फ़रमाया और मेरे लिये सहाबा और सुसराली रिश्तेदार पसन्द किये और अ़न क़रीब एक क़ौम आएगी जो इन्हें बुरा कहेगी और इन की शान घटाएगी, तुम उन के पास मत बैठना, न उन के साथ पानी पीना, न खाना खाना, न शादी बियाह करना।(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीसे मुबारका में सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ख़ुसूसन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सुसराली रिश्तेदार शैख़ैने करीमैन या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) की शान में गुस्ताख़ी करने, इन की शान को घटाने वालों से क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ (Boycott) का सराह़तन हुक्म दिया गया है। जब हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रिश्तेदारों के गुस्ताख़ का येह हुक्म है तो ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गुस्ताख़ी करने वालों का क्या हुक्म होगा। आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या, जि. 24, स. 314 पर इसी ह़दीसे मुबारका को नक़्ल करने के बा'द इरशाद फ़रमाते हैं : "जब अहले बैत और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم के बुरा कहने वालों के लिये येह हुक्म हैं तो अहले कुफ़्र और عِيَاذًا بِاللهِ ख़ुदा व रसूल (عَزَّوَجَلَّ وصلّى الله تعالىٰ عليه واٰله وسلّم) की जनाब में सरीह़ गुस्ताख़ियां करने वालों की निस्बत किस क़दर सख़्त हुक्म चाहिये।"

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की शान बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं :

वोह उ़मर जिस के आ'दा पे शैदा सक़र
उस ख़ुदा दोस्त ह़ज़रत पे लाखों सलाम

शर्ह़ :- अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के दुश्मनों का जहन्नम आ़शिक़ है, आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बारगाहे ख़ुदावन्दी के मुक़र्रब और रब عَزَّوَجَلَّ के साथ दोस्ती रखने वाले हैं आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه पर लाखों सलाम हों।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सई़द ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ اَبْغَضَ عُمَرَ فَقَدْ اَبْغَضَنِیْ وَمَنْ اَحَبَّ عُمَرَ فَقَدْ اَحَبَّنِیْ

---

(1) ......ضعفاء كبير، احمد بن عمران الاخنسی، ج ۱، ص ۱۴۴، الرقم: ۱۵۴۔

''या'नी जिस ने उ़मर से बुग़्ज़ रखा उस ने मुझ से बुग़्ज़ रखा और जिस ने उ़मर से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की।''(1)

और ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

مَنْ اَحَبَّنِیْ اَحَبَّہُ اللّٰہُ وَ مَنْ اَحَبَّہُ اللّٰہُ اَدْخَلَہُ الْجَنَّۃَ وَ مَنْ اَبْغَضَنِیْ اَبْغَضَہُ اللّٰہُ وَ مَنْ اَبْغَضَہُ اللّٰہُ اَدْخَلَہُ النَّارَ

या'नी जिस ने मुझ से मह़ब्बत की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से मह़ब्बत फ़रमाएगा और जिस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मह़ब्बत की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और जिस ने मुझ से बुग़्ज़ रखा उस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बुग़्ज़ रखेगा और जिस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बुग़्ज़ रखा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम में दाख़िल फ़रमाएगा।''(2)

मा'लूम हुवा कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मह़ब्बत ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बुग़्ज़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बुग़्ज़ है और जिस ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत की यक़ीनन वोह जन्नती है और जिस ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बुग़्ज़ रखा यक़ीनन वोह जहन्नमी है। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने शे'र में इन ही दोनों अह़ादीसे मुबारका की त़रफ़ इशारा फ़रमाया है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان औलियाए इ़ज़्ज़ाम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام की शाने अक़्दस में गुस्ताख़ी से मह़फ़ूज़ व मामून फ़रमाए, और इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या की मह़ब्बत ता क़ियामत हमारे दिलो में बसाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह के हम ज़ुल्फ़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हम ज़ुल्फ़ हैं कि दो आ़लम के ताजदार, हम बेकसों के ग़म ख़्वार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजा उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह बिन्ते अबू उमय्या (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) और सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा क़ुरैबा बिन्ते अबू उमय्या

---

1 ......مجمع الزوائد، کتاب المناقب، باب منزلۃ عمر عند اللہ۔۔۔الخ، ج ۹، ص ۶۹، حدیث: ۱۴۴۳۹۔

2 ......مستدرک حاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، حدیث تسمیۃ۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۱۵۵، حدیث: ۴۸۲۹ ملتقطا۔

दोनों सगी बहनें थीं। यूं सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हम ज़ुल्फ़ हुवे।

﴾1﴿.....सय्यिदतुना सलमह बिन्ते अबू उमय्या। ज़ौजए रसूलुल्लाह

﴾2﴿.....सय्यिदतुना क़ुरैबा बिन्ते अबू उमय्या। ज़ौजए फ़ारूक़े आ'ज़म।(1)

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह के भतीजे

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह बिन्ते अबू उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदा "ह़न्तमा बिन्ते हाशिम" चचाज़ाद बहनें थीं। इस त़रह़ ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के दूर के भतीजे हुवे। चूंकि ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजा हैं लिहाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के भी भतीजे हुवे।

﴾1﴿.....सय्यिदतुना उम्मे सलमह बिन्ते अबू उमय्या बिन मुग़ीरा बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन मख़्ज़ूम। ज़ौजए रसूलुल्लाह

﴾2﴿.....ह़न्तमा बिन्ते हाशिम बिन मुग़ीरा बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन मख़्ज़ूम। वालिदए फ़ारूक़े आ'ज़म।(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म की अहले बैत से रिश्तेदारी

फ़ारूक़े आ'ज़म मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दामाद

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने अपनी लाडली शहज़ादी "ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम" رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का निकाह़ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया इस त़रह़ सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) के दामाद हुवे।(3)

---

1 .....الکامل فی التاریخ، ثم دخلت سنة ثلاث وعشرين، ذکر اسماء ولده ونسائه، ج ۲، ص ۴۵۰۔

2 .....مدارج النبوة، ج ۲، ص ۴۷۵، الاستيعاب، کتاب کنی النساء، ج ۴، ص ۴۹۳۔

3 .....اسد الغابه، ام کلثوم بنت علی۔۔۔الخ، ج ۷، ص ۴۲۴۔

फ़ारूके़ आ'ज़म शहज़ादिये कौनैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के दामाद

हज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का निकाह अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से हुवा जो कि शहज़ादिये कौनैन सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की शहज़ादी हैं, इस तरह सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शहज़ादिये कौनैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के भी दामाद हुवे।[1]

फ़ारूके़ आ'ज़म ह़सनैने करीमैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के बहनोई

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा हज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़सनैने करीमैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की सगी बहन थीं इस लिये सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इन के बहनोई हुवे।[2]

फ़ारूके़ आ'ज़म सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फूफा

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फूफा हैं, क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे हैं और सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बहन हैं और वालिद की बहन फूफी होती है और फूफी का शोहर फूफा होता है, चूंकि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के शोहर हैं लिहाज़ा वोह आप के फूफा हुवे।[3]

फ़ारूके़ आ'ज़म सय्यिदुना इमाम बाक़िर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दादा

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदुना इमाम बाक़िर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दादा हैं क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे हैं और सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इन के फूफा हैं लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के "दादा" हुवे।[4]

---

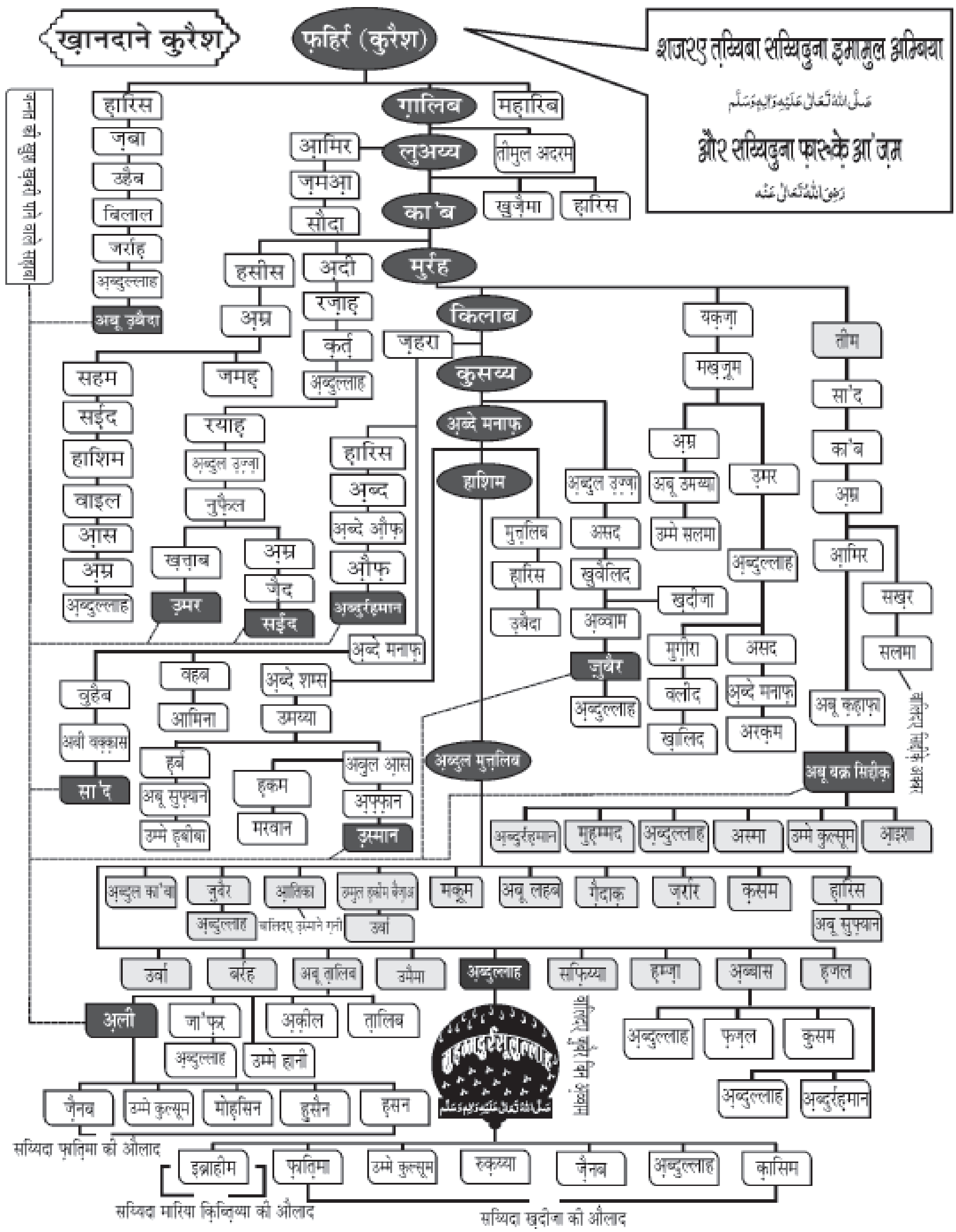
1 ......طبقات کبری، تسمیۃ النساء اللواتی۔۔۔الخ، ج۸، ص۳۳۸۔

2 ......الاصابۃ، فیمن عرف بالکنیۃ من النساء، ام کلثوم بنت علی، ج۸، ص۴۶۵، الرقم: ۱۲۲۳۷۔

3 ......طبقات کبری، بقیۃ الطبقۃ الثانیۃ من التابعین، ج۵، ص۱۶۲۔

4 ......الاصابۃ، الحسین بن علی، ج۲، ص۶۸، الرقم: ۱۷۲۹۔

ख़ानदाने फ़ारूके आ'ज़म


ख़ानदाने कुरैश
फ़ह्र (कुरैश)
शजरए तय्यिबा सय्यिदुना इमामुल अम्बिया
صلى الله تعالى عليه واله وسلم
और सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म
رضی اللہ تعالیٰ عنہ
हारिस
जब्बा
उहैब
बिलाल
जर्राह
अ़ब्दुल्लाह
अबू उ़बैदा
ग़ालिब
महारिब
आमिर
लुअय्य
तीमुल अदरम
जुमह़
सौदा
का'ब
ख़ुज़ैमा
हारिस
हसीस
अदी
मुर्रह
अ़म्र
रज़ाह
किलाब
यक़ज़ा
तीम
जहरा
क़र्त
सहम
जमह़
अ़ब्दुल्लाह
कुसय्य
मख़ज़ूम
सा'द
सईद
रयाह
अ़ब्दे मनाफ़
का'ब
हाशिम
अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा
हारिस
हाशिम
अ़म्र
अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा
अबू उमय्या
उ़मर
अ़म्र
वाइल
नुफ़ैल
अ़ब्द
आस
अ़ब्दे औफ़
मुत्तलिब
असद
उम्मे सलमा
आमिर
ख़त्ताब
अ़म्र
औफ़
हारिस
ख़ुवैलिद
अ़ब्दुल्लाह
अ़म्र
ज़ैद
ख़दीजा
सख़र
अ़ब्दुल्लाह
उ़मर
सईद
अ़ब्दुर्रहमान
उ़बैदा
अ़व्वाम
मुग़ीरा
असद
सलमा
अ़ब्दे मनाफ़
ज़ुबैर
वुहैब
वहब
अ़ब्दे शम्स
वलीद
अ़ब्दे मनाफ़
अबू क़ुहाफ़ा
अ़ब्दुल्लाह
आमिना
उमय्या
अबी वक़्क़ास
ख़ालिद
अरक़म
हर्ब
अबुल आस
अ़ब्दुल मुत्तलिब
सा'द
हकम
अबू बक्र सिद्दीक़
अबू सुफ़्यान
अफ़्फ़ान
मरवान
अ़ब्दुर्रहमान
मुहम्मद
अ़ब्दुल्लाह
अस्मा
उम्मे कुल्सूम
आइशा
उम्मे हबीबा
उ़स्मान
अ़ब्दुल का'बा
ज़ुबैर
आतिका
मक़्वूम
अबू लहब
ग़ैदाक़
ज़रार
क़ुसम
हारिस
अ़ब्दुल्लाह
उ़र्वा
अबू सुफ़्यान
उ़र्वा
बर्रह
अबू तालिब
उमैमा
अ़ब्दुल्लाह
सफ़िय्या
हम्ज़ा
अ़ब्बास
हजल
अ़ली
जा'फ़र
अ़क़ील
तालिब
अ़ब्दुल्लाह
फ़ज़्ल
क़ुसम
अ़ब्दुल्लाह
उम्मे हानी
अ़ब्दुल्लाह
अ़ब्दुर्रहमान
ज़ैनब
उम्मे कुल्सूम
मोहसिन
हुसैन
हसन
सय्यिदा फ़ातिमा की औलाद
इब्राहीम
फ़ातिमा
उम्मे कुल्सूम
रुक़य्या
ज़ैनब
अ़ब्दुल्लाह
क़ासिम
सय्यिदा मारिया क़िब्तिय्या की औलाद
सय्यिदा ख़दीजा की औलाद

फ़ारूके़ आ'ज़म सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के परदादा

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के परदादा हैं क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना इमाम बाक़िर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे हैं और सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इन के दादा हैं लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के परदादा हुवे।(1)

फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म पाको हिन्द में

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की औलाद का सिलसिला तक़रीबन पूरी दुन्या में फैलता चला गया यहां तक कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ैज़ान से हिन्द भी फ़ैज़याब हुवा। हिन्द में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की औलाद में से ऐसे जलीलुल क़द्र अइम्मा पैदा हुवे जिन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ैज़ान की धूम मचा दी।

चन्द अइम्मए किराम का तआ़रुफ़ पेशे ख़िदमत है :

बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर फ़ारूक़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का शुमार पाको हिन्द के मश्हूरो मा'रूफ़ औलियाए किराम में होता है, सिलसिलए चिश्तिया के मशाइख़ में से हैं, 575 हिजरी में मुल्तान के एक क़स्बे कहूतीवाल में पैदा हुवे, हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा बख़्तियार काकी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मुरीद और सय्यिदुना ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पीरो मुर्शिद हैं। आप के असातिज़ा में आप के दादा पीर हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी अल मा'रूफ़ ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, शैख़ शिहाबुद्दीन सोहरवर्दी, ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन अ़त्तार, हज़रते बहाउद्दीन ज़करिय्या मुल्तानी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم) के अस्मा सरे फ़ेहरिस्त हैं। अस्सी या नव्वे साल की उ़म्र में विसाल हुवा और पाकिस्तान के शहर पाक पतन शरीफ़ में आप का मज़ार मरजए ख़लाइक़ है।(2)

मुजद्दिदे अल्फ़े सानी शैख़ अह़मद सरहिन्दी फ़ारूक़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

इमामे रब्बानी हज़रते शैख़ अह़मद बिन अ़ब्दुल अह़द फ़ारूक़ी नक़्शबन्दी सरहिन्दी अल मा'रूफ़ मुजद्दिदे अल्फ़े सानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का अस्ल नाम "अह़मद" कुन्यत "अबुल बरकात" और

1 ......تہذیب الاسماء، جعفر بن محمد، ج ۱، ص ۱۵۵۔

2 ......اُردو دائرہ معارف اسلامیہ، ج ۱۵، ص ۳۴۰ ملخصاً۔

लक़ब ''बदरुद्दीन'' है। आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ात रुश्दो हिदायत का वोह सर चश्मा है कि जिस से अपने और ग़ैर दोनों सैराब हो रहे हैं। जहालत व गुमराही के अन्धेरों में आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के फ़रामीन व मक्तूबात रौशनी की किरन हैं। आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का विसाल 29 सफ़र 1034 हिजरी में हुवा, आप का मज़ार शरीफ़ मशरिक़ी पंजाब हिन्द में है।(1)

सिराजुल औलिया हज़रते आग़ा अ़ब्दुर्रहमान ख़ान सर हिन्दी फ़ारूक़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللہِ الْقَوِی

आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हज़रते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللہِ الْقَوِی की औलाद से हैं, वालिदे गिरामी का नाम ख़्वाजा अ़ब्दुल क़य्यूम सरहिन्दी था, आप का सिलसिलए नसब नौ वासितों से हज़रते इमामे रब्बानी और इक्तालीस वासितों से अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से जा मिलता है। 1244 हिजरी को क़न्धार में पैदा हुवे और 1315 हिजरी में विसाल फ़रमाया। आप का मज़ार शरीफ़ (ज़िल्अ़ टन्डो मुहम्मद ख़ान) बाबुल इस्लाम सिन्ध में है, ताजुल औलिया हज़रते मौलाना आग़ा मुहम्मद हसन जान सरहिन्दी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आप के फ़रज़न्द और हज़रते मौलाना आग़ा मुहम्मद इब्राहीम जान सरहिन्दी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पोते हैं।(2)

बर्रे सग़ीर के दो मा'रूफ़ फ़ारूक़ी, इल्मी ख़ानदान

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की औलाद में से दो सगे भाई ''बहाउद्दीन और शम्सुद्दीन'' ईरान से ''हिन्द'' तशरीफ़ लाए। हज़रते शम्सुद्दीन फ़ारूक़ी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की औलाद में शाह अ़ब्दुर्रहीम मुहद्दिस देहलवी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पैदा हुवे। हज़रते बहाउद्दीन की औलाद में से ''शैख़ अरशद رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ'' ख़ैराबाद तशरीफ़ लाए और इन ही की औलाद में अ़ल्लामा फ़ज़्ल इमाम ख़ैराबादी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पैदा हुवे। ख़ानवादए ख़ैराबाद (या'नी अ़ल्लामा फ़ज़्ल इमाम ख़ैराबादी का ख़ानदान) और ख़ानवादए देहली (या'नी हज़रते अ़ब्दुर्रहीम मुहद्दिसे देहलवी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का ख़ानदान) इन ही दो भाइयों की औलाद में से हैं। ख़ानवादए ख़ैराबाद मा'क़ूलात में अपना सानी नहीं रखता तो ख़ानवादए देहली मन्क़ूलात में अपनी मिसाल आप है इस वज्ह से सफ़ीनए इल्मो फ़ज़्ल को चलाने वाले इन्ही दो क़ुतुब नुमा से रहनुमाई लेते नज़र आते हैं।(3)

1 ......اردو دائرہ معارف اسلامیہ، ج ۲، ص ۱۲۶۔

2 ......انوار علمائے اہلسنت سندھ، ص ۵۲۱۔

3 ......المسوی شرح موطا، ج ۱، ص ۵، اردو دائرہ معارف اسلامیہ، ج ۱۸، ص ۷۲ ۳۔

इमामुल मन्तिक़ अ़ल्लामा फ़ज़्ल इमाम ख़ैराबादी फ़ारूक़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का सिलसिलए नसब 33 वासित़ों से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अल ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से जा मिलता है। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के नामवर शागिर्दों में ह़ज़रते सदरुद्दीन आज़ुर्दा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और आप के फ़रज़न्द अ़ल्लामा फ़ज़्ले ह़क़ ख़ैराबादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हैं।(1)

इमामुल मन्तिक़ अ़ल्लामा फ़ज़्ले ह़क़ ख़ैराबादी फ़ारूक़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

अ़ल्लामा मुह़म्मद फ़ज़्ले ह़क़ ख़ैराबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना फ़ज़्ल इमाम ख़ैराबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی के फ़रज़न्दे अर्जुमन्द थे। चार माह के क़लील अ़र्से में कुरआने करीम ह़िफ़्ज़ करने के बा'द सिर्फ़ 13 साल की छोटी सी उ़म्र में फ़ारिगुत्तह़सील हो कर कई उ़लूम में तबह़्ह़ुर ह़ासिल कर लिया। मन्तिक़ व फ़ल्सफ़ा व दीगर उ़लूमे अ़क़्लिय्या में कमाले इदराक रखने के साथ साथ निहायत फ़सीह़ो बलीग़ और नज़्मो नस्र दोनों में कलाम करने के माहिर थे।(2)

शाह अ़ब्दुर्रह़ीम देहलवी फ़ारूक़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

ह़ज़रते शाह अ़ब्दुर्रह़ीम मुह़द्दिस देहलवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मुतवफ़्फ़ा 1131 हिजरी) ह़ज़रते शम्सुद्दीन फ़ारूक़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की औलाद में से हैं। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ 1054 हिजरी को पैदा हुवे, उ़लूमे अ़क़्लिय्या व नक़्लिय्या के जामेअ़ थे। सारी ज़िन्दगी दर्सो तदरीस से वाबस्ता रहे, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने 77 साल की उ़म्र में वफ़ात पाई।(3)

शाह वलिय्युल्लाह मुह़द्दिसे देहलवी फ़ारूक़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

ह़ज़रते शाह वलिय्युल्लाह मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की कुन्यत "अबुल फ़य्याज़" लक़ब "कुत़्बुद्दीन" है। आप का सिलसिलए नसब 29 वासित़ों से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से जा मिलता है।(4)

---

1 ......اردو دائرہ معارف اسلامیہ، ج۱۸، ص۳۷۲۔

2 ......نصاب المنطق، ص۱۱۔

3 ......تذکرۂ علماء ہند، ص۲۹۶، المسوی شرح الموطا، ج۱، ص۵۔

4 ......اردو دائرہ معارف اسلامیہ، ج۱، ص۳۱، المسوی شرح الموطا، ج۱، ص۵۔

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه मीलादुन्नबी के शैदाई थे। जिस मुक़द्दस मकान में ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत हुई, तारीख़े इस्लाम में उस मक़ाम का नाम "मौलिदुन्नबी صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" (रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैदाइश की जगह) है, येह बहुत ही मुतबर्रक मक़ाम है। सलात़ीने इस्लाम ने इस मुबारक यादगार पर बहुत ही शानदार इ़मारत बना दी थी, जहां अहले ह़रमैन शरीफ़ैन और तमाम दुन्या से आने वाले मुसलमान दिन रात मह़फ़िले मीलाद शरीफ़ मुन्अ़क़िद करते और सलातो सलाम पढ़ते रहते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते शाह वलिय्युल्लाह साहिब मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपनी किताब "फ़ुयूज़ुल ह़रमैन" में तह़रीर फ़रमाते हैं :

.....كُنْتُ قَبْلَ ذٰلِكَ بِمَكَّةَ الْمُعَظَّمَةِ فِيْ مَوْلِدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيْ يَوْمِ وِلَادَتِهٖ وَالنَّاسُ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم

"या'नी इस से क़ब्ल मैं मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में मीलाद शरीफ़ के दिन रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जाए विलादत पर ह़ाज़िर था, सब लोग हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम पढ़ रहे थे।"

.....يَذْكُرُوْنَ اِرْهَاصَاتِهِ الَّتِيْ ظَهَرَتْ فِيْ وِلَادَتِهٖ وَمَشَاهِدَهٗ قَبْلَ بِعْثَتِهٖ

आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत के वक़्त जो इरहासात[1] ज़ाहिर हुवे थे और बिअ़्सत से क़ब्ल जो वाक़िआ़त रू नुमा हुवे थे उन का ज़िक्रे ख़ैर कर रहे थे।"

.....فَرَاَيْتُ اَنْوَارًا سَطَعَتْ دَفْعَةً وَّاحِدَةً لَا اَقُوْلُ اِنِّيْ اَدْرَكْتُهَا بِبَصَرِ الْجَسَدِ وَلَا اَقُوْلُ اَدْرَكْتُهَا بِبَصَرِ الرُّوْحِ فَقَطْ اَللّٰهُ اَعْلَمُ

"मैं ने उन अन्वार को देखा जो यकबारगी उस मह़फ़िल में ज़ाहिर हुवे और मैं नहीं कह सकता कि येह अन्वार मैं ने अपनी ज़ाहिरी आंखों से देखे या रूह़ की आंखों से देखे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही बेहतर जानता है।"

.....كَيْفَ كَانَ الْاَمْرُ بَيْنَ هٰذَا وَذَاكَ فَتَاَمَّلْتُ تِلْكَ الْاَنْوَارَ فَوَجَدْتُّهَا مِنْ قِبَلِ الْمَلَائِكَةِ الْمُؤَكَّلِيْنَ بِاَمْثَالِ هٰذِهِ الْمَشَاهِدِ وَبِاَمْثَالِ هٰذِهِ الْمَجَالِسِ

---

1 ....."नबी से जो बात ख़िलाफ़े आ़दत क़ब्ले नबुव्वत ज़ाहिर हो, उस को इरहास कहते हैं।"
(बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा 1, स. 58)

"बहर हाल जो भी मुआमला हुवा जब मैं ने इन अन्वार व तजल्लिय्यात में ग़ौर किया तो पता चला कि येह अन्वार उन मलाइका की त़रफ़ से ज़ाहिर हो रहे हैं जो इस त़रह़ की नूरानी और बा बरकत मह़ाफ़िल में शरीक होते हैं।"

وَرَاَيْتُ يُخَالِطُ اَنْوَارُ الْمَلَائِكَةِ اَنْوَارَ الرَّحْمَةِ..... "और मैं ने येह भी देखा कि उन मलाइका से ज़ाहिर होने वाले अन्वार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत के अन्वार से मिल रहे हैं।"(1)

शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिसे देहलवी फ़ारूक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़ज़रते शाह वलिय्युल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के फ़रज़न्दे अक्बर हैं। आप की बे शुमार तसानीफ़ में से "तफ़्सीरे फ़त्हुल अ़ज़ीज़" अल मा'रूफ़ "तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी", "तोह़फ़ए इस्ना अ़शरिय्या", "बोस्तानुल मुह़द्दिसीन", "फ़तावा अ़ज़ीज़िय्या" और "सिर्रुश्शहादतैन" सरे फ़ेहरिस्त हैं।

शाह मख़्सूसुल्लाह मुह़द्दिसे देहलवी फ़ारूक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़ज़रते शाह वलिय्युल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पोते हैं। जय्यिद आ़लिम और सूफ़ी बुज़ुर्ग थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उम्मते मुस्लिमा में इफ़्तिराक़ डालने वाली फ़िर्क़ा वराना किताब "तक़्विय्यतुल ईमान" का पहला रद "मुईदुल ईमान" के नाम से लिखा, बा'दे अज़ां हर दौर में उ़लमा ने इस किताब के रद लिखे जिन में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के कई रसाइल फ़तावा रज़विय्या में मौजूद हैं नीज़ इस सिलसिले में आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के ख़लीफ़ा सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى की किताब "अत़्यबुल बयान फ़ी रद्दि तक़्विय्यतुल ईमान" भी एक ला जवाब किताब है।

ह़ाजी इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की फ़ारूक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى

आप हिन्दुस्तान के मश्हूर आ़लिमे दीन हैं। 1233 हिजरी में सहारनपुर के नवाह़ी अ़लाक़े में पैदा हुवे, निहायत ही क़लीलुत्तआ़म या'नी कम खाने वाले थे, तक़्वा व परहेज़गारी में अपनी मिसाल आप थे। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की औलाद से हैं। 1317 हिजरी में मक्कए मुकर्रमा में इन्तिक़ाल फ़रमाया।

1.....फ़ुयूज़ुल ह़रमैन, स. 26।

शैख़ुल इस्लाम अ़ल्लामा अन्वारुल्लाह फ़ारूक़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ 1264 हिजरी में पैदा हुवे, जामिआ़ निज़ामिय्या (हैदराबाद दक्कन) के बानी हैं, उ़लूमो फुनून में हाजी इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से शरफ़े तलम्मुज़ हासिल किया, आज भी आप का फ़ैज़ पाको हिन्द में जारी है। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दाइरए मआ़रिफ़ क़ाइम किया, आ'ला हज़रत अ़ज़ीमुल बरकत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने आप के लिये ज़बरदस्त अल्क़ाबात इस्ति'माल फ़रमाए हैं। वालिदा की तरफ़ से आप का नसब शैख़ अहमद कबीर रिफ़ाई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मिलता है।(1)

मौलाना हकीम ग़ुलाम क़ादिर बेग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ यकुम मुहर्रमुल हराम 1243 हिजरी को लखनऊ हिन्द में पैदा हुवे, आप के वालिदे माजिद ने लखनऊ से सुकूनत तर्क कर के बरेली शरीफ़ में सुकूनत इख़्तियार कर ली, आप नसलन ईरानी या तुर्किस्तानी मुग़ल नहीं हैं बल्कि शाहाने मुग़लिया ने आप के अजदाद को मिरज़ा और बेग के ख़िताबात से नवाज़ा था, आप का सिलसिलए नसब ख़्वाजा उ़बैदुल्लाह अहरार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मिलता है और इन के वसीले से सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मिलता है। अपने वक़्त के मश्हूर आ़लिमे दीन, आ़बिदो ज़ाहिद और मुत्तक़ी शख़्स थे, इन्तिहाई मुन्कसिरुल मिज़ाज और ख़ुश अख़्लाक़ थे, इन्ही औसाफ़ की बिना पर आ'ला हज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वालिदे माजिद रईसुल मुतकल्लिमीन मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن से आप के बहुत क़रीबी रवाबित थे, अगर्चे आप का शुमार आ'ला हज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के असातिज़ा में होता है लेकिन फ़तावा रज़विय्या में आप ही के पूछे गए सुवालात की ता'दाद कमो बेश उन्नीस है।(2)

मौलाना इरशाद हुसैन रामपुरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तेरहवीं सदी हिजरी के बुज़ुर्ग तरीन आ़लिम और मुहद्दिसे कामिल थे, आप का सिलसिलए नसब नौ वासितों से सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तक जाता है और इन के वसीले से सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तक पहुंचता है। आप की विलादत 14 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1248 हिजरी को हुई और 15 जुमादल आख़िर 1311 हिजरी को तक़रीबन 63 साल की उ़म्र में विसाल फ़रमाया।(3)

1.....अ़क़ीदए ख़त्मे नबुव्वत, जि. 5, स. 18।
2.....मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान, हयात और इल्मी व अदबी कारनामे, स. 88।
3.....तज़्किरए मुहद्दिस सूरती, स. 276।

ख़्वाजा ग़ुलाम फ़रीद फ़ारूक़ी मिट्ठन कोट رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ 1261 हिजरी ब मुता़बिक़ 1843 ईसवी को दरयाए सिन्ध के मशरिक़ी अ़लाके़ चाचड़ां में पैदा हुवे, आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ साहि़बे बसीरत आ़लिमे दीन और पाकीज़ा सीरत सूफ़ी थे। आप ने रूही (चोलिस्तान) के सह़रा में कमो बेश अठ्ठारह साल इ़बादत व रियाज़त में गुज़ारे, आप का विसाल 1319 हिजरी में हुवा।(1)

मौलाना ग़ुलाम मुजद्दिद सरहिन्दी मुजद्दिदी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मुकम्मल नाम ग़ुलाम मुजद्दिद बिन अ़ब्दुल ह़लीम बिन अ़ब्दुर्रही़म मुजद्दिदी सर हिन्दी है। 1301 हिजरी ब मुता़बिक़ 1883 ईसवी में पैदा हुवे। आप का सिलसिलए नसब 10 वासित़ों से इमामे रब्बानी ह़ज़रते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तक पहुंचता है और फिर उन के वसीले से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तक पहुंचता है। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ज़बरदस्त आ़लिमे दीन, शो'ला बयान ख़त़ीब और सरवरे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सच्चे मुहि़ब और आ़शिके़ रसूल थे। ह़क़ गोई, बे बाकी, मेहमान नवाज़ी और ख़ुद्दारी आप के नुमायां औसाफ़ थे। ग़ैर मुस्लिम भी आप का दिली त़ौर पर बहुत एह़तिराम किया करते थे। आप का विसाल 1376 हिजरी ब मुता़बिक़ 1957 ईसवी में हुवा।(2)

या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन तमाम बुज़ुर्गों के मज़ारात पर अपनी रह़मत की बारिश बरसा और हमें अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सिलसिले के तमाम बुज़ुर्गों के फ़ैज़ से माला माल फ़रमा, इन के सदके़ हमारी मग़फ़िरत फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 .....उर्दू दाइरा मआ़रुफ़ इस्लामिय्या, जि. 15, स. 335 मुलख़्ख़सन।

2 .....तज़्किरए अकाबिरे अहले सुन्नत, स. 333 मुलख़्ख़सन।

तीसरा बाब

औसाफ़े फ़ारूक़े आ'ज़म

इस बाब में मुलाहज़ा कीजिये........

- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ़जिज़ी व इन्किसारी, हिल्म व बुर्दबारी व सख़ावत
- ....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह (राहे खुदा में ख़र्च करना)
- ....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बा कमाल फ़िरासत व मुआ़मला फ़हमी, इत़ाअ़ते बारी तआ़ला, तक़्वा व परहेज़गारी
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की नमाज़, नमाज़ में क़िराअत, ज़िक्रुल्लाह और रोज़े
- ....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ए'तिकाफ़, जन्नती आ'माल, तिलावत और गिर्या व ज़ारी
- ....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़ौफ़े खुदा, दुन्या से बे रग़बती, फ़िक्रे आख़िरत, फ़ारूक़े आ'ज़म और जज़्बए ईसार
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हक़ व सदाक़त के शहनशाह, आप "**सिद्दीक़**" हैं।
- ....हैबते फ़ारूक़े आ'ज़म और शैत़ान, बारगाहे रिसालत में फ़ारूक़े आ'ज़म का पास, आप का गुस्सा और जलाल
- ....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और इत्तिबाए सुन्नत, इत़ाअ़त गुज़ार रिआ़या, आप की जुरअत व बहादुरी
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और नेकी की दा'वत, क़ब्र के अह़वाल, नकीरैन के सुवाल
- ....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ग़ैर मुस्लिमों से किनारा कशी, शरई अह़काम की पासदारी,
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मरीज़ों की इयादत और लवाहिक़ीन से ता'ज़िय्यत
- ....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और मुख़्तलिफ़ उ़लूम, मन्क़ूल तफ़्सीरे क़ुरआन व मरवी अह़ादीसे मुबारका

औसाफ़े फ़ारूक़े आ'ज़म

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते मुबारका में सब से अ़ज़ीम, ज़ाहिरी व बातिनी वस्फ़ "इश्क़े रसूल" था और इसी पर आप की पूरी ह़याते त़य्यिबा का मदार था। इस के इ़लावा आप की ज़ाते मुबारका में बे शुमार ऐसे औसाफ़ थे जो आप की शख़्सिय्यत की अ़क्कासी करते थे और देखने वाला इन औसाफ़ के सबब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़याते त़य्यिबा से मुतअस्सिर हो जाता था। यक़ीनन येह तमाम औसाफ़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बारगाहे रिसालत से अ़त़ा हुवे थे। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सरापा ख़ैर ही ख़ैर थे। चुनान्चे,

फ़ारूक़े आ'ज़म की ज़ात सरापा ख़ैर है

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को यूं पुकारा : **يَا خَيْرَ النَّاسِ بَعْدَ رَسُوْلِ الله** "या'नी ऐ रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द उम्मत में बेहतरीन शख़्स" येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

اَمَا اِنَّكَ اِنْ قُلْتَ ذَاكَ فَلَقَدْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ مَا طَلَعَتِ الشَّمْسُ عَلٰى رَجُلٍ خَيْرٍ مِنْ عُمَرَ

या'नी आप ने मुझे यूं कह दिया है तो सुनिये कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है कि "उ़मर से बेहतर किसी इन्सान पर आज तक सूरज त़ुलूअ़ नहीं हुवा।"(1)

मदीनए मुनव्वरा में सब से बेहतर

ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बिन हुज्जाज رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बेटी के लिये निकाह़ का पैग़ाम भिजवाया, उन्हों ने इन्कार कर दिया तो दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **مَا بَيْنَ لَابَتَيِ الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ خَيْرٌ مِنْ عُمَرَ** "या'नी मदीने के दोनों किनारों के दरमियान उ़मर से बेहतर कोई शख़्स नहीं।"(2)

---

1 ......ترمذی، کتاب المناقب، مناقب عمر بن خطاب، ج۵، ص ۳۸۴، حدیث: ۳۷۰۴۔

2 ......فضائل الصحابۃ للامام احمد، ومن فضائل عمر بن الخطاب، ص ۳۴۰، الرقم: ۲۸۰۔

फ़ारूके़ आ'ज़म की तीन ख़स्लतें

हज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक अशजई رضی اللہ تعالٰی عنہ ने ख़्वाब देखा कि एक जगह बहुत से लोग जम्अ़ हैं जिन में अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ सब से बुलन्द हैं। आ़म लोगों से तक़रीबन तीन हाथ तक आप رضی اللہ تعالٰی عنہ का सर ऊंचा था। मैं ने कहा : "येह कौन हैं ?" लोगों ने बताया : "येह सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ हैं।" मैं ने कहा : "येह इतने ऊंचे क्यूं हैं ?" लोग कहने लगे : "इन में तीन ख़स्लतें हैं : "(1) **अल्लाह** عزوجل के मुआ़मले में किसी शख़्स की मलामत की परवाह नहीं करते। (2) इन्हें ख़लीफ़ा बनाया गया। (3) और शहीद किया गया है।"

मज़ीद फ़रमाते हैं कि मैं अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ के पास आया और उन्हें अपना ख़्वाब सुनाया। आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ को बुला भेजा। उन के आने के बा'द हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने मुझे दोबारा ख़्वाब सुनाने का इरशाद फ़रमाया तो मैं ने फिर ख़्वाब सुनाना शुरूअ़ किया और जब मैं ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की तीन ख़स्लतें बयान करते हुवे कहा : "इन्हें ख़लीफ़ा बनाया गया। तो हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने मेरी त़रफ़ देखा और मुझे झिड़का कि येह हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ज़िन्दा हैं और येही ख़लीफ़ा हैं और तुम येह क्या कह रहे हो ?"

बा'द में हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ के विसाले ज़ाहिरी के बा'द हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ जब ख़लीफ़ा बने और मिम्बर पर बैठे तो मुझे बुलाया और वोही ख़्वाब सुनाने का हुक्म दिया। चुनान्चे, मैं ने ख़्वाब सुनाना शुरूअ़ किया और जब मैं ने आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की तीन ख़स्लतें बयान करते हुवे येह कहा : "येह **अल्लाह** عزوجل के मुआ़मले में किसी की परवाह नहीं करते।" तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : "मुझे उम्मीद है कि **अल्लाह** عزوجل मुझे इन्ही लोगों में शामिल फ़रमा देगा।" मैं ने दूसरी सिफ़त बयान करते हुवे कहा : "इन्हें ख़लीफ़ा बनाया गया।" तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** عزوجل ने मुझे येह मन्सब अ़त़ा फ़रमाया है और आप **अल्लाह** عزوجل से दुआ़ करें कि वोह मुझे इसे सहीह़ त़ौर पर संभालने की

तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।" फिर मैं ने तीसरी सिफ़त बयान करते हुवे कहा : "इन्हें शहीद किया गया।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने निहायत ही आ़जिज़ी करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "मेरे लिये शहादत कहां ? येह तो तुम्हारे सामने है कि जंगों में तुम लोग जाते हो, मैं नहीं।" फिर फ़रमाया : "हां क्यूं नहीं ? अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहे तो ऐसा भी हो सकता है, और जब वोह चाहेगा ऐसा हो जाएगा।"[1]

अ़ज़ाबे इलाही से बचाने वाली तीन ख़स्लतें

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अबू लूअ लूअ ने जब ज़ख़्मी कर दिया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे बुला कर इरशाद फ़रमाया : "मेरी इन तीन बातों से हिफ़ाज़त कीजिये : "मेरी इन तीन बातों से हिफ़ाज़त कीजिये, अगर कोई शख़्स येह तीन बातें मेरी जानिब मन्सूब करे तो आप समझ लें कि वोह झूटा है।" फिर येह तीन बातें इरशाद फ़रमाई : (1) "मैं ने कोई ममलूक (गुलाम) छोड़ा है।" (2) मैं ने कलालह[2] के बारे में किसी चीज़ का कोई फ़ैसला किया है।" (3) "मैं अपने बा'द किसी को ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर चुका हूं।" जो भी इन तीनों बातों में से कोई भी बात कहे तो समझ लेना कि बिलाशुबा वोह झूटा है।

येह फ़रमाने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़ारो क़तार रोने लगे। हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि जब मैं ने इस गिर्या व ज़ारी का सबब दरयाफ़्त किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे आख़िरत में पेश आने वाला मुआ़मला रुला रहा है।" मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप में तीन ख़स्लतें ऐसी हैं जिन की वज्ह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को कभी अ़ज़ाब नहीं देगा।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "वोह कौन सी ख़स्लतें हैं ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "(1) आप बात करते हैं तो सच बोलते हैं। (2) फ़ैसला करते हुवे अ़द्ल करते हैं। (3) रह़्म की अपील की जाती है तो रह़्म करते हैं।"[3]

---

1 ......الاستیعاب، عمر بن الخطاب، ج۳، ص ۲۴۲۔

2 ....."कलालह" उस मर्द या औ़रत को कहते हैं जो अपने बा'द न तो मां बाप छोड़े और न ही औलाद। (پ۴، النساء: ۱۲)

3 ......موسوعة آثار الصحابة، مسند آثار الفاروق، ج ۱، ص ۱۲۷، الرقم: ۵۸۲۔

फ़ारूके़ आ'ज़म की आ़जिज़ी व इन्किसारी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब किसी शख़्स में ला ता'दाद ऐसे औसाफ़ मौजूद हों जो उस की शख़्सिय्यत की भरपूर अ़क्कासी करते हों और लोगों में इन का चर्चा भी हो तो बसा औक़ात ऐसा शख़्स अपने नफ़्स के मक्रो फ़रेब में आ कर तकब्बुर और खुद पसन्दी जैसे अमराज़ में मुब्तला हो जाता है, लेकिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बे शुमार औसाफ़ के ह़ामिल होने के बा वुजूद بِحَمْدِاللہِ تَعَالٰی इन बाति़नी अमराज़ से पाक और मुबर्रा थे।

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते त़य्यिबा पर कई कुतुब लिखी जा चुकी हैं और तक़रीबन तमाम लोगों ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अख़्लाक़, आ़दातो अतवार को बयान करते हुवे आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ़जिज़ी व इन्किसारी और तवाज़ोअ़ को एक मुस्तक़िल बाब में बयान किया है, ह़क़ीक़त येह है कि आप जैसे आ़लिमे इस्लाम के अ़ज़ीम हुक्मरान का **हुक़ूक़ुल्लाह**, हुक़ूक़ुर्रसूल, हुक़ूके़ अहले बैत, हुक़ूक़ुल इ़बाद की पासदारी, अ़द्लो इन्साफ़, अम्नो अमान क़ाइम करने, इ़ल्मे दीन की नश्रो इशाअ़त वग़ैरा जैसे जवाहिरात से मुरस्सअ़ ताज पर आ़जिज़ी व इन्किसारी एक ख़ुशनुमा तु़र्रा मा'लूम होती है। इसी आ़जिज़ी व इन्किसारी के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को वोह इ़ज़्ज़त और मक़ामो मर्तबा अ़त़ा फ़रमाया कि आज तक चहार दांगे आ़लम में आप के ज़िक्र की धूम है और ता क़ियामत तमाम मुसलमान आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के औसाफ़े ह़मीदा को اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ बयान करते और इन पर अ़मल करते रहेंगे।

आ़जिज़ी व इन्किसारी से रिफ़्अ़त मिलती है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : مَا زَادَ اللّٰہُ عَبْدًا بِعَفْوٍ اِلَّا عِزًّا وَمَا تَوَاضَعَ اَحَدٌ لِلّٰہِ اِلَّا رَفَعَہُ اللّٰہُ "या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दे के अ़फ़्वो दर गुज़र की वज्ह से उस की इ़ज़्ज़त में इज़ाफ़ा फ़रमा देता है और जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये तवाज़ोअ़ इख़्तियार करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाता है।"[1]

1 ......مسلم، کتاب البر، باب استحباب العفو والتواضع، ص ۱۳۹۷، حدیث: ۲۵۸۸ مختصراً۔

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : اَلتَّوَاضُعُ لَا يَزِيْدُ الْعَبْدَ اِلَّا رِفْعَةً فَتَوَاضَعُوْا يَرْفَعَكُمُ اللّٰهُ وَالْعَفْوُ لَا يَزِيْدُ الْعَبْدَ اِلَّا عِزًّا فَاعْفُوْا يُعِزُّكُمُ اللّٰهُ या'नी तवाज़ोअ़ से बन्दे की रिफ़्अ़त में इज़ाफ़ा होता है, लिहाज़ा तवाज़ोअ़ इख़्तियार करो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें बुलन्दी अ़ता फ़रमाएगा और दर गुज़र से काम लेना इ़ज़्ज़त में इज़ाफ़ा करता है लिहाज़ा अ़फ़्वो दर गुज़र से काम लिया करो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमाएगा।''[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म ज़मीन पर आराम फ़रमाते

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं : لَمَّا نَفَرَ عُمَرُ كَوَّمَ كَوْمَةً مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ بَسَطَ عَلَيْهَا ثَوْبَهُ وَاسْتَلْقَى عَلَيْهَا ''या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब शहर से बाहर कहीं सफ़र वग़ैरा पर जाते तो रास्ते में इस्तिराहत के लिये मिट्टी का ढेर लगा कर उस पर कपड़ा बिछाते और फिर आराम फ़रमाते।''[2]

फ़ारूक़े आ'ज़म का सफ़रे हज आ़म मुसलमानों की त़रह

हज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ''अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज के लिये मक्कए मुकर्रमा को रवाना हुवे तो पूरे सफ़रे हज में जहां कहीं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पड़ाव किया, न वहां ख़ैमा लगाया न क़नात, सिर्फ़ येह कि किसी दरख़्त पर चादर या चटाई डाल लेते और उस के साए में बैठ जाते।''[3]

फ़ारूक़े आ'ज़म की आ़जिज़ी व इन्किसारी की इन्तिहा

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुल्के शाम तशरीफ़ ले गए, हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी आप के साथ थे। दोनों एक ऐसे मक़ाम पर पहुंचे जहां घुटनों तक पानी था, आप अपनी ऊंटनी पर सुवार थे, ऊंटनी से उतरे और अपने मोज़े उतार कर अपने कन्धे पर रख लिये, फिर ऊंटनी की लगाम थाम कर पानी में दाख़िल हो गए तो हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : مَا يَسُرُّنِيْ اَنَّ اَهْلَ الْبَلَدِ اِسْتَشْرَفُوْكَ

1 ......جمع الجوامع، حرف التاء، ج۴، ص۱۲۵، حدیث: ۱۰۲۹۷ ملتقطا۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الزهد، کلام عمر بن الخطاب، ج۸، ص۱۵۰، حدیث: ۲۱۔

3 ......تاریخ ابن عساکر، ج۴۴، ص۳۰۵۔

या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप رضی اللہ تعالٰی عنہ येह काम कर रहे हैं मुझे येह पसन्द नहीं कि यहां के बाशिन्दे आप رضی اللہ تعالٰی عنہ को नज़र उठा कर देखें।" तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने आ़जिज़ी व इन्किसारी से भरपूर जवाब देते हुवे इरशाद फ़रमाया :

اَوَّهْ لَمْ يَقُلْ ذَا غَيْرُكَ اَبَاعُبَيْدَةَ جَعَلْتُهُ نَكَالًا لِّاُمَّةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّا كُنَّا اَذَلَّ قَوْمٍ فَاَعَزَّنَا اللّٰهُ بِالْاِسْلَامِ فَمَهْمَا نَطْلُبُ الْعِزَّ بِغَيْرِ مَا اَعَزَّنَا اللّٰهُ بِهٖ اَذَلَّنَا اللّٰهُ

या'नी अफ़्सोस ऐ अबू उ़बैदा ! अगर येह बात तुम्हारे इ़लावा कोई और कहता तो मैं उसे इस उम्मत के लिये निशाने इ़ब्रत बना देता। क्या तुम्हें याद नहीं हम एक बे सरो सामान क़ौम थे, फिर अल्लाह عزوجل ने हमें इस्लाम के ज़रीए इ़ज़्ज़त बख़्शी, जब भी हम अल्लाह عزوجل की अ़ताकर्दा इ़ज़्ज़त के इ़लावा इ़ज़्ज़त ह़ासिल करना चाहेंगे तो अल्लाह عزوجل हमें रुस्वा कर देगा।"(1)

ईदगाह की त़रफ़ नंगे पाउं तशरीफ़ ले जाना

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़र رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ से रिवायत है फ़रमाते हैं : رَاَيْتُ عُمَرَ ابْنَ الْخَطَّابِ يَمْشِىْ حَافِيًا "या'नी मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ को देखा कि आप رضی اللہ تعالٰی عنہ (नमाज़े ई़द के लिये) नंगे पाउं ही तशरीफ़ लिये जा रहे हैं।"(2)

आ़जिज़ी के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाने फ़ारूक़े आ'ज़म

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّ الْعَبْدَ اِذَا تَوَاضَعَ لِلّٰهِ رَفَعَ اللّٰهُ حَكَمَتَهٗ "या'नी बन्दा जब अल्लाह عزوجل के लिये तवाज़ोअ़ इख़्तियार करता है तो अल्लाह عزوجل उस की क़द्रो मन्ज़िलत को बढ़ा देता है।"(3)

मेरे ऐ़ब बताने वाला मेरा मह़बूब

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने इरशाद फ़रमाया : اَحَبُّ النَّاسِ اِلَىَّ مَنْ رَفَعَ اِلَىَّ عُيُوْبِىْ "या'नी मुझे सब से ज़ियादा मह़बूब वोह है जो मुझे मेरे ऐ़ब बताए।"(4)

---

1 ......مستدرک حاکم، کتاب الایمان، قصۃ خروج عمر الی الشام، ج ۱، ص ۲۳۶، حدیث: ۲۱۴۔

2 ......مستدرک حاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، ومن مناقب امیر۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۲۰۳، حدیث: ۴۵۳۵۔

3 ......احیاء العلوم، کتاب ذم الکبر والعجب، بیان فضیلۃ التواضع، ج ۳، ص ۴۱۹۔

4 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۲۲۔

अपने नफ़्स से आ़जिज़ी का इक़रार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते इब्ने जौज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं :

فَمِنْ سَعَادَةِ الْمَرْءِ اَنْ يُّقِرَّ عَلٰى نَفْسِهٖ بِالْعِجْزِ وَ التَّقْصِيْرِ فِىْ جَمِيْعِ اَفْعَالِهٖ وَ اَقْوَالِهٖ

"या'नी आदमी की खुश बख़्ती की एक अ़लामत येह भी है कि वोह अपने नफ़्स से आ़जिज़ी और अपने तमाम अफ़्आ़ल व अक़्वाल में कोताही का इक़रार कराए।"(1)

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की भी येह आ़दते मुबारका थी कि निहायत ही आ़जिज़ी व इन्किसारी करने के साथ साथ बसा औक़ात आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने नफ़्स से भी आ़जिज़ी का इक़रार करवाते। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि एक दिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कहीं बाहर निकले तो मैं भी आप के पीछे पीछे चल पड़ा, क्या देखता हूं कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ एक बाग़ में दाख़िल हुवे। मेरे और उन के दरमियान एक दीवार थी, मैं ने सुना आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने आप को मुख़ात़ब कर के ब त़ौरे आ़जिज़ी इरशाद फ़रमा रहे थे : اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ! وَاللّٰهِ لَتَتَّقِيَنَّ اللّٰهَ اَوْ لَيُعَذِّبَنَّكَ "या'नी ऐ मुसलमानों के ख़लीफ़ा ! क़सम ब खुदा ! तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते रहो, वरना वोह तुम्हें ज़रूर अ़ज़ाब देगा।"(2)

नफ़्स को ज़लील करने का अ़ज़्म

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ह़फ़्स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी पुश्त पर मश्कीज़ा उठा लिया। आप से अ़र्ज़ की गई कि हुज़ूर ! आप मत उठाएं, इरशाद फ़रमाया : اِنَّ نَفْسِىْ اَعْجَبَتْنِىْ فَاَرَدْتُّ اَنْ اُذِلَّهَا "या'नी मेरे नफ़्स ने मुझे उ़जुब पसन्दी में मुब्तला कर दिया तो मैं ने इसे ज़लील करने की ठान ली।"(3)

---

1 ......بحر الدموع، ص ۲۰۰۔
2 ......موطا امام مالک، کتاب الکلام، باب ماجاء فی التقی، ج ۲، ص ۴۶۹، حدیث: ۱۹۱۸۔
3 ......تاریخ الاسلام، ج ۳، ص ۲۷۰۔

फ़ारूक़े आ'ज़म की तकब्बुर की नुहूसत से पाकीज़गी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आजिज़ी व इन्किसारी को पढ़ कर येह बात रोज़े रौशन की तरह इयां हो जाती है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जहां आजिज़ी व इन्किसारी के पैकर थे वहीं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तकब्बुर जैसी नुहूसत से पाको साफ़ थे। क्यूंकि तकब्बुर येह है कि आदमी अपने को दूसरों से बड़ा समझे और दूसरों को अपने आप से हक़ीर जाने। तकब्बुर का अन्जाम ज़िल्लतो ख़्वारी है जो तकब्बुर करेगा यक़ीनन ज़लील होगा।

تکبر عزازیل را خوار کرد
بزندانِ لعنت گرفتار کرد

या'नी "तकब्बुर ने अज़ाज़ील (शैतान) को ज़लीलो ख़्वार कर दिया और इस को ला'नत के जेलख़ाने में गिरिफ़्तार कर दिया।"

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द सब से अफ़्ज़ल व बेहतर होने की बारगाहे रिसालत से सनद अता हुई लेकिन आप ने कभी तफ़ाख़ुराना अन्दाज़ इख़्तियार न किया और न ही किसी मुसलमान को हक़ीर जाना। बल्कि बसा औक़ात आप दीगर मुसलमानों को अपने से बेहतर इरशाद फ़रमाते। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरे क़रीब से गुज़रे तो मैं क़ुरआने पाक की ख़ूब सूरत लहजे में तिलावत कर रहा था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सुन कर इरशाद फ़रमाया : **يَا اَبَا رَافِعُ! لَاَنْتَ خَيْرٌ مِّنْ عُمَرَ تُؤَدِّىْ حَقَّ اللّٰهِ وَحَقَّ مَوَالِيْكَ** "या'नी ऐ अबू राफ़ेअ ! यक़ीनन तुम उमर से बेहतर हो कि तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक़ूक़ और अपने आक़ा के हुक़ूक़ अच्छी तरह अदा करते हो।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म का हिल्म व बुर्दबारी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब किसी को कोई ओहदा मिल जाए तो उमूमन ऐसा होता है कि उस के हिल्म या'नी क़ुव्वते बरदाश्त में बहुत ज़ियादा कमी आ जाती है, ख़ुसूसन जब उस के मक़ामो मर्तबे के ख़िलाफ़ कोई बात हो जाए, लेकिन अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आलमे इस्लाम के वोह अज़ीमुश्शान आईडियल हुक्मरान थे जिन के हिल्म और

1 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی حق السادة علی الممالیک، ج ٦، ص ٣٨٦، حديث: ٨٦١٣۔

बुर्दबारी में कभी कमी न आई, अगर किसी से कभी आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मन्सब के ख़िलाफ़ कोई कोताही हो भी गई तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कभी उस से इन्तिक़ाम न लिया और न ही उस पर किसी क़िस्म की कोई सरज़निश की । आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़िल्म व बुर्दबारी का एक अ़ज़ीमुश्शान वाक़िआ़ मुलाह़ज़ा कीजिये ।

जंगी क़ासिद आप को न पहचान सका

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मुल्के इ़राक़ में कुफ़्फ़ार के ख़िलाफ़ बर सरे पैकार थे । इन्हों ने जंगी ह़ालात के मुतअ़ल्लिक़ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़त़ लिख कर ब ज़रीअ़ए क़ासिद रवाना किया । इधर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को लश्करे इस्लाम की बहुत फ़िक्र दामन गीर थी । आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रोज़ाना सुब्ह़ क़ादसिय्या की त़रफ़ जाने वाले रास्ते पर अकेले निकल जाते और दोपहर तक क़ासिद का इन्तिज़ार करते रहते, उस रास्ते से आने वाले हर शख़्स से जंग की ताज़ा तरीन सूरते ह़ाल जानने की कोशिश करते । एक रोज़ ह़स्बे मा'मूल आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उसी रास्ते पर निकले हुवे थे कि ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ासिद आ पहुंचा । आप ने उस से पूछा : ''कहां से आए हो ?'' उस ने जवाब दिया : ''मैं क़ासिद हूं ।'' इरशाद फ़रमाया : ''حَدِّثْنِی या'नी जंग की क्या ख़बर है ? मुझे बताओ ।'' उस ने कहा : ''هَزَمَ اللّٰهُ الْعَدُوَّ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दुश्मनों को शिकस्त दे दी है और अहले इस्लाम को फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमाई है ।'' येह कह कर क़ासिद अपनी ऊंटनी समेत आगे बढ़ गया । आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी उस की ऊंटनी के साथ साथ पैदल दौड़ने लगे और साथ ही साथ उस से फ़त्ह़ के मुतअ़ल्लिक़ दीगर सुवालात करते रहे यहां तक कि दोनों मदीनए मुनव्वरा में दाख़िल हो गए । लोग आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अमीरुल मोमिनीन कह कर सलाम करने लगे । येह देख कर वोह क़ासिद निहायत ही शर्मिन्दा हुवा और आ़जिज़ी के साथ अ़र्ज़ करने लगा : ''या अमीरल मोमिनीन ! आप ने मुझे बताया ही नहीं ।'' फ़रमाया : ''तुम पर कोई ए'तिराज़ नहीं ।''(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म की त़रफ़ इस्लाही मक्तूब

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़िल्म का येह आ़लम था कि अमीरुल मोमिनीन होने के बा वुजूद अगर कोई मा तह़्त आप को नसीह़त आमेज़ बात कहता तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बुरा

(1) ......فتوح الشام، ذکر فتوح الخورنق۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۱۷۹، مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب السابع والاربعون، ص ۱۴۱۔

मनाने के बजाए उस की बात को ख़ुशी से क़बूल फ़रमाते। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक मरतबा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को नसीह़तों से भरपूर मक्तूब लिखा। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस मक्तूब को पढ़ कर जवाबन इरशाद फ़रमाया :

كَتَبْتُمَا تَعَوَّذَانِيْ بِاللّٰهِ اَنْ اُنْزِلَ كِتَابَكُمَا سِوَى الْمَنْزِلِ الَّذِيْ نَزَلَ مِنْ قُلُوْبِكُمَا وَاَنَّكُمَا كَتَبْتُمَا بِهٖ نَصِيْحَةً لِيْ وَقَدْ صَدَقْتُمَا فَلَا تَدَعَا الْكِتَابَ اِلَيَّ فَاِنَّهٗ لَا غِنَى بِيْ عَنْكُمَا وَالسَّلَامُ عَلَيْكُمَا

या'नी आप दोनों ने मुझे नसीह़तों से भरपूर मक्तूब लिखा कि आप अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं इस बात से कि मैं येह ख़त़ पढ़ कर वोह मफ़्हूम लूं जो आप के दिलों में नहीं है जब कि आप ने तो ख़ैर ख़्वाही के लिये लिखा है। आप दोनों ने सच कहा है, मुझे आइन्दा भी आप के ख़त़ का इन्तिज़ार रहेगा मैं आप ह़ज़रात (की ख़ैर ख़्वाही) से बे नियाज़ नहीं हूं।"(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म की सख़ावत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बे शुमार औसाफ़ के ह़ामिल होने के साथ साथ निहायत सख़ी भी थे, आप की सख़ावत के ख़ुद आप के दोस्तों के माबैन भी चर्चे होते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के शहज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'ज़ औसाफ़ के मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्त्गू की तो मैं ने उन के सामने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के औसाफ़ बयान किये तो उन्हों ने इरशाद फ़रमाया :

مَا رَاَيْتُ اَحَدًا قَطُّ بَعْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ حِيْنَ قُبِضَ كَانَ اَجَدَّ وَاَجْوَدَ حَتّٰى اِنْتَهٰى مِنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ

या'नी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द मैं ने किसी भी शख़्स को ज़ियादा कोशिश करने वाला और सख़ावत करने वाला नहीं देखा ह़त्ता कि येह औसाफ़ सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर ख़त्म हो गए।"(2)

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام عمر بن الخطاب، ج۸، ص ۱۴۸، حدیث: ۱۰ ملتقطاً، حلیۃ الاولیاء، معاذ بن جبل، ج ۱، ص ۳۰۲۔

2 ......بخاری، کتاب المناقب، مناقب عمر بن الخطاب، ج ۲، ص ۵۲۷، حدیث: ۳۶۸۷۔

एक हज़ार दीनार बतौरे इनआम अ़ता फ़रमा दिये

हज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन ह़रम رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि : اَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ اَجَازَ رَجُلًا بِاَلْفِ دِيْنَارٍ "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने एक शख़्स को एक हज़ार दीनार बतौरे इन्आ़म अ़ता फ़रमा दिये ।"[1]

ह़जाम की दिलजूई के लिये चालीस दिरहम

ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करमा رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की शख़्सिय्यत में बहुत ही हैबत थी, एक बार ह़जाम आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के बाल बना रहा था तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने गला साफ़ करने के लिये खन्कारा तो उस बेचारे ह़जाम का ख़ौफ़ के मारे वुज़ू टूट गया । बा'दे अज़ां आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने उस ह़जाम की दिलजूई के लिये चालीस दिरहम देने का हुक्म फ़रमाया ।[2]

फ़ारूक़े आ'ज़म और इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह

मह़बूब शै को राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दिया

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ऐसे सख़ी थे कि राहे ख़ुदा में अपनी सब से ज़ियादा पसन्दीदा चीज़ें भी ख़र्च कर दिया करते थे । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं : "मेरे वालिदे गिरामी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ के ह़िस्से में ख़ैबर की कुछ ज़मीन आई तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की बारगाह में अ़र्ज़ किया : اَصَبْتُ اَرْضًا لَمْ اُصِبْ مَالًا قَطُّ اَنْفَسَ مِنْهُ فَكَيْفَ تَاْمُرُنِيْ بِهٖ "या'नी या रसूलल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ! यह ख़ैबर की ज़मीन मेरे ह़िस्से में आई है और इस से नफ़ीस माल मुझे कभी नहीं मिला, आप इरशाद फ़रमाएं कि मैं इस ज़मीन का क्या करूं ?" रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : اِنْ شِئْتَ حَبَّسْتَ اَصْلًا وَتَصَدَّقْتَ بِهَا "या'नी ऐ उ़मर ! अगर तुम चाहो तो इसे अपनी मिल्किय्यत ही में रखो और इस के मनाफ़ेअ़ राहे ख़ुदा में सदक़ा कर दो ।" चुनान्चे, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने उस ज़मीन को ऐसे सदक़ा किया कि न तो उस को बेचा जाएगा, न ही

1 ......مصنف ابن ابی شیبة، کتاب البیوع والاقضیة، من رخص فی جوائز الامراء۔۔۔الخ، ج۵، ص ۴۳، حدیث: ۱۹۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۱۷۔

हिबा किया जाएगा और न ही उस में विरासत जारी होगी बल्कि उस की आमदनी फ़ुक़रा, ग़रीब रिश्तेदारों, मुसाफ़िरों, मेहमानों और राहे खु़दा में ख़र्च किया जाएगा, और उस के मुतवल्ली को इजाज़त है कि उस में से अपनी ज़ात या दोस्तों पर जाइज़ त़रीक़े से ख़र्च करे।(1)

अपनी बांदी को राहे खु़दा में आज़ाद कर दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को किसरा के शहर मदाइन की फ़त्ह़ के दिन पैग़ाम भेजा कि जलूला के क़ैदियों से एक बांदी ख़रीद कर मेरे लिये रवाना कर दो । उन्हों ने एक लौंडी को आप की ख़िदमत में भेज दिया। जब वोह लौंडी आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई तो उस ने आप को तअ़ज्जुब में डाल दिया। (या'नी वोह बहुत ख़ूब सूरत थी) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : ﴿لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ؕ﴾ (پ۴، آل عمران:۹۲) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे खु़दा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस बांदी को उसी वक़्त राहे खु़दा में आज़ाद कर दिया।"(2)

फ़ारूके आ'ज़म की बा कमाल फ़िरासत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैखे़ त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने अपनी माया नाज़ मश्हूरे ज़माना तस्नीफ़ "फ़ैज़ाने सुन्नत" जिल्द दुवुम के बाब "नेकी की दा'वत" ह़िस्सए अव्वल सफ़ह़ा 370 पर फ़िरासत की ता'रीफ़ कुछ यूं बयान फ़रमाई है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने औलिया के दिलों में वोह चीज़ डालता है जिस से उन्हें बा'ज़ लोगों के ह़ालात का इ़ल्म हो जाता है।" वाक़ेई मोमिन के लिये येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से अ़त़ाकर्दा नूर है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मोमिन की फ़िरासत से डरो कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नूर से देखता है।"(3)

---

1 ......بخاری، کتاب الوصایا، الوقف کیف یکتب، ج ۲، ص ۲۴۴، حدیث: ۲۷۷۲۔

2 ......تفسیر قرطبی، پ ۴، آل عمران، تحت الآیۃ: ۹۲، ج ۲، الجزء: ۴، ص ۱۰۱۔

کنز العمال، کتاب الزکوۃ، فصل فی آداب الصدقۃ، الجزء: ۶، ج ۳، ص ۲۵۱، حدیث: ۱۷۰۱۸۔

3 ......ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ الحجر، ج ۵، ص ۸۸، حدیث: ۳۱۳۸۔

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस नूर से ब दरजए अतम्म मा'मूर थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़याते त़य्यिबा के बे शुमार ऐसे पहलू हैं जो आप की फ़िरासत से मा'मूर हैं, खु़सूसन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुवाफ़िक़ात आप की आ'ला फ़िरासत की रौशन दलील हैं।[1] बहर ह़ाल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी नूरी फ़िरासत से मुख़्तलिफ़ लोगों के मुख़्तलिफ़ अक़्वालो अफ़्आ़ल को जान लिया करते थे। चुनान्चे,

फ़ारूके़ आ'ज़म सच और झूट की पहचान कर लेते

.....ह़ज़रते सय्यिदुना त़ारिक़ बिन शिहाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अगर कोई शख़्स अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने कोई बात बयान करता और उस में झूट मिलाता तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस को रोक देते, वोह फिर बयान करता तो फिर रोक देते। जब वोह बयान कर लेता तो कहता कि "मैं ने जो कुछ बयान किया वोह ह़क़ है मगर जितने हिस्से के बारे में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि इस को रोक दो वोह ह़क़ नहीं था।"[2]

.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि :

اِنْ كَانَ اَحَدٌ يَعْرِفُ الْكِذْبَ اِذَا حَدَّثَ بِهٖ اِنَّهٗ كِذْبٌ فَهُوَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ

"या'नी अगर किसी शख़्स को गुफ़्तगू में झूट की पहचान हो जाया करती थी तो वोह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते मुबारका थी।"[3]

फ़ारूके़ आ'ज़म और अजनबी शख़्स की पहचान

एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे साथ ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अस्ह़ाब भी थे कि एक शख़्स का वहां से गुज़र हुवा। लोगों ने अ़र्ज़ किया : "हु़ज़ूर ! क्या आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस शख़्स को जानते हैं ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "एक शख़्स को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी के मुतअ़ल्लिक़ ग़ैब से इत्तिलाअ़ दी थी जिस का नाम (ह़ज़रते सय्यिदुना) सवाद

---

1 .....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुवाफ़िक़ात के लिये इसी किताब का मौज़ूअ़ "मुवाफ़िक़ाते फ़ारूके़ आ'ज़म" स. 674 का मुत़ालआ़ कीजिये।

2 .....تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۲۸۲۔

3 .....تاریخ ابن عساکر، ۴۴، ص ۲۸۱۔

बिन क़ारिब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) है, मैं ने उसे देखा तो नहीं लेकिन अगर वोह ज़िन्दा है तो फिर वोह येही शख़्स है और उसे अपनी क़ौम में एक ख़ास मक़ाम हासिल है।'' फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे बुला लिया और उस से गुफ़्त्गू फ़रमाई तो वैसा ही हुवा जैसा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया था।(1)

शराब की बोतल सिर्का बन गई

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक बार मदीनए मुनव्वरा की एक गली से गुज़र रहे थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने देखा कि सामने से एक नौजवान आ रहा है और उस ने कपड़ों के नीचे एक बोतल भी छुपा रखी थी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी फ़िरासत से पहचान लिया कि येह शराब ही की बोतल होगी, चुनान्चे, जैसे ही वोह क़रीब पहुंचा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से पूछा : ''ऐ नौजवान ! येह कपड़ों के नीचे क्या उठा रखा है ?'' यक़ीनन उस बोतल में शराब थी नौजवान ने उसे शराब कहने में शर्मिन्दगी मह़सूस की। उस ने फ़ौरन दिल ही दिल में दुआ़ की : ''या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने शर्मिन्दा और रुस्वा न फ़रमा, इन के हां मेरी पर्दापोशी फ़रमा, मैं तेरी बारगाह में सच्ची तौबा करता हूं कि आइन्दा कभी शराब नहीं पियूंगा।'' इस के बा'द नौजवान ने अ़र्ज़ किया : ''अमीरल मोमिनीन ! येह तो सिर्के की बोतल है।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''मुझे दिखाओ।'' जब उस ने वोह बोतल आप के सामने की और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे देखा तो वोह वाक़ेई सिर्के की बोतल थी।(2)

बेटे के ह़क़ीक़ी रिश्ते को पहचान लिया

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों के पास से गुज़र रहे थे कि आप ने एक ऐसे शख़्स को देखा जिस के साथ उस का बेटा भी था। आप ने उस से फ़रमाया : **وَيْحَكَ حَدِّثْنِي مَارَاَيْتُ غُرَاباً بِغُرَابٍ اَشْبَهَ بِهٰذَا مِنْكَ** ''या'नी बहुत ख़ूब ! क्या मुआ़मला है कि आज तक मैं ने कव्वों में भी इतनी मुशाबहत नहीं देखी जितनी तुम बाप बेटे में है ?'' उस शख़्स ने (एक हैरत

---

1 ......مستدرک حاکم، کتاب معرفة الصحابه، ذکر سواد بن قارب الازدی، ج۴، ص۷۹۸، حدیث:۶۶۱۷۔
معجم کبیر، سواد بن قارب، ج۷، ص۹۲، حدیث:۶۴۷۵۔

2 ......مکاشفة القلوب، الباب الثامن فی التوبة، ص۲۷۔۲۸۔

अंगेज़ इन्किशाफ़ करते हुवे) अ़र्ज़ की : ''ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस बच्चे को इस की मां ने मरने के बा'द जना है।'' आप ने फ़रमाया : ''मुझे इस की तफ़्सील बताओ।''

उस ने तफ़्सील बताते हुवे अ़र्ज़ की, कि एक दफ़्अ़ा मैं जंग के लिये अपने घर से निकला तो उस वक़्त इस की मां इस से ह़ामिला थी, उस ने मुझे कहा : ''मैं ह़ामिला हूं और तुम मुझे इस ह़ाल में छोड़ कर जंग पर जा रहे हो ?'' मैं ने उस से कहा : ''तुम्हारे पेट में जो बच्चा है वोह मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को बत़ौरे अमानत दे कर जा रहा हूं।'' फिर मैं चला गया। जब मैं जंग से लौट कर वापस आया तो देखा कि घर का दरवाज़ा बन्द है, मैं ने अपनी ज़ौजा के बारे में लोगों से पूछा तो उन्हों ने बताया कि उस का इन्तिक़ाल हो गया है, मैं उस की क़ब्र पर गया और फ़र्ते़ ग़म से रोता रहा। फिर रात के वक़्त मैं अपने चचा के बेटों के साथ बैठा बातें कर रहा था कि मैं ने जन्नतुल बक़ीअ़ में क़ब्रों के दरमियान आग देखी। मैं ने उन से पूछा कि येह आग कैसी है ? तो वोह लोग मेरे पास से उठ कर चले गए और कुछ न बताया। मैं उन के पास गया और दोबारा पूछा तो उन्हों ने मेरी ज़ौजा की क़ब्र के बारे में बताया कि हम रोज़ाना उस की क़ब्र पर आग देखते हैं। येह सुन कर मैं ने اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ (बेशक हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही के लिये हैं और हमें उसी की त़रफ़ लौट कर जाना है) पढ़ा। क्यूंकि ख़ुदा की क़सम ! वोह या'नी मेरी ज़ौजा तो कसरत से रोज़े रखने वाली, नवाफ़िल अदा करने वाली और निहायत ही पाक दामन मुसलमान थी। मैं ने (क़ब्र की खुदाई के लिये) एक फावड़ा लिया और अपने चचा के बेटों को ले कर क़ब्र पर आया। देखा तो क़ब्र पहले ही खुली हुई थी, मेरी ज़ौजा उस में बैठी हुई थी और येह बच्चा उस के गिर्द खेल रहा था। उसी वक़्त आस्मान से निदा करने वाले एक मुनादी ने यूं निदा की : اَیُّهَا الْمُسْتَوْدِعُ رَبَّهٗ وَدِیْعَتَهٗ خُذْ وَدِیْعَتَکَ اَمَّا لَوِ اسْتَوْدَعْتَ اُمَّهٗ لَوَجَدْتَّهَا ''या'नी ऐ अपने रब के पास अमानत रखवाने वाले ! अपनी अमानत (बच्चा) ले ले अगर तू इस की मां को भी बत़ौरे अमानत अपने रब के सिपुर्द कर जाता तो इसे भी ज़रूर (ज़िन्दा) पाता।'' मैं ने उस बच्चे को उठा लिया और क़ब्र ख़ुद ही बन्द हो गई। ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह वोही बच्चा है।''(1)

---

1 ......نوادرالاصول، الاصل الحادی والثلاثون، ج ۱، ص ۱۴۲، حدیث: ۲۰۷۔
مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الثانی والثلاثون، ص ۶۷۔

मौला अ़ली के ख़्वाब को अ़मलन बयान फ़रमा दिया

एक बार मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने रात को ख़्वाब देखा कि गोया आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने नमाज़े फ़ज्र रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे अदा फ़रमाई। नमाज़ के बा'द रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेह़राब से टेक लगा कर तशरीफ़ फ़रमा हो गए। अचानक एक लौंडी खजूरों से भरा हुवा थाल ले कर ह़ाज़िर हुई और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने रख दिया। आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस में से एक खजूर उठाई और फ़रमाया : **يَاعَلِيُّ تَأْخُذُ هٰذِهِ الرَّطَبَةَ؟** "या'नी ऐ अ़ली ! क्या येह खजूर खाओगे?" मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह खजूर मेरे मुंह में डाल दी। फिर दूसरी खजूर उठाई और इसी त़रह़ मुझ से पूछा, मैं ने इक़रार किया और आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह खजूर भी मेरे मुंह में डाल दी। जब मैं बेदार हुवा तो मुझ पर अब तक वोही कैफ़िय्यत त़ारी थी और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो खजूरें मेरे मुंह में डाली थीं उन का ज़ाइक़ा भी मौजूद था। मैं वुज़ू कर के मस्जिद गया और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के पीछे नमाज़ अदा की, नमाज़ के बा'द आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه भी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रह़ मेह़राब से टेक लगा कर बैठ गए। अभी मैं ने इरादा ही किया था कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को अपना ख़्वाब सुनाऊं कि अचानक एक औ़रत खजूरों से भरा हुवा थाल ले कर मस्जिद के दरवाज़े पर आई और वोह थाल आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के सामने ला कर रख दिया गया। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस में से एक खजूर उठाई और मुझ से इरशाद फ़रमाया : **تَاْكُلُ مِنْ هٰذَا يَاعَلِيُّ؟** "या'नी ऐ अ़ली ! क्या येह खजूर खाओगे?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "जी हां हु़ज़ूर ! क्यूं नहीं खाऊंगा !" फिर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने वोह खजूर मेरे मुंह में डाल दी। फिर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने एक और खजूर उठाई और दोबारा मुझ से पूछा, मैं ने इक़रार किया तो आप ने वोह खजूर भी मेरे मुंह में डाल दी। फिर इसी त़रह़ खजूरें उठा कर दीगर अस्ह़ाब में तक़्सीम फ़रमाना शुरूअ़ कर दीं। मेरे दिल में मज़ीद खजूरें खाने का शौक़ हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मेरी त़रफ़ देख कर फ़रमाया : **يَا اَخِيْ لَوْ زَادَكَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْلَتَكَ لَزِدْنَاكَ** "या'नी ऐ मेरे भाई ! अगर रात रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तुम्हें ख़्वाब में दो से ज़ियादा खजूरें दी होतीं तो हम भी ज़रूर देते।"

मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡہَہُ الۡکَرِیۡم) फ़रमाते हैं : فَعَجِبْتُ وَقُلْتُ قَدْ اَطْلَعَهُ اللّٰهُ عَلٰى مَا رَاَيْتُ الْبَارِحَةَ "या'नी येह सुन कर मैं बड़ा मुतअ़ज्जिब हुवा और कहा कि जो कुछ मैं ने ख़्वाब में देखा था अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इस की इत्तिलाअ़ दे दी।" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मेरी त़रफ़ देखा और इरशाद फ़रमाया : يَا عَلِيُّ! اَلْمُؤْمِنُ يَنْظُرُ بِنُوْرِ اللّٰهِ "या'नी ऐ अ़ली ! मोमिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नूर से देखता है।" मैं ने अ़र्ज़ किया :

صَدَقْتَ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ هٰكَذَا رَاَيْتُ وَكَذَا رَاَيْتُ طُعْمَةً وَلَذَّتَهُ مِنْ يَدِكَ كَمَا وَجَدْتُ طَعْمَهُ وَلَذَّتَهُ مِنْ يَدِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

या'नी आप ने सच फ़रमाया ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं ने ख़्वाब में ऐसा ही देखा था और जैसा ज़ाइक़ा व लज़्ज़त मैं ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हाथ में देखी है वैसी ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक हाथों में भी थी।"(1)

पाक दामन क़ातिला तक रसाई

एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को रास्ते में पड़े बेरीश मक़्तूल की लाश के पास लाया गया। आप ने लाश का मुआ़इना करने के बा'द मक़्तूल के मुतअ़ल्लिक़ लोगों से पूछ गछ की लेकिन कोई ख़ातिर ख़्वाह बात सामने न आई और न ही क़ातिल का कोई सुराग़ मिला। बहर ह़ाल आप ने बारगाहे इलाही में यूं दुआ़ की : اَللّٰهُمَّ اظْفُرْنِيْ بِقَاتِلِهٖ "या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे इस के क़ातिल की तलाश में कामयाबी अ़त़ा फ़रमा।" तक़रीबन एक साल बा'द दोबारा आप को मा'लूम हुवा कि जिस जगह उस शख़्स की लाश पड़ी थी वहीं पर अब एक ज़िन्दा बच्चा मौजूद है। येह देख कर आप ने फ़रमाया : ظَفَرْتُ بِدَمِ الْقَتِيْلِ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ "या'नी अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो अब मैं उस शख़्स के क़ातिल तक पहुंच जाऊंगा।" फिर आप ने वोह बच्चा एक औ़रत की परवरिश में दे दिया और उसे ताकीद फ़रमा दी कि : "अगर कोई भी औ़रत तुम्हारे पास इस बच्चे से मुतअ़ल्लिक़ आए इसे प्यार करे या इस के साथ मह़ब्बत का इज़्हार करे तो उसे करने देना और इस की इत्तिलाअ़ हम तक फ़ौरन पहुंचाना।"

---

(1)......رياض النضرة، ج ١، ص ٣٣١۔

कुछ अ़र्से बा'द उस औ़रत के पास एक लौंडी आई और कहने लगी कि : "क्या तुम येह बच्चा कुछ देर के लिये मुझे दे सकती हो ताकि मेरी मालिकन इस बच्चे को देखे, फिर मैं तुम्हें येह बच्चा वापस लौटा दूंगी।" उस औ़रत ने कहा : "क्यूं नहीं बल्कि मैं भी तुम्हारे साथ ही चलती हूं।" फिर वोह लौंडी और औ़रत दोनों मालिकन के पास पहुंच गईं, मालिकन ने बच्चे को ले कर उसे चूमा प्यार किया और अपने सीने से चिमटा लिया। वोह मालिकन दर अस्ल एक अन्सारी सह़ाबिये रसूल की बेटी थीं। बहर ह़ाल उस औ़रत ने सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उन के मुतअ़ल्लिक़ बता दिया। आप ने तल्वार निकाली और उस सह़ाबी के घर पहुंच गए, देखा तो वोह बाहर ही तशरीफ़ फ़रमा थे। आप ने उन से फ़रमाया : "आप की फ़ुलां बेटी ने क्या किया ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए, वोह तो हुक़ूक़ुल्लाह, हुक़ूके वालिदैन, सौमो सलात व दीनी मुआ़मलात की अदाएगी के ह़वाले से लोगों में मश्हूर है।" फ़रमाया : "क्या आप इस बात को पसन्द करेंगे कि मैं उस से कुछ पूछ गछ करूं ताकि ख़ैर में उस की रग़बत मज़ीद बढ़ जाए ?" अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए, आप यहीं तशरीफ़ रखिये मैं अभी थोड़ी देर में आता हूं।" फिर उन अन्सारी सह़ाबी ने (पर्दे वग़ैरा के एहतिमाम के बा'द) अपनी बेटी से मिलने की इजाज़त दे दी तो सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन के पास गए और बाक़ी तमाम अफ़राद को बाहर निकाल दिया। फिर आप ने तल्वार निकाल कर उन से फ़रमाया : "لَتَصْدُقِیْنِیْ وَاِلَّا قَتَلْتُکِ وَکَانَ عُمَرُ لَایَکْذِبُ" या'नी तुम मुझे सच सच बताओगी कि बच्चे का क्या मुआ़मला है ? वरना मैं तुम्हें क़त्ल कर दूंगा और याद रखो उ़मर कभी झूट नहीं बोलता।"

उन्हों ने अपने साथ पेश आने वाले मुआ़मले की रूदाद सुनाते हुवे अ़र्ज़ की, कि हुज़ूर ! मेरे पास एक बुढ़िया आया करती थी, उस का और मेरा मुआ़मला ऐसा था जैसे मां और बेटी का, वोह एक अ़र्से तक मेरे पास आती रही, फिर एक दिन उस ने मुझ से कहा : "बेटा मैं एक लम्बे सफ़र पर जा रही हूं, मेरी एक बेटी है जिसे मैं अकेला नहीं छोड़ सकती इस लिये उसे तुम्हारे हां छोड़ कर जा रही हूं।" उस की बेटी का एक बेटा भी था जो बिल्कुल लड़कियों के मुशाबेह था, मैं उसे लड़की ही समझती रही, मुझे कभी उस पर शक भी न हुवा कि वोह लड़की नहीं बल्कि लड़का है, एक दिन मैं सो रही थी कि

उस ने मुझ पर क़ाबू पा लिया और मेरे साथ ज़िना किया, इसी दौरान मेरे हाथ में छुरी आ गई और मैं ने उसे क़त्ल कर दिया, फिर उस की लाश उसी रास्ते पर डाल दी जहां आप ने देखी थी। मैं उस ज़िना से ह़ामिला हो गई और इस बच्चे को जना तो मैं ने इस बच्चे को भी उसी जगह डाल दिया जहां इस के बाप की लाश डाली थी। (बाक़ी के तमाम मुआ़मलात से आप बा ख़बर हैं) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस बच्चे और इस के बाप के मुतअ़ल्लिक़ जो कुछ मैं ने आप को बताया वोह बिल्कुल सह़ीह़ है।"

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस पाक दामन सह़ाबिये रसूल की बेटी को दुआ़एं देते हुवे इरशाद फ़रमाया : صَدَقْتِ بَارَكَ اللّٰهُ فِيْكِ "या'नी तुम ने सच कहा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें बरकतें अ़त़ा फ़रमाए।" फिर आप ने उन्हें वा'ज़ो नसीह़त की, उन के लिये मज़ीद दुआ़ की और बाहर तशरीफ़ ले आए, फिर उन के वालिद से इरशाद फ़रमाया : بَارَكَ اللّٰهُ فِيْ اِبْنَتِكَ فَنِعْمَ الْاِبْنَةُ اِبْنَتُكَ وَقَدْ وَعَظْتُهَا وَاَمَرْتُهَا "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी बेटी को बरकतें अ़त़ा फ़रमाए, कितनी नेक व परहेज़गार बेटी है, मैं ने इस से जो पूछ गछ व नसीह़त वग़ैरा करनी थी कर दी है।" उन सह़ाबी ने भी आप को दुआ़ देते हुवे अ़र्ज़ की : وَصَلَكَ اللّٰهُ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ! وَجَزَاكَ اللّٰهُ خَيْرًا عَنْ رَّعِيَّتِكَ "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को बे शुमार भलाइयां अ़त़ा फ़रमाए और आप को रिआ़या के मुआ़मले में जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए।"(1)

जैसा आप चाहते वैसा ही होता

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जब भी येह कहते हुवे देखा कि "मेरे ख़याल में येह काम यूं होना चाहिये।" तो वोह काम वैसा ही होता। चुनान्चे, एक बार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बैठे हुवे थे कि वहां से एक ख़ूब रू नौजवान गुज़रा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अगर मेरा गुमान ग़लत़ नहीं तो येह शख़्स जाहिलिय्यत में अपनी क़ौम का नुजूमी था। इसे बुलाओ।" लोग उसे बुला कर लाए और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब उस से गुफ़्त्गू फ़रमाई तो वाक़ेई वोह अपनी क़ौम का नुजूमी निकला।(2)

---

1 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الثالث والثلاثون، ص ۷۹۔

2 ......بخاری، کتاب المناقب، اسلام عمر بن خطاب، ج ۲، ص ۵۷۸، حدیث: ۳۸۶۶ ملتقطا۔

फ़ारूके़ आ'ज़म की मुआ़मला फ़ह्मी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जहां फ़िरासत जैसी बे शुमार बा कमाल ख़ूबियां अ़ता फ़रमाई थीं वहीं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुआ़मला फ़ह्मी जैसे वस्फ़ से भी ब दरजए अतम्म मुत्तसिफ़ थे, यूं तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़िन्दगी के जिस पहलू को भी देखा जाए वोह इसी सिफ़त की अ़क्कासी करता हुवा नज़र आता है। मुआ़मला फ़ह्मी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़ताकर्दा एक ऐसा वस्फ़ है जो सिर्फ़ मख़्सूस अफ़राद ही के ह़िस्से में आता है। क्यूंकि मुआ़मला फ़ह्मी और फ़िरासत दोनों का गहरा तअ़ल्लुक़ है, जो शख़्स फ़िरासत से मह़रूम होता है वोह कभी भी मुआ़मला फ़ह्म नहीं हो सकता, क्यूंकि जहां नर्मी से काम लेना है वहां ग़ुस्से से काम लेना या इस के बर अ़क्स करना यक़ीनन मुआ़मला फ़ह्मी नहीं बल्कि मुआ़मले को मज़ीद ख़राब करने वाली बात है। फ़िरासत व मुआ़मला फ़ह्मी से मुतअ़ल्लिक़ एक मश्हूर मक़ूला है कि **"जिसे येह फ़न आ गया कि कहां क्या बोलना है या किस वक़्त क्या करना है यक़ीनन वोह दुन्या का बेताज बादशाह बन गया ।"** अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता और उस के फ़ज़्लो करम से अपनी इन्ही सिफ़ात के सबब दुन्या के बेताज बादशाह थे । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़याते तृय्यिबा के मुआ़मला फ़ह्मी से मुतअ़ल्लिक़ चन्द गोशे मुलाह़ज़ा कीजिये :

क़बूले इस्लाम के फ़ौरन बा'द इस्लाम को ज़ाहिर करना

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब इस्लाम क़बूल किया उस वक़्त सिर्फ़ उन्तालीस लोगों ने इस्लाम क़बूल किया था या'नी मुसलमान बहुत ही क़लील ता'दाद में थे। कुफ़्फ़ारे क़ुरैश में सिर्फ़ दो ही ऐसे लोग थे जो अपने रो'ब व दबदबे में मश्हूर थे, जिन के नाम से लोग कांप जाते थे, एक तो ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और दूसरे अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ । आप से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी इस्लाम क़बूल कर चुके थे, अब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी इस्लाम क़बूल कर लिया था, कुफ़्फ़ार जिन दो क़ुव्वतों के बल बूते पर मुसलमानों को तंग करते थे, अब वोह दोनों ही मुसलमानों के पास थीं लिहाज़ा इन दो क़ुव्वतों के होने के बा वुजूद अगर मुसलमान अब भी खुल कर कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में न आते तो कुफ़्फ़ार का ग़लबा यक़ीनी था, लेकिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना

उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जैसे ही रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की गुलामी का पट्टा अपने गले में डाला तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप की फ़िरासत व मुआ़मला फ़ह्मी दोनों सिफ़ात में बरकत अ़ता फ़रमा दी और आप ने इन दोनों का भरपूर इस्ति'माल करते हुवे वक़्त के तक़ाज़े के मुत़ाबिक़ बारगाहे रिसालत में येह मदनी मश्वरा पेश कर दिया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं इस्लाम क़बूल कर चुका हूं लिहाज़ा मुसलमान अब छुप कर नमाज़ अदा नहीं करेंगे बल्कि ए'लानिय्या ख़ानए का'बा में नमाज़ अदा करेंगे और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस मदनी मश्वरे की मुवाफ़िक़त फ़रमा कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़िरासत और मुआ़मला फ़ह्मी दोनों सिफ़ात पर मोहरे नबवी सब्त फ़रमा दी।

ए'लानिय्या हिजरत करना

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ए'लानिय्या हिजरत भी आप की मुआ़मला फ़ह्मी का शाहकार है क्यूंकि जब कुफ़्फ़ारे मक्का के ज़ुल्मो सितम में बहुत तेज़ी आ गई और मुसलमानों का मक्कए मुकर्रमा में जीना दूभर हो गया तो सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुसलमानों को ह़बशा की जानिब हिजरत करने का हुक्म दे दिया और मुसलमानों की एक ता'दाद ह़बशा हिजरत कर गई। मुसलमानों के ह़बशा हिजरत करने से कुफ़्फ़ार मज़ीद बिफर गए और उन्हों ने बक़िय्या मुसलमानों को मज़ीद अपने ज़ुल्मो तशद्दुद का निशाना बनाना शुरूअ़ कर दिया जिस के नतीजे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तमाम मुसलमानों को मदीनए मुनव्वरा हिजरत करने का हुक्म दे दिया। जब मुसलमानों ने ह़बशा हिजरत की तो कुफ़्फ़ारे मक्का के दिलों में फ़ित़रतन एक ख़याल पैदा हुवा कि मुसलमान अब हम से डर गए हैं जभी तो मक्का से ह़बशा हिजरत कर रहे हैं, लेकिन जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मदीनए मुनव्वरा हिजरत करने का हुक्म दिया तो येह ख़याल उन के दिल में मज़ीद तक़्विय्यत पा गया कि वाक़ेई मुसलमान तो अब बहुत कमज़ोर हो चुके हैं कि पहले ह़बशा की त़रफ़ हिजरत की और अब शायद सब ही मदीनए मुनव्वरा हिजरत कर जाएंगे। येह एक ऐसा वक़्त था कि अगर कुफ़्फ़ारे मक्का के इस फ़ासिद ख़याल को ठेस न पहुंचाई जाती तो वोह मक्कए मुकर्रमा में बक़िय्या मुसलमानों को मदीनए मुनव्वरा हिजरत से रोकने के साथ साथ शदीद ज़ुल्मो सितम का निशाना बनाते। ऐसे नाज़ुक वक़्त में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी बा कमाल फ़िरासत से जान लिया कि कुफ़्फ़ारे मक्का के इस फ़ासिद ख़याल को चकना चूर करना बहुत ज़रूरी है लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुआ़मले की नज़ाकत को समझते हुवे

तमाम मुसलमानों के बर अ़क्स बिल्कुल ए'लानिय्या इस त़रह़ हिजरत की, कि तल्वार ज़ेबे तन कर के कमान कांधे पर लटकाई, तीरों का तरकश हाथ में लिया और पहलू में नेज़ा लटका कर ह़रम रवाना हुवे। का'बतुल्लाह शरीफ़ के सिह़न में कुरैश का एक गुरौह मौजूद था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूरे इत़मीनान से सात चक्कर लगा कर त़वाफ़ मुकम्मल किया। फिर सुकून से नमाज़ अदा की। कुफ़्फ़ार के एक एक ह़ल्के़ के सर पर जा कर खड़े हुवे और बबांगे दुहल फ़रमाने लगे : "तुम्हारे चेहरे ज़लील हो गए हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन चेहरों को ख़ाक में मिला देगा। जिस ने अपनी मां को नौह़ा करने वाली, बीवी को बेवा और बच्चों को यतीम करना हो वोह ह़रम से बाहर आ कर मुझ से दो दो हाथ कर सकता है।"(1) (येह फ़रमा कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बाहर तशरीफ़ ले आए और कोई भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पीछे आने की जुरअत न कर सका।)

फ़ारूक़े आ'ज़म मिज़ाज शनासे रसूल

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़याते त़य्यिबा के बे शुमार ऐसे वाक़िआ़त मिलते हैं कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी बात पर जलाल में आ गए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी मुआ़मला फ़ह्मी से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जलाल को जमाल में तब्दील कर दिया। एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में रोज़े के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जलाल में आ गए। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी वहां मौजूद थे और आप का येह अ़क़ीदा था कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ग़ज़ब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब को दा'वत देता है और अगर ह़ालते जलाल में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कुछ इरशाद फ़रमा दिया तो यक़ीनन दुन्या व आख़िरत की तबाही मुक़द्दर होगी लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़ौरन बारगाहे रिसालत में मुअद्दबाना इल्तिजा करते हुवे अ़र्ज़ की : رَضِیْنَا بِاللّٰہِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِیْنًا وَّ بِمُحَمَّدٍ نَّبِیًّا نَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ غَضَبِ اللّٰہِ وَ مِنْ غَضَبِ رَسُوْلِہٖ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रब होने, इस्लाम के दीन होने, मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नबी होने पर राज़ी हैं, हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ज़ब से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिज़ाज शनासे रसूल थे, बा'द में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोही सुवाल रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस मीठे अन्दाज़ में किये कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जलाल जमाल में तब्दील हो गया।(2)

---

1 ......اسد الغابۃ، عمر بن الخطاب، ھجرتہ، ج۴، ص ۱۶۴ ملخصاً۔

2 .....इस नोइय्यत के वाक़िआ़त के लिये इसी किताब का मौज़ूअ़, फ़ारूक़े आ'ज़म का इ़श्क़े रसूल, स. 345 का मुत़ालआ़ कीजिये।

हदीसे क़िरतास और फ़ारूक़े आ'ज़म की मुआमला फ़हमी

शफ़ीउल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मरज़े वफ़ात का मश्हूर वाक़िआ क़िरतास है जिस में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने विसाले ज़ाहिरी से तीन रोज़ क़ब्ल इरशाद फ़रमाया कि मैं तुम्हारे लिये ऐसी तहरीर लिख दूं कि तुम आइन्दा बहक न सको। ऐसे नाज़ुक वक़्त में जब कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मरज़ुल मौत में हैं अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुआमले की नज़ाकत को समझते हुवे उस वक़्त मौजूद सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मुख़ातब हो कर इरशाद फ़रमाया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दर्द की शिद्दत में हैं लिहाज़ा क़लम दवात लाने की हाजत नहीं, हमारे लिये कुरआन काफ़ी है।[1]

रसूलुल्लाह के विसाले ज़ाहिरी पर आप का फ़रमान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसलमानों के लिये सब से बड़े रन्जो ग़म का वक़्त वोह था जब ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस दुन्या से विसाले ज़ाहिरी फ़रमाया। जहां मुसलमानों के लिये आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वुजूद ''ने'मते कुब्रा'' था वहीं मुनाफ़िक़ीन व कुफ़्फ़ार आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वुजूदे मसऊद को अपने लिये आड़ महसूस करते थे, अगर मुसलमानों के कुलूब में इस बात की ख़्वाहिश थी कि ता क़ियामत हमें रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़राबत नसीब हो तो वहीं मुनाफ़िक़ीन व कुफ़्फ़ार इस बात के ख़्वाहां थे कि مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस दुन्या से फ़िलफ़ौर पर्दा फ़रमा जाएं, बल्कि मुनाफ़िक़ीन की फ़ितनए इन्कारे ज़कात व इर्तिदाद जैसी कई साज़िशें भी तय्यार थीं जो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल पर मौक़ूफ़ थीं। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुनाफ़िक़ीन की इन्ही नापाक साज़िशों को कमज़ोर करने के लिये रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी की ख़बर को फैलने से रोका और बा'दे विसाल मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि ''अगर किसी ने येह कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم विसाल फ़रमा गए हैं तो मैं उस की गर्दन उड़ा दूंगा।'' आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह फ़रमान भी मुनाफ़िक़ीन की साज़िशों को कमज़ोर करने के सिलसिले में बेहतरीन मुआमला फ़हमी की अक्कासी करता है।

---

1 .....इस वाक़िए की तफ़्सील के लिये इसी किताब के सफ़हा 578 का मुतालआ कीजिये।

तमाम मुसलमान एक जगह जम्अ़ हो गए

ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी ह़याते त़य्यिबा में तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को ज़िन्दगी के हर हर गोशे में बेहतरीन रहनुमाई अ़त़ा फ़रमाई कोई भी मुआ़मला होता सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان फ़ौरन बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो जाते और इस का ह़ल उन्हें मिल जाता। येही वज्ह थी कि जैसे ही रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाले ज़ाहिरी हुवा मुसलमानों पर एक बहुत बड़ी आज़्माइश आ गई कि अब वोह किस से रहनुमाई ह़ासिल करेंगे ? लिहाज़ा फ़ौरन इस बात को पेशे नज़र रखा गया कि कोई ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया जाए जिस की इत्तिबाअ़ की जा सके। इस मुआ़मले में मुहाजिरीन व अन्सार सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की राए मुख़्तलिफ़ हो गई। एक त़रफ़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाले ज़ाहिरी का सदमा तो दूसरी त़रफ़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा के इन्तिख़ाब में मुसलमानों का इख़्तिलाफ़े राए इस बात का तक़ाज़ा करता था कि फ़ौरन इस इख़्तिलाफ़ को ख़त्म किया जाए। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुआ़मले की नज़ाकत को समझते हुवे आगे बढ़ कर तमाम मुसलमानों में सब से बेहतर शख़्सिय्यत या'नी अमीरुल मोमिनीन, ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअ़त कर ली, आप को देख कर तमाम लोगों ने बैअ़त कर ली और मुसलमान एक ही ख़लीफ़ा पर जम्अ़ हो गए।(1)

इन्तिक़ाल से क़ब्ल शूरा का क़ियाम भी आप की मुआ़मला फ़ह्मी है

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने विसाले ज़ाहिरी से क़ब्ल अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त पर किनायतन तमाम मुसलमानों को मुत्त़लअ़ फ़रमा दिया था, येही वज्ह थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त पर तमाम मुसलमान मुत्तफ़िक़ हो गए। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने विसाले ज़ाहिरी से क़ब्ल अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बत़ौरे वसिय्यत ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमा दिया। येही वज्ह थी कि इस पर भी किसी को इख़्तिलाफ़ न हुवा। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का जब विसाले ज़ाहिरी का

1.....इस वाक़िए की तफ़्सील पढ़ने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 722 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर**" सफ़ह़ा 321 का मुत़ालआ़ कीजिये।

वक़्त आया तो वक़्त का तक़ाज़ा येह था कि कोई ऐसी हिक्मते अ़मली इख़्तियार की जाए कि मुसलमानों में इन्तिशार भी पैदा न हो और ख़लीफ़ा का तक़र्रुर भी हो जाए। लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी फ़िरासत से मुआ़मले की नज़ाकत को समझते हुवे छे सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان पर मुश्तमिल एक शूरा तरतीब दी जिस ने ख़लीफ़ा का तक़र्रुर किया और मुसलमानों में किसी क़िस्म का इख़्तिलाफ़ न हुवा। यक़ीनन येह भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बेहतरीन मुआ़मला फ़हमी का शाहकार है।

फ़ारूक़े आ'ज़म और इताअ़ते बारी तआ़ला

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाज़ेह़ रहे कि तमाम सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان इताअ़ते बारी तआ़ला और इताअ़ते रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर सख़्ती के साथ कारबन्द थे, येही वज्ह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तमाम सहाबा से अपनी रिज़ा का वा'दा फ़रमा लिया। चुनान्चे, पारह 5, सूरतुन्निसा, आयत 95 में इरशाद होता है :

﴿لَا یَسْتَوِی الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ غَیْرُ اُولِی الضَّرَرِ وَ الْمُجٰهِدُوْنَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْؕ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِیْنَ بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقٰعِدِیْنَ دَرَجَةًؕ وَ كُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰىؕ وَ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِیْنَ عَلَى الْقٰعِدِیْنَ اَجْرًا عَظِیْمًاۙ﴾ (پ۵، النساء:۹۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "बराबर नहीं वोह मुसलमान कि बे उ़ज़्र जिहाद से बैठ रहें और वोह कि राहे ख़ुदा में अपने मालों और जानों से जिहाद करते हैं **अल्लाह** ने अपने मालों और जानों के साथ जिहाद वालों का दरजा बैठने वालों से बड़ा किया और **अल्लाह** ने सब से भलाई का वा'दा फ़रमाया और **अल्लाह** ने जिहाद वालों को बैठने वालों पर बड़े सवाब से फ़ज़ीलत दी है।"

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाता है :

وَ مَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَ لِلّٰهِ مِیْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِؕ لَا یَسْتَوِیْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَ قٰتَلَؕ اُولٰٓىٕكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِیْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَ قٰتَلُوْاؕ وَ كُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰىؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرٌ (پ۲۷، الحدید:۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हें क्या है कि **अल्लाह** की राह में ख़र्च न करो ह़ालांकि आस्मानों और ज़मीन सब का वारिस **अल्लाह** ही है तुम में बराबर नहीं वोह जिन्हों ने फ़त्ह़े मक्का से क़ब्ल ख़र्च और जिहाद किया वोह मर्तबे में उन से बड़े हैं जिन्हों ने बा'द फ़त्ह़ के ख़र्च और जिहाद किया और उन सब से **अल्लाह** जन्नत का वा'दा फ़रमा चुका और **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है।"

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रब عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त में सब से ज़ियादा पुख़्ता थे और ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस बात की गवाही दी। चुनान्चे,

फ़ारूक़े आ'ज़म रब तआ़ला के हुक्म के मुआ़मले में सब से ज़ियादा सख़्त

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَشَدُّ اُمَّتِیْ فِیْ اَمْرِ اللّٰہِ تَعَالٰی عُمَرُ "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म के मुआ़मले में मेरा सब से सख़्त उम्मती उ़मर है।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म का तक़्वा व परहेज़गारी

फ़ारूक़े आ'ज़म तमाम सहाबा से बढ़ कर तारिकुद्दुन्या थे

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ न तो हम से पहले ईमान लाए और न ही पहले हिजरत की, मगर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हम सब से बढ़ कर तारिकुद्दुन्या और फ़िक्रे आख़िरत रखने वाले थे।"(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म तक़्वे की वसिय्यत फ़रमाते

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ न सिर्फ़ ख़ुद मुत्तक़ी-परहेज़गार थे बल्कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ तो मुख़्तलिफ़ सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को भी तक़्वे की नसीह़त फ़रमाते रहते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन जा'दा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना यसार رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास से गुज़रे तो उन्हें सलाम किया और इरशाद फ़रमाया : وَ الَّذِیْ لَا اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ مَا مِنْ اِلٰہٍ اِلَّا اللّٰہُ وَ اُوْصِیْکُمْ بِتَقْوَی اللّٰہِ "या'नी उस रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरने की वसिय्यत करता हूं।"(3)

---

(1) ......صفة الصفوة، ذکر جملة من مناقبه وفضائله، الجزء: ۱، ج ۱، ص ۱۴۴۔

(2) ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۲۸۷، اسد الغابة، عمر بن خطاب، ج ۴، ص ۱۶۷۔

(3) ......مصنف عبد الرزاق، کتاب الصلاة، باب النوم قبلها۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۴۱۴، حدیث: ۲۱۳۷۔

तक़्वा मोमिन की इ़ज़्ज़त है

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : كَرَمُ الْمُؤْمِنِ تَقْوَاهُ "या'नी मोमिन की इ़ज़्ज़त उस का तक़्वा व परहेज़गारी है।"[1]

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस फ़रमान का इशारा क़ुरआने पाक में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान की त़रफ़ है :

﴿ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ﴾ (پ٢٦، الحجرات:١٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक **अल्लाह** के यहां तुम में ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह जो तुम में ज़ियादा परहेज़गार है।"

दिल और बदन की राह़त

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फरमाया :

اَلزُّهْدُ فِي الدُّنْيَا رَاحَةُ الْقَلْبِ وَالْبَدَنِ

"या'नी दुन्या से बे रग़बती इख़्तियार करने में दिल और बदन की राह़त है।"[2]

तक़्वे के लिये फ़ारूक़े आ'ज़म की सोह़बत

ह़ज़रते सय्यिदुना मिसवर बिन मख़्रमा رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि फ़रमाते हैं : كُنَّا نَلْزَمُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ نَتَعَلَّمُ مِنْهُ الْوَرَعَ "या'नी हम लोग अक्सर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ ही रहते थे ताकि तक़्वा व परहेज़गारी सीखें।"[3]

फ़ारूक़े आ'ज़म और नमाज़

नमाज़े फ़ज्र में ज़ारो क़ित़ार रोने लगे

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन शद्दाद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाया : "एक बार हमें अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़े फ़ज्र पढ़ाई और क़िराअत में सूरए यूसुफ़ की तिलावत शुरूअ़ की, क़िराअत फ़रमाते रहे यहां तक कि जब इस आयते

---

1 ......جامع الاصول، الفصل الاول، فی احادیث مشترکة تبین آداب النفس، نوع سادس، ج ١١، ص ٢٥٤، الرقم: ٩٣٣٨۔

2 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب السابع والخمسون، ص ١٧٦۔

3 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ٣، ص ٢٢٠۔

मुबारका पर पहुंचे : ﴿ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ ﴾ (پ۱۳، یوسف:۸۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उस की आंखें ग़म से सफ़ेद हो गईं तो वोह ग़ुस्सा खाता रहा।" तो ज़ारो क़ित़ार रोने लगे, जब आप का रोना मुन्क़त़ेअ़ हुवा तो रुकूअ़ फ़रमाया।"(1)

इ़शा की जमाअ़त का इन्तिज़ार

मस्जिदे नबवी में जब लोग जल्दी ह़ाज़िर हो जाते तो सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ जल्दी पढ़ लेते और लोगों की ह़ाज़िरी में देर मुलाह़ज़ा फ़रमाते तो ताख़ीर फ़रमाते और कभी ऐसा भी होता कि सब लोग ह़ाज़िर हो जाते और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ताख़ीर फ़रमाते। चुनान्चे, एक बार नमाज़े इ़शा में सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने आप की तशरीफ़ आवरी का बहुत त़वील इन्तिज़ार किया। बहुत देर के बा'द मजबूर हो कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने दरे अक़्दस पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की, कि : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! औ़रतें और बच्चे सो गए।" इस के बा'द आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बर आमद हुवे और फ़रमाया : "रूए ज़मीन पर तुम्हारे सिवा कोई नहीं जो इस नमाज़ का इन्तिज़ार करता हो और तुम नमाज़ ही में हो जब तक नमाज़ के इन्तिज़ार में रहो।"(2)

रात के दरमियानी ह़िस्से में रग़बत के साथ नमाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि "**كَانَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ يُحِبُّ الصَّلَاةَ فِيْ كَبِدِ اللَّيْلِ**" या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه रात के दरमियानी ह़िस्से में नमाज़ पढ़ना पसन्द फ़रमाते थे।"(3)

फ़ारूके़ आ'ज़म सफ़ें दुरुस्त करवाते

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 417 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "इह़याउल उ़लूम का ख़ुलासा" सफ़ह़ा 396 पर है : "ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर

---

1 ......تهذیب الآثار للطبری، ذکر من قال۔۔۔الخ، ج۲، ص۱۴۱، حدیث: ۲۴۹ ملتقطاً۔

2 ......بخاری، کتاب مواقیت الصلوۃ، باب فضل العشاء، ج۱، ص۲۰۸، حدیث: ۵۶۶۔

3 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۱۷۔

फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सफ़ों के दरमियान ख़ला देखते तो फ़रमाते : "अपनी सफ़ें दुरुस्त कर लो। जब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ देखते कि सफ़ें बिल्कुल सीधी हो चुकी हैं, नमाज़ियों के दरमियान बिल्कुल ख़ला नहीं रहा और सब के कन्धे मिले हुवे हैं तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ आगे बढ़ते और तक्बीरे तह़रीमा कहते।"

फ़ारूक़े आ'ज़म नमाज़े फ़ज्र में त़वील क़िराअत फ़रमाते

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ़दते करीमा थी कि सुब्ह़ की नमाज़ में अक्सर सूरए यूसुफ़ और सूरए नह़्ल में से क़िराअत फ़रमाते, आप पहली रक्अ़त में कुछ ज़ियादा तिलावत फ़रमाते ताकि बा'द में आने वाले भी जमाअ़त में शामिल हो सकें।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म के नज़्दीक सब से अहम काम नमाज़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़ीदक सब से अहम काम नमाज़ था। चुनान्चे, इमाम बुख़ारी व इमाम मुस्लिम व इमाम मालिक (رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم) ने ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत किया है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने सूबों के गवर्नरों के पास फ़रमान भेजा कि : "तुम्हारे सब कामों से अहम मेरे नज़्दीक नमाज़ है। जिस ने इस का ह़िफ़्ज़ किया और इस पर मुह़ाफ़ज़त की उस ने अपना दीन मह़फ़ूज़ रखा और जिस ने इसे ज़ाएअ़ किया वोह औरों को बदरजए औला ज़ाएअ़ करेगा।"(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म की नमाज़ में क़िराअत

फ़ारूक़े आ'ज़म की नमाज़ में त़वील क़िराअत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बा'ज़ औक़ात नमाज़े फ़ज्र में सूरए ह़ज या सूरए यूसुफ़ या सूरए नह़्ल जैसी त़वील सूरतों की क़िराअत फ़रमाया करते थे। ताकि लोग ज़ियादा से ज़ियादा नमाज़ में शरीक हो जाएं।(3)

---

1 ......لباب الاحیاء، ص۳۹٦۔

2 ......موطاامام مالک، کتاب وقوت الصلاۃ، باب وقوت الصلاۃ، ج ۱، ص ۳۵، حدیث:٦۔

3 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب قصۃ البیعۃ والاتفاق علی عثمان، ج ۲، ص ۵۳۲، حدیث: ۳۷۰۰ملتقطاً۔

کنزالعمال، کتاب الصلاۃ، فصل فی اذکارالتحریمۃ ومایتعلق بہا، الجزء:۸، ج ۴، ص ۵۲، حدیث: ۲۲۱۰۵۔

फ़ारूके आ'ज़म और ज़िक्रुल्लाह

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कसरत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किया करते थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़बान हर वक़्त ज़िक्रुल्लाह से तर रहा करती थी। चुनान्चे,

कसरत से ज़िक्रुल्लाह करने वाले

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : كَانَ اَكْثَرُ كَلَامِ عُمَرَ اَللّٰهُ اَكْبَرُ "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़बान पर अक्सर اَللّٰہُ اَکْبَر जारी रहता था।"(1)

फ़ारूके आ'ज़म के रोज़े

वफ़ात से क़ब्ल मुसलसल रोज़े रखना

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत कम खाने वाले थे और येही वज्ह थी कि आप दुबले पतले जिस्म के मालिक थे। आख़िरी उ़म्र में तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसलसल रोज़े रखते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि "अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वफ़ात से क़ब्ल मुसलसल रोज़े रखने शुरूअ़ कर दिये थे।"(2)

फ़ारूके आ'ज़म और ए'तिकाफ़

ए'तिकाफ़ की मन्नत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मेरे वालिदे गिरामी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने ज़मानए जाहिलिय्यत में नज़्र मानी थी कि एक रात मस्जिदे ह़राम में ए'तिकाफ़ करूंगा, क्या मैं अपनी नज़्र पूरी करूं ?" ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हां ! अपनी नज़्र पूरी करो।"(3)

---

1 ......رياض النضرة، ج ١، ص ٣٢٤۔

2 ......رياض النضرة، ج ١، ص ٣٢٣۔

3 ......بخاری، کتاب الاعتکاف، باب الاعتکاف ليلا، ج ١، ص ٢٢٦، حديث: ٢٠٣٢۔

फ़ारूक़े आ'ज़म और जन्नती आ'माल

आप के लिये जन्नत वाजिब हो गई

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से इरशाद फ़रमाया :

.....مَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الْيَوْمَ جَنَازَةً "या'नी आज किस ने जनाज़े में शिर्कत की है ?" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ने शिर्कत की है।"

.....आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर इरशाद फ़रमाया : مَنْ عَادَ مِنْكُمْ مَرِيضًا "या'नी आज मरीज़ की इ़यादत किस ने की है ?" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दोबारा अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने।"

.....फिर फ़रमाया : مَنْ تَصَدَّقَ "या'नी आज सदक़ा किस ने दिया है।" तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दोबारा अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने।"

.....फ़रमाया : مَنْ أَصْبَحَ صَائِمًا "या'नी आज किस ने रोज़ा रखा है ?" तो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने रोज़ा रखा है।"

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : وَجَبَتْ وَجَبَتْ "या'नी ऐ उ़मर ! तुम्हारे लिये जन्नत वाजिब हो गई।"(1)

---

(1)......مسند امام احمد، مسند انس بن مالک، ج ۴، ص ۲۳۷، حدیث: ۱۲۱۸۲۔

वाज़ेह रहे कि बि ऐनिही इस त़रह़ की रिवायत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में भी मरवी है, अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने "تلقیح فهوم اهل الاثر" सफ़ह़ा 682 में इस रिवायत की निस्बत को सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ ज़ियादा सह़ीह़ क़रार दिया है, जो इस बात पर दलालत करता है कि इस रिवायत की निस्बत दोनों की त़रफ़ सह़ीह़ है, ग़ालिबन तक़दीम व ताख़ीर का फ़र्क़ है। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَمُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

तिलावते फ़ारूके़ आ'ज़म और गिर्या व ज़ारी

फ़ारूके़ आ'ज़म की रिक़्क़त के सबब सांस उखड़ गई

हज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन आयात की तिलावत की :

﴿اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۙ﴿۷﴾ مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ۙ﴿۸﴾﴾ (پ۲۷، الطور:۷تا۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक तेरे रब का अ़ज़ाब ज़रूर होना है उसे कोई टालने वाला नहीं।"

आप पर ख़ौफ़े ख़ुदा के ग़लबे के सबब ऐसी रिक़्क़त त़ारी हुई कि आप की सांस ही उखड़ गई और येह कैफ़िय्यत कमो बेश बीस रोज़ तक त़ारी रही।[1]

रुख़्सारों पर दो सियाह लकीरें

इमाम बैहक़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अपनी सनद से रिवायत करते हैं : اِنَّهٗ كَانَ فِیْ وَجْهِهٖ خَطَّانِ اَسْوَدَانِ مِنَ الْبُكَاءِ या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के चेहरे पर कसरत से रोने के सबब दो सियाह लकीरें बन गई थीं।"[2]

फ़ारूके़ आ'ज़म वज़ीफ़ा पढ़ते हुवे रोते

हज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपना वज़ीफ़ा पढ़ने के दौरान बसा औक़ात इतना रोते कि ग़श खा कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आते, एक दो रोज़ तक अपने घर से भी न निकल पाते और लोग आप की तीमारदारी के लिये आते।[3]

आयाते मुबारका ने फ़ारूके़ आ'ज़म को रुला दिया

हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन सुलैमान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक ईसाई राहिब के गिर्जे के क़रीब

---

1 ......فضائل القرآن لابی عبید، باب مایستحب۔۔۔الخ، ص۱۳۷۔

2 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی الخوف۔۔۔الخ، ج۱، ص۴۹۳، حدیث:۸۰۶۔

3 ......شعب الایمان للبیهقی، فصل فی البکاء عند قراءة القرآن، ج۲، ص۳۶۴، حدیث:۲۰۵۶۔

से गुज़रे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे यूं बुलाया : ''ऐ राहिब ! ऐ राहिब !'' इतने में राहिब बाहर आ गया । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उसे देख कर ज़ारो क़ितार रोने लगे । पूछा गया : يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ مَا يُبْكِيْكَ مَنْ هٰذَا؟ ''या'नी हुज़ूर ! आप को किस चीज़ ने रुलाया और येह कौन है ?'' फ़रमाया : ذَكَرْتُ قَوْلَ اللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ فِيْ كِتَابِهٖ فَذٰلِكَ الَّذِيْ اَبْكَانِيْ ''या'नी कुरआने पाक में मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने आलीशान याद आ गया इस लिये रोने लग गया : ﴿عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ۙ﴿۳﴾ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۙ﴿۴﴾ تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ؕ﴿۵﴾﴾ (پ۳۰، الغاشية:۳ تا ۵) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ''काम करें मशक़्क़त झेलें, जाएं भड़कती आग में, निहायत जलते चश्मे का पानी पिलाए जाएं ।''(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म और ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत ही ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते त़य्यिबा पर नज़र डाली जाए तो येह बात बिल्कुल वाज़ेह़ होती है कि आप की ह़यात का हर हर गोशा ख़ौफ़े ख़ुदा से भरपूर था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की नसीह़त आमोज़ गुफ़्त्गू ख़ौफ़े ख़ुदा के बे शुमार मदनी फूलों पर मुश्तमिल होती, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का कोई ऐसा फ़े'ल न था जिस से ख़ौफ़े ख़ुदा न झलकता हो । ख़ौफ़े ख़ुदा आप की ज़ाते मुबारका पर ऐसा ग़ालिब था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अक्सर औक़ात इस बात की तमन्ना करते कि : काश मैं इस दुन्या में पैदा न हुवा होता और ऐ काश ! मैं बशर ही न होता । इस त़रह़ के कई अक़्वाल कुतुबे सीरत में मिलते हैं । चुनान्चे,

ऐ काश ! मैं बशर न होता

हज़रते सय्यिदुना ज़ह़्ह़ाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाया करते थे : ''ऐ काश ! मैं अपने घर वालों का दुम्बा होता जिसे वोह ख़ूब खिलाते पिलाते ह़त्ता कि मैं ख़ूब मोटा ताज़ा हो जाता । फिर उन के प्यारे दोस्त मेहमान बनते तो वोह मुझे उन के लिये ज़ब्ह़ करते, मेरे कुछ गोश्त को भूनते, कुछ के छोटे छोटे टुकड़े कर के खा जाते, फिर मुझे फ़ुज़्ला बना कर बाहर निकाल देते, ऐ काश ! मैं बशर न होता ।''(2)

---

1 ......مستدرک حاکم، کتاب التفسیر، تفسیر سورة الغاشية، ج ۳، ص ۳۶۸، حدیث: ۳۹۸۰۔

2 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی الخوف من الله تعالی، ج ۱، ص ۴۸۵، حدیث: ۷۸۷۔

काश ! उ़मर येह मिट्टी का ढेला होता

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा कि आप ने ज़मीन से एक मिट्टी का ढेला उठाया और फ़रमाया : "ऐ काश ! उ़मर येह मिट्टी का ढेला होता ऐ काश ! मैं पैदा न हुवा होता ऐ काश ! मेरी मां ने मुझे न जना होता ऐ काश ! मैं कुछ भी न होता, कोई भूली बिसरी शै होता।"(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म और ख़ौफ़ व उम्मीद की आ'ला मिसाल

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि अगर आस्मान से निदा की जाए कि "रूए ज़मीन के तमाम आदमी बख़्श दिये गए हैं सिवाए एक शख़्स के।" तो मैं ख़ौफे़ ख़ुदा के सबब येही समझूंगा कि वोह शख़्स मैं ही हूं। और अगर येह निदा की जाए कि "रूए ज़मीन के तमाम आदमी दोज़ख़ी हैं सिवाए एक शख़्स के।" तो मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से उम्मीद के सबब येही समझूंगा कि वोह एक शख़्स भी मैं ही हूं।"(2)

फ़ारूके़ आ'ज़म ख़ौफे़ ख़ुदा की बातें सुनते

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ! हमें डर वाली कुछ बातें सुनाएं।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अगर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ क़ियामत के दिन सत्तर अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के अ़मल ले कर भी आएं तो क़ियामत के अह़वाल देख कर इन्हें ह़क़ीर जानने लगेंगे।" इस पर अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुछ देर के लिये सर झुका लिया फिर जब इफ़ाक़ा हुवा तो इरशाद फ़रमाया : "ऐ का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ! मज़ीद सुनाएं।" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अगर जहन्नम में से बैल के नाक जितना ह़िस्सा मशरिक़ में खोल दिया जाए तो मग़रिब में मौजूद शख़्स का दिमाग़ उस की गर्मी की वज्ह से उबल कर बह जाए।" इस पर अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुछ देर के लिये सर झुका लिया फिर जब इफ़ाक़ा हुवा तो इरशाद फ़रमाया : "ऐ का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ! और सुनाएं।" तो उन्हों ने फिर अ़र्ज़ की :

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الزھد، کلام عمر بن خطاب، ج۸، ص ۱۵۲، حدیث: ۳۹۔

2 ......احیاء العلوم، کتاب الخوف، بیان ان الافضل ھو غلبة الخوف۔۔۔الخ، ج۴، ص ۲۰۲۔

''ऐ अमीरुल मोमिनीन ! क़ियामत के दिन जहन्नम इस त़रह़ भड़केगा कि कोई मुक़र्रब फ़िरिश्ता या नबिय्ये मुर्सल ऐसा न होगा जो घुटनों के बल गिर कर येह न कहे : رَبِّ!نَفْسِیْ!نَفْسِیْ! (या'नी ऐ रब عَزَّوَجَلَّ आज मैं तुझ से अपनी बख़्शिश के इलावा कुछ नहीं मांगता) ।'' ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मज़ीद बताया : ''जब क़ियामत का दिन आएगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अव्वलीन व आख़िरीन को एक टीले पर जम्अ़ फ़रमाएगा, फिर फ़िरिश्ते नाज़िल हो कर सफ़ें बनाएंगे ।'' इस के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : ''ऐ जिब्राईल (عَلَیْہِ السَّلَام) ! जहन्नम को ले आओ ।'' तो ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام जहन्नम को इस त़रह़ ले कर आएंगे कि इस की सत्तर हज़ार लगामों को खींचा जा रहा होगा, फिर जब जहन्नम मख़्लूक़ से सौ बरस की राह पर पहुंचेगी तो उस में इतनी शदीद भड़क पैदा होगी कि जिस से मख़्लूक़ के दिल दहल जाएंगे, फिर जब दोबारा भड़क पैदा होगी तो हर मुक़र्रब फ़िरिश्ता और नबिय्ये मुर्सल घुटनों के बल गिर जाएगा, फिर जब तीसरी मरतबा भड़केगी तो लोगों के दिल गले तक पहुंच जाएंगे और अ़क़्लें घबरा जाएंगी, यहां तक कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अ़र्ज़ करेंगे : ''मैं तेरे ख़लील होने के सदक़े से सिर्फ़ अपने लिये सुवाल करता हूं ।'' ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अ़र्ज़ गुज़ार होंगे : ''या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! मैं अपनी मुनाजात के सदक़े सिर्फ़ अपने लिये सुवाल करता हूं ।'' ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अ़र्ज़ करेंगे : ''या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! तू ने मुझे जो इ़ज़्ज़त दी है उस के सदक़े मैं सिर्फ़ अपने लिये सुवाल करता हूं उस मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के लिये सुवाल नहीं करता जिस ने मुझे जना है ।''[1]

काश हमें भी ख़ौफ़े ख़ुदा नसीब हो जाए

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के प्यारे सह़ाबी हैं जिन के जन्नती होने में किसी शक्को शुब्हे की क़त्अ़न गुन्जाइश नहीं इस के बा वुजूद ख़ौफ़े ख़ुदा का येह ह़ाल है कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से क़ब्रो आख़िरत के मराह़िल व वाक़िआ़त सुन कर ख़ूब गिर्या व ज़ारी फ़रमाते और बरोज़े क़ियामत फ़र्दे वाह़िद के जहन्नमी होने की सदा पर अपने आप को तसव्वुर करते कि वोह जहन्नमी मैं ही हूं । मगर आह ! आज हम सुब्ह़ो शाम गुनाहों में गुज़ारने के बा वुजूद अपने आप को ज़माने का नेक

---

1 ......الزواجر عن اقتراف الكبائر، مقدمة فی تعریف الکبیرۃ، ج ۱، ص ۴۹۔

और पारसा शख़्स तसव्वुर करते हैं, अव्वलन हम से कोई नेकी होती नहीं और अगर बिलफ़र्ज़ कोई नेकी कर भी लें तो रियाकारी की तबाहकारी इस नेकी को हल्की सी चिंगारी लगा कर तहस नहस कर डालती है। काश ! हमें भी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसा ह़क़ीक़ी ख़ौफ़े ख़ुदा नसीब हो जाए जो रियाकारी की तबाहकारी से पाको साफ़ हो।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मौत का झटका तल्वार से सख़्त है

फ़रमाने अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ : "अगर रोज़े क़ियामत येह ए'लान हो कि तमाम रूए ज़मीन के आदमी बख़्श दिये गए हैं सिवाए एक शख़्स के तो ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब येही समझूंगा कि वोह शख़्स मैं ही हूं। आ'ला ह़ज़रत अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن इस फ़रमान को बयान करने के बा'द इरशाद फ़रमाते हैं : "ख़ैर येह तो ह़िस्सा उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) का था लेकिन कम से कम हर मुसलमान को इतना तो होना ही चाहिये कि सिह़्ह़त व तन्दुरुस्ती के वक़्त "ख़ौफ़" (या'नी ख़ौफ़े ख़ुदा) ग़ालिब हो और मरते वक़्त "रिजा"। (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मग़फ़िरत की उम्मीद) ह़दीस में है : हर झटका मौत का हज़ार ज़र्बे तल्वार से सख़्त तर है। (मुर्दा आदमी को) मलाइका दबोचे बैठे रहते हैं वरना आदमी तड़प कर न मा'लूम कहां जाए, उस वक़्त अगर مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कुछ इस त़रफ़ से ना गवारी आई तो सल्बे ईमान हो गया। इस लिये उस वक़्त बताया जाए कि किस के पास जा रहा है।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम येह चाहते हैं कि हमारे दिल में भी रब عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ीक़ी ख़ौफ़ पैदा हो जाए तो इस का एक ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल भी है, आप दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये और अपने क़ल्ब में ख़ौफ़े ख़ुदा को उजागर कीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां में बेड़ा पार होगा। लाखों लोग इस मदनी तह़रीक से वाबस्ता हो कर अपने दिलों में ख़ौफ़े ख़ुदा की शम्अ़ उजागर कर के अपने क़ुलूब को रब عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत से मुनव्वर कर चुके हैं।

तरग़ीब के लिये एक बहार पेशे ख़िदमत है :

1.....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 495।

जब मैं ने रिसाला "क़ब्र का इम्तिहान" पढ़ा......

सेन्ट्रल जेल हैदराबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) में ज़िलअ़ सांघड़ के रिहाइशी एक क़ैदी की तह़रीर का लुब्बे लुबाब कुछ यूं है कि मैं ज़िन्दगी के क़ीमती अय्याम अपने ख़ालिक़ो मालिक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानियों में बसर कर रहा था। उस के अह़कामात की बजा आवरी में सुस्ती मेरी आ़दत बन चुकी थी। लज़्ज़ते गुनाह में मख़्मूर, गन्दी फ़िल्में और ड्रामे देखते देखते मैं जराइम की दुन्या में दाख़िल हो गया। शबो रोज़ दश्ते जुर्म में भटकता रहता। आख़िरे कार एक दिन मुझे किसी जुर्म की पादाश में 25 साल क़ैद की सज़ा सुना दी गई। जैल में आने के बा'द भी मैं न सुधर सका यहां तक कि ज़िन्दगी के 11 साल मज़ीद गुज़र गए।

फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से मेरे सुधरने का सामान हो ही गया, इस की तरकीब कुछ यूं बनी कि दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता चन्द बा इमामा इस्लामी भाई हमारी बैरक में नेकी की दा'वत देने के लिये तशरीफ़ लाते और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मदनी रसाइल भी तोह़्फ़तन तक़्सीम किया करते। एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने मुझे एक रिसाला "क़ब्र का इम्तिह़ान" पढ़ने के लिये दिया। जब मैं ने उस में मुन्कर नकीर के सुवालात के वक़्त की कैफ़िय्यात, क़ब्र का अपने अन्दर आने वालों से सुलूक और क़ब्र के दीगर मुआ़मलात के बारे में पढ़ा तो ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी से लरज़ उठा, अपने गुनाहों को याद कर के बहुत नादिम हुवा और अ़ज़्मे मुसम्मम कर लिया कि अब अपना दामन गुनाहों की कांटेदार शाख़ों से ह़त्तल मक़्दूर बचाऊंगा और नेकी के रास्ते पर चलूंगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने तौबा कर ली और पंज वक़्ता नमाज़ की पाबन्दी के साथ साथ नमाज़े तहज्जुद की आ़दत भी बना ली, चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ सजा ली और दा'वते इस्लामी के मद्रसए फ़ैज़ाने क़ुरआन में इ़ल्मे दीन ह़ासिल करना शुरूअ़ कर दिया। मेरी तौबा की बरकतें ज़ाहिर होना शुरूअ़ हो गईं, केस की मुश्किलात ख़ुद ब ख़ुद ख़त्म होती चली गईं और अब اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं आज़ाद होने वाला हूं। मेरी निय्यत है कि जेल से रिहाई के बा'द اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सुन्नतें सीखने के लिये राहे ख़ुदा में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के साथ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनूंगा।"

खड़े हैं मुन्कर नकीर सर पर न कोई हामी न कोई यावर
बता दो आ कर मेरे पयम्बर कि सख़्त मुश्किल जवाब में है
ख़ुदाए क़हहार है ग़ज़ब पर खुले हैं बदकारियों के दफ़्तर
बचा लो आ कर शफ़ीए महशर तुम्हारा बन्दा अ़ज़ाब में है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ारूक़े आ'ज़म की दुन्या से बे रग़बती

आख़िरत के मुआ़मले में जल्दी होनी चाहिये

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 82 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी**" स. 73 पर है : अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आख़िरत के मुआ़मले में सुस्ती को बिल्कुल पसन्द न करते थे । और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे : "हर काम में आहिस्तगी होनी चाहिये सिवाए आख़िरत के मुआ़मले में ।"

रसूलुल्लाह और सिद्दीक़े अक्बर की त़रह ज़िन्दगी

एक बार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की साहिबज़ादी उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने आप से अ़र्ज़ की : "अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने इन कपड़ों के बजाए नर्म व मुलाइम कपड़े पहनें और अपने इस खाने से ज़ियादा उ़म्दा खाना खाएं तो क्या ह़रज है ? क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का रिज़्क़ वसीअ़ कर दिया है और आप को बहुत ज़ियादा ख़ैर अ़त़ा फ़रमाई है ।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं तुझे सर ज़निश करूंगा, क्या तुम्हें याद नहीं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ज़िन्दगी के ठाठ बाठ पसन्द नहीं फ़रमाते थे ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी साहिबज़ादी को बार बार येही फ़रमाते रहे ह़त्ता कि उन्हें रुला दिया फिर इरशाद फ़रमाया : "मैं तुम्हें पहले भी बता चुका हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मुझे तौफ़ीक़ मिली तो मैं इन दोनों या'नी हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के ख़लीफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रह कठिन ज़िन्दगी इख़्तियार करूंगा हो सकता है मैं इन की पसन्दीदा ज़िन्दगी पा लूं ।"(1)

---

(1) ......الزھد وقصر الامل، ص ۵۷۔

फ़ारूके़ आ'ज़म की दुन्या से बे रग़बती और ला तअ़ल्लुक़ी

हज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, फ़रमाते हैं :

مَا كَانَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ بِاَوَّلِنَا اِسْلَاماً وَلَا اَقْدَمِنَا هِجْرَةً وَلٰكِنَّهُ كَانَ اَزْهَدَنَا فِى الدُّنْيَا وَاَرْغَبَنَا فِى الْآخِرَةِ

या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ न तो हम से पहले ईमान लाए और न ही हम से पहले हिजरत की, मगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हम से बढ़ कर दुन्या से बे रग़बत और आख़िरत के शाइक़ थे।(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म सब से ज़ियादा दुन्या से बे रग़बत

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : وَاللّٰهِ مَا كَانَ عُمَرُ بِاَقْدَمِنَا هِجْرَةً وَقَدْ عَرَفْتُ بِاَيِّ شَيْءٍ فَضَّلَنَا كَانَ اَزْهَدَنَا فِى الدُّنْيَا "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हिजरत करने में हम से मुक़द्दम नहीं लेकिन मैं ने इस बात को जान लिया है कि वोह क्यूं हम पर फ़ज़ीलत व सबक़त ले गए हैं ? और वोह येह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हम में सब से ज़ियादा दुन्या से बे रग़बत हैं।"(2)

फ़ारूके़ आ'ज़म ह़क़ीक़ी इ़बादत गुज़ार

ह़ज़रते सय्यिदतुना शिफ़ा बिन्ते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا चन्द नौजवानों के पास से गुज़रीं तो देखा कि वोह आपस में खुसर फुसर कर रहे हैं, आप ने फ़रमाया : "येह क्या है ?" उन्हों ने कहा : "इ़बादत गुज़ार लोग।" (या'नी येह इ़बादत गुज़ार लोग हैं इस लिये आहिस्ता आहिस्ता बात कर रहे हैं।) फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब भी बात किया करते तो इतनी बुलन्द आवाज़ से कि बा आसानी सुनी जाती, जब चलते तो तेज़ तेज़ चलते, जब ज़र्ब लगाते तो इस त़रह़ कि दर्द होता ह़ालांकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़क़ीक़ी इ़बादत गुज़ार थे।"(3)

दुन्या की लज़्ज़तों की हमें कोई परवाह नहीं

ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे :

---

1 ......اسد الغابة، عمر بن خطاب، ج۴، ص۱۶۷۔
2 ......اسد الغابة، عمر بن الخطاب، ج۴، ص۱۶۷۔
3 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۲۰۔

وَاللّٰہِ مَانَعْبَأُ بِلَذَّاتِ الْعَيْشِ وَلٰكِنَّا نَسْتَبْقِيْ طَيِّبَاتِنَا لِاٰخِرَتِنَا ''या'नी खुदा की क़सम ! हमें दुन्या की लज़्ज़तों की कोई परवाह नहीं, हम अपनी पाकीज़ा ने'मतें आख़िरत के लिये बचा रहे हैं।'' येही वज्ह है कि आप जव की रोटी ज़ैतून के साथ तनावुल फ़रमाते, पैवन्द लगे कपड़े पहनते और खुद अपना काम खुद करते।[1]

दुन्या से बिल्कुल बे रग़बत ख़लीफ़ा

हज़रते सय्यिदुना अह़नफ़ बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हमें अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक जंग लड़ने इराक़ भेजा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें इराक़ और फ़ारिस पर फ़त्ह़ अ़ता फ़रमाई। माले ग़नीमत में फ़ारिस का सफ़ेद कपड़ा कसरत से हमें ह़ासिल हुवा, कुछ हम ने इस्ति'माल कर लिया या'नी पहन लिया और बाक़ी साथ रख लिया। जब हम मदीनए त़य्यिबा पहुंचे और अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िरी दी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हम से मुंह फेर लिया और कलाम तक न किया और ऐसी बे रुख़ी ज़ाहिर की गोया उन्हों ने हमें देखा तक नहीं। हम बड़े परेशान हुवे, बहर ह़ाल हम ने इस बात का तज़्किरा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से किया। उन्हों ने फ़रमाया : ''मेरे वालिदे माजिद अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दुन्या से बिल्कुल बे रग़बत हैं, उन्हों ने आप लोगों को उस क़ीमती लिबास में देखा है जो न तो हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहना और न ही आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पहना आप लोगों के साथ इस रूखे रवय्ये की सिर्फ़ येही वज्ह है।''

हज़रते सय्यिदुना अह़नफ़ बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि जैसे ही हम ने येह सुना तो अपने घरों में आए, वोह कपड़े उतारे और पुराने कपड़े पहन कर वापस आप की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बड़े ही पुर तपाक त़रीक़े से मुलाक़ात फ़रमाई, हर एक से अ़लाह़िदा अ़लाह़िदा सलाम किया और एक एक को गले लगाया, गोया इस से क़ब्ल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हम से मुलाक़ात ही नहीं हुई थी। माले ग़नीमत में ह़ल्वे की क़िस्म से ज़र्द और सुर्ख़ रंग की कोई मीठी चीज़ आप के सामने आई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे चखा। वोह बहुत ही खुश ज़ाइक़ा और खुश्बूदार थी।

1 ......رياض النضرة، ج ١، ص ٣٦٨، تاريخ ابن عساكر، ج ٤٤، ص ٣٠٠۔

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हमारी त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे और इरशाद फ़रमाया : "ऐ मुहाजिरीन व अन्सार ! येह शै इतनी लज़ीज़ है कि इसे पाने के लिये बाप बेटे को और भाई भाई को क़त्ल कर सकता है।" इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दौर में शहीद होने वाले मुहाजिरीन अन्सार की औलाद में इसे तक़्सीम कर दिया। बा'दे अज़ां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ घर तशरीफ़ ले गए अपने लिये उस लज़ीज़ शै में से कुछ न रखा।[1]

सोने, जवाहिरात के ख़ज़ानों की तक़्सीम

जब इराक़ फ़त्ह़ हुवा और शाहे किसरा के ख़ज़ाने मदीनए त़य्यिबा लाए गए तो बैतुल माल के ख़ज़ानची ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में अ़र्ज़ किया : "क्या येह ख़ज़ाने बैतुल माल में न दाख़िल कर दें ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "हरगिज़ नहीं ! इस छत के नीचे जो कुछ है सब तक़्सीम कर दिया जाए।" चुनान्चे, मस्जिद में चटाइयां बिछाईं गईं और उन पर सारा माल रख कर ढांप दिया गया। जब लोगों के सामने पर्दा उठाया गया तो सोने और जवाहिरात की चमक से एक अ़जीब सा समां पैदा हो गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जो लोग येह ख़ज़ाना यहां तक लाए हैं बड़े ही अमानत दार हैं।" (या'नी ऐसी चमक दमक वाले माल को देख कर भी उन्हों ने किसी क़िस्म की ख़ियानत न की) लोगों ने अ़र्ज़ किया : "ह़ुज़ूर ! आप अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अमीन हैं और लोग आप के अमीन। जब तक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुदा के अमीन रहेंगे तब तक लोग आप के अमीन रहेंगे और जब आप में कोई तब्दीली वाक़ेअ़ होगी तो लोग भी ख़ाइन हो जाएंगे।" बहर ह़ाल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सारा माल तक़्सीम कर दिया और अपनी ज़ात के लिये कुछ न रखा।[2]

क्या मैं दुन्यावी ने'मतें खाऊं.....?

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दुन्यावी ऐ़शो इ़शरत से बे रग़बती का येह आ़लम था कि एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना उ़तबा बिन फ़रक़द رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से आप के खाने के मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्त्गू की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दुन्या की बे रग़बती से भरपूर जवाब देते हुवे इरशाद फ़रमाया :

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۲۹۳ ملتقطا، کنز العمال، فضائل الفاروق، زھدہ، الجزء: ۱۲، ج ۶، ص ۲۸۴، حدیث: ۳۵۹۵۴ ملتقطا۔

2 ......ریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۳۶۹۔

وَیْحَکَ آکُلُ طَیِّبَاتِیْ فِیْ حَیَاتِی الدُّنْیَا وَاَسْتَمْتِعُ بِھَا

''या'नी ऐ उ़तबा ! क्या मैं अपनी दुन्यावी ज़िन्दगी ही में सारी ने'मतें खा लूं और इन से फ़ाइदा उठा लूं।''(1)

दुन्यादारों के पास कसरत से जाने की मुमानअ़त

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़बैद رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : لَاتُکْثِرُوْا الدُّخُوْلَ عَلٰی اَھْلِ الدُّنْیَا فَاِنَّھَا مَسْخَطَۃٌ لِلرِّزْقِ ''या'नी दुन्यादारों के पास कसरत से न जाया करो क्यूंकि येह रिज़्क़ की नाराज़ी (या'नी तंगदस्ती) का सबब है।''(2)

फ़ारूके़ आ'ज़म और फ़िक्रे आख़िरत

अपनी क़मीस उतार कर अ़ता फ़रमा दी

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 410 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''उ़यूनुल ह़िकायात'' ह़िस्सा अव्वल, स. 340 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वह्हाब बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी बकरह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, आप फ़रमाते हैं कि एक आ'राबी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : ''ऐ उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ! नेकी करें जन्नत पाएं।'' फिर उस ने चन्द अ़रबी अश्आ़र पढ़े जिन का तर्जमा येह है :

''मेरी बच्चियों और इन की मां को कपड़े पहनाइये तो हम सारी ज़िन्दगी आप के लिये जन्नत की दुआ़ करेंगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप (येह नेकी) ज़रूर करेंगे।''

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : ''अगर मैं ऐसा न कर सकूं तो ?'' आ'राबी बोला : ''ऐ अबू ह़फ़्स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ! अगर ऐसा न हुवा तो मैं चला जाऊंगा।''

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : ''अगर तू चला गया तो फिर क्या होगा ?''

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۲۹۶، تاریخ الاسلام، ج ۳، ص ۲۶۸۔

2 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب السابع والخمسون، ص ۱۷۲۔

वोह कहने लगा : "तो फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप से मेरे ह़ाल के बारे में ज़रूर सुवाल किया जाएगा। और उस दिन अ़तिय्यात, एह़सान और नेकियां होंगी तो (मह़शर के दिन) खड़े शख़्स से इन के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जाएगा। फिर उसे (ह़िसाबो किताब के बा'द) या तो जहन्नम की त़रफ़ भेज दिया जाएगा या जन्नत की ख़ुश ख़बरी सुनाई जाएगी।"

(अश्आ़र की सूरत में उस आ'राबी की येह बातें सुन कर) अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की आंखों से सैले अश्क रवां हो गया, यहां तक कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की दाढ़ी मुबारक तर हो गई। फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने ग़ुलाम को हुक्म फ़रमाया : "ऐ ग़ुलाम ! इस शख़्स को मेरी येह क़मीस अ़त़ा कर दो।" और येह इस वज्ह से नहीं कि इस ने अच्छा शे'र कहा है, बल्कि उस दिन (या'नी रोज़े क़ियामत) के लिये। इस के बा'द इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! (इस वक़्त) इस क़मीस के इ़लावा मैं किसी और चीज़ का मालिक नहीं।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

फ़ारूक़े आ'ज़म की दुन्या से बे रग़बती की तरग़ीब

एक मछली भी नहीं खाऊंगा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ न सिर्फ़ ख़ुद मुत्तक़ी व परहेज़गार और दुन्या से बे रग़बती फ़रमाने वाले थे बल्कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ दीगर लोगों को भी तक़्वा व परहेज़गारी और दुन्या से बे रग़बती की तरग़ीब दिया करते थे।

चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अस्लम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक दिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ेआ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : لَقَدْ خَطَرَ عَلٰی قَلْبِیْ شَهْوَةُ السَّمَکِ الطَّرِيِّ "या'नी मेरे दिल में ताज़ा मछली खाने की त़लब हो रही है।" येह सुनना था कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का ग़ुलाम यरफ़ा आठ मील का सफ़र तै़ कर के आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये ताज़ा मछलियों का एक टोकरा ख़रीद कर ले आया। बा'दे अज़ां अपनी सुवारी और उस के कजावे वग़ैरा को धोया। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : اِنْطَلِقْ حَتّٰی اَنْظُرَ اِلَی الرَّاحِلَةِ "या'नी चलो मैं भी तुम्हारी सुवारी को देख लूं।" जब आप ने घोड़े को मुलाह़ज़ा किया तो इरशाद फ़रमाया : نَسِيْتَ اَنْ تَغْسِلَ هٰذَا الْعِرَقَ الَّذِیْ تَحْتَ اُذُنِهَا عَذَّبْتَ بَهِيْمَةً فِیْ شَهْوَةِ عُمَرَ لَا وَاللّٰهِ لَا يَذُوْقُ عُمَرُ مُكْتَلَكَ "या'नी शायद तुम इस पसीने को धोना भूल गए हो जो इस घोड़े के कानों के नीचे है, अफ़्सोस ! तुम ने उ़मर की

ख़्वाहिश को पूरा करने के लिये इस जानवर को तक्लीफ़ में डाला, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब उ़मर तुम्हारी मछलियों में से एक मछली भी नहीं खाएगा।"(1)

दुन्या से बे रग़बती की अ़लामत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या से बे रग़बती की एक अ़लामत येह भी है जिस चीज़ की ख़्वाहिश हो उस को तर्क कर दिया जाए, बल्कि अपने नफ़्स पर कन्ट्रोल किये बिग़ैर हर वक़्त खाते पीते रहना फ़ुज़ूल ख़र्च होने की अ़लामत है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने अपने बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को देखा कि वोह गोश्त खा रहे हैं तो फ़रमाया : **مَاهٰذَا** "या'नी येह क्या है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : **قَرِمْنَا اِلَيْهِ** "या'नी हुज़ूर ! हमें इस गोश्त को खाने की शदीद ख़्वाहिश थी।" आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने दुन्या की बे रग़बती से भरपूर जवाब देते हुवे इरशाद फ़रमाया : **كُلَّمَا قَرِمْتَ اِلٰى شَیْءٍ اَكَلْتَهُ كَفٰى بِالْمَرْءِ سَرَفًا اَنْ يَّاْكُلَ كُلَّ مَا اشْتَهٰى** "या'नी जब भी तुम्हें किसी शै की शदीद ख़्वाहिश होगी तो तुम उसे खाना शुरूअ़ कर दोगे, याद रखो ! किसी शख़्स के फ़ुज़ूल ख़र्च होने के लिये इतना ही काफ़ी है कि वोह हर उस चीज़ को खाए जिस की उसे ख़्वाहिश हो।"(2)

फ़ारूके़ आ'ज़म और जज़्बए ईसार

ईसार का अ़ज़ीम जज़्बा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को कुछ अ़ता फ़रमाया तो उन्हों ने यूं अ़र्ज़ की : **اَعْطِهٖ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَفْقَرَ اِلَيْهِ مِنِّیْ** "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप येह चीज़ किसी ऐसे शख़्स को अ़ता फ़रमा दें जो मुझ से ज़ियादा इस चीज़ की ह़ाजत रखता हो।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

خُذْهُ فَتَمَوَّلْهُ اَوْ تَصَدَّقْ بِهٖ وَمَا جَاءَكَ مِنْ هٰذَا الْمَالِ وَاَنْتَ غَيْرُ مُشْرِفٍ وَّلَا سَائِلٍ فَخُذْهُ وَمَا لَا فَلَا تُتْبِعْهُ نَفْسَكَ

"या'नी ऐ उ़मर ! इसे ले लो, आगे तुम्हारी मरज़ी, अपने पास रखो या इसे सदक़ा कर दो। ऐ उ़मर !

---

1 ......كنز العمال، فضائل الفاروق، شمائله، الجزء: ١٢، ج٦، ص٢٨٧، حديث: ٣٥٩٦٢، تاريخ الاسلام، ج٣، ص٢٦٨۔

2 ......الزهد لابن المبارك، باب ماجاء فى ذم التنعم، ص٢٦٦، الرقم: ٧٦٩، تاريخ ابن عساكر، ج٤٤، ص٣٠٠۔

अगर तुम्हारे पास ऐसा माल आए जो तुम ने त़लब न किया हो और न ही उस की चाहत हो तो इसे रख लिया करो और जो न मिले उस की त़लब मत करो।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : فَمِنْ اَجْلِ ذٰلِکَ کَانَ ابْنُ عُمَرَ لَا یَسْاَلُ اَحَدًا شَیْئًا وَلَا یَرُدُّ شَیْئًا اُعْطِیَہُ ''या'नी येही वज्ह थी कि मेरे वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किसी से कुछ नहीं मांगते थे और बिग़ैर मांगे अगर कोई दे देता तो उसे रद नहीं करते थे।[1]

फ़ारूके़ आ'ज़म और फ़िक्रे आख़िरत

रोज़े आख़िरत ह़िसाबो किताब का ख़ौफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बुर्दा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक बार मुझ से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि आप को मा'लूम है कि मेरे वालिदे गिरामी ने तुम्हारे वालिद से क्या कहा था?'' मैं ने कहा : ''नहीं।'' तो उन्हों ने कहा कि मेरे वालिद ने तुम्हारे वालिद से कहा था : ''क्या आप को येह बात पसन्द नहीं कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मौजूदगी में हमारा इस्लाम लाना, आप के साथ हिजरत करना, जिहाद करना और तमाम वोह आ'माल जो हम ने आप के साथ किये वोह वैसे ही बर क़रार रहें अलबत्ता जो काम हम ने आप के बा'द किये (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ के सबब हम येह चाहें कि) उन में हमें बराबर बराबर नजात मिल जाए?'' (या'नी न सवाब न अ़ज़ाब) तो आप के वालिद ने जवाब दिया : ''नहीं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम ने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के बा'द भी जिहाद किया, नमाज़ें पढ़ीं, रोज़े रखे, दीगर कसीर आ'माल किये और हमारे हाथ पर बहुत से लोग ईमान भी लाए हैं (हमें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से उम्मीद है कि) इन सब का हमें ज़रूर सवाब मिलेगा।'' मगर मेरे वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फिर कहा : ''उस रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है मेरी तो येही ख़्वाहिश है कि जो आ'माल हम ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ किये वोह तो बर क़रार रहें

---

1 ......مسلم، کتاب الزکاۃ، اباحۃ الاخذلمن اعطی۔۔۔الخ، ص ۵۲۰، حدیث: ۱۱۱۔

और जो बा'द में किये उन में हमें बराबर बराबर नजात मिल जाए।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बुर्दा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा कि : اِنَّ اَبَاکَ وَاللہِ خَیْرٌ مِنْ اَبِیْ ''या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! यक़ीनन तुम्हारे वालिद मेरे वालिद से अफ़्ज़ल हैं।''(1)

वक़्ते वफ़ात भी अदाएगिये क़र्ज़ की फ़िक्र

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर अस्सी हज़ार क़र्ज़ थे वक़्ते वफ़ात आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुला कर फ़रमाया : بِعْ فِیْہَا اَمْوَالَ عُمَرَ فَاِنْ وَفَتْ وَاِلَّا فَسَلْ بَنِیْ عَدِیٍّ فَاِنْ وَفَتْ وَاِلَّا فَسَلْ قُرَیْشًا وَلَا تَعْدُھُمْ ''या'नी मेरे दैन (क़र्ज़) को अदा करने के लिये अव्वलन तो मेरा माल बेचना अगर काफ़ी हो जाए फ़बिहा, वरना मेरी क़ौम बनी अ़दी से मांग कर पूरा करना अगर यूं भी पूरा न हो तो क़ुरैश से मांगना और इन के सिवा औरों से सुवाल न करना।'' फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : اِضْمَنْھَا ''या'नी ऐ मेरे बेटे ! तुम मेरे क़र्ज़ को अदा करने की ज़मानत ले लो।'' वोह ज़ामिन हो गए और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की तदफ़ीन से पहले अकाबिर मुहाजिरीन व अन्सार को गवाह कर लिया कि मेरे वालिदे मोह़तरम के अस्सी हज़ार की अदाएगी अब मुझ पर है। फिर एक हफ़्ता न गुज़रा था कि सारा क़र्ज़ अदा कर दिया।(2)

फ़ारूके़ आ'ज़म और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खु़फ़्या तदबीर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे रिसालत से जन्नत की बिशारत पाने के बा वुजूद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खु़फ़्या तदबीर से हमेशा डरते रहते थे और मुख़्तलिफ़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से अपने मुतअ़ल्लिक़ राए लेते थे। चुनान्चे,

क्या मुनाफ़िक़ीन में मेरा नाम भी है ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 857 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल'' जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा 78 पर है : हुस्ने अख़्लाक़ के

---

1 ......بخاری، کتاب مناقب الانصار، باب ھجرۃ النبی۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۵۹۸، حدیث: ۳۹۱۵۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۷۳ ملتقطا۔

पैकर, नबियों के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन्हें (या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को) जन्नत की बिशारत अ़ता फ़रमाई मगर इस के बा वुजूद आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़ितनों और मुनाफ़िक़ीन से मुतअ़ल्लिक़ अह़वाल में हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के राज़दार सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना हु़ज़ैफ़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ हु़ज़ैफ़ा ! क्या मुनाफ़िक़ीन में मेरा नाम भी है ?" तो ह़ज़रते सय्यिदुना हु़ज़ैफ़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मोमिनीन !" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप उन में से नहीं।" सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को येह अन्देशा हुवा कि कहीं मेरे नफ़्स ने मेरे अह़वाल को मुश्तबा तो नहीं कर दिया और मेरे उ़यूब को मुझ से छुपा तो नहीं लिया और येह ख़ौफ़ इतना ज़ियादा हुवा कि इन्हों ने रसूले काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से मिलने वाली जन्नत की बिशारत को चन्द ऐसी शराइत़ से मशरूत़ जाना जो आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه में न पाई जाती थीं, लिहाज़ा आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने इस बिशारत से अपने आप को मुत़्मइन न किया।

फ़ारूके़ आ'ज़म बच्चों से दुआ़ करवाते

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه बसा औक़ात छोटे छोटे बच्चों का हाथ पकड़ कर ले आते और उन से इरशाद फ़रमाते : اُدْعُ لِیْ فَاِنَّکَ لَمْ تُذْنِبْ بَعْدُ "या'नी मेरे लिये दुआ़ करो क्यूंकि तुम ने अभी तक गुनाह नहीं किया।"(1)

दुआ़ करो.....उ़मर बख़्शा जाए

आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के बारे में येह भी मन्क़ूल है कि आप मदीनए मुनव्वरा के कमसिन या'नी ना बालिग़ बच्चों से अपने लिये यूं दुआ़ करवाते कि "दुआ़ करो ! उ़मर बख़्शा जाए।"(2)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से डरते

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से हमेशा डरते थे यहां तक कि आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने अपने फ़रज़न्द ह़ज़रते सय्यिदुना

1 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الستون، ص ۱۸۱۔

2 .....फ़ज़ाइले दुआ़, स. 112

अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह वसिय्यत कर दी थी : "मुझे लह़द में रखने के बा'द मेरा चेहरा ज़मीन से इस त़रह़ मिला देना कि दरमियान में कोई चीज़ ह़ाइल न हो।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म ह़क़ व सदाक़त के शहनशाह

फ़ारूक़े आ'ज़म की ज़बान और दिल पर ह़क़ नाज़िल फ़रमा दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّ اللّٰہَ جَعَلَ الْحَقَّ عَلٰی لِسَانِ عُمَرَ وَقَلْبِہٖ "या'नी बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उ़मर फ़ारूक़ की ज़बान और दिल पर ह़क़ जारी फ़रमा दिया है।"(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म ह़क़ ही कहते हैं अगर्चे कड़वा हो

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) से रिवायत है फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : رَحِمَ اللّٰہُ عُمَرَ یَقُوْلُ الْحَقَّ وَاِنْ کَانَ مُرًّا تَرَکَہُ الْحَقُّ وَمَالَہٗ صَدِیْقٌ "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उ़मर पर रह़्म फ़रमाए कि वोह ह़क़ ही कहते हैं अगर्चे कड़वा हो और ह़क़ बात कहने से उन की ह़ालत येह हो गई है कि उन का कोई दोस्त नहीं।"(3)

ह़क़ फ़ारूक़े आ'ज़म की ज़बान पर रख दिया गया

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّ اللّٰہَ تَعَالٰی وَضَعَ الْحَقَّ عَلٰی لِسَانِ عُمَرَ یَقُوْلُ بِہٖ "या'नी बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़क़ उ़मर की ज़बान पर रख दिया है वोह ह़क़ ही बोलते हैं।"(4)

फ़ारूक़े आ'ज़म जहां भी हों ह़क़ उन के साथ होगा

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : عُمَرُ مَعِیَ وَاَنَا مَعَ عُمَرَ وَالْحَقُّ بَعْدَہٗ مَعَ عُمَرَ حَیْثُ کَانَ

---

1. ......موسوعۃ آثار الصحابۃ، مسند آثار الفاروق ـــ الخ، ج ۱، ص ۱۴۱، الرقم: ۲۱۳۔
2. ......ترمذی، کتاب المناقب، مناقب ابی حفص عمر بن الخطاب، ج ۵، ص ۳۸۳، حدیث: ۳۷۰۲۔
3. ......ترمذی، کتاب المناقب، مناقب علی بن ابی طالب، ج ۵، ص ۳۹۸، حدیث: ۳۷۳۴ ملتقطا۔
4. ......ابوداود، کتاب الخراج والفی والامارۃ، باب فی تدوین العطاء، ج ۳، ص ۱۹۳، حدیث: ۲۹۶۲۔

"या'नी उ़मर मेरे साथ है और मैं उ़मर के साथ हूं, मेरे बा'द उ़मर जहां भी हो ह़क़ उस के साथ होगा ।"[1]

ह़क़ मेरे बा'द फ़ारूक़ के साथ होगा

एक रिवायत में है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اُدْنُ مِنِّیْ وَاَنْتَ مِنِّیْ وَاَنَا مِنْکَ وَالْحَقُّ بَعْدِیْ مَعَکَ "या'नी ऐ उ़मर ! मेरे क़रीब आ जाओ, तुम मुझ से हो और मैं तुम से हूं, ह़क़ मेरे बा'द तुम्हारे साथ होगा ।"[2]

फ़ारूके़ आ'ज़म की ज़बान पर फ़िरिश्ता बोलता है

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते मौला अ़ली मुश्किल कुशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि کُنَّا نَتَحَدَّثُ اَنَّ مَلَکًا یَنطِقُ عَلٰی لِسَانِ عُمَرَ "या'नी हम कहा करते थे कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़बान पर फ़िरिश्ता बोलता है ।"[3]

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) फ़रमाते हैं : "हम अस्ह़ाबे नबी का येही गुमान था कि उ़मर की ज़बान पर फ़िरिश्ता बोलता है ।"[4]

ह़क़ व सदाक़त फ़ारूके़ आ'ज़म के साथ है

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلصِّدْقُ وَالْحَقُّ بَعْدِیْ مَعَ عُمَرَ حَیْثُ کَانَ "या'नी ह़क़ व सदाक़त मेरे बा'द उ़मर के साथ है वोह जहां भी रहें ।"[5]

ह़क़ व सदाक़त के अमीन का जन्नती मह़ल

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने

---

1 ......فضائل خلفاء الراشدین لابی نعیم، ص ۱۸، حدیث: ۱۱، معجم اوسط، من اسمہ ابراھیم، ج ۲، ص ۹۲، حدیث: ۲۶۲۹۔

2 ......تاریخ واسط، ذکر ولاۃ عمر بن الخطاب، ص ۱۳۲، ریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۲۹۸۔

3 ......حلیۃ الاولیاء، عمر بن الخطاب، ج ۱، ص ۷۷، الرقم: ۹۶۔

4 ......مسند امام احمد، مسند علی بن ابی طالب، ج ۱، ص ۲۲۶، حدیث: ۸۳۴۔

5 ......معجم کبیر، عطاء بن ابی۔۔۔الخ، ج ۱۸، ص ۲۸۱، حدیث: ۷۱۸ ملتقطا۔

बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे भी बताइये कि मे'राज की रात आप ने जन्नत में क्या क्या देखा ?'' सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''ऐ उ़मर बिन ख़त्ताब ! अगर मैं तुम्हारे दरमियान इतना अ़र्सा रहूं जितना अ़र्सा ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام अपनी क़ौम में (एक हज़ार साल तक) रहे और फिर मैं तुम्हें वोह जन्नती वाक़िआ़त व मुशाहदात बताऊं तो भी वोह ख़त्म न हों। लेकिन ऐ उ़मर ! जब तुम ने मुझे येह बोल ही दिया है कि मुझे जन्नत की बातें बताइये तो फिर मैं तुम्हें वोह बात बताता हूं जो तुम्हारे इलावा मैं ने किसी को न बताई। (और वोह येह है कि) मैं ने जन्नत में एक ऐसा आ़लीशान मह़ल देखा जिस की चोखट जन्नती ज़मीन के नीचे थी और उस का बालाई ह़िस्सा जौफ़े अ़र्श में था। मैं ने जिब्रील से पूछा : ऐ जिब्रील ! क्या तुम इस आ़लीशान मह़ल के बारे में जानते हो जिस की चोखट जन्नती ज़मीन के नीचे और बालाई ह़िस्सा अ़र्श के दरमियान में है ? तो जिब्रील ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं नहीं जानता। मैं ने फिर पूछा : ऐ जिब्रील ! इस मह़ल की रोशनी तो ऐसी है जैसे दुन्या में सूरज की रोशनी, चलो येही बता दो कि इस तक कौन पहुंचेगा और इस में कौन रिहाइश इख़्तियार करेगा ? तो जिब्रीले अमीन ने अ़र्ज़ किया : يَسْكُنُهَا وَ يَصِيْرُ اِلَيْهَا مَنْ يَّقُوْلُ الْحَقَّ وَيَهْدِىْ اِلَى الْحَقِّ وَاِذَا قِيْلَ لَهُ الْحَقُّ لَمْ يَغْضِبْ وَمَاتَ عَلَى الْحَقِّ ''या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इस मह़ल में वोह रहेगा, जो सिर्फ़ ह़क़ बात कहता है और ह़क़ बात की हिदायत देता है और जब उसे कोई ह़क़ बात कहता है तो वोह ग़ुस्सा नहीं करता और उस का ह़क़ पर ही इन्तिक़ाल होगा।'' मैं ने पूछा : ऐ जिब्रील ! क्या तुम्हें उस का नाम मा'लूम है ? अ़र्ज़ किया : जी हां या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह एक ही शख़्स तो है। मैं ने पूछा : ऐ जिब्रील ! वोह एक कौन है ? अ़र्ज़ किया : **उ़मर बिन ख़त्ताब।**

येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه पर रिक़्क़त त़ारी हो गई और आप ग़श खा कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ह़सन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه बयान करते हैं : ''इस वाक़िए़ के बा'द हम ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के चेहरे पर कभी हंसी न देखी ह़त्ता कि आप दुन्या से तशरीफ़ ले गए।''(1)

1 ......كنز العمال، كتاب الفضائل، فضل الفاروق، الجزء: ١٢، ج٦، ص ٢٦٤، حديث: ٣٥٨٣٣۔

फ़ारूक़े आ'ज़म के ह़क़ में दुरुस्ती की दुआ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब भी कलाम फ़रमाते तो आप का कलाम ह़क़ व सदाक़त पर ही मब्नी होता और आप जो भी कलाम फ़रमाते उस में **मुसीब** या'नी दुरुस्त ही होते कि खुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इसाबत (दुरुस्ती) की दुआ़ दी। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अज़रक़ बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार हमें किसी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़ पढ़ाई जिन की कुन्यत अबू रिमसा थी। नमाज़ पढ़ाने के बा'द वोह हमारी त़रफ़ मुंह फेर कर बैठ गए और फ़रमाने लगे कि एक बार मैं ने इसी त़रह़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे नमाज़ अदा की। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) भी सफ़े अव्वल में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दाईं जानिब तशरीफ़ फ़रमा थे। हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ मुकम्मल फ़रमाते हुवे दाएं बाएं इस त़रह़ सलाम फेरा कि हम ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रुख़े रौशन की ज़ियारत की। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की त़रफ़ इसी त़रह़ चेहरए अक़्दस फेर कर बैठ गए जिस त़रह़ मैं आप लोगों के सामने बैठा हूं। एक शख़्स दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़ने के लिये खड़ा हो गया। जैसे ही वोह खड़ा हुवा तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जल्दी से उठे और उस के क़रीब जा कर उस के कन्धे को पकड़ कर झन्झोड़ा और फ़रमाया : "बैठ जाओ, क्यूंकि अहले किताब इसी बात से तो हलाक हुवे हैं कि उन्हों ने फ़राइज़ और नवाफ़िल के माबैन फ़ासिला न रखा।" हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ देखा और इरशाद फ़रमाया : **اَصَابَ اللّٰہُ بِکَ یَا ابْنَ الْخَطَّابِ** "या'नी ऐ उ़मर बिन ख़त्ताब ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे हमेशा मुसीब (या'नी दुरुस्त बात करने वाला) रखे।"[1]

1 ......ابوداود، کتاب الصلوۃ، باب فی الرجل یتطوع فی مکانہ الذی صلی فیہ المکتوبۃ، ج ۱، ص ۳۷۶، حدیث: ۱۰۰۷۔

फ़ारूक़े आ'ज़म "सिद्दीक़" हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! "सिद्दीक़ वोह होता है जैसा वोह कह दे बात वैसी ही हो जाए।" चुनान्चे, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इरशाद फ़रमाते हैं : "सिद्दीक़ वोह कि जैसा वोह कह दे बात वैसी ही हो जाए। इसी लिये तो (ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ जो दो क़ैदी थे उन में से) शाही साक़ी (या'नी बादशाह को शराब पिलाने वाले) ने आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को सिद्दीक़ कहा क्यूंकि उस ने देखा कि जो आप ने कहा था वोही हुवा, अ़र्ज़ किया : يُوْسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ[1]

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह ख़ुसूसी फ़ज़्लो करम था कि जो बात आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के मुंह से निकलती अक्सर वोह पूरी हो जाती। चुनान्चे,

फ़ारूक़े आ'ज़म ने जो कह दिया वोह हो गया

एक बार रबीआ़ बिन उमय्या बिन ख़लफ़ ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से अपना ख़्वाब बयान किया कि "मैं एक हरे भरे मैदान में हूं, फिर उस से निकल कर एक ऐसे चटयल मैदान में आ गया जिस में दूर दूर तक घास या दरख़्त का नामो निशान भी नहीं था। जब मैं नींद से बेदार हुवा तो वाक़ेई मैं एक बन्जर मैदान में था।" आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने उस के ख़्वाब की ता'बीर बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "तू ईमान लाएगा, फिर इस के बा'द काफ़िर हो जाएगा और कुफ़्र ही की ह़ालत में मरेगा।" अपने ख़्वाब की येह ता'बीर सुन कर वोह कहने लगा : "ह़ज़रत ! मैं ने कोई ख़्वाब नहीं देखा है, मैं ने तो यूं ही झूट मूट आप से कह दिया है।" आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "तू ने ख़्वाब देखा हो या न देखा हो मगर मैं ने जो ता'बीर बयान कर दी है वोह अब पूरी हो कर रहेगी।" चुनान्चे, ऐसा ही हुवा कि मुसलमान होने के बा'द उस ने शराब पी, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने उस को कोड़ों की सज़ा दी और शहर बदर कर के ख़ैबर भेज दिया। वोह वहां से भाग कर रूम की सर ज़मीन में चला गया और वहां जा कर नसरानी हो गया, फिर मुर्तद हो कर कुफ़्र ही की ह़ालत में मर गया।[2]

---

1 .....मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 162।

2 .....ازالۃ الخفاء،ج۴،ص۱۰۱۔

आस्मानी किताबों में फ़ारूके़ आ'ज़म का ज़िक्र

(1) अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुअज़्ज़िन ह़ज़रते सय्यिदुना अक़रअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक पादरी से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : هَلْ تَجِدُوْنَا فِیْ شَیْءٍ مِّنْ کُتُبِکُمْ "या'नी क्या तुम अपनी किताबों में हमारे बारे में भी कुछ लिखा हुवा पाते हो ?" उस ने अ़र्ज़ की : "हम अपनी किताबों में आप की सिफ़ात और आ'माल वग़ैरा का ज़िक्र पाते लेकिन अस्मा का नहीं।" फ़रमाया : کَیْفَ تَجِدُوْنِیْ "या'नी मेरे बारे में तुम क्या लिखा हुवा पाते हो ?" उस ने अ़र्ज़ की : قَرْنٌ مِّنْ حَدِیْدٍ "या'नी जी हां ! हमारी किताबों में लिखा हुवा है कि आप लोहे का सींग हैं।" आप ने फ़रमाया : "लोहे का सींग ! येह क्या है ?" उस ने अ़र्ज़ की : اَمِیْرٌ شَدِیْدٌ "या'नी (दीनी मुआ़मले में) सख़्ती करने वाला ह़ाकिम।" आप ने शुक्र अदा करते हुवे फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है और तमाम ता'रीफ़ें उसी के लिये हैं।"[1]

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ घोड़े पर सुवार हुवे तो आप की पिन्डली से कपड़ा हट गया तो अहले नजरान ने देखा कि वहां एक सियाह निशान है। तो वोह कहने लगे : هٰذَا الَّذِیْ نَجِدُ فِیْ کِتَابِنَا یُخْرِجُنَا مِنْ اَرْضِنَا "या'नी येही वोह शख़्स है जिस के बारे में हमारी किताबों में लिखा है कि वोह हमें हमारी ज़मीन से निकाल देगा।"[2]

हैबते फ़ारूके़ आ'ज़म

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़क़ व सदाक़त के शहनशाह थे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह अ़ज़ीम ने'मत बारगाहे ख़ुदावन्दी से ब वसीला बारगाहे रिसालत अ़त़ा हुई थी, ह़क़ व सदाक़त के साथ साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते मुबारका में ऐसी हैबत रखी थी जो बात़िल को झन्झोड़ के रख देती थी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह हैबत ह़क़ व बात़िल के दरमियान एक आड़ थी, इस हैबत के सबब बड़े बड़े सूरमाओं का पित्ता पानी हो जाता (जोश दब जाता), ह़ालांकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़ाहिरी वज़्अ़ क़त़्अ़ में

1 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الرابع، ص ۱۵ ۔

2 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الرابع، ص ۱۶ ۔

निहायत ही सादा शख़्सिय्यत के मालिक थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस हैबत से न सिर्फ़ इन्सान कांपते बल्कि शैत़ान पर भी लरज़ा त़ारी हो जाता था। चुनान्चे,

हैबते फ़ारूके़ आ'ज़म और शैत़ान

फ़ारूके़ आ'ज़म की हैबत और शैत़ान का फ़िरार

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक दिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में उस वक़्त ह़ाज़िर हुवे जब कुछ क़ुरैशी औ़रतें आप से सुवालात कर रही थीं और उन की आवाज़ भी काफ़ी ऊंची थी। जैसे ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दाख़िल हुवे तो वोह औ़रतें आप की आवाज़ को सुनते ही दबक गईं और फ़ौरन ही ख़ामोशी साध ली। येह मन्ज़र देख कर ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुस्कुरा दिये। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन औ़रतों को मुख़ात़ब कर के कहा : **يَاعَدُوَّاتِ أَنْفُسِهِنَّ أَتَهَبْنَنِي وَلَاتَهَبْنَ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** "या'नी ऐ अपनी जान की दुश्मनो ! मुझ से तुम्हें ख़ौफ़ आता है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से नहीं आता।" तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया : **اِنَّکَ اَفَظُّ مِنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَاَغْلَظُ** "या'नी आप मिज़ाज और गुफ़्त्गू के लिह़ाज़ से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़ियादा सख़्त हैं।" येह सुन कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **يَاعُمَرُ مَالَقِيَكَ الشَّيْطَانُ سَالِكًا فَجًّا اِلَّا سَلَكَ فَجًّا غَيْرَ فَجِّكَ** "या'नी ऐ उ़मर ! शैत़ान तुम्हें किसी रास्ते पर चलते हुवे देखता है तो तुम्हारा रास्ता छोड़ कर दूसरा रास्ता इख़्तियार कर लेता है।"(1)

शैत़ान के रास्ता छोड़ने की वज्ह

आ़रिफ़ बिल्लाह, नासिह़ुल उम्मा, अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी बिन इस्माई़ल नाबुलुसी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक को बयान करने के बा'द इरशाद फ़रमाते हैं : "शैत़ान ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का रास्ता क्यूं छोड़ता था ? इस की वज्ह येह थी कि दिल शैत़ान की चरागाह और ख़ूराक नहीं बल्कि उस की चरागाह और ख़ूराक तो शहवात हैं। तो ऐ लोगो ! तुम जब मह़्ज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ

(1) ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عمر بن الخطاب، ج ۲، ص ۵۲۶، حدیث: ۳۶۸۳ ملتقطاً

के ज़िक्र के ज़रीए शैतान को भगाना चाहोगे जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ से शैतान दूर भाग जाता था तो ऐसा ना मुमकिन है क्यूंकि तुम्हारी मिसाल उस शख़्स की सी है जो परहेज़ से पहले दवाई पीना चाहता है ह़ालांकि मे'दा मुरग़्ग़न गि़ज़ाओं से भरा हुवा है। नीज़ वोह ऐसा कर के उस शख़्स की त़रह़ नफ़्अ़ ह़ासिल करना चाहता है जो परहेज़ और मे'दा ख़ाली करने के बा'द दवाई पीता है। जान लो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र दवा है और तक़्वा परहेज़ है जो दिल को शहवात से ख़ाली रखता है लिहाज़ा जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र शहवात से ख़ाली दिल में उतरता है तो वहां से शैतान ऐसे भागता है जेसे गि़ज़ा से ख़ाली मे'दे में दवा उतरने से बीमारी भागती है। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है : ﴿إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِمَن كَانَ لَهُ قَلْبٌ﴾ (پ۲۶،ق:۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक इस में नसीह़त है उस के लिये जो दिल रखता हो।"

मज़ीद इरशाद फ़रमाते हैं : "जब आप ह़ालते नमाज़ में हों तो अपने दिल की कड़ी निगरानी करें और देखें कि कैसे शैतान इसे बाज़ारों, दुन्या भर के ह़िसाबो किताब और दुश्मनों के जवाबात की जानिब खींच कर ले जाता है ? और कैसे आप को दुन्या भर की मुख़्तलिफ़ वादियों और हलाकत ख़ैज़ियों की सैर कराता है ? यहां तक कि फ़ुज़ूलिय्याते दुन्या में से जो चीज़ आप को याद नहीं आती वोह भी ह़ालते नमाज़ में याद आ जाती है। तो शैतान आप के दिल पर यलग़ार उसी वक़्त करता है जब कि आप नमाज़ उस ह़ालत में अदा कर रहे हों कि दिल बह़सो मुबाह़सा में मश्ग़ूल हो। इस लम्ह़े दिल की ख़ूबियां व ख़ामियां सब ज़ाहिर हो जाएंगी। आप अगर वाके़ई शैतान से नजात ह़ासिल करना चाहते हैं तो तक़्वा के साथ पहले परहेज़ अपनाएं फिर इस के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़िक्र की दवा इस्ति'माल करें तो शैतान आप से ऐसे ही भागेगा जैसे अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ से भागता था।"[1]

फ़ारूके़ आ'ज़म और बूढ़े आ़बिद की शक्ल में शैतान

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 649 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**ह़िकायतें और नसीह़तें**" सफ़ह़ा 38 पर है : अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ इरशाद फ़रमाते हैं कि एक दफ़्आ़ मैं नमाज़े जुमुआ़ के लिये निकला तो

1.....इस्लाहे़ आ'माल, जि. 1, स. 212।

मुझे एक बूढ़े आ़बिद की शक्ल में इब्लीस मिला। उस ने मुझ से पूछा : "ऐ उ़मर ! कहां का इरादा है ?" मैं ने कहा : "नमाज़ के लिये जा रहा हूं।" कहने लगा : "नमाज़ तो हो चुकी, अब आप की नमाज़े जुमुआ़ फ़ौत हो गई है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने उस को पहचान लिया और उसे गर्दन और गुद्दी से पकड़ कर कहा : "तेरा सत्तियानास हो ! क्या तू आ़बिदों और ज़ाहिदों का सरदार न था ? तुझे एक सजदे का हुक्म दिया गया मगर तू ने इन्कार किया, तकब्बुर किया, और काफ़िरों में से हुवा, अब क़ियामत तक तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दूर रहेगा।" तो वोह कहने लगा : "ऐ उ़मर ! ज़रा ख़याल से बोल, क्या फ़रमां बरदारी मेरे बस में है या बद बख़्ती मेरी मशिय्यत के तह़त है ? मैं ने अ़र्श के नीचे बहुत सजदे किये, यहां तक कि आस्मान का कोई हिस्सा ऐसा नहीं जिस पर मैं ने रुकूअ़ व सुजूद न किये हों। इतने क़ुर्ब के बा वुजूद मुझे कहा गया : ﴿فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِیْمٌ ﴿۳۴﴾ وَّ اِنَّ عَلَیْكَ اللَّعْنَةَ اِلٰی یَوْمِ الدِّیْنِ ﴿۳۵﴾﴾ (پ۱۴، الحجر: ۳۴، ۳۵) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "तू जन्नत से निकल जा कि तू मर्दूद है और बेशक क़ियामत तक तुझ पर ला'नत है।" फिर कहने लगा : "ऐ उ़मर ! क्या तुम्हें यक़ीन है कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से अम्न में हो ?" ﴿فَلَا یَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۹۹﴾﴾ (پ۹، الاعراف: ۹۹) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "तो **अल्लाह** की ख़ुफ़ी तदबीर से निडर नहीं होते मगर तबाही वाले।" तो मैं ने उस से कहा : "मेरी नज़रों से औझल हो जा ! मुझे त़ाक़त नहीं कि (इस मस्अले में) तुझ से बह़स करूं।"(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म को शैत़ान ग़लत़ काम का हुक्म नहीं देता

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर शख़्स के साथ नेकी का एक फ़िरिश्ता है जो उसे नेकी की त़रफ़ बुलाता है और एक बदी का शैत़ान होता है जो उसे बुराइयों की त़रफ़ बुलाता है, लेकिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ जो बदी वाला शैत़ान था वोह भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुरे कामों की त़रफ़ बुलाने से डरता था। चुनान्चे,

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم) इरशाद फ़रमाते हैं : **اِنَّا كُنَّا لَنَرٰى شَيْطَانَ عُمَرَ يَهَابُهُ اَنْ يَّاْمُرَهُ بِالْخَطِيْئَةِ يَعْمَلُهَا** "या'नी हम तमाम सह़ाबा येही समझते थे कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ जो शैत़ान है वोह इस बात से डरता है कि आप को किसी ग़लत़ काम का हुक्म दे।"(2)

---

(1) ......الروض الفائق، ص ۱۳۔

(2) ......كنز العمال، كتاب الفضائل، فضل الشيخين، الجزء: ۱۳، ج۷، ص ۱۲، حديث: ۳۶۱۴۱ ملتقطا۔

इन्सानी व जिन्नाती शैतान उ़मर से भागते हैं

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि एक बार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم घर में तशरीफ़ फ़रमा थे, अचानक हम ने बाज़ार से शोरो गुल और बच्चों की आवाज़ें सुनीं। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उठ कर देखा तो एक ह़बशी लड़की उछल कूद कर रही थी और बच्चे उस के गिर्द शोर मचा रहे थे। सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ आ़इशा ! आओ देखो।" तो मैं आई और अपनी ठोड़ी हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कन्धे पर रख कर आप के कन्धे और सर के दरमियान से देखने लगी। आप ने कई बार फ़रमाया : "तुम अभी सैर नहीं हुईं ?" और मैं हर बार "नहीं" में जवाब दे देती ताकि मा'लूम कर सकूं कि आप के हां मेरा मक़ाम क्या है। मैं ने देखा कि अचानक बाज़ार में ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आ गए। उन की आमद ही थी कि सब लोग भाग गए और वोह बच्ची अकेली रह गई। सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि येह देख कर हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنِّیْ لَاَنْظُرُ اِلٰی شَیَاطِیْنِ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ قَدْ فَرُّوْا مِنْ عُمَرَ "या'नी मैं देख रहा हूं कि इन्सानी और जिन्नाती शैतान उ़मर को देख कर भाग रहे हैं।"(1)

मज़कूरा ह़दीसे पाक की शर्ह़

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं :

✿.....नाचने वाली लौंडी थी वोह भी बच्ची और उस का तमाशा देखने वाले भी मदीनए मुनव्वरा के बच्चे थे। (ह़दीसे पाक में मौजूद लफ़्ज़) "**تَزْفَنُ**" बना है "**زَفْنٌ**" से ब मा'ना पाउं ज़मीन पर मारना। इस से मुराद है। "नाचना"। उ़मूमन बच्चे ऐसी ह़रकतें करते हैं येह उन का खेल कूद और शग़्ल होता है।

✿.....उस वक़्त उम्मुल मोमिनीन (ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) भी नव उ़म्र बच्ची ही थीं, आप का खेल देखने का बहुत शौक़ था। येह है हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का

---

1 ......ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب عمر بن الخطاب، ج۵، ص۳۸۷، حدیث: ۳۷۱۱۔

अख़्लाक़े करीमाना, हम को ता'लीम दी कि घर वालों से ऐसा बरताव करो, अपनी बीवी के जाइज़ शौक़ ह़त्तल मक़्दूर पूरे करो। मा'लूम हुवा कि बच्चों का खेलना और उन्हें खेल दिखाना बिल्कुल जाइज़ है।

.....(ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि) हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे सामने खड़े हो गए, आड़ बन गए, मैं ने हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कन्धे पर अपनी ठोड़ी रख दी। कन्धे और सर मुबारक के दरमियान से उन का खेल देखने लगी :

नाज़ बरदारी तुम्हारी क्यूं न फ़रमाए ख़ुदा
नाज़नीने ह़क़ नबी हैं तुम नबी की नाज़नीन

आप का लक़ब है "मह़बूबए मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا।" हम सब को फ़ख़्र है कि हम इस अ़ज़्मत वाली मां की औलाद हैं।

.....(ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि) मैं बहुत देर तक येह तमाशा देखती रही और हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी ख़ातिर खड़े रहे, मैं अगर्चे तमाशे से सैर हो चुकी थी, मगर मैं येह देखना चाहती थी कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मुझ से कितनी मह़ब्बत है और मेरी ख़ातिर हुज़ूर कब तक यहां क़ियाम फ़रमा रहेंगे।

.....(तमाम लोगों के) भागने की वज्ह अभी पिछली ह़दीस में अ़र्ज़ की गई कि येह काम जाइज़ था मगर सूरतन खेल तमाशा था। ह़ज़रते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की हैबत छोटों बड़ों सब के दिलों में थी, येह रो'ब व हैबत रब तआ़ला का अ़तिय्या थी।

.....येह शयात़ीन जो उस वक़्त भागे येह वोह शयात़ीन थे जो इन्सानों के साथ रहते या जो बाज़ार में मजमओं में रहते हैं, ह़दीस शरीफ़ में है कि बाज़ारों में, मसाजिद में, मजमओं में शयात़ीन रहते, मस्जिदों के शयात़ीन वुज़ू और नमाज़ में बहकाने के लिये रहते हैं, बाज़ारों में गुनाह कराने के लिये। इस से लाज़िम नहीं आता कि बाज़ारों और मस्जिदों में जाना ह़राम हो या वहां की ह़ाज़िरी शैत़ानी काम हो। दूसरी रिवायात में है कि ई़द के दिन बच्चे हुदूदे मस्जिद में खेल रहे थे, ह़ज़रते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने उन्हें भगाना चाहा तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "उ़मर आज ई़द है इन्हें ई़द मनाने दो।" ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) के पास कुछ बच्चियां गा बजा रही थीं, हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चादर ओढ़े लैटे थे। जनाबे सिद्दीक़े अक्बर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने

उन्हें मन्अ़ किया तो चेहरए अन्वर खोल कर फ़रमाया कि "ऐ अबू बक्र हर क़ौम की ईद होती है आज हमारी ईद है, इन्हें ख़ुशी मनाने दो।" बहर ह़ाल येह ह़दीस बिल्कुल वाज़ेह़ है कि ह़ज़रते उम्मुल मोमिनीन (सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) भी उस वक़्त बच्ची थीं और वोह नाचने वाली भी बच्ची, नाच देखने वाले भी बच्चे थे, लिहाज़ा यहां बे पर्दगी का सुवाल पैदा नहीं होता।(1)

आप की आमद और शैत़ान रफ़ू चक्कर

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक जंग से वापस तशरीफ़ लाए तो एक ह़बशिय्या लड़की आ कर कहने लगी : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने नज़्र मानी थी कि अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को सलामती से वापस लाएगा तो मैं आप के सामने दफ़ बजाऊंगी और गाऊंगी।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अगर तुम ने नज़्र मानी है तो बजा लो, नहीं तो रहने दो।" येह सुन कर वोह दफ़ बजाने लगी। इसी अस्ना में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आ गए, वोह दफ़ बजाती रही, इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) और फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ लाए मगर वोह बराबर दफ़ बजाती रही। फिर अचानक अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ ले आए। जैसे ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आमद हुई, लड़की ने फ़ौरन दफ़ नीचे रखी और ख़ुद उस के ऊपर बैठ गई। ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

- ....."**اِنَّ الشَّیْطَانَ لَیَخَافُ مِنْکَ یَا عُمَرُ** या'नी ऐ उ़मर ! शैत़ान तुम से ख़ौफ़ खाता है।"
- ....."**اِنِّیْ کُنْتُ جَالِسًا وَھِیَ تَضْرِبُ** या'नी मैं बैठा हुवा था तब भी येह दफ़ बजाती रही।"
- ....."**فَدَخَلَ اَبُوْبَکْرٍ وَھِیَ تَضْرِبُ** फिर अबू बक्र आए तब भी येह दफ़ बजाती रही।"
- ....."**ثُمَّ دَخَلَ عَلِیٌّ وَھِیَ تَضْرِبُ** फिर अ़ली आए तब भी येह दफ़ बजाती रही।"
- ....."**ثُمَّ دَخَلَ عُثْمَانُ وَھِیَ تَضْرِبُ** फिर उ़स्मान आए तब भी येह दफ़ बजाती रही।"
- ....."**فَلَمَّا دَخَلْتَ اَنْتَ یَا عُمَرُ اَلْقَتِ الدُّفَّ** लेकिन ऐ उ़मर ! जैसे ही तुम दाख़िल हुवे इस ने दफ़ बजाना बन्द कर दिया।"(2)

---

1 .....मिरआतुल मनाजीह, जि. 8. स. 372

2 .....ترمذی، کتاب المناقب، مناقب ابی حفص عمر بن الخطاب، ج۵، ص۳۸۶، حدیث:۳۷۱۰۔

मज़्कूरा हदीसे पाक की शर्ह

मुफ़स्सिरे शहीर, **हकीमुल उम्मत** मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं :

.....येह नज़्र शरई नहीं थी कि नज़्रे शरई में ज़रूरी है कि जिन्से वाजिब से हो, दफ़ बजाना और गाना कहीं वाजिब नहीं। नज़्र ब मा'ना नज़रानए अ़क़ीदत है, हर शख़्स अपनी हैसिय्यत के लाइक़ ही नज़राना उस बारगाहे आ़ली में पेश करता है, उस लौंडी के पास येह ही नज़राना था :

कुछ पास नहीं मेरे क्या नज़्र करूं तेरे
इक टूटा हुवा दिल है और गोशए तन्हाई

.....ज़िक्र बजाने का है, गाने की इजाज़त भी इस में दाख़िल है। (मिरक़ात) या'नी गाते बजाते अपने दिल के अरमान पूरे करे। ख़याल रहे कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सलामती, तशरीफ़ आवरी पर ख़ुशी मनाना बेहतरीन इबादत है । इस लिये येह नज़्र दुरुस्त हुई । नज़्र इबादत की होती है। (मिरक़ात व अशिअ़्आ़) गुनाह की नज़्र दुरुस्त नहीं। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : **لَا نَذْرَ فِيْ مَعْصِيَةٍ** (नसाई शरीफ़)।

.....ख़याल रहे कि झांझ के साथ दफ़ वग़ैरा ममनूअ़ है, बिग़ैर झांझ बिला ज़रूरत खेल कूद के लिये भी ममनूअ़। ग़रज़े सहीह के लिये दफ़, ताशा बजाना जाइज़ है। लिहाज़ा ए'लाने निकाह, रोज़े के इफ़्तार या सहरी के लिये, यूं ही ग़ाज़ियों के लिये दफ़ बजाना जाइज़ है। येह दफ़ झांझ से और लह्वो लइब से ख़ाली थी लिहाज़ा जाइज़ थी। लौंडी पर न तो पर्दा वाजिब है न उस की आवाज़ औ़रत है, उसे अजनबी शख़्स देख भी सकता है, उस की आवाज़ भी सुन सकता है । लिहाज़ा यहां येह ए'तिराज़ नहीं कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अजनबी औ़रत को क्यूं देखा और उस की आवाज़ क्यूं सुनी, न उस से मुरव्वजा नाच गाने पर दलील पकड़ी जा सकती है कि अब आज़ाद औ़रतें बन संवर कर गाती हैं येह हरामे क़त्ई है। इस हदीस से बहुत लोग धोका खा गए हैं।

.....येह हैबते फ़ारूक़ी थी कि उस बीबी ने वोह काम बन्द कर दिया जो जाइज़ बल्कि इबादत था मगर लह्वो लइब की सूरत में था। हज़रते उ़मर (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه) को देख कर घबरा गई जैसे बा'ज़ हैबत वाले आदमियों को देख कर बैठे हुवे बातें करने वाले लोग इधर उधर हो जाते हैं जगह

ख़ाली कर जाते हैं हालांकि वहां उन का बैठना बातें करना ह़राम नहीं होता। लिहाज़ा इस ह़दीस पर येह ए'तिराज़ नहीं कि अगर येह काम जाइज़ था तो ह़ज़रते उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) को देख कर उस बीबी ने बन्द क्यूं कर दिया ? और अगर ह़राम था तो पहले हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने क्यूं हुवा ? मगर ह़ज़राते सूफ़िया फ़रमाते हैं कि येह काम उन ह़ज़रात के लिये दुरुस्त था, ह़ज़रते उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) के लिये दुरुस्त न था इस लिये उन ह़ज़रात के सामने होता रहा, ह़ज़रते उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) के आने पर बन्द हो गया कि अब लह्वो लड़ब बन गया।

.....("ऐ उ़मर ! शैत़ान तुम से डरता है" इस फ़रमान के तह़त फ़रमाते हैं) ऐ उ़मर येह तो एक औ़रत है जो ऐसा काम कर रही थी जो ह़क़ीक़तन दुरुस्त था सूरतन खेल था येह क्यूं न डर जाती तुम्हारी हैबत का तो येह आ़लम है कि तुम से शैत़ान भी डरता है जो मर्दूद दूसरों से नहीं डरता। इस फ़रमाने आ़ली में न तो उस औ़रत को शैत़ान फ़रमाया गया और न उस के इस अ़मल को शैत़ानी कहा गया कि येह अ़मल हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इजाज़त से हुवा था लिहाज़ा ह़दीस बिल्कुल ज़ाहिर है या येह मत़लब है कि अब तुम्हारे आने से येह काम ग़ैर दुरुस्त हो गया और बन्द हो गया।

.....इस ह़दीस से बहुत से वोह मसाइल ह़ासिल हुवे जो अभी शर्ह़ के ज़िम्न में अ़र्ज़ किये गए : (1) हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सलामती और तशरीफ़ आवरी की ख़ुशी मनाना इ़बादते मुस्तह़ब्बा है। लिहाज़ा मीलाद शरीफ़, मे'राज शरीफ़ वग़ैरा की तारीख़ों में ई़द मनाना, ख़ुशियां करना इ़बादत है। (2) लौंडी पर पर्दा नहीं। (3) लौंडी की आवाज़ अजनबी सुन सकता है। (4) दफ़ बजाना मुत़लक़न मन्अ़ नहीं बल्कि लह्वो लड़ब के लिये हो तो मन्अ़ है। (5) अच्छे और जाइज़ अश्आ़र गाना और इन का सुनना मन्अ़ नहीं। (6) ह़ज़रते सिद्दीक़ व उ़स्मान व अ़ली (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم) पर ग़लबए मह़ब्बत है और ह़ज़रते उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) पर ग़लबए इत़ाअ़त। लिहाज़ा इन ह़ज़रात के मरातिब जुदागाना हैं।[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म की आहट से भी शैत़ान भाग जाता है

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि एक अन्सारी औ़रत मेरे पास आ कर कहने लगी : "मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अ़ह्द किया है कि अगर मैं ने

1.....मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8. स, 369।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अम्न में देखा तो मैं दफ़ बजाऊंगी।" सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि उस की येह बात मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब दानाए गुयूब, صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तक पहुंचाई। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उसे कहो अपनी बात पूरी कर ले।" येह सुन कर वोह आप के क़रीब दफ़ बजाने लगी। अभी उस ने दो या तीन ज़र्बें ही लगाई होंगी कि ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने दरवाज़ा खट खटाया। तो दफ़ उस के हाथ से नीचे जा पड़ी, और वोह भाग कर पर्दे के पीछे छुप गई। सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मैं ने उसे कहा : "तुम्हें क्या हुवा ?" उस ने कहा : "मैं ने सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की आवाज़ सुनी है इस लिये मैं ख़ौफ़ ज़दा हो गई हूं।" येह देख कर ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّ الشَّيْطَانَ لَيَفِرُّ مِنْ حِسِّ عُمَر "या'नी शैत़ान उ़मर की आहट से भी भाग जाता है।"(1)

बारगाहे रिसालत में फ़ारूक़े आ'ज़म का पास

रसूलुल्लाह भी फ़ारूक़े आ'ज़म का लिहाज़ करते हैं

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से रिवायत है कि एक बार मैं सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास ह़रीरा (आटे से बनाया जाने वाला खाना) पका कर लाई। (उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना) सौदह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا मेरे और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरमियान बैठी हुई थीं। मैं ने उन से कहा : "तुम भी खाओ।" उन्हों ने इन्कार किया तो मैं ने खुश तब्ई करते हुवे कहा : "खा लो वरना मैं इसे तुम्हारे चेहरे पर मल दूंगी।" उन्हों ने फिर इन्कार किया तो मैं ने ह़रीरा से हाथ भरा और उन के चेहरे पर मल दिया। उन्हों ने भी अपना हाथ ह़रीरा से भरा और मेरे चेहरे पर मल दिया। येह देख कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुस्कुरा दिये और (उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना) सौदह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से फ़रमाया : اَلْطِخِى وَجْهَهَا "या'नी इस के (सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के) चेहरे पर और मलो।" उन्हों ने मेरे चेहरे पर और मल दिया। नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह मन्ज़र देख कर बहुत खुश हुवे।

---

1 ......رياض النضرة، ج ١، ص ٣٠٠۔

इतने में घर के बाहर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने (अपने बेटे को) आवाज़ दी : "अ़ब्दुल्लाह, अ़ब्दुल्लाह ।" रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मह़सूस किया कि ग़ालिबन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अन्दर आने वाले हैं, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें इरशाद फ़रमाया : قُوْمَا فَاغْسِلَا وُجُوْهَكُمَا "या'नी जल्दी जल्दी उठो और अपना मुंह धो लो ।" उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : فَمَا زِلْتُ اَهَابُ عُمَرَ لِهَيْبَةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِيَّاهُ "या'नी जब से मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का लिह़ाज़ करते हुवे देखा तब से मेरे दिल में भी ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की हैबत बैठ गई ।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म का ग़ुस्सा और जलाल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते त़य्यिबा का जहां भी ज़िक्र किया जाता है वहीं उन के ग़ुस्से और जलाल को भी बयान किया जाता है। यक़ीनन आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का ग़ुस्सा और जलाल ऐ़न शरीअ़त के मुत़ाबिक़ होता था। जहां दीने इस्लाम, इ़ज़्ज़त व अ़ज़मते इस्लाम का मुआ़मला होता, या कहीं अह़कामाते शरइय्या की ख़िलाफ़ वर्ज़ी होती यक़ीनन वहीं आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का जलाल ज़ाहिर होता और येह आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ग़ैरते ईमानी थी कि जब आप की अपनी ज़ात का मुआ़मला होता तो क़त़अ़न सख़्ती न फ़रमाते और जहां दीन का मुआ़मला होता तो किसी को मुआ़फ़ न फ़रमाते अगर्चे उन का सगा बेटा या कोई रिश्तेदार ही क्यूं न हो। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की दीनी मुआ़मले में सख़्ती को ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बयान फ़रमाया। चुनान्चे,

फ़ारूक़े आ'ज़म की दीनी मुआ़मलात में सख़्ती

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَرْحَمُ اُمَّتِيْ بِاُمَّتِيْ اَبُوْ بَكْرٍ وَاَشَدُّهُمْ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ عُمَرُ وَاَصْدَقُهُمْ حَيَاءً عُثْمَانُ وَاَقْضَاهُمْ عَلِيُّ بْنُ اَبِيْ طَالِبٍ

1 ......سنن کبری للنسائی، کتاب عشرۃ النساء، باب الانتصار، ج۵، ص۲۹۱، حدیث: ۸۹۱۷۔

کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الفاروق، الجزء: ۱۲، ج۶، ص۲۶۵، حدیث: ۳۵۸۳۸۔

"या'नी मेरी उम्मत में सब से ज़ियादा रहूम दिल अबू बक्र हैं और दीनी मुआ़मले में सब से ज़ियादा सख़्त उ़मर हैं, ह़या के ए'तिबार से सब से ज़ियादा सच्चे उ़स्मान हैं और सब से बड़े क़ाज़ी अ़ली बिन अबी त़ालिब हैं।"(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म की मलाइका व अम्बिया में मिस्ल

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से फ़रमाया : "क्या मैं मलाइका और अम्बिया में तुम्हारी मिस्ल बयान न करूं ?" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मिस्ल बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! मलाइका में तुम्हारी मिसाल मीकाईल की त़रह़ है जो रह़मत (बारिश) ले कर नाज़िल होते हैं और अम्बिया में तुम्हारी मिसाल ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की त़रह़ है कि जब उन की क़ौम ने उन्हें झुटलाया और उन के साथ ना ज़ेबा सुलूक किया तो इन्हों ने फ़रमाया : ﴿فَمَنْ تَبِعَنِیْ فَاِنَّهٗ مِنِّیْۚ وَ مَنْ عَصَانِیْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ﴾ (پ۱۳، ابراھیم:۳۶) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "तो जिस ने मेरा साथ दिया वोह तो मेरा है और जिस ने मेरा कहा न माना तो बेशक तू बख़्शने वाला मेहरबान है।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मिस्ल बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! मलाइका में तुम्हारी मिसाल जिब्रील की त़रह़ है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मनों पर उस का अ़ज़ाब, शिद्दत और सख़्ती ले कर उतरते हैं और अम्बिया में तुम्हारी मिसाल ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام की त़रह़ है कि उन्हों ने (अपनी क़ौम के लिये बारगाहे इलाही में) यूं दुआ़ की : ﴿رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِیْنَ دَیَّارًا﴾ (پ۲۹، نوح:۲۶) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "ऐ मेरे रब ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई बसने वाला न छोड़।(2)

फ़ारूके़ आ'ज़म के गुस्से से बचो

ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे खुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم) से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **اِتَّقُوْا غَضَبَ عُمَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ یَغْضِبُ اِذَا غَضَبَ**

---

1 ......ابن ماجه، كتاب السنة، فضائل خباب، ج ۱، ص ۱۰۲، حديث: ۱۵۴ ملتقطاً۔

2 ......السنة لابن ابي عاصم، باب في جماع فضائل ابي بكر وعمر، ص ۳۲۴، الرقم: ۱۲۶۱۔

"या'नी उ़मर के ग़ुस्से से बचो क्यूंकि जब उसे ग़ुस्सा आता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी जलाल फ़रमाता है।"(1)

ग़ुस्से के मुतअ़ल्लिक़ चन्द मदनी फूल

गुस्से के मुतअ़ल्लिक़ चन्द मदनी फूल पेशे ख़िदमत हैं ताकि येह वाज़ेह़ हो जाए कि ग़ुस्सा करना कहां जाइज़ है ? और कहां नाजाइज़ ? वाज़ेह़ रहे कि ग़ुस्सा फ़ी नफ़्सिही बुरा नहीं बल्कि ग़ुस्से का इज़्हार अगर शरीअ़त के दाइरे में रह कर किया जाए तो जाइज़ वरना नाजाइज़। येही वज्ह है कि बा'ज़ औक़ात नेक लोगों को भी ग़ुस्सा आ जाता है। चुनान्चे,

नेक लोगों को भी ग़ुस्सा आता है

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सीनों में मौजूद क़ुरआने ह़कीम की इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत की ख़ातिर ह़ामिलीने क़ुरआन को भी ग़ुस्सा लाह़िक़ हो जाता है।" एक और रिवायत में है : "दीन के लिये ग़ुस्सा मेरी उम्मत के बेहतरीन और नेक लोगों ही को आता है।" एक रिवायत का मज़्मून कुछ इस त़रह़ है : "ह़ामिलीने क़ुरआन से ज़ियादा दीनी मुआ़मले में कोई ग़ज़बनाक होने का मुस्तह़िक़ नहीं क्यूंकि उन के सीने में क़ुरआने पाक की इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत होती है।"(2)

नाह़क़ ग़ुस्सा करना मन्अ़ है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नाह़क़ ग़ुस्से का इज़्हार करना, दिल में कीना रखना और ह़सद करना येह तीनों चीज़ें एक दूसरे को लाज़िम व मल्ज़ूम हैं या'नी इन का एक दूसरे से तअ़ल्लुक़ है क्यूंकि ह़सद कीने का नतीजा है और कीना ग़ुस्से का नतीजा है। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

﴿ اِذْ جَعَلَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِیَّةَ حَمِیَّةَ الْجَاهِلِیَّةِ فَاَنْزَلَ
اللّٰهُ سَكِیْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَ عَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ وَ اَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَ كَانُوْۤا اَحَقَّ بِهَا وَ اَهْلَهَا ﴾ (پ۲۶، الفتح:۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "जब कि काफ़िरों ने अपने दिलों में अड़ (ज़िद) रखी वोही ज़मानए जाहिलिय्यत की अड़ तो अल्लाह ने अपना इत़्मीनान अपने रसूल और ईमान वालों पर उतारा और

1 ......تاریخ بغداد، محمد بن عبد الله، ج ۳، ص ۹۴، الرقم: ۱۰۱۸۔

2 ......معجم کبیر، عطاء عن ابن عباس، ج ۱۱، ص ۱۲۲، حدیث: ۱۱۳۳۲۔

کنز العمال، کتاب الاخلاق، الحدة، الجزء: ۳، ج ۲، ص ۵۵، حدیث: ۵۷۹۹، ۵۸۰۳۔

परहेज़गारी का कलिमा उन पर लाज़िम फ़रमाया और वोह इस के ज़ियादा सज़ावार और इस के अहल थे।" हज़रते अ़ल्लामा मौलाना हाफ़िज़ इब्ने ह़जर मक्की हैतमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی इस आयते मुबारका को ज़िक्र करने के बा'द इरशाद फ़रमाते हैं : "इस आयते मुबारका में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने नाह़क़ ग़ुस्से के सबब सादिर होने वाली नख़्वत व मुरव्वत ज़ाहिर करने पर कुफ़्फ़ार की मज़म्मत फ़रमाई और मुसलमानों को नख़्वत व मुरव्वत से बचाने वाले इत्मीनान और सकीना नाज़िल करने की वज्ह बयान करते हुवे उन की मदह़ फ़रमाई है कि उन्हों ने परहेज़गारी को लाज़िम पकड़ लिया है, इस लिये वोह इस के अहल और मुस्तह़िक़ ठहरे हैं।"[1]

ग़ुस्सा पीने का इनआ़म

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे पाक है : "मोमिन के ग़ुस्सा पी लेने से बढ़ कर कोई घूंट अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ज़ियादा पसन्दीदा नहीं, और जो ग़ुस्सा नाफ़िज़ करने पर क़ुदरत के बा वुजूद ग़ुस्सा पी ले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के दिल को अम्न और ईमान से भर देगा।"[2]

ग़ुस्से को ज़ाइल करने का त़रीक़ा

ग़ुस्से को ज़ाइल करने के त़रीक़ों पर मुश्तमिल तीन अह़ादीसे मुबारका पेशे ख़िदमत हैं :

(1) "जब तुम में से किसी को खड़े हुवे ग़ुस्सा आए तो वोह बैठ जाए और अगर बैठे हुवे आए तो लैट जाए।"[3]

(2) "जब तुम में से किसी को ग़ुस्सा आए तो उसे चाहिये कि اَعُوْذُ بِاللہِ पढ़ ले उस का ग़ुस्सा ख़त्म हो जाएगा।"[4]

(3) "बेशक ग़ुस्सा शैत़ान की त़रफ़ से है, शैत़ान आग की पैदाइश है और आग पानी से बुझती है लिहाज़ा जब तुम में से किसी को ग़ुस्सा आए तो वोह वुज़ू कर ले।"[5]

---

1 ......الزواجر عن اقتراف الکبائر، الباب الاول فی الکبائر۔۔۔الخ، الکبیرۃ الثالثۃ۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۱۰۳۔

2 ......ابن ماجه، ابواب الزھد، باب الحلم، ج ۴، ص ۴۶۳، حدیث: ۴۱۸۹۔

کنز العمال، کتاب الاخلاق، باب العلم والاناء، الجزء: ۳، ج ۲، ص ۵۶، حدیث: ۵۸۱۸۔

3 ......ابوداود، کتاب الادب، باب مایقال عند الغضب، ج ۴، ص ۳۲۷، حدیث: ۴۷۸۲۔

4 ......ابوداود، کتاب الادب، باب مایقال عند الغضب، ج ۴، ص ۳۲۷، حدیث: ۴۷۸۱ ملخصا۔

5 ......ابوداود، کتاب الادب، باب مایقال عند الغضب، ج ۴، ص ۳۲۸، حدیث: ۴۷۸۴۔

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा अहादीसे मुबारका से ग़ुस्से की दवा और इस के बा'द इसे ज़ाइल करने वाले आ'माल का पता चलता है, लिहाज़ा हर मुसलमान को चाहिये कि ग़ुस्सा ज़ाइल करने की फ़ज़ीलत वाली रिवायात और अ़फ़्वो दर गुज़र, बुर्दबारी और सब्र के फ़ज़ाइल में ग़ौर करे क्यूंकि इस त़रह़ इन्सान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिलने वाले सवाब में रग़बत करता है जिस से उस के ग़ुस्से और इहानत व सज़ा की त़रफ़ माइल करने का सबब ज़ाइल हो जाता है, ख़ुद अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुबारक अ़मल हमारे लिये मश्अ़ले राह है। चुनान्चे,

फ़ारूके़ आ'ज़म ने आयत सुनते ही मुआ़फ़ फ़रमा दिया

एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक शख़्स को सज़ा का हुक्म दिया तो उस ने येह आयते मुबारका पढ़ी :

﴿خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِیْنَ ﴿۱۹۹﴾﴾(پ۹، الاعراف:۱۹۹) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "ऐ मह़बूब मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो।"

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह आयते मुबारका सुनी और इस में ग़ौर किया तो उसे मुआ़फ़ फ़रमा दिया, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ़दते मुबारका थी कि कु़रआने पाक सुन कर अपने फै़सले से रुक जाते और उस से तजावुज़ न फ़रमाते थे। इस मुआ़मले में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की पैरवी की यूं कि जब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक शख़्स को कोड़े मारने का हुक्म दिया तो उस ने येह आयते मुबारका पढ़ी : (پ۴، اٰل عمران:۱۳۴)﴿وَالْكٰظِمِیْنَ الْغَیْظَ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और ग़ुस्सा पीने वाले।" तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी उसे आज़ाद करने का हुक्म दे दिया।[1]

ग़ुस्सा ज़ाइल करने के मुख़्तलिफ़ त़रीके़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللہُ الْمُبِیْن ने ग़ुस्से को ज़ाइल करने के मुख़्तलिफ़ त़रीके़ बयान फ़रमाए हैं। अ़ल्लामा इब्ने ह़जर हैतमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने ग़ुस्सा ज़ाइल करने के दर्जे ज़ैल पांच त़रीके़ बयान फ़रमाए हैं :

1 ......الزواجر عن اقتراف الكبائر، الكبيرة الثالثة، ج ۱، ص ۱۲۲ ـ

(1) पहला त़रीक़ा येह है कि इन्सान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत में ग़ौर करे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी उस पर ग़ज़ब फ़रमाएगा क्यूंकि इन्सान क़ियामत में अफ़्वो दर गुज़र का ज़ियादा मोह़ताज होगा, इसी लिये ह़दीसे क़ुदसी में आया है : "ऐ इब्ने आदम ! जब तुझे ग़ुस्सा आए तो मुझे याद कर लिया कर मैं तुझे अपने ग़ज़ब के वक़्त याद रखूंगा और हलाक होने वालों के साथ तुझे हलाक न करूंगा।"

(2) दूसरा त़रीक़ा येह है कि बन्दा ख़ुद को सामने वाले के इन्तिक़ाम लेने से डराए कि अगर कोई शख़्स उस से इन्तिक़ाम लेने पर मुसल्लत़ हो जाए, उस की इ़ज़्ज़त दरी करे, उस के उ़यूब को ज़ाहिर करे और उस की मुसीबत पर ख़ुशी के इज़्हार वग़ैरा जैसे दुश्मनाना अफ़्आ़ल करे (तो उस पर क्या गुज़रेगी) येह वोह दुन्यवी मुसीबतें हैं जिस से आख़िरत पर कामिल भरोसा न करने वाले को भी चाहिये कि इन से ग़फ़्लत न बरते।

(3) तीसरा त़रीक़ा येह है कि इन्सान ह़ालते ग़ुस्सा की बुरी सूरत में ग़ौर करे और अपने नज़्दीक ग़ुस्से की क़बाह़त और ग़ज़बनाक शख़्स की काटने वाले कुत्ते से मुशाबहत का तसव्वुर व ख़याल करे और बुर्दबार शख़्स की अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام व औलियाए इ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से मुशाबहत में ग़ौर करे और फिर इन दोनों मुशाबहतों के फ़र्क़ में ग़ौरो फ़िक्र करे।

(4) चौथा त़रीक़ा येह है कि इन्सान ग़ुस्से को उभारने वाले शैत़ानी वस्वसे पर कान ही न धरे क्यूंकि अगर वोह इसे छोड़ दे तो वोह इसे लोगों के सामने आ़जिज़ ज़ाहिर कर देगा और येह सोचे कि इस का ग़ुस्सा और इन्तिक़ाम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब और उस के इन्तिक़ाम से कमतर है क्यूंकि ग़ज़बनाक शख़्स किसी चीज़ को अपनी चाहत के मुत़ाबिक़ देखना चाहता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इरादे पर नज़र नहीं रखता। और जो इस आफ़त में मुब्तला हो जाए तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब और उस के अ़ज़ाब से बे ख़ौफ़ नहीं हो सकता जो कि बन्दे के ग़ुस्से और इन्तिक़ाम से बहुत बड़ा और सख़्त है।

(5) पांचवां त़रीक़ा येह है कि वोह येह अ़मल करे कि शैत़ान मर्दूद से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहे और अपनी नाक पकड़ कर येह दुआ़ मांगे :

اَللّٰهُمَّ رَبَّ النَّبِيِّ مُحَمَّدٍ اِغْفِرْ لِيْ ذَنْبِيْ وَاَذْهِبْ غَيْظَ قَلْبِيْ وَاَجِرْنِيْ مِنْ مُضِلَّاتِ الْفِتَنِ "या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! ऐ ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रब عَزَّوَجَلَّ ! मेरे गुनाह बख़्श दे और मेरे दिल के ग़ुस्से को दूर फ़रमा और मुझे गुमराह करने वाले फ़ितनों से नजात अ़त़ा फ़रमा।" क्यूंकि येह दुआ़ ह़दीसे मुबारका में वारिद हुई है, फिर उसे चाहिये कि बैठ जाए फिर भी ग़ुस्सा ख़त्म न हो तो लेट जाए ताकि

उसे जिस ज़मीन से पैदा किया गया है उस के क़रीब हो जाए ह़त्ता कि वोह अपनी अस्ल के ह़क़ीर होने और अपने नफ़्स की ज़िल्लत को पहचान ले और ग़ुस्से से पैदा होने वाली ह़रकत और ह़रारत से पैदा होने वाला ग़ज़ब सुकून पा ले।(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ुस्से पर क़ाबू पाने के मज़ीद त़रीक़े जानने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का रिसाला "ग़ुस्से का इलाज" का मुत़ालआ़ कीजिये।

फ़ारूक़े आ'ज़म के ग़ुस्सा ठन्डा करने का मदनी अन्दाज़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने एक मरतबा ग़ुस्से के वक़्त नाक में पानी चढ़ाया और इरशाद फ़रमाया : "ग़ुस्सा शैत़ान की त़रफ़ से है और येह अ़मल ग़ुस्से को दूर कर देता है।" रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ अबू ज़र ! नज़र उठा कर आस्मान और उस के ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़मत की त़रफ़ देखो, फिर येह यक़ीन कर लो कि तुम किसी सुर्ख़ या सियाह से अफ़्ज़ल नहीं, मगर येह कि तुम इल्म में उस से अफ़्ज़ल हो जाओ। जब तुम्हें ग़ुस्सा आया करे तो अगर तुम खड़े हो तो बैठ जाओ और अगर बैठे हो तो टेक लगा लो और अगर टेक लगा कर बैठे हो तो लेट जाओ।"(2)

आयते मुबारका सुन कर रुक गए

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि ह़ुर बिन क़ैस बिन ह़िस्न ने अपने चचा उ़यैना बिन ह़िस्न के लिये अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के पास आने की इजाज़त त़लब की। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने इजाज़त दे दी। वोह अन्दर आए और कहने लगे : "ऐ ख़त़्त़ाब के बेटे ! ख़ुदा की क़सम ! तुम न हमें सिला देते हो और न हमारे दरमियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करते हो।" येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को जलाल आ गया और क़रीब था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه उन्हें पकड़ लेते। ह़ुर बिन क़ैस कहने लगे : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़रमाया है : ﴿خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِیْنَ ﴿۱۹۹﴾﴾ (پ۹، الاعراف:۱۹۹) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ मह़बूब मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो।

---

1 ......الزواجر عن اقتراف الکبائر، ج ۱، ص ۱۰۶۔

2 ......اتحاف السادۃ المتقین، کتاب ذم الغضب والحقد والحسد، باب بیان علاج الغضب بعد ھیجانہ، ج ۹، ص ۴۲۷۔

ऐ अमीरुल मोमिनीन येह तो जाहिल है। हुर का येह कहना था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वहीं रुक गए और येह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ़दते मुबारका थी कि किताबुल्लाह की बात सुन कर ठहर जाते थे।[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म और इत्तिबाए सुन्नत

फिर कभी ग़ैरुल्लाह की क़सम न खाई

ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिदे गिरामी से रिवायत करते हैं कि एक बार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा कि वोह अपने वालिद की क़सम उठा रहे थे (या'नी यूं कह रहे थे कि मुझे मेरे बाप की क़सम !) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह सुन लिया और इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें अपने आबा की क़सम उठाने से रोकता है।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि इस के बा'द मैं ने क़सदन या भूल कर कभी ऐसी क़सम न उठाई।[2]

फ़ारूक़े आ'ज़म की इत्तिबाए रसूल का अनोखा अन्दाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर जब क़ातिलाना ह़म्ला हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ किया गया : "आप अपनी जगह किसी को जा नशीन क्यूं नहीं बना देते ?" फ़रमाया : "अगर मैं जा नशीन मुक़र्रर करता हूं तो भी सह़ीह़ है क्यूंकि मुझ से बेहतर (या'नी ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने भी ऐसा किया था और किसी को जा नशीन बनाए बिग़ैर तुम्हें यूं ही छोड़ दू तो भी सह़ीह़ है क्यूंकि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ से बेहतर थे, आप ने भी किसी को बित्तसरीह़ ख़िलाफ़त के लिये नामज़द नहीं किया।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र किया तो मुझे यक़ीन हो गया कि आप रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ में हरगिज़ जा नशीन नहीं बनाएंगे।"[3]

---

1 ......بخاری، کتاب التفسیر، خذ العفو وامر بالعرف، ج ۳، ص ۲۲۷، حدیث: ۴۶۴۲ ملتقطا۔

2 ......ترمذی، کتاب النذور والایمان، ماجاء فی کراھیۃ الحلف بغیر اللہ، ج ۳، ص ۱۸۴، حدیث: ۱۵۳۸۔

3 ......بخاری، کتاب الاحکام، باب الاستخلاف، ج ۴، ص ۴۷۹، حدیث: ۷۲۱۷۔

مسلم، کتاب الامارۃ، باب الاستخلاف وترکہ، ص ۱۰۱۳، حدیث: ۱۲۔

फ़ारूक़े आ'ज़म और इताअत गुज़ार रिआया

रिआया में फ़ारूक़े आ'ज़म की इताअत का जज़्बा

हज़रते सय्यिदुना अबू मुलैका رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मरज़े जुज़ाम में मुब्तला एक ख़ातून के क़रीब से गुज़रे जो त़वाफ़े का'बा में मश्ग़ूल थी। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से फ़रमाया : "ऐ अल्लाह की बन्दी ! अगर तुम घर में ठहरतीं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दों को तक्लीफ़ न होती।" इस के बा'द वोह ख़ातून घर में बैठ गई। फिर अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल के बा'द एक शख़्स उस ख़ातून के पास आया और कहने लगा : "जिस शख़्सिय्यत (या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने तुम्हें रोका था उन का तो इन्तिक़ाल हो गया है अब तुम जा कर त़वाफ़ कर सकती हो।" वोह ख़ातून कहने लगी : "ख़ुदा की क़सम ! मैं हरगिज़ ऐसा नहीं कर सकती कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़िन्दगी में उन की इत़ाअ़त और मौत के बा'द मुख़ालफ़त करूं।"(1)

कभी छत को ऊंचा न किया

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह रूमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی से रिवायत है फ़रमाते हैं कि मैं एक दिन हज़रते सय्यिदतुना उम्मे त़ल्क़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا के घर गया तो देखा कि उन के घर की छत बहुत नीची है। मैं ने उन से इस्तिफ़्सार किया : "يَا اُمَّ طَلْقٍ مَالِیْ اَرٰی سَقْفَ بَیْتِکَ قَصِیْرًا؟" या'नी क्या बात है कि आप के घर की छत बहुत नीची है।" तो वोह कहने लगीं : "اِنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ كَتَبَ اِلَيْنَا لَا تُطِيْلُوْا بِنَاءَ كُمْ فَاِنَّهٗ مِنْ شَرِّ اَيَّامِكُمْ" या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हमें तह़रीरी हुक्म नामा दिया था कि अपने घरों को ऊंचा न बनाओ क्यूंकि जिस दिन तुम ने इन को ऊंचा किया वोह तुम्हारी ज़िन्दगी का बुरा दिन होगा।"(2)

---

1 ......موطاامام مالک، کتاب الحج، جامع الحج، ج ۱، ص ۳۸۸، حدیث: ۹۸۸۔

2 ......موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب قصر الامل، ج ۳، ص ۳۶۴، الرقم: ۲۸۳۔

फ़ारूक़े आ'ज़म की जुरअत व बहादुरी

फ़ारूक़े आ'ज़म ने एक जिन्न को मुक़ाबले में पछाड़ दिया

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के एक सहाबी की एक जिन्न से मुलाक़ात हुई, दोनों में कुश्ती हुई तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सहाबी ने उस जिन्न को पछाड़ दिया। जिन्न ने दोबारा लड़ने की दा'वत दी तो इस बार भी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सहाबी ने उस जिन्न को पछाड़ दिया। सहाबी ने बड़ी हैरानगी से जिन्न से पूछा : "तुम बड़े लाग़र और कमज़ोर हो, तुम्हारी कलाइयां कुत्ते जैसी हैं, क्या सारे जिन्नात ऐसे ही होते हैं या सिर्फ़ तुम ही ऐसे हो ?" जिन्न कहने लगा : "ख़ुदा की क़सम ! मैं तो जिन्नात में काफ़ी मोटा ताज़ा हूं। चलो ऐसा करते हैं एक बार फिर कुश्ती कर के देखते हैं, अब की बार भी अगर तुम ने मुझे पछाड़ दिया तो मैं तुम्हें एक बहुत ही काम की बात बताऊंगा जो तुम्हें बहुत फ़ाइदा देगी।" चुनान्चे, दोनों में एक बार फिर कुश्ती हुई और इस बार भी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सहाबी ने जिन्न को पछाड़ दिया तो सहाबी ने जिन्न से कहा : "अब बताओ तुम मुझे क्या बात बताना चाहते थे ?" जिन्न ने कहा : "तुम्हें आयतुल कुरसी आती है ?" सहाबी ने जवाब दिया : "जी हां।" जिन्न कहने लगा : "रात को अगर किसी घर में आयतुल कुरसी पढ़ ली जाए तो सुब्ह तक कोई शैतान जिन्न उस घर में दाख़िल नहीं हो सकेगा बल्कि वोह उस घर से शरीर गधे की तरह दूर भाग जाएगा।"

येह वाक़िआ़ सुन कर किसी ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा : "वोह सहाबी कौन थे ? कहीं अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तो नहीं थे ?" फ़रमाया : "उन के सिवा और कौन हो सकता है ?"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म और नेकी की दा'वत

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में मन्क़ूल है कि एक दफ़्आ़ कुछ खाना मस्जिद के दरवाज़े के पास रखा हुवा था, जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बाहर निकले तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "येह खाना कैसा है ?" सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "येह खाना शहर के बाहर से हमारे पास

---

(1) ......معجم کبیر، عبد اللہ بن مسعود الھذلی، ج۹، ص۱۶۶، حدیث:۸۸۲۶۔

लाया गया है।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस खाने में और इस को हमारे शहर में लाने वाले दोनों में बरकत अ़ता फ़रमाए, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ मौजूद किसी शख़्स ने कहा : "ऐ अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ! येह ज़ख़ीरा किया गया है।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "किस ने ज़ख़ीरा किया है ?" सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "फ़र्रूख़ (ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम) और फ़ुलां ने, जो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का ग़ुलाम है।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दोनों को बुला भेजा, वोह दोनों ह़ाज़िर हुवे तो फ़रमाया : "तुम्हें मुसलमानों के खाने को रोकने का इख़्तियार किस ने दिया है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ! हम अपने अम्वाल से ख़रीदते और बेचते हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते हुवे सुना : "जिस ने मुसलमानों पर उन का खाना रोक लिया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे कोढ़ और इफ़्लास में मुब्तला कर देगा।" पस उसी वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना फ़र्रूख़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ! मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और आप से अ़ह्द करता हूं कि आइन्दा कभी भी खाने को ज़ख़ीरा न करूंगा।" लिहाज़ा उन्हों ने उसे मिस्र की त़रफ़ भेज दिया जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम ने कहा : "हम अपने अम्वाल से ख़रीदते और बेचते हैं।" बहर ह़ाल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यह़्या رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (इस रिवायत के रावी) फ़रमाते हैं : "मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के उस ग़ुलाम को कोढ़ की बीमारी में मुब्तला देखा।"(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म और क़ब्र के अह़वाल

हमें क़ब्र क्या नुक़्सान देगी ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ता बिन यसार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! जब आप का इन्तिक़ाल होगा तो क्या ह़ाल होगा ! आप की क़ौम आप को ले जाएगी और आप के लिये तीन गज़ लम्बी और डेढ़ गज़ चौड़ी क़ब्र तय्यार करेंगे। फिर वापस आ कर आप

---

(1)......مسند امام احمد، مسند عمر بن الخطاب، ج ۱، ص ۵۵، حدیث: ۱۳۵۔

को ग़ुस्ल देंगे और कफ़न पहनाएंगे और फिर ख़ुश्बू लगा कर आप को उठाएंगे ह़त्ता कि आप को क़ब्र में रख देंगे फिर आप (की क़ब्र) पर मिट्टी बराबर कर देंगे और आप को दफ़्न कर देंगे और जब वोह वापस लौटेंगे तो आप के पास इम्तिह़ान लेने वाले दो फ़िरिश्ते मुन्कर व नकीर आएंगे, उन की आवाज़ बिजली की कड़क जैसी और उन की आंखें उचकने वाली बिजली की त़रह़ होंगी वोह अपने बालों को घसीटते हुवे आएंगे और अपने दांतों से क़ब्र को खोद कर आप को झन्झोड़ देंगे। ऐ उ़मर ! उस वक़्त क्या कैफ़िय्यत होगी ?" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "क्या उस वक़्त मेरी अ़क़्ल आज की त़रह़ मेरे साथ होगी ?" फ़रमाया : "हां।" अ़र्ज़ की : "फिर اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं उन को काफ़ी होऊंगा।"(1)

इमाम ग़ज़ाली की तशरीह़

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی येह ह़दीसे पाक नक़्ल करने के बा'द फ़रमाते हैं : "मौत की वज्ह से अ़क़्ल में कोई तब्दीली नहीं आती सिर्फ़ बदन और आ'ज़ा में तब्दीली आती है। लिहाज़ा मुर्दा उसी त़रह़ अ़क़्लमन्द, समझदार और तकालीफ़ व लज़्ज़ात को जानने वाला होता है, अ़क़्ल बात़िनी शै है और नज़र नहीं आती। इन्सान का जिस्म अगर्चे गल सड़ कर बिखर जाए फिर भी अ़क़्ल सलामत रहती है।"(2)

सख़्त तशवीश और ख़ौफ़ का मुआ़मला

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ुदा की क़सम ! तशवीश, तशवीश, और सख़्त तशवीश ख़ौफ़, ख़ौफ़ और सख़्त तरीन ख़ौफ़ का मुआ़मला है, जानवर की तो मरते ही क़ुव्वते मह़सूसा ख़त्म हो जाती है मगर इन्सान की अ़क़्ल और मह़सूस करने की त़ाक़त जूं की तूं बाक़ी रहती बल्कि देखने और सुनने की क़ुव्वत कई गुना बढ़ जाती है। हाए ! हाए ! अगर हमारी बद आ'मालियों के सबब **अल्लाह** तबारक व तआ़ला हम से नाराज़ हो गया तो हमारा क्या बनेगा ! ज़रा सोचिये तो सही ! अगर हमें ख़ूब सूरत और आसाइशों से भरपूर कोठी में तन्हा क़ैद कर दिया जाए तब भी घबरा जाएं ! और हम में से शायद क़ब्रिस्तान में तो कोई भी अकेला एक रात गुज़ारने की हिम्मत न कर सके। आह !

1 ......احیاء العلوم، کتاب ذکر الموت وما بعدہ، بیان سوال منکر۔۔۔الخ، ج۵، ص۲۵۸۔

2 ......احیاء العلوم، کتاب ذکر الموت وما بعدہ، بیان سوال منکر۔۔۔الخ، ج۵، ص۲۵۸۔

उस वक़्त क्या होगा जब मनों मिट्टी तले हमें अकेला छोड़ कर हमारे अह्बाब पलट जाएंगे, जिस्म अगर्चे साकिन होगा, मगर अ़क़्ल सलामत होगी, लोगों को जाता देख रहे होंगे, उन के क़दमों की चाप सुन रहे होंगे।

आह ! आह ! आह ! बे नमाज़ियों, माहे रमज़ान के रोज़े बिला उ़ज़्रे शरई न रखने वालों, ज़कात देने से कतराने वालों, फ़िल्में ड्रामे देखने वालों, गाने बाजे सुनने वालों, मां बाप को सताने वालों, मुसलमानों की बिला इजाज़ते शरई दिल आज़ारियां करने वालों, चोरियां डकेतियां करने वालों, लोगों को धमकी आमेज़ चिठ्ठियां भेज कर रक़मों का मुत़ालबा करने वालों, जेब कतरों, लोगों की ज़मीनें दबा लेने वालों, बे बस हारियों का ख़ून चूसने वालों, इक़्तिदार के नशे में बद मस्त हो कर ज़ुल्मो सितम की आंधियां चलाने वालों, अपनी सिह्हत व दौलत के नशे में बद मस्त हो कर गुनाहों का बाज़ार गर्म करने वालों को हो सकता है इस ज़ाहिरी ज़िन्दगी में कोई क़ब्र में बन्द न कर सके ताहम अ़न क़रीब या'नी चन्द साल, चन्द माह, चन्द दिन बल्कि ऐ़न मुमकिन है चन्द घन्टों के बा'द मौत आ संभाले और उन को क़ब्र में अकेला बन्द कर दिया जाए !

मौत आ कर ही रहेगी याद रख
जान जा कर ही रहेगी याद रख
क़ब्र में मय्यित उतरनी है ज़रूर
जैसी करनी वैसी भरनी है ज़रूर

काश ! हम सब दुन्या में रहते हुवे क़ब्र की तय्यारी कर लें, गुनाहों में मुलव्विस हो कर अपनी क़ब्र को अन्धेरी कोठरी बनाने के बजाए नेकियां कर के उसे रौशन करने वाले बन जाएं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

फ़ारूक़े आ'ज़म और नकीरैन के सुवाल

उ़मर फ़ारूक़ और नकीरैन से सुवाल

(1) मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि "जब मुर्दा क़ब्र में रख दिया जाता है तो वहां दो फ़िरिश्ते मुन्कर-नकीर आ जाते हैं जो तुन्द ख़ू और सख़्त दिल हैं, जिन के चेहरे ऐसे नीले और सियाह हैं जैसे तारीकी होती है। उन की आवाज़ें गरजती बिजली की मानिन्द, आंखें गिरने वाले सितारों की त़रह़ और दांत नेज़ों की त़रह़ हैं। वोह अपने

बालों में ज़मीन पर तैरते आते हैं। (या'नी सारा वुजूद बालों से छुपा होता है गोया बालों का मजमूआ ज़मीन पर तैरता आ रहा है) हर एक के हाथ में इतना वज़्नी हथोड़ा होता है कि तमाम जिन्नो इन्स मिल कर उसे उठा नहीं सकते। वोह दोनों क़ब्र वाले से उस के रब (عَزَّوَجَلَّ) उस के नबी (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) और उस के दीन के मुतअ़ल्लिक़ सुवालात करते हैं।'' येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! जब वोह मेरे पास आएंगे तो क्या मैं इसी त़रह़ सह़ीह़ सालिम रहूंगा जैसे अब हूं?'' फ़रमाया : ''हां।'' अ़र्ज़ किया : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! फिर तो मैं उन्हें आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से ख़ूब जवाब दूंगा।'' सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''ऐ उ़मर ! उस रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस ने मुझे ह़क़ दे कर भेजा ! मुझे जिब्रीले अमीन ने बताया है कि वोह दोनों फ़िरिश्ते जब तुम्हारी क़ब्र में आएंगे और सुवालात करेंगे तो तुम यूं जवाब दोगे कि मेरा रब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है मगर तुम्हारा रब कौन है ? मेरे नबी तो मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं मगर तुम्हारा नबी कौन है ? मेरा दीन इस्लाम है मगर तुम्हारा दीन क्या है ? वोह कहेंगे : बड़ी तअ़ज्जुब की बात है, हम तुम्हारी त़रफ़ भेजे गए हैं या तुम हमारी त़रफ़ भेजे गए हो ?''[1]

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से यूं मरवी है कि सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! उस वक़्त हमारा ह़ाल क्या होगा ?'' फ़रमाया : ''जैसा अब है।'' अ़र्ज़ किया : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! फिर तो मैं उन्हें काफ़ी होऊंगा।''[2]

मुन्कर नकीर और फ़ारूके आ'ज़म

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : ''ऐ उ़मर ! तुम्हारा उस वक़्त क्या ह़ाल होगा जब तुम्हारे पास मुन्कर व नकीर इस ह़ालत में आएंगे कि वोह दांतों से ज़मीन कुरैदते होंगे, उन के लम्बे बाल घिसटते होंगे, उन की आवाज़ कड़कती बिजली जैसी होगी और आंखें ऐसे होंगी जैसे उचक लेने वाली बिजली।'' अ़र्ज़ किया : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم !

---

1 ......رياض النضرة، ج ١، ص ٣٤٦-

2 ......اتحاف الخيرة المهره، كتاب الجنائز، السوال فى القبر وماجاء، ج ٣، ص ٢٦٩، حديث: ٢٦٧١ ملتقطا-

जिस ह़ालत पर दुन्या से हमारा इन्तिक़ाल होगा क्या क़ब्र में इसी ह़ालत पर उठाए जाएंगे ?'' आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''हां ! اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ ।'' अ़र्ज़ किया : ''फिर तो मैं उन्हें काफ़ी होऊंगा ।''(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म और ग़ैर मुस्लिमों से किनारा कशी

जिसे अल्लाह ने ज़लील किया उसे इ़ज़्ज़त क्यूं देते हो ?

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को हुक्म दिया कि वोह लैन दैन के तमाम मुआ़मलात लिख कर पेश करें । उन का कातिब नसरानी था, उस ने तमाम मुआ़मलात लिख दिये और सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने बारगाहे फ़ारूक़ी में पेश कर दिया । आप को उस की लिखाई की महारत देख कर बहुत तअ़ज्जुब हुवा मगर आप के इ़ल्म में न था कि वोह कातिब ईसाई है । आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से फ़रमाया : ''तुम्हारा कातिब कहां गया ? उसे अन्दर लाओ ताकि वोह मस्जिद में लोगों के सामने येह तह़रीर पढ़ कर सुनाए ।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अ़र्ज़ करने लगे : ''या अमीरल मोमिनीन ! वोह मस्जिद में नहीं आ सकता ।'' फ़रमाया : ''क्यूं ? वोह जुनुबी है क्या ?'' अ़र्ज़ किया : ''नहीं ! वोह कातिब ईसाई है ।'' येह सुनना था कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जलाल में आ गए और सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को बहुत डांटा और फ़रमाया : ''तुम उन्हें अपने क़रीब न करो क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें दूर किया है । तुम उन्हें इ़ज़्ज़त न दो क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें ज़िल्लत दी है और तुम उन्हें अम्न दे रहे हो जब कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन पर ख़ौफ़ डाला है । मैं ने तुम्हें अहले किताब या'नी ग़ैर मुस्लिमों को ओ़हदे देने से रोका है, क्यूंकि वोह रिश्वत लेना जाइज़ समझते हैं ।''(2)

बे दीन शख़्स हमारा अमानत दार नहीं हो सकता

एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से फ़रमाया : ''कोई ह़िसाब किताब का माहिर आदमी

---

1 ......البعث لابی داود، ص ۸، حدیث: ۷۔

2 ......سنن کبری، کتاب الجزیة، لا یدخلون مسجدا بغیر اذن، ج ۹، ص ۳۴۳، حدیث: ۱۸۷۲۷، ریاض النضرة، ج ۱، ص ۳۶۲۔

लाएं जो हमारी मदद किया करे।" वोह एक ईसाई को ले आए। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ अबू मूसा ! इस से बेहतर है हम दोनों मिल कर हि़साब किताब कर लिया करें। मैं ने तुम से वोह शख़्स मांगा था कि जो हमारी अमानत में शरीक हो (या'नी हि़साब किताब बिल्कुल दुरुस्त करे इस में किसी कि़स्म की ख़ियानत न करे) और तुम ऐसे शख़्स को ले आए जिस का दीन मेरे दीन का मुख़ालिफ़ है।"[1]

फ़ारूके़ आ'ज़म और शरई अह़काम की पासदारी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ शरई अह़कामात की पासदारी में उस चांद की मानिन्द हैं जिस की चमकती दमकती रौशनी गुमराही में भटके लोगों की राह नुमाई करती है, अह़कामे शरीअ़त का पाबन्द बनाती है, नेकी की दा'वत देने में इआ़नत करती है। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जिस त़रह़ खु़द अह़कामे शरीअ़त की पाबन्दी फ़रमाते ऐसे ही अपने मा तह़्त अफ़राद को भी नेकी की दा'वत दे कर शरीअ़त का पाबन्द बनाते और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की इनफ़िरादी व इजतिमाई कोशिश से कई लोग फ़राइज़ व नवाफ़िल पर अ़मल पैरा होने के साथ साथ सुन्नतों के भी आ़मिल बन जाते। चुनान्चे,

चांदी की अंगूठी पहनो

एक मरतबा दो शख़्स अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाजि़र हुवे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन में से एक के हाथ में सोने की अंगूठी देखी तो इरशाद फ़रमाया : "क्या तुम लोग सोने की अंगूठियां पहनते हो ?" तो दूसरे शख़्स ने जवाब दिया : "मेरी अंगूठी तो लोहे की है।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ना गवारी का इज़्हार करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "येह लोहे की अंगूठी तो उस से जि़यादा बदबूदार और ख़बीस है, फिर दोनों को मुख़ात़ब करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम्हें अंगूठी पहननी ही है तो चांदी की अंगूठी पहनो।"[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "मर्द को ज़ेवर पहनना मुत़लक़न ह़राम है, सिर्फ़ चांदी की

---

1 ......رياض النضرة،ج ۱ ،ص ۳۶۲۔

2 ......طبقات کبری،ابوموسی الاشعری،ج ۴،ص ۸۶۔

एक अंगूठी जाइज़ है, जो वज़्न में एक मिस्क़ाल या'नी साढ़े चार माशा से कम हो और सोने की अंगूठी भी ह़राम है।(1)

मस्जिद का अदबो एह़तिराम करो

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मस्जिद में एक शख़्स की बुलन्द आवाज़ सुनी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मस्जिद में उस का चिल्लाना बहुत मा'यूब लगा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे सर-ज़निश करते हुवे इरशाद फ़रमाया : ''क्या तुझे मा'लूम है कि तू इस वक़्त कहां है ?'' (या'नी तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के घर मस्जिद में है और मस्जिद का अदबो एह़तिराम येह है कि यहां आवाज़ पस्त रखी जाए।)(2)

मस्जिद में आवाज़ बुलन्द करना मन्अ़ है

ह़ज़रते साइब बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ''मैं मस्जिद में मौजूद था और वहीं दो शख़्स बुलन्द आवाज़ से गुफ़्त्गू कर रहे थे। अचानक किसी ने मुझे कंकरी मारी, जब मैं ने कंकरी मारने वाले की त़रफ़ देखा तो वोह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : ''जाओ ओर उन दोनों को मेरे पास ले आओ।'' मैं ने फ़ौरन हुक्म की ता'मील की और उन दोनों को ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में पेश कर दिया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन दोनों से इरशाद फ़रमाया : ''तुम कौन हो और कहां से आए हो ?'' उन्हों ने जवाब दिया : ''हमारा तअ़ल्लुक़ त़ाइफ़ से है।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''तुम हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मस्जिद में आवाज़ें बुलन्द करते हो, अगर मदीने के रिहाइशी होते तो मैं तुम्हें ज़रूर सज़ा देता।''(3)

मसाजिद का अदबो एह़तिराम कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मसाजिद का अदबो एह़तिराम हर शख़्स पर लाज़िम है, मसाजिद ख़ालिसतन दीनी उमूर, नमाज़, ए'तिकाफ़ ज़िक्रुल्लाह, तिलावते कुरआन वग़ैरा के लिये बनाई गई हैं। इन में शोरो ग़ुल करना या कोई भी ऐसा काम जो मस्जिद के अदबो एह़तिराम के मनाफ़ी हो शरअ़न ममनूअ़ है। आज कल इस बात का बहुत कम ख़याल रखा जाता है और बा'ज़ नादान लोग तो

1.....बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि़स्सा 16, स. 426।

2.....مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الصلاۃ، فی رفع الصوت فی المساجد، ج ۲، ص ۳۰۹، حدیث: ۲۔

3.....بخاری، کتاب الصلوۃ، باب رفع الصوت فی المساجد، ج ۱، ص ۱۷۸، حدیث: ۴۷۰۔

मसाजिद में इतनी बुलन्द आवाज़ से गुफ़्त्गू करते नज़र आते हैं गोया अपने घर या बाज़ार में गुफ़्त्गू कर रहे हों, ऐसे लोगों के लिये लम्हए फ़िक्रिय्या है, नीज़ बा'ज़ ह़ज़रात ना बालिग़ और ना समझ बच्चों को भी अपने साथ मसाजिद में लाते हैं जो मस्जिद में घूमते फिरते और शोरो ग़ुल मचाते हैं याद रखिये कि मसाजिद में बच्चों, पागलों वग़ैरा का दाख़िला ममनूअ़ है। चुनान्चे, सुल्त़ाने मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "मस्जिदों को बच्चों, पागलों, ख़रीदो फ़रोख़्त, झगड़े, आवाज़ बुलन्द करने, ह़ुदूद क़ाइम करने और तल्वार खींचने से बचाओ।"(1)

अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "ऐसा बच्चा जिस से नजासत (या'नी पेशाब वग़ैरा कर देने) का ख़त़रा हो और पागल को मस्जिद के अन्दर ले जाना ह़राम है अगर नजासत का ख़त़रा न हो तो मकरूह।" जो लोग जूतियां मस्जिद के अन्दर ले जाते हैं उन को भी इस बात का ख़ास ख़याल रखना चाहिये कि अगर नजासत लगी हो तो साफ़ कर लें और जूता पहने मस्जिद में चले जाना बे अदबी है।(2)

बच्चे या पागल या बे होश या जिस पर जिन्न आया हुवा हो उस को दम करवाने के लिये भी मस्जिद में ले जाने की शरीअ़त में इजाज़त नहीं। वाज़ेह़ रहे कि मसाजिद को जिस त़रह़ शोरो ग़ुल से बचाना ज़रूरी है वैसे ही उसे बद बू से बचाना भी बेह़द ज़रूरी है। अह़ादीसे मुबारका में मसाजिद को ख़ुश्बूदार रखने का ह़ुक्म दिया गया है। चुनान्चे, उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है फ़रमाती हैं : "ह़ुज़ूरे पुरनूर शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मह़ल्लों में मस्जिदें बनाने का ह़ुक्म दिया और येह कि वोह साफ़ और ख़ुश्बूदार रखी जाएं।"(3)

---

(1) ......سنن ابن ماجة، کتاب المساجد، مایکرہ ۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۴۱۵، حدیث: ۷۵۰۔

(2) ......درمختار وردالمحتار، ج ۲، ص ۵۱۸۔

(3) ......ابوداود، کتاب الصلاۃ، اتخاذ المساجد فی الدور، ج ۱، ص ۱۹۷، حدیث: ۴۵۵۔

मस्जिदों को ख़ुश्बूदार रखने के मुतअ़ल्लिक़ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़्बूआ़ 32 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "मस्जिदें ख़ुश्बूदार रखिये" का मुत़ालआ़ कीजिये।

फ़ारूक़े आ'ज़म और मरीज़ों की इयादत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत ही ग़म ख़्वार थे और क़ल्बी तौ़र पर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इस क़दर रह़्म दिल और शफ़ीक़ थे कि किसी मुसलमान का छोटी से छोटी तक्लीफ़ में मुब्तला होना भी गवारा न था। येही वज्ह है कि हर वक़्त मुसलमानों की ग़म ख़्वारी और उम्मत की ख़ैर ख़्वाही में मश्ग़ूल रहते थे। मसरूफ़ तरीन शख़्सिय्यत होने के बा वुजूद अपने बीमार अस्ह़ाब की इयादत करना भी आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ़दाते मुबारका में शामिल था।

बारगाहे रिसालत में मरीज़ की इयादत का इक़रार

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मुख़्तलिफ़ आ'माल के बारे में इस्तिफ़्सार फ़रमाया जिन में मरीज़ की इयादत का भी ज़िक्र था तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत में इक़रार किया कि : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने मरीज़ की इयादत की है।''(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म मौला अ़ली की इयादत के लिये गए

एक बार मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) बीमार हो गए, जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को मा'लूम हुवा तो उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ दोनों से इरशाद फ़रमाया कि ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बीमार हो गए हैं, हमें उन की इयादत के लिये ज़रूर जाना चाहिये। चुनान्चे, तीनों मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) के घर पहुंचे और फिर वहां निहायत ही **दिलचस्प मदनी मुकालमा** हुवा।(2)

मरीज़ों की इयादत से मुतअ़ल्लिक़ मरविय्यात

और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरीज़ों की इयादत से मुतअ़ल्लिक़ कई मरविय्यात भी हैं। चुनान्चे,

---

1 ......مسند امام احمد، مسند انس بن مالک، ج ۴، ص ۲۳۷، حدیث: ۱۲۱۸۲

2 ......روح البیان، پ ۱۳، الرعد، تحت الآیۃ: ۱۳، ج ۴، ص ۳۷۷۔

येह **दिलचस्प मदनी मुकालमा** पढ़ने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 723 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर'' स. 168 का मुत़ालआ़ कीजिये।

(1) ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "क़ियामत के दिन पुकारने वाला पुकारेगा : कहां हैं वोह लोग जो दुन्या में फ़ुक़रा व मसाकीन और मरीज़ों की इयादत करते थे।" पस (जब वोह हाज़िर होंगे तो) उन्हें नूर के मिम्बरों पर बिठाया जाएगा जहां येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से शरफ़े कलाम हासिल करेंगे जब कि लोग हिसाब दे रहे होंगे।"[1]

(2) हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि : "जब तुम किसी मरीज़ के पास जाओ तो उस से अपने लिये दुआ की दरख़्वास्त करो क्यूंकि उस की दुआ फ़िरिश्तों की दुआ की तरह होती है।"[2]

फ़ारूके़ आ'ज़म और लवाहिक़ीन से ता'ज़ियत

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसलमानों की ग़म ख़्वारी फ़रमाते। अगर किसी का इन्तिक़ाल हो जाता तो उस के जनाज़े में भी ज़रूर शिर्कत फ़रमाते। नीज़ मय्यित के क़रीबी रिश्तेदारों से ता'ज़ियत भी फ़रमाते। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक नेक परहेज़गार नौजवान की क़ब्र पर तशरीफ़ ले जाने वाला वाक़िआ बहुत ही मशहूर है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस नौजवान को जानते थे और उस की इबादात पर तअज्जुब फ़रमाते थे, बा'दे अज़ां उस का रात के वक़्त इन्तिक़ाल हो गया और उस के घर वालों ने रातों रात उस का जनाज़ा वग़ैरा पढ़ के दफ़्ना दिया। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मा'लूम हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस के घर वालों से शिक्वा किया कि तुम लोगों ने मुझे क्यूं न बताया ? उन्हों ने रात का उ़ज़्र किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस की क़ब्र पर तशरीफ़ ले गए और उस नौजवान से गुफ़्तगू फ़रमाई।[3]

फ़ारूके़ आ'ज़म और मुख़्तलिफ़ उ़लूम

फ़ारूके़ आ'ज़म को बारगाहे रिसालत से इल्म अ़ता हुवा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कुरआनो ह़दीस के बहुत बड़े आ़लिम होने के साथ साथ दीगर कई उ़लूम में महारते

---

1 ......جمع الجوامع، الياء مع الصاد، ج ۹، ص ۲۵۶، حديث: ۲۸۵۷۳ ملتقطاً۔

2 ......ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ماجاء في عيادة المريض، ج ۲، ص ۱۹۱، حديث: ۱۴۴۱۔

3 ......تاريخ ابن عساكر، ج ۴۵، ص ۴۵۰، حجة الله على العالمين، المطلب الثالث في ذكر جملة ـــ الخ، من كرامات عمر، ص ۲۱۲ مختصراً۔

इस वाक़िए की तफ़्सील के लिये इसी किताब का मौज़ूअ़ "करामाते फ़ारूके़ आ'ज़म" स. 624 मुलाहज़ा कीजिये।

ताम्मा रखते थे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इल्म की दौलत बारगाहे रिसालत से अ़ता हुई थी। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साहिबज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मैं सोया हुवा था, ख़्वाब में क्या देखता हूं कि दूध से लबालब एक प्याला मुझे पेश किया गया। मैं ने उस से पिया और इतना सैर हो गया कि मुझे यूं लगा जैसे मेरे नाख़ुनों के नीचे भी उस दूध की तरी पहुंच गई है। बचा हुवा दूध मैं ने उ़मर फ़ारूक़ को दे दिया।" लोगों ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप ने इस से क्या मफ़्हूम लिया है ?" फ़रमाया : "इल्म।"(1)

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इल्म के बारे में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के तीन इरशादात पेशे ख़िदमत हैं

﴾1﴿ फ़ारूक़े आ'ज़म का इल्म तमाम क़बाइले अ़रब के इल्म से ज़ियादा वज़्नी

۞......لَوْ وُضِعَ عِلْمُ اَحْيَاءِ الْعَرَبِ فِیْ كِفَّةِ مِيْزَانٍ وَوُضِعَ عِلْمُ عُمَرَ فِیْ كِفَّةٍ لَرَجَحَ عِلْمُ عُمَرَ "या'नी अगर अ़रब के तमाम क़बाइल का इल्म मीज़ान के एक पलड़े में और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इल्म दूसरे पलड़े में रखा जाए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वाला पलड़ा भारी रहेगा।"(2)

﴾2﴿ इल्म के नौ हिस्से फ़ारूक़े आ'ज़म के पास हैं

۞.....لَقَدْ كَانُوْا يَرَوْنَ اَنَّهٗ ذَهَبَ بِتِسْعَةِ اَعْشَارِ الْعِلْمِ "या'नी सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان तो समझते थे कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इल्म के दस में से नौ हिस्से अपने साथ ले गए।"(3)

﴾3﴿ एक साल इल्म हासिल करने से ज़ियादा अफ़्ज़ल

۞.....لَمَجْلِسٌ كُنْتُ اَجْلِسُهٗ مَعَ عُمَرَ اَوْثَقُ فِیْ نَفْسِیْ مِنْ عَمَلِ سَنَةٍ "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के एक इल्मी ह़ल्क़े में शिर्कत करना मेरे नज़्दीक एक साल अ़मल करने से भी ज़ियादा बेहतर है।"(4)

---

1 ......مسلم، فضائل الصحابه، من فضائل عمر، ص ۱۳۰۲، حديث: ۱٦۔

2 ......مصنف ابن ابی شيبة، كتاب الفضائل، باب ما ذكر في فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۸۳، حديث: ۳٦۔

3 ......الاستيعاب، عمر بن الخطاب، ج ۳، ص ۲۳۹۔

4 ......الاستيعاب، عمر بن الخطاب، ج ۳، ص ۲۳۹۔

तमाम लोगों का इल्म एक सूराख़ में समा जाए

हज़रते सय्यिदुना आ'मश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه हज़रते सय्यिदुना शिम्र رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत करते हुवे फ़रमाते हैं : لَكَاَنَّ عِلْمَ النَّاسِ كَانَ مَدْسُوسًا فِيْ جُحْرٍ مَعَ عِلْمِ عُمَرَ "या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के इल्म के मुक़ाबले में तमाम लोगों का इल्म इतना है कि वोह एक छोटे से सूराख़ में समा जाए।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म दो तिहाई इल्म ले गए

हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मैमून رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ذَهَبَ عُمَرُ بِثُلُثَيِ الْعِلْمِ "या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه दो तिहाई इल्म ले गए।"(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म और हुसूले इल्मे दीन

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को इल्म की येह दौलत बारगाहे रिसालत से ही अ़ता हुई थी और आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने कुरआनो ह़दीस का इल्म ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ही ह़ासिल किया। आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه हुसूले इल्मे दीन का कोई मौक़अ़ हाथ से न जाने देते और आप की आ़दते मुबारका थी कि गाहे ब गाहे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इल्मी सुवालात वग़ैरा करते ही रहते थे, और इस मुआ़मले में बे शुमार अह़ादीसे मुबारका मौजूद हैं चुनान्चे,

फ़ारूक़े आ'ज़म का ए'तिकाफ़ की नज़्र के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ए'तिकाफ़ की नज़्र के बारे में सुवाल किया जो आप ने ज़मानए जाहिलिय्यत में मानी थी तो सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे पूरा करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया।(3)

---

1 ....مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الفضائل، ما ذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۸۶، حدیث: ۵۵۔

2 ....تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۲۸۶۔

3 ....بخاری، کتاب الایمان والنذور، باب اذا نذر۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۳۰۲، حدیث: ۶۶۹۷۔

फ़ारूके आ'ज़म का ज़ानिया की नमाज़े जनाज़ा के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल

हज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हसीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक औ़रत ने ज़िना किया, हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के रजम का हुक्म दिया। बा'दे अज़ां उस की नमाज़े जनाज़ा का भी आप ने हुक्म इरशाद फ़रमाया। तो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या आप इस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ेंगे हालांकि इस ने ज़िना किया है ?'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''इस औ़रत ने ऐसी तौबा की है कि अगर इस की तौबा मदीनए मुनव्वरा के सत्तर गुनाहगारों में बांटी जाए तो सब की बख़्शिश हो जाए। उस से बढ़ कर अफ़ज़ल शख़्स कौन हो सकता है जिस ने अपनी जान को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में पेश कर दिया।''(1)

फ़ारूके आ'ज़म और रसूलुल्लाह के इल्मी ख़ज़ाने

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उ़लूमे अव्वलीनो आख़िरीन के जामेअ़ हैं। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब बारगाहे रिसालत में हाज़िर होते तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इल्मी ख़ज़ाने से फ़ैज़याब होते ही रहते। बसा औक़ात ऐसा भी होता कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कोई बात मुख़्तसर बयान फ़रमाते लेकिन अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिज़ाज शनासे रसूल थे, फ़ौरन समझ जाते कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आज अ़ता फ़रमाना चाहते हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ौरन सुवाल करते और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मज़ीद वज़ाहत फ़रमाते। चुनान्चे, यौमे आ़शूरा दस मुहर्रमुल हराम से मुतअ़ल्लिक़ एक इल्मी और नफ़ीस रिवायत मुलाहज़ा कीजिये :

यौमे आ़शूरा से मुतअ़ल्लिक़ एक इल्मी नफ़ीस रिवायत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ۞ ''जिस ने अपनी त़रफ़ से किसी मोमिन को आ़शूरा के दिन रोज़ा इफ़्त़ार कराया

---

1 ....مسلم، کتاب الحدود، باب من اعترف علی نفسہ بالزنی، ص ۹۳۳ ، حدیث: ۲۴ ملتقطاً

गोया उस ने मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की सारी उम्मत को रोज़ा इफ़्तार कराया और उसे सैर किया।" ❁ "जिस ने आ़शूरा के दिन यतीम के सर पर हाथ फेरा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये उस यतीम के सर के हर बाल के बदले जन्नत में एक दरजा बुलन्द फ़रमाएगा।" ❁ "जिस ने आ़शूरा के दिन किसी मिस्कीन को कपड़ा पहनाया गोया उस ने मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की सारी उम्मत के मसाकीन को कपड़ा पहनाया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नती ह़ुल्लों में से सत्तर[70] ह़ुल्ले पहनाएगा।"

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में बसद इ़ज़्ज़ व एह़तिराम अ़र्ज़ किया : يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ لَقَدْ فَضَّلَنَا اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ بِيَوْمِ عَاشُوْرَاءَ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमें आ़शूरा के दिन के सबब इतनी फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई है?" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब, हम गुनाहगारों के त़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

❁ "ऐ उ़मर ! ज़मीनो आस्मान को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आ़शूरा के दिन पैदा फ़रमाया।" ❁ "सूरज, चांद और सितारों को भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आ़शूरा के दिन पैदा फ़रमाया।" ❁ "अ़र्श व कुरसी को भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आ़शूरा के दिन पैदा फ़रमाया।" ❁ "क़लम और लौह़ को भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आ़शूरा के दिन पैदा फ़रमाया।" ❁ "जिब्रीले अमीन और दीगर मलाइका को भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आ़शूरा के दिन पैदा फ़रमाया।" ❁ "ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام और ह़व्वा عَلَيْهَا السَّلَام को भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आ़शूरा के दिन पैदा फ़रमाया।" ❁ "जन्नत को भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आ़शूरा के दिन पैदा फ़रमाया।" ❁ "ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने आ़शूरा के दिन जन्नत में सुकूनत इख़्तियार फ़रमाई।" ❁ "ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام आ़शूरा के दिन पैदा हुवे।" ❁ "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें आ़शूरा के दिन आग से नजात अ़ता फ़रमाई।" ❁ "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आ़शूरा के दिन इन की रहनुमाई फ़रमाई।" ❁ "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़िरऔ़न को आ़शूरा के दिन ग़र्क़ फ़रमाया।" ❁ "ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आ़शूरा के दिन आस्मान पर उठाया।" ❁ "ह़ज़रते इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आ़शूरा के दिन आस्मानों पर उठाया।" ❁ "ह़ज़रते ईसा बिन मरयम عَلَيْهِمَا السَّلَام आ़शूरा के दिन पैदा हुवे" ❁ "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आ़शूरा के दिन ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तौबा क़बूल फ़रमाई।" ❁ "ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की कश्ती आ़शूरा के दिन जूदी पहाड़ पर ठहरी।" ❁ "ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को आ़शूरा के दिन क़ैद से निकाला गया।" ❁ "ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام

की क़ौम की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आ़शूरा के दिन तौबा क़बूल फ़रमाई।" ❁ "ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام को आ़शूरा के दिन बादशाही अ़त़ा की गई। ❁ "क़ियामत भी आ़शूरा के दिन ही क़ाइम होगी।" ❁ "आस्मान से पहली बारिश भी आ़शूरा के दिन ही हुई।"(1)

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ न सिर्फ़ खुद इल्मे दीन ह़ासिल किया करते थे बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों को भी इस की तरग़ीब दिलाया करते थे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से हुसूले इल्मे दीन से मुतअ़ल्लिक़ कई अक़्वाल मौजूद हैं। चुनान्चे,

हुक्मरानों को इल्मे दीन सीखने की नसीहत

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़वस बिन ह़कीम बिन उ़मैर अ़नसी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जंगी लश्करों के सिपह सालारों के नाम मक्तूब लिखा और इरशाद फ़रमाया :

تَفَقَّهُوْا فِى الدِّيْنِ فَاِنَّهُ لَا يُعْذَرُ اَحَدٌ بِاِتِّبَاعِ بَاطِلٍ وَهُوَ يَرٰى اَنَّهُ حَقٌّ وَلَا يُتْرَكُ حَقٌّ وَهُوَ يَرٰى اَنَّهُ بَاطِلٌ

"या'नी दीन में समझ बूझ पैदा करो, क्यूंकि जहालत के सबब बात़िल को ह़क़ समझ कर उस की इत्तिबाअ़ करने और ह़क़ को बात़िल समझ कर उसे तर्क करने का उ़ज़्र क़बूल नहीं किया जाएगा।"(2)

सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री को मक्तूब

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ एक मक्तूब लिखा और ह़म्दो सलात के बा'द इरशाद फ़रमाया : تَفَقَّهُوْا فِى السُّنَّةِ وَتَفَقَّهُوْا فِى الْعَرَبِيَّةِ وَاَعْرِبُوا الْقُرْآنَ فَاِنَّهُ عَرَبِيٌّ وَتَمَعْدَدُوْا فَاِنَّكُمْ مَّعْدِيُّوْنَ "या'नी सुन्नत में समझ बूझ पैदा करो और अ़रबी ज़बान को अच्छी त़रह़ सीखो और क़ुरआने पाक को अ़रबी लहजे में पढ़ो कि वोह अ़रबी है और अपने आप को त़ाक़तवर बनाओ कि तुम मअ़द बिन अ़दी की औलाद हो।"(3)

---

1. ......بستان الواعظین، مجلس فی فضل یوم عاشوراء، ص ۲۲۸۔
2. ......کنزالعمال، کتاب العلم، فی فضله والتعریض علیه، الجزء: ۱۰، ج۵، ص ۱۱۱، حدیث: ۲۹۳۳۵۔
3. ......مصنف ابن ابی شیبة، کتاب فضائل القرآن، ماجاء فی اعراب القرآن، ج۷، ص ۱۵۰، حدیث: ۳۔

आम लोगों को हुसूले इल्मे दीन की तरग़ीब

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

- ..... تَعَلَّمُوا الْعِلْمَ وَعَلِّمُوْهُ النَّاسَ "ख़ुद भी इल्म हासिल करो और लोगों को भी सिखाओ।"
- ..... وَتَعَلَّمُوا لَهُ الْوَقَارَ وَالسَّكِيْنَةَ "और इल्म के लिये वक़ार और सकीना सीखो।"
- ..... وَتَوَاضَعُوْا لِمَنْ تَعَلَّمْتُمْ مِّنْهُ الْعِلْمَ "और जिस से तुम इल्म सीखो उस के सामने आजिज़ी इख़्तियार करो।"
- ..... وَتَوَاضَعُوا لِمَنْ عَلَّمْتُمُوْهُ الْعِلْمَ "और जिन्हें तुम इल्म सिखाओ उन के सामने भी आजिज़ी इख़्तियार करो।"
- ..... وَلَا تَكُوْنُوْا جَبَابِرَةَ الْعُلَمَاءِ فَلَا يَقُوْمُ عِلْمُكُمْ بِجَهْلِكُمْ "और मुतकब्बिर आलिम न बनो कि तुम्हारा इल्म जहालत के साथ क़ाइम नहीं रह सकता।"[1]

क़ुरआन के हाफ़िज़ और इल्म के चश्मे बन जाओ

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उयैना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

كُوْنُوْا اَوْعِيَةَ الْكِتَابِ وَيَنَابِيْعَ الْعِلْمِ، وَعُدُّوْا اَنْفُسَكُمْ مِّنَ الْمَوْتٰى وَاسْاَلُوْا اللّٰهَ رِزْقًا يَوْمًا بِيَوْمٍ، وَلَا يَضُرُّكُمْ اِنْ يَكْثُرَ لَكُمْ

"या'नी क़ुरआन के हाफ़िज़ और इल्म के चश्मे बनो, अपने आप को मुर्दों में शुमार करो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से हर दिन नया रिज़्क़ मांगो, फिर अगर तुम्हें ज़ियादा मिल जाए तो तुम्हें नुक़्सान नहीं देगा।"[2]

फ़ारूक़े आ'ज़म का अपने अस्हाब से इल्मी मुज़ाकरा

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह आदते मुबारका थी कि आप अपने अस्हाब से इल्मी मुज़ाकरात व मुनाज़रे करते रहते थे।

चुनान्चे, शाह वलिय्युल्लाह मुहद्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इरशाद फ़रमाते हैं :

كَانَ مِنْ سِيْرَةِ عُمَرَ اَنَّهُ كَانَ يُشَاوِرُ الصَّحَابَةَ وَيُنَاظِرُهُمْ حَتّٰى تَنْكَشِفَ الْغُمَّةُ وَيَاْتِيَهِ الثَّلْجُ فَصَارَ غَالِبُ قَضَايَاهُ وَفَتَاوَاهُ مُتَّبَعَةً فِيْ مَشَارِقِ الْاَرْضِ وَمَغَارِبِهَا

---

1 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی نشر العلم، ج ۲، ص ۲۸۷، حدیث: ۱۷۸۹۔

2 ......الزهد للامام احمد، زهد عمر بن الخطاب، ص ۱۴۸، الرقم: ۶۳۲۔

''या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते त़य्यिबा में से येह भी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने अस्ह़ाब के साथ इ़ल्मी मुज़ाकरे व मुनाज़रे फ़रमाया करते थे यहां तक कि मुआ़मला बिल्कुल वाज़ेह़ और साफ़ हो जाता येही वज्ह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ैसलों और फ़तावा की मशरिक़ो मग़रिब में धूम थी।''(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म कमसिन अस्ह़ाब का हौसला बढ़ाते

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ न सिर्फ़ इ़ल्मी मुबाह़से को पसन्द फ़रमाते और इ़ल्मी मुनाज़रे फ़रमाते बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़ल्क़ए अह़बाब में जो अस्ह़ाब ह़ुसूले इ़ल्म में दिलचस्पी लेते आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन की ह़ौसला अफ़्ज़ाई भी फ़रमाया करते थे। ख़ुसूसन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की, कि येह दोनों हमा वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़ेरे तरबिय्यत रहते थे। चुनान्चे,

सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर की हौसला अफ्ज़ाई

एक बार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर थे, आप के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर थे। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को मुख़ात़ब कर के एक सुवाल पूछा और इरशाद फ़रमाया : اِنَّ مِنَ الشَّجَرِ شَجَرَةً لَا يَسْقُطُ وَرَقُهَا وَهِيَ مَثَلُ الْمُؤْمِنِ حَدِّثُوْنِيْ مَاهِيَ ''या'नी ऐ मेरे सह़ाबा ! बेशक एक दरख़्त है, जिस के पत्ते नहीं गिरते और वोह मोमिन की मिस्ल है, बताओ कि वोह कौन सा दरख़्त है ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : وَقَعَ فِيْ نَفْسِيْ اَنَّهَا النَّخْلَةُ ''या'नी मेरे दिल में उस का जवाब आया कि वोह खजूर का दरख़्त है, लेकिन मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और अपने वालिदे गिरामी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मौजूदगी में बोलने से झिजक मह़सूस की, कि जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इतने जलीलुल क़द्र सह़ाबा ख़ामोश हैं तो मैं क्यूं बोलूं ?'' सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

1 ......حجۃ اللہ البالغۃ، باب کیفیۃ تلقی۔۔۔الخ، ص ۱۳۲۔

ने खुद ही जवाब इरशाद फ़रमाया कि वोह खजूर का दरख़्त है। बा'द में मैं ने अपने वालिद से इस बात का इज़्हार किया कि मुझे इस सुवाल का जवाब आता था लेकिन मैं आप लोगों की वज्ह से न बोल सका तो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आइन्दा के लिये मेरा हौसला बढ़ाते हुवे इरशाद फ़रमाया : لَاَنْ تَكُوْنَ قُلْتَهَا اَحَبُّ اِلَيَّ مِنْ اَنْ يَّكُوْنَ لِيْ كَذَا وَكَذَا ''या'नी ऐ बेटे ! अगर तू रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने अपने जवाब का इज़्हार कर देता तो येह मुझे फ़ुलां फ़ुलां चीज़ से ज़ियादा महबूब था।''[1]

सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास की हौसला अफ़्ज़ाई

एक बार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने खुद ही लोगों से एक आयते मुबारका की तफ़्सीर के मुतअ़ल्लिक़ इस्तिफ़्सार फ़रमाया तो लोगों ने इन्कार किया लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के शागिर्दे रशीद हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया कि इस के मुतअ़ल्लिक़ मेरे ज़ेह्न में कुछ है। तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन की हौसला अफ़्ज़ाई करते हुवे उन से इरशाद फ़रमाया : يَا ابْنَ اَخِيْ قُلْ وَلَا تَحْقِرْ نَفْسَكَ ''या'नी ऐ मेरे भतीजे ! अगर तुम्हें मा'लूम है तो ज़रूर बताओ और अपने आप को हक़ीर (या'नी छोटा) न समझो।''[2]

फ़ारूके आ'ज़म और इल्मुल इफ़्ता

फ़ारूके आ'ज़म ज़मानए नबवी के मुफ़्ती थे

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा गया : مَنْ كَانَ يُفْتِي النَّاسَ فِيْ زَمَانِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ''या'नी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में कौन फ़तवे दिया करता था ?'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اَبُوْ بَكْرٍ وَعُمَرُ مَا اَعْلَمُ غَيْرَهُمَا ''या'नी मैं सिर्फ़ दो शख़्सिय्यात हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इलावा किसी को नहीं जानता जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में फ़तवा दिया करता हो।''[3]

---

1 ......ترمذی، کتاب الامثال، ماجاء فی مثل المؤمن۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۳۹۲، حدیث: ۲۸۷۶۔
2 ......بخاری، کتاب تفسیر القرآن، قوله ایود احدکم۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۱۸۵، حدیث: ۴۵۳۸۔
3 ......اسد الغابة، عبد اللہ بن عثمان ابوبکر، ج ۳، ص ۳۳۰۔

फ़ारूके़ आ'ज़म जामेए शराइत मुफ़्ती थे

हज़रते सय्यिदुना हुजै़फ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं : اِنَّمَا یُفْتِی النَّاسَ ثَلَاثَۃٌ رَجُلٌ اِمَامٌ اَوْ وَالِیٌ اَوْ رَجُلٌ یَعْلَمُ نَاسِخَ الْقُرْآنِ مِنَ الْمَنْسُوخِ "या'नी लोगों को सिर्फ़ तीन लोग फ़तवा दे सकते हैं : या तो इमामुल मुस्लिमीन हो या हुकूमती ओ़हदे दार हो या वोह शख़्स जो कुरआने पाक के नासिख़ व मन्सूख़ का इल्म जानता हो।" लोगों ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! ऐसा कौन शख़्स है जिस में येह शराइत़ पाई जाती हों ?" फ़रमाया : "अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ।"(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म और किताबते वह्य

अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इरशाद फ़रमाते हैं : "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कई अस्हाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ऐसे हैं जो कातिबे वह्य थे बा'ज़ के अस्मा येह हैं : (1) हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ (2) हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (3) हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी (4) हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा (5) हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब (6) हज़रते सय्यिदुना ज़ैद (7) हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विय्या (8) हज़रते सय्यिदुना हन्ज़ला बिन रबीअ़ (9) हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन सईद बिन आ़स (10) हज़रते सय्यिदुना अबान बिन सईद (11) हज़रते सय्यिदुना अ़ला बिन हज़रमी (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن)(2)

फ़ारूके़ आ'ज़म रसूलुल्लाह के बाईं तरफ़ बैठते थे

हज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बाक़िर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से और वोह अपने दादा हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं :

۞....."**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब तशरीफ़ फ़रमा होते तो हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप के दाईं जानिब बैठते और हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बाईं जानिब बैठते थे और हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने बैठते थे।"

---

1 .....دارمی، باب فی الذی یفتی۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۷۳، حدیث: ۱۷۱۔

2 .....کشف المشکل من حدیث الصحیحین، ج ۱، ص ۲۷۳۔

.....''येह तीनों रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सर बस्ता राज़ (या'नी वह्य वग़ैरा) लिखा करते थे।''

.....''जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ लाते तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी जगह ख़ाली कर देते और वोह उन की जगह तशरीफ़ फ़रमा होते।''(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म और इल्मे किताबुल्लाह

फ़ारूके़ आ'ज़म किताबुल्लाह के आ़लिम और फ़क़ीह

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं : ''दो आदमियों के माबैन एक आयते मुबारका की क़िराअत में इख़्तिलाफ़ हो गया, इतने में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ ले आए, दोनों ने अपना मुआ़मला आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में पेश किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पहले शख़्स से फ़रमाया कि तुम्हें यूं किस ने पढ़ाया ? उस ने अ़र्ज़ किया कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़मरह मा'क़िल बिन मुक़र्रिन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने। फिर दूसरे से इस्तिफ़्सार फ़रमाया तो उस ने अ़र्ज़ किया कि मुझे अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पढ़ाया है।''

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ''येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इतना रोए कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आस्तीन आंसूओं से भीग गईं और मैं ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के रोने के सबब आंसूओं के निशानात देखे।'' फिर सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

مَا اَظُنُّ اَهْلَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ لَمْ يَدْخُلْ عَلَيْهِمْ حُزْنُ عُمَرَ يَوْمَ اُصِيْبَ
عُمَرُ اِلَّا اَهْلَ بَيْتِ سُوْءٍ اِنَّ عُمَرَ كَانَ اَعْلَمَنَا بِاللّٰهِ وَاَقْرَاَنَا لِكِتَابِ اللّٰهِ وَاَفْقَهَنَا فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِقْرَاْهَا كَمَا اَقْرَاَكَهَا عُمَرُ

''या'नी मैं उस घर वालों को बहुत बुरा समझता हूं जिन्हें अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल के दिन उन की वफ़ात का सदमा न पहुंचा। बेशक आप हम में सब से ज़ियादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त रखने वाले, किताबुल्लाह के सब से बड़े क़ारी और दीने इलाही के सब से बड़े फ़क़ीह थे, तुम इस आयत को वैसा ही पढ़ा करो जैसा सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तुम्हें पढ़ाया।''(2)

---

1 ..... كنز العمال، كتاب الفضائل، عباس بن عبد المطلب، الجزء: ١٣، ج ٧، ص ٢٢٤، حديث: ٣٧٣٤٨۔

2 ..... مصنف ابن ابی شيبة، كتاب الفضائل، ما ذكر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ٧، ص ٤٨٠، حديث: ٢١۔
معجم كبير، عبد الله بن مسعود الهذلی، ج ٩، ص ١٦١، حديث: ٨٨٠٣ ملتقطاً۔

सब से बड़े आ़लिम की सोहबत

हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद असदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सोहबत इख़्तियार की तो मैं ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बढ़ कर किसी को क़ुरआने पाक का आ़लिम, दीन का फ़क़ीह और मुदर्रिस नहीं देखा।" मज़ीद फ़रमाते हैं : "सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रिह़लत से इ़ल्म के दस10 हिस्सों में से नौ9 हिस्से जाते रहे।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म की ला जवाब क़ुरआन फ़हमी

हज़रते सय्यिदुना त़ारिक़ बिन शिहाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि यहूद में से एक शख़्स (या'नी हज़रते सय्यिदुना का'ब अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहने लगे : "क़ुरआन में एक ऐसी आयत है कि अगर वोह हमारे दीन में उतरती तो उस आयत के नाज़िल होने के दिन को हम बत़ौरे ई़द मनाया करते।" आप ने फ़रमाया : "वोह कौन सी आयत है?" कहने लगे : ﴿اَلْیَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِیْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَیْكُمْ نِعْمَتِیْ وَ رَضِیْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِیْنًا﴾ (پ۶، المائدۃ: ۳) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द किया।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मुझे मा'लूम है कि येह कब और कहां नाज़िल हुई थी। नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अ़रफ़ात में मौजूद थे और जुमुआ़ का दिन था जब येह आयते करीमा सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर नाज़िल हुई।"(2)

ह़दीसे मुबारका की शर्ह़

हज़रते अ़ल्लामा यह़्या बिन शरफ़ुद्दीन नववी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में इरशाद फ़रमाते हैं : "अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुराद येह थी कि हम ने दो वज्हों से इस दिन को ई़द बना लिया क्यूंकि येह दिन यौमे अ़रफ़ा था और यौमे जुमुआ़ भी था और इन में से हर दिन मुसलमानों के लिये ई़द ही है।"(3)

---

1 ..... رياض النضرة، ج ۱، ص ۳۲۲۔

2 ..... بخاری، کتاب الایمان، زیادۃ الایمان ونقصانه، ج ۱، ص ۲۸، حدیث: ۴۵، مسلم، کتاب التفسیر، ص ۱۶۰۹، حدیث: ۵۔

3 ..... شرح نووی، کتاب التفسیر، الجزء: ۱۸، ج ۹، ص ۱۵۳۔

सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى इस ह़दीसे मुबारका की शर्ह़ बयान करते हुवे मज़्कूरा सूरए माइदह की आयत नम्बर 3 के तह़त तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इरशाद फ़रमाते हैं : "आप (या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه) की मुराद इस से येह थी कि हमारे लिये वोह दिन ई़द है। तिर्मिज़ी शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) से मरवी है आप से भी एक यहूदी ने ऐसा ही कहा आप ने फ़रमाया कि जिस रोज़ येह नाज़िल हुई उस दिन दो[2] ई़दें थीं जुमुआ़ व अ़रफ़ा।

मस्अला : इस से मा'लूम हुवा कि किसी दीनी कामयाबी के दिन को खुशी का दिन मनाना जाइज़ और सह़ाबा से साबित है वरना (अमीरुल मोमिनीन) ह़ज़रते (सय्यिदुना) उ़मर (फ़ारूके़ आ'ज़म) व (ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह) बिन अ़ब्बास (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) साफ़ फ़रमा देते कि जिस दिन कोई खुशी का वाक़िआ़ हो उस की यादगार क़ाइम करना और उस रोज़ को ई़द मनाना हम बिदअ़त जानते हैं। इस से साबित हुवा कि ई़दे मीलाद मनाना जाइज़ है क्यूंकि वोह اَعظم نِعَمِ اِلٰهِيَّه (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों में से सब से बड़ी ने'मत सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की यादगार व शुक्र गुज़ारी है।"

तुम अहले कु़रआन कहलाने लगो

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : تَعَلَّمُوْا كِتَابَ اللهِ تَعَرَّفُوْا بِهٖ وَاعْمَلُوْا بِهٖ تَكُوْنُوْا مِنْ اَهْلِهٖ "या'नी कुरआने पाक की ता'लीम ह़ासिल करो, इस की मा'रिफ़त ह़ासिल करो और इस पर ऐसा अ़मल करो कि तुम आ़मिले कुरआन कहलाने लगो।"[1]

फ़ारूके़ आ'ज़म और इल्मुत्तह़रीर

लिखना पढ़ना तो आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने ज़मानए जाहिलिय्यत में ही सीख लिया था, येही वज्ह थी कि आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه अ़ह्दे रिसालत के कातिबे वह़्य भी थे, अलबत्ता आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की तह़रीर आप के दौरे ख़िलाफ़त में बहुत ज़ियादा निखर कर लोगों के सामने ज़ाहिर हुई क्यूंकि जब आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों में वुस्अ़त हुई और उन अ़लाक़ों में आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के मुक़र्रर कर्दा

1 .....مصنف ابن ابی شیبة، کتاب فضائل القرآن، فی التمسک بالقرآن، ج ۷، ص ۱۲۵، حدیث: ۸۔

उ़म्माल और गवर्नरों की ता'दाद में इज़ाफ़ा हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन से राबिते़ का एक ज़रीआ़ तह़रीर भी था और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने गवर्नरों को हर त़रह़ की इस्लाही़ व सियासी तह़रीरें लिखा करते थे जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इ़ल्मुत्तह़रीर का मुंह बोलता सुबूत हैं।

फ़ारूक़े आ'ज़म और इ़ल्मुत्तक़रीर

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इ़ल्मुत्तक़रीर के भी बड़े माहिर थे, आप एक बेहतरीन मुक़र्रिर थे, और आप की ज़ाते मुबारका में येह मल्का ज़मानए जाहिलिय्यत से ही मौजूद था, सीरत निगारों ने इस बात को बयान किया है कि आप उ़काज़ के मेलों में तक़रीरी मुक़ाबलों में भी हि़स्सा लिया करते थे। एक बेहतरीन मुक़र्रिर के अन्दर जो सिफ़ात होनी चाहिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अन्दर वोह तमाम सिफ़ात ब दरजए अतम्म मौजूद थीं।

फ़ारूक़े आ'ज़म और इ़ल्मुल ख़ुत़बात

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दीगर उ़लूम के साथ साथ इ़ल्मुल ख़ुत़बात या'नी ख़ुत़बे देने के इ़ल्म में भी महारत रखते थे और आप की पूरी ख़ि़लाफ़त पर अगर नज़र डाली जाए तो आप के ख़ुत़बात की कई अक़्साम उभर कर सामने आ जाती हैं, आप के ख़ुत़बात में इस्लाही़ ख़ुत़बात, इ़ल्मी ख़ुत़बात, सियासी ख़ुत़बात, फ़िक्री ख़ुत़बात, नज़री ख़ुत़बात क़ाबिले ज़िक्र हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुख़्तलिफ़ ख़ुत़बात पढ़ने के लिये इसी किताब का मौज़ूअ़ "मल्फ़ूज़ाते फ़ारूक़े आ'ज़म" सफ़ह़ा 264 मुलाह़ज़ा कीजिये।

फ़ारूक़े आ'ज़म और इ़ल्मुल फ़राइज़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इ़ल्मुल फ़राइज़ (या'नी इ़ल्मुल मीरास) में भी कामिल दस्तरस रखते थे, बीसियों मसाइल ऐसे हैं जिन में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इजतिहाद फ़रमा कर उन मसाइल को अख़्ज़ फ़रमाया जिन की तफ़्सील कुतुबे फ़िक़्ह में मौजूद है, न सिर्फ़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इ़ल्मुल फ़राइज़ में माहिर थे बल्कि लोगों को भी इस की तरग़ीब दिलाया करते थे। चुनान्चे,

इल्मुल फ़राइज़ क़ुरआन की त़रह सीखो

हज़रते सय्यिदुना मुवर्रक़ अ़िजली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : تَعَلَّمُوا السُّنَنَ وَالْفَرَائِضَ وَاللَّحْنَ كَمَا تَعَلَّمُوْنَ الْقُرْآنَ "या'नी तुम सुनन व इल्मुल फ़राइज़ और ज़बान ऐसे सीखो जैसे क़ुरआने पाक सीखते हो।"(1)

इल्मुल फ़राइज़ सीखना दीन से है

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : تَعَلَّمُوا اللَّحْنَ وَالْفَرَائِضَ فَإِنَّهُ مِنْ دِيْنِكُمْ "या'नी ज़बान और इल्मुल फ़राइज़ सीखो कि येह भी तुम्हारे दीन में से है।"(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म की अ़रबी ज़बान में महारत

फ़ारूक़े आ'ज़म की अ़रबी ज़बान में महारत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हो सकता है किसी को येह बात बहुत ही अ़जीबो ग़रीब लगे कि "अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अ़रबी ज़बान के माहिर थे।" क्यूंकि वोह तो थे ही अ़रबिय्युन्नस्ल तो कैसे अ़रबी के माहिर न होते ? लेकिन ऐसा नहीं है क्यूंकि नस्ली अ़रबी होना और बात है और अ़रबी में महारत रखना और बात। जैसे किसी शख़्स का उर्दू ज़बान बोलना और बात है और इस में महारत होना और बात। येही वज्ह है कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ब ज़ाते ख़ुद लोगों को अ़रबी ज़बान सीखने और उस में महारत हासिल करने की तरग़ीब दिलाया करते थे। चुनान्चे,

अ़रबी ज़बान की समझ बूझ हासिल करो

हज़रते सय्यिदुना हसन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : عَلَيْكُمْ بِالتَّفَقُّهِ فِي الدِّيْنِ وَالتَّفَهُّمِ فِي الْعَرَبِيَّةِ وَحُسْنِ الْعِبَارَةِ "या'नी तुम पर लाज़िम है कि दीन की समझ बूझ हासिल करो और अ़रबी तह़रीर और गुफ़्तगू को अच्छा करो।"(3)

(1)......دارمی، کتاب الفرائض، باب فی تعلیم الفرائض، ج ۲، ص ۴۴۱، حدیث: ۲۸۵۰۔

(2)......مصنف ابن ابی شیبة، کتاب فضائل القرآن، ماجاء فی اعراب القرآن، ج ۷، ص ۱۵۰، حدیث: ۱۵۔

(3)......فضائل القرآن لابی عبید، باب اعراب القرآن۔۔۔الخ، ص ۳۵۰۔

ज़बान की इस्लाह़ करने वाले के लिये रह़्म की दुआ

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चन्द लोगों के पास से गुज़रे जो तीर अन्दाज़ी कर रहे थे अलबत्ता उन के निशाने दुरुस्त जगह पर नहीं लग रहे थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें देख कर इरशाद फ़रमाया : **مَا اَسْوَأُ رَمْيَكُمْ** "या'नी तुम लोग कितनी बुरी तीर अन्दाज़ी कर रहे हो !" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : **نَحْنُ مُتَعَلِّمِيْنَ** "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन अभी हम तीर अन्दाज़ी सीख रहे हैं।" **نَحْنُ مُتَعَلِّمِيْنَ** अ़रबी ग्रामर के लिह़ाज़ से ग़लत़ जुम्ला था, दुरुस्त **نَحْنُ مُتَعَلِّمُوْنَ** था, लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : **لَحْنُكُمْ اَشَدُّ مِنْ سُوْءِ رَمْيِكُمْ** "या'नी तुम्हारी ज़बान की ग़लती तुम्हारी तीर अन्दाज़ी की ग़लती से ज़ियादा बुरी है।" फिर इरशाद फ़रमाया कि मैं ने दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना : **رَحِمَ اللّٰهُ اِمْرَاً اَصْلَحَ مِنْ لِّسَانِهٖ** "या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स पर रह़्म फ़रमाए जो अपनी ज़बान की इस्लाह़ करे।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म और इ़ल्मुल मा'रिफ़त

फ़ारूक़े आ'ज़म सब से ज़ियादा मा'रिफ़ते इलाही रखने वाले

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन वह्ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : **اِنَّ عُمَرَ كَانَ اَعْلَمَنَا بِاللّٰهِ وَاَقْرَاَنَا لِكِتَابِ اللّٰهِ وَاَفْقَهَنَا فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ** "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हम में सब से ज़ियादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त रखने वाले, क़ुरआन की तिलावत करने वाले और दीन की समझ बूझ रखने वाले थे।"(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म और इ़ल्मुल अन्साब

इ़ल्मुल अन्साब की महारत विरसे में मिली

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इ़ल्मुल अन्साब में भी माहिर थे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह इ़ल्म विरासत में मिला था क्यूंकि आप के क़बीले के

---

1 ......كنز العمال، كتاب العلم، فى فضله والتحريض عليه، الجزء: ١٠، ج٥، ص ١١١، حديث: ٢٩٣٤٣۔

2 ......مصنف ابن ابى شيبه، كتاب الفضائل، ماذكر فى فضل عمر بن خطاب، ج٧، ص ٤٨٠، حديث: ٢١۔

ज़िम्मे सफ़ारत थी जिस के लिये इल्मुल अन्साब का जानना ना गुज़ीर था और येही वज्ह थी कि आप का क़बीला इल्मुल अन्साब में महारत रखता था और येह महारत आप को अपने वालिद से विरसे में मिली।

फ़ारूक़े आ'ज़म और इल्मुल क़िराअत

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चूंकि कातिबे वह्य थे और आप ने कुरआने पाक खुद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पढ़ा था इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इल्मुल किताब और खुसूसन इल्मुल क़िराअत के बहुत बड़े आलिम थे।

आप की बारगाह में क़ुर्रा हज़रात का मजमअ लगा रहता था

हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं : كَانَ مَجْلِسُ عُمَرَ مُغْتَصًّا عَنِ الْقُرَّاءِ شَبَاباً وَكَهُوْلاً فَرُبَّمَا اِسْتَشَارَهُمْ ''या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दरबार नौजवान और पुख़्ता उम्र के कुर्रा हज़रात से भरा होता था और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन से मुशावरत फ़रमाते रहते थे।'' और इरशाद फ़रमाया करते थे :

لَا يَمْنَعُ اَحَدَكُمْ حُدَاثَةَ سَنَةٍ اَنْ يُشِيْرَ بِرَاْيِهٖ فَاِنَّ الْعِلْمَ لَيْسَ عَلٰى حُدَاثَةِ السِّنِّ وَقِدَمِهٖ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى يَضَعُهٗ حَيْثُ يَشَاءُ

''या'नी तुम्हारी कम उम्री तुम्हें मश्वरा देने से न रोके क्यूंकि इल्म उम्र की कमी या ज़ियादती पर मौक़ूफ़ नहीं बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिसे चाहता है इल्म अता फ़रमाता है।''(1)

बीसियों वाक़िआत ऐसे मिलते हैं कि अगर कोई शख़्स कुरआने पाक की कोई ग़ैर मा'रूफ़ क़िराअत करता तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस की तफ़्तीश फ़रमाते। चुनान्चे,

अल्लाह व रसूल के मुआमले में आप की शिद्दत

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन हकीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दौरे नबवी में सूरए फ़ुरक़ान की तिलावत करते सुना तो वोह ऐसी क़िराअत कर रहे थे जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें नहीं सिखाई थी, क़रीब था कि मैं नमाज़ में ही उन से उलझ पड़ता लेकिन मैं ने खुद को रोके

---

(1) ......مصنف عبد الرزاق، كتاب الجامع، باب المستشار، ج ١٠، ص ٣٦٣، حديث: ٢١١١١ ملتقطاً

रखा । जब उन्हों ने सलाम फेरा तो मैं ने उन की चादर उन के गले में डाल ली और कहा : مَنْ اَقْرَاَکَ هٰذِهِ السُّوْرَةَ الَّتِیْ سَمِعْتُکَ تَقْرَءُ "या'नी येह सूरत तुम्हें किस ने ऐसे पढ़ाई है जैसे आज मैं ने तुम से सुनी है ?" वोह कहने लगे : "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ।" मैं ने कहा : كَذَبْتَ فَاِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَدْ اَقْرَاَنِیْهَا عَلٰی غَیْرِ مَا قَرَاْتَ "या'नी झूट कहते हो । मुझे तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किसी और त़रह़ पढ़ाई है ।" बहर ह़ाल मैं उन्हें खींचता हुवा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ले आया और अ़र्ज़ किया : اِنِّیْ سَمِعْتُ هٰذَا یَقْرَءُ بِسُوْرَةِ الْفُرْقَانِ عَلٰی حُرُوْفٍ لَمْ تُقْرِئْنِیْهَا "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं ने इसे उस त़रीके़ पर कु़रआने करीम पढ़ते सुना है जो आप ने मुझे नहीं सिखाया ।" आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "इसे छोड़ दो ।" फिर आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ हिशाम तुम पढ़ो ।" उन्हों ने आप को वैसे ही पढ़ कर सुना दिया जैसा नमाज़ में पढ़ा था । शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : كَذٰلِکَ اُنْزِلَتْ "या'नी येह ऐसे ही नाज़िल हुवा है ।" फिर फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! तुम पढ़ो ।" तो मैं ने यूं ही सुनाया जैसे मैं ने आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पढ़ा था । तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : كَذٰلِکَ اُنْزِلَتْ "या'नी येह सूरत ऐसे ही उतरी है ।" फिर फ़रमाया : اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ اُنْزِلَ عَلٰی سَبْعَةِ اَحْرُفٍ فَاقْرَءُوْا مَا تَیَسَّرَ مِنْهُ "या'नी येह कु़रआने पाक सात त़रीक़ों (क़िराअतों) पर उतरा है जो तुम्हें आसान लगे वैसे ही पढ़ लो ।"(1)

कु़रआने पाक की सात क़िराअतें

याद रहे नुज़ूले कु़रआन के वक़्त अकनाफ़े अ़रब में अ़रबी ज़बान के सात मुख़्तलिफ़ लबो लहजे जारी थे अहले नज्द का अपना लहजा था, बनू असद का अपना तर्ज़े तलफ़्फ़ुज़ था, अहले हिजाज़ अ़रबी अल्फ़ाज़ को अपने त़रीके़ से अदा करते थे । ऐसे में अगर कु़रआने करीम किसी ख़ास लुग़त पर उतार दिया जाता और येह हुक्म होता कि सिर्फ़ उसी लुग़त और लहजे में कु़रआन पढ़ा जाए दूसरे में नहीं तो येह अम्र उम्मत के लिये मशक़्क़त का बाइ़स होता । इस लिये कु़रआने करीम इन्ही सात मा'रूफ़ लुग़ात पर पढ़ने की इजाज़त दे दी गई जिन्हें अब क़िराअते सब्आ़ से ता'बीर किया जाता है ।

---

(1) ......بخاری، کتاب فضائل القرآن، باب انزل القرآن علی سبعة احرف، ج۳، ص۴۰۰، حدیث: ۴۹۹۲۔

बर्रे सग़ीर पाको हिन्द में जो क़िराअत राइज है वोह "क़िराअते आ़सिम ब रिवायते ह़फ़्स" है और इसी पर कुरआने पाक की तिलावत की जाती है।

फ़ारूक़े आ'ज़म और इ़ल्मुल फ़िक़्ह

फ़ारूक़े आ'ज़म दीन के सब से बड़े फ़क़ीह

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सबब जिस क़दर मसाइले शरइय्या दीने इस्लाम में ज़ाहिर और राइज हुवे इतने किसी सह़ाबी के सबब ज़ाहिर न हुवे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ब ज़ाते ख़ुद इ़ल्मी सुवालात किया करते थे और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन के जवाबात इरशाद फ़रमाते, इसी त़रह़ ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौर में भी आप का येही अन्दाज़ रहा और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन की शरई मुआ़मलात व मसाइल में भरपूर मुआ़वनत फ़रमाई। आप ने ब ज़ाते ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से तमाम उ़लूम ह़ासिल किये थे इस लिये जब आप का दौरे ख़िलाफ़त आया तो आप ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वोह फ़ैज़ ख़ल्क़े ख़ुदा तक कमाह़क़्क़ुहू पहुंचाया। जलीलुल क़द्र सह़ाबा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दीन का सब से बड़ा फ़क़ीह तस्लीम करते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं : اِنَّ عُمَرَ كَانَ اَفْقَهَنَا فِیْ دِیْنِ اللّٰه "या'नी बेशक अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हम में दीन के सब से बड़े फ़क़ीह थे।"(1)

अ़ह्दे रिसालत में सिर्फ़ चार मुफ़्ती थे

ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन सुलैम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

لَمْ يَكُنْ يُفْتِی فِیْ زَمَنِ النَّبِیِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ آلِهٖ وَ سَلَّمَ غَيْرَ عُمَرَ وَعَلِیٍّ وَ مُعَاذٍ وَ اَبِیْ مُوْسٰى

"या'नी अ़ह्दे रिसालत में सिर्फ़ चार सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان फ़तवा दिया करते थे अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم), ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ।"(2)

1 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الفضائل، ما ذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۸۰، حدیث: ۲۱۔

2 ......تذکرۃ الحفاظ، ج ۱، ص ۲۳۔

सहाबए किराम में छे सहाबा फ़िक़्ह के इमाम थे

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में छे सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ऐसे थे जो फ़िक़्ह के इमाम माने जाते थे और तमाम लोग मसाइले फ़िक़्हिय्या में इन ही की त़रफ़ रुजूअ़ फ़रमाते थे। नीज़ इन तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के मसाइल एक दूसरे के मुशाबेह होते थे। चुनान्चे, जलीलुल क़द्र मुह़द्दिस ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शा'बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इरशाद फ़रमाते हैं :

كَانَ العلمُ يُؤْخَذُ عَنْ سِتَّةٍ مِّنْ اَصْحَابِ رَسُوْلِ اللّٰهِ..... "या'नी छे सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ऐसे थे जिन से लोग मसाइल वग़ैरा पूछते और इ़ल्म ह़ासिल किया करते थे।"

كَانَ عُمَرُ وَعَبْدُ اللّٰهِ وَزَيْدٌ يُشْبِهُ عِلْمُهُمْ بَعْضاً وَكَانَ يَقْتَبِسُ بَعْضُهُمْ مِّنْ بَعْضٍ..... "या'नी उन में से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه इन तमाम के मसाइल आपस में एक दूसरे के मुशाबेह होते थे और येह एक दूसरे से मसाइल पर तबादलए ख़याल भी करते थे।"

كَانَ عَلِيٌّ وَالْاَشْعَرِيُّ وَاُبَيٌّ يُشْبِهُ عِلْمُهُمْ بَعْضُهُمْ بِبَعْضٍ وَكَانَ يَقْتَبِسُ بَعْضُهُمْ مِّنْ بَعْضٍ..... "और इन में से अमीरुल मोमिनीन मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه और ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के मसाइल आपस में एक दूसरे के मुशाबेह होते थे और येह एक दूसरे से मसाइल पर तबादलए ख़याल भी करते थे।"(1)

एक अहम वज़ाह़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला दोनों रिवायतों को पढ़ कर ज़ेहन में येह ख़याल पैदा होता है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की ता'दाद हज़ारों में है, येह कैसे हो सकता है कि सिर्फ़ चार या छे सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ही लोगों को मसाइल बताते हों या फ़िक़्ही सुवालात के जवाबात देते हों ? तो वाज़ेह़ रहे कि तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ही सर चश्मए हिदायत हैं। अलबत्ता मज़्कूरए बाला सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان मुज्तहिद और फ़क़ीह थे या'नी वोह सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان थे जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ैज़ से क़ुरआनो सुन्नत में इजतिहाद कर के ख़ुद मसाइल अख़्ज़ कर लेते थे जब

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۳۲، ص ۶۴، تذکرۃ الحفاظ، ج ۱، ص ۲۲۔

कि बक़िय्या दीगर सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان इन के शागिर्द थे और यक़ीनन वोह तमाम भी उम्मते मुस्लिमा की रहनुमाई फ़रमाते थे। वरना आज पूरी दुन्या में इ़ल्म का येह नूर कभी नज़र न आता।

صَلُّوۡا عَلَى الۡحَبِيۡب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अइम्मए फ़िक़्ह फ़ारूक़े आ'ज़म के तरबिय्यत याफ़्ता थे

मक्कए मुकर्रमा, मदीनए मुनव्वरा, बसरा, कूफ़ा और शाम फ़िक़्ह के मराकिज़ कहलाते थे। मक्कए मुकर्रमा में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه, मदीनए मुनव्वरा में ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه व ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه, कूफ़ा में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم), ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه, शाम में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के इ़ल्मी फ़ैज़ान से लोग फ़ैज़याब होते थे। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) के इ़लावा बक़िय्या तमाम सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के तरबिय्यत याफ़्ता थे।

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म के तलामिज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के खुसूसी शागिर्द थे। येही वज्ह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाया करते थे कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की सोह़बत में एक घड़ी बैठना मेरे नज़्दीक एक साल अ़मल करने से भी ज़ियादा मुफ़ीद है।"[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म के मसाइले फ़िक़्हिय्या की ता'दाद

चूंकि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के दौरे ख़िलाफ़त में फ़ुतूहात की बहुत कसरत हुई और लोगों को शरई मुआ़मलात बहुत ज़ियादा पेश आए इस लिये आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कुरआनो सुन्नत में इजतिहाद के ज़रीए कसीर मसाइल अख़्ज़ फ़रमाए। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के वोह मसाइले फ़िक़्हिय्या जो सह़ीह़ रिवायात

1 ......الاستيعاب، عمر بن الخطاب، ج ٣، ص ٢٣٩-

से साबित हैं हज़ारों की ता'दाद में हैं। शाह वलिय्युल्लाह मुहद्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं :

وهم چنیں مجتهدین در رؤس مسائل فقه، تابع مذهب فاروق اعظم اند واین قریب هزار مسئله باشد تخمینا

''या'नी मुज्तहिदीन के वोह मसाइले फ़िक़्हिय्या जो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मस्लक के मुताबिक़ हैं इन की ता'दाद तक़रीबन एक हज़ार है।''(1)

फ़ारूके आ'ज़म और इल्मे उसूलुल फ़िक़्ह

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने न सिर्फ़ हज़ारों मसाइल के जुज़इय्यात की तदवीन की बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ुरआनो ह़दीस से इन मसाइल को अख़्ज़ करने के उसूलो ज़वाबित़ भी मुक़र्रर फ़रमाए जो आज भी उसूले फ़िक़्ह के नाम से तदरीसी कुतुब में मौजूद हैं। चारों मसालिके ह़क़्क़ा फ़िक़्हे ह़नफ़ी, फ़िक़्हे शाफ़ेई, फ़िक़्हे ह़म्बली और फ़िक़्हे मालिकी के तमाम फ़िक़्ही मसाइल का दारो मदार इन्हीं उसूलों पर है। उसूले फ़िक़्ह चार हैं : क़ुरआन, ह़दीस, इजमाअ़ और क़ियास। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़िक़्ही मसाइल के इस्तिम्बात़ में ख़ुद भी इन पर अ़मल किया और अपने तमाम मा तह़्त ह़ाकिमों को भी इस की तल्क़ीन फ़रमाई। कोई भी मस्अला तलाश करना होता तो अव्वलन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़ुरआने पाक में देखते, सानियन रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रामीन में, सालिसन तमाम किबार और फ़ुक़हा सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को जम्अ़ करते और उन की राए मा'लूम करते और फिर अक्सरिय्यत पर फ़ैसला फ़रमा देते और अगर इन तीनों में से कोई सूरत न होती तो क़ियास के ज़रीए ख़ुद ही मस्अला अख़्ज़ कर के सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के सामने पेश फ़रमा देते। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़ज़ा के मुतअ़ल्लिक़ जो तह़रीर भेजी उस में यूं था :

اَلْفَهْمَ اَلْفَهْمَ فِيمَا يَخْتَلِجُ فِيْ صَدْرِكَ مِمَّا لَمْ يَبْلُغْكَ فِي الْكِتَابِ وَالسُّنَّةِ اِعْرِفِ الْاَمْثَالَ وَالْاَشْبَاهَ ثُمَّ
قِسِ الْاُمُوْرَ عِنْدَ ذٰلِكَ فَاعْمَدْ عِنْدَ اَحَبِّهَا اِلَى اللّٰهِ وَ اَشْبَهِهَا بِالْحَقِّ

''या'नी इसे अच्छी त़रह़ समझ लो कि जिस मस्अले में तुम्हें क़ुरआनो ह़दीस का कोई हुक्म वाज़ेह़ न मिले तो इस की अम्साल और अश्बाह पर ग़ौर करो फिर मुख़्तलिफ़ उमूर में क़ियास करो और फिर उस पर ए'तिमाद करो जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़ियादा क़रीब और ह़क़ के ज़ियादा मुशाबेह हो।''(2)

1 ......ازالۃ الخفاء، ج۳، ص۳۰۴۔

2 ......دارقطنی، کتاب فی الاقضیۃ والاحکام، کتاب عمر۔۔۔الخ، ج۴، ص۳۴۳، حدیث: ۴۴۲۵ مختصرا۔

फ़ारूक़े आ'ज़म और इल्मुल क़ज़ा

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास इल्मुल क़ज़ा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से अता कर्दा एक अज़ीम सलाहिय्यत थी जो यक़ीनन हर एक का मन्सब नहीं। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मन्सबे क़ज़ा की तमाम शराइत के जामेअ थे बल्कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के तरबिय्यत याफ़्ता उम्माल और गवर्नर भी इस ओहदे को ब हुस्ने ख़ूबी संभालने की सलाहिय्यत रखते थे। बल्कि अगर यूं कहा जाए तो बेजा न होगा कि क़ियामत तक आने वाले शरई क़ाज़ी आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ही के फ़ैज़ाने करम से मन्सबे क़ज़ा की ज़िम्मेदारियों को ब तरीक़े अहसन अदा करते रहेंगे। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार इस उम्मत के अज़ीम क़ाज़ियों में होता है। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अली बिन मदीनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : قُضَاةُ الْاُمَّةِ اَرْبَعَةٌ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ وَعَلِيُّ بْنُ اَبِيْ طَالِبٍ وَزَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ وَاَبُوْ مُوْسَى الْاَشْعَرِيُّ "या'नी उम्मत के क़ाज़ी सिर्फ़ चार हैं : अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ, अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना मौला अली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म और इल्मुश्शे'र

फ़ारूक़े आ'ज़म इल्मुश्शे'र के सब से बड़े आलिम

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इल्मुल अश्आर में भी महारते ताम्मा रखते थे, चुनान्चे, जाहिज़ ने अपनी किताब "अल बयान वत्तबयीन" में लिखा है : كَانَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ اَعْلَمَ النَّاسِ بِالشِّعْرِ "या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों में इल्मुश्शे'र के सब से बड़े आलिम थे।"(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म दौराने सफ़र अश्आर पढ़ते थे

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ब ज़ाते ख़ुद अश्आर बहुत ही कम कहा करते थे। अपने सफ़रों में बहुत ही ख़ुश इल्हानी के साथ अश्आर पढ़ा करते थे। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना शैख़ इब्राहीम मरूज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर

---

1 ..... تاریخ ابن عساکر، ج۳۲، ص۶۵۔

2 ..... البیان والتبیین، ج۱، ص۲۳۹۔

फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मसऊ़द अन्सारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ येह तमाम ह़ज़रात अपने सफ़रों के दौरान खु़श इल्ह़ानी से अश्आ़र पढ़ा करते थे।"(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म को अश्आ़र की तन्क़ीह़ में महारत थी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अश्आ़र की तन्क़ीह़ या'नी कांट छांट कर के इन की नोक पलक संवारने में अपना सानी न रखते थे। चुनान्चे, इब्ने रशीक़ ने अपनी किताब "**अल उ़मदतु फ़ी मह़ासिने शो'राइहि व आदाबिह**" में लिखा है कि : **كَانَ مِنْ اَنْقَدِ اَهْلِ زَمَانِهٖ لِلشِّعْرِ وَاَنْفَذِهِمْ فِيْهِ مَعْرِفَةً** "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने ज़माने में अश्आ़र के सब से बड़े नक़्क़ाद व नफ़्फ़ाज़ या'नी कांट छांट करने वाले थे।"(2)

फ़ारूके़ आ'ज़म और इ़ल्मुल मुकाशिफ़ा

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त से कश्फ़ का इ़ल्म भी अ़ता हुवा था और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मुख़्तलिफ़ लोगों के मुख़्तलिफ़ क़ल्बी अह़वाल पर मुत्तलअ़ हो जाते थे, और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बसा औक़ात लोगों के मख़्फ़ी अह़वाल ज़ाहिर भी फ़रमा देते थे। चुनान्चे,

फ़ारूके़ आ'ज़म पर मौला अ़ली का ख़्वाब ज़ाहिर हो गया

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के कश्फ़ से मुतअ़ल्लिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना शाह वलिय्युल्लाह मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی ने एक पूरा बाब क़ाइम किया है जिस में सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के कश्फ़ से मुतअ़ल्लिक़ कई वाक़िआ़त ज़िक्र किये हैं जिन में मौला अ़ली शेरे खु़दा (كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) का भी एक निहायत ही दिलचस्प वाक़िआ़ है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रात ख़्वाब में हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक से खजूरें खाईं और सुब्ह़ सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर आप का वोह ख़्वाब ज़ाहिर हो गया।(3)

---

1 .....كف الرعاع، ص ٧٣، فتاوىٰ رضويه، ج ٢٣، ص ٢٧٣ ـ

2 .....العمدة فى محاسن شعرائه وآدابه، باب فى آداب اشعار الخلفاء، ص ١٠ ـ

3 .....तफ़्सीली वाक़िए़ के लिये इसी किताब के सफ़ह़ा 135 का मुत़ालआ़ कीजिये।

फ़ारूके़ आ'ज़म और इल्मुल क़ियाफ़ा

दो मुख़्तलिफ़ चीज़ों (बाप, बेटा, अस्ल फ़ुरुअ़ वग़ैरा) में से एक चीज़ के बा'ज़ मुआ़मलात पर मुत्तलअ़ होने के बा'द दूसरी शै के मुआ़मलात को ख़ुद ही जान लेने को "इल्मुल क़ियाफ़ा" कहते हैं। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह इल्म भी ह़ासिल था। चुनान्चे,

रिश्तेदारी की पहचान

आप की बारगाह में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और सलाम किया तो आप ने सलाम का जवाब देने के बा'द उस से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या तुम्हारे और अहले नजरान के दरमियान कोई रिश्तेदारी है ?" उस ने अ़र्ज़ किया : "नहीं।" फ़रमाया : "ज़रूर है।" उस ने फिर इन्कार किया तो फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ज़रूर है।" रावी कहते हैं कि हर मुसलमान जानता था कि उस के और अहले नजरान के दरमियान रिश्तेदारी है लिहाज़ा एक शख़्स ने वज़ाह़त करते हुवे अ़र्ज़ किया : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! इस के और अहले नजरान के दरमियान रिश्तेदारी ज़रूर है लेकिन इस इस वाक़िए से क़ब्ल थी।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से फ़रमाया : مَهْ فَإِنَّا نَقْفُو الْآثَارَ या'नी तुम रहने दो हमें न बताओ, हमें निशानियों से ख़ुद ही पता लग जाएगा।"(1)

दो भाइयों की पहचान

ह़ज़रते सय्यिदुना शुरैह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास से एक लम्बे बालों वाला लह़ीम, शह़ीम (लम्बा, चौड़ा) शख़्स गुज़रा, फिर उस के पीछे एक वोह शख़्स गुज़रा जो छोटे बालों वाला और कमज़ोर व दुबला पतला था। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन दोनों के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया : "येह दोनों भाई हैं।" जब मा'लूम किया गया तो वाक़ेई वोह दोनों भाई निकले।(2)

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۲۰۔

2 ......انساب الاشراف، عمر بن الخطاب، ج۱۰، ص۳۷۷۔

फ़ारूक़े आ'ज़म और इल्मुत्तफ़्सीर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर जब क़ुरआने पाक की कोई आयत वग़ैरा नाज़िल होती तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के सामने उस की तिलावत फ़रमाते और कातिबाने वह्य सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان उस आयते मुबारका को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्म के मुताबिक़ तरतीब से लिख लेते । नीज़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ब ज़ाते ख़ुद या सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के इस्तिफ़्सार पर उस आयते मुबारका की तफ़्सीर भी बयान फ़रमा देते । अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه चूंकि कातिबे वह्य थे और बारगाहे रिसालत में क़ुरआने पाक की किताबत करते थे इस लिये यक़ीनन आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه आयाते मुबारका के बा'द उस की तफ़्सीर से भी मुत्तलअ़ होते थे और بِحَمْدِ اللّٰهِ تَعَالٰى आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस से क़ुरआने पाक की तफ़्सीर पढ़ी । कई रिवायात में इस की सराह़त मौजूद है । चुनान्चे,

सूरतुल बक़रह बारह साल में रसूलुल्लाह से पढ़ी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है फ़रमाते हैं : تَعَلَّمَ عُمَرُ الْبَقَرَةَ فِيْ اِثْنَتَيْ عَشَرَةَ سَنَةً فَلَمَّا خَتَمَهَا نَحَرَ جَزُوْرًا ''या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह से बारह साल में सूरए बक़रह पढ़ी और जब सूरए बक़रह मुकम्मल हो गई तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने शुक्राने में एक ऊंटनी ज़ब्ह़ फ़रमाई ।''(1)

महाफ़िले ख़त्मे क़ुरआन जाइज़ हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा आज कल मदनी मुन्ने व मदनी मुन्नियों के नाज़िरा या ह़िफ़्ज़े क़ुरआने पाक ख़त्म करने पर ''ख़त्मे क़ुरआन की महाफ़िल'' मुन्अ़क़िद की जाती हैं, इस में ह़म्दो ना'त व बयान और लंगर वग़ैरा का एहतिमाम किया जाता है, या नियाज़ दिलाई जाती है येह तमाम उमूर बिल्कुल जाइज़ हैं ।

---

(1) ......سیر اعلام النبلاء، عمر بن الخطاب، ج ۱، ص ۵۲۰، الرقم: ۳۔

شرح زرقانی علی الموطا، کتاب القرآن، باب ماجاء۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۲۹، تحت الحدیث: ۴۸۰۔

फ़ारूके़ आ'ज़म का सूरतुन्नस्र की तफ़्सीर के मुतअ़ल्लिक़ इस्तिफ़्सार

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कुरआने पाक की तफ़्सीर के गहरे इ़ल्म का इस बात से भी अन्दाज़ा होता है कि अक्सर औक़ात आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जलीलुल क़द्र सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से कुरआने पाक की मुख़्तलिफ़ आयात की तफ़्सीर के मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीरी मुबाहसा फ़रमाते रहते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने अस्ह़ाब से सूरतुन्नस्र या'नी اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَ الْفَتْحُ की तफ़्सीर पूछी तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया : فَتْحُ الْمَدَائِنِ وَالْقُصُوْر "या'नी इस से मुख़्तलिफ़ शहरों और मुह़ल्लात की फ़त्ह़ मुराद है।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से इस्तिफ़्सार फ़रमाया तो मैं ने अ़र्ज़ किया : اَجَلٌ "या'नी इस से मुराद जि़न्दगी की मुद्दत है या येह मिसाल रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये बयान कर के आप के दुन्या से तशरीफ़ ले जाने की ख़बर दी गई है।"(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म की कु़रआन फ़ह्मी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ग़ुलाम नज्दा से रिवायत है कि एक बार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा के बाज़ार में थे कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक खजूर का टुकड़ा ज़मीन पर पड़ा हुवा नज़र आया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे उठा कर साफ़ किया। फिर एक ह़बशी को वोह खजूर का टुकड़ा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : اُطْرُحْ هٰذِهٖ فِيْ فِيْكَ "या'नी येह लो मुंह में डाल लो।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो क़रीब ही मौजूद थे अ़र्ज़ करने लगे : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! येह क्या है ?" फ़रमाया : "येह खजूर का एक ज़र्रा सा टुकड़ा है या इस से बड़ा है ?" अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! येह ज़र्रे से बड़ा है।" फ़रमाया : "क्या तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान का मफ़्हूम समझते हो जिस में ज़र्रे का ज़िक्र है :

﴿اِنَّ اللّٰهَ لَا یَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَ اِنْ تَكُ حَسَنَةً یُّضٰعِفْهَا وَ یُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِیْمًا ﴾ (پ۵، النساء:۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "अल्लाह एक ज़र्रा भर ज़ुल्म नहीं फ़रमाता और अगर कोई नेकी हो तो उसे दूनी करता और अपने पास से बड़ा सवाब देता है।" (मुराद येह है कि) किसी काम की इब्तिदा ज़र्रा भर से होती है मगर उस का अन्जाम अज्रे अ़ज़ीम होता है।(2)

1 ......بخاری، کتاب التفسیر، باب وروایت۔۔۔الخ، ج۳، ص۳۹۱، حدیث:۴۹۶۹۔

2 ......تاریخ ابن عساکر، ج۴۴، ص۳۱۴۔

फ़ारूक़े आ'ज़म से मन्क़ूल तफ़्सीरे क़ुरआन

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से क़ुरआने पाक की कसीर आयतों की तफ़्सीर मन्क़ूल है, लेकिन त़वालत से बचते हुवे ''फ़ारूक़े आ'ज़म'' के 9 हुरूफ़ की निस्बत से फ़क़त़ 9 आयात की तफ़्सीर पेशे ख़िदमत है :

﴾1﴿.....शहवात से बचने वाले के लिये बिशारत

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा गया : ''क्या वोह शख़्स बेहतर है जिस में गुनाह करने की ख़्वाहिश ही न हो और न ही वोह गुनाह करे या वोह बेहतर है जिस में गुनाह की ख़्वाहिश तो हो मगर वोह गुनाह करने से बचे ?'' आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : ''जिन में गुनाह की ख़्वाहिश है मगर इस से बचते हैं उन के बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान है :

﴿ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۳﴾ ﴾ (پ۲۶، الحجرات:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''वोह हैं जिन का दिल अल्लाह ने परहेज़गारी के लिये परख लिया है उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है।''(1)

﴾2﴿.....तमाम उम्मतों में बेहतर लोग

﴿ كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ
وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَ اَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۱۱۰﴾ ﴾ (پ۴، آل عمران:۱۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुई भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मन्अ़ करते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो और अगर किताबी ईमान लाते तो उन का भला था उन में कुछ मुसलमान हैं और ज़ियादा काफ़िर।''

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

لَوْ شَاءَ اللّٰهُ لَقَالَ اَنْتُمْ فَكُنَّا كُلُّنَا وَلٰكِنْ قَالَ كُنْتُمْ خَاصَّةً فِيْ اَصْحَابِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
وَمَنْ صَنَعَ مِثْلَ صَنِيْعِهِمْ كَانُوْا خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ

या'नी अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहता तो ''كُنْتُمْ'' के बजाए ''اَنْتُمْ'' फ़रमाता, फिर हम तमाम लोग मुराद होते, लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ''كُنْتُمْ'' फ़रमा कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के

---

1 ......تفسیر ابن کثیر، پ۲۶، الحجرات، تحت الآیۃ: ۳، ج۷، ص ۳۴۴۔

सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان को ख़ास फ़रमा दिया, लिहाज़ा अब जो भी इन (सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان) जैसे आ'माल करेगा वोह इस उम्मत में बेहतर शख़्स कहलाएगा जो लोगों में ज़ाहिर हुई।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने हमारे सामने येही आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया : **يَا اَيُّهَا النَّاسُ مَنْ سَرَّهُ اَنْ يَّكُوْنَ مِنْ تِلْكُمُ الْاُمَّةِ فَلْيُؤَدِّ شَرْطَ اللّٰهِ فِيْهَا** "या'नी ऐ लोगो ! तुम में जो तमाम उम्मतों में बेहतर बनना चाहता है उसे चाहिये कि वोह इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बयान कर्दा शर्त़ (या'नी भलाई का हुक्म देने, बुराई से मन्अ़ करने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाने) को पूरा करे।"(2)

﴾3﴿.....पस्ती और बुलन्दी देने वाली

﴿**خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۙ﴾**(پ۲۷،الواقعة:۳) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "किसी को पस्त करने वाली किसी को बुलन्दी देने वाली।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने जरीर व इब्ने अबी ह़ातिम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने इस आयते मुबारका की तफ़्सीर बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया : **اَلسَّاعَةُ خَفَضَتْ اَعْدَاءَ اللّٰهِ اِلَى النَّارِ وَرَفَعَتْ اَوْلِيَاءَ اللّٰهِ اِلَى الْجَنَّةِ** "या'नी वोह क़ियामत जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मनों को जहन्नम में झोंक देगी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दोस्तों को जन्नत की त़रफ़ ले जाएगी।"(3)

﴾4﴿.....बुरे लोग, बुरों के साथ, नेक लोग नेकों के साथ

﴿**وَاِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ ۙ﴾**(پ۳۰،التكوير:۷) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और जब जानों के जोड़ बनें।"

ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते

---

1 ......درمنثور پ۴، آل عمران، تحت الآية: ۱۱۰، ج۲، ص۲۹۳۔

2 ......الاستيعاب، مقدمة المؤلف، ج۱، ص۱۲۳،

كنزالعمال، كتاب الاذكار، فصل فی التفسير، الجزء: ۲، ج۱، ص۱۶۲، حديث: ۴۲۹۰۔

3 ......كنزالعمال، كتاب الاذكار، فصل فی التفسير، الجزء: ۲، ج۱، ص۲۱۹، حديث: ۴۶۳۸۔

सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस आयते मुबारका की तफ़्सीर पूछी गई तो इरशाद फ़रमाया : يُقْرَنُ بَيْنَ الرَّجُلِ الصَّالِحِ مَعَ الرَّجُلِ الصَّالِحِ فِى الْجَنَّةِ وَيُقْرَنُ بَيْنَ الرَّجُلِ السُّوءِ مَعَ الرَّجُلِ السُّوءِ فِى النَّارِ "या'नी जन्नत में नेक लोगों को नेक लोगों से मिला दिया जाएगा और जहन्नम में बुरे लोगों को बुरे लोगों से मिला दिया जाएगा।"(1)

﴾5﴿.....हज के महीने कौन कौन से हैं ?

﴾اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ﴿(پ۲،البقرۃ:۱۹۷) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "हज के कई महीने हैं जाने हुवे।" हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस आयते मुबारका की तफ़्सीर बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया कि हज के महीनों से मुराद शव्वालुल मुकर्रम, ज़ी क़ा'दा और ज़ुल हिज्जतिल ह़राम (या'नी इस के दस दिन) हैं।(2)

﴾6﴿.....हज किस पर फ़र्ज़ है ?

﴾وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا﴿(پ۴،آل عمران:۹۷) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और **अल्लाह** के लिये लोगों पर उस घर का ह़ज करना है जो उस तक चल सके।"

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस आयते मुबारका में सबील की तफ़्सीर اَلزَّادَ وَالرَّاحِلَةَ या'नी ज़ादे राह और सुवारी से फ़रमाई।(3)

﴾7﴿.....अल्लाह को क़र्ज़े ह़सना देने से क्या मुराद है ?

﴾مَنْ ذَا الَّذِىْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا﴿(پ۲۷،الحدید:۱۱) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "कौन है जो **अल्लाह** को क़र्ज़ दे अच्छा क़र्ज़।" हज़रते सय्यिदुना मूसा बिन अबू कसीरुल अन्सारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस आयते मुबारका में "क़र्ज़े ह़सना" की तफ़्सीर اَلنَّفَقَةُ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ "या'नी राहे ख़ुदा में ख़र्च करना" से की।(4)

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الزھد، کلام عمر بن الخطاب، ج۸، ص۱۵۴، حدیث:۵۱۔

2 ......سنن کبری، کتاب الحج، باب کراھیة من کرہ القرآن، ج۵، ص۲۸، حدیث:۸۸۷۴ مختصرا۔

3 ......دارقطنی، کتاب الحج، ج۲، ص۲۷۷، حدیث:۲۴۰۳۔

4 ......مصنف ابن ابی شیبة، کتاب فضل الجھاد، ما ذکر فی فضل الجھاد...الخ، ج۱۰، ص۳۳۶، حدیث:۱۹۸۴۳۔

﴾8﴿.....ज़ुल्म से मुराद शिर्क है

﴿اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْۤا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٨٢﴾﴾ (پ۷، الانعام: ۸۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''वोह जो ईमान लाए और अपने ईमान में किसी नाहक़ की आमेज़िश न की उन्हीं के लिये अमान है और वोही राह पर हैं।'' अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه ने इस आयते मुबारका में ज़ुल्म की तफ़्सीर शिर्क से फ़रमाई।''(1)

﴾9﴿.....लोगों से आयत की तफ़्सीर के मुतअ़ल्लिक़ इस्तिफ़्सार

﴿اَيَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّ اَعْنَابٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ﴾ (پ۳، البقرة: ۲۶۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''क्या तुम में कोई इसे पसन्द रखेगा कि उस के पास एक बाग़ हो खजूरों और अंगूरों का जिस के नीचे नदियां बहतीं।''

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन उ़मैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه ने लोगों से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : فِيْمَ تَرَوْنَ هٰذِهِ الْاٰيَةَ نَزَلَتْ ''या'नी कुरआने पाक में जो येह आयते मुबारका है किस चीज़ के बारे में नाज़िल हुई है ?'' लोगों ने अ़र्ज़ किया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बेहतर जानता है।'' आप ने फ़रमाया : ''बस येह बताओ कि जानते हो या नहीं ?'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया : فِيْ نَفْسِيْ مِنْهَا شَيْءٌ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ ''या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! इस ह़वाले से मुझे कुछ मा'लूम है।'' फ़रमाया : يَا ابْنَ اَخِيْ قُلْ وَلَا تَحْقِرْ نَفْسَكَ ''या'नी ऐ भतीजे ! बताओ और अपने आप को ह़क़ीर मत समझो।'' सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया : ''ह़ुज़ूर ! इस आयते मुबारका में किसी अ़मल की मिसाल बयान की गई है।'' सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : ''किस अ़मल की मिसाल बयान की गई है ?'' ''फिर ख़ुद ही इरशाद फ़रमाया : لِرَجُلٍ غَنِيٍّ يَعْمَلُ بِطَاعَةِ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ثُمَّ بَعَثَ اللّٰهُ لَهُ الشَّيْطَانَ فَعَمِلَ بِالْمَعَاصِيْ حَتّٰى اَغْرَقَ اَعْمَالَهُ ''या'नी ऐसे ग़नी

1 .....كنز العمال، كتاب الاذكار، فصل في التفسير، الجزء: ۲، ج ۱، ص ۱۷۴، حديث: ۴۳۶۲۔

शख़्स की मिसाल बयान की गई है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इताअ़त में अ़मल करता रहता है फिर रब عَزَّوَجَلَّ उस के पास एक शैत़ान को भेजता है, फिर शैत़ान उस से गुनाह करवा के उस के आ'माल बरबाद कर देता है।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म और इ़ल्मुल ह़दीस

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चूंकि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर रहा करते थे इस लिये अह़ादीसे मुबारका का कसीर ख़ज़ाना आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सीने में मौजूद था लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कोई भी बात बिग़ैर तस्दीक़ के रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मन्सूब करने पर सख़्ती फ़रमाते थे। क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पेशे नज़र ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने मुबारक था कि مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ "या'नी जिस ने मुझ पर जान बूझ कर झूट बोला वोह अपना ठिकाना जहन्नम बना ले।"(2) येही वज्ह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बहुत ही कम अह़ादीस मरवी हैं। चुनान्चे, ह़ज़रते इमाम अबू ज़करिय्या यह़्या बिन शरफ़ नववी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इरशाद फ़रमाते हैं कि : "अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से (कमो बेश) 539 अह़ादीस रिवायत की हैं। जिन में से छब्बीस अह़ादीसे मुबारका पर इमाम बुख़ारी व इमाम मुस्लिम رَحِمَهُمَا الله का इत्तिफ़ाक़ है या'नी इन दोनों ने उन को बयान फ़रमाया है, जब कि इन के इ़लावा चोंतीस अह़ादीसे मुबारका फ़क़त़ इमाम बुख़ारी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने और इक्कीस अह़ादीसे मुबारका इमाम मुस्लिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बयान फ़रमाई हैं।(3)

आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ जि. 26, स. 431 पर फ़रमाते हैं : "सिह़ाह़ में सिद्दीक़े अक्बर व फ़ारूक़े आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की रिवायात भी बहुत कम हैं, रह़मते इलाही ने (ख़िदमते ह़दीस के) हिस्से तक़्सीम फ़रमा दिये हैं कि किसी को ख़िदमते

---

1 ......بخاری، کتاب التفسیر، باب قوله ایود۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۱۸۵، حدیث: ۴۵۳۸۔

2 ......بخاری، کتاب العلم، باب اثم من۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۵۷، حدیث: ۱۰۷۔

3 ......تهذيب الاسماء، عمر بن الخطاب، ج ۲، ص ۳۲۵۔

अल्फ़ाज़ (कि वोह फ़क़त् अहादीस को बयान करता है), किसी को ख़िदमते मआनी (कि वोह अल्फ़ाज़ों के साथ साथ मआनी को भी बयान करता है), किसी को तह़सीले मक़ासिद (कि वोह अल्फ़ाज़ व मआनी के साथ साथ उन के मक़ासिद को भी ह़ासिल कर लेता है), किसी को اِیْصَالُ اِلَی الْمَطْلُوْب (कि वोह मक़ासिद तक दूसरों को पहुंचाता है), न ज़ाहिरी रिवायत की कसरत वज्हे अफ़्ज़लिय्यत है (कि कोई बहुत ज़ियादा रिवायात बयान कर के अफ़्ज़ल हो जाए) न इस की क़िल्लत वज्हे मफ़्ज़ूलिय्यत (कि कोई क़लील रिवायात बयान कर के अफ़्ज़ल होने से रह जाए) ।"

आप से रिवायत करने वाले सहाबा व सहाबिय्यात

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से सहाबए किराम व ताबेईने उ़ज़्ज़ाम दोनों तृबक़ात ने अहादीस रिवायत की हैं, सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان व सहाबिय्यात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ के अस्मा येह हैं :

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान (2) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबी त़ालिब (3) ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह (4) ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास (5) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (6) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (7) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गि़फ़ारी (8) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अ़ब्सा (9) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (10) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (11) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (12) ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक (13) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री (14) ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (15) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स (16) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू लुबाबा बिन अ़ब्दुल मुन्ज़िर (17) ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन आ़ज़िब (18) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी (19) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा (20) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने सा'दी (21) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर (22) ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर (23) ह़ातिम त़ाई के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़दी बिन ह़ातिम (24) ह़ज़रते सय्यिदुना या'ला बिन उमय्या (25) ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन वह्ब (26) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सरजिस (27) ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ल्तान बिन आ़सिम (28) ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन उ़र्फ़ुत़ा (29) ह़ज़रते सय्यिदुना अश्अ़स बिन क़ैस (30) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बाहिली (31) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उनैस (32) ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा अस्लमी (33) ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ज़ाला बिन उ़बैद (34) ह़ज़रते

सय्यिदुना शद्दाद बिन औस (35) ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़स (36) ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन उ़जरह (37) ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्वर बिन मख़रमा (38) ह़ज़रते सय्यिदुना साइब बिन यज़ीद (39) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अरक़म (40) ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन समुरह (41) ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब बिन मस्लमा (42) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबज़ी (43) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन हुरैस (44) ह़ज़रते सय्यिदुना त़ारिक़ बिन शिहाब (45) ह़ज़रते सय्यिदुना मा'मर बिन अ़ब्दुल्लाह (46) ह़ज़रते सय्यिदुना मुसय्यब बिन ह़ज़्न (47) ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन अ़ब्दुल्लाह (48) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू तुफ़ैल (49) उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा (50) उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा। (رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن)

आप से रिवायत करने वाले ताबेईन

﴾1﴿.....आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन उ़मर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾2﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन औस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾3﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा बिन वक़्क़ास رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾4﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान नहदी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾5﴿.....आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के आज़ाद कर्दा गुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना अस्लम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

﴾6﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन अबी ह़ाज़िम (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म से मरवी अह़ादीसे मुबारका

"بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم" के 19 हुरूफ़ की निस्बत से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी उन्नीस अह़ादीसे मुबारका पेशे ख़िदमत हैं :

﴾1﴿.....आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सब से मशहूरो मा'रूफ़ रिवायत सह़ीह़ बुख़ारी की सब से पहली ह़दीसे मुबारका है, जिस का उ़नवान निय्यत है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा बिन क़ैस लैसी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हुवे और इरशाद फ़रमाया कि

[1] ......تہذیب الاسماء، عمر بن الخطاب، ج ۱، ص ۳۲۵۔

मैं ने दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना :

اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ وَاِنَّمَا لِكُلِّ امْرِئٍ مَا نَوٰى فَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ اِلٰى دُنْيَا يُصِيْبُهَا اَوْ اِلٰى اِمْرَاَةٍ يَنْكِحُهَا فَهِجْرَتُهُ اِلٰى مَا هَاجَرَ اِلَيْهِ

"या'नी आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है और हर एक के लिये वोही है जिस की उस ने निय्यत की तो पस जिस ने दुन्या ह़ासिल करने के लिये हिजरत की, या औ़रत से निकाह़ करने के लिये हिजरत की तो उस की हिजरत उसी त़रफ़ होगी जिस की त़रफ़ उस ने हिजरत की निय्यत की।"(1)

﴾2﴿.....ह़दीसे जिब्रील, अरकाने इस्लाम

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन या'मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने इरशाद फ़रमाया कि एक दिन हम बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर थे कि अचानक एक ऐसा शख़्स आया जिस के कपड़े बहुत सफ़ेद थे, उस के बालों का रंग सियाह (काला) था, अलबत्ता उस के चेहरे पर किसी क़िस्म के सफ़र वग़ैरा के कोई आसार न थे और हम में से कोई भी उसे इस हुल्ये से नहीं जानता था। वोह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बिल्कुल सामने आ कर इस त़रह़ बैठ गया कि उस ने अपने घुटने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक घुटनों के साथ मिला दिये और अपने हाथों को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक रानों पर रख लिया।

.....फिर अ़र्ज़ करने लगा : اَخْبِرْنِیْ عَنِ الْاِسْلَام "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे इस्लाम के बारे में बताइये।" रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اَلْاِسْلَامُ اَنْ تَشْهَدَ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَتُقِيْمَ الصَّلَاةَ وَتُؤْتِيَ الزَّكَاةَ وَتَصُوْمَ رَمَضَانَ وَتَحُجَّ الْبَيْتَ اِنِ اسْتَطَعْتَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا

"या'नी इस्लाम येह है कि तुम इस बात की गवाही दो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और बेशक मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं और नमाज़ क़ाइम करो, ज़कात अदा करो, रमज़ान के रोज़े रखो और बैतुल्लाह का ह़ज करो अगर उस की त़रफ़ जाने की इस्तित़ाअ़त रखते हो।" येह सुन कर उस ने कहा : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप ने सच फ़रमाया :

---

1 .....بخاری، کتاب بدء الوحی، باب کیف۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۵، حدیث: ۱۔

''सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं कि हम बड़े हैरान हुवे कि येह कैसा शख़्स है जो खुद ही सुवाल करता है और खुद ही तस्दीक़ भी करता है।

.....उस ने दूसरा सुवाल करते हुवे अ़र्ज़ किया : فَاَخْبِرْنِیْ عَنِ الْاِیْمَانِ ''या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे ईमान के बारे में बताइये।'' रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَنْ تُؤْمِنَ بِاللّٰہِ وَمَلَائِکَتِہٖ وَکُتُبِہٖ وَرُسُلِہٖ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ وَتُؤْمِنَ بِالْقَدْرِ خَیْرِہٖ وَشَرِّہٖ ''या'नी ईमान येह है कि तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के मलाइका और उस की किताबों और उस के रसूलों और क़ियामत के दिन और अच्छी बुरी हर तक़्दीर पर ईमान लाओ।''

.....उस ने फिर अ़र्ज़ किया : فَاَخْبِرْنِیْ عَنِ الْاِحْسَانِ ''या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे एह़सान के बारे में बताइये।'' रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَنْ تَعْبُدَ اللّٰہَ کَاَنَّکَ تَرَاہُ فَاِنْ لَّمْ تَکُنْ تَرَاہُ فَاِنَّہٗ یَرَاکَ ''या'नी एह़सान येह है कि तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इस त़रह़ इ़बादत करो कि तुम उसे देख रहे हो और अगर तुम उसे नहीं देख रहे तो वोह तो तुम्हें देख रहा है।''

.....उस ने फिर अ़र्ज़ किया : فَاَخْبِرْنِیْ عَنِ السَّاعَۃِ ''या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे क़ियामत के बारे में बताइये।'' इरशाद फ़रमाया : مَا الْمَسْئُوْلُ عَنْھَا بِاَعْلَمَ مِنَ السَّائِلِ ''या'नी मसऊल साइल से ज़ियादा जानने वाला नहीं।''

.....उस ने फिर अ़र्ज़ किया : فَاَخْبِرْنِیْ عَنْ اَمَارَتِھَا ''या'नी फिर क़ियामत की कुछ निशानियों के बारे में ही बता दीजिये।'' इरशाद फ़रमाया :

اَنْ تَلِدَ الْاَمَۃُ رَبَّتَھَا وَاَنْ تَرَی الْحُفَاۃَ الْعُرَاۃَ الْعَالَۃَ رِعَاءَ الشَّاءِ یَتَطَاوَلُوْنَ فِی الْبُنْیَانِ

''या'नी क़ियामत की निशानियों में से चन्द निशानियां येह हैं कि लौंडी अपने आक़ा को जनेगी और नंगे पाउं चलने वाले, बरह्ना जिस्म वाले, तंगदस्त चरवाहे बड़ी बड़ी इ़मारतों पर फ़ख़्र करेंगे।''

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि इस के बा'द वोह शख़्स चला गया, मैं वहीं ठहरा रहा तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : یَا عُمَرُ اَتَدْرِیْ مَنِ السَّائِلُ ''या'नी ऐ उ़मर ! क्या तुम जानते हो कि येह सुवालात करने वाला शख़्स कौन था ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया : اَللّٰہُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَمُ ''या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं।''

इरशाद फ़रमाया : فَاِنَّهٗ جِبْرِيْلُ اَتَاكُمْ يُعَلِّمُكُمْ دِيْنَكُمْ ''या'नी येह जिब्रीले अमीन थे जो तुम्हारे पास तुम्हें दीन सिखाने आए थे।''(1)

﴾3﴿.....रसूलुल्लाह ने तमाम हालात की ख़बर दे दी

हज़रते सय्यिदुना तारिक़ बिन शिहाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मैं ने हज़रते अमीरुल मोमिनीन उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह फ़रमाते सुना कि :

قَامَ فِيْنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَقَامًا فَاَخْبَرَنَا عَنْ بَدْءِ الْخَلْقِ حَتّٰى دَخَلَ اَهْلُ الْجَنَّةِ مَنَازِلَهُمْ وَاَهْلُ النَّارِ مَنَازِلَهُمْ

''या'नी एक बार रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे दरमियान एक जगह खड़े हुवे और आप ने मख़्लूक़ की पैदाइश से हर चीज़ की ख़बर देना शुरूअ़ की यहां तक कि जन्नतियों के जन्नत में जाने और जहन्नमियों के जहन्नम में जाने की ख़बर तक दे दी।'' मज़ीद फ़रमाते हैं : حَفِظَ ذٰلِكَ مَنْ حَفِظَهٗ وَنَسِيَهٗ مَنْ نَسِيَهٗ ''या'नी हम में से जिस ने याद रखा सो उस ने याद रखा और जो भूल गया सो वोह भूल गया।''(2)

﴾4﴿.....छोटी से छोटी ने'मत पर भी शुक्र

हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे आ़लीशान में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने फ़ुलां को शुक्र अदा करते देखा वोह कह रहा था कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे दो दीनार अ़त़ा फ़रमाए हैं।'' तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मगर मैं ने फ़ुलां को एक से सौ के दरमियान अ़त़ा फ़रमाए उस ने न शुक्र अदा किया न ही येह बात किसी से कही, तुम में से कोई शख़्स मेरे पास अपनी ह़ाजत बग़ल में दबा कर निकलता है ह़ालांकि वोह आग होती है।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन्हें क्यूं अ़त़ा फ़रमाते हैं?'' तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''वोह मांगने से बाज़ नहीं आते और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ में बुख़्ल को ना पसन्द फ़रमाता है।''(3)

---

1 .....مسلم، کتاب الایمان، بیان الایمان والاسلام والاحسان، ص ۲۱، حدیث: ۱۔

2 .....بخاری، کتاب بدء الخلق، باب ماجاء فی قول اللہ وھو الذی یبدء الخلق۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۳۷۵، حدیث: ۳۱۹۲۔

3 .....صحیح ابن حبان، کتاب الزکاۃ، ذکر الاخبار۔۔۔الخ، ج ۵، ص ۱۴۳، حدیث: ۳۴۰۵۔

﴾5﴿.....रसूलुल्लाह पांच चीज़ों से पनाह मांगते

हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन मैमून رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَعَوَّذُ مِنْ خَمْسٍ مِنَ الْجُبْنِ وَالْبُخْلِ وَ سُوْءِ الْعُمُرِ وَفِتْنَةِ الصَّدْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ

''या'नी नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पांच चीज़ों से पनाह मांगा करते थे : (1) बुज़दिली से (2) बुख़्ल से (3) बुढ़ापे की वज्ह से अ़क़्ल के फ़साद से (4) दिल के फ़ितने से (या'नी शैतानी वसाविस और गुनाहों के ख़यालात वग़ैरा) और (5) अ़ज़ाबे क़ब्र से।''(1)

﴾6﴿.....अल्लाह की क़सम उठाओ या ख़ामोश हो जाओ

एक बार हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सुवारी पर सुवार थे और अपने वालिद की क़सम उठा रहे थे तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से इरशाद फ़रमाया : اِنَّ اللّٰهَ يَنْهَاكُمْ اَنْ تَحْلِفُوْا بِاٰبَائِكُمْ فَمَنْ كَانَ حَالِفًا فَلْيَحْلِفْ بِاللّٰهِ اَوْ لِيَسْكُتْ ''या'नी बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस बात से मन्अ़ फ़रमाता है कि तुम अपने आबा की क़सम उठाओ तो जब कभी क़सम उठानी हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम उठाओ या ख़ामोश हो जाओ।''(2)

﴾7﴿.....जन्नत के आठों दरवाजे़ खोल दिये जाते हैं

हज़रते सय्यिदुना उ़क़बा बिन आ़मिर जुहनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَتَوَضَّأُ فَيُحْسِنُ الْوُضُوْءَ ثُمَّ يَقُوْلُ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ اِلَّا فُتِحَتْ لَهٗ ثَمَانِيَةُ اَبْوَابِ الْجَنَّةِ يَدْخُلُ مِنْ اَيِّهَا شَاءَ

''या'नी जो मुसलमान अच्छी त़रह़ वुज़ू करे, फिर कलिमए शहादत पढ़े तो उस के लिये जन्नत के आठों दरवाजे़ खोल दिये जाते हैं जिस से चाहे दाख़िल हो।''(3)

---

1 .....ابوداود، کتاب الوتر، باب فی الاستعاذۃ، ج ۲، ص ۱۲۸، حدیث: ۱۵۳۹۔

2 .....ابوداود، کتاب الایمان والنذور، باب فی کراھیۃ الحلف بالاباء، ج ۳، ص ۳۰۰، حدیث: ۳۲۴۹۔

3 .....ابن ماجہ، کتاب الطھارۃ وسننھا، باب مایقال بعد الوضوء، ج ۱، ص ۲۷۳، حدیث: ۴۷۰۔

﴾8﴿.....मस्जिद बनाने वाले के लिये जन्नत में घर

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन सुराक़ा अदवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि : مَنْ بَنٰی مَسْجِدًا یُذْکَرُ فِیْہِ اسْمُ اللّٰہِ بَنَی اللّٰہُ لَہٗ بَیْتًا فِی الْجَنَّۃِ ''या'नी जिस ने इस लिये मस्जिद बनाई कि उस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किया जाए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक घर तय्यार फ़रमा देगा।''(1)

﴾9﴿.....चालीस रात बा जमाअ़त तक्बीरे ऊला के साथ नमाज़ का अज्र

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ صَلّٰی فِیْ مَسْجِدٍ جَمَاعَۃً اَرْبَعِیْنَ لَیْلَۃً لَا تَفُوْتُہُ الرَّکْعَۃُ الْاُوْلٰی مِنْ صَلَاۃِ الْعِشَاءِ کَتَبَ اللّٰہُ لَہٗ بِھَا عِتْقًا مِنَ النَّارِ ''या'नी जो शख़्स चालीस रातें नमाज़े इ़शा पहली रकअ़त फ़ौत किये बिग़ैर अदा करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जहन्नम से आज़ादी लिख देता है।''(2)

﴾10﴿.....मरीज़ की दुआ़ मलाइका की दुआ़ की त़रह है

हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِذَا دَخَلْتَ عَلٰی مَرِیْضٍ فَمُرْہُ اَنْ یَّدْعُوَ لَکَ فَاِنَّ دُعَاءَہٗ کَدُعَاءِ الْمَلَائِکَۃِ ''या'नी ऐ उ़मर ! जब तुम किसी मरीज़ के पास जाओ तो उसे कहो कि वोह तुम्हारे लिये दुआ़ करे क्यूंकि मरीज़ की दुआ़ मलाइका की दुआ़ की त़रह है।''(3)

﴾11﴿.....ज़ख़ीरा अन्दोज़ी की आफ़त

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ग़ुलाम हज़रते सय्यिदुना फ़र्रूख़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत

---

1 ......ابن ماجه، كتاب المساجد والجماعات، باب من بنى لله مسجدا، ج ۱، ص ۴۰۷، حديث: ۷۳۵۔

2 ......ابن ماجه، كتاب المساجد والجماعات، باب صلاة العشاء والفجر فى جماعة، ج ۱، ص ۴۳۷، حديث: ۷۹۸۔

3 ......ابن ماجه، كتاب ماجاء فى الجنائز، باب ماجاء فى عيادة المريض، ج ۲، ص ۱۹۱، حديث: ۱۴۴۱۔

करते हैं कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنِ احْتَكَرَ عَلَى الْمُسْلِمِينَ طَعَامًا ضَرَبَهُ اللّٰهُ بِالْجُذَامِ وَالْإِفْلَاسِ ''या'नी जो शख़्स मुसलमानों को नुक़्सान पहुंचाने के लिये ख़ूराक की ज़ख़ीरा अन्दोज़ी करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जुज़ाम के मरज़ और मुफ़्लिसी में मुब्तला फ़रमा देगा।''(1)

﴾12﴿.....तुम्हें परन्दों की तरह रिज़्क़ दिया जाएगा

हज़रते सय्यिदुना अबू तमीम जैशानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत करते हैं कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَوَكَّلُونَ عَلَى اللّٰهِ حَقَّ تَوَكُّلِهٖ لَرُزِقْتُمْ كَمَا يُرْزَقُ الطَّيْرُ تَغْدُو خِمَاصًا وَتَرُوحُ بِطَانًا ''या'नी अगर तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर जैसा तवक्कुल करने का ह़क़ है वैसा तवक्कुल करो तो वोह तुम्हें ऐसे रिज़्क़ अ़ता फ़रमाएगा जैसे परन्दों को रिज़्क़ अ़ता फ़रमाता है कि वोह सुब्ह़ भूके प्यासे जाते हैं लेकिन जब शाम को घर लौटते हैं तो उन का पेट भरा होता है।''(2)

﴾13﴿.....जो जुमुआ़ के लिये आए ग़ुस्ल कर के आए

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अपने वालिदे गिरामी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत करते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ جَاءَ مِنْكُمُ الْجُمُعَةَ فَلْيَغْتَسِلْ ''या'नी तुम में से जो भी जुमुआ़ की अदाएगी के लिये आए उसे चाहिये कि वोह ग़ुस्ल कर ले।''(3)

﴾14﴿.....अम्बियाए किराम की विरासत नहीं होती

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन औस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَا نُوْرَثُ مَا تَرَكْنَا صَدَقَةٌ ''या'नी हम अम्बिया की विरासत नहीं होती बल्कि जो कुछ हम छोड़ जाते हैं वोह तमाम सदक़ा है।''(4)

---

1 .....ابن ماجه، كتاب التجارات، باب الحكرة والجلب، ج ٣، ص ١٥، حديث: ٢١٥٥۔

2 .....ترمذی، کتاب الزھد عن رسول اللّٰه، باب فی التوکل علی اللّٰه، ج ۴، ص ۱۵۴، حدیث: ۲۳۵۱۔

3 .....سنن کبری، کتاب الجمعة، ایجاب الغسل۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۵۲۱، حدیث: ۱۶۷۵۔

4 .....سنن کبری للنسائی، کتاب الفرائض، ذکر مواریث۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۶۴، حدیث: ۶۳۰۷۔

﴾15﴿.....बाज़ार में चौथा कलिमा पढ़ने वाले का अज्र

हज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

مَنْ قَالَ فِي سُوقٍ جَامِعٍ يُبَاعُ فِيهِ ''या'नी जो शख़्स ख़रीदो फ़रोख़्त वाले बाज़ार में येह कहे :

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये बादशाही है और उसी के लिये तमाम ता'रीफ़ें हैं, वोह ज़िन्दा करता और मारता है और वोह ज़िन्दा है उसे कभी मौत न आएगी, उस के हाथ में भलाई है और वोह हर शै पर क़ादिर है।''

كَتَبَ اللّٰهُ لَهُ اَلْفَ اَلْفِ حَسَنَةٍ وَمَحَا عَنْهُ اَلْفَ اَلْفِ سَيِّئَةٍ وَبَنَى لَهُ بَيْتًا فِى الْجَنَّةِ

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ऐसे शख़्स के लिये दस लाख नेकियां लिख देता है और उस के दस लाख गुनाह मिटा देता है और उस के लिये जन्नत में एक घर बना देता है।''(1)

﴾16﴿.....मुझे अपनी उम्मत पर मुनाफ़िक़ का ख़ौफ़ है

हज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान नहदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّمَا اَخَافُ عَلٰى هٰذِهِ الْاُمَّةِ كُلَّ مُنَافِقٍ يَتَكَلَّمُ بِالْحِكْمَةِ وَ يَعْمَلُ بِالْجَوْرِ ''या'नी मुझे अपनी उम्मत पर ऐसे मुनाफ़िक़ीन का ख़ौफ़ है जो बातें तो बड़ी हिक्मत व दानाई वाली करेंगे लेकिन उन के आ'माल फ़ासिक़ों व फ़ाजिरों वाले होंगे।''(2)

﴾17﴿.....रमज़ान में ज़िक्रुल्लाह करने वाले की मग़्फ़िरत

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि मैं ने दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि : ذَاكِرُ اللّٰهِ فِيْ رَمَضَانَ يُغْفَرُ لَهُ وَ سَائِلُ اللّٰهِ فِيْهِ لَا يُخَيَّبُ

---

1 ....شرح السنة للبغوی، کتاب الدعوات، باب مایقول۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۱۲۸، حدیث: ۱۳۳۲۔

1 ....شعب الایمان للبیھقی، باب فی نشر العلم، فصل فی انه ینبغی۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۲۸۴، حدیث: ۱۷۷۷۔

''या'नी रमज़ानुल मुबारक में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वाले की मग़फ़िरत कर दी जाती है और रमज़ानुल मुबारक में सुवाल करने वाले को नाकाम नहीं लौटाया जाता।''(1)

﴾18﴿.....सलाम व मुसाफ़हा करने वालों पर रहमतों का नुज़ूल

हज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِذَا الْتَقَى الْمُسْلِمَانِ فَتَصَافَحَا نَزَلَتْ عَلَيْهِمَا مِائَةُ رَحْمَةٍ لِلْبَادِئْ مِنْهُمَا تِسْعُوْنَ وَ لِلْمُصَافِحِ عَشَرَةٌ ''या'नी जब दो मुसलमान मुलाक़ात करते हैं और आपस में मुसाफ़ह़ा करते हैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है, नव्वे रह़मतें सलाम में पहल करने वाले पर और दस रह़मतें मुसाफ़ह़ा करने वाले पर।''(2)

﴾19﴿.....तीन आदमी सफ़र करें तो एक को निगरान बना लें

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन वह्ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

اِذَا كُنْتُمْ ثَلَاثَةً فِيْ سَفَرٍ فَاَمِّرُوْا عَلَيْكُمْ اَحَدَكُمْ ذَاكَ اَمِيْرٌ اَمَرَهُ رَسُوْلُ اللّٰهِ

''या'नी जब तुम में कोई तीन अफ़राद एक साथ सफ़र करें तो वोह अपने में से एक को अपना निगरान मुक़र्रर कर लें कि इस बात का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म इरशाद फ़रमाया।''(3)

फ़ारूके़ आ'ज़म और सूद की हुरमत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रिबा या'नी सूद ह़रामे क़त़ई है इस की हुरमत का मुन्किर काफ़िर है और ह़राम समझ कर जो इस का मुर्तकिब हो वोह फ़ासिक़ व मर्दूदुश्शहादत है, सूद की हुरमत कुरआनो अह़ादीस दोनों से साबित है। सूद लेने और देने वालों सब पर ला'नत की गई है और अह़ादीसे मुबारका में सूद को अपनी मां के साथ ज़िना करने से भी बदतर फ़रमाया गया है। अमीरुल

---

1 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی الصیام، فضائل شهر رمضان، ج ٣، ص ٣١١، حدیث: ٣٦٢٧۔

2 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی مقاربة۔۔۔الخ، فصل فی المصافحة۔۔۔الخ، ج ٦، ص ٤٧٦، حدیث: ٨٩٢١۔

3 ......مسند بزار، مما روی زید بن وهب، ج ١، ص ٤٦٢، حدیث: ٣٢٩۔

मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से भी सूद की हु़रमत और इस के अह़काम से मुतअ़ल्लिक़ कई अह़ादीसे मुबारका मरवी हैं, चन्द अह़ादीस पेशे ख़िदमत हैं।

फ़ारूक़े आ'ज़म और सूद के बारे में इ़ल्म

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुह़म्मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : **اِنَّکُمْ تَزْعُمُوْنَ اَنَّا لَا نَعْلَمُ اَبْوَابَ الرِّبَا** ''या'नी तुम लोग येह गुमान करते हो कि हम रिबा के मसाइल के बारे में कुछ नहीं जानते।''

✿..... **وَلَاَنْ اَکُوْنَ اَعْلَمُهَا اَحَبُّ اِلَیَّ مِنْ اَنْ یَّکُوْنَ لِیْ مِثْلُ مِصْرَ وَکُوْرِهَا** ''ह़ालांकि रिबा के मसाइल जानना मेरे नज़्दीक इस बात से ज़ियादा पसन्दीदा है कि मैं मिस्र या इस के अत़राफ़ का मालिक बन जाऊं।''

✿..... **وَمِنَ الْاُمُوْرِ اُمُوْرٌ لَا یَکَدْنَ یَخْفِیْنَ عَلٰی اَحَدٍ** ''और सूद के मसाइल तो ऐसे बदीही हैं कि वोह किसी पर मख़्फ़ी नहीं हैं।''

✿..... **هُوَ اَنْ یَبْتَاعَ الذَّهَبَ بِالْوَرِقِ نَسِیْئًا وَاَنْ یَبْتَاعَ الثَّمَرَةَ وَهِیَ مُعَصْفَرَةٌ لَمْ تُطَبْ** ''मसलन सोने को चांदी के बदले उधार पर बेचना और फलों की बैअ़ करना इस ह़ाल में कि वोह पीले हों, ख़ुश्क न हुवे हों।''(1)

सूद के मुख़्तलिफ़ मसाइल और फ़ारूक़े आ'ज़म

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सीरीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि ''अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने चांदी की चांदी के साथ बैअ़ से मन्अ़ फ़रमाया मगर येह कि वोह बराबर बराबर हो।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ या ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : **اِنَّهَا تَزَیَّفُ عَلَیْنَا الْاَوْرَاقُ فَنُعْطِی الْخَبِیْثَ وَنَأْخُذُ الطَّیِّبَ** ''या'नी (ऐ अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ!) इस त़रह़ तो हमें खोटी चांदी दी जाएगी, हम तो खोटे सिक्के देते हैं और उ़म्दा लेते हैं।'' अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : **لَا تَفْعَلُوْا وَلٰکِنْ اِنْطَلِقْ اِلَی الْبَقِیْعِ فَبِعْ ثَوْبَکَ بِوَرِقٍ اَوْ عَرْضٍ** या'नी ऐसा न किया करो बल्कि बक़ीअ़ के बाज़ार में जा कर कपड़े को चांदी या किसी और चीज़ के बदले बेच दिया करो।'' फिर

---

(1) .....مصنف عبد الرزاق، کتاب البیوع، باب السلف فی الحیوان، ج۸، ص۲۰، حدیث:۱۴۲۳۸۔

फ़रमाया : فَاِذَا قَبَضتَهُ وَكَانَ لَكَ بَيْعُهُ فَاهْضُمْ مَاشِئْتَ، وَخُذْ وَرِقًا اِنْ شِئْتَ ''या'नी जब तुम किसी चीज़ पर मुकम्मल क़ब्ज़ा कर लो और उस की बैअ़ तुम्हारे लिये हो जाए तो उस में से जो चाहे छोड़ दो और जितनी चाहे चांदी ले लो।''(1)

सूद और जिस में सूद का शुबा हो उस को छोड़ दो

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : ''सूद को छोड़ो और जिस में सूद का शुबा हो, उसे भी छोड़ दो।''(2)

सूद जैसी गन्दी बीमारी से अपने आप को बचाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ी ज़माना जहां हमारा मुआ़शरा बे शुमार बुराइयों में मुब्तला है वहीं सूद जैसी गन्दी बीमारी भी अब तेज़ी से फैलती चली जा रही है, ह़ालांकि इस बीमारी में सरासर नुक़्सान ही नुक़्सान है, सूद खाना ऐसे है जैसे अपनी मां से ज़िना करना, सूद से पागल पन फैलता है, सूदी कारोबार में शिर्कत बाइसे ला'नत है, सूद ख़ोर की उख़रवी सज़ा येह है कि उस का पेट कमरे जैसा बड़ा होगा और उस में सांप भर दिये जाएंगे, सूद ख़ोर को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से ए'लाने जंग है, सूद ख़ोर ह़ासिद, बे रह़्म और माल का ह़रीस या'नी लालची बन जाता है, सूद ख़ोर का न तो कोई फ़र्ज़ क़बूल होगा और न ही कोई नफ़्ल, सूद ख़ोर का माल उसे कोई नफ़्अ़ नहीं देता, सूद से मईशत तबाहो बरबाद हो जाती है। लिहाज़ा अपने आप को सूद जैसी गन्दी बीमारी से बचाइये।(3) या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें सूद जैसी नुहूसत से मह़फ़ूज़ फ़रमा, हमें ह़लाल, त़य्यिब रोज़ी कमाने और खाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा, हमें अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदके़ दुन्या व आख़िरत की तमाम भलाइयां अ़ता फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِىِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ......مصنف عبد الرزاق، كتاب البيوع، باب السلف فى الحيوان، ج ۸، ص ۹۷، حديث: ۱۴۲۴۲-

2 ......ابن ماجه، كتاب التجارات، باب التغليظ فى الربا، ج ۳، ص ۷۳، حديث: ۲۲۷۶ مختصرا-

3 .....सूद, इस की नुहूसतों और इस से बचने के त़रीके़ जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 92 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब ''सूद और इस का इलाज'' का मुत़ालआ़ कीजिये।

चौथा बाब

मल्फ़ूज़ाते फ़ारूक़े आ'ज़म

इस बाब में मुलाहज़ा कीजिये..........

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुख़्तलिफ़ फ़रामीने मुबारका

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुख़्तलिफ़ इस्लाही मदनी फूलों से मुअ़त्तर मदनी गुलदस्ते

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़ुत़बात का बयान

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुख़्तलिफ़ सियासी, इस्लाही व इल्मी ख़ुत़बात

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मक्तूबात का बयान

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुख़्तलिफ़ लोगों को लिखे गए सियासी, इस्लाही व इल्मी मक्तूबात

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वसिय्यतों का बयान

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वक़्ते विसाल और दीगर औक़ात में की गई वसिय्यतें

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मन्क़ूल मुख़्तलिफ़ दुआएं

....

मल्फ़ूज़ाते फ़ारूक़े आ'ज़म

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चश्मए हिदायत थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कभी फ़ुज़ूल गुफ़्त्गू न फ़रमाया करते, आप की ज़बाने मुबारका से जो कलिमात सादिर होते वोह उम्मते मुस्लिमा के लिये मश्अ़ले राह होते, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर मुख़्तलिफ़ मल्फ़ूज़ात बत़ौरे अक़्वाल, ख़ुत़बात, वसाया और दुआ़ओं की सूरत में इरशाद फ़रमाए जो इस्लाहे़ अह़वाल, इस्लाहे़ आ'माल, ख़ौफ़े ख़ुदा, इज्ज़ो इन्किसारी व दीगर फ़िक्रे आख़िरत से भरपूर मवाद पर मुश्तमिल हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के तमाम मल्फ़ूज़ात का इह़ात़ा करना बहुत मुश्किल बल्कि तक़रीबन ना मुमकिन है, इस बाब में **''फ़रामीने फ़ारूक़े आ'ज़म''**, **''ख़ुत़बाते फ़ारूक़े आ'ज़म''**, **''वसायाए फ़ारूक़े आ'ज़म''**, **''फ़ारूक़े आ'ज़म की दुआ़एं''** शामिल हैं।

फ़रामीने फ़ारूक़े आ'ज़म

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'ज़ फ़रामीन तो आप के औसाफ़ के ज़िम्न में मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त के तह़त गुज़र चुके हैं, ह़ुसूले इ़ल्म और तरग़ीबो तह़रीस के लिये मज़ीद चन्द फ़रामीन पेशे ख़िदमत हैं :

शैत़ान की औलाद और उस के करतूत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं : اِنَّ ذُرِّیَّۃَ الشَّیْطَانِ تِسْعَۃٌ زَلِیْتُوْنٌ وَوَثِیْنٌ وَلَقُوْسٌ وَاَعْوَانٌ وَھَفَّافٌ وَمُرَّۃٌ وَالْمُسَوِّطُ وَدَاسِمٌ وَوَلَھَانٌ या'नी शैत़ान की येह नौ औलादें हैं :'' फिर इरशाद फ़रमाया : ۞ **''ज़लीतून** बाज़ारों के शैत़ान हैं और येह बाज़ारों में अपने झन्डे गाड़ कर ख़रीदो फ़रोख़्त करने वालों को गुमराह करते हैं।'' ۞ **''वसीन** मुसीबतें खड़ी करने वाले शैत़ान हैं।'' ۞ **''आ'वान** बादशाहों व हुक्मरानों के शैत़ान हैं जो उन्हें गुमराह करने पर मामूर हैं।'' ۞ **''हफ़्फ़ाफ़** शराब पिलाने वाले शैत़ान हैं।'' ۞ **''मुर्रह** ढोल ढमक्के व गाने बजाने वाले शैत़ान हैं।'' ۞ **''लक़ूस** मजूसियों के शैत़ान हैं।'' ۞ **''मुसव्वित़** ख़बरों वाले शैत़ान हैं जो लोगों के दरमियान ऐसी उलटी सीधी ख़बरें फैलाते हैं जिन की कोई ह़क़ीक़त नहीं होती।'' ۞ **''दासिम** वोह शैत़ान हैं जो घरों के शैत़ान हैं, जब कोई शख़्स अपने घर में दाख़िल होता है और सलाम नहीं करता और न ही अल्लाह का नाम लेता है तो येह शैत़ान उस के घर में दाख़िल हो कर

फ़ितना व फ़साद फैलाते हैं यहां तक कि उस घर में त़लाक़, खुल्अ़ और मार पिटाई की नोबत तक आ जाती है।" ❁ "**वलहान** वोह शैत़ान हैं जो वुज़ू करने वालों और नमाज़ पढ़ने वालों और दीगर इ़बादात करने वालों के दिलों में वस्वसे पैदा करते हैं।"(1)

हमारे लिये लम्ह़ए फ़िक्रिय्या....!

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर किसी फ़ौज का सिपह सालार दो सिपाहियों को जंग पर भेजे इस त़रह़ कि एक को उस के दुश्मन का नाम पता पहचान और दीगर तमाम मुआ़मलात से मुत्त़लअ़ कर दे जब कि दूसरे को फ़क़त़ येह कहे कि तुम ने अपने दुश्मन से फ़क़त़ जंग लड़नी है अलबत्ता वोह दुश्मन है कौन? येह नहीं बताऊंगा तो यक़ीनन दूसरे के मुक़ाबले में पहले सिपाही के लिये जंग लड़ना निहायत ही आसान होगा कि उसे अपने दुश्मन की मुकम्मल मा'लूमात ह़ासिल हैं। कुरआने पाक में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पारह 12, सूरए यूसुफ़, आयत नम्बर 5 में वाज़ेह़ त़ौर पर इरशाद फ़रमा दिया कि "शैत़ान इन्सान का खुल्लम खुल्ला दुश्मन है।" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मज़्कूरए बाला फ़रमान में भी शैत़ान की औलाद और उस के फ़ितनों के बारे में काफ़ी तफ़्सील मौजूद है, अगर हम अपने इस ह़क़ीक़ी दुश्मन को जानने के बा वुजूद इस के ख़िलाफ़ जंग न कर सकें तो **वाक़ेई येह हमारे लिये लम्ह़ए फ़िक्रिय्या है.....!**

अगर आप चाहते हैं कि अपने ह़क़ीक़ी दुश्मन या'नी नफ़्सो शैत़ान के ख़िलाफ़ बेहतर अन्दाज़ में जंग कर सकें तो इस का एक ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल भी है, आप दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, अपने अपने शहरों में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमा कर खूब खूब सुन्नतों की बहारें लूटिये। सुन्नतों की तरबिय्यत के बे शुमार मदनी क़ाफ़िले शहर ब शहर, गाऊं ब गाऊं सफ़र करते रहते हैं, आप भी सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार फ़रमा कर अपनी आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा करें। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ आप अपनी ज़िन्दगी में ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर मदनी इन्क़िलाब बरपा होता देखेंगे।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

1 ......المنبهات، ص ۹۴۔

ख़ुशूअ़ गर्दनों में नहीं दिल में होता है

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक शख़्स को अपनी गर्दन झुकाए पाया तो उस से इरशाद फ़रमाया : يَا صَاحِبَ الرَّقَبَةِ اِرْفَعْ رَقَبَتَكَ لَيْسَ الْخُشُوْعُ فِي الرِّقَابِ وَاِنَّمَا الْخُشُوْعُ فِي الْقَلْبِ "या'नी ऐ गर्दन नीची रखने वाले ! अपनी गर्दन बुलन्द कर क्यूंकि ख़ुशूअ़ गर्दनों में नहीं दिल में होता है।"(1)

कहीं फूल कर आस्मान तक न पहुंच जाओ

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से एक शख़्स ने नमाज़े फ़ज्र से फ़राग़त के बा'द लोगों को नसीह़त करने की इजाज़त चाही तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस को मन्अ़ फ़रमा दिया, तो उस ने अ़र्ज़ की : تَمْنَعُنِي مِنْ نُصْحِ النَّاسِ؟ "या'नी क्या आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुझे लोगों को वा'ज़ करने से रोक रहे हैं ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اَخْشٰى اَنْ تَنْتَفِخَ حَتّٰى تَبْلُغَ الثُّرَيَّا "या'नी मुझे ख़ौफ़ है कि कहीं तुम फूल कर सितारों तक न पहुंच जाओ।"(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ ज़ाहिरी रख-रखाव का नाम नहीं कि ज़ाहिर में तो बड़ा मुत्तक़ी परहेज़गार बना रहे और बात़िन हमेशा मैला रहे, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मज़्कूरए बाला फ़रामीन रियाकारी पर एक कारिये ज़र्ब हैं। अफ़्सोस ! आज कल हम अव्वल तो इ़बादत करते ही नहीं और अगर टूटी फूटी इ़बादत कर भी लें तो नाज़ो फ़ख़्र करते फूले नहीं समाते और अपने नेक आ'माल मसलन नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात मसाजिद की ख़िदमत, ख़ल्क़े ख़ुदा की मदद और समाजी फ़लाह़ो बहबूद के कामों को अपने ख़याल में "कारनामा" तसव्वुर करते हुवे हर जगह चहकते ए'लान करते फिरते ढन्डोरा पीटते नहीं थकते। आह ! उन का ज़ेह्न किस त़रह़ बनाया जाए उन को ता'मीरी और अख़्लाक़ी सोच किस त़रह़ फ़राहम की जाए उन्हें किस त़रह़ बावर कराया जाए कि ऐ मेरे नादान इस्लामी भाइयो ! इस त़रह़ बिला ज़रूरते शरई अपनी नेकियों का ए'लान रियाकारी है और रियाकारी सरासर तबाहकारी है ऐसा करने से न सिर्फ़ आ'माल बरबाद होते हैं बल्कि रियाकारी का गुनाह नामए आ'माल में दर्ज कर दिया जाता है। जब कि इस के बर अ़क्स तवाज़ोअ़, आ़जिज़ी व इन्किसारी में इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत है, बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आ़जिज़ी इख़्तियार करने वाले को बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाता है। चुनान्चे,

---

1 ......الزواجر، الكبيرة الثانية، الشرک الاصغر، ج ۱، ص ۸۶۔

2 ......الزواجر، الكبيرة الثانية، الشرک الاصغر، ج ۱، ص ۹۶۔

तवाज़ोअ़ करने वाले के लिये बुलन्दी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : اِنَّ الْعَبْدَ اِذَا تَوَاضَعَ لِلّٰہِ رَفَعَ اللّٰہُ حَکَمَتَہٗ "या'नी बन्दा जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये तवाज़ोअ़ इख़्तियार करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की क़द्रो मन्ज़िलत को बुलन्द फ़रमा देता है।"[1]

दस मदनी फूलों का फ़ारूक़ी गुलदस्ता

दस चीज़ें, दस के बिग़ैर दुरुस्त नहीं हो सकतीं

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : عَشَرَۃٌ لَا تَصْلُحُ بِغَیْرِ عَشَرَۃٍ "या'नी दस चीज़ें दस चीज़ों के बिग़ैर दुरुस्त नहीं हो सकतीं।" फिर इरशाद फ़रमाया :

- ..... لَا یَصْلَحُ الْعَقْلُ بِغَیْرِ وَرْعٍ "या'नी तक़्वे के बिग़ैर अ़क़्ल दुरुस्त नहीं हो सकती।"
- ..... وَلَا الْفَضْلُ بِغَیْرِ عِلْمٍ "या'नी इ़ल्म के बिग़ैर फ़ज़ीलत दुरुस्त नहीं हो सकती।"
- ..... وَلَا الْفَوْزُ بِغَیْرِ خَشِیَّۃٍ "या'नी ख़ौफ़े ख़ुदा के बिग़ैर कामयाबी दुरुस्त नहीं हो सकती।"
- ..... وَلَا السُّلْطَانُ بِغَیْرِ عَدْلٍ "या'नी इन्साफ़ के बिग़ैर बादशाहत दुरुस्त नहीं हो सकती।"
- ..... وَلَا الْحَسَبُ بِغَیْرِ اَدَبٍ "या'नी अदब के बिग़ैर ह़सब दुरुस्त नहीं हो सकता।"
- ..... وَلَا السُّرُوْرُ بِغَیْرِ اَمْنٍ "या'नी अम्न के बिग़ैर ख़ुशी दुरुस्त नहीं हो सकती।"
- ..... وَلَا الْغِنٰی بِغَیْرِ جُوْدٍ "या'नी मालदारी बिग़ैर सख़ावत के दुरुस्त नहीं हो सकती।"
- ..... وَلَا الْفَقْرُ بِغَیْرِ قَنَاعَۃٍ "या'नी क़नाअ़त के बिग़ैर फ़क़्र दुरुस्त नहीं हो सकता।"
- ..... وَلَا الرِّفْعَۃُ بِغَیْرِ تَوَاضُعٍ "या'नी आ़जिज़ी के बिग़ैर बुलन्दी दुरुस्त नहीं हो सकती।"
- ..... وَلَا الْجِہَادُ بِغَیْرِ تَوْفِیْقٍ "या'नी तौफ़ीक़ के बिग़ैर जिहाद दुरुस्त नहीं हो सकता।"[2]

---

1 ......الزواجر،الکبیرۃ الرابعۃ،ج ۱،ص ۱۲۳۔

2 ......المنبہات،ص ۹۹۔

क़ुरआने पाक हिफ़्ज़ करने का त़रीक़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल आ़लिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे : "क़ुरआने करीम की पांच पांच आयात याद किया करो क्यूंकि जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام पांच पांच आयात ले कर ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ह़ाज़िर होते थे।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह एक मदनी सोच थी कि क़ुरआने पाक जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام जैसा ले कर नाज़िल हुवे उसी त़रह़ याद किया जाए, वरना क़ुरआने पाक याद करने में पांच आयात को मख़्सूस करना कोई फ़र्ज़ वाजिब नहीं, पांच आयतों से कम या ज़ियादा भी हिफ़्ज़ की जा सकती हैं। क्यूंकि येह त़ालिबे इ़ल्म पर भी होता है कि बा'ज़ त़लबा कम सबक़ याद करते हैं तो कई त़लबा ज़ियादा सबक़ याद करने की भी इज़ाफ़ी सलाह़िय्यत रखते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की मजलिस मद्रसतुल मदीना के तह़त चलने वाले सेंकड़ों मदारिस में हज़ारों त़लबा व त़ालिबात हिफ़्ज़ो नाज़िरा क़ुरआने पाक की ता'लीम ह़ासिल कर रहे हैं और इन में कई ऐसे त़लबा भी होते हैं जो रोज़ाना एक सफ़ह़े से भी ज़ाइद सबक़ याद कर के सुनाने की तरकीब बनाते हैं।

ह़ुकूमत ह़ासिल करने की ह़िर्स

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ یَّحْرِصُ عَلَی الْاَمَارَۃِ لَمْ یَعْدِلْ فِیْھَا "या'नी जो शख़्स ह़ुकूमत ह़ासिल करने की ह़िर्स रखता है वोह कभी भी इस में अ़द्ल नहीं कर सकता।"(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस मुबारक फ़रमान में इक़्तिदार की ख़्वाहिश रखने वाले लोगों के लिये इ़ब्रत ही इ़ब्रत है कि इक़्तिदार ह़ासिल करने वाला बहुत बुरे त़रीक़े से फंस जाता है कि कल बरोज़े क़ियामत उस से रिआ़या के बारे में सख़्ती से पूछ गछ की जाएगी, जिस की ह़ुकूमत जितनी वसीअ़ होगी उस का ह़िसाब भी उतना ज़ियादा होगा, ह़ाकिम कल बरोज़े क़ियामत ह़सरत से कहेगा : "ऐ काश ! अय्यामे ह़ुकूमत

---

1 ......شعب الایمان، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی تعلیم القرآن، ج ۲، ص ۳۳۱، حدیث: ۱۹۵۸۔

2 ......سیر اعلام النبلاء، الطبقۃ الثالثۃ عشر، محمد بن ابی الحواری، ج ۱۰، ص ۸۹، الرقم: ۱۹۹۱۔

इत़ाअ़ते इलाही में गुज़ारे होते।" ह़दीसे मुबारका में है : "हुकूमत अमानत है और येह क़ियामत के दिन रुस्वाई व नदामत है सिवाए उस शख़्स के जो इसे ह़क़ के साथ ले और वोह ज़िम्मेदारियां पूरी करे जो उस में हैं।"(1)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "सल्त़नत व हुकूमत नफ़्सानी ख़्वाहिश, दुन्यावी माल इ़ज़्ज़त की लालच से त़लब करना ह़राम है कि ऐसे त़ालिबे जाह लोग ह़ाकिम बन कर ज़ुल्म करते हैं।"(2)

येह भी तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की एक ने'मत है

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक ऐसे शख़्स के पास से गुज़रे जो जुज़ाम के मरज़ में मुब्तला होने के साथ अन्धा, गूंगा और बहरा भी था, जो उस के साथ लोग थे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से पूछा : هَلْ يَرَوْنَ فِيْ هٰذَا مِنْ نِعَمِ اللّٰهِ شَيْئًا "या'नी क्या तुम्हें इस की ज़ात में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों में से कोई ने'मत नज़र आती है?" वोह कहने लगे कि नहीं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "क्यूं नहीं है! क्या तुम लोग देखते नहीं हो कि येह जब पेशाब करता है तो बिग़ैर किसी तक्लीफ़ के आसानी के साथ करता है, येह भी तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों में से एक ने'मत ही है।"(3)

छोटी सी ना पसन्दीदा बात भी आज़माइश है

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जूते का तस्मा टूट गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ पढ़ा। लोगों ने अ़र्ज़ किया : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने जूते का तस्मा टूटने पर भी اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ पढ़ते हैं?" फ़रमाया : اِنَّ كُلَّ شَيْءٍ اَصَابَ الْمُؤْمِنَ يَكْرَهُهُ فَهُوَ مُصِيْبَةٌ "या'नी मोमिन को पहुंचने वाली हर वोह छोटी सी छोटी बात जिसे वोह ना पसन्द करता है उस के लिये आज़माइश ही है।"(4)

---

1 ......مسلم، کتاب الامارۃ، کراھۃ الامارۃ بغیر ضرورۃ، ص١٠١٥، حدیث:١٦ ملتقطا۔

2 .....मिरआतुल मनाजीह, जि. 5, स. 348।

3 ......کنز العمال، کتاب الاخلاق، الصبر علی البلایا مطلقا، الجزء:٣، ج٢، ص١٠٣، حدیث:٨٢٥٠۔

4 ......مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الادب، فی الرجل ینقطع۔۔۔الخ، ج٦، ص٢٥٩، حدیث:٣۔

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मज़्कूरए बाला दोनों फ़रामीन "सब्रो शुक्र" की दो अ़ज़ीम ने'मतों की तरग़ीब से माला माल हैं, यक़ीनन वोह शख़्स कामयाब व कामरान है जो हर ह़ाल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र करे, अगर कोई मुसीबत आए तो उस पर सब्र कर के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाए क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने प्यारे बन्दों को आज़्माइश में मुब्तला फ़रमाता है ताकि वोह इस पर सब्र करें और फिर वोह उन के दरजात को बुलन्द फ़रमाए। चुनान्चे,

महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब बन्दे का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां कोई मर्तबा मुक़र्रर हो और वोह उस मर्तबे तक किसी अ़मल से न पहुंच सके तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जिस्म, माल या औलाद की आज़्माइश में मुब्तला फ़रमाता है फिर उसे इन तकालीफ़ पर सब्र की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाता है यहां तक कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां अपने मुक़र्रर दरजे तक पहुंच जाता है।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन वासिल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اِذَا كَانَ الرَّجُلُ مُقْصِرًا فِی الْعَمَلِ اُبْتُلِیَ بِالْهَمِّ لِیُكَفِّرَ عَنْهُ "या'नी जब किसी शख़्स से नेक आ'माल करने में कोताही होती है तो उसे किसी न किसी आज़्माइश में मुब्तला कर दिया जाता है ताकि येह आज़्माइश उस की कोताही का कफ़्फ़ारा हो जाए।"(2)

आठ मदनी फूलों का फ़ारूक़ी गुलदस्ता

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

- .....مَنْ كَثُرَ ضِحْكُهُ قَلَّتْ هَيْبَتُهُ "या'नी जो ज़ियादा हंसता है उस की हैबत कम हो जाती है।"
- .....مَنْ كَثُرَ مَزَاحُهُ اِسْتَخَفَّ بِالنَّاسِ "या'नी जो ज़ियादा मिज़ाह़ करता है लोगों के नज़दीक ह़क़ीर हो जाता है।"
- .....مَنِ اسْتَخَفَّ بِالنَّاسِ اِسْتَخَفَّ بِهٖ "या'नी जो लोगों के नज़दीक ह़क़ीर हो वोह अपने नज़दीक भी ह़क़ीर हो जाता है।"

---

1 ......سنن ابی داؤد، کتاب الجنائز، باب الامراض المکفرة۔۔۔الخ، الامراض المکفرة للذنوب، ج ٣، ص ٢٤٦، حدیث: ٣٠٩٠۔

2 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب السابع والخمسون، ص ١٧٢۔

.....مَنْ اَكْثَرَ فِيْ شَيْءٍ عُرِفَ بِهٖ "या'नी जो किसी चीज़ को कसरत से करता है तो उस के सबब मशहूर हो जाता है।"

.....مَنْ كَثُرَ كَلَامُهٗ كَثُرَ سَقَطُهٗ "या'नी जो ज़ियादा बात करता है उस की कमीनगी बढ़ जाती है।"

.....مَنْ كَثُرَ سَقَطُهٗ قَلَّ حَيَاؤُهٗ "या'नी जिस की कमीनगी बढ़ जाती है उस की ह़या कम हो जाती है।"

.....مَنْ قَلَّ حَيَاؤُهٗ قَلَّ وَرَعُهٗ "या'नी जिस की ह़या कम हो जाती है उस का तक़्वा कम हो जाता है।"

.....مَنْ قَلَّ وَرَعُهٗ مَاتَ قَلْبُهٗ "या'नी जिस का तक़्वा कम हो जाता है उस का दिल मुर्दा हो जाता है।"[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मज़्कूरए बाला फ़रामीन ज़ोह्दो तक़्वा के बहुत बड़े बड़े अबवाब हैं, अगर कोई शख़्स इख़्लास के साथ इन पर अ़मल करे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां की भलाइयां पाएगा। इन पर अ़मल करने का एक आसान त़रीक़ा शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़त़ाकर्दा मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करना भी है। आप भी मदनी इन्आ़मात का रिसाला रोज़ाना पुर कर के हर माह अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का मदनी ज़ेह्न बनेगा। हर इस्लामी भाई अपना येह मदनी ज़ेह्न बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।"** اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ। अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

तू वली अपना बना ले उस को रब्बे लम यज़ल
मदनी इन्आ़मात पर करता है जो कोई अ़मल
अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 ......المنبہات، ص ۸۲۔

जहन्नम का ज़िक्र कसरत से किया करो

हज़रते सय्यिदुना हसन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे :

اَكْثِرُوا ذِكْرَ النَّارِ، فَاِنَّ حَرَّهَا شَدِيدٌ، وَاِنَّ قَعْرَهَا بَعِيدٌ، وَاِنَّ مَقَامِعَهَا حَدِيدٌ

''या'नी दोज़ख़ को ज़ियादा याद किया करो क्यूंकि इस की गर्मी बहुत शदीद है, और इस की गहराई बहुत दूर तक है, और इस के गुर्ज़ लोहे के हैं।''(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दोज़ख़ और इस की सख़्तियों को याद करने से फ़िक्रे आख़िरत का ज़ेहन मिलता है, और यक़ीनन समझदार तो वोही है जो दुन्या में रहते हुवे आख़िरत की तय्यारी में मश्ग़ूल रहे कि अ़ज़ाबे जहन्नम सहने की किसी में सकत नहीं, जहन्नम का सब से हल्का अ़ज़ाब आग की जूतियां हैं, ज़रा ग़ौर तो कीजिये ! क्या दुन्या की आग हम बरदाश्त कर लेते हैं ? हरगिज़ नहीं बल्कि अगर ग़लती से जलती हुई मोमबत्ती पर हाथ लग जाए तो जलन से बिलबिला उठते हैं, जहन्नम की आग की गर्मी दुन्या की आग की गर्मी से उन्हत्तर दरजे ज़ियादा है। हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि ''फ़िरिश्तों ने एक हज़ार साल तक जहन्नम की आग को भड़काया तो वोह सुर्ख़ हो गई, फिर दोबारा एक हज़ार बरस तक भड़काई गई तो वोह सफ़ेद हो गई, फिर तीसरी बार जब एक हज़ार बरस तक भड़काई गई तो वोह काले रंग की हो गई तो वोह निहायत ही ख़ौफ़नाक सियाह रंग की है।''(2)

भलाई के कामों में आगे बढ़ो

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

يَا مَعْشَرَ الْقُرَّاءِ! اِرْفَعُوْا رُؤُوْسَكُمْ، مَا اَوْضَحَ الطَّرِيْقُ! فَاسْتَبِقُوْا الْخَيْرَاتِ، وَلَا تَكُوْنُوْا كَلًّا عَلَى الْمُسْلِمِيْنَ

''या'नी ऐ क़ुर्रा की जमाअ़त ! अपने सरों को ऊपर उठाओ और देखो रास्ता किस क़दर वाज़ेह़ है, भलाई के कामों में आगे बढ़ो और मुसलमानों पर बोझ मत बनो।''(3)

1 ......مصنف ابن ابی شیبة، کتاب ذکر النار، ما ذکر فیما اعد لاهل النار، ج۸، ص۹۷، حدیث: ۴۰۔

2 ......ترمذی، کتاب صفة جهنم، باب منه، ج۴، ص۲۶۶، حدیث: ۲۶۰۰۔

3 ......شعب الایمان، باب التوکل والتسلیم، ج۲، ص۸۲، حدیث: ۱۲۱۷۔

छे मदनी फूलों का फ़ारूक़ी गुलदस्ता

अल्लाह ने छे चीज़ों को छे चीज़ों में छुपा दिया

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّ اللّٰہَ تَعَالٰی کَتَمَ سِتَّةً فِیْ سِتَّةٍ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने छे चीज़ों को छे चीज़ों में छुपा दिया :

- .....كَتَمَ الرِّضَاءَ فِي الطَّاعَةِ "या'नी अपनी रिज़ा को अपनी इत़ाअ़त में छुपा दिया।"
- .....كَتَمَ الْغَضَبَ فِي الْمَعْصِيَةِ "या'नी अपनी नाराज़ी को गुनाहों में छुपा दिया।"
- .....كَتَمَ اِسْمَهُ الْاَعْظَمَ فِي الْقُرْآنِ "या'नी अपने इस्मे आ'ज़म को कुरआन में छुपा दिया।"
- .....كَتَمَ لَيْلَةَ الْقَدْرِ فِيْ شَهْرِ رَمَضَانَ "या'नी शबे क़द्र को रमज़ान में छुपा दिया।"
- .....كَتَمَ الصَّلَاةَ الْوُسْطٰى فِي الصَّلَوَاتِ "या'नी दरमियानी नमाज़ को दीगर नमाज़ों में छुपा दिया।"
- .....كَتَمَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِي الْاَيَّامِ "या'नी यौमे क़ियामत को दीगर अय्याम में छुपा दिया।"(1)

मुह़ासबए नफ़्स कर के आंसू बहाओ

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اِسْتَغْزِرُوا الدُّمُوْعَ بِالتَّذَكُّرِ "या'नी मुह़ासबए नफ़्स कर के अपने आंसू बहाओ।"(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुह़ासबए नफ़्स करते हुवे फ़िक्रे आख़िरत में आंसू बहाना निहायत ही अ़ज़ीम सआ़दत है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपने मुरीदीन, मुह़िब्बीन व मुतअ़ल्लिक़ीन को हमेशा फ़िक्रे मदीना या'नी मुह़ासबए नफ़्स करने की तरग़ीब दिलाते रहते हैं, और इस्लामी भाइयों व इस्लामी बहनों के लिये फ़िक्रे आख़िरत पर मुश्तमिल मदनी इन्आ़मात का गुलदस्ता भी मुरत्तब फ़रमाया है, जिन पर अ़मल कर के हर शख़्स दुन्या व आख़िरत की बे शुमार भलाइयां ह़ासिल कर सकता है। आप भी दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये और मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कर के अपनी आख़िरत को बेहतर बनाइये।

---

1 ......المنبهات، ص ١٧۔

2 ......المجالسة وجواهر العلم، الجزء الخامس، ج ١، ص ٢٩٣، الرقم: ٧٣٦۔

फ़ारूके आ'ज़म की सब्रो शुक्र की दो सुवारियां

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं :

لَوْ اُوْتِیْتُ بِرَاحِلَتَیْنِ رَاحِلَۃَ شُکْرٍ وَرَاحِلَۃَ صَبْرٍ لَمْ اُبَالِ اَیَّھُمَا رَکِبْتُ

"या'नी अगर मुझे दो सुवारियां दे दी जाएं, एक शुक्र की सुवारी और एक सब्र की सुवारी तो मुझे कोई परवाह नहीं कि मैं दोनों में से किसी पर भी सुवार हो जाऊं।"(1)

سُبْحَانَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ! सद हज़ार आफ़रीं सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की मदनी सोच पर जिन्हों ने खुदाए बुज़ुर्गो बरतर की रिज़ा के लिये शाही शानो शौकत, मह़ल्लात व बाग़ात, ग़िलमान व खुद्दाम और दुन्यवी ज़ेबो ज़ीनत को ठुकरा कर सादगी व आ़जिज़ी इख़्तियार की। भूको प्यास की मुसीबतें हंस कर बरदाश्त कीं, कभी भी ह़र्फ़े शिकायत लब पर न लाए और रिज़्क़े ह़लाल की ख़ातिर मेह़नत मज़दूरी की। यक़ीनन येही वोह लोग हैं जिन्हों ने आख़िरत की क़द्र जान ली। उन पर दुन्या की ह़क़ीक़त आशकार हो चुकी थी कि दुन्या बे वफ़ा है उस की ने'मतें ज़वाल पज़ीर हैं। इन आ़रिज़ी लज़्ज़तों की ख़ातिर दाइमी खुशियों को नज़र अन्दाज़ कर देना अ़क़्लमन्दों का काम नहीं। समझदार लोग वोही हैं जो बाक़ी रहने वाली खुशियों को फ़ानी खुशियों पर तरजीह़ देते हैं और दुन्यवी मसाइब व तकालीफ़ को सब्रो शुक्र के साथ बरदाश्त करते हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन पाकीज़ा हस्तियों के सदक़े हमें भी आ'माले सालेह़ा पर इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमाए। हर ह़ाल में अपनी रिज़ा पर राज़ी रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। बे सब्री व नाशुक्री से बचा कर सब्रो शुक्र की दौलत से माला माल फ़रमाए। कामयाबी इसी में है कि हर आने वाली मुसीबत पर सब्र कर के अज्र का मुस्तह़िक़ हो। मसाइबो आलाम के ज़रीए़ हमें आज़्माया जाता है और बहादुरी येही है कि इम्तिह़ान व आज़्माइश आ जाए तो बे सब्री कर के मुंह न फेरा जाए बल्कि खुश दिली से आज़्माइशों से मुक़ाबला किया जाए, मुसीबत खुद न मांगी जाए बल्कि अ़फ़्वो करम की भीक त़लब की जाए। अगर मुसीबत आ जाए तो उस पर सब्र किया जाए। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अपने ह़िफ़्ज़ो अमान में रखे और हमारा ख़ातिमा बिल ख़ैर फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۱۳، ص ۴۷، کنز العمال، کتاب فضائل الصحابۃ، شکرہ، الجزء: ۱۲، ج ۶، ص ۲۹۰، حدیث: ۳۵۹۷۹۔

मेरी मुश्किलें गर तेरा इम्तिहां हैं
तो हर ग़म क़सम से ख़ुशी का समां है
गुनाहों की मेरी अगर येह सज़ा है
तो सब मुश्किलों को मिटा मेरे मौला

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पांच मदनी फूलों का फ़ारूक़ी गुलदस्ता

फ़ारूके आ'ज़म ने सब कुछ देखा लेकिन....

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه इरशाद फ़रमाते हैं :

.....رَاَيْتُ جَمِيْعَ الْاَخِلَّاءِ فَلَمْ اَرَ خَلِيْلًا اَفْضَلَ مِنْ حِفْظِ اللِّسَانِ "या'नी मैं ने तमाम दोस्त देखे लेकिन ज़बान की हिफ़ाज़त से अफ़्ज़ल किसी को न पाया।"

.....رَاَيْتُ جَمِيْعَ اللِّبَاسِ فَلَمْ اَرَ لِبَاسًا اَفْضَلَ مِنَ الْوَرْعِ "या'नी मैं ने तमाम लिबास देखे लेकिन तक़्वे के लिबास से ज़ियादा अफ़्ज़ल कोई न पाया।"

.....رَاَيْتُ جَمِيْعَ الْمَالِ فَلَمْ اَرَ مَالًا اَفْضَلَ مِنَ الْقَنَاعَةِ "या'नी मैं ने तमाम माल देखे लेकिन माले क़नाअ़त से ज़ियादा अफ़्ज़ल किसी को न पाया।"

.....رَاَيْتُ جَمِيْعَ الْبِرِّ فَلَمْ اَرَ بِرًّا اَفْضَلَ مِنَ النَّصِيْحَةِ "या'नी मैं ने तमाम नेकियां देखीं लेकिन ख़ैर ख़्वाही से ज़ियादा अफ़्ज़ल किसी नेकी को न पाया।"

.....رَاَيْتُ جَمِيْعَ الْاَطْعِمَةِ فَلَمْ اَرَ طَعَامًا اَلَذَّ مِنَ الصَّبْرِ "या'नी मैं ने तमाम खाने देखे लेकिन सब्र से ज़ियादा लज़ीज़ खाना कोई न पाया।"(1)

---

(1)......المنبهات، ص ٦٥۔

लोगों के बिगड़ने और सुधरने की वज्ह

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

قَدْ عَلِمْتَ مَتٰی صَلَاحُ النَّاسِ وَمَتٰی فَسَادُھُمْ

"या'नी क्या तुम जानते हो कि लोग सुधरते कैसे हैं और बिगड़ते कैसे हैं ?" फिर खुद ही इरशाद फ़रमाया : "जब नसीह़त की बात किसी छोटे की त़रफ़ से आती है तो वोह इस पर बिगड़ जाता है और जब बड़े की त़रफ़ से आती है तो छोटा उस को मान लेता है तो दोनों का मुआ़मला सह़ीह़ रहता है।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस मुबारक फ़रमान में एक निहायत ही ख़त़रनाक बात़िनी मरज़ "तकब्बुर" की एक सूरत का बयान है। क्यूंकि अपने से छोटे की नसीह़त आमोज़ बात को तस्लीम न करना भी नफ़्से अम्मारा की शरारत और तकब्बुर की अ़लामत है। नसीह़त की बात हर शख़्स की क़बूल करनी चाहिये, चाहे वोह छोटा हो या बड़ा। हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن तो छोटे छोटे जानवरों और बच्चों से भी नसीह़त ह़ासिल कर लिया करते थे। एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बारे में मन्क़ूल है वोह फ़रमाते हैं : मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल करना मुर्ग़ी से सीखा कि "वोह एक वक़्त का खाना खाने के बा'द बाक़ी जो बचता है उसे गिरा देती है गोया वोह येह पैग़ाम देती है कि जिस रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अभी खाना खिलाया है बा'द में भी खिलाएगा लिहाज़ा ज़ख़ीरा करने की ज़रूरत नहीं। सुल्ह़ करना, बुग़्ज़ो कीना व ह़सद व नफ़रत से बचना मैं ने बच्चों से सीखा कि छोटे छोटे बच्चे जब किसी बात पर झगड़ते हैं तो थोड़ी ही देर बा'द एक दूसरे में घुल मिल जाते हैं और ऐसा लगता है इन में कोई लड़ाई झगड़ा हुवा ही नहीं है। वोह बच्चे गोया येह पैग़ाम देते हैं कि आपस के छोटे मोटे इख़्तिलाफ़ ख़त्म कर के सुल्ह़ कर लो और दिलों में बुग़्ज़ो कीना, ह़सद व नफ़रत को जगह न दो। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इन बुज़ुर्गों के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

---

(1) ......جامع بیان العلم وفضله، باب حال العلم اذا۔۔۔الخ، ص ٢٢٠، الرقم: ٦٧٩۔

चार मदनी फूलों का फ़ारूक़ी गुलदस्ता

मुसीबत के वक़्त फ़ारूक़े आ'ज़म की चार ने'मतें

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं : مَا ابْتُلِيْتُ بِبَلِيَّةٍ اِلَّا وَ كَانَ لِلّٰهِ تَعَالٰى عَلَيَّ فِيْهَا اَرْبَعُ نِعَمٍ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं जब भी किसी मुसीबत में मुब्तला होता हूं उस वक़्त भी मुझ पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन चार ने'मतों का नुज़ूल होता है : ❁ "उस मुसीबत के सबब फ़िल वक़्त मैं गुनाह में मुब्तला नहीं होता।" ❁ "उस मुसीबत के वक़्त मुझ पर उस से बड़ी कोई मुसीबत नाज़िल न हुई।" ❁ "उस मुसीबत के वक़्त मैं उस पर राज़ी होता हूं।" ❁ "उस मुसीबत के वक़्त मुझे उस पर सवाब की उम्मीद होती है।"[(1)]

तुम बराबर भलाई पर रहोगे

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मुआ़विय्या किन्दी عَلَيْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی से रिवायत है फ़रमाते हैं मैं मुल्के शाम में अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में हाज़िर हुवा तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से लोगों की कैफ़िय्यत के मुतअ़ल्लिक़ पूछा और फिर खुद ही तशवीश का इज़्हार करते हुवे फ़रमाने लगे : "शायद लोगों की येह कैफ़िय्यत होगी कि बिदके हुवे ऊंट की त़रह़ मस्जिद में आते होंगे और मस्जिद में अपनी क़ौम या जान पहचान के लोगों को मजलिस में देख कर उन के साथ बैठ जाते होंगे।" मैं ने अ़र्ज़ किया : "नहीं हुज़ूर ! ऐसी कैफ़िय्यत नहीं है, अलबत्ता उन की मुख़्तलिफ़ मजलिसें मुन्अ़क़िद होती हैं लोग भलाई सीखते सिखाते हैं।" फ़रमाया : لَنْ تَزَالُوْا بِخَيْرٍ مَّا كُنْتُمْ كَذٰلِكَ "या'नी जब तक तुम्हारी येह सूरत रहेगी तुम बराबर भलाई पर रहोगे।"[(2)]

तीन[3] मदनी फूलों का फ़ारूक़ी गुलदस्ता

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

✿.....حُسْنُ التَّوَدُّدِ اِلَى النَّاسِ نِصْفُ الْعَقْلِ "या'नी लोगों से हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आना निस्फ़ अ़क़्ल है।"

✿.....حُسْنُ السُّوَالِ نِصْفُ الْعِلْمِ "या'नी अच्छे त़रीक़े से सुवाल करना आधा इल्म है।"

✿.....حُسْنُ التَّدْبِيْرِ نِصْفُ الْمَعِيْشَةِ "या'नी अच्छी तदबीर इख़्तियार करना आधी मईशत है।"[(3)]

---

1 ......فيض القدير، حرف الهمزة، ج ٢، ص ٦٩١، تحت الحديث: ١٥٠٦ـ

2 ......كنزالعمال، كتاب العلم، باب في فضله والتحريض، الجزء: ١٠، ج ٥، ص ١١٢، حديث: ٢٩٣٤٤ـ

3 ......المنبهات، ص ٩ـ

फ़ारूक़े आ'ज़म की ज़िन्दगी की बेहतरीन चीज़

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : وَجَدْنَا خَيْرَ عَيْشِنَا بِالصَّبْرِ "या'नी हम ने अपनी बेहतरीन ज़िन्दगी सब्र के साथ पाई है।"(1)

चार मदनी फूलों पर मुश्तमिल फ़ारूक़ी गुलदस्ता

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

.....كُوْنُوْا اَوْعِيَةَ الْكِتَابِ وَيَنَابِيْعَ الْعِلْمِ "या'नी कुरआन के ह़ाफ़िज़ और इ़ल्म के चश्मे बन जाओ।"

.....وَعُدُّوْا اَنْفُسَكُمْ مِنَ الْمَوْتٰى "अपने आप को मुर्दों में शुमार करो।"

.....وَاسْاَلُوا اللّٰهَ رِزْقَ يَوْمٍ بِيَوْمٍ "और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हर दिन नया रिज़्क़ मांगो।"

.....وَلَا يَضُرُّكُمْ اَنْ يَكْثُرَ لَكُمْ "और अगर (वोह रिज़्क़ रब तआ़ला की त़रफ़ से) तुम्हें ज़ियादा मिल जाए तो तुम्हें नुक़्सान नहीं देगा।"(2)

अगर मैं अल्लाह की राह में क़ैद न किया जाऊं....?

हज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन जा'दा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

.....لَوْلَا اَنْ اَسِيْرَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ "या'नी अगर मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में क़ैद न किया जाऊं।"

.....اَوْ اَضَعَ جَبِيْنِيْ لِلّٰهِ فِي التُّرَابِ "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मैं अपनी पेशानी को मिट्टी में न रख सकूं।"

.....اَوْ اُجَالِسَ قَوْمًا يَلْتَقِطُوْنَ طَيِّبَ الْكَلَامِ كَمَا يُلْتَقَطُ التَّمْرُ "या मैं ऐसी क़ौम की सोह़बत इख़्तियार करूं जो अच्छी बातों को ऐसे लें जैसे खजूर को लिया जाता है।"

.....لَاَحْبَبْتُ اَنْ اَكُوْنَ قَدْ لَحِقْتُ بِاللّٰهِ "तो मैं इस बात को पसन्द करूंगा कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से जा मिलूं।"(3)

---

1 ......بخاری، کتاب الرقاق، باب الصبر عن محارم اللہ، ج ۴، ص ۲۳۹، تحت الباب: ۲۰۔

2 ......الزھد للامام احمد، زھد عمر بن الخطاب، ص ۱۴۸، الرقم: ۶۳۲۔

3 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الزھد، کلام عمر بن الخطاب، ج ۸، ص ۱۵۰، حدیث: ۲۵۔

सतरह मदनी फूलों का फ़ारूक़ी गुलदस्ता

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने लोगों के लिये इ़ल्मो हि़क्मत के (दर्जे ज़ैल) सतरह मदनी फूल इरशाद फ़रमाए :

❁....."जिस ने तुम्हारी ज़ात के मुआ़मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी की (तुम्हारे हुक़ूक़ को पामाल किया) उसे सज़ा देने से बेहतर येह है कि तुम उस के मुआ़मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त करो (या'नी उसे मुआ़फ़ कर दो)।" ❁....."अपने भाई के मुआ़मलात में ह़त्तल मक्दूर हुस्ने ज़न से ही काम लो अलबत्ता अगर वोह काम ही ऐसा करे कि उस में हुस्ने ज़न क़ाइम न हो सके तो और बात है।" ❁....."अगर तुम किसी मुसलमान से कोई बुरी बात सादिर होती देखो और तुम उसे अच्छाई पर मह़मूल करने पर क़ादिर हो तो उसे अच्छाई ही पर मह़मूल करो।" ❁....."जो शख़्स अपने आप को मक़ामे तोहमत पर पेश करे और फिर उस पर तोहमत लगे तो वोह तोहमत लगाने वालों को मलामत न करे।" ❁....."जो अपने राज़ को छुपाए तो भलाई उस के हाथ में ही रहेगी।" ❁....."अपने सच्चे भाइयों के साथ रहने का इल्तिज़ाम करो क्यूंकि अच्छे ह़ालात में वोह तुम्हारे लिये बाइ़से फ़ख़्र और बुरे ह़ालात में तुम्हारे मुआ़विन होंगे।" ❁....."सच्चाई का दामन कभी न छोड़ो अगर्चे इस के बदले तुम्हारी जान ही चली जाए।" ❁....."फ़ुज़ूल कामों में न पड़ो।" ❁....."जो चीज़ है ही नहीं उस के बारे में सुवाल न करो जो चीज़ न हो उस के बारे में सोचना फ़ुज़ूल है।" ❁....."अपनी ज़रूरत के लिये ऐसे शख़्स की मदद मत लो जो तुम्हारी कामयाबी का ख़्वाहां न हो।" ❁....."झूटी क़सम खाने को हलका मत समझो क्यूंकि इस के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें हलाक फ़रमा देगा। ❁....."बदकार लोगों की सोह़बत न इख़्तियार करो वरना उन की बदकारी का असर तुम पर भी हो जाएगा।" ❁....."अपने दुश्मनों से हमेशा बच के रहो और हां अमानत दार दोस्तों के इ़लावा अपने दीगर दोस्तों से एह़तियात़ करो।" ❁....."अमानत दार वोही है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वाला है।" ❁....."क़ब्रिस्तान जाओ तो ख़ुशूअ़ इख़्तियार करो और रब عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त करो तो आ़जिज़ी इख़्तियार करो।" ❁....."आज़माइश के वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से पनाह मांगो।" ❁....."अपने मुआ़मले में उन

लोगों से मश्वरा करो जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरने वाले हों। (या'नी उ़लमा से मश्वरा करो) क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है कि उस के बन्दों में से उ़लमा ही डरने वाले हैं।"(1)

तौबा करने वालों की सोह़बत में बैठो

ह़ज़रते सय्यिदुना औ़न बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़तबा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : جَالِسُوا التَّوَّابِينَ فَإِنَّهُمْ أَرَقُّ شَيْءٍ أَفْئِدَةً "या'नी तौबा करने वालों की सोह़बत में बैठो वोह सब से ज़ियादा नर्म दिल होते हैं।"(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई अच्छों की सोह़बत बन्दे को अच्छा बना देती है और बुरों की सोह़बत बुरा, मश्हूर मक़ूला है : صُحبَتِ صالِح تُرا صالِح کُنَد، صُحبَتِ طالِح تُرا طالِح کُنَد "या'नी अच्छों की सोह़बत तुझे अच्छा बना देगी और बुरों की सोह़बत बुरा।" अगर नेक परहेज़गार और तौबा करने वाले लोगों की सोह़बत इख़्तियार की जाए तो इन्सान परहेज़गारी और तौबा की त़रफ़ माइल हो जाता है। जब कि गुनाहों में मुलव्विस रहने वालों के साथ रहने से مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ गुनाहों में पड़ जाने का अन्देशा है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़त होने वाले हफ़्तावार इजतिमाआ़त में बे शुमार नेक लोग शिर्कत करते हैं, आप भी अपने अपने शहरों में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की बहारें लूटिये। दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये बे शुमार मदनी क़ाफ़िले शहर ब शहर, गाऊं ब गाऊं सफ़र करते रहते हैं, आप भी सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार फ़रमा कर अपनी आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा करें। اِنْ شَآءَاللهُ عَزَّوَجَلَّ आप अपनी ज़िन्दगी में ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर मदनी इन्क़िलाब बरपा होता देखेंगे।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो !

---

1 ......المتفق والمفترق، ابراهيم بن موسى، ج ١، ص ٣٠٤، الرقم: ١٤١۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبه، كتاب الزهد، كلام عمر بن الخطاب، ج ٨، ص ١٥٠، حديث: ٢٤۔

सात मदनी फूलों का फ़ारूक़ी गुलदस्ता

हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इब्ने हजर अ़स्क़लानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने इ़ल्मो हिक्मत के मदनी फूल देते हुवे इरशाद फ़रमाया :

❁ "फ़ुज़ूल गोई से बचने वाले को हिक्मत व दानाई अ़ता की जाती है।" ❁ "बिला ज़रूरत इधर उधर देखने से बचने वाले को ख़ुशूए क़ल्ब (क़ल्बी सुकून) अ़ता किया जाता है।" ❁ "फ़ुज़ूल तआ़म (या'नी डट कर खाना या बिग़ैर किसी भूक के सिर्फ़ लज़्ज़त के लिये त़रह़ त़रह़ की चीजें़ खाना) छोड़ने वाले को इ़बादत में लज़्ज़त दी जाती है।" ❁ "फ़ुज़ूल हंसने से बचने वाले को रो'बो दबदबा इनायत होता है।" ❁ "मज़ाक़ मस्ख़री से बचने वाले को नूरे ईमान नसीब होता है।" ❁ "दुन्या की महब्बत से बचने वाले को आख़िरत की महब्बत दी जाती है।" ❁ "दूसरों के ऐ़ब ढूंडने से बचने वाले को अपने ऐ़बों की इस्लाह़ की तौफ़ीक़ मिलती है।"(1)

मोमिन की इ़ज़्ज़त तक़्वा है

हज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन सई़द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने इरशाद फ़रमाया :

❁ "इ़ज़्ज़त मोमिन का तक़्वा है।" ❁ "दीन इस का ह़सब है।" ❁ "मुरुव्वत इस का ख़ुल्क़ है।" ❁ "बहादुरी और बुज़दिली दो ऐसी ख़स्लतें हैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जहां चाहे उन्हें रख देता है।" ❁ "बुज़दिल तो ऐसा होता है कि मुश्किल वक़्त में अपने वालिदैन को भी छोड़ कर भाग जाता है।" ❁ "बहादुर तो ऐसे शख़्स से भी लड़ता है जो उसे उस की सुवारी तक भी नहीं पहुंचने देगा।" ❁ "जंग करना भी मुख़्तलिफ़ महाज़ों में से एक महाज़ है।" ❁ "शहीद वोह है जो अपनी जान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द कर दे।"(2)

---

1 ......المنبهات، ص ٨٩۔

2 ......مؤطا امام مالک، کتاب الجهاد، ماتکون فیه الشهادة، ج ٢، ص ٢١، حدیث: ١٠٢٩۔

सात मदनी फूलों का फ़ारूक़ी गुलदस्ता

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन शिहाब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : ❁ "बेकार और फ़ुज़ूल कामों में मत पड़ो।" ❁ "अपने दुश्मन से हमेशा दूर रहो।" ❁ "अमानत दार दोस्तों के सिवा अपने हर दोस्त से चोकन्ने रहो।" ❁ "अमानत दार शख़्स का किसी के साथ मुवाज़ना नहीं हो सकता।" ❁ "गुनाहगारों की सोहबत से बचो वरना तुम्हें भी उन की गन्दगी लग जाएगी।" ❁ "अपने सर बस्ता राज़ों को फ़ाश न करो।" ❁ "अपने मुआ़मले में उन लोगों से मुशावरत करो जो ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले हों।"(1)

सच्ची तौबा की निशानी

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से सच्ची तौबा के बारे में पूछा गया तो आप ने इरशाद फ़रमाया : اَلتَّوْبَةُ النَّصُوحُ اَنْ يَتُوبَ الْعَبْدُ مِنَ الْعَمَلِ السَّيِّئِ ثُمَّ لَا يَعُوْدُ اِلَيْهِ اَبَداً "या'नी सच्ची तौबा येह है कि बन्दा बुरे अ़मल से इस त़रह़ तौबा करे कि दोबारा इस को कभी भी न करे।"(2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ुत़बाते फ़ारूक़े आ'ज़म

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़मानए जाहिलिय्यत में अगर्चे अ़रबों के अन्दर उ़मूमन ख़साइसे रज़ीला (बुरे औसाफ़) ही पाए जाते थे, लेकिन उस वक़्त भी बा'ज़ अफ़राद वोह थे जिन में ऐसे बेहतरीन ख़साइल मौजूद थे जो लोगों की नज़र में बाइसे फ़ख़्र थे, अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه का शुमार ऐसे ही चन्द अफ़राद में होता था। तक़रीर व ख़ुत़बात का मलका आप को रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से अ़त़ा हुवा था, नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की फ़सीहो बलीग़ अ़रबी ज़बान ने सोने पे सुहागे का काम किया, और इसी ख़ुसूसिय्यत के सबब क़ुरैश ने आप को ओ़हदए सफ़ारत दे दिया था। एक ख़त़ीब के अन्दर ख़ुत़बे के ह़वाले से जो जो सिफ़ात होनी चाहिये थीं वोह ब दरजए अतम आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه में मौजूद थीं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की आवाज़ बहुत बुलन्द

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الادب، مایومر به الرجل فی مجلسه، ج۶، ص ۱۱۳، حدیث: ۲۔

2 ......مصف ابن ابی شیبه، کتاب الزهد، کلام عمر بن الخطاب، ج۸، ص ۱۵۴، حدیث: ۵۰۔

और बा रो'ब थी, निहायत ही मुतअस्सिर कुन शख़्सिय्यत के मालिक थे, क़द इतना लम्बा था कि ज़मीन पर खड़े होते तो ऐसा लगता जैसे मिम्बर पर खड़े हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के खुत़बात ऐसे होते थे कि तासीर का तीर बन कर लोगों के दिलों में पैवस्त हो जाते। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पहले उ़मूमन फ़िक्री, इल्मी, नज़री, वा'ज़ो नसीह़त पर मुश्तमिल खुत़बात दिये जाते थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुल्की और जंगी मुआ़मलात पर भी खुत़बे इरशाद फ़रमाए, यूं आप ने खुत़बात की इन अक़्साम में एक और क़िस्म "सियासी खुत़बात" का इज़ाफ़ा फ़रमाया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के चन्द खुत़बात पेशे ख़िदमत हैं।

﴾1﴿ ख़लीफ़ा बनने के बा'द पहला खुत़बा

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शा'बी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़लीफ़ा बनने के बा'द मिम्बर पर जल्वा अफ़रोज़ हुवे और खुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : ۞ "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे इस बात की हिम्मत न दे कि मैं अपने आप को ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की निशस्त का अहल समझूं।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक दरजा नीचे तशरीफ़ ले आए, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना बयान की और इरशाद फ़रमाया : ۞ "कुरआन पढ़ते रहो तुम्हें उस की मा'रिफ़त ह़ासिल हो जाएगी।" ۞ "और कुरआन पर अ़मल करते रहो अहले कुरआन बन जाओगे।" ۞ "और अपने नफ़्स का मुह़ासबा करते रहो क़ब्ल इस से कि तुम्हारे आ'माल का मुह़ासबा किया जाए।" ۞ "और क़ियामत के उस दिन के लिये तय्यार रहो जिस दिन तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश किये जाओगे और तुम में से कोई भी उस पर मख़्फ़ी नहीं होगा।" ۞ "कोई भी शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में किसी की इता़अ़त कर के ह़क़दार का ह़क़ अदा नहीं कर सकता।" ۞ "और ग़ौर से सुन लो ! मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के माल के मुआ़मले में अपने आप को यतीम के वली की जगह रखता हूं।" ۞ "अगर मैं ब ज़ाते खुद मालदार हुवा तो उस माल से दूर रहूंगा और अगर मालदार न हुवा तो जाइज़ त़रीके़ से उस में से खाऊंगा।"(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म के नसीह़त आमोज़ अश्आ़र

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ख़ालिद ग़स्सानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है कि मुझे शामी मशाइख़ ने बयान किया कि उन्हों ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को

---

1 ......المجالسة وجواهر العلم، الجزء التاسع، ج ٢، ص ٤٧، الرقم: ١٢٩١ ـ

देखा कि जब उन को ख़लीफ़ा बनाया गया तो वोह मिम्बर पर चढ़े, जब उन्हों ने लोगों को नीचे देखा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सना बयान की, **अल्लाह** व रसूल की ह़म्दो सना के बा'द आप का पहला कलाम येह अश्आ़र थे :

هَوِّنْ عَلَيْكَ فَإِنَّ الْأُمُوْرَ، بِكَفِّ الْإِلٰهِ مَقَادِيْرُهَا

فَلَيْسَ بِآتِيْكَ مَنْهِيُّهَا، وَلَا قَاصِرٍ عَنْكَ مَامُوْرُهَا

तर्जमा : "अपनी ज़ात पर नर्मी व आसानी करो क्यूंकि तमाम मुआ़मलात की डोर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दस्ते क़ुदरत में है। मन्हिय्यात या'नी जिन कामों से मन्अ़ किया गया है उन की अदाएगी न करो और मामूर बिहा या'नी जिन कामों के करने का हुक्म दिया गया है उन के करने में कोताही न करो।"(1)

﴾2﴿ ख़ैर की इत्तिबाअ़ करने वाला इसे पा लेता है

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया करते थे :

يَا اَيُّهَا النَّاسُ ! اِنَّهُ مَنْ يَّتَّقِ الشَّرَّ يُوْقَهُ، وَمَنْ يَّتَّبِعُ الْخَيْرَ يُؤْتَهُ

"ऐ लोगो ! जो शर से डरता है तो उस से बचा लिया जाता है और जो शख़्स भलाई चाहता है तो उसे अ़त़ा कर दी जाती है।"(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई जो शख़्स बुराइयों से अपने आप को बचाने की कोशिश करता है, नेकियां करने में सबक़त करता है तो रब عَزَّوَجَلَّ की रह़मत उस की ह़ामियो नासिर होती है।

﴾3﴿ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों की सिफ़ात

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक बार इरशाद फ़रमाया :

❁ "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ बन्दे ऐसे हैं जो बात़िल को छोड़ कर उसे मुर्दा कर देते हैं।" ❁ "और ह़क़ का बोल बाला कर के उसे ज़िन्दगी बख़्शते हैं।" ❁ "वोह भलाई के कामों में रग़बत रखते हैं तो उन्हें रो'ब अ़त़ा कर दिया जाता है।" ❁ "और वोह डरते भी हैं और उन्हें डर अ़त़ा

1 ......كنزالعمال، كتاب المواعظ، خطب عمر ومواعظه، الجزء: ١٦، ج٨، ص٢٦، حديث: ٤٤١٨٧۔

2 ......كنزالعمال، كتاب المواعظ، خطب عمر ومواعظه، الجزء: ١٦، ج٨، ص٢٨، حديث: ٤٤٢٠٣۔

भी किया जाता है।" ❁ "अगर फ़क़त् वोही डरते रहें तो लोगों से अम्न में नहीं रह सकते।" ❁ "जिन अश्या का मुशाहदा नहीं किया उन्हें भी यक़ीन से देखते हैं।" ❁ "क्यूंकि वोह न ख़त्म होने वाली ज़िन्दगी या'नी आख़िरत को तरजीह़ देते हैं।" ❁ "उन्हें ख़ौफ़ ही के लिये पैदा किया गया है।" ❁ "और येह लोग आख़िरत के बदले दुन्या को छोड़ देते हैं।" ❁ "ह़यात उन के लिये ने'मत और मौत उन के लिये करामत है।" ❁ "कल बरोज़े क़ियामत ह़ूरे ऐ़न से उन की शादी कराई जाएगी और जन्नती ख़ुद्दाम उन की ख़िदमत पर मामूर होंगे।"(1)

﴾4﴿ कौन सी चीज़ इस्लाम को मुन्हदिम कर देती है ?

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ियाद बिन ह़दीद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने ख़ुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : يَا زِيَادَ ابْنَ حَدِيْرٍ هَلْ تَدْرِيْ مَا يَهْدِمُ الْإِسْلَامَ؟ "या'नी ऐ ज़ियाद बिन ह़दीद ! क्या तुम जानते हो कि कौन सी चीज़ें इस्लाम को मुन्हदिम कर देती हैं ?" फिर ख़ुद ही इरशाद फ़रमाया : ❁ "गुमराह इमाम।" ❁ "मुनाफ़िक़ का क़ुरआन के साथ झगड़ा करना।" ❁ "वोह क़र्ज़ जो तुम्हारी गर्दनों को तोड़ डाले।" ❁ "और मुझे तुम्हारे ऊपर अहले इ़ल्म की लग़ज़िशों का ख़दशा है।" ❁ "बहर ह़ाल अगर किसी इ़ल्म वाले की लग़ज़िश दुरुस्त हो जाए तो तुम लोग उस लग़ज़िश की पैरवी न करो।" ❁ "और अगर वोह गुमराह ही रहे तो उस की हिदायत के मुआ़मले में मायूस न हो जाओ क्यूंकि साह़िबे इ़ल्म से लग़ज़िश हो जाए तो वोह तौबा कर लेता है।" ❁ "और जिस के दिल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ग़ना या'नी लोगों से बे परवाही डाल दे तो वोह फ़लाह़ पा गया।"(2)

﴾5﴿ जिस ने भलाई की हम उस की भलाई का ख़याल रखेंगे

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू फ़िरास رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने ख़ुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया :

❁ "ऐ लोगो ! ख़बरदार हम तुम्हें उस वक़्त से जानते हैं जब ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे दरमियान मौजूद थे।" ❁ "याद रखो उस वक़्त वह़्य का नुज़ूल

---

1 ......حلية الاولياء، عمر بن الخطاب، ج ۱، ص ۹۲۔

2 ......كنز العمال، كتاب المواعظ، خطب عمر ومواعظه، الجزء: ۱۶، ج۸، ص ۶۸، حديث: ۴۴۲۰۳۔

سنن دارمی، باب فی کراهیة اخذ الرای، ج ۱، ص ۸۲، الرقم: ۲۱۴۔

होता था और हमें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे मुतअ़ल्लिक़ सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़रीए़ ख़बरदार फ़रमा देता था।" ❁ "लेकिन ख़बरदार ! हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अब दुन्या से तशरीफ़ ले जा चुके हैं और वह़्य का सिलसिला मुन्क़त़अ़ हो चुका है।" ❁ "लिहाज़ा अब ज़ाहिरी मुआ़मलात में हम तुम्हें अपने क़ौल से पहचानेंगे।" ❁ "लिहाज़ा जिस से कोई भलाई की बात सादिर हुई तो हम भी उसे भलाई ही समझेंगे और बदले में उस से मह़ब्बत करेंगे।" ❁ "और जिस से कोई बुराई सादिर हुई तो हम भी उसे बुरा ही समझेंगे और बदले में उसे ना पसन्द करेंगे।" ❁ "अलबत्ता तुम्हारे ख़ुफ़्या मुआ़मलात तुम्हारे और रब के दरमियान हैं, उन का हम पर कोई ज़िम्मा नहीं।" ❁ "ख़बरदार ! एक अ़रसे तक तो मैं येह ही समझता था कि तिलावते क़ुरआन करने वालों का मत़लूब मह़्ज़ रिज़ाए इलाही है, फिर मेरी तवज्जोह इस त़रफ़ गई कि तिलावते क़ुरआन से कई लोग मालो मताअ़ भी चाहते हैं। पस तुम अल्लाह के लिये क़ुरआन की तिलावत करो और अल्लाह ही के लिये दीगर आ'माल करो।" ❁ "ख़बरदार मैं अपने उ़म्माल को तुम्हारे पास तुम्हारी खालें खींचने और माल बटोरने के लिये नहीं भेजता हूं।" ❁ "बल्कि मैं तो इस लिये भेजता हूं कि वोह तुम्हें फ़राइज़ और सुन्नतें वग़ैरा सिखाएं।" ❁ "पस जो गवर्नर या आ़मिल इस से हट कर कोई काम करे तो उसे मेरे पास लाओ, ख़ुदा की क़सम ! मैं उस से ज़रूर बदला लूंगा।" ❁ "ख़बरदार मुसलमानों को बेजा सज़ाएं दे कर रुस्वा न करो।" ❁ "और फ़ौज को दुश्मन की ज़मीन में इम्तिह़ान में डाल कर मत आज़माओ।" ❁ "अ़वाम के ह़ुक़ूक़ रोक कर उन्हें कुफ़्र की खाई में मत धकेलो।" ❁ "उन्हें पसे पर्दा मत डालो वरना ज़ाएअ़ कर दोगे।"[1]

﴾6﴿ फ़ारूके़ आ'ज़म का जाबिया में पुर असर ख़ुत़बा

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा बिन उ़क़्बा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जाबिया के मौक़अ़ पर एक नसीह़त आमोज़ ख़ुत़बा दिया जिस का ख़ुलासा कुछ यूं है :

❁ "मैं तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरने की वसिय्यत करता हूं क्यूंकि डर ही वोह शै है जिस के सबब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने दोस्तों को इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमाता है। जब कि ना फ़रमानी के सबब दुश्मनों

---

1 ......مسند امام احمد، مسند عمر بن الخطاب، ج ۱، ص ۹۴، حدیث: ۲۸۶ ملتقطاً

को ज़लीलो गुमराह कर देता है।" ❁ "और उस शख़्स के लिये कोई उ़ज़्र बाक़ी नहीं रहता जो गुमराही को हिदायत समझ कर करे और तबाहो बरबाद हो जाए।" ❁ "और उस शख़्स के लिये भी कोई उ़ज़्र बाक़ी नहीं रहता जो हिदायत को गुमराही समझ कर तर्क करे।" ❁ "और ह़ाकिम का अपनी रिआ़या के साथ सब से सच्चा और पुख़्ता मुआ़हदा उन के दीनी मुआ़मलात का मुआ़हदा है जिस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ लोगों को हिदायत अ़त़ा फ़रमाए।" ❁ "और हम पर ज़रूरी है कि हम भी तुम्हें सिर्फ़ उन्हीं कामों का हुक्म दें जिन कामों में रब عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें अपनी इत़ाअ़त करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया।" ❁ "और हम पर येह भी ज़रूरी है कि हम तुम्हें सिर्फ़ उन्हीं कामों से रोकें जिन कामों में रब عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें अपनी ना फ़रमानी करने से मन्अ़ फ़रमाया है।" ❁ "और हम पर लोगों की मौजूदगी या ग़ैर मौजूदगी दोनों सूरतों में येह भी ज़रूरी है कि तुम्हारे मुआ़मले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म को क़ाइम करें।" ❁ "जिन की जानिब ह़क़ माइल है हमें उन को वा'ज़ो नसीह़त करने की इतनी फ़िक्र नहीं।" ❁ "ह़ालांकि मुझे ब ख़ूबी इ़ल्म है कि लोग अपने दीनी मुआ़मलात के बारे में बातें बनाते हुवे यूं कहते हैं कि हम नमाज़ पढ़ते हैं, मुजाहिदीन के साथ जिहाद करते हैं और हम हिजरत भी करते हैं।" ❁ "वोह येह सब काम तो करते हैं लेकिन इन कामों को जिस त़रह़ करने का ह़क़ है वैसा नहीं करते।" ❁ "ईमान बनाव सिंघार का नाम नहीं।" ❁ "गुनाहगार हिजरत न करने के बा वुजूद येह कहता है : मैं ने भी हिजरत की थी, जब कि गुनाह छोड़ने वाले ही ह़क़ीक़तन मुहाजिरीन हैं।" ❁ "बहुत सारी क़ौमें कहती हैं कि हम ने जिहाद किया ह़ालांकि जिहाद तो येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में दुश्मनों से लड़ा जाए और ह़राम से इजतिनाब किया जाए।" ❁ "कई क़ौमें फ़रीज़ए जिहाद ब ह़ुस्ने ख़ूबी अन्जाम देती हैं, लेकिन न ही उन का मत़लूब अज्रो सवाब होता है और न ही शोहरत।" ❁ "जान लो कि ऐसा रोज़ा ह़राम है जिस में मुसलमानों को अज़िय्यत दी जाती है, मुसलमान को अज़िय्यत पहुंचाना उसी त़रह़ ममनूअ़ है जिस त़रह़ ब ह़ालते रोज़ा खाना पीना और बीवी से हम बिस्तरी करना ममनूअ़ है और जिस रोज़े में येह सिफ़ात हों वोही कामिल रोज़ा है।" ❁ "जिस ज़कात को हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पाकीज़गिये नफ़्स के लिये फ़र्ज़ फ़रमाया था उसी की अदाएगी को येह लोग नेकी नहीं समझते।" ❁ "नसीह़त आमोज़ बातें अच्छी त़रह़ समझा करो।" ❁ "और ख़ुश बख़्त है वोह इन्सान जिसे ग़ैर के ज़रीए़ नसीह़त की जाए। बद बख़्त तो अपनी मां के पेट ही में बद बख़्त होता है।" ❁ "सब से बुरे उमूर ख़िलाफ़े शरीअ़त बातें हैं, सुन्नतों के मुआ़मले में मियाना रवी

इख़्तियार करना बिदअ़त के मुआ़मले में कोशिश करने से ज़ियादा बेहतर है।" ۞ "बिलाशुबा लोगों में उन के हुक्मरानों के मुतअ़ल्लिक़ नफ़रत पाई जाती है, मैं नफ़रत से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगता हूं।" ۞ "तुम पर लाज़िम है कि दिलों में पैदा होने वाले कीने से बचो, गुनाहों भरी ख़्वाहिशात और बुरे असरात वाली दुन्या से बचो।" ۞ "और यक़ीनन मैं इस बात से डरता हूं कि तुम लोग ज़ालिम लोगों की त़रफ़ माइल हो लिहाज़ा मालदारों से मुत़्मइन न हुवा करो।" ۞ "और क़ुरआने पाक को मज़्बूत़ी से थामे रखना तुम पर लाज़िम है, क्यूंकि इस में नूर और शिफ़ा है और जो शै क़ुरआन के मुख़ालिफ़ है उस में सरासर बद बख़्ती है।" ۞ "और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे तुम्हारे जिन उमूर का वाली बनाया उस के मुतअ़ल्लिक़ मैं ने फ़ैसला कर दिया है।" ۞ "और मैं ने तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही के लिये नसीह़त की, ग़िज़ा के इन्तिज़ाम का हुक्म दिया, तुम्हारे लश्कर तय्यार कर के सामाने जंग मुहय्या किया।" ۞ "इन तमाम बातों के बा'द अब तुम्हारे लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर कोई हुज्जत नहीं, बल्कि अल्लाह तआ़ला की तुम पर हुज्जत है, मैं बस तुम से येही कहना चाहता था और मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपने लिये और तुम सब के लिये मुआ़फ़ी मांगता हूं।"(1)

﴾7﴿ जो रह़्म नहीं करता उस पर भी रह़्म नहीं किया जाएगा

ह़ज़रते सय्यिदुना क़बीसा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه ने मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हो कर ख़ुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया :

❀.....مَنْ لَا يَرْحَمُ لَا يُرْحَمُ "या'नी जो रह़्म नहीं करता उस पर भी रह़्म नहीं किया जाता।"

❀.....وَمَنْ لَا يَغْفِرْ لَا يُغْفَرْ لَهُ "और जो मुआ़फ़ नहीं करता उसे भी मुआ़फ़ नहीं किया जाता।"

❀.....وَمَنْ لَا يَتُوْبُ لَا يُتَابُ عَلَيْهِ "और जो रुजूअ़ नहीं करता उस के मुआ़मले में भी रुजूअ़ नहीं किया जाता।"

❀.....وَمَنْ لَا يَتَّقِ لَا يُوَقَّهُ "और जो ख़ुद नहीं बचता उसे बचाया भी नहीं जाता।"(2)

﴾8﴿ क़ुरआन सीखो और इस की मा'रिफ़त ह़ासिल करो

ह़ज़रते सय्यिदुना बाहिली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه ने मुल्के शाम में जाबिया के मक़ाम पर ख़ुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया :

---

1 ......كنزالعمال، كتاب المواعظ، خطب عمر ومواعظه، الجزء: ١٦، ج٨، ص ٢٩، حديث: ٤٤٢٠٦۔

2 ......الادب المفرد، باب ارحم من فى الارض، ص ١٠٢، حديث: ٣٧٢۔

كنزالعمال، كتاب المواعظ، خطب عمر ومواعظه، الجزء: ١٦، ج٨، ص ٦٤، حديث: ٤٤١٧٩۔

۞ ''कुरआने मजीद इस त़रह़ सीखो कि तुम्हें इस की मा'रिफ़त ह़ासिल हो जाए।'' ۞ ''और कुरआन पर इस त़रह़ अ़मल करो कि तुम अहले कुरआन कहलाने लगो।'' ۞ ''क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी अहले ह़क़ की क़द्रो मन्ज़िलत तक नहीं पहुंचाती।'' ۞ ''जान लो सच्ची बात और बड़ी नसीह़त मौत के क़रीब नहीं करती, और न ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रिज़्क़ से दूर करती है।'' ۞ ''और जान लो बन्दे और उस के रिज़्क़ के दरमियान एक पर्दा है, अगर बन्दा सब्र करता है तो उसे रिज़्क़ अ़त़ा किया जाता है।'' ۞ ''और अगर वोह जल्दबाज़ी करता है तो उस ह़िजाब को तोड़ डालता है और अपने मुक़र्ररा रिज़्क़ से ज़ियादा नहीं ह़ासिल कर पाता।'' ۞ ''और घोड़ों को पालो, नेज़ाबाज़ी सीखो, ख़च्चर इस्ति'माल करो, जूते पहनो, मिस्वाक करो और अपने दादा मा'द बिन अ़दी की आ़दत अपनाओ।'' ۞ ''और अ़जमियों के अख़्लाक़ व आ़दात से परहेज़ करो, ज़ालिमो जाबिर हुक्मरानों की मुजावरी से बचो और अपने सीनों पर सलीब उठाए जाने से बचो।'' ۞ ''और ऐसे दस्तर ख़्वान पर बैठने से बचो जिस पर शराबनोशी की जाए।'' ۞ ''और ह़म्माम में बिग़ैर तहबन्द के दाख़िल होने से बचो और अपनी औ़रतों को ह़म्मामों में मत जाने दो क्यूंकि येह ह़लाल नहीं।'' ۞ ''अ़जमियों के शहरों में जाने के बा'द ऐसा कारोबार करने से बचो जो तुम्हें अपने शहरों में आने से रोक दे, क्यूंकि अ़न क़रीब तुम्हें अपने शहरों में लौटना पड़ेगा।'' ۞ ''और येह भी जान लो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तीन आदमियों को पाको साफ़ नहीं फ़रमाएगा, न ही उन की त़रफ़ नज़रे रह़मत फ़रमाएगा और न ही उन्हें क़ियामत के दिन अपना कुर्ब अ़त़ा फ़रमाएगा और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।'' ۞ ''वोह शख़्स जो अपने दुन्यावी फ़ाइदे के लिये ह़ाकिम से सौदा करे वोह चीज़ उस ने पा ली तो उस की ह़िफ़ाज़त करेगा और बद अ़ह्दी करेगा।'' ۞ ''दूसरा वोह शख़्स जो अ़स्र के बा'द कोई चीज़ बेचने के लिये इस त़रह़ निकले कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की झूटी क़समें उठाए इस बात पर कि उसे फ़ुलां चीज़ इतने इतने की मिली है और फिर उस की झूटी क़समों की वज्ह से वोह चीज़ फ़रोख़्त हो जाए।'' ۞ ''और मोमिन को गाली देना फ़िस्क़ है, मोमिन के क़त्ल को ह़लाल जानना कुफ़्र है और तुम्हारे लिये ह़लाल नहीं कि तुम अपने भाई से तीन दिन से ज़ियादा क़त़्ए तअ़ल्लुक़ी करो।'' ۞ ''जो शख़्स जादूगर या काहिन या नुजूमी के पास आया और उस की बातों की तस्दीक़ की तो यक़ीनन उस ने हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर जो कुछ नाज़िल किया गया उस का इन्कार कर दिया।''(1)

---

(1)......اتحاف الخيرة المهرة، كتاب المواعظ، باب جامع فى المواعظ، ج ٩، ص ٩ ٥٣، حديث: ٩٥٠٦۔

﴾9﴿ मुल्के शाम में दाख़िल होने के बा'द ख़ुत़बा

हज़रते सय्यिदुना साइब बिन मिहजान शामी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه मुल्के शाम में दाख़िल हुवे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हम्दो सना की, वा'ज़ो नसीह़त की, अच्छी बातों का हुक्म किया और बुरी बातों से रोका। फिर फ़रमाया : ❁ "बेशक रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी त़रह़ ख़ित़ाब करने खड़े हुवे थे।" ❁ "और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने, सिलए रेह़्मी करने और आपस के तअ़ल्लुक़ात की बेहतरी का हुक्म इरशाद फ़रमाया।" ❁ "और येह भी इरशाद फ़रमाया कि सवादे आ'ज़म की पैरवी को अपने ऊपर लाज़िम कर लो। एक रिवायत में है कि इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी को लाज़िम कर लो।" ❁ "क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दस्ते क़ुदरत जमाअ़त पर है।" ❁ "और बेशक शैत़ान अकेले आदमी के साथ होता है और दो आदमियों से दूर रहता है।" ❁ "कोई शख़्स औ़रत के साथ ख़ल्वत इख़्तियार न करे क्यूंकि तीसरा उन में शैत़ान होगा।" ❁ "और जिस शख़्स को उस की बुराई बुरी लगे और नेकी अच्छी लगे इस बात पर तो येह उस के मोमिन व मुसलमान होने की निशानी है।" ❁ "और मुनाफ़िक़ की निशानी येह है कि बुराई उसे परेशान नहीं करती (या'नी वोह गुनाहों पर नादिम नहीं होता) और नेकी उसे ख़ुश नहीं करती।" ❁ "अगर भलाई वाला कोई अ़मल कर भी ले तो उसे रब عَزَّوَجَلَّ की ज़ात से सवाब की कोई उम्मीद नहीं होती।" ❁ "और अगर कोई बुरा अ़मल करे तो इस बुराई के मुआ़मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पकड़ से नहीं डरता।" ❁ "दुन्या की त़लब मा'रूफ़ या'नी शरई त़रीक़े से करो क्यूंकि तुम्हें रिज़्क़ देना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है।" ❁ "और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा रखो तुम्हारे अधूरे कामों को वोही मुकम्मल फ़रमाने वाला है।" ❁ "अपने आ'माल पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मदद मांगो क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो चाहता है मिटाता है और जो चाहता है बाक़ी रखता है, उसी के पास "**उम्मुल किताब**" है।" ❁ "हमारे नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और दुरूदो सलाम हों। **اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ**।"(1)

﴾10﴿ उस ने फ़लाह़ पाई जो ख़्वाहिशाते नफ़्स से बचा

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه अपने ख़ुत़बे में इरशाद फ़रमाया करते थे : ❁ "तुम में से वोह शख़्स कामयाब व कामरान हुवा जो ख़्वाहिशाते नफ़्स, त़म्अ़ और ग़ुस्से पर अ़मल करने से

(1) ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی الاصلاح بین الناس، ج۷، ص۴۸۸، حدیث: ۱۱۰۸۵۔

मह़फ़ूज़ रहा और उसे गुफ़्त्गू में सच बोलने की तौफ़ीक़ दी गई, क्यूंकि सच भलाई की त़रफ़ ले जाता है।" ۞ "जो झूट बोलता है वोह सरकशी करता है और जो सरकशी करता है वोह हलाक हो जाता है लिहाज़ा सरकशी से बचो।" ۞ "दिन ब दिन अच्छे आ'माल करते रहो, मज़्लूम की बद दुआ से बचो और अपने आप को मुर्दों में शुमार करो।"(1)

मक्तूबाते फ़ारूक़े आ'ज़म

फ़ारूक़े आ'ज़म बारगाहे रिसालत के तरबिय्यत याफ़्ता थे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल के जदीद दौर में तो एक दूसरे से राबिते़ के बे शुमार ज़राएअ़ मौजूद हैं लेकिन सदियों पहले अगर कोई राबिते़ का ज़रीआ़ था तो वोह सिर्फ़ मक्तूब था। एक दूसरे की ख़ैर ख़ैरिय्यत, ताज़ा ह़ालात से आगाही, जंगी मुआ़मलात में मुशावरत, उ़म्माल व गवर्नरों का बादशाहों से राबित़ा वग़ैरा हर क़िस्म की मा'लूमात व मुआ़मलात ख़त्तो किताबत ही के ज़रीए किये जाते थे। खु़सूसन एक मुल्क के दूसरे मुल्क के साथ सफ़ारती मुआ़मलात में मक्तूब को बड़ी अहम्मिय्यत ह़ासिल थी, एक बादशाह का जब कोई मक्तूब किसी दूसरे मुल्क के बादशाह के दरबार में जाता तो इस पर मुख़्तलिफ़ पहलूओं से बादशाह के दरबार में मौजूद माहिरीन ग़ौरो ख़ौज़ करते और इस से नताइज अख़्ज़ करते। लिहाज़ा किसी भी मुल्क के बादशाह को इल्मुत्तह़रीर के उसूलो ज़वाबित़ को जानना, फ़साह़तो बलाग़त, इस्तिआ़रों का बेहतरीन इस्ति'माल, ज़ू मा'ना कलाम, मुख़फ़्फ़फ़ात का इस्ति'माल, अल्फ़ाज़ों की तरतीब और मुख़्तसर अल्फ़ाज़ में जामेअ़ मानेअ़ कलाम करने जैसी तमाम सलाह़िय्यतें होना बहुत ज़रूरी था, बादशाहों की पुर असर तह़रीर का वज़ीरों, मुशीरों, दरबारियों और तमाम रिआ़या पर बहुत गहरा असर पड़ता था। بِحَمْدِ اللّٰہ تَعَالٰی अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा और हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ज़्लो करम से इन तमाम सलाह़िय्यतों के जामेअ़ थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने अ़ज़ीज़ो अक़रबा, कमान्डरों, उ़म्मालों, गवर्नरों, क़ाज़ियों और आ़म लोगों को इस्लाह़ी, समाजी, फ़लाह़ी, सियासी, मज़हबी और अ़वामी उमूर पर मुख़्तलिफ़ अक़्साम के मक्तूब लिखे जिन से कुतुबे सियर व तारीख़ भरी पड़ी हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मक्तूब पढ़ने वाला येह कहने पर मजबूर हो जाता है कि वाक़ेई आप बारगाहे रिसालत ही के तरबिय्यत याफ़्ता थे। आप के चन्द मक्तूब मुलाह़ज़ा कीजिये।

---

1 ......سنن کبری، کتاب الجمعۃ، باب کیف یستحب۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۳۰۵، حدیث: ۵۸۰۴۔

ग्यारह मदनी फूलों पर मुश्तमिल बेटे को नसीहत आमोज़ फ़ारूक़ी मक्तूब

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बेटे हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक मक्तूब लिखा जिस में इरशाद फ़रमाया :

❀.....اَمَّابَعْدُ! فَاِنِّیْ اُوْصِیْکَ بِتَقْوَی اللّٰہِ فَاِنَّہٗ مَنِ اتَّقَی اللّٰہَ وَقَاہُ "या'नी हम्दो सलात के बा'द मैं तुम्हें तक़्वा इख़्तियार करने की वसिय्यत करता हूं क्यूंकि जो शख़्स तक़्वा इख़्तियार करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बचा लेता है।"

❀.....وَمَنْ تَوَکَّلَ عَلَیْہِ کَفَاہُ "और जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे काफ़ी होता है।"

❀.....وَمَنْ اَقْرَضَہٗ جَزَاہُ "और जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को क़र्ज़ देता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बेहतर बदला देता है।"

❀.....وَمَنْ شَکَرَ زَادَہٗ "और जो शुक्र अदा करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे मज़ीद अ़ता फ़रमाता है।"

❀.....اَلتَّقْوٰی نَصْبُ عَیْنَیْکَ وَعِمَادُ عَمَلِکَ وَجِلَاءُ قَلْبِکَ فَاِنَّہٗ لَا عَمَلَ لِمَنْ لَا نِیَّۃَ لَہٗ "या'नी तक़्वा तुम्हारा नसबुल ऐ़न, अ़मल की बुन्याद और दिल की जिला है, बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं।"

❀.....وَلَا اَجْرَ لِمَنْ لَا حَسْبَۃَ لَہٗ "और बिग़ैर रिज़ाए इलाही के किसी अ़मल पर अज्र नहीं।"

❀.....وَلَا مَالَ لِمَنْ لَا رِفْقَ لَہٗ "और जिस में नर्मी नहीं उस के पास माल होने का कोई फ़ाइदा नहीं।"

❀.....وَلَا جَدِیْدَ لِمَنْ لَا خُلُقَ لَہٗ "और जिस में उ़म्दा अख़्लाक़ नहीं उस में कोई बुज़ुर्गी नहीं।"(1)

चार मदनी फूलों पर मुश्तमिल एक गवर्नर को नसीहत आमोज़ फ़ारूक़ी मक्तूब

हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन बुरक़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं मुझे मा'लूम हुवा है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने एक गवर्नर को मक्तूब लिखा जिस के आख़िर में कुछ इस त़रह़ का मज़्मून था :

❁ "शिद्दत व सख़्ती के ह़िसाब से पहले पहले कुशादगी और नर्मी में अपना मुह़ासबा करो।" ❁ "जो शख़्स शिद्दत व सख़्ती के ह़िसाब से पहले पहले आसूदगी में अपना मुह़ासबा करता है तो वोह रिज़ा व रश्क की त़रफ़ लौटता है।" ❁ "जिसे ज़िन्दगी यादे इलाही से ग़ाफ़िल कर दे और वोह गुनाहों में मसरूफ़ हो जाए, यक़ीनन उस का नतीजा ह़सरत व नदामत है।"

---

(1)......کنز العمال، کتاب المواعظ، خطب عمر ومواعظہ، الجزء: ۱۶، ج۸، ص ۶۵، حدیث: ۴۴۱۸۲۔

❁ "जो तुम्हें वा'ज़ो नसीहत की जाए उस से नसीहत हासिल करो ताकि तुम उन कामों से रुक जाओ जिन से तुम्हें मन्अ किया गया है।"(1)

सय्यिदुना अमीरे मुआविय्या को नसीहत आमोज़ मक्तूब

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की तरफ़ एक मक्तूब लिखा जिस में इरशाद फ़रमाया : "हक़ के साथ लाज़िम रहो, हक़ तुम्हारे लिये अहले हक़ की मनाज़िल वाज़ेह करेगा, हक़ के साथ ही फ़ैसला करो।"(2)

हुसूले दुन्या से मुतअ़ल्लिक़ फ़ारूक़ी मक्तूब

हज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने किसी को एक मक्तूब लिखा जिस का मज़मून कुछ यूं था :

❁ .....اِنَّ الدُّنْیَا خَضِرَۃٌ حُلْوَۃٌ "या'नी बेशक दुन्या सरसब्ज़ और मीठी है।"

❁ .....فَمَنْ اَخَذَھَا بِحَقِّھَا کَانَ قَمِنًا اَنْ یُبَارَکَ لَہٗ فِیْہِ "या'नी जिस ने इसे सहीह तरीक़े से हासिल किया तो वोह इस बात का हक़दार है कि उसे इस दुन्या में बरकत दी जाए।"

❁ .....وَمَنْ اَخَذَھَا بِغَیْرِ ذٰلِکَ کَانَ کَالْاٰکِلِ الَّذِیْ لَا یَشْبَعُ "या'नी जिस ने इसे सहीह तरीक़े से हासिल न किया तो वोह उस पेटू शख़्स की तरह है जो कभी सैर नहीं होता।"(3)

सय्यिदुना अबू मूसा अश्अरी को नसीहत आमोज़ मक्तूब

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को एक मक्तूब लिखा जिस में इरशाद फ़रमाया :

❁ "काम करते रहने में कुव्वत है इस लिये आज का काम कल पर मत डालो क्यूंकि जब तुम ऐसा करोगे तो मुख़्तलिफ़ काम तुम पर जम्अ हो जाएंगे नतीजतन तुम्हें नुक़्सान उठाना पड़ेगा या तुम्हारा नुक़्सान हो जाएगा।" ❁ "अगर तुम्हें दो कामों में इख़्तियार दिया जाए, इन में से एक दुन्यावी हो और दूसरा उख़रवी तो तुम उख़रवी को दुन्यावी पर तरजीह दो, क्यूंकि दुन्या फ़ानी है और आख़िरत बाक़ी

---

1 ......شعب الایمان للبیہقی، فصل فیما بلغنا عن الصحابۃ---الخ، باب فی الزہد وقصر الامل، ج۷، ص۳۶۶، حدیث: ۱۰۶۰۱۔

2 ......سیر اعلام النبلاء، الطبقۃ الثانیۃ عشرۃ، احمد بن حنبل، ج۹، ص۴۷۰، الرقم: ۱۸۷۶۔

3 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الزہد، کلام عمر بن الخطاب، ج۸، ص۱۴۷، حدیث: ۴۔

रहने वाली है।" ❁ "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते रहो और किताबुल्लाह को सीखते सिखाते रहो क्यूंकि किताबुल्लाह इल्म का चश्मा और दिलों की बहार है।"(1)

एक ज़िम्मेदार को कैसा होना चाहिये.....?

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन अबी बुर्दा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को एक मक्तूब लिखा जिस का मज़्मून कुछ यूं था :

❁ "ह़म्दो सलात के बा'द ! मैं कहता हूं कि हुक्मरानों में सब से ज़ियादा खुश बख़्त वोह हैं जिन की रिआ़या अच्छी हो।" ❁ "और सब से ज़ियादा बद बख़्त वोह है जिस की रिआ़या बुरी हो।" ❁ "और तुम ख़िलाफ़े शरीअ़त कामों से बचो वरना तुम्हारी रिआ़या भी ख़िलाफ़े शरअ़ कामों में पड़ जाएगी।" ❁ "पस अगर तुम ने इस पर अ़मल न किया तो तुम्हारी मिसाल उस चौपाए की सी हो जाएगी जो ज़मीन पर सब्ज़ा देखे और वोह उस में चरने लग जाए, वोह इस से अफ़्ज़ाइशे जिस्म और फ़र्बा होना चाहता है हालांकि इस माल का उस के जिस्म का हिस्सा होना उस के लिये हलाकत है।"(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई अगर हाकिम या निगरान वग़ैरा कोई भी ज़िम्मेदार खुद को सह़ीह़ कर ले तो उस की रिआ़या खुद ब खुद दुरुस्त हो जाएगी, क्यूंकि उस का अ़मल इन सब के लिये हुज्जत है। आप कितनी ही बड़ी ज़िम्मेदारी पर फ़ाइज़ क्यूं न हों अपने मदनी मक़्सद को हरगिज़ न भूलें कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है,** اِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ।" अपनी इस्लाह़ के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने को अपना मा'मूल बना लीजिये। हो सकता है किसी इस्लामी भाई के ज़ेहन में येह ख़याल पैदा हो कि मैं तो किसी अ़लाक़े वग़ैरा का निगरान नहीं, न ही मेरे मा तह़त कोई इस्लामी भाई हैं लिहाज़ा मुझे दीनी काम की कोई ह़ाजत नहीं। ऐसे इस्लामी भाइयों के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "**मुर्दे के सदमे**" के

---

1 .....مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الزهد، کلام الحسن البصری، ج۸، ص۲۶۲، حدیث:۱۰۹۔

2 .....مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الزهد، کلام عمر بن الخطاب، ج۸، ص۱۴۷، حدیث:۷۔

आख़िर में तह़रीर फ़रमाते हैं कि : "निगरान से मुराद सिर्फ़ किसी मुल्क या शहर या मज़हबी व समाजी व सियासी तन्ज़ीम का ज़िम्मेदार ही नहीं बल्कि उ़मूमन हर शख़्स किसी न किसी का ज़िम्मेदार होता है मसलन मुराक़िब (या'नी सुपरवाइज़र) अपने मा तह़्त मज़दूरों का, अफ़्सर अपने क्लर्कों का, अमीरे क़ाफ़िला अपने क़ाफ़िलों का और ज़ैली निगरान अपने मा तह़्त इस्लामी भाइयों का। येह ऐसे मुआ़मलात हैं कि इन निगरानियों से फ़राग़त मुश्किल है। बिलफ़र्ज़ अगर कोई तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारी से मुस्ता'फ़ी हो भी जाए तब भी अगर शादीशुदा है तो अपने बाल बच्चों का निगरान है। अब वोह अगर चाहे कि उन की निगरानी से गुलू ख़लासी हो तो नहीं हो सकती। बहर ह़ाल हर निगरान सख़्त इम्तिह़ान से दोचार है मगर हां जो इन्साफ़ करे उस के वारे नियारे हैं चुनान्चे, इरशादे रह़मत बुन्याद है : "इन्साफ़ करने वाले नूर के मिम्बरों पर होंगे येह वोह लोग हैं जो अपने फ़ैसलों, घर वालों और जिन जिन के निगरान बनते हैं उन के बारे में अ़द्ल से काम लेते हैं।"[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला तह़रीर से वाज़ेह़ हुवा कि हम में से हर एक ज़िम्मेदार है, वालिदैन अपनी औलाद के, असातिज़ा अपने शागिर्दों के, शोहर अपनी बीवी का वग़ैरा वग़ैरा। लिहाज़ा ! हमें चाहिये कि अपने अन्दर ज़िम्मेदारी का एह़सास पैदा करें और अपनी इस्लाह़ की कोशिश करते रहें ताकि हमारे मा तह़्त भी अपनी इस्लाह़ की कोशिश में लगे रहें।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़ारूक़े आ'ज़म की वसिय्यतें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नसीह़त इ़ब्रत दिलाने वाली बात या उस बात को कहते हैं कि जिस में कोई नेक मश्वरा शामिल हो, जब कि सफ़र को जाते वक़्त या ज़िन्दगी के आख़िरी लम्ह़ात में जो बातें की जाती हैं वोह वसिय्यत कहलाती हैं। अ़वामुन्नास उ़मूमन वसिय्यत उन ही बातों को समझते हैं जो ज़िन्दगी के आख़िरी लम्ह़ात में की जाएं जब कि ऐसा नहीं है, बल्कि वसिय्यत उन बातों को भी कहते हैं जो आ़म ज़िन्दगी में इस अन्दाज़ में की जाएं कि गोया आख़िरी दम तक उन पर अ़मल करना ज़रूरी है, या वोह बातें जिन पर अ़मल के बिग़ैर कोई चारह न हो, या वोह जो किसी की ज़िन्दगी के तजरिबात का निचोड़ हों, या वोह कलाम और गुफ़्त्गू जो फ़िक्रे आख़िरत पर मुश्तमिल हों उन पर भी वसिय्यत का इत़्लाक़ होता है। बहर ह़ाल किसी शख़्स की वसिय्यतें वोही बातें होती हैं जिन पर अ़मल

1 ......نسائی، کتاب آداب القضاۃ، فضل الحاکم ــــ الخ، ص ۸۵۱، حدیث: ۵۳۸۹ـ

करने में कम अज़ कम उस के नज़दीक फ़ाइदा ही फ़ाइदा होता है, नीज़ वोह उन पर अ़मल को ज़रूरी समझता है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुख़्तलिफ़ लोगों को मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर कई वसिय्यतें फ़रमाईं, जो इस्लाह़ के बे शुमार मदनी फूलों पर मुश्तमिल हैं। चन्द वसिय्यतें मुलाह़ज़ा कीजिये।

9 मदनी फूलों पर मुश्तमिल नसीह़त आमोज़ वसिय्यतों का फ़ारूक़ी गुलदस्ता

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक शख़्स अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ करने लगा : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं देहात का रहने वाला हूं और मेरी बहुत मसरूफ़िय्यात हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुझे पुख़्ता और वाज़ेह़ वसिय्यतें कीजिये।" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "हमेशा अ़क़्लमन्दी से काम लो।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस का हाथ पकड़ कर वसिय्यतें करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

❁ "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करो और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराओ।" ❁ "और नमाज़ अदा करते रहो।" ❁ "और फ़र्ज़ ज़कात अदा करते रहो।" ❁ "और ह़ज व उ़मरह करते रहो।" ❁ "और अपने अमीर की इत़ाअ़त बजा लाओ।" ❁ "और मुसलमानों के बिल्कुल वाज़ेह़ त़रीक़े पर चलना तुझ पर लाज़िम है।" ❁ "और ऐसे ख़ुफ़्या त़रीक़े पर चलने से बचो जिसे मुसलमान जानते ही न हो।" ❁ "और हर उस चीज़ को अपने ऊपर लाज़िम कर लो जिसे बयान करने और फैलाने में तुम्हें शर्म मह़सूस न हो और न ही वोह तुम्हें रुस्वा करे।" ❁ "और हर ऐसी चीज़ से बचो जिसे बयान करने और फैलाने में तुम्हें शर्म मह़सूस हो और वोह तुम्हें रुस्वा कर दे।" येह तमाम वसिय्यतें सुन कर उस शख़्स ने बारगाहे फ़ारूक़ी में अ़र्ज़ किया : يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ! اَعْمَلُ بِهِنَّ، فَاِذَا لَقِيْتُ رَبِّيْ اَقُوْلُ اَخْبَرَنِيْ بِهِنَّ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं इन उमूर पर हमेशा अ़मल करता रहूंगा और जब रब عَزَّوَجَلَّ से मेरी मुलाक़ात होगी तो मैं अ़र्ज़ करूंगा कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! येह सब बातें मुझे अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सिखाई थीं।" येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : خُذْهُنَّ فَاِذَا لَقِيْتَ رَبَّكَ فَقُلْ لَّهُ مَا بَدَا لَكَ "या'नी इन नसीह़तों को पहले अपने पल्ले से बांध लो फिर जब रब से मुलाक़ात करो तो वहां जो चाहे अ़र्ज़ कर देना।"(1)

---

(1) ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۳۵۸۔

फ़ारूके़ आ'ज़म की तक़्वे की वसिय्यत

हज़रते सय्यिदुना सिमाक बिन हर्ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के खड़े होने की जगह से दो सीढ़ी नीचे मिम्बर पर खड़े हो कर इरशाद फ़रमाया : اُوْصِیْكُمْ بِتَقْوَی اللهِ وَاسْمَعُوْا وَاَطِیْعُوْا لِمَنْ وَلَّاهُ اللهُ اَمْرَكُمْ ''या'नी मैं तुम्हें तक़्वे की वसिय्यत करता हूं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जिसे तुम्हारा हुक्मरान बनाया है उस की बात सुनो और उस की इताअ़त करो।''(1)

ख़ल्वत में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरने की वसिय्यत

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : اُوْصِیْكُمْ بِاللهِ اِذَا بِاللهِ خَلَوْتُمْ ''या'नी मैं तुम्हें तन्हाई में भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरने की वसिय्यत करता हूं।''(2)

नेक लोगों को अपना दोस्त बनाने की वसिय्यत

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने नसीह़त करते हुवे इरशाद फ़रमाया : اِعْتَزِلْ مَا يُؤْذِيْكَ وَعَلَيْكَ بِالْخَلِيْلِ الصَّالِحِ وَقَلَّمَا تَجِدُهٗ وَشَاوِرْ فِيْ اَمْرِكَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اللهَ ''या'नी जो चीज़ तुम्हें अज़िय्यत पहुंचाए उस से दूर रहो, नेक, सालेह़ शख़्स को अपना दोस्त बनाओ और येह तुम्हें कम ही मिलेंगे। और जो लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरते हैं उन से मुशावरत करो।''(3)

बुराई सरज़द हो जाए तो अच्छाई कर लो

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने एक शख़्स को वा'ज़ो नसीह़त करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

۞ ''लोगों से हर दम होशयार रहो कि वोह कहीं तुम्हें हलाकत में न डाल दें क्यूंकि तुम्हारा मुआ़मला तुम्हारी ही त़रफ़ लौटेगा न कि उन की त़रफ़।'' ۞ ''और सिर्फ़ चलते चलते दिन को मत ख़त्म कर दो चूंकि दिन में तुम जो अ़मल भी करोगे वोह तुम्हारे ऊपर मह़फ़ूज़ रहेगा।'' ۞ ''और जब

---

1 ......كنز العمال، كتاب المواعظ، خطب عمر ومواعظه، الجزء: ١٦، ج٨، ص ٢٦، حديث: ٤٤١٩٠ـ

2 ......شعب الايمان للبيهقي، باب في اخلاص العمل ـــ الخ، ج٥، ص ٣٢٨، حديث: ٦٨١٠ـ

3 ......شعب الايمان للبيهقي، باب في مباعدة الكفار ـــ الخ، مجانبة الفسقة والمبتدعة، ج٧، ص ٥٦، حديث: ٩٤٤٢ـ

तुम से बुराई सरज़द हो जाए तो इस के बा'द अच्छाई भी करो।" ۞ "क्यूंकि मेरे नज़्दीक पुराने गुनाह को मिटाने के लिये जो नेकी की जाए उस से बढ़ कर कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिस की शदीद त़लब की जाए या उस के हुसूल में जल्दी की जाए।"(1)

अपने नफ़्स का मुहासबा करो

एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बतौ़रे नसीह़त इरशाद फ़रमाया : ۞ حَاسِبُوْا اَنْفُسَكُمْ قَبْلَ اَنْ تُحَاسَبُوْا فَاِنَّهُ اَهْوَنُ لِحِسَابِكُمْ "या'नी तुम अपना मुह़ासबा करो क़ब्ल इस से कि तुम्हारा ह़िसाब लिया जाए क्यूंकि येह तुम्हारे ह़िसाब लिये जाने से ज़ियादा आसान है।" ۞ وَزِنُوْا اَنْفُسَكُمْ قَبْلَ اَنْ تُوَزَّنُوْا "और अपने आ'माल का मुह़ासबा करते रहो क़ब्ल इस से कि तुम्हारे आ'माल का मुह़ासबा किया जाए।" ۞ وَتَزَيَّنُوْا لِلْعَرْضِ الْاَكْبَرِ يَوْمَ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ "और क़ियामत के उस दिन के लिये तय्यार रहो जिस दिन तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश किये जाओगे और तुम में से कोई भी उस पर मख़्फ़ी नहीं होगा।"(2)

अपना मुआ़मला ज़ाहिर रखो

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बतौ़रे नसीह़त इरशाद फ़रमाया : مَنْ اَرَادَ الْحَقَّ فَلْيَنْزِلْ بِالْبَرَازِ يَعْنِيْ يُظْهِرُ اَمْرَهٗ "या'नी जो शख़्स ह़क़ का इरादा रखता हो वोह अपना मुआ़मला ज़ाहिर रखे।"(3)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ारूके आ'ज़म से मन्क़ूल दुआ़एं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त से मुनाजात करने, उस का क़ुर्ब ह़ासिल करने, उस के फ़ज़्लो इन्आ़म के मुस्तह़िक़ होने और बख़्शिश व मग़्फ़िरत का परवाना ह़ासिल करने का निहायत आसान और मुजर्रब ज़रीआ़ दुआ़ है। दुआ़ मांगना हमारे प्यारे आक़ा, हुज़ूर नबिय्ये

---

1 ......المجالسة وجواهر العلم، الجزء الثالث عشر، ج ٢، ص ٢٢٤، حديث: ١٨٩٥۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الزهد، کلام عمر بن الخطاب، ج ٨، ص ١٤٩، حديث: ١٨۔
الزهد للامام احمد، زهد عمر بن الخطاب، ص ١٤٨، الرقم: ٦٣٣۔

3 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الزهد، کلام عمر بن الخطاب، ج ٨، ص ١٥١، حديث: ٢٦۔

करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नते मुबारका, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे बन्दों की मुतवातिर आ़दत, दर ह़क़ीक़त इबादत बल्कि मग़्ज़े इबादत और गुनहगार बन्दों के ह़क़ में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से एक बहुत बड़ी ने'मत और अ़ज़ीम सआ़दत है। बा'ज़ ह़ज़रात दुआ़ की क़बूलिय्यत के शाकी होते हैं कि हमारी दुआ़एं क़बूल नहीं होतीं, लिहाज़ा क़बूलिय्यते दुआ़ की शराइत़ से मुतअ़ल्लिक़ सूरए मोमिन की आयत नम्बर 60 के तह़त सदरुल अफ़ाज़िल, मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْہَادِی की बयान कर्दा तफ़्सीर से एक निहायत जामेअ़ इक़्तिबास मुलाह़ज़ा फ़रमाएं :

"अल्लाह तआ़ला बन्दों की दुआ़एं अपनी रह़मत से क़बूल फ़रमाता है और इन के क़बूल के लिये चन्द शर्तें हैं : (1) एक इख़्लास दुआ़ में (2) दूसरे येह कि क़ल्ब (दिल) ग़ैर की त़रफ़ मश्ग़ूल न हो (3) तीसरे येह कि वोह दुआ़ किसी अम्रे ममनूअ़ पर मुश्तमिल न हो (4) चौथे येह कि अल्लाह तआ़ला की रह़मत पर यक़ीन रखता हो (5) पांचवें येह कि शिकायत न करे कि मैं ने दुआ़ मांगी क़बूल न हुई। जब इन शर्तों से दुआ़ की जाती है, क़बूल होती है। ह़दीस शरीफ़ में है कि "दुआ़ करने वाले की दुआ़ क़बूल होती है।" या तो उस की मुराद दुन्या ही में उस को जल्द दे दी जाती है या आख़िरत में उस के लिये ज़ख़ीरा होती है या इस से उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा कर दिया जाता है।"[1]

वाज़ेह़ रहे कि दुआ़ मांगने का कोई वक़्त मख़्सूस नहीं, नमाज़ से पहले दुआ़ मांगना भी जाइज़ तो बा'द में मांगना भी जाइज़, फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द भी जाइज़, नफ़्ल नमाज़ के बा'द भी जाइज़, एक बार दुआ़ मांगने के बा'द दोबारा दुआ़ मांगना भी जाइज़ है। येही वज्ह है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर मुख़्तलिफ़ दुआ़एं मज़्कूर हैं, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की चन्द दुआ़एं मुलाह़ज़ा कीजिये :

﴾1﴿ नर्मी, त़ाक़त और सख़ावत की दुआ़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़लीफ़ए अव्वल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल के बा'द अ़वामुन्नास के सामने पहला त़वील ख़ुत़बा इरशाद फ़रमाया, और फिर आख़िर में यूं दुआ़ की :

1.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 24, अल मोमिन, तह़्तुल आयह : 60।

.....اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ غَلِیْظٌ فَلَیِّنِّیْ "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं सख़्त त़बीअ़त का मालिक हूं, मुझे नर्म फ़रमा दे।

.....اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ ضَعِیْفٌ فَقَوِّنِیْ "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं कमज़ोर हूं मुझे त़ाक़त अ़त़ा फ़रमा।

.....اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ بَخِیْلٌ فَسَخِّنِیْ "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं कम ख़र्च करने वाला हूं मुझे सख़ी बना दे।(1)

﴾2﴿ मदीनए मुनव्वरा में शहादत की दुआ़

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिदे गिरामी हज़रते सय्यिदुना अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा में वफ़ात की यूं दुआ़ किया करते थे :

اَللّٰھُمَّ ارْزُقْنِیْ شَھَادَةً فِیْ سَبِیْلِكَ وَاجْعَلْ مَوْتِیْ فِیْ بَلَدِ رَسُوْلِكَ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ

"या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ! मुझे अपनी राह में शहादत और अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शहर में मौत अ़त़ा फ़रमा।"(2)

﴾3﴿ नेक लोगों के साथ वफ़ात की दुआ़

हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मैमून अज़्दी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब दुआ़ मांगा करते तो यूं इरशाद फ़रमाते :

اَللّٰھُمَّ تَوَفَّنِیْ مَعَ الْاَبْرَارِ وَلَا تُخَلِّفْنِیْ فِی الْاَشْرَارِ وَقِنِیْ عَذَابَ النَّارِ وَاَلْحِقْنِیْ بِالْاَخْیَارِ

"ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे नेक लोगों के साथ वफ़ात दे, मुझे शरीर लोगों में बाक़ी न रख, मुझे जहन्नम से बचा कर नेक लोगों के साथ मिला दे।"(3)

﴾4﴿ लिबास पहनने की दुआ़

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नई क़मीस ज़ेबे तन फ़रमाई। मेरा गुमान है कि उन्हों ने क़मीस गले में

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۰۸۔
مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الدعاء، ماذکر عن۔۔۔الخ، ج۷، ص۸۱، حدیث:۲۔

2 ......بخاری، کتاب فضائل المدینۃ، باب کراھیۃ النبی۔۔۔الخ، ج۱، ص۶۲۲، حدیث:۱۸۹۰۔

3 ......الادب المفرد، باب:۲۷۹، ص۱۶۴، حدیث:۶۲۹۔

डालने से पहले येह दुआ़ पढ़ी : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ کَسَانِیْ مَا اُوَارِیْ بِهٖ عَوْرَتِیْ وَاَتَجَمَّلُ بِهٖ فِیْ حَیَاتِیْ ''या'नी तमाम ता'रीफ़ें उस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं कि जिस ने मुझे वोह लिबास पहनाया जिस से मैं सित्रपोशी करता हूं और उस से अपनी ज़िन्दगी में ज़ीनत ह़ासिल करता हूं।''

फिर इरशाद फ़रमाया कि ''मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना : जो नया लिबास पहने और यूं कहे : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي كَسَانِي مَا اُوَارِي بِهٖ عَوْرَتِي وَاَتَجَمَّلُ بِهٖ فِي حَيَاتِي ''या'नी तमाम ता'रीफ़ें उस ख़ुदा के लिये जिस ने मुझे पहनाया और मेरे सित्र को ढांपा और इस से मैं अपनी ज़िन्दगी में ज़ीनत ह़ासिल करता हूं। और फिर पुराना होने पर उस लिबास को सदक़ा कर दे तो वोह अपनी ज़िन्दगी में भी और मरने के बा'द भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह व अमान में रहेगा।''[1]

﴾5﴿ सलातुल्लैल से पहले और बा'द की दुआ़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जब सलातुल्लैल के लिये खड़े होते तो बारगाहे इलाही में यूं दुआ़ करते :

قَدْ تَرٰی مَقَامِیْ وَتَعْلَمُ حَاجَتِیْ فَارْجِعْنِیْ مِنْ عِنْدِكَ یَا اللهُ بِحَاجَتِیْ مُفْلِجًا مُنْجِحًا مُسْتَجِیْبًا مُسْتَجَابًا لِیْ، قَدْ غَفَرْتَ لِیْ وَرَحِمْتَنِیْ

''या'नी या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! बिलाशुबा तू मेरी हैसिय्यत से ब ख़ूबी आगाह है और मेरी ह़ाजत को भी जानता है, लिहाज़ा तू मुझे अपनी बारगाह से मेरी ह़ाजत पूरी फ़रमा इस ह़ाल में कि मैं बिखर चुका हूं, तेरी अ़ता से अपनी ह़ाजतें पाने वाला हूं, तेरी बारगाह से मांगने वाला और पाने वाला हूं, तू मेरी मग़फ़िरत फ़रमा और मुझ पर रह़म फ़रमा।''

और जब सलातुल्लैल से फ़ारिग़ होते तो बारगाहे इलाही में यूं दुआ़ करते :

اَللّٰهُمَّ لَا اَرٰی شَیْئًا مِنَ الدُّنْیَا یَدُوْمُ، وَلَا اَرٰی حَالًا فِیْهَا یَسْتَقِیْمُ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِیْ اَنْطِقُ فِیْهَا بِعِلْمٍ وَاَصْمُتُ بِحُکْمٍ اَللّٰهُمَّ لَا تُکْثِرْ لِیْ مِنَ الدُّنْیَا فَاَطْغٰی، وَلَا تُقِلَّ لِیْ مِنْهَا فَاَنْسٰی، فَاِنَّهٗ مَا قَلَّ وَکَفٰی خَیْرٌ مِّمَّا کَثُرَ وَاَلْهٰی

''या'नी या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं दुन्या की किसी शै को दाइमी नहीं समझता और न ही दुन्यावी ह़ालत को यक्सां समझता हूं, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे इ़ल्मी गुफ़्त्गू करने, हुक्मे शरीअ़त पर ख़ामोशी इख़्तियार

---

[1] ......ابن ماجه، کتاب اللباس، باب ما یقول الرجل۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۱۴۲، حدیث: ۳۵۵۷۔

ترمذی، احادیث شتی، باب من ابواب الدعوات، ج ۵، ص ۳۲۷، حدیث: ۳۵۷۱۔

करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ पर दुन्या की कसरत न फ़रमा कि मैं गुमराह हो जाऊं, न ही क़िल्लत फ़रमा कि तुझे भूल जाऊं क्यूंकि ब क़द्रे किफ़ायत रिज़्क़ ग़ाफ़िल कर देने वाले कसीर रिज़्क़ से कई गुना बेहतर है।(1)

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दौराने त़वाफ़ अक्सर एक ही दुआ़ पढ़ा करते थे अलबत्ता बा'ज़ औक़ात उस में तब्दीली भी कर दिया करते थे। आप की दो दुआ़एं येह हैं :

﴾6﴿ त़वाफ़ करते वक़्त की दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी नुजैह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दौराने त़वाफ़ अक्सर येह दुआ़ मांगा करते थे : رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَۃً وَّفِی الْاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ''या'नी ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ हमें दुन्या में भी भलाई अ़ता फ़रमा और आख़िरत में भी भलाई अ़ता फ़रमा और हमें जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा।''(2)

﴾7﴿ त़वाफ़ करते वक़्त की एक और दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दौराने त़वाफ़ येह दुआ़ पढ़ रहे थे :

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَۃً وَّفِی الْاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

''या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये बादशाही है और उसी के लिये तमाम ता'रीफ़ें हैं और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है, ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! हमें दुन्या में भी भलाई अ़ता फ़रमा और आख़िरत में भी भलाई अ़ता फ़रमा और हमें जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा।''(3)

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الدعاء، باب ما ذکر عن ابی بکر وعمر، ج ۷، ص ۸۲، حدیث: ۷۔

2 ......اخبار مکۃ، ج ۱، ص ۲۳۰، الرقم: ۴۲۰۔

کتاب الدعا للطبرانی، جامع ابواب الحج، القول فی الطواف، ص ۲۶۹، حدیث: ۸۵۷۔

3 ......کنز العمال، کتاب الحج والعمرۃ، ادعیتہ، الجزء: ۵، ج ۳، ص ۶۷، حدیث: ۱۲۴۹۸۔

﴾8﴿ ख़्वाहिशाते क़ल्बी से नजात और रिज़्क़ में बरकत की दुआ

हज़रते सय्यिदुना हस्सान बिन फ़ाइद अ़ब्सी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ येह दुआ मांगा करते थे :

..... اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ غِنَائِیْ فِیْ قَلْبِیْ وَرَغْبَتِیْ فِیْمَا عِنْدَكَ "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे दिल की तवंगरी नसीब फ़रमा।

..... وَبَارِكْ لِیْ فِیْمَا رَزَقْتَنِیْ وَاَغْنِنِیْ عَمَّا حَرَّمْتَ عَلَیَّ "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे रिज़्क़ में बरकत अ़ता फ़रमा और ह़राम कर्दा चीज़ों से दूर रहने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा।"(1)

﴾9﴿ नमाज़े जनाज़ा के बा'द की दुआ

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक शख़्स की नमाज़े जनाज़ा अदा करने के बा'द उस के लिये यूं दुआ फ़रमाई :

..... اَللّٰھُمَّ اَصْبَحَ عَبْدُكَ ھٰذَا قَدْ تَخَلّٰی مِنَ الدُّنْیَا وَتَرَكَھَا لِاَھْلِھَا وَاسْتَغْنَیْتَ عَنْہُ وَافْتَقَرَ اِلَیْكَ

"या'नी या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तेरे इस बन्दे ने इस ह़ाल में सुब्ह़ की है कि येह दुन्या के मालो मताअ़ से ख़ाली है और इस ने दुन्या को अपने अहल के लिये छोड़ दिया है और येह सिर्फ़ तेरा ही मोह़ताज है ह़ालांकि तू इस से बे परवाह है।"

..... كَانَ یَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللہُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ

"या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तेरा येह बन्दा गवाही देता था कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तेरे बन्दे और तेरे रसूल हैं।"

..... اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لَہٗ وَتَجَاوَزْ عَنْہُ وَاَلْحِقْہُ بِنَبِیِّہٖ

"या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस की मग़फ़िरत फ़रमा और इस के गुनाहों से दर गुज़र फ़रमा और इसे अपने नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मुल्ह़िक़ फ़रमा।"(2)

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الدعاء، باب ما ذکر عن ابی بکر وعمر، ج ۷، ص ۸۱، حدیث: ۳۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الدعاء، مایدعی بہ فی الصلاۃ علی الجنائز، ج ۷، ص ۱۲۶، حدیث: ۶۔

کنزالعمال، کتاب الموت، صلاۃ الجنائز، الجزء: ۱۵، ج ۸، ص ۲۹۹، حدیث: ۴۲۸۱۷۔

﴾10﴿ गुनाहों की मुआ़फ़ी की दुआ

ह़ज़रते सय्यिदुना रुकैन رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ यूं दुआ मांगा करते थे :

.....اَللّٰھُمَّ اَسۡتَغۡفِرُكَ لِذَنۡبِیۡ "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी चाहता हूं।"

.....وَاَسۡتَھۡدِیۡكَ لِمَرَاشِدِ اَمۡرِیۡ "तुझ से अपने मुआ़मलात में हिदायत त़लब करता हूं।"

.....وَاَتُوۡبُ اِلَیۡكَ فَتُبۡ عَلَیَّ اِنَّكَ اَنۡتَ رَبِّیۡ "और तेरी बारगाह में तौबा करता हूं, तू मेरी तौबा को क़बूल फ़रमा, बेशक तू ही तो मेरा रब है।"

.....اَللّٰھُمَّ فَاجۡعَلۡ رَغۡبَتِیۡ اِلَیۡكَ وَاجۡعَلۡ غِنَائِیۡ فِیۡ صَدۡرِیۡ "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे तुझ से लौ लगाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा, मुझे ग़िनाए क़ल्बी अ़त़ा फ़रमा।"

.....وَبَارِكۡ لِیۡ فِیۡمَا رَزَقۡتَنِیۡ وَتَقَبَّلۡ مِنِّیۡ اِنَّكَ اَنۡتَ رَبِّیۡ "और जो तू ने मुझे रिज़्क़ दिया है इस में बरकत अ़त़ा फ़रमा और मेरी दुआ क़बूल फ़रमा क्यूंकि तू ही तो मेरा रब है।"[1]

﴾11﴿ आ़फ़िय्यत व दर गुज़र की दुआ

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल आ़लिया رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ को यूं दुआ करते सुना : اَللّٰھُمَّ عَافِنَا وَاعۡفُ عَنَّا "या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें आ़फ़िय्यत अ़त़ा फ़रमा और हम से दर गुज़र फ़रमा।"[2]

﴾12﴿ ग़फ़्लत से पनाह की दुआ

ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैम बिन ह़न्ज़ला رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ यूं दुआ मांगा करते थे :

---

1 .....مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الدعاء، مایقال فی دبر الصلوات، ج۷، ص ۳۹، حدیث:۱۷۔

2 .....مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الدعاء، باب ماذکر عن ابی بکر وعمر، ج۷، ص ۱۸، حدیث:۲۔

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُبِکَ اَنۡ تَاۡخُذَنِیۡ عَلٰی غِرَّۃٍ اَوۡ تَذَرَنِیۡ فِیۡ غَفۡلَۃٍ اَوۡتَجۡعَلَنِیۡ مِنَ الۡغَافِلِیۡنَ

"या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी पनाह मांगता हूं कि तू मेरी ना फ़रमानी पर पकड़ फ़रमा या मुझे ग़फ़्लत में छोड़ दे या मुझे ग़ाफ़िल कर दे।"(1)

क़लील लोगों में से बनाए जाने की दुआ

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम तैमी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى से रिवायत है कि एक शख़्स ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के पास यूं दुआ मांगी : اَللّٰھُمَّ اجۡعَلۡنِیۡ مِنَ الۡقَلِیۡلِ "या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे क़लील (थोड़े) लोगों में से बना दे।" सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : مَاھٰذَا الَّذِي تَدْعُوبِهٖ؟ "येह किस त़रह़ की दुआ मांग रहे हो ?" उस ने अ़र्ज़ किया : اِنِّي سَمِعْتُ اللّٰهَ يَقُولُ وَقَلِيلٌ مِنْ عِبَادِيَ الشَّكُورُ فَاَنَا اَدْعُو اَنْ يَجْعَلَنِي مِنْ اُولٰئِکَ الْقَلِيلِ "या'नी मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह इरशाद सुना है : ﴿وَ قَلِیۡلٌ مِّنۡ عِبَادِیَ الشَّکُوۡرُ﴾ (پ۲۲،السبا:۱۳) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और मेरे बन्दों में कम हैं शुक्र वाले।" इसी लिये मैं येह दुआ मांग रहा हूं कि मुझे इन ही क़लील लोगों में से बना दे।" अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه बसद आ़जिज़ी करते हुवे इरशाद फ़रमाने लगे : كُلُّ النَّاسِ اَعْلَمُ مِنْ عُمَرَ "या'नी सारे ही लोग उ़मर से ज़ियादा जानते हैं।"(2)

बख़्शिश व मग़्फ़िरत ह़ासिल करने का आसान ज़रीआ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुआ, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात करने, उस की कु़र्बत ह़ासिल करने, उस के फ़ज़्लो इन्आ़म के मुस्तह़िक़ होने और बख़्शिश व मग़्फ़िरत का परवाना ह़ासिल करने का निहायत आसान और मुजर्रब ज़रीआ़ है। इसी त़रह़ दुआ प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुतवारिस सुन्नत, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ के प्यारे बन्दों की मुतवातिर आ़दत, दर ह़क़ीक़त इ़बादत बल्कि मग़्ज़े इ़बादत, और गुनहगार बन्दों के ह़क़ में अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से एक बहुत बड़ी ने'मत व सआ़दत है।

1 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الدعاء، باب ماذکر عن ابی بکر وعمر، ج۷، ص۸۲، حدیث:۸۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الدعاء، باب ماذکر عن ابی بکر وعمر، ج۷، ص۸۱، حدیث:۵۔

दुआ की अहम्मिय्यत बयान करते हुवे रईसुल मुतकल्लिमीन मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن इरशाद फ़रमाते हैं : "ऐ अ़ज़ीज़ ! दुआ एक अ़जीब ने'मत और उ़म्दा दौलत है कि परवर दगार तक़द्दस व तआ़ला ने अपने बन्दों को करामत फ़रमाई और उन को ता'लीम की, ह़ल्ले मुश्किलात में इस से ज़ियादा कोई चीज़ मुअस्सिर नहीं, और दफ़्ए़ बला व आफ़त में कोई बात इस से बेहतर नहीं।"(1) दुआ के इस क़दर मुफ़ीद और नफ़्अ़ बख़्श होने के बा वुजूद इस से इस्तिफ़ादा उसी सूरत में मुमकिन है जब कि इस के शराइत़ व आदाब भी मल्ह़ूज़े ख़ात़िर रहें वरना ऐन मुमकिन है कि दुआ करना फ़ाइदे मन्द न हो। दुआ के फ़ज़ाइल व आदाब और इस से मुतअ़ल्लिक़ा अह़काम पर मुश्तमिल दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 326 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ज़ाइले दुआ**" का मुत़ालआ़ फ़रमाइये।

या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस्लाही अक़्वाले ज़र्रीं, नसीह़त आमोज़ ख़ुत़बात, फ़िक्रे आख़िरत से भरपूर वसिय्यतें और इज्ज़ो इन्किसारी से मा'मूर दुआओं से फ़ैज़याब फ़रमा, हमें इन के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे जितना दुन्या में रहना है उतना दुन्या के लिये, और जितना आख़िरत में रहना है उतना आख़िरत की तय्यारी करने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें मुआ़फ़ फ़रमा दे, हम से हमेशा के लिये राज़ी हो जा, कल बरोज़े क़ियामत अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त नसीब फ़रमा, हमें सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की शफ़ाअ़त नसीब फ़रमा, सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की शफ़ाअ़त नसीब फ़रमा, सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की शफ़ाअ़त नसीब फ़रमा, मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) की शफ़ाअ़त नसीब फ़रमा, हमें जन्नतुल फ़िरदौस में इन तमाम मुक़द्दस हस्तियों का पड़ोस नसीब फ़रमा। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा
गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब
गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी
हाए मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 ......فضائل دعا، ص ۱۳۱۔

पांचवां बाब

फ़ारूके़ आ'ज़म अ़हदे रिसालत में

इस बाब में मुलाह़ज़ा कीजिये..........

- .....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अ़हदे रिसालत में मुबारक किरदार
- .....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ज़ाइल में इन्फ़िरादिय्यत
- .....वोह फ़ज़ाइल जो फ़क़त़ सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही को ह़ासिल हुवे।
- .....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ज़ाइल में शिराकत
- .....वोह फ़ज़ाइल जिन में सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ दीगर सहा़बए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان शरीक हैं।
- .....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और बारगाहे रिसालत में मदनी मुकालमे
- .....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अस्ह़ाबे कह्फ़ से मुलाक़ात
- .....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और सय्यिदुना उवैस क़रनी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मुलाक़ात

....

फ़ारूके़ आ'ज़म अ़ह्दे रिसालत में

फ़ारूके़ आ'ज़म बारगाहे नबवी व सिद्दीक़ी के तरबिय्यत याफ़्ता

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उ़मूमन ऐसा होता है कि जब किसी हा़किम को हुक्मरानी मिल जाए तो उस के तौ़र त़रीके़ खुल कर सामने आ जाते हैं और बसा औक़ात ऐसी बातें भी उस से सादिर हो जाती हैं जो हुक्मरानी से पहले उस में मौजूद न थीं, यक़ीनन मुख़्लिस हुक्मरान वोही है जिस का किरदार हुक्मरानी मिलने से पहले और बा'द दोनों सूरतों में यक्सां रहे। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते मुबारका ऐसी ही थी कि अ़ह्दे रिसालत व अ़ह्दे सिद्दीक़ी दोनों में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ साथ तमाम मुसलमानों की ताईदो तौसीक़ ह़ासिल रही। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का किरदार आप की सीरते तृय्यिबा की बेहतरीन अ़क्कासी करता है, इन दोनों अदवार में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते तृय्यिबा को देखने और बा'द में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अपने अ़ह्द में आप की सीरत को देखने से येह बात रोज़े रौशन की त़रह़ इ़यां हो जाती है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे रिसालत और बारगाहे सिद्दीक़ी के तरबिय्यत याफ़्ता थे। कभी आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन दोनों की मुख़ालफ़त न की बल्कि अपने विसाले ज़ाहिरी तक इन्ही के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे ऐसी बे मिसाल हुक्मरानी की जो क़ियामत तक आने वाले तमाम हुक्मरानों के लिये मश्अ़ले राह है।

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे रिसालत में ह़याते तृय्यिबा के बे शुमार पहलू हैं, बा'ज़ तो ऐसे हैं जिन्हें पूरे बाब की है़सिय्यत ह़ासिल है, उन्हें बाब ही के तौ़र पर बयान किया गया है मसलन :

- .....फ़ारूके़ आ'ज़म का क़बूले इस्लाम
- .....फ़ारूके़ आ'ज़म की हिजरत
- .....फ़ारूके़ आ'ज़म का इ़श्के़ रसूल
- .....फ़ारूके़ आ'ज़म के ग़ज़वात व सराया

इन के इ़लावा सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे रिसालत के कई रौशन पहलू हैं। तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

फ़ारूक़े आ'ज़म की फ़ज़ाइल में इनफ़िरादिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मह़बूबे रब्बे काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह से कोई भी मह़रूम न रहा, जो भी आया झोलियां भर भर के ले गया, तो येह कैसे होता कि जिन को खु़द रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मांगा हो और वोह मह़रूम रह जाएं ? येही वज्ह है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को बारगाहे रिसालत से बेशुमार ऐसे फ़ज़ाइल अ़ता हुवे जिस में आप मुन्फ़रिद हैं या'नी वोह फ़ज़ाइल ख़ास आप ही को अ़ता हुवे कोई दूसरा उन में शरीक न था । इन तमाम फ़ज़ाइल की तफ़्सील कुतुबे अह़ादीस में मौजूद है, यहां आप के फ़क़त़ 19 फ़ज़ाइल का इजमाली ख़ाका पेशे ख़िदमत है :

﴾1﴿..... ''रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप के जन्नती मह़ल का ज़िक्र फ़रमाया ।''(1)

﴾2﴿..... ''रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप की ग़ैरत का ज़िक्र फ़रमाया ।''(2)

﴾3﴿..... ''रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को खु़द इल्म अ़ता फ़रमाया ।''(3)

﴾4﴿..... ''रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप के दौरे ख़िलाफ़त की कुव्वत को बयान फ़रमाया ।''(4)

﴾5﴿..... ''शैत़ान आप को देख कर अपना रास्ता ही तब्दील कर लेता है ।''(5)

﴾6﴿..... ''रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप को इस उम्मत का मुह़द्दस फ़रमाया ।''(6)

﴾7﴿..... ''आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه नबी न होने के बा वुजूद अम्बिया की त़रह़ कलाम करने वाले हैं ।''(7)

﴾8﴿..... ''रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की दीन में पुख़्तगी को बयान फ़रमाया ।''(8)

﴾9﴿..... ''बारगाहे इलाही व बारगाहे रिसालत से आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को कई मुवाफ़िक़ात ह़ासिल हुईं ।''(9)

---

1 ......بخاری، کتاب بدء الخلق، باب ماجاء فی۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۳۹۰، حدیث: ۳۲۴۲۔

2 ......بخاری، کتاب بدء الخلق، باب ماجاء فی۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۳۹۰، حدیث: ۳۲۴۲۔

3 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عمر۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۵۲۵، حدیث: ۳۶۸۱۔

4 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عمر۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۵۲۵، حدیث: ۳۶۸۲۔

5 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عمر۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۵۲۵، حدیث: ۳۶۸۳۔

6 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عمر۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۵۲۷، حدیث: ۳۶۸۹۔

7 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عمر۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۵۲۸، حدیث: ۳۶۸۹۔

8 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عمر۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۵۲۸، حدیث: ۳۶۹۱۔

9 ....मुवाफ़िक़ात की तफ़्सील के लिये इसी किताब का मौज़ूअ़ ''मुवाफ़िक़ाते फ़ारूक़े आ'ज़म'' सफ़ह़ा 674 का मुत़ालआ़ कीजिये ।

﴾10﴿....."रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप के क़बूले इस्लाम की दुआ़ फ़रमाई।"[(1)]

﴾11﴿....."आप के दिल और ज़बान पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़क़ जारी फ़रमा दिया।"[(2)]

﴾12﴿....."अगर मेरे बा'द कोई नबी होता तो उ़मर होता।"[(3)]

﴾13﴿....."शैत़ान भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ख़ौफ़ खाता है।"[(4)]

﴾14﴿....."शयात़ीने जिन्नो इन्स आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से भागते हैं।"[(5)]

﴾15﴿....."रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को दुआ़ओं में याद रखने का फ़रमाया।"[(6)]

﴾16﴿....."आप के क़बूले इस्लाम पर आस्मान वालों ने भी ख़ुशियां मनाईं।"[(7)]

﴾17﴿....."आप के क़बूले इस्लाम के बा'द शैत़ान वक़्ते मुलाक़ात मुंह के बल गिर पड़ता है।"[(8)]

﴾18﴿....."इस्लाम आप की वफ़ात पर रोएगा।"[(9)]

﴾19﴿....."ह़क़ मेरे बा'द उ़मर के साथ होगा चाहे वोह जहां भी हों।"[(10)]

फ़ारूक़े आ'ज़म की फ़ज़ाइल में शिर्कत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बारगाहे रिसालत से इनफ़िरादी फ़ज़ाइल के इलावा कई ऐसे फ़ज़ाइल भी ह़ासिल हुवे जो मुश्तरका थे या'नी वोह फ़ज़ाइल आप को सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ या दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के साथ अ़त़ा हुवे। इन तमाम फ़ज़ाइल की तफ़्सील भी कुतुबे अह़ादीस में मौजूद है, यहां आप के फ़क़त़ उन्नीस फ़ज़ाइल का इजमाली ख़ाका पेशे ख़िदमत है :

---

(1)......ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی حفص۔۔۔الخ، ج۵، ص ۳۸۳، حدیث: ۳۷۰۳۔
(2)......ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی حفص۔۔۔الخ، ج۵، ص ۳۸۳، حدیث: ۳۷۰۲۔
(3)......ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی حفص۔۔۔الخ، ج۵، ص ۳۸۵، حدیث: ۳۷۰۶۔
(4)......ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی حفص۔۔۔الخ، ج۵، ص ۳۸۷، حدیث: ۳۷۱۱۔
(5)......ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی حفص۔۔۔الخ، ج۵، ص ۳۸۷، حدیث: ۳۷۱۱۔
(6)......ابوداود، کتاب الوتر، باب الدعاء، ج ۲، ص ۱۱۴، حدیث: ۱۴۹۸۔
(7)......ابن ماجہ، کتاب السنۃ، فضل عمر، ج ۱، ص ۷۶، حدیث: ۱۰۳۔
(8)......معجم کبیر، سدیسۃ مولاۃ حفصۃ۔۔۔الخ، ج ۲۴، ص ۳۰۵، حدیث: ۷۷۴۔
(9)......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۱۳۸۔
(10)......مسند بزار، عطاء بن ابی رباح۔۔۔الخ، ج ۶، ص ۹۸، حدیث: ۲۱۵۴۔

﴾1﴿....."रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप को जन्नत की खुश ख़बरी अ़ता फ़रमाई।"(1)

﴾2﴿....."रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप को शहादत की खुश ख़बरी अ़ता फ़रमाई।"(2)

﴾3﴿....."रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का ज़िक्रे ख़ैर फ़रमाते।"(3)

﴾4﴿....."चलते हुवे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का हाथ थाम लिया।"(4)

﴾5﴿....."रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप की इक़्तिदा का हुक्म फ़रमाया।"(5)

﴾6﴿....."आप से बेहतर किसी शख़्स पर सूरज तुलूअ़ न हुवा।"(6)

﴾7﴿....."कल बरोज़े क़ियामत रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم व सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर के साथ आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अपनी क़ब्रे अन्वर से बाहर तशरीफ़ लाएंगे"(7)

﴾8﴿....."आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वज़ीर हैं।"(8)

﴾9﴿....."रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर को अपने कान व आंखें फ़रमाया।"(9)

﴾10﴿....."फ़ारूके आ'ज़म बुलन्दो बाला मर्तबे वाले हैं।"(10)

---

1 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عمر۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۵۲۹، حدیث: ۳۶۹۳۔

2 ......ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی الاعور۔۔۔الخ، ج ۵، ص ۴۲۰، حدیث: ۳۷۷۸۔

3 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عمر۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۵۲۷، حدیث: ۳۶۸۹۔

4 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عمر۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۵۲۹، حدیث: ۳۶۹۴۔

5 ......ابن ماجه، کتاب السنة، فضل ابی بکر الصدیق، ج ۱، ص ۷۴، حدیث: ۹۷۔

6 ......ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی حفص۔۔۔الخ، ج ۵، ص ۳۸۴، حدیث: ۳۷۰۴۔

7 ......ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی حفص۔۔۔الخ، ج ۵، ص ۳۷۸، حدیث: ۳۶۸۹۔

8 ......ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی حفص۔۔۔الخ، ج ۵، ص ۳۸۲، حدیث: ۳۷۰۰۔

9 ......ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی حفص۔۔۔الخ، ج ۵، ص ۳۷۸، حدیث: ۳۶۹۱۔

10 ......ابن ماجه، کتاب السنة، باب فی فضائل اصحاب۔۔۔الخ، فضل ابی بکر۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۷۳، حدیث: ۹۶۔

﴾11﴿.....''आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पुख़्ता उ़म्र वाले जन्नतियों के सरदार हैं।''(1)

﴾12﴿.....''रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर को अपना रफ़ीके़ ख़ास फ़रमाया।''(2)

﴾13﴿.....''आप की ग़ैर मौजूदगी में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक वाक़िए़ पर आप के ईमान लाने का ज़िक्र फ़रमाया।''(3)

﴾14﴿.....''ब वक़्ते विसाल रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप से राज़ी थे।''(4)

﴾15﴿.....''रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को शहादत की दुआ़ दी।''(5)

﴾16﴿.....''रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप की इक़्तिदा का हुक्म इरशाद फ़रमाया।''(6)

﴾17﴿.....''आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मह़बूबे ख़ुदा हैं।''(7)

﴾18﴿.....''फ़ारूके़ आ'ज़म की मह़ब्बत ईमान की ज़मानत है।''(8)

﴾19﴿.....''सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) इस्लाम के मां बाप हैं।''(9)

फ़ारूके़ आ'ज़म का इ़ल्मी ज़ौक़ो शौक़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का अ़ह्दे रिसालत में एक पहलू निहायत ही शानदार है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के मुक़ाबले में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बिला झिजक इ़ल्मी सुवालात कर लिया करते थे, आप के इ़ल्म दोस्त होने पर येह बिल्कुल वाज़ेह़ दलील है, येही वज्ह है कि इ़ल्मे नबवी का कसीर ह़िस्सा आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

---

1 ......ابن ماجه، کتاب السنة، باب في فضائل اصحاب۔۔۔الخ، فضل ابی بکر۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۷۵، حدیث: ۱۰۰۔

2 ......معجم کبیر، باب من روی عن ابن مسعود۔۔۔الخ، ج ۱۰، ص ۷۷، حدیث: ۱۰۰۰۸۔

3 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب قول النبی۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۵۱۸، حدیث: ۳۶۶۳۔

4 ......مستدرک حاکم، کتاب معرفة الصحابة، ذکر فضائل عمر، ج ۴، ص ۷۴، حدیث: ۴۵۷۱۔

5 ......ابن ماجه، کتاب اللباس، باب مایقول الرجل۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۱۴۲، حدیث: ۳۵۵۸۔

6 ......ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی بکر۔۔۔الخ، ج ۵، ص ۳۷۴، حدیث: ۳۶۸۲۔

7 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب قول النبی۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۵۱۹، حدیث: ۳۶۶۲۔

8 ......کنز العمال، کتاب الفضائل، فضل الشیخین۔۔۔الخ، الجزء: ۱۳، ج ۷، ص ۸، حدیث: ۳۶۱۱۱۔

9 ......تاریخ الاسلام للذهبی، ج ۳، ص ۲۷۴۔

के हिस्से में आया। ज़ख़ीरए अहादीस में ऐसी बेशुमार अहादीस मौजूद हैं कि जिन में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे रिसालत से इल्मी ख़ज़ाने ह़ासिल करते नज़र आते हैं। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुख़्तलिफ़ उ़लूम के बारे में जानने के लिये इसी किताब का मौज़ूअ़ ''औसाफ़े फ़ारूके़ आ'ज़म'' सफ़्ह़ा 201 का मुत़ालआ़ कीजिये।

फ़ारूके़ आ'ज़म मिज़ाज शनासे रसूल थे

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुशीर व वज़ीर होने के साथ येह भी एक अ़ज़ीम शरफ़ ह़ासिल किया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ''मिज़ाज शनासे रसूल'' थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रुख़े अन्वर की मुख़्तलिफ़ ह़ैसिय्यतों की पहचान में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को महारत ह़ासिल थी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रुख़े मुस्त़फ़ा को देख कर फ़ौरन पहचान जाते थे। येही वज्ह है कि बा'ज़ औक़ात एक ही बात को कोई और सह़ाबी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछता मगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मिज़ाज से आश्ना न होने के सबब सह़ीह़ त़रीके़ से सुवाल न कर पाता और वोही सुवाल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ करते तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस का तफ़्सीली जवाब इरशाद फ़रमाते। मसलन सह़ीह़ मुस्लिम की मश्हूर ह़दीसे पाक है जिस का ख़ुलासा कुछ यूं है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक शख़्स ने रोज़े के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जलाल में आ गए। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़ौरन मिज़ाजे रसूल को समझा और वोही सुवाल किसी और अन्दाज़ में किया तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस का तफ़्सीली जवाब इरशाद फ़रमाया।[1]

फ़ारूके़ आ'ज़म रसूलुल्लाह को मानूस करते

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़हदे रिसालत में न सिर्फ़ येह सआ़दत ह़ासिल थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिज़ाज शनासे रसूल थे, अगर कभी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जलाल में होते तो आप रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस त़रह़ मानूस करते कि

---

1 ......مسلم، کتاب الصیام، استحباب صیام ثلاثۃ ایام۔۔۔الخ، ص ۵۸۹، حدیث: ۱۹۶۔

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जलाल, जमाल में तब्दील हो जाया करता। मसलन मज़्कूरए बाला रोजे़ से मुतअ़ल्लिक़ सुवाल वाली रिवायत ही को पढ़ लीजिये कि जैसे ही उस शख़्स ने रोजे़ के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जलाल में आ गए लेकिन सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़ौरन ही ऐसी हिक्मते अ़मली इख़्तियार की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वोह जलाल, जमाल में तब्दील हो गया। इसी त़रह़ बुख़ारी शरीफ़ की एक त़वील रिवायत है जिस का ख़ुलासा कुछ यूं है कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में येह मश्हूर हो गया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात को त़लाक़ दे दी है। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ौरन बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कबीदा ख़ात़िर (रन्जीदा) पाया तो अपने दिली जज़्बात का इज़्हार करते हुवे अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : اَسْتَاْنِسُ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं आप से उन्सिय्यत भरी गुफ़्तगू करना चाहता हूं।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ऐसी प्यारी गुफ़्तगू की, कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मलाल जाता रहा और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुश हो गए।[1]

फ़ारूके़ आ'ज़म बारगाहे रिसालत के मुशीर

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बारगाहे रिसालत में एक और ऐसा अ़ज़ीम मक़ामो मर्तबा भी ह़ासिल था जिस में सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इ़लावा कोई आप का शरीक न था, वोह येह कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे रिसालत के मुशीर थे। हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुख़्तलिफ़ उमूर पर मुशावरत फ़रमाते रहते थे, बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुशावरत करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया। चुनान्चे, इरशाद होता है :

﴿وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ﴾ (پ۴،آل عمران:۱۵۹) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और कामों में उन से मश्वरा लो।"

---

1 ......بخاری، کتاب المظالم والغضب، باب الغرفة والعلية...الخ، ج۲، ص ۱۳۳، حدیث: ۲۴۶۸ ملتقطاً۔

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि इस आयत में जिन से मश्वरा करने का हुक्म दिया गया है उन से मुराद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।[1]

और बारहा ऐसा भी हुवा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही के मश्वरे के मुत़ाबिक़ वोह काम हुवा। बल्कि आप ने जो राए पेश की उसे बारगाहे रब्बुल आ़लमीन व बारगाहे रिसालत दोनों से ताईद ह़ासिल हो गई। इस त़रह़ के कई वाक़िआ़त कुतुबे अह़ादीस में मौजूद हैं। ग़ज़्वए फ़त्ह़े मक्का के बारे में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दोनों से मुशावरत की और अ़मल फ़ारूक़े आ'ज़म की राए के मुत़ाबिक़ हुवा।[2]

फ़ारूक़े आ'ज़म मदीनए मुनव्वरा के आ़मिले सदक़ात थे

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़हदे रिसालत में येह भी फ़ज़ीलत ह़ासिल थी कि आप को हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मदीनए मुनव्वरा के सदक़ात पर आ़मिल मुक़र्रर फ़रमाया था। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने सा'दी मालिकी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे सदक़ात पर आ़मिल बनाया, जब मैं ने अपना काम मुकम्मल कर लिया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे उस की उजरत देने का इरादा किया। मैं ने अ़र्ज़ किया : ''اِنَّمَا عَمِلْتُ لِلّٰہِ وَاَجْرِیْ عَلَی اللّٰہِ या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये काम किया है और मुझे इस का अज्र भी वोही देगा।'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : ''خُذْ مَا اُعْطِیْتَ या'नी जो तुम्हें दिया जा रहा है वोह ले लो।'' फिर फ़रमाया कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक अ़हद में मुझे भी सदक़ात पर आ़मिल मुक़र्रर किया गया बा'दे अज़ां रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे इस की उजरत अ़त़ा फ़रमाने का इरादा किया तो मैं ने भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से येही अ़र्ज़ किया जो तुम ने मुझ से कहा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِذَا اُعْطِیْتَ شَیْئًا مِنْ غَیْرِ اَنْ تَسْاَلَ فَکُلْ وَتَصَدَّقْ ''या'नी ऐ उ़मर ! जब तुम्हें कोई चीज़ तुम्हारे मांगे बिग़ैर ही मिल रही हो तो उसे ले लो, अब तुम्हारी मरज़ी कि उसे खुद खा लो या राहे ख़ुदा में सदक़ा कर दो।''[3]

1 ......سنن کبری، کتاب آداب القاضی، باب مشاورۃ الوالی۔۔۔الخ، ج ۱۰، ص ۱۸۶، حدیث: ۲۰۳۰۰۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب المغازی، حدیث فتح مکۃ، ج ۸، ص ۵۴۲، حدیث: ۵۳۔

3 ......مسلم، کتاب الزکاۃ، باب اباحۃ الاخذ۔۔۔الخ، ص ۵۲۰، حدیث: ۱۱۲۔

फ़ारूके़ आ'ज़म की ह़ज्जतुल वदाअ़ में रफ़ाक़ते मुस्त़फ़ा

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़बूले इस्लाम से ले कर सफ़रो ह़ज़र हर जगह दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मइय्यत में रहे। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी ह़याते त़य्यिबा में जो आख़िरी ह़ज अदा फ़रमाया जिस में कु़रआने पाक का नुज़ूल भी मुकम्मल हो गया उसे ''ह़ज्जतुल वदाअ़'' कहते हैं, उस में भी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भरपूर रफ़ाक़ते मुस्त़फ़ा नसीब हुई। इसी ह़ज के मौक़अ़ पर तक्मीले दीन की आयात भी नाज़िल हुईं, उस वक़्त भी सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मइय्यत में थे, येही वज्ह है कि बा'द में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से जब इन आयात के बारे में कोई इस्तिफ़्सार करता तो आप उस की वज़ाह़त फ़रमाते कि येह आयात ह़ज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर नाज़िल हुई थीं। चुनान्चे,

۞.....ह़ज़रते सय्यिदुना त़ारिक़ बिन शिहाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक मरतबा क़ौमे यहूद में से एक शख़्स (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो यहूद के बहुत बड़े आ़लिम थे और ईमान ले आए थे) अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आए और अ़र्ज़ किया : اِنَّکُمْ تَقْرَؤُوْنَ آيَةً فِيْ كِتَابِكُمْ لَوْ عَلَيْنَا مَعْشَرَ الْيَهُوْدِ نَزَلَتْ لَاتَّخَذْنَا ذٰلِكَ الْيَوْمَ عِيْدًا ''या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप लोग अपनी किताब या'नी कु़रआने पाक में एक ऐसी आयत की तिलावत करते हैं कि अगर वोही आयत यहूद पर नाज़िल होती तो उस आयत के नुज़ूल के दिन को वोह ई़द मनाते।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : ''वोह कौन सी आयत है ?'' उन्हों ने सूरए माइदह की आयते मुबारका तिलावत की। जिसे सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

فَقَدْ عَلِمْتُ الْيَوْمَ الَّذِىْ اُنْزِلَتْ فِيْهِ وَالسَّاعَةَ وَاَيْنَ رَسُوْلُ اللّٰهِ حِيْنَ نَزَلَتْ لَيْلَةَ جُمُعَةٍ وَنَحْنُ مَعَ رَسُوْلِ اللّٰهِ بِعَرَفَةَ

या'नी मैं उस दिन उस वक़्त और उस मक़ाम को अच्छी त़रह़ जानता हूं, वोह जुमुआ़ की रात थी और हम सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मक़ामे अ़रफ़ा में थे।''[1]

1.....مسلم، کتاب التفسیر، ص ۱۶۰۹، حدیث: ۵۔

بخاری، کتاب الایمان، باب زیادۃ الایمان ونقصانہ، ج ۱، ص ۲۸، حدیث: ۴۵۔

फ़ारूक़े आ'ज़म अ़हदे रिसालत में फ़ैसले किया करते थे

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि मुझ से अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया :

مَا يَمْنَعُكَ مِنَ الْقَضَاءِ وَقَدْ كَانَ اَبُوْكَ يَقْضِيْ عَلٰى عَهْدِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

''या'नी ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर ! तुम्हें लोगों के फ़ैसले करने से क्या चीज़ रोकती है ? तुम्हारे वालिद अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दौर में फ़ैसले किया करते थे।''

मैं ने अ़र्ज़ किया : ''हुज़ूर ! न मैं अपने वालिदे गिरामी की त़रह़ हूं और न ही आप रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रह़ हैं, मेरे वालिदे गिरामी पर जब किसी बात का फ़ैसला करना मुश्किल हो जाता तो वोह हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछ लेते और हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कोई इश्काल होता तो वोह सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام के वासित़े से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से पूछ लेते थे। और मुझे ओ़हदए क़ज़ा की बिल्कुल तमन्ना नहीं है। क्यूंकि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि :

مَنْ كَانَ قَاضِياً فَقَضٰى بِالْجَهْلِ كَانَ مِنْ اَهْلِ النَّارِ

وَمَنْ كَانَ قَاضِياً فَقَضٰى بِالْجَوْرِ كَانَ مِنْ اَهْلِ النَّارِ وَمَنْ كَانَ قَاضِياً عَالِماً يَقْضِيْ بِحَقٍّ اَوْ بِعَدْلٍ سَاَلَ التَّفَلُّتَ كَفَافاً

''या'नी जो क़ाज़ी जहालत के साथ फ़ैसला करेगा वोह जहन्नमी है और जो क़ाज़ी ज़ुल्मो ज़ियादती के साथ फ़ैसला करेगा वोह भी जहन्नमी है और जो क़ाज़ी आ़लिम हो और ह़क़ के साथ फ़ैसला करे या अ़द्लो इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करे तो उस ने बराबरी की बुन्याद पर जां बख़्शी का सुवाल किया।''

येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाने लगे : ''ऐ अ़ब्दुल्लाह ! येह ह़दीस हमारे क़ाज़ियों को न सुनाना, नहीं तो वोह मन्सबे क़ज़ा छोड़ देंगे और हमारे काम के न रहेंगे।''(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म और नबवी मदनी मुकालमे

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के तमाम इल्मी मुआ़मलात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़ैज़ान थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

(1) .....صحیح ابن حبان، کتاب القضاء، ذکر الزجر عن دخول المرء فی قضاء۔۔۔الخ، ج ۷، ص ۲۵۷، حدیث: ۵۰۳۴، ریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۳۳۵۔

ने बारगाहे रिसालत से कुरआनो ह़दीस की ता'लीम ह़ासिल की थी। बारगाहे रिसालत में बसा औक़ात कई इ़ल्मी मुकालमे भी हुवा करते थे जिन में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भरपूर शिर्कत फ़रमाया करते। ह़ुसूले बरकत के लिये सिर्फ़ दो मुकालमे पेशे ख़िदमत हैं :

फ़ारूक़े आ'ज़म और बारगाहे रिसालत की तीन महबूब चीजें

एक बार ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने अस्ह़ाब के साथ तशरीफ़ फ़रमा थे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मदनी मुकालमा शुरूअ़ फ़रमाया। सब से पहले खुद ही इरशाद फ़रमाया :

❁.....حُبِّبَ اِلَیَّ مِنْ دُنْیَاکُمْ ثَلَاثٌ اَلطِّیْبُ وَالنِّسَاءُ وَجُعِلَتْ قُرَّۃُ عَیْنِیْ فِی الصَّلٰوۃِ "या'नी मुझे तुम्हारी दुन्या में तीन चीज़ें पसन्द हैं, खुश्बू लगाना, बीवियां और नमाज़ मेरी आंखों की ठन्डक है।"

❁....."येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया :

❁.....صَدَقْتَ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ! وَحُبِّبَ اِلَیَّ مِنَ الدُّنْیَا ثَلَاثٌ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप ने सच फ़रमाया और मुझे भी दुन्या की तीन चीज़ें मह़बूब हैं।"

❁.....اَلنَّظْرُ اِلٰی وَجْہِ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ "और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रुख़े रौशन की ज़ियारत करना।"

❁.....وَاِنْفَاقُ مَالِیْ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ "और अपना माल दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका पर निछावर करना।"

❁.....وَاَنْ یَکُوْنَ اِبْنَتِیْ تَحْتَ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ "और अपनी बेटी को ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के निकाह़ में देना।"

❁.....येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे सिद्दीक़ी में अ़र्ज़ किया :

❁.....صَدَقْتَ یَا اَبَابَکْرٍ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ وَحُبِّبَ اِلَیَّ مِنَ الدُّنْیَا ثَلَاثٌ "या'नी ऐ सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! आप ने सच फ़रमाया और मुझे भी दुन्या की तीन चीज़ें मह़बूब हैं।"

❁.....اَلْاَمْرُ بِالْمَعْرُوْفِ "या'नी नेकी का हुक्म देना।" ❁.....وَالنَّھْیُ عَنِ الْمُنْکَرِ "और बुराई से मन्अ़ करना।" ❁.....وَالثَّوْبُ الْخَلَقُ "और पुराने कपड़े पहनना।"

.....येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे फ़ारूक़ी में अ़र्ज़ किया :

.....صَدَقْتَ یَا عُمَرُ وَ حُبِّبَ اِلَیَّ مِنَ الدُّنْیَا ثَلَاثٌ "या'नी ऐ फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ आप ने सच फ़रमाया और मुझे भी दुन्या की तीन चीज़ें मह़बूब हैं।"

.....اِشْبَاعُ الْجِیْعَانِ "या'नी भूके का पेट भरना।" .....وَ کِسْوَۃُ الْعُرْیَانِ "और नंगे को कपड़े पहनाना।" .....وَتِلَاوَۃُ الْقُرْآنِ "और कुरआने पाक की तिलावत करना।"

.....येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे उ़स्मानी में अ़र्ज़ किया :

.....صَدَقْتَ یَا عُثْمَانُ وَ حُبِّبَ اِلَیَّ مِنَ الدُّنْیَا ثَلَاثٌ "या'नी ऐ उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ! आप ने सच फ़रमाया और मुझे भी दुन्या की तीन चीज़ें मह़बूब हैं।"

.....اَلْخِدْمَۃُ لِلضَّیْفِ "या'नी मेहमान की ख़िदमत करना।" .....وَالصَّوْمُ فِی الصَّیْفِ "और गर्मियों में रोजे़ रखना।" .....وَالضَّرْبُ بِالسَّیْفِ "और तल्वार के साथ जिहाद करना।"

.....बारगाहे रिसालत के इस इ़ल्मी व रूह़ानी मदनी मुकालमे को सुन कर सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ करने लगे :

اَرْسَلَنِیَ اللّٰہُ تَبَارَکَ وَتَعَالٰی لِمَا سَمِعَ مَقَالَتَکُمْ وَاَمَرَکَ اَنْ تَسْاَلَنِیْ عَمَّا اُحِبُّ اِنْ کُنْتُ مِنَ الدُّنْیَا

"या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने आप ह़ज़रात का येह मदनी मुकालमा सुन कर आप के पास भेजा है ताकि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ से भी येह इस्तिफ़्सार फ़रमाएं कि अगर मैं दुन्या वालों में से होता तो मुझे कौन सी चीज़ें मह़बूब होतीं ?"

दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : مَا تُحِبُّ اِنْ کُنْتَ مِنْ اَھْلِ الدُّنْیَا "या'नी ऐ जिब्रील ! अगर तुम दुन्या वालों में से होते तो तुम्हें कौन सी चीज़ें मह़बूब होतीं।" अ़र्ज़ की :

.....اِرْشَادُ الضَّالِّیْنَ "या'नी राह भूलने वालों को राह दिखाना।" .....وَمُوَانَسَۃُ الْغُرَبَاءِ الْقَانِتِیْنَ "और फ़रमां बरदार अजनबियों से हमदर्दी करना।" .....وَمُعَاوَنَۃُ اَھْلِ الْعِیَالِ الْمُعْسِرِیْنَ "और तंगदस्तों की मदद करना।"

.....सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام फिर अ़र्ज़ गुज़ार हुवे :

يُحِبُّ رَبُّ الْعِزَّةِ جَلَّ جَلَالُهُ مِنْ عِبَادِهٖ ثَلَاثَ خِصَالٍ "या'नी अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُهُ को भी अपने बन्दों की तीन ख़स्लतें मह़बूब हैं।

.....بَذْلُ الْاِسْتِطَاعَةِ "या'नी (नेकियों के मुआ़मले में) अपनी त़ाक़त को ख़र्च करना।" .....وَالْبُكَاءُ عِنْدَالنَّدَامَةِ "और नदामत के वक़्त रोना।" .....وَالصَّبْرُ عِنْدَ الْفَاقَةِ "और फ़ाक़े की ह़ालत में सब्र करना।"(1)

फ़ारूके आ'ज़म और बारगाहे रिसालत की चार चीज़ें

.....एक बार हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने अस्ह़ाब के साथ तशरीफ़ फ़रमा थे, मदनी मुकालमा शुरूअ़ हो गया, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

.....اَلْكَوَاكِبُ اَمَانٌ لِاَهْلِ السَّمَاءِ فَاِذَا انْتَثَرَتْ كَانَ الْقَضَاءُ عَلٰى اَهْلِ السَّمَاءِ "या'नी सितारे आस्मान वालों के लिये अमान हैं जब येह झड़ जाएंगे तो तक़्दीर आस्मान वालों पर ग़ालिब आ जाएगी।"

.....وَاَهْلُ بَيْتِيْ اَمَانٌ لِاُمَّتِيْ فَاِذَا زَالَ اَهْلُ بَيْتِيْ كَانَ الْقَضَاءُ عَلٰى اُمَّتِيْ "या'नी मेरे अहले बैत मेरी उम्मत के लिये अमान हैं और जब येह दुन्या से चले जाएंगे तो मेरी उम्मत पर क़ज़ा ग़ालिब आ जाएगी।"

.....وَاَنَا اَمَانٌ لِاَصْحَابِيْ فَاِذَا ذَهَبْتُ كَانَ الْقَضَاءُ عَلٰى اَصْحَابِيْ "या'नी मैं ख़ुद अपने सह़ाबा के लिये अमान हूं और जब मैं इस दुन्या से चला जाऊंगा तो क़ज़ा मेरे सह़ाबा पर ग़ालिब आ जाएगी।"

.....وَالْجِبَالُ اَمَانٌ لِاَهْلِ الْاَرْضِ فَاِذَا ذَهَبَتْ كَانَ الْقَضَاءُ عَلٰى اَهْلِ الْاَرْضِ "या'नी पहाड़ ज़मीन वालों के लिये अमान हैं और जब येह पहाड़ ख़त्म हो जाएंगे तो क़ज़ा उन पर ग़ालिब आ जाएगी।"

.....ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया :

.....اَرْبَعَةٌ تَمَامُهَا بِاَرْبَعَةٍ "या'नी चार चीज़ें चार चीज़ों के साथ मुकम्मल होती हैं।" .....تَمَامُ الصَّلَاةِ بِسَجْدَتَيِ السَّهْوِ "नाक़िस नमाज़ सजदए सह्व के साथ मुकम्मल होती है।" .....وَالصَّوْمُ بِصَدَقَةِ الْفِطْرِ "और रोज़ा सदक़ए फ़ित्र के साथ मुकम्मल होता है।" .....وَالْحَجُّ بِالْهَدْيَةِ

1 ......المنبهات، ص ۲۷۔

''और ह़ज क़ुरबानी के साथ मुकम्मल होता है।'' ۞.....وَالْاِیْمَانُ بِالْجِهَادِ ''और ईमान जिहाद के साथ मुकम्मल होता है।''

.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

۞.....اَلْبُحُوْرُ اَرْبَعَةٌ ''या'नी समन्दर चार हैं।'' ۞.....اَلْهَوٰى بَحْرُ الذُّنُوْبِ ''ख़्वाहिशात गुनाहों का समन्दर हैं।'' ۞.....وَالنَّفْسُ بَحْرُ الشَّهَوَاتِ ''और नफ़्स शहवतों का समन्दर है।'' ۞.....وَالْمَوْتُ بَحْرُ الْاَعْمَارِ ''और मौत उ़म्रों का समन्दर है।'' ۞.....وَالْقَبْرُ بَحْرُ النَّدَامَاتِ ''और क़ब्र नदामतों का समन्दर है।''

.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

۞.....وَجَدْتُّ حَلَاوَةَ الْعِبَادَةِ فِىْ اَرْبَعَةِ اَشْيَاءِ ''या'नी इबादत की लज़्ज़त को मैं ने चार चीज़ों में पाया।'' ۞.....اَوَّلُهَا فِىْ اَدَاءِ فَرَائِضِ اللّٰهِ تَعَالٰى ''पहली **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़राइज़ की अदाएगी में।'' ۞.....وَالثَّانِىْ فِىْ اِجْتِنَابِ مَحَارِمِ اللّٰهِ تَعَالٰى ''दूसरी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा चीज़ों से बचने में।'' ۞.....وَالثَّالِثُ فِى الْاَمْرِ بِالْمَعْرُوْفِ ابْتِغَاءَ ثَوَابِ اللّٰهِ ''तीसरी ह़ुसूले सवाब की ख़ातिर नेकी का ह़ुक्म करने में।'' ۞.....وَالرَّابِعُ فِى النَّهْىِ عَنِ الْمُنْكَرِ اتِّقَاءَ غَضَبِ اللّٰهِ ''चौथी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब से डरते हुवे बुराई से मन्अ़ करने में।''

.....नीज़ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह भी इरशाद फ़रमाया :

۞.....اَرْبَعَةٌ ظَاهِرُهُنَّ فَضِيْلَةٌ وَبَاطِنُهُنَّ فَرِيْضَةٌ ''या'नी चार चीज़ें ऐसी हैं जिन का ज़ाहिर फ़ज़ीलत वाली बात है और बातिन फ़र्ज़ है।'' ۞.....مُخَالَطَةُ الصَّالِحِيْنَ فَضِيْلَةٌ وَالْاِقْتِدَاءُ بِهِمْ فَرِيْضَةٌ ''या'नी नेक लोगों से मिलते रहना फ़ज़ीलत वाली बात है लेकिन उन की इक़्तिदा करना फ़र्ज़ है।'' ۞.....وَتِلَاوَةُ الْقُرْاٰنِ فَضِيْلَةٌ وَالْعَمَلُ بِهٖ فَرِيْضَةٌ ''और क़ुरआने पाक की तिलावत करना फ़ज़ीलत की बात है लेकिन इस पर अ़मल करना फ़र्ज़ है।'' ۞.....وَزِيَارَةُ الْقُبُوْرِ فَضِيْلَةٌ وَالْاِسْتِعْدَادُ لَهَا فَرِيْضَةٌ ''और क़ब्रों की ज़ियारत करना फ़ज़ीलत वाली बात है लेकिन इस की तय्यारी करना फ़र्ज़ है।'' ۞.....وَعِيَادَةُ الْمَرِيْضِ فَضِيْلَةٌ وَاتِّخَاذُ الْوَصِيَّةِ مِنْهُ فَرِيْضَةٌ ''और मरीज़ की इयादत करना फ़ज़ीलत वाली बात है लेकिन इस की शरई वसिय्यत को पूरा करना फ़र्ज़ है।''

.....अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم) ने इरशाद फ़रमाया :

.....مَنِ اشْتَاقَ اِلَى الْجَنَّةِ سَارِعْ اِلَى الْخَيْرَاتِ "या'नी जिस ने जन्नत की ख़्वाहिश की, उस ने नेकियां करने में जल्दी की।" .....وَمَنِ اشْفَقَ مِنَ النَّارِ اِنْتَهٰى عَنِ الشَّهَوَاتِ "और जिस ने जहन्नम से नजात की ख़्वाहिश की, वोह शहवात से रुक गया।" .....وَمَنْ تَيَقَّنَ بِالْمَوْتِ اِنْهَدَمَتْ عَلَيْهِ اللَّذَّاتُ "और जिसे मौत का यक़ीन हो गया, उस की लज़्ज़तें ख़त्म हो गईं।" .....وَمَنْ عَرَفَ الدُّنْيَا هَانَتْ عَلَيْهِ الْمُصِيْبَاتُ "और जिस ने दुन्या की हक़ीक़त को पहचान लिया, उस पर मुसीबतें आसान हो गईं।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म की अस्हाबे कहफ़ से मुलाक़ात

एक दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अस्हाबे कहफ़ से मुलाक़ात की आरज़ू की तो उसी वक़्त हज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام नाज़िल हुवे और बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की, कि "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप उन्हें दुन्या में ज़ाहिरन नहीं देख पाएंगे, अलबत्ता अपने अकाबिर सहाबा में चार सहाबियों को उन के पास भेज दें ताकि वोह आप का पैग़ाम उन तक पहुंचाएं और उन्हें आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने की दा'वत दें।" नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ जिब्रील ! इस की क्या सूरत होगी ? मैं अपने सहाबा को उन के पास कैसे भेजूं और उन के पास जाने का हुक्म किस को दूं ?" सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऐसा करें आप अपनी चादर मुबारक को बिछाएं और एक त़रफ़ अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه, दूसरी त़रफ़ हज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه, तीसरी त़रफ़ हज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم) और चौथी त़रफ़ हज़रते अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को बिठा दीजिये। फिर उस हवा को बुलाएं जिसे अल्लाह तआ़ला ने हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के लिये मुसख़्ख़र फ़रमाया था, क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे हुक्म दिया है कि वोह आप की इत़ाअ़त करे आप उस हवा से इरशाद फ़रमाइये कि इन चारों सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم को उठाए और उस ग़ार तक ले जाए जहां अस्हाबे कहफ़ आराम फ़रमा हैं।"

चुनान्चे, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ऐसा ही फ़रमाया। तो हवा ने आप की चादर मुबारक को उठाया, चारों सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان उस पर आराम व सुकून से बैठे रहे देखते ही

(1).....المنبھات، ص۵۳ ماخوذاً۔

देखते वोह चादर आंखों से ओझल हो गई यहां तक कि अस्ह़ाबे कह्फ़ के ग़ार के पास हवा ने चादर को ज़मीन पर रख दिया। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने ग़ार के क़रीब पहुंच कर मुंह से पथ्थर हटाया जैसे ही रौशनी अन्दर पहुंची तो अस्ह़ाबे कह्फ़ के उस आ़शिक़ कुत्ते ने जो उन के साथ ही आराम कर रहा था हल्की सी आवाज़ निकाली, गोया उस ने ग़ार में दाख़िल होने वालों को बिग़ैर इजाज़त दाख़िले से ख़बरदार किया। ख़त़रे की बू सूंघ कर फ़ौरन ह़म्ला करने के लिये बाहर आया लेकिन जब औलियाउल्लाह के उस आ़शिक़ ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उन प्यारे उ़श्शाक़ को देखा तो उन के क़दमों के बोसे लेने लगा और बड़े प्यार से अपनी दुम हिलाने लगा और फिर सर के इशारे से अन्दर आने को कहा। चारों सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ग़ार के अन्दर गए और सोए हुवे अस्ह़ाबे कह्फ़ को यूं सलाम किया : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُه

अल्लाह तआ़ला ने अपने करम से अस्ह़ाबे कह्फ़ को बेदार फ़रमाया और उन्हों ने भी जवाबन सलाम किया। चारों सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अपना तआ़रुफ़ करवाया और फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे नबी ह़ज़रते मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप लोगों को सलाम इरशाद फ़रमाया है।" उन्हों ने कहा : "हमारी त़रफ़ से भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर जब तक ज़मीनो आस्मान हैं सलामती नाज़िल हो और आप सब पर भी।" फिर सब लोग बैठ कर बातें करते रहे। अस्ह़ाबे कह्फ़ सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान ले आए और दीने इस्लाम को क़बूल किया और अ़र्ज़ किया कि : "हमारी त़रफ़ से प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में सलाम पेश कीजियेगा।" फिर वोह अपनी अपनी जगहों पर दोबारा लैट गए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन पर ह़ज़रते इमाम मेहदी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के ज़ाहिर होने तक नींद त़ारी फ़रमा दी। कहा जाता है कि ह़ज़रते इमाम मेहदी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जब ज़ुहूर फ़रमाएंगे तो उन्हें सलाम करेंगे और एक बार फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन को बेदार फ़रमाएगा और इस के बा'द क़ियामत तक के लिये सो जाएंगे। बहर ह़ाल चारों सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان चादर पर अपनी अपनी जगह दोबारा बैठ गए और हवा उन्हें बारगाहे रिसालत में पहुंचाने के लिये चादर को ले कर चल पड़ी।

उधर ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास ह़ाज़िर हो गए और उन चारों सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के साथ जो हुवा सब कुछ बयान कर दिया। और जब

चारों सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे तो सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से इस्तिफ़्सार किया कि "अस्ह़ाबे कह्फ़ से मुलाक़ात कैसी रही और उन्हों ने क्या कहा ?" अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम ने उन्हें सलाम किया, उन्हों ने जवाब दिया, फिर हम ने उन्हें दीने इस्लाम की दा'वत दी तो उन्हों ने इसे क़बूल किया और दीने इस्लाम में दाख़िल हो गए और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना बयान की। या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन्हों ने आप को सलाम भी अ़र्ज़ किया है।" येह सुन कर नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बहुत खु़श हुवे और दुआ़ के लिये हाथ उठा दिये और बारगाहे इलाही में यूं दुआ़ फ़रमाई : "या इलाहल आ़लमीन ! मेरे, मेरे रिश्तेदारों, मेरे दोस्तों, मेरे भाइयों, मेरे मुह़िब्बीन के माबैन कभी जुदाई न डालना और जो मुझ से मह़ब्बत करता है, मेरे अहले बैत से मह़ब्बत करता है, उन का ह़ामी है, और जो मेरे अस्ह़ाब से मह़ब्बत करता है उन सब की मग़्फ़िरत फ़रमा।"(1)

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म और सय्यिदुना उवैसे क़रनी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना उवैसे क़रनी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग हैं, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को क़ुतुब और अब्दालों के सरदारों में शुमार किया जाता है। अगर्चे आप ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़मानए मुबारका पाया है लेकिन चूंकि ज़ियारत से मुशर्रफ़ न हुवे इस लिये शरफ़े सह़ाबिय्यत को न पाया। अलबत्ता अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से आप की मुलाक़ात साबित है, येही वज्ह है कि आप ताबेई के दरजे पर फ़ाइज़ हुवे। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه वोह ताबेई बुज़ुर्ग हैं जिन का तज़्किरा बारगाहे रिसालत में हुवा करता था। चुनान्चे, हु़सूले बरकत के लिये आप के फ़ज़ाइल पर तीन अह़ादीस पेशे ख़िदमत हैं :

﴾1﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी लैला رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه एक शामी बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना : اِنَّ خَيْرَ التَّابِعِيْنَ رَجُلٌ يُقَالُ لَهٗ اُوَيْس "या'नी बेशक ताबेई़न में से सब से अफ़्ज़ल ताबेई वोह है जिसे उवैस के नाम से याद किया जाएगा।"(2)

---

(1) ......روح البيان، پ ١٥، الكهف، تحت الآية: ٢١، ج ٥، ص ٢٢٣، انوار آفتاب صداقت، ج ٢، ص ١٩٨، फ़ैज़ाने सिद्दीके़ अक्बर, स. 612

(2) ......مسلم، كتاب الفضائل، باب من فضائل اويس القرنى، ص ١٣٧٥، حديث: ٢٢٤ مختصرا۔

﴾2﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सल्लाम बिन मिस्कीन رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : خَلِيْلِىْ مِنْ هٰذِهِ الْاُمَّةِ اُوَيْسُ الْقَرَنِىْ "या'नी इस उम्मत में मेरे ख़लील (दोस्त) उवैसे क़रनी हैं।"(1)

﴾3﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : سَيَكُوْنُ فِيْ اُمَّتِيْ رَجُلٌ يُقَالُ لَهٗ اُوَيْسُ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ الْقَرَنِيْ وَاِنَّ شَفَاعَتَهٗ فِيْ اُمَّتِيْ مِثْلَ رَبِيْعَةَ وَمُضَرَ "या'नी मेरी उम्मत में एक शख़्स होगा जिस का नाम उवैस बिन अ़ब्दुल्लाह क़रनी होगा, बेशक उस की शफ़ाअ़त मेरी उम्मत के ह़क़ में क़बीलए रबीआ़ और क़बीलए मुज़र के अफ़राद से भी ज़ियादा होगी।"(2)

उवैसे क़रनी के बारे में रसूलुल्लाह की ग़ैबी ख़बर

﴾1﴿.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया :

.....يَا عُمَرُ! يَكُوْنُ فِيْ اُمَّتِيْ فِيْ آخِرِ النَّاسِ رَجُلٌ يُقَالُ لَهٗ اُوَيْسُ الْقَرَنِيْ "या'नी ऐ उ़मर ! मेरी उम्मत के आख़िरी लोगों में एक शख़्स होगा जिसे उवैसे क़रनी कहा जाएगा।"

.....فَيُصِيْبُهٗ بَلَاءٌ فِيْ جَسَدِهٖ فَيَدْعُوْ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ فَيَذْهَبُ بِهٖ اِلَّا لُمْعَةٌ فِيْ جَنْبِهٖ اِذَا رَآهَا ذَكَرَ اللّٰهَ "या'नी उस के जिस्म में एक बीमारी लाहिक़ होगी तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उस के बारे में दुआ़ करेगा तो वोह बीमारी दूर हो जाएगी सिवाए उस के पहलू में एक छोटे से निशान के कि वोह जब भी उसे देखेगा तो रब तआ़ला को याद करेगा।"

.....فَاِذَا رَأَيْتَهٗ فَاَقْرِئْهُ مِنِّيْ السَّلَامَ وَاْمُرْهُ اَنْ يَدْعُوَ لَكَ، فَاِنَّهٗ كَرِيْمٌ عَلٰى رَبِّهٖ بَارٌّ بِوَالِدَتِهٖ "या'नी ऐ उ़मर ! जब तुम्हारी उस से मुलाक़ात हो तो उसे मेरा सलाम कहना और उसे कहना कि वोह तुम्हारे लिये दुआ़ करे क्यूंकि वोह अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बहुत इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत वाला है और अपनी वालिदा के साथ बहुत नेकी करने वाला है।"

---

1 ......طبقات کبری، بقیۃ طبقۃ من روی ـــ الخ، ج۶، ص۲۰۵، الرقم:۲۰۷۶۔

2 ......جمع الجوامع، حرف السین، ج۵، ص۱۵، حدیث:۱۳۰۸۴۔

.....لَوْ يُقْسِمُ عَلَى اللّٰهِ لَاَبَرَّهُ يَشْفَعُ لِمِثْلِ رَبِيْعَةَ وَمُضَرَ ''या'नी अगर वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम उठा ले तो रब عَزَّوَجَلَّ उसे ज़रूर पूरा फ़रमाता है और वोह मेरी उम्मत की क़बीलए रबीआ़ और मुज़र के बराबर शफ़ाअ़त करेगा।''(1)

﴾2﴿.....एक रिवायत में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ही रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

سَيَقْدِمُ عَلَيْكُمْ رَجُلٌ يُقَالُ لَهُ اُوَيْسٌ كَانَ بِهِ بَيَاضٌ فَدَعَا اللّٰهَ لَهُ فَاَذْهَبَهُ اللّٰهُ فَمَنْ لَقِيَهُ مِنْكُمْ فَمُرُوْهُ فَلْيَسْتَغْفِرْ لَهُ

''या'नी अ़न क़रीब तुम्हारे पास एक ऐसा शख़्स आएगा जिसे लोग उवैस के नाम से याद करेंगे, उस के जिस्म पर सफ़ेद दाग़ होंगे फिर वोह रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ करेगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें दूर फ़रमा देगा, पस तुम में से जो कोई उस से मुलाक़ात करे तो उस से अपने लिये दुआ़ए मग़फ़िरत ज़रूर करवाए।''(2)

﴾3﴿.....एक रिवायत में यूं है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ही रिवायत है कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

يَاْتِيْ عَلَيْكُمْ اُوَيْسُ بْنُ عَامِرٍ مَعَ اَمْدَادِ اَهْلِ الْيَمَنِ مِنْ مُرَادٍ ثُمَّ مِنْ قَرَنٍ كَانَ بِهٖ بَرَصٌ فَبَرِئَ مِنْهُ اِلَّا مَوْضِعَ دِرْهَمٍ
لَهُ وَالِدَةٌ هُوَ بِهَا بَرٌّ لَوْ اَقْسَمَ عَلَى اللّٰهِ لَاَبَرَّهُ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ يَسْتَغْفِرَ لَكَ فَافْعَلْ

''या'नी तुम्हारे पास उवैस बिन आ़मिर यमनी मददगार फ़ौज के साथ आएंगे और वोह मुराद क़बीले से हैं और क़रन के अ़लाक़े से तअ़ल्लुक़ रखते हैं, उन के जिस्म पर बरस या'नी सफ़ेद दाग़ हैं फिर उन्हें उस से नजात दे दी जाएगी सिवाए एक दिरहम की जगह के बराबर। उन की वालिदा भी हैं जिस के साथ वोह बहुत नेक सुलूक करने वाले हैं, अगर वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम उठा लें तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ज़रूर पूरा फ़रमाएगा, पस ऐ उ़मर ! अगर तुम उन से दुआ़ए मग़फ़िरत करवा सको तो ज़रूर करवाना।''(3)

---

1 ......جمع الجوامع، حرف الياء، ج ۹، ص ۱۲۱، حديث: ۲۷۹۲۹۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الفضائل، ما ذکر فی اویس القرنی، ج ۷، ص ۵۳۹، حديث: ۲۔

3 ......مسلم، کتاب الفضائل، باب من فضائل اویس القرنی، ص ۱۳۷۶، حديث: ۲۲۵۔

फ़ारूक़े आ'ज़म की सय्यिदुना उवैसे क़रनी से मुलाक़ात

चूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को ह़ज़रते सय्यिदुना उवैसे क़रनी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के बारे में ग़ैबी ख़बर दे दी थी, इस लिये आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه उन की तलाश में रहते और जब भी क़ाफ़िले आते ख़ुसूसन यमन के क़ाफ़िले तो आप उन से ज़रूर पूछते। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना उसैर बिन जाबिर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के पास जब अहले यमन में से कोई इमदाद ले कर आता तो वोह उन से सुवाल करते कि क्या तुम में उवैस बिन आ़मिर है? यहां तक कि एक दिन सय्यिदुना उवैसे क़रनी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه उन के पास पहुंच गए। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه और उन के दरमियान यूं मुकालमा हुवा :

.....**सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म :** اَنْتَ اُوَيْسُ بْنُ عَامِرٍ "या'नी आप ही उवैस बिन आ़मिर हैं।

.....**सय्यिदुना उवैसे क़रनी :** نَعَمْ "या'नी जी हां! मैं ही उवैस बिन आ़मिर हूं?"

.....**सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म :** مِنْ مُرَادٍ ثُمَّ مِنْ قَرَنٍ "क्या आप क़बीलए मुराद से हैं, फिर क़रन से?"

.....**सय्यिदुना उवैसे क़रनी :** نَعَمْ "जी हां! ऐसा ही है।"

.....**सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म :** فَكَانَ بِكَ بَرَصٌ فَبَرَأْتَ مِنْهُ اِلَّا مَوْضِعَ دِرْهَمٍ "या'नी आप के जिस्म पर बरस के निशान थे फिर आप को उन से नजात मिल गई बस एक दिरहम के बराबर निशान बाक़ी है।"

.....**सय्यिदुना उवैसे क़रनी :** نَعَمْ "जी हां! ऐसा ही है।"

.....**सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म :** لَكَ وَالِدَةٌ "या'नी आप की वालिदा भी हैं?"

.....**सय्यिदुना उवैसे क़रनी :** نَعَمْ "जी हां! बिल्कुल हैं।"

इस के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के बारे में जो ग़ैबी ख़बर दी थी वोह तफ़्सील से सुनाई कि मैं ने हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से येह सुना है कि "अहले यमन की इमदाद के साथ तुम्हारे पास क़बीलए मुराद से क़रन का एक शख़्स

आएगा जिस का नाम उवैस बिन आ़मिर होगा, उस को बरस की बीमारी होगी और फिर एक दिरहम की मिक्दार के इलावा बाक़ी सब ठीक हो जाएगी, क़रन में उस की वालिदा है जिस के साथ वोह बहुत नेकी वाला सुलूक करता होगा, अगर वोह किसी चीज़ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम उठा ले तो **अल्लाह** तआ़ला भी उस को ज़रूर पूरा फ़रमाएगा, अगर तुम से हो सके तो उस से मग़्फ़िरत की दुआ़ करवाना।" लिहाज़ा अब आप मेरे लिये मग़्फ़िरत की दुआ़ फ़रमाइये। येह सुन कर सय्यिदुना उवैसे क़रनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत की।

.....**सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म :** **اَيْنَ تُرِيْدُ** "या'नी अब आप का कहां का इरादा है?"

.....**सय्यिदुना उवैसे क़रनी :** **اَلْكُوْفَةَ** "या'नी मैं कूफ़ा जाऊंगा।"

.....**सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म :** **اَلَا اَكْتُبُ لَكَ اِلٰى عَامِلِهَا** "मैं कूफ़ा के गवर्नर को आप के बारे में एक मक्तूब न लिख दूं ताकि आप को वहां कोई तक्लीफ़ न हो।"

.....**सय्यिदुना उवैसे क़रनी :** **اَكُوْنُ فِيْ غَبْرَاءِ النَّاسِ اَحَبُّ اِلَيَّ** "या'नी ख़ाक नशीं लोगों में रहना मुझे पसन्द है।"

जब दूसरा साल आया तो कूफ़ा के अशराफ़ में से एक शख़्स आया और उस ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मुलाक़ात की, तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस से सय्यिदुना उवैसे क़रनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मुतअ़ल्लिक़ पूछा, उस ने कहा : **تَرَكْتُهُ رَثَّ الْبَيْتِ قَلِيْلَ الْمَتَاعِ** "मैं जब उन के पास से आया तो उस वक़्त वोह एक ख़स्ता हा़लत वाले घर में थोड़े से ज़रूरी सामान के साथ रह रहे थे।" फिर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उसे भी रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सय्यिदुना उवैसे क़रनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीली ह़दीस सुनाई। फिर वोह शख़्स जब सय्यिदुना उवैसे क़रनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास दोबारा गया तो उन से अ़र्ज़ किया कि मेरे लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत कर दीजिये। उन्हों ने जवाबन इरशाद फ़रमाया कि तुम एक अच्छे सफ़र से आ रहे हो तुम मेरे लिये दुआ़ करो लेकिन उस शख़्स ने दोबारा आप ही को दुआ़ के लिये कहा तो उन्हों ने फ़ौरन अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का तज़किरा करते हुवे इरशाद फ़रमाया : **لَقِيْتَ عُمَرَ** "क्या तुम अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मुलाक़ात कर के आए हो?" उस ने अ़र्ज़ किया : "जी हां।" फिर सय्यिदुना उवैसे क़रनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

ने उन के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत फ़रमाई । इस वाक़िए़ के बा'द लोगों को सय्यिदुना उवैसे क़रनी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के मक़ामो मर्तबे का इ़ल्म हुवा ।(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म उवैसे क़रनी को हर साल तलाश करते

बा'ज़ रिवायात में यूं भी आया है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ इरशाद फ़रमाते हैं कि जब से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे उवैसे क़रनी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के बारे में इरशाद फ़रमाया था तब से मैं अ़ह्दे रिसालत में भी आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को ढूंडता रहा लेकिन वोह न मिले । फिर ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ के अ़ह्दे ख़िलाफ़त में भी उन्हें बहुत तलाश किया लेकिन वोह न मिले । फिर अपने ही अ़ह्दे ख़िलाफ़त में जब दीगर अ़लाक़ों के वुफ़ूद आए तो मैं उन में आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को तलाश करता रहा बिल आख़िर एक वफ़्द में आप मुझे मिल गए । मैं ने उन से कहा : يَا عَبۡدَ اللّٰہِ اَنۡتَ اُوَیۡسُ الۡقَرَنِیُّ "या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! क्या आप ही उवैसे क़रनी हैं ?" उन्हों ने कहा : "जी हां ! मैं ही उवैसे क़रनी हूं ।" मैं ने कहा : فَاِنَّ رَسُوۡلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ یَقۡرَاُ عَلَیۡکَ السَّلَامَ "या'नी बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को सलाम इरशाद फ़रमाया है ।" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : عَلٰی رَسُوۡلِ اللّٰہِ السَّلَامُ وَعَلَیۡکَ یَا اَمِیۡرَ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ "या'नी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को भी मेरा सलाम हो और ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप पर भी सलामती नाज़िल हो ।" सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ इरशाद फ़रमाते हैं कि फिर मैं ने उन्हें दुआ़ की दरख़्वास्त की । बा'दे अज़ां हर साल हमारी मुलाक़ात होती वोह मुझे अपनी ख़ैर ख़ैरिय्यत से आगाह करते और मैं उन्हें अपने बारे में आगाह करता ।(2)

इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल

.....**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان के सामने मदीनए मुनव्वरा में बैठ कर यमन में मुक़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना उवैसे क़रनी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के मुतअ़ल्लिक़ ग़ैब की ख़बर दी, नीज़ येह भी इरशाद फ़रमाया कि वोह यमन की इमदाद के साथ आएंगे ।

---

1 ......مسلم، کتاب الفضائل، باب من فضائل اویس القرنی، ص ۱۳۷۵، حدیث: ۲۲۵۔
2 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۹، ص ۴۳۱۔

.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो ग़ैबी ख़बर दी थी वोह بِحَمْدِ اللّٰہِ تَعَالٰی पूरी हुई और सय्यिदुना उवैसे क़रनी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वाक़ेई यमनी मददगार फ़ौज के साथ तशरीफ़ लाए और फ़ारूके आ'ज़म से मुलाक़ात की।

.....येह भी मा'लूम हुवा कि सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का भी येह पुख़्ता अक़ीदा था कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो ग़ैबी ख़बर दी है वोह पूरी हो कर ही रहेगी, जभी तो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अह्दे रिसालत व अह्दे सिद्दीक़ी दोनों में सय्यिदुना उवैसे क़रनी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को तलाश करते रहे और बिल आख़िर अपने ही अह्दे ख़िलाफ़त में उन से मुलाक़ात की तरकीब बन गई।

.....अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अह्दे रिसालत में भी सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ में अपनी ज़िन्दगी गुज़ारते थे और बा'द में भी आप की येही आ़दते मुबारका रही, येही वज्ह है कि जब हज़रते सय्यिदुना उवैसे क़रनी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मुलाक़ात हुई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म की इत्तिबाअ़ करते हुवे उन से दुआ़ए मग़फ़िरत की दरख़्वास्त की।

.....येह भी मा'लूम हुवा कि बुज़ुर्गों से दुआ़ए मग़फ़िरत करवाने का हुक्म ख़ुद नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दिया। नीज़ बुज़ुर्गों से दुआ़ करवाना सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से साबित है।

.....उ़लमाए किराम ने इस बात की तसरीह फ़रमाई है, नीज़ अहादीसे मुबारका से भी येह वाज़ेह होता है कि सय्यिदुना उवैसे क़रनी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपनी वालिदए माजिदा की बहुत ख़िदमत किया करते थे, इसी वज्ह से आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ और बारगाहे रिसालत से येह मक़ामो मर्तबा मिला कि अगर्चे आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सहाबी नहीं लेकिन बारगाहे रिसालत में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का ज़िक्रे ख़ैर होता था।

.....अपनी वालिदा की ख़िदमत की वज्ह से सय्यिदुना उवैसे क़रनी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत न कर सके। चुनान्चे, मन्क़ूल है कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक बार अपनी वालिदा से बारगाहे रिसालत में हाज़िरी की इजाज़त तलब की, वालिदा ने इजाज़त तो दे दी लेकिन साथ ही येह भी कहा कि : ''बेटा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दरे दौलत पर मौजूद न हों तो

वापस आ जाना।" आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ यमन से सफ़र कर के जब मदीनए मुनव्वरा पहुंचे तो मा'लूम हुवा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो अपने काशानए अक़्दस पर तशरीफ़ फ़रमा नहीं हैं। फ़ौरन वालिदा की बात याद आई और वापसी का सफ़र शुरूअ़ कर दिया। यूं वालिदए माजिदा की इताअ़त में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत न हो सकी। जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दरे दौलत पर तशरीफ़ लाए तो सय्यिदुना उवैसे क़रनी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के नूर को मुलाह़ज़ा फ़रमा लिया और इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि "यहां कोई आया था ?" अ़र्ज़ की गई : "जी ! यमन से उवैस नामी शख़्स आए थे और आप को सलाम अ़र्ज़ कर गए हैं।" फ़रमाया : "येह नूर उवैस ही का है जिसे वोह बतौरे हदिय्या छोड़ गए हैं।"

येह भी मन्क़ूल है कि जब सय्यिदुना उवैसे क़रनी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की काशानए नबुव्वत पर ज़ियारत न की तो उम्मुल मोमिनीन सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से इस्तिफ़्सार किया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कब तशरीफ़ लाएंगे ?" फ़रमाया : "शायद ज़ोहर तक तशरीफ़ ले आएं।" अ़र्ज़ किया : "आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मेरा सलाम अ़र्ज़ कर दीजियेगा।" जब ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दरे दौलत पर तशरीफ़ लाए तो सय्यिदुना उवैसे क़रनी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के नूर को मुलाह़ज़ा फ़रमा लिया और उम्मुल मोमिनीन सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से इस्तिफ़्सार फ़रमाया। अ़र्ज़ किया : "जी ! यमन से उवैस नामी शख़्स आए थे और आप को सलाम अ़र्ज़ कर गए हैं।" फ़रमाया : "येह नूर उवैस ही का है जिसे वोह बतौरे हदिय्या छोड़ गए हैं।"(1)

.....ह़ज़रते सय्यिदुना उवैसे क़रनी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की येह शान भी ज़ाहिर हुई की आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मुस्तजाबुद्दा'वात थे, नीज़ आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की येह शान थी कि अगर किसी बात पर क़सम उठा लेते तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ज़रूर पूरा फ़रमाता था। मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वलियों को बुलन्द दरजात रब عَزَّوَجَلَّ ही की बारगाह से मिलते हैं, रब عَزَّوَجَلَّ ही की अ़त़ा होते हैं, इन्हें बयान करना शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से साबित और इन को तस्लीम करना सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की सुन्नते मुबारका है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

(1).....ख़्वाजा उवैसे क़रनी सहाबी या ताबेई ?, स. 23, ज़िक्रे उवैस, स. 68।

छटा बाब

फ़ारूक़े आ'ज़म का क़बूले इस्लाम

इस बाब में मुलाहज़ा कीजिये........

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़बूले इस्लाम में मुआ़विन चन्द वाक़िआ़त

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़बूले इस्लाम के चन्द वाक़िआ़त

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़बूले इस्लाम का सबबे ह़क़ीक़ी

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुव्वते ईमानी और दज्जाल

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इज़्हार व ए'लाने इस्लाम

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इज़्हारे इस्लाम का अनोखा अन्दाज़

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़बूले इस्लाम से तक़्विय्यते इस्लाम

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ पर इस्लाम क़बूल करने वाले ह़ज़रात

....

फ़ारूके़ आ'ज़म का क़बूले इस्लाम

एक अहम वज़ाहत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़बूले इस्लाम के मुख़्तलिफ़ वाक़िआ़त कुतुब में मिलते हैं, इन तमाम वाक़िआ़त में कोई तज़ाद नहीं। मश्हूर वाक़िआ़ वोही है जिस में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ शहीद करने के इरादे से निकले और अपनी बहन व बहनोई के घर चले गए और बिल आख़िर दारे अरक़म में जा कर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की मौजूदगी में क़बूले इस्लाम कर लिया। अलबत्ता क़बूले इस्लाम से क़ब्ल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ दीगर कई ऐसे वाक़िआ़त पेश आए जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़बूले इस्लाम में मुआ़विन साबित हुवे और इस्लाम की मह़ब्बत आप के दिल में घर कर गई नीज़ वोही वाक़िआ़त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़बूले इस्लाम का मुह़र्रिक भी बने। ऐसे ही चन्द वाक़िआ़त पेशे ख़िदमत हैं।

क़बूले इस्लाम में मुआ़विन चन्द वाक़िआ़त

﴾1﴿.....इस्लाम की मह़ब्बत दिल में बैठ गई

ह़ज़रते सय्यिदुना शुरैह़ बिन उ़बैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने इस्लाम लाने का वाक़िआ़ बयान करते हुवे ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं कि : मैं इस्लाम लाने से क़ब्ल एक बार ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ईज़ा पहुंचाने के इरादे से बाहर निकला तो मैं ने देखा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ से पहले ही मस्जिदे ह़राम में पहुंच कर नमाज़ में मसरूफ़ हो चुके हैं। मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे खड़ा हो गया। आप ने ''सूरतुल ह़ाक़्क़ह'' की तिलावत शुरूअ़ की तो मैं कुरआने करीम सुन कर दंग रह गया और सोचने लगा कि कुरैश सच कहते हैं येह वाके़ई शाइ़र हैं। अभी मैं येह सोच ही रहा था कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सूरतुल ह़ाक़्क़ह'' की येह दो आयतें पढ़ीं : ﴿اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِیْمٍ ۚۙ(۴۰) وَّ مَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ؕ قَلِیْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ۙ(۴۱)﴾ (پ۲۹، الحاقة: ۴۰، ۴۱)
''**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ''बेशक येह कुरआन एक करम वाले रसूल से बातें हैं, और वोह किसी शाइ़र की बात नहीं कितना कम यक़ीन रखते हो।) मैं ने सोचा येह शाइ़र नहीं बल्कि काहिन लगते हैं।

(क्यूंकि इधर मेरे दिल में ख़याल आया कि येह शाइ़र हैं उधर उन्हों ने इस की नफ़ी कर दी, और तअ़ज्जुब की बात येह कि मेरे दिल की बात जान ली।) अभी मैं येह सोच ही रहा था कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने "सूरतुल ह़ाक़्क़ह" की येह दो आयतें पढ़ीं :

﴿ وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۝٤٢ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٤٣ ﴾ (پ ۲۹، الحاقة: ۴۲، ۴۳)

(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और न किसी काहिन की बात कितना कम ध्यान करते हो, उस ने उतारा है जो सारे जहान का रब है।" बस येह सुनना था कि मेरे दिल में इस्लाम की मह़ब्बत बैठ गई।[1]

﴾2﴿.....बछड़े का नबिय्ये करीम की रिसालत की शहादत देना

अबू जह्ल लईन ने ए'लान किया कि ऐ क़बीलए क़ुरैश ! मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह हमारे दीन को बात़िल और हमारे मा'बूदों को मर्दूद ठहराता है जो आदमी उसे (مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ) क़त्ल कर दे मैं उसे एक सौ सुर्ख़ या सियाह ऊंटनियां और एक हज़ार ऊक़िया चांदी जिस का हर ऊक़िया चालीस दिरहम का होगा बत़ौरे इन्आ़म दूंगा। येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ नंगी तल्वार लिये सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ शहीद करने के इरादे से निकले, रास्ते में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने देखा कि कुछ लोग एक बछड़े को ज़ब्ह़ करने का इरादा किये हुवे हैं, बछड़े के मुंह से येह सदा बुलन्द हुई : "ऐ आले ज़रीह़ ! एक आदमी पुकार पुकार कर لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللہِ की शहादत की दा'वत दे रहा है।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ येह सुन कर गहरी सोच में पड़ गए और इस्लाम आप के दिल में दाख़िल हो गया।[2]

﴾3﴿.....बकरी का नबिय्ये करीम की रिसालत की गवाही देना

इस बछड़े का कलाम सुन कर जब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ आगे बढ़े तो एक बकरी को चरते हुवे देखा उस के पास हातिफ़े ग़ैबी की आवाज़ सुनी जो ऐसे अश्आ़र पढ़ रहा था जिन में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नबुव्वत की बह़्स थी। चन्द अश्आ़र और इन का तर्जमा पेशे ख़िदमत है :

---

1 .....مسند امام احمد، مسند عمر بن الخطاب، ج ۱، ص ۴۸، حدیث: ۱۰۷۔

2 .....شرح زرقانی علی المواهب، اسلام الفاروق، ج ۲، ص ۱۰ ملتقطا۔

قَدْ لَاحَ لِلنَّاظِرِ مِنْ تِهَامِ ...... وَ قَدْ بَدَا لِلنَّاظِرِ الشَّامِ

तर्जमा : ''यक़ीनन तिहामा और शाम के रहने वालों पर येह बात वाज़ेह़ हो चुकी है (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही) सच्चे नबी और सारी मख़्लूक़ के सरदार हैं।''

مُحَمَّدٌ ذُو الْبِرِّ وَ الْاِکْرَامِ ...... اَکْرَمَهُ الرَّحْمٰنُ مِنْ اِمَامِ

तर्जमा : ''मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ात तो इतनी मुकर्रम व मोह़तरम है कि रह़मान عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें इमाम का लक़ब अ़ता फ़रमा कर इकराम अ़ता फ़रमाया है।''

یَاْمُرُ بِالصَّلَاةِ وَالصِّیَامِ ...... قَدْ جَاءَ بَعْدَ الشِّرْکِ بِالْاِسْلَامِ

तर्जमा : ''आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ और रोज़े का हुक्म इरशाद फ़रमाते हैं, क्यूंकि आप शिर्क के मुक़ाबिल इस्लाम को ले कर आए हैं।''

وَیَزْجُرُ النَّاسَ عَنِ الْآثَامِ ...... وَالْبِرِّ وَالصِّلَاتِ لِلْاَرْحَامِ

तर्जमा : ''आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नेकी और सिलए रेह़मी का हुक्म इरशाद फ़रमाते हैं और लोगों को बुतों की पूजा से रोकते हैं।''

इन अश्आ़र को सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस्लाम के साथ मह़ब्बत में मज़ीद इज़ाफ़ा हो गया।(1)

﴾4﴿....."ज़िमार" नामी बुत का नबिय्ये करीम की रिसालत की शहादत देना

जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बछड़े और बकरी से आगे निकले तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का गुज़र ''ज़िमार'' पर से हुवा येह एक बुत का नाम है कुफ़्फ़ार उस की परस्तिश करते थे आप ने उस बुत से अश्आ़र सुने जिन में ईमान पर शौक़ दिलाया गया था और सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को शहीद करने पर डराया गया था। वोह चार अश्आ़र दर्जे ज़ैल हैं :

اَوْدَى الضِّمَارُ وَكَانَ يُعْبَدُ مُدَّةً ...... قَبْلَ الْكِتَابِ وَقَبْلَ بَعْثِ مُحَمَّدٍ

---

(1)......شرح زرقانی علی المواهب، اسلام الفاروق، ج ۲، ص ۱۰ ملتقطاً۔

तर्जमा : ''ज़िमार (बुत) बरबाद हो गया हा़लांकि इस की उस वक़्त से इ़बादत की जा रही थी जब कि कु़रआने मजीद अभी नाज़िल न हुवा था और ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बिअ़्सत भी न हुई थी।''

اِنَّ الَّذِیْ وَرِثَ النُّبُوَّۃَ وَالْھُدٰی ...... بَعْدَ ابْنِ مَرْیَمَ مِنْ قُرَیْشٍ مُّھْتَدِیْ

तर्जमा : ''ह़ज़रते सय्यिदुना ई़सा बिन मरयम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द जो नबुव्वत और हिदायत का अब वारिस है वोह क़बीलए कु़रैश का हिदायत देने वाला एक शख़्स है।''

سَيَقُوْلُ مَنْ عَبَدَ الضِّمَارَ وَمِثْلَهٗ ...... لَيْتَ الضِّمَارَ وَمِثْلَهٗ لَمْ يُعْبَدُ

तर्जमा : ''वोह दिन दूर नहीं जब ज़िमार और इस की मानिन्द दीगर बुतों की परस्तिश करने वाले कह उठेंगे कि काश ! ज़िमार और दीगर बुतों की इ़बादत न की जाती।''

وَاصْبِرْ اَبَا حَفْصٍ فَاِنَّكَ آمِرٌ ...... يَّاْتِيْكَ عِزٌّ غَيْرُ عِزِّ بَنِيْ عَدِيْ

तर्जमा : ''ऐ अबू ह़फ़्स ! अपने मौजूदा इरादे से हाथ रोक ले, तुझे हुकूमत मिलेगी और बनू अ़दी की दी हुई मौजूदा इ़ज़्ज़त के इ़लावा भी तुझे बड़ी इ़ज़्ज़त नसीब होगी।''

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब बुत के येह अश्आ़र सुने तो आप के तअ़ज्जुब में मज़ीद इज़ाफ़ा हो गया और इस्लाम की मह़ब्बत आप के दिल में और ज़ियादा हो गई।(1)

﴾5﴿.....फ़ारूके़ आ'ज़म और एक ख़ौफ़नाक चीख़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़बूले इस्लाम में मुआ़वनत का एक और वाक़िआ़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने खु़द ही बयान फ़रमाया कि एक बार मैं बुतख़ाने में बुतों के क़रीब सोया हुवा था कि एक शख़्स बुतों के चढ़ावे के लिये एक बछड़ा लाया और उसे ज़ब्ह़ कर दिया। अचानक एक ज़ोरदार और ख़ौफ़नाक चीख़ सुनाई दी लेकिन मुझे मा'लूम न था कि वोह चीख़ने वाला कौन है। कोई कह रहा था : يَا جَلِيحُ اَمْرٌ نَجِيحٌ رَجُلٌ فَصِيحٌ يَقُوْلُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه ''या'नी ऐ शख़्स ! कितनी अहम बात है कि एक फ़सीह़ो बलीग़ शख़्स कह रहा है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं।'' येह आवाज़ सुन कर सब लोग भाग गए। अलबत्ता मैं वहीं मौजूद रहा। मैं ने सोचा

1 ......شرح زرقانی علی المواھب، اسلام الفاروق، ج ۲، ص ۱۰۔

येह क्या राज़ है मैं ज़रूर जानने की कोशिश करूंगा। अचानक फिर वोही आवाज़ दोबारा आई कि : يَا جَلِيحُ اَمْرٌ نَجِيحٌ رَجُلٌ فَصِيحٌ يَقُولُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه "या'नी ऐ शख़्स ! कितनी अहम बात है कि एक फ़सीहो बलीग़ शख़्स कह रहा है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं।" बा'द में मा'लूम हुवा कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस्लाम की दा'वत दे रहे हैं। इस वाक़िए से भी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का दिल इस्लाम की त़रफ़ राग़िब हो गया।(1)

क़बूले इस्लाम के चन्द वाक़िआ़त

﴾1﴿.....फ़ारूक़े आ'ज़म के क़बूले इस्लाम का इब्तिदाई वाक़िआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के इस्लाम लाने की इब्तिदा आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ख़ुद बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं कि एक रात मेरी हमशीरा दर्दे ज़ेह में मुब्तला हुई। लिहाज़ा रात गुज़ारने की ग़रज़ से मैं अपने घर से निकल कर का'बतुल्लाह शरीफ़ के पर्दों के पीछे चला गया। मैं ने देखा कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और सीधे ह़त़ीमे का'बा में दाख़िल हो गए। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दो ऊनी कपड़े ओढ़े हुवे थे। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रब عَزَّوَجَلَّ ने जब तक चाहा नमाज़ अदा फ़रमाई और वापस तशरीफ़ ले गए। इसी दौरान मैं ने एक पुर असर और ग़ैर मानूस कलाम सुना जो इस से क़ब्ल कभी न सुना था। मैं फ़ौरन का'बतुल्लाह शरीफ़ के पर्दों से निकल कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे पीछे चल दिया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरी मौजूदगी को मह़सूस फ़रमाया तो पूछा : "कौन है ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "उ़मर बिन ख़त़्त़ाब।" फ़रमाया : يَا عُمَرُ مَا تَدَعُنِي لَيْلًا وَلَا نَهَارًا "या'नी ऐ उ़मर ! तुम रात दिन किसी वक़्त भी मेरा तआ़क़ुब करने से बाज़ नहीं आते।" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : "فَخَشِيتُ اَنْ يَدْعُوَ عَلَيَّ या'नी मैं इस बात से डर गया कि कहीं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे कोई बद दुआ़ न दे दें लिहाज़ा मैं ने फ़ौरन कलिमए शहादत पढ़ लिया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कलिमए शहादत सुन कर इरशाद फ़रमाया : اُسْتُرْهُ "या'नी ऐ उ़मर ! इसे अभी पोशीदा रखो।" मैं ने अ़र्ज़ किया : وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ لَاُعْلِنَنَّهُ كَمَا اَعْلَنْتُ الشِّرْكَ "या'नी ऐ मेरे करीम आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को

(1) ......بخاری، کتاب مناقب الانصار، باب اسلام عمر بن الخطاب، ج ۲، ص ۵۷۸، حدیث: ۳۸۶۶ ملتقطاً۔

हक़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया ! मैं ज़रूर कलिमए शहादत का वैसे ही ए'लान करूंगा जैसे क़बूले इस्लाम से क़ब्ल अपने शिर्क का ए'लान करता रहा था।"(1)

﴾2﴿.....फ़ारूके़ आ'ज़म के इस्लाम लाने का तफ़्सीली वाक़िआ़

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हाथ में नंगी तल्वार लिये बाहर निकले, गली से गुज़र रहे थे कि क़बीलए बनू ज़ोहरा के एक शख़्स से सामना हो गया, उस ने पूछा : "ऐ उ़मर ! कहां का इरादा है ?" कहा : "मैं मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को क़त्ल करने जा रहा हूं।" उस ने कहा : "अगर तुम ने मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को शहीद कर दिया तो बनू हाशिम और बनू ज़ोहरा से तुम्हें कैसे अम्न ह़ासिल होगा ?" सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : "लगता है तुम भी अपना दीन तब्दील कर के मुसलमान हो गए हो ?" उस ने कहा : "ऐ उ़मर ! क्या मैं तुम्हें इस से भी ज़ियादा अ़जीब बात न बताऊं ? तुम्हारी बहन और तुम्हारे बहनोई दोनों तुम्हारा दीन छोड़ कर मुसलमान हो चुके हैं।" येह सुनना था कि मज़ीद तै़श में आ गए और अपने बहन व बहनोई के घर की त़रफ़ चल पड़े। आप की बहन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे जमील फ़ाति़मा बिन्ते ख़त्ता़ब और बहनोई ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर में उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी मौजूद थे और दोनों को कु़रआने मजीद पढ़ा रहे थे, जैसे ही इन्हें सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के आने की ख़बर हुई तो फ़ौरन छुप गए। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसे ही अन्दर आए तो पूछा : "मुझे कुछ पढ़ने की भिनभिनाहट आ रही थी, तुम लोग क्या पढ़ रहे थे ?" दोनों ने जवाब दिया : "हमारे माबैन तो कोई गुफ़्त्गू नहीं हुई।" आप ने फ़रमाया : "मुझे लगता है कि तुम दोनों अपना दीन तर्क कर चुके हो।" आप के बहनोई बोले : "क्या ह़क़ तुम्हारे अ़क़ीदे के बर ख़िलाफ़ नहीं है ?" येह सुनते ही आप अपने बहनोई पर पील पड़े और उन्हें ख़ूब मारा पीटा। आप की बहन ग़ज़बनाक हो कर बोलीं : "ऐ उ़मर ! ह़क़ वोह नहीं जो तुम्हारा अ़क़ीदा है, और सुन लो मेरा ए'लान येह है : "اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاَشْھَدُ اَنَّ سَیِّدَنَا مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ" जब आप पर ह़क़ वाज़ेह़ होने लगा तो पूछा : "जो किताब तुम लोग पढ़ रहे थे मेरे पास लाओ मैं भी पढ़ना चाहता हूं।" बहन ने कहा : "इसे

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الاوائل، باب اول مافعل ومن فعلہ، ج۸، ص ۳۴۲، حدیث: ۱۴۷۔

सिर्फ़ पाक लोग ही छू सकते हैं। तुम वुज़ू या ग़ुस्ल कर लो फिर इसे पढ़ सकते हो। आप ने उठ कर वुज़ू किया, और फिर क़ुरआने पाक की सूरए त़ाहा पढ़ना शुरूअ़ कर दी। जैसे जैसे क़ुरआने पाक पढ़ते गए इस्लाम की मह़ब्बत दिल में उतरती गई। कहने लगे : "मुझे मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास ले चलो।" ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने जो छुपे बैठे थे जब येह सुना तो बाहर निकल आए और बोले : "ऐ उ़मर ! तुम्हें बिशारत हो मुझे यक़ीन है कि तुम ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ़ का समर हो क्यूंकि जुमा'रात की रात आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुसलसल येही दुआ़ फ़रमाते रहे हैं : اَللّٰهُمَّ اَعِزِّ الْاِسْلَامَ بِعُمَرَبْنِ الْخَطَّابِ اَوْبِعَمْرِوبْنِ الْهِشَام "या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दीने इस्लाम को उ़मर बिन ख़त्ताब या उ़मर बिन हिशाम (अबू जह्ल) के साथ इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमा।" ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन दिनों सफ़ा पहाड़ी के दामन में वाक़ेअ़ दारे अरक़म के अन्दर जलवा फ़रमा थे। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه वहां आए तो दरवाज़े पर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे ह़म्ज़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) और दीगर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان मौजूद थे। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की आमद का सुन कर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان घबरा गए। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे ह़म्ज़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "अगर उ़मर अच्छी निय्यत से आ रहा है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस की सलामती चाही तो बच जाएगा, वरना इस का क़त्ल कोई बड़ी बात नहीं।" उस वक़्त सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان सेह़न में और ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आगे कमरे में तशरीफ़ फ़रमा थे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए और सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का गिरेबान और तल्वार की ह़माइल पकड़ कर इरशाद फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! क्या तुम उस वक़्त बाज़ आओगे जब वलीद बिन मुग़ीरा की त़रह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी ज़िल्लत में आयत नाज़िल फ़रमाएगा ?" फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यूं दुआ़ फ़रमाई : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! उ़मर को राहे इस्लाम नसीब फ़रमा। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! येह उ़मर बिन ख़त्ताब है, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! उ़मर बिन ख़त्ताब के ज़रीए इस्लाम को इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमा।" येह सुनना था कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه बे साख़्ता पुकार उठे : "मैं गवाही देता हूं कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं।" और इस्लाम क़बूल कर लिया।(1)

---

1 ......مستدرک حاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب استقامۃ فاطمۃ علی الاسلام، ج۵، ص۹۷، حدیث: ۱۹۸۱ ملخصاً۔

اتحاف الخیرۃ المھرۃ، کتاب علامات النبوۃ، فضائل عمر بن الخطاب، ج۹، ص۱۲۲، حدیث: ۸۸۲۵ ملخصاً۔

इजाबत का सेहरा इनायत का जोड़ा
दुल्हन बन के निकली दुआए मुहम्मद
इजाबत ने झुक कर गले से लगाया
बढ़ी नाज़ से जब दुआए मुहम्मद

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रसूलुल्लाह की दुआ का पस मन्ज़र

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस्लाम के लिये जो हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ मांगी थी इस का पस मन्ज़र आ'ला ह़ज़रत अ़ज़ीमुल बरकत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत परवानए शम्ए़ रिसालत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن के वालिदे गिरामी रईसुल मुतकल्लिमीन मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ने तफ़्सीलन बयान फ़रमाया है। जिस का ख़ुलासा कुछ यूं है :

"जब कुफ़्फ़ारे मक्का ने मुसलमानों को सताना शुरूअ़ किया तो बा'ज़ मुसलमान ह़बशा की त़रफ़ हिजरत कर गए। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी ह़बशा हिजरत का इरादा फ़रमाया। हिजरत के इरादे से घर से निकले, अभी थोड़ी ही दूर गए थे कि मक्कए मुकर्रमा के एक मशहूर शख़्स इब्ने दग़िना से मुलाक़ात हो गई, वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को वापस मक्कए मुकर्रमा ले आया और तमाम कुफ़्फ़ार के सामने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अमान दे दी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने घर के सेह़न में इबादत करना शुरूअ़ कर दी जिसे कुफ़्फ़ार के बच्चे वग़ैरा देखते और ख़ुश होते। कुफ़्फ़ार को इस से तक्लीफ़ हुई और उन्हों ने इब्ने दग़िना से शिकायत की, इब्ने दग़िना ने आप से बात की तो फ़रमाया मुझे तुम्हारी अमान की कोई ज़रूरत नहीं, मेरे लिये रब की अमान ही काफ़ी है। वोह अपनी अमान तोड़ कर चला गया और रब عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी ह़िफ़्ज़ो अमान में ले लिया और ज़ालिमों के ज़ुल्मो सितम से इन्हें मह़फ़ूज़ किया। इन्हीं दिनों **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई कि या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस्लाम को अबू जह्ल या उ़मर बिन ख़त्ताब के ईमान से कुव्वत दे।"(1)

1.....अन्वारे जमाले मुस्त़फ़ा, स. 114 बित्तसर्रुफ़।

﴾3﴿.....इस्लामे फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने फ़ारूक़े आ'ज़म

हज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "क्या तुम लोग पसन्द करोगे कि मैं तुम्हें अपने इस्लाम लाने का वाक़िआ़ सुनाऊं ?" हम ने कहा : "जी हां ! क्यूं नहीं !" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सख़्त तरीन मुख़ालिफ़ीन में से था। एक दिन शिद्दत की गर्मी थी, उस गर्मी में मक्के की गलियों में एक शख़्स ने मुझे देख कर कहा : "तुम इस वक़्त किधर जा रहे हो ?" मैं ने कहा : "उस शख़्स की त़रफ़ जा रहा हूं जो ख़ुद को नबी समझता है।" वोह बड़े तअ़ज्जुब से बोला : "ऐ उ़मर ! तू उन्हें शहीद करेगा जब कि उन का दीन तो तुम्हारे घर में भी दाख़िल हो चुका है ?" मैं ने कहा : "कहां ?" उस ने कहा : "तुम्हारी बहन के घर।" येह सुन कर मैं शदीद ग़ुस्से की ह़ालत में बहन की त़रफ़ चला आया। मैं ने दरवाज़ा खट-खटाया तो अन्दर से पूछा गया : "कौन ?" मैं ने कहा : "उ़मर बिन ख़त़्त़ाब।" उस वक़्त वोह लोग अपने हाथों में लिये कोई किताब पढ़ रहे थे। मेरा नाम सुन कर जल्दी जल्दी में उठ कर छुप गए और क़ुरआनी सह़ीफ़ा वहीं छोड़ दिया। मेरी बहन ने दरवाज़ा खोला तो मैं ने कहा : "ऐ अपनी जान की दुश्मन ! तुम ने अपना दीन छोड़ दिया है येह कह कर मैं ने कोई चीज़ उठाई और उस के सर पर दे मारी जिस से उस का सर फट गया और ख़ून बहने लगा, वोह रोते हुवे कहने लगी : "जो जी चाहे कर लो, मैं बाज़ नहीं आऊंगी क्यूंकि मैं इस्लाम ला चुकी हूं।" मैं इसी ग़ुस्से की ह़ालत में कमरे में दाख़िल हुवा और चारपाई पर बैठ गया, मैं ने देखा कि वहां एक क़ुरआनी सह़ीफ़ा रखा हुवा है। मैं ने कहा : "येह क्या है ? मुझे दो।" बहन बोली : "तुम इस के अहल नहीं हो, क्यूंकि इसे सिर्फ़ पाक लोग ही छू सकते हैं।" बहर ह़ाल पाकी वग़ैरा के बा'द आख़िरे कार बहन ने मुझे वोह सह़ीफ़ा दे दिया। मैं ने उसे खोल कर पढ़ना शुरूअ़ किया तो उस में लिखा था : "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم" जब मैं ने الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم पढ़ा तो मुझे मज़ीद पढ़ने का शौक़ हुवा, जब मैं ने दोबारा पढ़ा तो कांपने लग गया यहां तक कि मैं ने वोह सह़ीफ़ा रख दिया। फिर मुझे होश आया तो मैं ने उसे दोबारा उठा कर फिर पढ़ना शुरूअ़ कर दिया। जूं जूं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अस्मा मेरे सामने से गुज़रते गए, मुझ पर लर्ज़ा त़ारी होता गया यहां तक कि मैं बे साख़्ता पुकार उठा : "اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه" येह सुन कर घर में छुपे हुवे लोग तक्बीर कहते हुवे बाहर निकल आए और मुझे बिशारत देने लगे कि ऐ इब्ने ख़त़्त़ाब ! मुबारक हो हुज़ूर

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पीर के रोज़ येह दुआ मांगी थी : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! दो मर्दों अबू जह्ल बिन हिशाम या उमर बिन ख़त्ताब में से किसी एक के साथ जो तुझे ज़ियादा पसन्द है, इस्लाम को इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमा ।" और हमें यक़ीन है कि आप ही रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ का समरा हैं । मैं ने कहा : "मुझे बताओ कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कहां हैं ?" उन्हों ने आप का पता बता दिया । मैं वहां पहुंचा और दरवाज़ा खट-खटाया तो आवाज़ आई : "कौन ?" मैं ने कहा : "इब्ने ख़त्ताब ।" मगर किसी ने दरवाज़ा खोलने की हिम्मत न की क्यूंकि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मेरी सख़्त मुख़ालफ़त सब पर आश्कार थी और मेरे मुसलमान हो जाने से येह लोग बे ख़बर थे । हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "दरवाज़ा खोल दो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस के लिये बेहतरी चाहेगा तो इसे हिदायत अ़ता फ़रमा देगा ।" चुनान्चे, उन्हों ने दरवाज़ा खोल दिया और दो मर्दों ने मुझे पकड़ कर सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश कर दिया । आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इसे छोड़ दो ।" फिर आप ने मेरा गिरेबान पकड़ कर अपनी त़रफ़ खींचा और इरशाद फ़रमाया : "ऐ इब्ने ख़त्ताब ! इस्लाम ले आओ ।" फिर आप ने मेरे लिये यूं दुआ़ की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इसे हिदायत दे दे ।" येह दुआ़ करना थी कि मैं बे साख़्ता पुकार उठा : "اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللہُ وَاَنَّکَ رَسُوْلُ اللہِ" मुसलमानों ने येह सुन कर इस ज़ोर से ना'रए तक्बीर बुलन्द किया कि ह़रमे का'बा तक उस की गूंज जा पहुंची ।"(1)

फ़ारूके आ'ज़म के ह़क़ में रसूलुल्लाह की दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जिस दिन इस्लाम लाए उस दिन रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सीने पर तीन बार हाथ मारते हुवे इरशाद फ़रमाया : اَللّٰھُمَّ اَخْرِجْ مَا فِیْ صَدْرِہٖ مِنْ غِلٍّ وَاَبْدِلْہُ اِیْمَانًا "या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! उ़मर के सीने में जो भी इस्लाम की दुश्मनी है उसे निकाल कर ईमान से तब्दील फ़रमा दे ।"(2)

---

1 ......مسند بزار، اسلم مولی عمر عن عمر، عمر بن خطاب، ج ۱، ص ۴۰۰، حدیث: ۲۷۹۔

2 ......معجم کبیر، سالم عن ابن عمر، ج ۱۲، ص ۲۳۶، حدیث: ۱۳۱۹۱۔

क़बूले इस्लाम के बा'द फ़ारूके़ आ'ज़म के अश्आ़र

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़बूले इस्लाम के बा'द दर्जे ज़ैल अश्आ़र पढ़े :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ذِي الْمَنِّ الَّذِي وَجَبَتْ ...... لَهُ عَلَيْنَا اَيَادٍ مَا لَهَا غَيْرُ

तर्जमा : "तमाम ता'रीफ़ें उस रब عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस के हम पर बहुत एह़सानात हैं, और हम पर वोही एह़सान फ़रमाने वाला है उस के सिवा कोई दूसरा नहीं जो हम पर एह़सान करे।"

وَقَدْ بَدَانَا فَكَذَّبْنَا فَقَالَ لَنَا ...... صِدْقَ الْحَدِيْثِ نَبِيٌّ عِنْدَهُ الْخَبَرُ

तर्जमा : "उस ने हमें पैदा किया लेकिन हाए अफ़्सोस ! हम उसी को झुटलाने लगे, उस ग़ैब की ख़बरें देने वाले (नबी) ने सच्ची बातें बताईं कि जिस के पास ख़बरें हैं।"

وَقَدْ ظَلَمْتُ ابْنَةَ الْخَطَّابِ ثُمَّ هَدٰى ...... رَبِّيْ عَشِيَّةَ قَالُوْا قَدْ صَبَا عُمَرُ

तर्जमा : "और आह ! मैं ने (अपनी बहन) ख़त़्त़ाब की बेटी (ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा बिन्ते ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) पर ज़ुल्म किया, फिर मेरे परवर दगार ने मुझे शाम के वक़्त हिदायत अ़त़ा फ़रमाई, इस पर काफ़िर कहने लगे उ़मर ने दीन बदल लिया।"

وَقَدْ نَدِمْتُ عَلٰى مَا كَانَ مِنْ زَلَلٍ ...... بِظُلْمِهَا حِيْنَ تُتْلٰى عِنْدَهَا السُّوَرُ

तर्जमा : "और येह जो ग़लत़ी मुझ से सरज़द हुई मैं इस पर नादिम हूं कि मैं ने (अपनी बहन पर) उस वक़्त ज़ुल्मो ज़ियादती की जब उस के पास कुरआने मजीद की सूरतें तिलावत की जा रही थीं।"

لَمَّا دَعَتْ رَبَّهَا ذَا الْعَرْشِ جَاهِدَةً ...... وَالدَّمْعُ مِنْ عَيْنِهَا عَجْلَانَ يَبْتَدِرُ

तर्जमा : "जब उस ने अ़र्श के मालिक अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से पूरी कोशिश से दुआ़ की तो उस वक़्त उस की आंखों से मुसलसल आंसू टपक रहे थे।"

اَيْقَنْتُ اَنَّ الَّذِيْ تَدْعُوْهُ خَالِقُهَا ...... فَكَادَ يَسْبِقُنِيْ مِنْ عَبْرَةٍ دُرَرُ

तर्जमा : "जिसे देख कर मुझे यक़ीन हो गया कि जिस से वोह दुआ़एं मांग रही है वोह उस का ख़ालिक़ है तो जल्द ही मेरी आंखों में भी मोतियों जैसे आंसू उभर आए।"

فَقُلْتُ اَشْهَدُ اَنَّ اللّٰهَ خَالِقُنَا ...... وَاَنَّ اَحْمَدَ فِيْنَا الْيَوْمَ مُشْتَهَرُ

तर्जमा : "तो इस पर मैं बे साख़्ता पुकार उठा कि मैं गवाही देता हूं कि हमारा ख़ालिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है और हज़रते मुहम्मद मुस्तफ़ा, अहमदे मुज्तबा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सच्चे रसूल बन कर ज़ाहिर हो चुके हैं।"

نَبِيٌّ صِدْقٍ اَتٰى بِالْحَقِّ مِنْ ثِقَةٍ ...... وَافِى الْاَمَانَةِ مَا فِيْ عَوْدِهٖ خَوَرُ

तर्जमा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सच्चे नबी हक़ ले कर आए हैं ऐसी क़ाबिले ए'तिमाद शख़्सिय्यत (हज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام) के वासिते से जो अमानत को दुरुस्त पहुंचाने वाले हैं और उन के बार बार आने में कोई नुक़्सान नहीं है।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म के क़बूले इस्लाम का सबबे हक़ीक़ी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के क़बूले इस्लाम के अस्बाब तो बहुत से हैं लेकिन क़बूले इस्लाम का सबबे हक़ीक़ी आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के हक़ में ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वोह दुआ़ थी जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन के क़बूले इस्लाम के लिये मांगी थी और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه उसी दुआ़ का समरा हैं।

दुआ़ए मुहम्मद अ़ताए ख़ुदा है...........सहाबा का सरदार फ़ारूक़े आ'ज़म

फ़ारूक़े आ'ज़म ने कब इस्लाम क़बूल फ़रमाया ?

आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हज़रते अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के क़बूले इस्लाम के तीन दिन बा'द ईमान लाए। तारीख़ के ए'तिबार से आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه माहे ज़ुल ह़िज्जा 6 बिअ़्सते नबवी (ब मुताबिक़ 617 ईसवी जुमा'रात) को ऐन जवानी की ह़ालत में मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे।(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म अल्लाह के महबूब हैं

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यूं दुआ़ फ़रमाई :

---

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۴۳۔

2 ......طبقات کبری، عمر بن الخطاب، ج ۳، ص ۲۰۴۔

اَللّٰھُمَّ اَعِزَّ الْاِسْلَامَ بِاَحَبِّ ھٰذَیْنِ الرَّجُلَیْنِ اِلَیْکَ بِاَبِیْ جَھْلٍ اَوْ بِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ "या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अबू जह्ल और उ़मर बिन ख़त्ताब में से जो तुझे महबूब है उस के ज़रीए इस्लाम को इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमा।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म मुरादे रसूल हैं

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में यूं दुआ़ फ़रमाई : اَللّٰھُمَّ اَعِزَّ الْاِسْلَامَ بِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ خَاصَّۃً "या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ख़ुसूसन उ़मर बिन ख़त्ताब के साथ इस्लाम को इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमा।"(2)

मा'लूम हुवा कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह हैं जिन्हें रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मांग कर लिया है और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुरादे रसूल (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) हैं।

फ़ारूक़े आ'ज़म के इस्लाम पर आस्मान वालों की ख़ुशी

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस्लाम लाने पर सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ किया : لَقَدِ اسْتَبْشَرَ اَھْلُ السَّمَآءِ بِاِسْلَامِ عُمَرَ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस्लाम लाने पर आस्मान वाले एक दूसरे को ख़ुश ख़बरी दे रहे हैं।"(3)

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं : لَقَدْ فَرِحَ اَھْلُ السَّمَاءِ بِاِسْلَامِ عُمَرَ "या'नी सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़बूले इस्लाम पर आस्मान वाले ख़ुश हो गए।"(4)

---

1 ......ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی۔۔۔الخ، ج۵، ص ۳۸۳، حدیث: ۳۷۰۱۔

2 ......ابن ماجہ، کتاب السنۃ، فضل عمر بن الخطاب، ج ۱، ص ۷۷، حدیث: ۱۰۵۔

3 ......ابن ماجہ، کتاب السنۃ، فضل عمر رضی اللہ عنہ، ج ۱، ص ۷۶، حدیث: ۱۰۳۔

4 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب العاشر، ص ۲۲۔

फ़ारूक़े आ'ज़म चालीसवें मुसलमान हैं

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर उन्तालीस अफ़राद इस्लाम ला चुके थे हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुसलमान होने पर चालीस की ता'दाद मुकम्मल हो गई तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام को भेज कर येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई : ﴿يَاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٤﴾﴾ (پ۱۰، الانفال: ٦٤) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले नबी **अल्लाह** तुम्हें काफ़ी है और येह जितने मुसलमान तुम्हारे पैरू हुवे ।"(1)

उन्तालीस सहाबए किराम के अस्माए मुबारका

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से क़ब्ल इस्लाम लाने वाले उन्तालीस सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के अस्माए मुबारका येह हैं : "(1) अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ (2) हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी (3) हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (4) हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम (5) हज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह (6) हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास (7) हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (8) हज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद (9) हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह (10) हज़रते सय्यिदुना हम्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब (11) हज़रते सय्यिदुना उ़बैदा बिन हारिस (12) हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी त़ालिब (13) हज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर (14) हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (15) हज़रते सय्यिदुना अ़य्याश बिन अबी रबीआ़ (16) हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी (17) हज़रते सय्यिदुना अबू सलमा बिन अ़ब्दुल असद (18) हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊ़न (19) हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन हारिसा (20) हज़रते सय्यिदुना बिलाल हबशी (21) हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अरत (22) हज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद बिन अ़म्र (23) हज़रते सय्यिदुना सुहैब (24) हज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर (25) हज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन फ़हीरा (26) हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अ़बसा (27) हज़रते सय्यिदुना नुऐ़म बिन अ़ब्दुल्लाह नह्हाम (28) हज़रते सय्यिदुना हातिब बिन हारिस जमही (29) हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन सईद बिन आ़स (30) हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन बुकैर (31) हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श

---

(1) ......معجم کبیر، احادیث عبد اللہ ابن عباس، ج ۱۲، ص ۴۷، حدیث: ۱۲۴۷۰۔

(32) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अह़मद अ़ब्द बिन जह़श (33) ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन बुकैर (34) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़तबता बिन ग़ज़्वान (35) ह़ज़रते सय्यिदुना अरक़म बिन अबू अरक़म (36) ह़ज़रते सय्यिदुना उनैस बिन जुनादा ग़िफ़ारी (37) ह़ज़रते सय्यिदुना वाक़िद बिन अ़ब्दुल्लाह (38) ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ (39) ह़ज़रते सय्यिदुना साइब बिन उ़स्मान (رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن)''[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म की क़ुव्वते ईमानी और दज्जाल

फ़ारूक़े आ'ज़म की क़ुव्वते ईमानी पर सह़ाबए किराम का इत्तिफ़ाक़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमें दज्जाल के मुतअ़ल्लिक़ बताया करते थे कि उसे एक आदमी पर मुसल्लत़ किया जाएगा और उसे इख़्तियार दिया जाएगा कि उसे मार दे या ज़िन्दा रखे तो दज्जाल उस से कहेगा कि اَلَسْتُ بِرَبِّکَ؟ ''या'नी बता क्या मैं तेरा रब नहीं हूं ?'' वोह शख़्स जवाब देगा : مَا كُنْتُ فِيْ نَفْسِيْ اَكْذِبُ مِنْكَ السَّاعَةَ ''या'नी ऐ दज्जाल ! मैं तुझ से एक लम्ह़ा भी झूट नहीं बोलूंगा।'' (या'नी मेरा रब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : فَمَا كُنَّا نَرٰى اِلَّا اَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ حَتّٰى مَاتَ ''हम सब सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का येही गुमान था कि दज्जाल को जिस शख़्स पर मुसल्लत़ कर दिया जाएगा वोह यक़ीनन सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही होंगे। लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद कर दिया गया।''[2]

फ़ारूक़े आ'ज़म का इज़्हार व ए'लाने इस्लाम

कुफ़्फ़ार के घरों में ए'लाने इस्लाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'ज़ घर वालों से रिवायत करते हैं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया कि जिस रात मैं ईमान लाया मैं ने सोचा कि मक्कए मुकर्रमा में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सब से बड़ा दुश्मन कौन है ? मुझे उसे अपने इस्लाम की ख़बर देनी चाहिये। मेरे ज़ेह्न में आया कि इस्लाम का सब से बड़ा दुश्मन तो अबू जह्ल है। उस के पास चलना चाहिये।

---

1 ......مناقب امير المؤمنين عمر بن الخطاب، الباب التاسع، ص ٢٢۔

2 ......مسند ابی یعلی، مسند ابی سعید الخدری، ج ١، ص ٥٧٢، حدیث: ١٣٦١۔

लिहाज़ा जूं ही सुब्ह़ हुई मैं अबू जह्ल के घर पहुंचा और उस का दरवाज़ा खट-खटाया। अबू जहल बाहर निकला और मुझे देखा तो खुश हो कर बोला : "खुश आमदीद भांजे कहो कैसे आना हुवा?" मैं ने कहा : "तुम्हें येह बताने आया हूं कि मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कलिमा पढ़ लिया है और उन का लाया हुवा पैग़ाम तस्लीम कर लिया है।" जैसे ही उस ने येह सुना तो येह कहते हुवे दरवाज़ा बन्द कर लिया कि "अल्लाह बुरा करे तेरा, तेरे अ़क़ीदे का।" مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ(1)

इज़्हारे इस्लाम का अनोखा अन्दाज़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जब इस्लाम लाए तो कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को फ़ौरी तौ़र पर इस का इ़ल्म न हो सका। आप ने सोचा अहले मक्का में इस्लाम के ख़िलाफ़ कौन सब से ज़ियादा प्रोपेगन्डा करने वाला है? बताया गया : "जमील बिन मा'मर जमह़ी।"(2) आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه उस के पास गए। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه इरशाद फ़रमाते हैं कि "मैं भी अपने वालिदे गिरामी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के पीछे पीछे हो लिया और मैं उस वक़्त मुकम्मल होशो ह़वास और फ़ह्मो शुऊ़र भी रखता था।" जैसे ही आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه उस के पास पहुंचे तो उस से कहा : "मैं इस्लाम ला चुका हूं।" इतना सुनना था कि वोह मस्जिदे ह़राम जाने के लिये उठ खड़ा हुवा, और क़ुरैश की तमाम मजालिस में जा कर बुलन्द आवाज़ से यूं पुकारने लगा : "सुनो! उ़मर बिन ख़त्ता़ब अपने दीन से फिर गया है।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उसे झिड़क कर इरशाद फ़रमाया : **كَذَبَ وَلٰكِنِّي اَسْلَمْتُ وَآمَنْتُ بِاللّٰهِ وَصَدَّقْتُ رَسُوْلَهٗ** "या'नी ऐ लोगो! येह झूट बोल रहा है। मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाया हूं, और मैं ने उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तस्दीक़ की है।"(3)

---

1 ......سیرۃ ابن هشام، ذکر قوۃ عمر فی۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۳۲۴۔

2 .....येह बा'द में फ़त्ह़े मक्का के मौक़अ़ पर इस्लाम ले आए थे, ग़ज़्वए हुनैन में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ शिर्कत फ़रमाई, इन को "ज़ुल क़ल्बैन" या'नी दो दिल वाला के लक़ब से पुकारा जाता था, क़ुरआने पाक में एक जौफ़ में दो दिल की मुमानअ़त वाली आयते मुबारका इन्हीं के बारे में नाज़िल हुई थी। (اسد الغابة، جمیل بن معمر، ج ۱، ص ۴۳۳)

3 ......صحیح ابن حبان، ذکر وصف اسلام عمر۔۔۔الخ، الجزء: ۹، ج ۶، ص ۱۶، حدیث: ۶۸۴۰ ملتقطا۔

क़बूले इस्लाम के बा'द राहे ख़ुदा में तकालीफ़

क़बूले इस्लाम के बा'द कुफ़्फ़ार की त़रफ़ से तकालीफ़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब कुफ़्फ़ारे कु़रैश के सामने अपने इस्लाम का खुल कर इज़्हार फ़रमाया तो तमाम कुफ़्फ़ार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर टूट पड़े। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी ख़ूब डट कर मुक़ाबला किया यहां तक कि सूरज ढल गया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन से मुक़ाबला करते करते निढ़ाल हो कर बैठ गए। कुफ़्फ़ार फिर भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को तक्लीफ़ें पहुंचा रहे थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें मुख़ात़ब कर के इरशाद फ़रमाया : اِفْعَلُوْا مَابَدَا لَكُمْ فَوَاللّٰهِ لَوْ كُنَّا ثَلَاثَ مِئَةِ رَجُلٍ لَقَدْ تَرَكْتُمُوْهَا لَنَا اَوْ تَرَكْنَاهَا لَكُمْ ''या'नी तुम जो कर सकते हो कर लो, अगर हम (या'नी मुसलमान) तीन सौ के क़रीब होते तो हमारे दरमियान फ़ैसला हो जाता। या तो मक्का की सरदारी हमें मिल जाती या तुम्हारे पास ही रहती।'' येही बातें हो रही थीं कि अचानक वहां एक शख़्स आ गया, जिस ने एक रेशमी हुल्ला और क़ूमिसी क़मीस पहनी हुई थी, वोह कहने लगा : ''क्या बात है ?'' उसे बताया गया कि उ़मर बिन ख़त्ताब अपने दीन से फिर गया है। येह सुन कर वोह कहने लगा : فَمَهْ اِمْرُؤٌ اِخْتَارَ دِيْنًا لِنَفْسِهِ اَفَتَظُنُّوْنَ اِنَّ بَنِيْ عَدِيْ تُسَلِّمُ اِلَيْكُمْ صَاحِبَهُمْ؟ ''या'नी इसे छोड़ दो, एक शख़्स ने जब नया दीन अपने लिये पसन्द कर लिया है तो येह उस की मर्ज़ी है, तुम क्या समझते हो कि बनू अ़दी अपने सरदारों को तुम्हारे ह़वाले कर देंगे।'' येह सुनना था कि आनन फ़ानन सब कुफ़्फ़ार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से यूं दूर हो गए जैसे किसी चीज़ से कपड़ा खींच लिया जाए। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि बा'द में मैं ने मदीनए त़य्यिबा आ कर अपने वालिदे गिरामी से पूछा : يَا اَبَتِ مَنِ الرَّجُلُ الَّذِيْ رَدَّ عَنْكَ الْقَوْمَ يَوْمَئِذٍ؟ ''या'नी ऐ अब्बा जान ! वोह कौन शख़्स था जिस ने उस दिन लोगों को आप से दूर किया था ?'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : ''बेटे वोह (मेरा ख़ालू) आ़स बिन वाइल था।''(1)

राहे ख़ुदा में तकालीफ़ उठाने की ख़्वाहिश

ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : كَانَ الرَّجُلُ اِذَا اَسْلَمَ فَعَلِمَ بِهِ النَّاسُ يَضْرِبُوْنَهُ وَيَضْرِبُهُمْ

(1)......صحیح ابن حبان، ذکر وصف اسلام عمر۔۔۔الخ، الجزء: ۹، ج۶، ص۱۶، حدیث: ۶۸۴۰۔

"या'नी जब भी कोई इस्लाम लाता तो मा'लूम होने पर लोग उसे मारते और वोह लोगों को मारता।" बहर हाल मैं इस्लाम लाने के बा'द एक शख़्स के घर आया और दरवाज़ा खट-खटाया, अन्दर से आवाज़ आई : "कौन ?" मैं ने कहा : "उ़मर बिन ख़त्ताब।" येह सुनते ही वोह शख़्स बाहर निकल आया। मैं ने कहा : اَعَلِمْتَ اَنِّي قَدْ صَبَوْتُ؟ "या'नी क्या तुम्हें मा'लूम है कि मैं मुसलमान हो चुका हूं ?" उस ने कहा : "वाक़ेई ?" मैं ने कहा : "हां वाक़ेई।" वोह कहने लगा : "ऐसा न करो।" मैं ने कहा : "क्यूं ?" वोह कहने लगा : "बस न करो।" येह कह कर उस ने दरवाज़ा बन्द कर लिया। मैं ने कहा : "अ़जीब बात है।" इस के बा'द मैं क़ुरैश के एक और बड़े सरदार के पास पहुंचा, दरवाज़ा खट-खटाया तो वोह बोला : "कौन ?" मैं ने कहा : "उ़मर बिन ख़त्ताब।" येह सुन कर वोह बाहर आया। मैं ने कहा : اَعَلِمْتَ اَنِّي قَدْ صَبَوْتُ؟ "या'नी क्या तुम्हें मा'लूम है कि मैं मुसलमान हो चुका हूं ?" उस ने कहा : "क्या वाक़ेई।" मैं ने कहा : "हां यक़ीनन।" कहने लगा : "ऐसा न करो।" और साथ ही उस ने दरवाज़ा बन्द कर लिया। मैं ने सोचा ज़रूर कोई न कोई बात है। चुनान्चे, मुझे एक शख़्स ने मश्वरा दिया कि अगर तुम अपना इस्लाम तमाम लोगों तक पहुंचाना चाहते हो तो फ़ुलां शख़्स जब ह़रम में मौजूद हो उस के पास जाना और उसे बताना, वोह तुम्हारे इस्लाम की ख़बर लोगों में फैला देगा। तो मैं ने ऐसे ही किया और ह़रम में जा कर उस शख़्स को तलाश किया और अपने इस्लाम का जब मैं ने उसे बताया तो उस ने कहा : "वाक़ेई मुसलमान हो गए हो तुम ?" मैं ने कहा : "हां।" तो उस ने बुलन्द आवाज़ से पुकारा : اَلَا اِنَّ عُمَرَ قَدْ صَبَا "या'नी ऐ लोगो ! सुनो उ़मर बिन ख़त्ताब अपने दीन से फिर गया है।" बस फिर क्या था लोगों ने मुझे मारना शुरूअ़ कर दिया, मैं ने भी लोगों को बहुत मारा। इतने में मेरा ख़ालू आ़स बिन वाइल वहां आ गया उस ने पूछा : "येह लोग क्यूं जम्अ़ हैं ?" बताया गया कि उ़मर बिन ख़त्ताब अपने आबा के दीन से फिर गया है और लोग इस के पीछे पड़े हैं। वोह शख़्स ह़जरे अस्वद के क़रीब खड़े हो कर ज़ोर से बोला : اَلَا اِنِّي قَدْ اَجَرْتُ ابْنَ اُخْتِي فَلَا يَمَسُّهُ اَحَدٌ "या'नी ऐ लोगो ! मैं ने अपने भांजे को पनाह दे दी है अब इसे कोई हाथ न लगाए।" येह सुनना था कि सब लोग मुझ से दूर हो गए। तब मैं इन्तिज़ार में खड़ा रहा कि अब कोई मुझे मारे, मगर कोई मेरे क़रीब न आया। मैं ने दिल में सोचा : مَا هٰذَا بِشَيْءٍ اِنَّ النَّاسَ يُضْرَبُوْنَ وَاَنَا لَا اُضْرَبُ وَلَا يُقَالُ لِي شَيْءٌ "या'नी येह क्या बात हुई कि दीगर मुसलमानों को तो राहे ख़ुदा में तकालीफ़ दी जाएं लेकिन मुझे न तो मारा जाए और न ही कुछ कहा

जाए।" बहर हाल मैं ने मज़ीद कुछ इन्तिज़ार किया जब लोग इत्मीनान से ह़रम में बैठ गए तो मैं ने अपने ख़ालू से आ कर कहा : اِسْمَعْ جِوَارُکَ عَلَیْکَ رَدٌّ "या'नी ग़ौर से सुनो ! तुम ने मुझे जो पनाह दी है वोह मैं तुम्हें वापस लौटाता हूं।" वोह कहने लगा : "भांजे ! ऐसा न कर।" मैं ने कहा : "नहीं, मुझे तुम्हारी अमान की ज़रूरत नहीं।" इस के बा'द कुफ़्फ़ार से मेरी अक्सर झड़पें होती रहतीं यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस्लाम को इ़ज़्ज़त व त़ाक़त अ़त़ा फ़रमाई।(1)

एक अहम बात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दौरे जाहिलिय्यत में जब कोई बड़ा आदमी या सरदार किसी शख़्स को पनाह दे देता तो फिर उसे कोई कुछ न कहता था, कि अब इस को किसी क़िस्म की तक्लीफ़ देना उस सरदार से बग़ावत के मुतरादिफ़ था, येही वज्ह है कि जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को उन के ख़ालू आ़स बिन वाइल ने पनाह दी तो तमाम लोग आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को छोड़ कर पीछे हट गए।

ईमाने फ़ारूके़ आ'ज़म से तक़्विय्यते इस्लाम

﴾1﴿.....ए'लानिय्या इ़बादत का सिलसिला शुरूअ़ हो गया

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : मेरे इस्लाम लाने के बा'द हम (या'नी मुसलमानों) ने कभी छुप कर इ़बादत न की और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई : ﴿یٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَ مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ۠﴾ (پ۱۰،الانفال:۶۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) अल्लाह तुम्हें काफ़ी है और येह जितने मुसलमान तुम्हारे पैरू हुवे।" और क़ुरआन में नाज़िल होने वाली येह पहली आयत थी जिस में सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को **"मोमिनीन"** का नाम दिया गया। उन दिनों उ़मर बिन ख़त्ताब मक्कए मुकर्रमा में बात़िल के ख़िलाफ़ लड़ाई का झन्डा गाड़े हुवे था। कुफ़्फ़ारे क़ुरैश उस से ह़क़ बात पर लड़ते थे, जब कि उ़मर बिन ख़त्ताब उन से येही कहता था कि अगर हम तीन सौ हो जाएं तो फ़ैसला हो जाए और येह मक्का की सरदारी या हम तुम्हें दे देंगे या तुम हमें दे दोगे।(2)

---

1 ......مسند بزار، اسلم مولی عمر عن عمر، ج ۱، ص ۴۰۰، حدیث: ۲۷۹۔

2 ......ریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۲۸۲۔

《2》.....मुसलमान महफ़ूज़ हो गए

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन इस्हाक़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अ़ब्दुल्लाह बिन अबी रबीआ़ और अ़म्र बिन आ़स जिन्हें कुफ़्फ़ारे कुरैश ने येह ज़िम्मेदारी दी थी कि वोह ह़बशा के बादशाह नजाशी को वर्ग़ला कर वहां गए हुवे मुसलमानों को वापस लाएं लेकिन नजाशी बादशाह ने उन्हें बे मुराद लौटा दिया। उधर मक्कए मुकर्रमा में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसलमान हो गए। आप बड़े ही रो'ब और दबदबे वाले थे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की पीठ पीछे भी कोई आप पर ए'तिराज़ नहीं कर सकता था। इसी लिये ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वज्ह से मुसलमान कुफ़्फ़ारे कुरैश के शर और उन की तकालीफ़ से महफ़ूज़ हो गए।(1)

《3》.....मुसलमान मुअ़ज़्ज़ज़ हो गए

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि जब से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लाम लाए हम (या'नी सब मुसलमान) मुअ़ज़्ज़ज़ हो गए।(2)

《4》.....मुसलमानों के हौसले बुलन्द हो गए

۞.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ही से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का इस्लाम लाना फ़त्ह़ था। (या'नी जैसे ही आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लाम क़बूल फ़रमाया गोया मुसलमानों को एक अ़ज़ीमुश्शान फ़त्ह़ ह़ासिल हो गई)। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की हिजरत सरापा नुस्रत और हुकूमत ऐन रह़मत थी। जब तक आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसलमान न हुवे थे हमें का'बतुल्लाह में जा कर नमाज़ पढ़ने की हिम्मत न होती थी, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लाम क़बूल कर के कुफ़्फ़ार से जंग की पस हम ने का'बतुल्लाह में नमाज़ पढ़ी।

۞.....हज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस्लाम लाने पर ही हम का'बा के गिर्द ह़ल्क़ा बना कर बैठे और त़वाफ़ किया।(3)

---

1 ......رياض النضرة، ج ۱، ص ۲۸۳۔

2 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عمر بن۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۵۲۵، حدیث: ۳۶۸۴۔

3 ......طبقات کبری، اسلام عمر، ج ۳، ص ۲۰۴۔

﴾5﴿.....मोमिनों को नई पहचान मिली

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) से मरवी है कि जब तक अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसलमान न हुवे थे तब तक हमें "**मोमिनीन**" का नाम न दिया गया था और जैसे ही आप ने इस्लाम क़बूल फ़रमाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें "**मोमिनीन**" का मुअ़ज़्ज़ज़ नाम अ़ता फ़रमा दिया।(1)

﴾6﴿.....कुफ़्फ़ार की क़ुव्वत टूट गई

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे तो मुशरिकीन ने ग़मज़दा हो कर कहा : "आज हम आधे हो गए।"(2)

﴾7﴿.....मुसलमानों की क़ुव्वत में इज़ाफ़ा हो गया

हज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुसलमान हो जाने के बा'द हम कुफ़्फ़ार का भरपूर मुक़ाबला किया करते थे।(3)

फ़ारूक़े आ'ज़म का राहे ख़ुदा में तक्लीफ़ें सहने का जज़्बा

हज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुद इरशाद फ़रमाया : "मैं जब भी किसी मुसलमान को राहे ख़ुदा में तकालीफ़ सहते हुवे देखता तो कहता : येह क्या बात हुई कि दीगर मुसलमान तो राहे ख़ुदा में तक्लीफ़ें सहें, उन पर बातें कसी जाएं और मैं इस सआ़दत से महरूम रहूं ?"(4)

दुआ़ हज़रत ने की जिन के इस्लाम लाने की
ज़ुहूरे दीं के वोह पहले निशां फ़ारूक़े आ'ज़म थे

---

1 ......رياض النضرة، ج ۱، ص ۲۸۴-
2 ......مستدرک حاکم، کتاب معرفة الصحابة، قتال عمر مع المشركين ـــ الخ، ج ۴، ص ۳۸، حديث: ۴۵۵۰-
3 ......صفة الصفوة، ج ۱، الجزء: ۱، ص ۱۴۲-
4 ......مسند بزار، اسلم مولی عمر عن عمر، ج ۱، ص ۴۰۳، حديث: ۲۷۹-

मुसलमां क्या फ़िरिश्ते भी ख़ुश हुवे जिन के इस्लाम लाने पर
वोह हक़ की शान ग़ैज़े दुश्मनां फ़ारूके़ आ'ज़म थे
पढ़ी जाने लगीं सारी नमाज़ें ख़ानए हक़ में
मुसलमानों की इस शौकत की जां फ़ारूके़ आ'ज़म थे

इस्लाम बरोज़े क़ियामत फ़ारूके़ आ'ज़म से मुसाफ़हा करेगा

हज़रते सय्यिदुना हसन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि कल बरोज़े क़ियामत इस्लाम आएगा तो ख़ल्के़ ख़ुदा ग़ौर से उसे देखेगी यहां तक कि वोह अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास पहुंचेगा और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का हाथ पकड़ कर अ़र्श के दरमियानी हिस्से पर चढ़ेगा, फिर बारगाहे ख़ुदावन्दी में यूं अ़र्ज़ करेगा : اِیْ رَبِّ! اِنِّیْ کُنْتُ خَفِیًّا وَاَھَانَ وَھٰذَا اَظْھَرَنِیْ فَکَافِئْہُ "या'नी ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ मैं छुपा हुवा और कमज़ोर था, इस ने मुझे ज़ाहिर किया लिहाज़ा इसे पूरा बदला अ़ता फ़रमा।" येह सुन कर रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से फ़िरिश्ते हाज़िर होंगे और अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का हाथ पकड़ कर उन्हें जन्नत में दाख़िल कर देंगे हालांकि उस वक़्त लोग अपने हिसाब किताब में मशग़ूल होंगे।(1)

आप के हाथ पर क़बूले इस्लाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ पर क़बूले इस्लाम करने वाले दो त़रह़ के लोग हैं : (1) वोह लोग जिन्हों ने अ़हदे रिसालत व अ़हदे सिद्दीक़ी में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ पर इस्लाम क़बूल किया। (2) वोह जिन्हों ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ही के दौरे ख़िलाफ़त में क़बूले इस्लाम किया। यक़ीनन दूसरी क़िस्म के लोगों की ता'दाद पहली क़िस्म से बहुत ज़ियादा है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में बिला मुबालग़ा लाखों लोगों ने क़बूले इस्लाम किया। अलबत्ता कुतुबे अहादीस व सियर व तवारीख़ में दोनों अक़्साम के मुसलमानों का बहुत ही कम तज़्किरा मिलता है। चन्द ऐसे मुसलमानों के अस्माए मुबारका पेशे ख़िदमत हैं जिन का तफ़्सीली तज़्किरा अस्माउर्रिजाल की कुतुब में मौजूद है :

.....हज़रते सय्यिदुना अस्लम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم (सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ग़ुलाम)

---

(1) .....مناقب امیر المومنین عمر بن الخطاب، الباب الحادی عشر، ص ۲۳۔

येह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के निहायत ही क़रीबी और ख़ासुल ख़ास ख़ादिम थे। सफ़रो ह़ज़र में उ़मूमन येही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ हुवा करते थे। मुख़्तलिफ़ वाक़िआ़त से येह भी मा'लूम होता है कि इन्हें सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुशीर की ह़ैसिय्यत ह़ासिल थी। नीज़ सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मश्हूर वाक़िआ़ जिस में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अ़वामुन्नास व रिआ़या की ख़ैर ख़्वाही के लिये रात को मदीनए मुनव्वरा के अ़लाक़ाई दौरे के लिये रवाना हुवे, उस में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के येही ग़ुलाम या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अस्लम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ साथ थे। बेवा ख़ातून के लिये ग़ल्ले के गोदाम से जब सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने राशन लिया और इन्हें फ़रमाया कि येह सामान मेरी पीठ पर डाल दो तो इन्हों ने उस सामान को ख़ुद उठाने की पेशकश की लेकिन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़िक्रे आख़िरत का ज़ेह्न देते हुवे इन की मदनी तरबिय्यत फ़रमाई। इस से मा'लूम होता है कि सय्यिदुना अस्लम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह से तक़्वा व परहेज़गारी की ख़ुसूसी तरबिय्यत और फ़ैज़ान ह़ासिल करते रहते थे।

.....ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم
(सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ग़ुलाम)

.....ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَھَّاب

.....ह़ज़रते सय्यिदुना रुफ़ैल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

.....ह़ज़रते सय्यिदुना हुरमुज़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 .....فتوح الشام، ذکر فتح مدینة بیت المقدس، ج ۱، ص ۲۳۵۔

الاصابة، الرفیل، ج ۲، ص ۴۲۸، الرقم: ۲۷۴۷۔

الاصابة، الهرمزان الفارسی، ج ٦، ص ۴۴۸، الرقم: ۹۰۲٦۔

सातवां बाब
हिस्सए अव्वल

फ़ारूके़ आ'ज़म का इश्के़ रसूल

(रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका से महब्बत)

इस बाब में मुलाहज़ा कीजिये..........

- .....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अक़ीदए महब्बत
- .....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नाराज़ी का ख़ौफ़
- .....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तस्दीक़
- .....रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तस्दीक़ और सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ
- .....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इताअ़त
- .....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आईडियल शख़्सिय्यात
- .....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बारगाहे रिसालत का अदबो एह़तिराम
- .....अह़ादीस फ़ज़ाइले फ़ारूके़ आ'ज़म, बा'द सिद्दीके़ अक्बर सब से अफ़्ज़ल
- .....फ़ज़ाइले फ़ारूके़ आ'ज़म ब ज़बाने सरवरे दो आ़लम, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ "मुह़द्दस" हैं
- .....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की उख़रवी शान, बारगाहे रिसालत से अ़ताकर्दा बिशारतें
- .....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ितनों को रोकने का ताला और दरवाज़ा हैं, आप जहन्नम से बचाने वाले हैं
- .....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर रब का ख़ुसूसी करम, आप की नाराज़ी रब की नाराज़ी

फ़ारूक़े आ'ज़म का इश्क़े रसूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन्सान में वालिदैन, औलाद, भाई बहन, ज़ौजा, ख़ानदान, माल, तिजारत और मकान वग़ैरा इन तमाम चीज़ों से महब्बत फ़ित्री चीज़ है। लेकिन रब तआला अपने बन्दों को आगाह फ़रमाता है कि अगर तुम्हारे अन्दर इन तमाम चीज़ों की महब्बत मेरी और मेरे महबूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत से बढ़ जाए तो गोया तुम ख़त्रे की हद में दाख़िल हो चुके और बहुत जल्द तुम्हें मेरा ग़ज़ब अपनी लपेट में ले लेगा। इस से पता चलता है कि एक मोमिन के लिये हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से महब्बत न सिर्फ़ फ़र्ज़ है बल्कि सब से क़रीबी रिश्तेदारों और सब से क़ीमती मताअ़ पर मुक़द्दम है। ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : **لَا یُؤْمِنُ اَحَدُکُمْ حَتّٰی اَکُوْنَ اَحَبَّ اِلَیْہِ مِنْ وَّالِدِہٖ وَوَلَدِہٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِیْن** ''या'नी तुम में कोई शख़्स उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उस के नज़्दीक उस के वालिदैन, औलाद और तमाम लोगों से ज़ियादा महबूब न हो जाऊं।''(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! महब्बत जब हद से बढ़ जाए तो इश्क़ का रंग इख़्तियार कर लेती है, इश्क़ की तासीर बड़ी हैरत अंगेज़ है। इश्क़ ने बड़ी बड़ी मुश्किलात में अ़क़्ले इन्सानी की रहनुमाई की है। इश्क़ ने बहुत सी ला इलाज बीमारियों का कामयाब इलाज किया है। इश्क़ के कारनामे आबे ज़र से लिखने के क़ाबिल हैं। देखिये ! मदीनए मुनव्वरा का रिक़्क़त अंगेज़ माहोल है, नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाले ज़ाहिरी हो चुका है, माहोल सोगवार है, हर आंख अश्कबार है, क्यूंकि जाने काइनात रब्बे काइनात के लिक़ा का सफ़र इख़्तियार कर चुकी है, तमाम सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को यक़ीन हो चुका है कि हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वाक़ेई दुन्या से तशरीफ़ ले जा चुके हैं, लेकिन एक आशिक़ ऐसा भी था जिस के इश्क़ और अ़क़्ल में मुनाज़रा जारी था, अ़क़्ल इस बात पर मुसिर थी कि महबूब वाक़ेई तशरीफ़ ले जा चुके हैं, इश्क़ पुकार पुकार कर कह रहा था येह नहीं हो सकता ! येह नहीं हो सकता ! बिल आख़िर इश्क़ के दलाइल का अ़क़्ल पर ग़लबा हुवा तो तल्वार निकाल ली और सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के दरमियान जा कर अपने इश्क़ का फ़ैसला सुना दिया कि अगर किसी ने भी येह कहा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم विसाल फ़रमा गए हैं तो उस की गर्दन उड़ा दूंगा। येह कैसा

---

1 ......بخاری، کتاب الایمان، باب حب الرسول۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۱۷، حدیث: ۱۵۔

आ़शिक़ है जो अपनी आंखों के मुशाहदे को भी इश्क़ के तराज़ू में तोल रहा है ! येह कैसा आ़शिक़ है जो अ़क़्ल के दलाइल को इश्क़ के दलाइल से मात दे रहा है ! येह आ़शिक़े सादिक़ कौन है ? येह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के येह वोही आ़शिक़ हैं जिन के इस्लाम की दुआ़ खुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने की, पूरी काइनात रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुरीद है, मगर येह वोही आ़शिक़ हैं जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुरीद होने के साथ साथ आप की मुराद भी हैं, येह वोही आ़शिक़ हैं जिन्हें रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से खुद ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मांगा । जी हां ! इस आ़शिक़े सादिक़ को इसी कामिल इश्क़ के तुफ़ैल दुन्या में इख़्तियार व इक़्तिदार और आख़िरत में इ़ज़्ज़तो वक़ार मिला । येह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इश्क़ का कमाल था कि मुश्किल से मुश्किल घड़ी और कठिन से कठिन वक़्त में भी इत्तिबाए़ रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इन्ह़िराफ़ गवारा न था । वोह हर मर्ह़ले में अपने मह़बूब आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नक़्शे पा ढूंडते और उसी को मश्अ़ले राह बना कर फ़ातेह़ व कामरां रहते । गोया आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना मक़्सदे ह़यात इस बात को बना लिया था कि :

की मुह़म्मद से वफ़ा तू ने तो हम तेरे हैं
येह जहां चीज़ है क्या लौह़ो क़लम तेरे हैं
मुह़म्मद की मह़ब्बत दीने ह़क़ की शर्त़े अव्वल है
इसी में हो अगर ख़ामी तो सब कुछ ना मुकम्मल है

ज़रूरत इस बात की है कि हम भी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इश्क़ की मह़फ़िल में शरीक हों, फ़त्ह़ो ज़फ़र जिन के क़दम चूमती थी, इश्क़े रसूल जिन की मताए़ ज़िन्दगी, इत्तिबाए़ रसूल जिन का सरमायए ह़यात, और जहां बानी जिन की तक़्दीर बन चुकी थी । हम देखें कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ात से उन का कैसा वालिहाना तअ़ल्लुक़ था ! अगर हम अपनी निगाहे बसीरत तेज़ करें और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इश्क़े रसूल के वाक़िआ़त में उन की चलती फिरती ज़िन्दगी देखें, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में उन की मुक़द्दस व बा अ़ज़्मत अदाओं का मुशाहदा करें, चश्मे तसव्वुर से लौह़े दिल पर उन के पाकीज़ा इश्क़ का नक़्शा उतारें, तो हो सकता है उन का कुछ फ़ैज़ाने इश्क़ हमारे ऊपर भी जल्वाबार हो, इश्क़े फ़ारूक़े आ'ज़म की ह़ैरत अंगेज़ तासीर हमारे क़ाफ़िलए ह़यात को भी इ़ल्मो हुनर, जोह्दो अ़मल और

फ़लाहो ज़फ़र से आश्ना कर दे। आइये अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ के इश्के़ रसूल से भरे हुवे दौलत ख़ाने के रौशन दरवाज़ों को खोलते हैं, जिस दरवाज़े को भी खोला जाए उस से एक ऐसी नायाब ख़ुश्बू आती है जो मशामे जां को मुअ़त्त़रो मुनव्वर कर देती है। ऐ काश ! रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से हमें भी इश्के़ फ़ारूके़ आ'ज़म का एक क़त़रा नसीब हो जाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

वाजे़ह़ रहे कि मह़ब्बत का येह तक़ाज़ा है कि जिस से मह़ब्बत की जाए फिर फ़क़त़ उस की ज़ात ही तक मह़ब्बत को मह़दूद न रखा जाए बल्कि उस की आल औलाद, उस के घर वालों, उस के दोस्तों, अ़ज़ीज़ो अक़रबा अल ग़रज़ जो चीज़ उस से मन्सूब हो जाए उस से भी मह़ब्बत की जाए। नीज़ मह़ब्बत में अगर उस का दूसरा रुख़ भी शामिल हो जाए तो येह दो त़रफ़ा मह़ब्बत मज़ीद त़ाक़तवर हो जाती है।

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ मह़ब्बत के इसी दरजे पर फ़ाइज़ थे कि आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की न सिर्फ़ ज़ाते मुबारका बल्कि आप से मन्सूब हर चीज़ से मह़ब्बत करते थे। नीज़ आप की मह़ब्बत में दूसरा रुख़ भी शामिल था कि जहां आप को दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इश्के़ ह़क़ीक़ी था वहीं आप رضی اللہ تعالٰی عنہ से भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेह़द प्यार व मह़ब्बत फ़रमाया करते थे, इसी त़रह़ जहां आप رضی اللہ تعالٰی عنہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आल, औलाद, अज़्वाज, अ़ज़ीज़ो अक़रबा व दीगर लोगों से मह़ब्बत फ़रमाते थे तो वोह भी आप رضی اللہ تعالٰی عنہ से वालिहाना मह़ब्बत करते थे। आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के **"इश्के़ रसूल"** के बाब को चन्द ह़िस्सों में तक़्सीम किया गया है, फिर हर ह़िस्से में मुतअ़ल्लिक़ा मह़ब्बत के दूसरे रुख़ को भी ब त़रीके़ अह़सन बयान किया गया है। तफ़्सील कुछ यूं है :

﴾1﴿.....रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका से मह़ब्बत।

﴾2﴿.....रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अहले बैत से मह़ब्बत।

﴾3﴿.....रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात से मह़ब्बत।

﴾4﴿.....रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब से मह़ब्बत।

﴾5﴿.....रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ात से मह़ब्बत।

रसूलुल्लाह की ज़ात से मह़ब्बत

फ़ारूक़े आ'ज़म की इ़श्क़े रसूल में गिर्या व ज़ारी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से एक त़वील ह़दीस मरवी है, जिस का कुछ मज़्मून यूं है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं : ''मालिके कौनो मकान, मक्की मदनी सुल्त़ान, रह़मते आ़लमियान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसी चटाई पर आराम फ़रमा रहे थे जिस पर कुछ न बिछा हुवा था, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक सर के नीचे चमड़े का एक तक्या था जिस में खजूर की छाल भरी हुई थी। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस क़दमों की त़रफ़ ''सलम'' दरख़्त के पत्तों का ढेर लगा हुवा था और सरे अक़्दस के पास चमड़ा लटक रहा था। मैं ने देखा कि उम्मत के ग़म ख़्वार आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पहलू पर चटाई के निशान सब्त हो गए थे। येह देख कर मैं रोने लगा।'' नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''ऐ उ़मर ! क्यूं रोते हो ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ैसरो किस्रा दुन्या की आसाइशों और ने'मतों में हैं जब कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं !'' तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''ऐ उ़मर ! क्या तुम इस पर राज़ी नहीं कि उन के लिये दुन्या की आ़रिज़ी ने'मतें हों और तुम्हारे लिये आख़िरत की अबदी राह़तें ?''(1)

रसूलुल्लाह का ज़िक्र करते तो रोने लग जाते

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ग़ुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र करते तो इ़श्क़े रसूल से बेताब हो कर रोने लगते और फ़रमाते : ''ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो लोगों में सब से ज़ियादा रह़्म दिल और यतीम के लिये वालिद की त़रह़, बेवा औ़रत के लिये शफ़ीक़ घर वाले की त़रह़ और लोगों में दिली त़ौर पर सब से ज़ियादा बहादुर थे, वोह तो निखरे निखरे चेहरे वाले, महकती ख़ुश्बू वाले और ह़सब के ए'तिबार से सब से ज़ियादा मुकर्रम थे, अव्वलीन व आख़िरीन में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मिस्ल कोई नहीं।''(2)

---

1 ......مسلم، کتاب الطلاق، باب فی الایلاء...الخ، ص۷۸۶، حدیث: ۳۱۔

2 ......جمع الجوامع، ج۱۰، ص۱۶، حدیث: ۳۳۔

फ़ारूक़े आ'ज़म का अ़क़ीदए महब्बत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से वालिहाना महब्बत के क्या कहने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तो बिला तकल्लुफ़ तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के सामने अपने आप को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बन्दा या'नी ग़ुलाम और ख़िदमतगार फ़रमाया करते थे। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ हुवे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बर सरे मिम्बर फ़रमाया : **كُنْتُ مَعَ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ فَکُنْتُ عَبْدَہٗ وَخَادِمَہٗ** "या'नी मैं ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बते बा बरकत से फ़ैज़ याफ़्ता रहा हूं पस मैं ह़ुज़ूर का बन्दा (ग़ुलाम) और ख़िदमतगार रहा हूं।"[1]

हम को तो वोह पसन्द जिसे आए तू पसन्द

जो चीज़ रसूलुल्लाह को पसन्द नहीं मुझे भी पसन्द नहीं

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में दीबाज से बना हुवा क़बा (चोग़ा) पेश किया गया, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे एक बार पहना और फिर उतार कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भेज दिया और इरशाद फ़रमाया कि : "मुझे जिब्रीले अमीन ने इस के पहनने से मन्अ़ कर दिया है।" येह सुन कर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोते हुवे ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ किया : **کَرِهْتَ اَمْرًا وَاَعْطَيْتَنِيهِ فَمَالِي** "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जो चीज़ आप ने ना पसन्द फ़रमाई वोह मुझे अ़ता फ़रमा दी, जो चीज़ आप को ही ना पसन्द है मैं उस का क्या करूं ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! मैं ने तुम्हें पहनने के लिये नहीं बल्कि बेचने के लिये दिया है।" चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे दो हज़ार दिरहम में बेच दिया।[2]

---

1 ......مستدرک حاکم، کتاب العلم، خطبۃ عمر بعد ماولی ــــ الخ، ج ۱، ص ۳۳۲، حدیث: ۴۴۵ ملتقطا۔

2 ......مسلم، کتاب اللباس والزینۃ، تحریم استعمال اناء الذھب ــــ الخ، ص ۱۱۴۹، حدیث: ۱۶۔

फ़ारूक़े आ'ज़म और रसूलुल्लाह की नाराज़ी का ख़ौफ़

रसूलुल्लाह के ग़ज़ब से ख़ुदा की पनाह

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में तौरात का एक नुस्ख़ा लाए और अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह तौरात का नुस्ख़ा है।" सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ामोश रहे और कोई जवाब न दिया। हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे पढ़ना शुरूअ़ कर दिया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरए मुबारक शिद्दते जलाल की वज्ह से एक ह़ालत से दूसरी ह़ालत की त़रफ़ बदल रहा था लेकिन अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस की ख़बर न थी कि ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! तुझे रोने वाली औ़रतें रोएं ! तुम ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर की ह़ालत नहीं देख रहे ?" तब हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर को देखा और फ़ौरन कहा :

اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ غَضَبِ اللّٰہِ وَغَضَبِ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ رَضِیْنَا بِاللّٰہِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِیْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ نَّبِیًّا

"या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ज़ब से ख़ुदा की पनाह ! हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रब होने, इस्लाम के दीन होने और मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नबी होने पर राज़ी हुवे।"

सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर तुम पर मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ज़ाहिर होते और तुम मुझे छोड़ कर उन की इत्तिबाअ़ करते तो राहे रास्त से हट जाते और अगर मूसा عَلَیْہِ السَّلَام दुन्या में होते और मेरी नबुव्वत के ज़ुहूर के ज़माने को पाते तो मेरी पैरवी करते।"(1)

---

1 ......دارمی، باب مایتّقي من تفسیر حدیث النبی۔۔۔إلخ، ج ۱، ص ۱۲۶، حدیث: ۴۳۵۔

फ़ारूके़ आ'ज़म मिज़ाज शनासे रसूलुल्लाह

हज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास एक शख़्स हाज़िर हो कर कहने लगा : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप रोज़ा कैसे रखते हैं ?" सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह बात सुन कर जलाल आ गया। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब रुख़े अन्वर पर जलाल के आसार देखे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को राज़ी करने के लिये यूं गोया हुवे : رَضِیْنَا بِاللّٰہِ رَبًّا وَبِالْاِسْلَامِ دِیْنًا وَبِمُحَمَّدٍ نَبِیًّا نَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ غَضَبِ اللّٰہِ وَمِنْ غَضَبِ رَسُوْلِہٖ "या'नी हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रब होने, इस्लाम के दीन होने, मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नबी होने पर राज़ी हैं और हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जलाल से पनाह मांगते हैं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बार बार येह अल्फ़ाज़ दोहराने लगे तो नबिय्ये अकरम, रह़मते दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जलाल मुबारक रह़मत में तब्दील हो गया। इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस शख़्स के बारे में क्या इरशाद है जो सारी उ़म्र बिला नाग़ा रोज़ा रखता है ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "न उस ने रोज़ा रखा न छोड़ा। छोड़ा तो उस ने वाके़ई नहीं मगर उसे किसी रोजे़ का सवाब भी नहीं मिला इस लिये रोज़ा रखा भी नहीं।" अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जो शख़्स हमेशा दो दिन रोज़ा रखता और एक दिन छोड़ता है उस के बारे में क्या फ़रमाते हैं ?" फ़रमाया : "ऐसी त़ाक़त किस में है ?" अ़र्ज़ किया : "एक दिन रोज़ा रखने और एक दिन छोड़ने वाला कैसा है ?" फ़रमाया : "येह तो दावूद عَلَیْہِ السَّلَام का रोज़ा है।" अ़र्ज़ किया : "जो एक दिन रोज़ा रखे और दो दिन छोड़े वोह कैसा है ?" फ़रमाया : "मैं चाहता हूं कि मुझ में ऐसी त़ाक़त आ जाए।" इस के बा'द रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हर माह में तीन दिन और रमज़ान में पूरा माह रोज़ा रखना तमाम उ़म्र रोज़ा रखने की फ़ज़ीलत रखता है, और अ़रफ़ात के दिन रोज़ा रखने में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मुझे उम्मीद है कि अगले एक साल और पिछले एक साल के गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं और दसवीं मुह़र्रम के रोजे़ में रब की रह़मत से मुझे उम्मीद है कि पहले एक साल के गुनाह धुल जाते हैं।"(1)

---

1 ......مسلم، کتاب الصیام، استحباب صیام ثلاثۃ ایام، ص ۵۸۹، حدیث: ۱۱۶۲۔

फ़ारूके़ आ'ज़म का ख़ौफे़ ख़ुदा व ख़ौफे़ रसूले ख़ुदा

हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बा'ज़ सुवालात किये गए जो आप को पसन्द न आए मगर जब वोह सुवालात बार बार पूछे गए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जलाल में आ गए और इरशाद फ़रमाया : فَلَا تَسْئَلُوْنِیْ عَنْ شَیْءٍ اِلَّا اَخْبَرْتُکُمْ "या'नी तुम मुझ से जिस शै के बारे में पूछोगे मैं तुम्हें बताऊंगा।" तो हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने खड़े हो कर अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरा बाप कौन है ?" आप ने फ़रमाया : "तेरा बाप हुज़ाफ़ा है।" अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अक्दस पर जलाल के आसार देखे तो अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करते हैं। हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रब होने, इस्लाम के दीन होने और मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नबी होने पर राज़ी हैं। येह सुन कर ख़ातमुल मुर्सलीन, रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जलाल रहमत में तब्दील हो गया। इस के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दीवार की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर इरशाद फ़रमाया : "अभी इस दीवार के वस्त में मुझ पर जन्नत व दोज़ख़ पेश की गई इस से पहले मैं ने ख़ैर व शर की ऐसी मिसाल नहीं देखी।"(1)

रसूलुल्लाह का जलाल देख कर फ़ौरन तौबा

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक बार हमारे पास तशरीफ़ लाए तो इन्तिहाई जलाल की हालत में थे। हमें यूं लगा जैसे जिब्रीले अमीन भी आप के साथ हैं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मिम्बर पर तशरीफ़ ले गए। सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि इस दिन से ज़ियादा मैं ने आप को कभी रोते हुवे न देखा। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : سَلُوْنِیْ فَوَاللّٰہِ لَا تَسْئَلُوْنِیْ عَنْ شَیْءٍ اِلَّا اَنْبَاْتُکُمْ "या'नी आज पूछो, जो भी पूछना चाहते हो पूछो। ख़ुदा की क़सम ! जो कुछ तुम पूछोगे मैं तुम्हें ज़रूर बताऊंगा।" एक सहाबी ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरा बाप कौन है ?" फ़रमाया :

(1) بخاری، کتاب مواقیت الصلاۃ، باب وقت الظھر عند الزوال، ج ۱، ص ۲۰۰، حدیث: ۵۴۰۔

"हुज़ाफ़ा ।" एक मुनाफ़िक़ बोला : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं जन्नत में जाऊंगा या जहन्नम में ?" फ़रमाया : "जहन्नम में ।" एक और शख़्स बोला : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या हम पर हर साल ह़ज फ़र्ज़ है ?" फ़रमाया : "अगर मैं हर साल कह देता तो हर साल ह़ज फ़र्ज़ हो जाता जिसे तुम पूरा न कर सकते और तुम हर साल ह़ज न करते तो तुम पर अ़ज़ाब नाज़िल होता ।" दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जलाल देख कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ौरन पुकार उठे : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रब होने, इस्लाम के दीन होने और मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नबी होने पर राज़ी हैं । या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे सरबस्ता ऐसे राज़ न खोलें । हमें मुआ़फ़ फ़रमा दीजिये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाएगा ।" येह सुन कर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ग़ुस्सा जाता रहा । इस के बा'द रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दीवार की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर इरशाद फ़रमाया : "इस दीवार के पीछे मुझे जन्नत व दोज़ख़ दिखाई गई है ।"(1)

फ़ारूके आ'ज़म और रसूलुल्लाह की तस्दीक़

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक रात मक्कए मुकर्रमा में खड़े हो कर तीन मरतबा इरशाद फ़रमाया : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! क्या मैं ने तेरा पैग़ाम नहीं पहुंचा दिया ?" तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खड़े हो गए चूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बेह़द दर्दमन्द थे लिहाज़ा अ़र्ज़ की : "जी हां ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों की रग़बत दिलाई, इस मुआ़मले में ख़ूब कोशिश की और ख़ैर ख़्वाही से काम लिया ।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ईमान ज़रूर ग़ालिब आएगा यहां तक कि कुफ़्र अपनी जगहों की त़रफ़ लौट जाएगा और समन्दर इस्लाम से भर जाएंगे और लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा जिस में वोह क़ुरआने पाक सीखेंगे और इस की क़िराअत करेंगे, फिर कहेंगे हम ने क़ुरआने पाक पढ़ा और दूसरों को सिखाया तो हम से बेहतर कौन है ? क्या इन लोगों में कोई भलाई है ?"(2)

1 ......مسند ابی یعلی، ابوسفیان عن انس، ج ۳، ص ۲۹۸، حدیث: ۳۶۷۸۔

2 ......معجم کبیر، ھند بنت الحارث ــــ الخ، ج ۱۲، ص ۱۹۴، حدیث: ۱۳۰۱۹۔

रसूलुल्लाह की तस्दीक़ और फ़ारूक़े आ'ज़म

उ़मर ने सच कहा

अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि एक दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल, बीबी आमिना के फूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! बाहर जा कर लोगों में येह ए'लान कर दो कि जिस शख़्स ने इस बात की गवाही दी कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का रसूल हूं तो उस पर जन्नत वाजिब हो गई।" सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि जैसे ही मैं बाहर निकला तो रास्ते में मेरी मुलाक़ात ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से हो गई।" उन्हों ने मुझ से इस्तिफ़्सार किया तो मैं ने उन्हें बता दिया कि मैं इस बात का ए'लान करने जा रहा हूं। येह सुन कर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : "आप रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में दोबारा जाइये और अ़र्ज़ कीजिये कि लोगों को अ़मल करने दें क्यूंकि मुझे ख़ौफ़ है कि लोग इस पर तक्या न कर बैठें।" सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वाली सारी बात अ़र्ज़ कर दी तो सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**صَدَقَ عُمَرُ** या'नी उ़मर ने सच कहा।" फिर मैं रुक गया।[(1)]

फ़ारूक़े आ'ज़म और रसूलुल्लाह की इताअ़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका से ह़क़ीक़ी मह़ब्बत का अन्दाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ का जज़्बा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की नस नस में बसा हुवा था। और क्यूं न होता कि ख़ुद रब عَزَّوَجَلَّ ने भी अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ को अपनी मह़ब्बत का मे'यार इरशाद फ़रमाया। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ یُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَ یَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ۝۳۱﴾ (پ۳، آل عمران: ۳۱)

---

1 ......جمع الجوامع، ج ۱۰، ص ۱۱، حدیث: ۲۱۔

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ महबूब तुम फ़रमा दो कि लोगो अगर तुम **अल्लाह** को दोस्त रखते हो तो मेरे फ़रमां बरदार हो जाओ **अल्लाह** तुम्हें दोस्त रखेगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।"

किसी से कोई चीज़ न लो

महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को कोई चीज़ भेजी तो उन्हों ने उसे लौटा दिया। तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! तुम ने वोह चीज़ क्यूं लौटा दी ?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "क्या आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें नहीं बताया कि आदमी की भलाई इसी में है कि वोह किसी से कोई चीज़ न ले ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह हुक्म तो सुवाल करने की सूरत में है और जो चीज़ सुवाल के बिग़ैर ह़ासिल हो वोह तो रिज़्क़ है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे अ़ता फ़रमाया है।" तो ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़र्ज़ की : "उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! मैं किसी से कोई शै न मांगूंगा और जो चीज़ सुवाल किये बिग़ैर मेरे पास आएगी उसे ले लिया करूंगा।"(1)

रसूलुल्लाह की इत्तिबाअ़ व पैरवी

ह़ज़रते सय्यिदुना जुबैर बिन नुफ़ैर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि एक बार मैं ह़ज़रते सय्यिदुना शुर्ह़बील बिन सिम्त़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के साथ सतरह या अठ्ठारह मील दूर अ़लाक़ए "ह़िम्स" के "दूमीन" नामी एक गाऊं के पास गया तो आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने वहां दो रक्अ़त नमाज़ अदा की। मैं ने इस की वज्ह पूछी तो उन्हों ने कहा : "मैं ने अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को मक़ाम "ज़ुल ह़ुलैफ़ा" में इसी त़रह़ दो रक्अ़त नमाज़ अदा करते देखा। मैं ने इस की वज्ह पूछी तो उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : **اِنَّمَا اَفْعَلُ كَمَا رَاَيْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَفْعَلُ** "मैं वोही कर रहा हूं जो मैंने ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को करते देखा है।"(2)

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب البیوع والاقضیة، فی الرجل یهدی الی۔۔۔الخ، ج۵، ص ۱ ۲۳، حدیث:۲۔
کنز العمال، کتاب الزکاۃ، فصل فی آداب الاخذ۔۔۔الخ، الجزء:۶، ج ۳، ص ۲۶۹، حدیث:۱۷۱۴۷۔

2 ......مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرها، باب صلاۃ المسافرین۔۔۔الخ، ص ۳۴۹، حدیث:۱۳۔

इत्तिबाए रसूल में फ़ारूक़े आ'ज़म की सादा और सख़्त कोश ज़िन्दगी

हज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन सा'द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अपने वालिदे गिरामी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप ने जो कपड़े पहने हैं येह तो बहुत सख़्त हैं आप इन से नर्म कपड़े क्यूं नहीं पहनते नीज़ आप जो खाना खाते हैं वोह आप के शायाने शान नहीं आप इस से अच्छा खाना क्यूं नहीं पसन्द करते ? हालांकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें रिज़्क़ में वुस्अ़त भी दे रखी है।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं अब तुम्हारे ज़मीर से इस की दलील फ़राहम करता हूं, तुम्हें याद नहीं कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किस क़दर मशक़्क़त आमेज़ ज़िन्दगी बसर करते थे ?" फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुखों और तकालीफ़ से भरी ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ़ अह़वाल सुनाते रहे यहां तक कि उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا रोने लगीं। फिर इरशाद फ़रमाया : "ख़ुदा की क़सम ! दुन्या में मैं भी नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसी तक्लीफ़ों भरी ज़िन्दगी गुज़ारूंगा ताकि मैं इन दोनों जैसी पसन्दीदा ज़िन्दगी पा सकूं।"[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म की सुन्नत से महब्बत

एक रिवायत में है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ बेटी ! हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा कैसी थी ?" उन्हों ने कहा : "ख़ुदा की क़सम ! एक एक माह घर में न दिया जलता और न ही हन्डिया पकती थी। सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास एक जुब्बा होता था जिसे आप ओढ़ना और बिछौना बना लेते।" अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "येह बताओ नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़िन्दगी कैसी थी ? उन्हों ने कहा : "वोह भी वैसी ही थी।" तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "उन तीन दोस्तों के मुतअ़ल्लिक़ तुम्हारा क्या ख़याल है, जिन में से दो दुन्या में एक ही त़रीक़े पर चलते हुवे दुन्या से तशरीफ़ ले गए और तीसरा उन की मुख़ालफ़त में चले। क्या वोह उन से जा मिलेगा ?" उन्हों ने कहा :

1 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الزھد، ماذکر عن نبینا۔۔۔الخ، ج۸، ص۱۳۰، حدیث:۳۳۔

"हरगिज़ नहीं।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "वोह तीसरा साथी मैं हूं, मैं उन की सुन्नत पर ही चलता हुवा उन के पास पहुंचूंगा।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म की आईडियल शख़्सिय्यात

प्यारे आक़ा की पैरवी का जज़्बा

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद अस्लम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि मैं ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ किया : "माले ग़नीमत के ज़ख़ीरे में एक अन्धी ऊंटनी भी है उस का क्या करें ?" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "उसे किसी ऐसे घराने के सिपुर्द कर दो जो उस से बेहतर इस्तिफ़ादा कर सकें।" (या'नी ग़रीब हों) मैं ने कहा : "हुज़ूर ! वोह तो अन्धी है।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "उसे वोह अपने ऊंटों की क़ितार में लगा लेंगे।" मैं ने कहा : "हुज़ूर ! वोह ज़मीन से चरेगी कैसे ?" फ़रमाया : "वोह जिज़्ये के ग़ल्ले में से है या सदक़े के जानवरों में है ?" मैं ने कहा : "जिज़्ये में से।" फ़रमाया : "ख़ुदा की

फ़ारूक़े आ'ज़म की आईडियल शख़्सिय्यात

तो उन में डाल दी जाती और उन्हें सब से पहले हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात के घरों में भेज दिया जाता। सब से आख़िर में उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का हिस्सा भेजा जाता ताकि अगर कमी आए तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बेटी के हिस्से ही में आए। चुनान्चे, उस ऊंटनी का कुछ गोश्त उन थालों में डाला गया और उम्महातुल मोमिनीन, रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात की ख़िदमात में भेजा गया और बक़िय्या गोश्त को पकवा कर मुहाजिरीन व अन्सार सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की दा'वत कर दी गई। हज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बोले : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अगर आप हर रोज़ ऐसी ही दा'वत किया करें तो कितना अच्छा हो ! कई मरतबा आप ने पहलू तही करते हुवे दा'वत न की और न आप के साथ सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने।" येह सुन कर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "आइन्दा मैं ऐसी दा'वत कभी नहीं करूंगा। मेरे दोनों दोस्तों (या'नी

1 ......رياض النضرة، ج ۱، ص ۳۳۸۔

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه) ने जिस राह को पसन्द किया और उस पर चले, अगर मैं वोह छोड़ दूं तो उन के रास्ते से हट कर किसी और राह में जा पड़ूंगा।"(1)

बढ़ी हुई आस्तीनों को छुरी से काट लिया

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने नई क़मीस पहनी तो छुरी मंगवाई और फ़रमाया : "ऐ बेटे ! इस की लम्बी आस्तीनों को सिरे से पकड़ कर खींचो और जहां तक मेरी उंगलियां हैं उन के आगे से कपड़ा काट दो।" सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने उसे काटा तो वोह बिल्कुल सीधा नहीं बल्कि ऊपर नीचे से कटा। मैं ने अ़र्ज़ किया : "अब्बा जान ! अगर इसे क़ैंची से काटा जाता तो बेहतर रहता !" आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "बेटा ! इसे ऐसे ही रहने दो क्यूंकि मैं ने शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ऐसे ही काटते देखा था। इस लिये मैं ने भी छुरी से आस्तीनें काट दीं।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के आस्तीन काटने के बा'द कुर्ते की ह़ालत येह थी कि इस से बा'ज़ धागे बाहर निकल निकल कर आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के क़दमों के बोसे लेते रहते थे।(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म और रसूलुल्लाह व ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह की इत्तिबाअ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू वाइल शक़ीक़ बिन सलमह رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि मैं एक कुरसी पर सय्यिदुना शैबा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के साथ का'बतुल्लाह शरीफ़ में बैठा हुवा था, तो शैबा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه कहने लगे कि इसी जगह एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه तशरीफ़ फ़रमा थे आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाने लगे : "मेरा इरादा है कि का'बे में मौजूद दिरहमो दीनार, मालो ज़र तक़्सीम कर दूं।" मैं ने कहा : "ह़ुज़ूर ! आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के दोनों दोस्त (या'नी नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه) तो ऐसा नहीं करते थे।" आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया :

1 ......موطا امام مالک، کتاب الزکاۃ، باب جزیۃ اھل الکتاب۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۲۵۷، حدیث: ۶۳۰، ریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۳۳۸۔

2 ......مستدرک حاکم، کتاب اللباس، کان نبی اللہ۔۔۔الخ، ج ۵، ص ۲۷۵، حدیث: ۷۴۹۸۔

''वोह दोनों शख़्सिय्यतें हैं ही ऐसी कि जिन की पैरवी करनी चाहिये। (या'नी मैं उन दोनों की इत्तिबाअ़ में अब येह माल तक़्सीम नहीं करूंगा।)[1]

बा'ज़ रिवायात में येह अल्फ़ाज़ हैं कि फ़रमाया : ''मैं यहां से उस वक़्त तक नहीं जाऊंगा जब तक ग़रीब मुसलमानों में का'बतुल्लाह शरीफ़ का सारा माल तक़्सीम न कर दूं।'' मैं ने कहा : ''आप ऐसा नहीं कर सकते।'' फ़रमाया : ''क्यूं ?'' मैं ने कहा : ''इस लिये कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मक़ाम सब ने देख लिया है और सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अ़मल भी किसी से मख़्फ़ी नहीं, वोह माल की ह़ाजत भी रखते थे फिर भी येह माल उन्हों ने तक़्सीम नहीं किया।'' येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उठे और ह़रम शरीफ़ से बाहर निकल गए।'' (या'नी आप ने माल तक़्सीम करने का इरादा तर्क फ़रमा दिया।)[2]

फ़ारूके़ आ'ज़म की रसूलुल्लाह से वालिहाना मह़ब्बत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि मुझे इस बात की ख़्वाहिश थी कि मैं अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मा'लूम करूं कि येह आयते मुबारका किन दो अज़्वाजे मुत़ह्हरात के बारे में नाज़िल हुई है : ﴿اِنْ تَتُوْبَاۤ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ﴾ (پ۲۸، التحریم:۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ''नबी की दोनों बीबियो अगर **अल्लाह** की त़रफ़ तुम रुजूअ़ करो तो ज़रूर तुम्हारे दिल राह से कुछ हट गए हैं।'' ह़त्ता कि मैं ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ ह़ज किया, फिर हम एक रास्ते पर जा रहे थे कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़ज़ाए ह़ाजत के लिये एक त़रफ़ हो गए। जब फ़ारिग़ हो कर तशरीफ़ लाए तो मैं ने बरतन ले कर आप को वुज़ू करवाया। फिर मैं ने आप से वोही बात पूछ ली कि येह आयते मुबारका किन दो अज़्वाजे मुत़ह्हरात के बारे में नाज़िल हुई है। तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : ''ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ! बड़े तअ़ज्जुब की बात है अब तक तुम्हें मा'लूम नहीं कि येह आयत किन दो अज़्वाज के बारे में नाज़िल हुई है ?'' फिर फ़रमाया : ''ह़फ़्सा और आ़इशा सिद्दीक़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के बारे में।'' फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस वाक़िए़ को तफ़्सीलन बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

1 ......بخاری، کتاب الحج، باب کسوۃ الکعبۃ، ج ۱، ص ۵۳۶، حدیث: ۱۵۹۴۔
عمدۃ القاری، کتاب الحج، باب کسوۃ الکعبۃ، ج ۷، ص ۱۲۰، تحت الحدیث: ۱۵۹۴۔
2 ......ابن ماجه، کتاب المناسک، باب مال الکعبۃ، ج ۳، ص ۵۲۲، حدیث: ۳۱۱۶۔

मैं और मेरे एक पड़ोसी अन्सारी सहाबी (हज़रते सय्यिदुना इतबान बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) हम दोनों महल्लए बनू उमय्या बिन ज़ैद में रहते थे और दोनों का येह मा'मूल था कि एक दिन मैं बारगाहे रिसालत में हाज़िर होता और दूसरे दिन वोह। मैं जो भी बारगाहे रिसालत से इल्म हासिल करता वह्य होती या कोई भी बात होती तो मैं उन्हें बता देता इसी तरह वोह मुझे बता देते। हम कुरैश जब मक्कए मुकर्रमा में थे तो अपनी औरतों पर ग़ालिब थे। और यहां मदीनए मुनव्वरा में आ कर हमारा ऐसी क़ौम से वासिता पड़ा जिन पर औरतें ग़ालिब हैं। इन से हमारी औरतों ने भी खुदसरी सीख ली है। मैं एक दिन अपनी ज़ौजा पर किसी बात के सबब गुस्से हो रहा था तो वोह आगे से तकरार करने लगी। मैं ने कहा : "येह आदत तुम्हें कहां से पड़ गई ?" वोह कहने लगी : "मेरी तकरार आप को बुरी लगती है। खुदा की क़सम ! दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुतह्हरात आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से तकरार कर लेती हैं और पूरा पूरा दिन आपस में बात नहीं होती।" येह सुन कर मैं अपनी बेटी और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजा (हज़रते सय्यिदतुना) हफ़्सा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) के पास आया और उन्हें कहा : "क्या येह सच है कि तुम अज़्वाज में से अगर कोई नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से तकरार कर लेती है तो दिन भर आप से कलाम नहीं करती ?" उन्हों ने कहा : "जी हां।" मैं ने कहा : "तुम नामुराद हुई और ख़सारे में हो। क्या तुम्हें इस बात की कोई फ़िक्र नहीं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को नाराज़ करने से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी नाराज़ हो जाएगा और फिर सिर्फ़ हलाकत ही होगी। ऐ बेटी ! तुम कभी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से तकरार न करना, आप से कोई चीज़ मत मांगना, जो हाजत हो मुझे बताना मैं पूरी कर दूंगा, और अपने साथ वाली (या'नी हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) पर कभी रश्क न करना क्यूंकि वोह तुम से ज़ियादा हसीन और ख़ातमुल मुर्सलीन, रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पसन्दीदा ज़ौजा हैं।"

उन दिनों हम आपस में येह बातें करते थे कि ग़स्सान का बादशाह हम पर हम्ले करने के लिये अपने घोड़ों को तय्यार कर रहा है। एक रात मेरा वोही दोस्त मेरे घर आया और दरवाज़े पर बहुत ज़ोर से दस्तक देने लगा साथ ही मुझे आवाज़ें भी देने लगा। मैं हैरान हो कर बाहर आया और उस से ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त की तो उस ने कहा : "एक बहुत बड़ा हादिसा रू नुमा हो गया है।" मैं ने पूछा :

"क्या हुवा ? क्या ग़स्सान ने ह़म्ला कर दिया है ?" उस ने कहा : "नहीं बल्कि इस से भी हौलनाक हादिसा पेश आया है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी अज़्वाज को त़लाक़ दे दी है।" मैं ने कहा : "ह़फ़्सा बरबाद और नामुराद हो गई, मुझे येही कुछ हो जाने का ख़दशा था।" चुनान्चे मैं ह़फ़्सा के पास आया तो वोह रो रही थी। मैं ने कहा : "रोती क्यूं हो, क्या मैं ने तुम्हें डराया न था ? क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तुम्हें त़लाक़ दे दी ?" कहने लगी : "मुझे मा'लूम नहीं, मगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने मेहमान ख़ाने में हम से जुदा हो कर बैठ गए हैं।" तो मैं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़बशी ग़ुलाम के पास आया और कहा कि "रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मेरे दाख़िल होने की इजाज़त मांगो।" वोह वापस आया तो कहने लगा : "मैं ने आप का ज़िक्र रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कर दिया है मगर आप ने कोई जवाब नहीं दिया।" मैं उठ कर मस्जिदे नबवी चला आया। कुछ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان मिम्बर के क़रीब अफ़सुर्दा बैठे थे और चन्द सह़ाबा तो रो भी रहे थे। मैं थोड़ी देर वहां बैठा। फिर मुझ से रहा न गया और मैं ने ग़ुलाम के पास आ कर कहा कि "रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मेरे दाख़िल होने की इजाज़त मांगो।" वोह वापस आया तो कहने लगा : "मैं ने आप का ज़िक्र रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कर दिया है मगर आप ने कोई जवाब नहीं दिया।" मैं कुछ कहे बिग़ैर ख़ामोशी से वापस पलटा तो पीछे से ग़ुलाम ने मुझे आवाज़ दी कि "आप अन्दर आ जाइये ! इजाज़त मिल गई है।" चुनान्चे, मैं अन्दर गया आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सलाम किया। आप एक चटाई पर टेक लगाए तशरीफ़ फ़रमा थे जिस के निशानात आप के पहलू पर वाज़ेह़ नज़र आ रहे थे। मैं ने खड़े खड़े अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या आप ने अपनी अज़्वाज को त़लाक़ दे दी है ?" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सर उठा कर मुझे देखा और फ़रमाया : "नहीं।" मैं ने कहा : "اَللّٰهُ اَكْبَر"

फिर मैं खड़े खड़े रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दिलजूई के लिये अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : اَسْتَاْنِسُ يَا رَسُوْلَ اللّٰه "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं आप के साथ बातें कर के आप को मानूस करना चाहता हूं। हम क़ुरैश जब मक्कए मुकर्रमा में थे तो अपनी औ़रतों पर ग़ालिब थे। और यहां मदीनए मुनव्वरा में आ कर हमारा ऐसी क़ौम से वासित़ा पड़ा जिन पर औ़रतें ग़ालिब हैं।" येह सुन कर हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुस्कुराए। मैं ने कहा :

"या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं ह़फ़्सा के पास गया था और उसे कहा : आप अपने साथ वाली (या'नी ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا) पर कभी रश्क न करना क्यूंकि वोह तुम से ज़ियादा ह़सीन और शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पसन्दीदा ज़ौजा है।" येह सुन कर सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दोबारा मुस्कुरा दिये। जब मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दोबारा मुस्कुराते देखा तो बैठ गया और कमरे में निगाह दौड़ाई तो सिवाए तीन चमड़ों के कुछ भी नज़र न आया। मैं ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! दुआ़ फ़रमाएं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप की उम्मत पर कुशादगी करे, फ़ारिस और रूम पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वुस्अ़त फ़रमाई है ह़ालांकि वोह लोग तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत भी नहीं करते।" येह सुन कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सीधे हो कर तशरीफ़ फ़रमा हो गए। फिर फ़रमाया : "ऐ इब्ने ख़त्ताब ! येह वोह क़ौम हैं जिन्हें दुन्या ही में ने'मतें दे दी गई हैं। आख़िरत में इन का ह़िस्सा नहीं।"

एक रिवायत में यूं है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ग़ुलाम से एक बार यूं भी कहा था कि : "ऐ रबाह़ ! (ग़ुलाम का नाम) मेरे लिये इजाज़त मांगो। मुझे गुमान है कि शायद रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह समझे हैं कि मैं ह़फ़्सा की (ह़िमायत में) बात करने आया हूं। ख़ुदा की क़सम ! अगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हुक्म फ़रमाएं तो मैं अपनी बेटी ह़फ़्सा की गर्दन उड़ा दूं।"[1] फिर आगे मुकम्मल वाक़िआ़ है।

इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस त़वील ह़दीसे पाक से इ़ल्मो ह़िक्मत के बे शुमार मदनी फूल चुनने को मिलते हैं, चन्द मदनी फूल पेशे ख़िदमत हैं इन्हें अपने दिल के मदनी गुलदस्ते में सजा लीजिये :

.....ह़ुसूले इ़ल्मे दीन का ह़रीस होना सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सुन्नत है। इसी लिये तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه और आप के दोस्त अन्सारी सह़ाबी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه बारी बारी दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते थे।

---

1 .....بخاری، کتاب النکاح، باب موعظة الرجل ابنته لحال زوجها، ج ۳، ص ۴۶۰، حدیث: ۵۱۹۱ ملتقطا۔
مسلم، کتاب الطلاق، باب فی الایلاء واعتزال النساء، ص ۷۸۵، حدیث: ۳۰۔

.....इल्म के हुसूल के साथ साथ अपने और अहलो इयाल की कफ़ालत का इन्तिज़ाम भी करना चाहिये जैसा कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक दिन हुसूले इल्म के लिये जाते थे और एक दिन रिज़्के़ ह़लाल में मश्गूल रहते।

.....सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان एक दूसरे को हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अह़वाल और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अह़ादीस से मुत्तलअ़ करते रहते थे, जैसे उस अन्सारी सह़ाबी ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुत्तलअ़ किया।

.....इस ह़दीसे मुबारका से येह भी मा'लूम हुवा कि वालिद का अपनी बेटी के घर उस के शोहर की इजाज़त के बिग़ैर दाखि़ल होना जाइज़ है जब कि कोई मानेए़ शरई न हो जैसा कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी बेटी उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर तशरीफ़ ले गए।

.....ता़लिबे इल्म को चाहिये कि अपने उस्ताद से खड़े हो कर सुवाल करे कि इसी में इल्म और साहि़बे इल्म (या'नी उस्ताद) की ता'ज़ीम व अदब है। जैसा कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने खड़े खड़े रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस्तिफ़्सार फ़रमाया।

.....सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان अपने मह़बूब आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी बातें सुनने के शैदाई थे और सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ामोशी इन के लिये निहायत ही तक्लीफ़ देह थी। जैसा कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ामोशी की इस ह़ालत में देखा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रहा न गया। तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का येह त़र्ज़े अ़मल था कि वोह अपने रऊफ़ुर्रह़ीम, रह़मतुल्लिल आ़लमीन आक़ा की रह़मत ही को त़लब करते हैं और प्यारी प्यारी मुस्कुराहटों से लुत़्फ़ अन्दोज़ होते थे नीज़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ज़ब से पनाह मांगते थे क्यूंकि वोह जानते थे कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नाराज़ी रब की नाराज़ी है और रब की नाराज़ी में तो हलाकत ही है।

.....इस ह़दीसे मुबारका से येह भी मा'लूम हुवा कि गुफ़्त्गू के ज़रीए दिलजूई करना भी सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की सुन्नत है जैसा कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की गुफ़्त्गू के ज़रीए दिलजूई की।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रसूलुल्लाह की गुस्ताख़ी पर ग़ैरते फ़ारूक़े आ'ज़म

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुमैद साइदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स से उ़म्दा खजूरें उधार लीं। वोह शख़्स आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अपने ह़क़ का तक़ाज़ा करने लगा। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "आज तो कुछ मुयस्सर नहीं, अगर चाहो तो कुछ दिन मोहलत दो जब भी कुछ मुयस्सर आएगा हम तुम्हारा क़र्ज़ लौटा देंगे।" वोह कहने लगा : "हाए धोका !" येह सुनना था कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जलाल में आ गए और आप का रंग मुतग़य्यर हो गया। आप की येह कैफ़िय्यत देख कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **دَعْنَا یَا عُمَرُ! فَاِنَّ لِصَاحِبِ الْحَقِّ مَقَالًا** "या'नी ऐ उ़मर ! छोड़ दो क्यूंकि ह़क़दार को बात करने की इजाज़त होती है।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चन्द अस्ह़ाब को ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़ौला बिन्ते ह़कीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास भेजा ताकि मा'लूम कर के आएं कि उन के पास कुछ खजूरें वग़ैरा हैं या नहीं ? मा'लूम हुवा कि उन के पास खजूरें हैं, फिर उन खजूरों से क़र्ज़ की अदाएगी कर दी गई। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़र्ज़ लेने वाले के पास तशरीफ़ लाए और इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि "क्या तुम्हारे क़र्ज़ की अदाएगी मुकम्मल हो गई है ?" अ़र्ज़ की : "जी हुज़ूर ! आप ने क़र्ज़ की अदाएगी कर दी है और मुझे तक्लीफ़ से नजात दे दी है।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा बन्दे वोही हैं जो अपने क़र्ज़ की अदाएगी करने वाले और तक्लीफ़ से नजात देने वाले हैं।"(2)

1 ......عمدة القاری، کتاب النکاح، باب موعظة الرجل۔۔۔الخ، ج ۱۴، ص ۱۶۴، تحت الحدیث: ۵۱۹۱ ملتقطاً۔

2 ......معجم صغیر، باب المیم، من اسمه محمد، ج ۲، ص ۹۸، حدیث: ۱۰۴۲۔

रसूलुल्लाह की बारगाह का अदबो एहतिराम

सरकार की बारगाह में आवाज़ बुलन्द न करते

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई : ﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِیِّ﴾ (پ۲۶، الحجرات:۲) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "ऐ ईमान वालो अपनी आवाज़ें ऊंची न करो उस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से।" इस आयत के नाज़िल होने के बा'द अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब भी हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कलाम करते तो इतनी धीमी आवाज़ से बात करते कि आप की आवाज़ सुनाई न देती थी और पूछना पड़ता था कि क्या कह रहे हैं ? तब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह आयते करीमा नाज़िल फ़रमाई :

﴿اِنَّ الَّذِیْنَ یَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰىؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ عَظِیْمٌ ۝۳﴾ (پ۲۶، الحجرات:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक वोह जो अपनी आवाज़ें पस्त करते हैं रसूलुल्लाह के पास वोह हैं जिन का दिल **अल्लाह** ने परहेज़गारी के लिये परख लिया है उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है।"(1)

रसूलुल्लाह की ता'ज़ीम और अदबो एहतिराम

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक बार मैं हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ऊंटनी पर शरीके सफ़र था। बसा औक़ात मैं हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से आगे हो जाता था तो मेरे वालिदे माजिद अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे डांटते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दुल्लाह ! किसी शख़्स को येह ज़ैब नहीं देता कि वोह सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से आगे हो।"(2)

1 ......بخاری، کتاب التفسیر، سورۃ الحجرات، ج۳، ص۱۳۳، حدیث:۴۸۴۵ مختصراً۔

2 ......بخاری، کتاب الھبۃ وفضلھا۔۔۔الخ، من اھدی لہ ھدیۃ۔۔۔الخ، ج۲، ص۱۷۹، حدیث:۲۶۱۰ مختصراً۔

प्यारे आक़ा के लिये पानी ले कर पीछे दौड़ पड़े

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहूरो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ज़ाए हाजत के लिये तशरीफ़ ले गए तो कोई आप के साथ न था । अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दौड़ कर सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक पहुंच गए । क्या देखते हैं सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक छप्पर के नीचे बारगाहे इलाही में सजदा रेज़ हैं । सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पीछे हट कर एक त़रफ़ खड़े हो गए । जैसे ही ख़ातमुल मुर्सलीन, रहमतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सजदे से सर उठाया तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ देखा और इरशाद फ़रमाया : ''ऐ उ़मर ! तुम ने बहुत अच्छा किया मुझ को सजदे में देख कर तुम एक त़रफ़ हो गए । अभी जिब्रीले अमीन मेरे पास आए और कहा कि आप की उम्मत में से जो शख़्स आप पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस बार दुरूद भेजता है ।''[1]

दुन्या व माफ़ीहा से महबूब

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन हिशाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हम सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास बैठे थे । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हाथ अपने हाथ में पकड़ रखा था । सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : لَاَنْتَ اَحَبُّ اِلَيَّ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ اِلَّا مِنْ نَفْسِي ''या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप मुझे अपनी जान के इ़लावा हर चीज़ से ज़ियादा महबूब हैं ।'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَا وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهٖ حَتّٰى اَكُوْنَ اَحَبَّ اِلَيْكَ مِنْ نَفْسِكَ ''नहीं ! उ़मर उस रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! (तुम्हारी महब्बत उस वक़्त तक कामिल नहीं होगी) जब तक मैं तुम्हारे नज़दीक तुम्हारी जान से भी ज़ियादा महबूब न हो जाऊं ।'' सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : وَاللّٰهِ لَاَنْتَ اَحَبُّ اِلَيَّ مِنْ نَفْسِي ''या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुदा की क़सम ! आप मुझे अपनी जान से भी ज़ियादा महबूब हैं ।'' येह सुन कर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلْآنَ يَا عُمَرُ ''या'नी ऐ उ़मर ! अब (तुम्हारी महब्बत कामिल हो गई ।)[2]

---

1 ......معجم اوسط، بقية ذكر من اسمه محمد، ج ۵، ص ۲۸، حديث: ۲۶۰۲۔

2 ......بخاری، کتاب الایمان والنذور، باب کیف کانت یمین النبی، ج ۴، ص ۲۸۳، حدیث: ۶۶۳۲۔

इश्क़ो महब्बत का दूसरा रुख़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अब तक आप ने जितने भी अक़्वाल व वाक़िआत मुलाहज़ा किये वोह अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इश्क़ो महब्बत से मुतअ़ल्लिक़ थे, अब आप वोह अहादीसे मुबारका व वाक़िआत मुलाहज़ा कीजिये जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से महब्बत व उल्फ़त से मुतअ़ल्लिक़ हैं।

अहादीस फ़ज़ाइले फ़ारूके़ आ'ज़म

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बे शुमार फ़ज़ाइलो मनाक़िब अहादीसे मुबारका में बयान हुवे हैं। और सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام तो बारगाहे रिसालत में येह अ़र्ज़ करते हैं :

لَوْ جَلَسْتُ مَعَکَ مِثْلَ مَا جَلَسَ نُوْحٌ فِيْ قَوْمِهٖ مَا بَلَغْتُ فَضَائِلَ عُمَرَ وَلَيَبْكِيَنَّ الْاِسْلَامُ بَعْدَ مَوْتِکَ يَا مُحَمَّدُ عَلٰى عُمَر

''या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगर मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास बैठ कर इतना अ़र्सा हज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के फ़ज़ाइल बयान करूं जितना हज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपनी क़ौम में (तब्लीग़ के लिये) ठहरे रहे (या'नी 950 साल) तब भी हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के फ़ज़ाइल बयान न कर सकूं और या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस्लाम आप के विसाले ज़ाहिरी के बा'द हज़रते उ़मर की वफ़ात पर ज़रूर रोएगा।''[1]

बा'दे सिद्दीक़े अक्बर सब से अफ़्ज़ल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अहले सुन्नत का इस बात पर इजमाअ़ है कि अम्बिया व रुसुल बशर व रुसुले मलाइका عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बा'द सब से अफ़्ज़ल हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं, इन के बा'द अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़, इन के बा'द हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, इन के बा'द हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा, इन के बा'द अ़शरए मुबश्शरा के बक़िय्या सहाबए किराम, इन के बा'द बाक़ी अहले बद्र, इन के बा'द बाक़ी अहले उहुद, इन के बा'द बाक़ी अहले बैअ़ते रिज़्वान, फिर तमाम सहाबए किराम (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن)[2]

---

1 ......اللآلی المصنوعة، ج ۱، ص ۲۷۸، لسان المیزان، حرف الحاء من اسمه الحبیب، ج ۲، ص ۳۰۸، الرقم: ۲۲۹۱۔

2 ......منح الروض الازهر، ص ۳۴۴ ملتقطاً، बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा 1, स. 251

सिद्दीक़, अव्वलीं हैं ख़िलाफ़त के ताजदार
बा'द इन के उ़मर व उ़स्मानो हैदर हैं बिल यक़ीन
अल्लाह अल्लाह इन की अ़ज़मत और शाने सर बुलन्द
अम्बिया के बा'द इन का कोई भी हमसर नहीं

फ़ारूके़ आ'ज़म बा'दे सिद्दीके़ अक्बर सब से अफ़ज़ल

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ''हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़मानए मुबारका में सब से अफ़्ज़ल हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शुमार करते इन के बा'द हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को और इन के बा'द हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को।''(1)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरत के ज़िम्न में कई फ़ज़ाइल बयान हो चुके हैं। अब वोह फ़ज़ाइल बयान किये जाते हैं जो किसी बाब के ज़िम्न में बयान नहीं किये गए।

फ़ज़ाइले फ़ारूके़ आ'ज़म ब ज़बाने सरवरे दो आ़लम

अगर मेरे बा'द कोई नबी होता तो उ़मर होते

हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **لَوْ كَانَ بَعْدِیْ نَبِیًّا لَكَانَ عُمَر** ''या'नी अगर मेरे बा'द कोई नबी होता तो उ़मर होता।''(2)

आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत परवानए शम्ए़ रिसालत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن इस ह़दीसे मुबारका को ज़िक्र करने के बा'द इरशाद फ़रमाते हैं : ''आप (सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की फ़ित़रत इतनी कामिल थी कि अगर दरवाज़ए नबुव्वत बन्द न होता तो मह़ज़ फ़ज़्ले इलाही से वोह नबी हो सकते थे कि अपनी ज़ात के ए'तिबार से नबुव्वत का कोई मुस्तह़िक़ नहीं।''(3)

1 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب فضل ابی بکر بعد النبی، ج ۲، ص ۵۱۸، حدیث: ۳۶۵۵۔

2 ......ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی حفص ۔۔۔ الخ، ج ۵، ص ۳۸۵، حدیث: ۳۸۰۶۔

3 .....फ़तावा रज़विय्या, जि. 29, स. 373।

रसूलुल्लाह का फ़ारूक़े आ'ज़म से दुआ़ के लिये फ़रमाना

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि मेरे वालिदे गिरामी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से उ़मरह पर जाने की इजाज़त चाही तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इजाज़त देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ऐ मेरे भाई ! अपनी दुआ़ में हमें न भूल जाना।" बा'ज़ रिवायात में यूं भी आया है कि "ऐ मेरे भाई ! अपनी दुआ़ में हमें भी शामिल रखना।" अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "जहां की तमाम तर ने'मतों से बढ़ कर मेरे लिये येह बड़ी ने'मत है कि आप ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ मेरे भाई।"[1]

दुआ़ के लिये फ़ारूक़े आ'ज़म के पास भेजा

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौर में क़ह़त़ पड़ा तो एक शख़्स ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे मुनव्वर पर आया और अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से उम्मत के लिये बारिश मांगे, लोग हलाक हुवे जाते हैं।" सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : "तुम उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के पास जाओ और कहो कि लोगों के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से बारिश त़लब करें, यक़ीनन बादल बरसेगा और उ़मर से येह भी कहो कि दूर अन्देशी से काम लें।" उस शख़्स ने बारगाहे फ़ारूक़ी में ह़ाज़िर हो कर सारा ख़्वाब बयान कर दिया। ख़्वाब सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत रोए और फ़रमाया : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने उ़ज़्र के बिग़ैर तेरे अह़काम की बजा आवरी में कभी कमी नहीं छोड़ी।"[2]

---

1 ......ترمذی، کتاب الدعوات، باب من ابواب الدعوات، ج۵، ص ۳۲۹، حدیث: ۳۵۷۳۔
مسند امام احمد، مسند عمر بن الخطاب، ج ۱، ص ۷۰، حدیث: ۱۹۵۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الفضائل، ماذکر فی فضل عمر، ج ۷، ص ۴۸۲، حدیث: ۳۵، الاستیعاب، عمر بن الخطاب، ج ۳، ص ۲۳۸۔

दुरूद शरीफ़ और ज़िक्रे उ़मर से मजालिस को मुज़य्यन करो

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنہا से रिवायत है फ़रमाती हैं कि सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने इरशाद फ़रमाया : زَيِّنُوْا مَجَالِسَكُمْ بِالصَّلَاةِ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَبِذِكْرِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ "या'नी अपनी मजलिसों को मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ कर और उ़मर का ज़िक्र कर के आरास्ता करो।"[1]

फ़ारूके़ आ'ज़म "मुह़द्दस" हैं

फ़ारूके़ आ'ज़म उम्मते मुह़म्मदिय्या के मुह़द्दस हैं

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنہا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "पहली उम्मतों में मुह़द्दस होते थे मेरी उम्मत में अगर कोई **मुह़द्दस** है तो उ़मर है।"[2]

"मुह़द्दस" किसे कहते हैं ?

अ़ल्लामा मुह़िब्ब त़बरी علیہ رحمۃ اللہ القوی फ़रमाते हैं : "यहां मुह़द्दस का मा'ना येह है कि जिस पर रब्बानी इल्हाम हो, या'नी वोह लोग जिन पर वह़्य नहीं आती मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के आईनए क़ल्ब पर असरार नाज़िल फ़रमाता है।"[3]

फ़ारूके़ आ'ज़म उम्मत में कलाम करने वाले हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम से पहली उम्मतों में कुछ लोग होते थे जो नबी न होने के बा वुजूद कलाम करते थे, मेरी उम्मत में अगर कोई है तो उ़मर है।"[4]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۳۸۰۔

2 ......بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، حدیث الغار، ج ۲، ص ۴۶۲، حدیث: ۳۴۶۹۔

3 ......ریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۲۸۷۔

4 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۵۲۷، حدیث: ۳۶۸۹۔

फ़ारूके़ आ'ज़म की उख़रवी शान

सब से पहले नामए आ'माल फ़ारूके़ आ'ज़म को दिया जाएगा

हज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मैं ने सुल्तानुल मुतवक्किलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि रोजे़ क़ियामत सब लोग जम्अ़ होंगे। उ़मर बिन ख़त्ताब एक जगह खड़े होंगे, उन के पास कोई चीज़ आएगी जो उन की हम शक्ल होगी और कहेगी : "ऐ उ़मर ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को मेरी त़रफ़ से बेहतर जज़ा अ़त़ा फ़रमाए।" वोह पूछेंगे : "तुम कौन हो ?" वोह कहेगी : "मैं इस्लाम हूं। ऐ उ़मर ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को बेहतर जज़ा दे।" इस के बा'द निदा आएगी : "ख़बरदार ! उ़मर बिन ख़त्ताब से पहले किसी को नामए आ'माल न दिया जाए, चुनान्चे, आप को सीधे हाथ में नामए आ'माल दे कर जन्नत की त़रफ़ रवाना कर दिया जाएगा।" शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने जन्नत निशान सुन कर अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत रोए और अपने सारे ग़ुलाम आज़ाद कर दिये।"(1)

सब से पहले ह़क़ उ़मर को सलाम करेगा

हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "कल बरोजे़ क़ियामत सब से पहले ह़क़ उ़मर फ़ारूक़ को सलाम करेगा और उन से मुसाफ़ह़ा करेगा और सब से पहले उन ही का हाथ पकड़ कर उन को जन्नत में दाख़िल कर देगा।"(2)

ह़क़ से मुराद या तो वोह फ़िरिश्ता है जिस के ज़रीए सवाब या'नी दुरुस्त बात का इल्हाम किया जाता है या वोह ह़क़ मुराद है जो बात़िल की ज़िद होता है। ह़क़ का सलाम व मुसाफ़ह़ा करना उन के लिये मश्वरा वग़ैरा में ज़ाहिर होने से किनाया है या येह मुराद है कि कल बरोजे़ क़ियामत उस को जिस्म दे दिया जाएगा और वोह हाथ पकड़ कर आप को जन्नत में ले जाएगा।(3)

---

1 ......رياض النضرة، ج ۱، ص ۳۰۷۔

2 ......ابن ماجه، كتاب السنة، فضل عمر، ج ۱، ص ۷۶، حديث: ۱۰۴۔

3 ......حاشيه سندهي على ابن ماجه، كتاب السنة، فضل عمر، ج ۱، ص ۷۶، تحت الحديث: ۱۰۴ ملخصا۔

क़ियामत वालो ! फ़ारूके आ'ज़म को पहचान लो

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रोजे़ क़ियामत निदा आएगी : **اَیْنَ الْفَارُوْقُ** "या'नी फ़ारूक़ कहां हैं ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को पेश किया जाएगा। फिर कहा जाएगा : **مَرْحَباً بِکَ یَا اَبَا حَفْصٍ هٰذَا کِتَابُکَ اِنْ شِئْتَ فَاقْرَاْهُ وَاِنْ شِئْتَ فَلَا فَقَدْ غُفِرَتْ لَکَ** "या'नी ऐ अबू हफ़्स ! येह तुम्हारा आ'माल नामा है, चाहो तो पढ़ो, चाहो तो रहने दो मैं ने तुम्हें बख़्श दिया है।" इस्लाम कहेगा : **یَا رَبِّ هٰذَا عُمَرُ اَعَزَّنِيْ فِيْ دَارِ الدُّنْيَا فَاَعِزَّهُ فِيْ عَرَصَاتِ الْقِيَامَةِ** "या'नी या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ येह उ़मर हैं, जिन्हों ने दुन्या में मुझे मुअ़ज़्ज़ज़ किया, तू इन्हें क़ियामत के मैदान में मुअ़ज़्ज़ज़ फ़रमा।" इस के साथ ही आप को एक नूरानी ऊंटनी पर बिठाया जाएगा, और दो ऐसे जुब्बे पहना दिये जाएंगे कि अगर उन में से एक भी दुन्या में खोल दिया जाए तो उस की महक से सारा जहान मुअ़त्तर हो जाए, आप की सुवारी के आगे सत्तर हज़ार झन्डे लहराते चले जा रहे होंगे। फिर आवाज़ आएगी : **يَا اَهْلَ الْمَوْقِفِ هٰذَا عُمَرُ فَاعْرِفُوْهُ** "या'नी येह उ़मर हैं। क़ियामत वालो ! इन्हें पहचान लो।"[1]

बारगाहे रिसालत से अ़ताकर्दा बशारतें

फ़ारूके आ'ज़म के लिये बारगाहे नबवी से मग़्फ़िरत की बशारत

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में हाज़िर हुवे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तक्या लगाए तशरीफ़ फ़रमा थे। आप ने वोह तक्या हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दे दिया तो सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : **صَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ** "या'नी रब्बुल आ़लमीन और रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सच फ़रमाया।" अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! हमें भी बताओ कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क्या फ़रमाया।" हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "मैं सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसे ही

---

1 ......رياض النضرة، ج ١، ص ٣١٨۔

तक्या लगाए तशरीफ़ फ़रमा थे। हुज़ूर सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह तक्या मुझे अ़ता फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया : مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَدْخُلُ عَلٰى اَخِيْهِ الْمُسْلِمِ فَيُلْقِي لَهُ وِسَادَةً اِكْرَامًا لَهُ اِلَّا غَفَرَ اللّٰهُ لَهُ "या'नी कोई भी मुसलमान अपने भाई के पास जाए और वोह उस की तकरीम करते हुवे अपना तक्या उसे दे दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की मग़फ़िरत फ़रमा देता है।"[1]

बारगाहे रिसालत से जन्नत की बशारत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ مِنْ اَهْلِ الْجَنَّةِ "या'नी उ़मर बिन ख़त्ताब जन्नती हैं।"[2]

अभी एक जन्नती शख़्स आएगा

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : يَطْلُعُ عَلَيْكُمْ رَجُلٌ مِنْ اَهْلِ الْجَنَّةِ فَاطَّلَعَ عُمَرُ "या'नी अभी तुम्हारे पास एक जन्नती शख़्स आएगा। तो हज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ ले आए।"[3]

जन्नत में प्यारे आक़ा की मइय्यत

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अबी औफ़ा से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : اَنْتَ مَعِي فِي الْجَنَّةِ ثَالِثُ ثَلَاثَةٍ مِنْ هٰذِهِ الْاُمَّةِ "या'नी ऐ उ़मर ! तुम जन्नत में मेरे साथ तीन में से तीसरे नम्बर पर होगे।"[4] (या'नी दाईं त़रफ़ सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, दरमियान में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और बाईं त़रफ़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

---

1. ......مستدرک حاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب تکریم المسلم۔۔۔الخ، ج۴، ص۷۸۳، حدیث: ۱۲۰۱۔
2. ......صحیح ابن حبان، کتاب اخبارہ عن۔۔۔الخ، مناقب الصحابۃ، ذکر اثبات الجنۃ لعمر، الجزء: ۹، ج۶، ص۱۸، حدیث: ۶۸۴۵۔
3. ......ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی حفص۔۔۔الخ، ج۵، ص۳۸۸، حدیث: ۳۷۱۴۔
4. ......تاریخ ابن عساکر، ج۴۴، ص۱۲۵۔

फ़ारूके आ'ज़म अहले जन्नत के आफ़्ताब

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **عُمَرُ سِرَاجُ اَهْلِ الْجَنَّةِ** "या'नी उमर फ़ारूक़ अहले जन्नत के लिये आफ़्ताब हैं।"(1)

मौला अली मुश्किल कुशा की तस्दीक़

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْكَرِيْم) फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि "उमर बिन ख़त्ताब अहले जन्नत का आफ़्ताब हैं।" जब येह बात अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मा'लूम हुई तो वोह सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के एक क़ाफ़िले के साथ हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْكَرِيْم) के पास तशरीफ़ लाए और उन से फ़रमाया : "आप ने ख़ातमुल मुर्सलीन, रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है कि **عُمَرُ ابْنُ الْخَطَّابِ سِرَاجُ اَهْلِ الْجَنَّةِ** या'नी उमर बिन ख़त्ताब आफ़्ताबे अहले जन्नत हैं ?" उन्हों ने कहा : "जी हां।" हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : **اُكْتُبْ لِیْ خَطَّكَ** "या'नी आप अपने हाथ से मुझे येह लिख दें।" हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْكَرِيْم) ने तहरीर लिख दी :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ هٰذَا مَا ضَمِنَ عَلِيُّ بْنُ اَبِيْ طَالِبٍ لِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ جِبْرِيْلَ عَنِ اللّٰهِ تَعَالٰى اَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ سِرَاجُ اَهْلِ الْجَنَّةِ

"या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रहम वाला, येह वोह तहरीर है जिसे अली बिन अबी तालिब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के लिये दो आलम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत कर के लिखा है और हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام से सुना और उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से येह फ़रमाने आलीशान सुना कि उमर बिन ख़त्ताब अहले जन्नत का आफ़्ताब हैं।"

---

(1)......تاريخ ابن عساكر، ج ۴۴، ص ۱۲۶۔

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह तह़रीर ले कर अपनी औलाद को दे दी और उन्हें वसिय्यत करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

اِذَا اَنَا مُتُّ وَغَسَّلْتُمُوْنِيْ وَكَفَّنْتُمُوْنِيْ فَادْرَجُوْا هٰذِهٖ مَعِيَ فِيْ كَفْنِيْ حَتّٰى اَلْقِىَ بِهَا رَبِّيْ

''या'नी जब मेरा इन्तिक़ाल हो जाए और तुम मुझे कफ़न और ग़ुस्ल दे चुको तो इसे मेरे कफ़न में रख देना मैं इसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश कर दूंगा।'' चुनान्चे, आप के इन्तिक़ाल के बा'द वोह तह़रीर आप के कफ़न में रख दी गई।(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म का जन्नत में तय्यार शुदा मह़ल

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इरशाद फ़रमाया कि मैं जन्नत में दाख़िल हुवा वहां मैं ने सोने और जवाहिरात से बना हुवा एक मह़ल देखा। मैं ने पूछा : ''येह मह़ल किस का है ?'' कहा गया : ''येह उ़मर फ़ारूक़ का मह़ल है।'' तो मैं ने उस में दाख़िल होना चाहा, मगर ऐ उ़मर ! मुझे तुम्हारी ग़ैरत याद आ गई। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! क्या मैं आप पर ग़ैरत खाऊंगा ?''(2)

कु़रशी नौजवान का जन्नती मह़ल

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि मैं ने जन्नत में एक मह़ल देखा तो मैं ने कहा : ''येह किस का है ?'' बताया गया कि ''येह एक कु़रैशी नौजवान का है।'' मैं ने पूछा : ''वोह नौजवान कौन है ?'' कहा गया : ''उ़मर बिन ख़त्त़ाब है।''(3)

येह मह़ल किस का है...?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि मैं ने ख़्वाब में एक बार ख़ुद को जन्नत में देखा, वहां एक

---

1 ......رياض النضرة، ج ۱، ص ۳۱۱۔

2 ......بخاری، كتاب النكاح، باب الغيرة، ج ۳، ص ۴۷۰، حديث: ۵۲۲۶۔

3 ......مسند امام احمد، مسند انس بن مالک، ج ۴، ص ۲۱۵، حديث: ۱۲۰۴۶۔

महल की दीवार के साथ एक औ़रत वुज़ू कर रही थी, मैं ने कहा : "येह महल किस का है ?" वोह कहने लगी : "उ़मर बिन ख़त्ताब का है।" तो ऐ उ़मर ! मुझे तुम्हारी ग़ैरत याद आई तो मैं वापस लौट आया। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ येह सुन कर रो पड़े, हम भी मजलिस में बैठे थे। वोह कहने लगे : اَوَعَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَغَارُ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या मुझे आप पर ग़ैरत आ सकती है ?"(1)

अ़रबी नौजवान का जन्नती महल

ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सुल्ता़नुल मुतवक्किलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सुब्ह़ के वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल ह़बशी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलाया और फ़रमाया : يَا بِلَالُ بِمَ سَبَقْتَنِي اِلَى الْجَنَّةِ مَا دَخَلْتُ الْجَنَّةَ قَطُّ اِلَّا سَمِعْتُ خَشْخَشَتَكَ اَمَامِي "या'नी ऐ बिलाल ! तुम जन्नत में मुझ से पहले कैसे चले गए ? मैं जन्नत में जब भी गया हूं तुम्हारे क़दमों की आहट मेरे आगे होती है।" फिर इरशाद फ़रमाया : "आज रात मैं जन्नत में गया तो तुम्हारे क़दमों की आवाज़ मेरे आगे आगे थी, मैं ने वहां एक बहुत बुलन्द सोने का महल देखा।" फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जन्नती फ़िरिश्तों और अपने दरमियान होने वाले मुकालमे को यूं बयान फ़रमाया :

.....मैं ने कहा : لِمَنْ هٰذَا الْقَصْرُ "या'नी येह महल किस का है ?"

जन्नती फ़िरिश्ते कहने लगे : لِرَجُلٍ مِنَ الْعَرَبِ "या'नी अ़रब के एक आदमी का है।"

.....मैं ने कहा : اَنَا عَرَبِيٌّ لِمَنْ هٰذَا الْقَصْرُ "या'नी अ़रबी तो मैं भी हूं फिर येह किस का है ?"

वोह कहने लगे : "لِرَجُلٍ مِنْ قُرَيْشٍ या'नी वोह आदमी क़ुरशी भी है।"

.....मैं ने कहा : اَنَا قُرَشِيٌّ لِمَنْ هٰذَا الْقَصْرُ "या'नी क़ुरशी तो मैं भी हूं फिर येह किस का है ?"

वोह कहने लगे : لِرَجُلٍ مِنْ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ "या'नी वोह शख़्स उम्मते मुह़म्मदिय्या में से है।"

.....मैं ने कहा : اَنَا مُحَمَّدٌ لِمَنْ هٰذَا الْقَصْرُ "या'नी मुह़म्मद तो मैं हूं फिर येह मेरे किस उम्मती का है ?"

वोह कहने लगे : لِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ "या'नी येह उ़मर बिन ख़त्ताब का है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाले ह़बशी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब दिया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक अ़मल तो येह है कि मैं हमेशा अज़ान के बा'द दो रक्अ़त पढ़ता हूं और दूसरा

1 ......بخاری، کتاب النکاح، باب الغیرۃ، ج ۳، ص ۴۷۰، حدیث: ۵۲۲۶۔

अ़मल येह है कि जिस वक़्त भी वुज़ू टूटे फिर से वुज़ू कर लेता हूं और मैं ने यूं समझ लिया है कि हर वुज़ू के बा'द दो रक्अ़त पढ़ना मेरे लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ज़रूरी है।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इन्ही दो अ़मलों के सबब तुम्हारा येह मक़ाम है।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म के रफ़ीक़े जन्नत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, एक मरतबा दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से इरशाद फ़रमाया : "**اَلَا اُبَشِّرُکِ** या'नी ऐ आ़इशा ! क्या मैं तुम्हें खुश ख़बरी न दूं ?" अ़र्ज़ की : "क्यूं नहीं या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم !" फ़रमाया :

- ....."तुम्हारे वालिद या'नी अबू बक्र जन्नती हैं और जन्नत में उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام होंगे।"
- **....."उ़मर जन्नती हैं उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام होंगे।"**
- ....."उ़स्मान जन्नती हैं उन का रफ़ीक़ मैं खुद हूं।"
- ....."अ़ली जन्नती हैं उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते यह़्या बिन ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام होंगे।"
- ....."त़ल्ह़ा जन्नती हैं उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام होंगे।"
- ....."ज़ुबैर जन्नती हैं उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام होंगे।"
- ....."सा'द बिन अबी वक़्क़ास जन्नती हैं उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते सुलैमान बिन दावूद عَلَيْهِ السَّلَام होंगे।"
- ....."सईद बिन ज़ैद जन्नती हैं उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते मूसा बिन इमरान عَلَيْهِ السَّلَام होंगे।"
- ....."अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ जन्नती हैं उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा बिन मरयम عَلَيْهِ السَّلَام होंगे।"
- ....."अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ जन्नती हैं उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते सय्यिदुना इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام होंगे।"

फिर फ़रमाया : "ऐ आ़इशा ! मैं मुर्सलीन का सरदार हूं और तुम्हारे वालिद अफ़्ज़लुस्सिद्दीक़ीन (या'नी सिद्दीक़ीन में सब से अफ़्ज़ल) हैं और तुम उम्मुल मोमिनीन (या'नी तमाम मोमिनों की मां) हो।"(2)

---

1 ......ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی حفص۔۔۔الخ، ج۵، ص۳۸۵، حدیث: ۳۷۰۹۔

2 ......ریاض النضرۃ، ج۱، ص۳۵۔

फ़ारूके़ आ'ज़म फ़ित्नों को रोकने का ताला हैं

फ़ारूके़ आ'ज़म के होते कोई फ़ित्ना नहीं होगा

हज़रते सय्यिदुना हसन फ़िरदौसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मिले और मुसाफ़हा करते हुवे ज़ोर से इन का हाथ दबाया । सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बोले : دَعْ يَدِيْ يَا قُفْلَ الْفِتْنَةِ "या'नी ऐ फ़ित्ने के ताले ! मेरा हाथ छोड़ दें।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ अबू ज़र ! फ़ित्ने के ताले का क्या मत़लब ?" इन्हों ने अ़र्ज़ किया : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक दिन सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवे और हम एक साथ बैठे हुवे थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों की गर्दनें फलांग कर आगे आने के बजाए, पीछे ही बैठना पसन्द किया। चुनान्चे, आप तमाम के पीछे बैठ गए। आप को देख कर दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَا تُصِيْبُكُمْ فِتْنَةٌ مَّا دَامَ هٰذَا فِيْكُمْ "या'नी जब तक येह उमर तुम्हारे दरमियान मौजूद है, तुम्हें कोई फ़ित्ना नहीं पहुंचेगा। (या'नी फ़ित्नों के दरवाज़े पर ताला लगा रहेगा।)[1]

फ़ारूके़ आ'ज़म फ़ित्नों को रोकने का दरवाज़ा हैं

फ़ारूके़ आ'ज़म फ़ित्नों को रोकने वाला दरवाज़ा हैं

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हम अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास बैठे हुवे थे । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اَيُّكُمْ يَحْفَظُ قَوْلَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْفِتْنَةِ "या'नी फ़ित्ने के बारे में किसी को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की कोई ह़दीस याद है ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "मुझे याद है।" फ़रमाया : "सुनाओ तुम्हारा येही मन्सब है।" मैं ने ह़दीस सुनाते हुवे कहा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मैं ने येह सुना है कि فِتْنَةُ الرَّجُلِ فِي أَهْلِهِ وَمَالِهِ وَوَلَدِهِ وَجَارِهِ تُكَفِّرُهَا الصَّلَاةُ وَالصَّوْمُ وَالصَّدَقَةُ وَالْاَمْرُ وَالنَّهْيُ "या'नी इन्सान का फ़ित्ना उस के अहले ख़ाना, माल, जान, औलाद और पड़ोसियों के बारे में होता है जो रोज़ा, नमाज़, सदक़ा, और नेकी के हुक्म देने और बुराई से रोकने की वज्ह से मिट जाता है।" येह

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۳۳۴۔

ह़दीसे पाक सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : لَيْسَ هَذَا اُرِيدُ وَلَكِنَّ الْفِتْنَةَ الَّتِي تَمُوجُ كَمَا يَمُوجُ الْبَحْرُ "या'नी येह ह़दीसे पाक नहीं बल्कि मैं उस ह़दीस की बात कर रहा हूं जिस में उस फ़ितने की बात है जो समन्दर की त़रह़ मौज मारेगा।" मैं ने कहा : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप का इस से क्या वासित़ा ? अभी तो इस फ़ितने का दरवाज़ा बन्द है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : اَيُكْسَرُ اَمْ يُفْتَحُ "या'नी वोह दरवाज़ा तोड़ा जाएगा या खोला जाएगा ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : يُكْسَرُ "या'नी तोड़ा जाएगा और फिर कभी बन्द नहीं हो सकेगा।" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان फ़रमाते हैं कि हम ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बा'द में पूछा : اَكَانَ عُمَرُ يَعْلَمُ الْبَابَ "या'नी क्या अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उस दरवाजे़ का इ़ल्म था ?" उन्हों ने कहा : نَعَمْ! كَمَا اَنَّ دُوْنَ الْغَدِ اللَّيْلَةَ "जी हां बिल्कुल इ़ल्म था बल्कि ऐसा इ़ल्म था जैसे कल दिन से पहले रात का आना यक़ीनी मा'लूम होता है और हां ! मैं ने उन्हें जो कुछ बताया वोह कोई ग़लत़ बातों का मजमूआ़ नहीं था बल्कि बिल्कुल सह़ीह़ बातें थीं।" बहर ह़ाल सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان फ़रमाते हैं कि हम ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से उन की हैबत के पेशे नज़र कोई सुवाल न कर सके अलबत्ता उन के ग़ुलाम सय्यिदुना मसरूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : اَلْبَابُ عُمَرُ "या'नी फ़ितनों को रोकने वाला वोह दरवाज़ा ख़ुद अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ात है।"[1]

फ़ारूके़ आ'ज़म जहन्नम से बचाने वाले हैं

जहन्नम का ताला

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास से गुज़रे जो आराम फ़रमा रहे थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन का पाउं हिला कर कहा : "कौन हो ?" उन्हों ने कहा : "अमीरुल मोमिनीन का बेटा अ़ब्दुल्लाह हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : قُمْ يَا ابْنَ قُفْلِ جَهَنَّمَ "या'नी ऐ जहन्नम के ताले के बेटे ! उठ जाओ।" अपने वालिदे मोह़तरम के मुतअ़ल्लिक़ येह अल्फ़ाज़ सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उठे तो ग़ुस्से से उन का चेहरा सुर्ख़ हो चुका था, उठते

---

(1) .....بخاری، کتاب مواقیت الصلاۃ، باب الصلاۃ کفارۃ، ج ۱، ص ۱۹۵، حدیث: ۵۲۵۔

ही अपने वालिदे गिरामी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ किया : ''يَا اَبَةِ اَمَا سَمِعْتَ مَا قَالَ ابْنُ سَلَامٍ لِيْ या'नी ऐ अब्बा जान ! कुछ सुना आप ने ! अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क्या कहा है ?'' आप ने फ़रमाया : ''क्या बात है ? उन्हों ने क्या कहा है ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : ''उन्हों ने आप को जहन्नम का ताला कहा है।''

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह सुन कर इरशाद फ़रमाया :

اَلْوَيْلُ لِعُمَرَ اَنْ كَانَ بَعْدَ عِبَادَةِ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً وَمُصَاهَرَتُهُ لِرَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَضَايَاهُ بَيْنَ الْمُسْلِمِيْنَ بِالْاِقْتِصَادِ اَنْ يَّكُوْنَ مَصِيْرَهُ اِلٰى جَهَنَّمَ حَتّٰى يَعْنِيْ يَكُوْنُ قُفْلًا لِجَهَنَّمَ

''या'नी उ़मर का ठिकाना जहन्नम हो बल्कि वोह उस का ताला बन जाए तो उस के लिये हलाकत ही हलाकत है। अगर्चे वोह चालीस साल तक इबादत करता रहे, उस का रसूलुल्लाह से सुसराली रिश्ता भी हो, लोगों के दरमियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसला भी करे।'' फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब्ज़ चादर ज़ेबे तन की, फ़ारूक़ी दुर्रा कन्धे पर रखा और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास पहुंचे। इस्तिफ़्सार फ़रमाया : يَا ابْنَ سَلَامٍ بَلَغَنِيْ اَنَّكَ قُلْتَ لِابْنِيْ قُمْ يَا ابْنَ قُفْلِ جَهَنَّمَ ''या'नी ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ! आप ने मेरे बेटे को येह कहा है : ऐ जहन्नम के ताले के बेटे।'' उन्हों ने अ़र्ज़ किया : ''जी हां।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : كَيْفَ عَلِمْتَ اَنِّيْ فِيْ جَهَنَّمَ ''या'नी तुम्हें मेरे जहन्नमी बल्कि जहन्नम का ताला होने की ख़बर कैसे हुई ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ किया : مَعَاذَ اللّٰهِ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْ تَكُوْنَ فِيْ جَهَنَّمَ وَلٰكِنَّكَ قُفْلُ جَهَنَّمَ ''या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जहन्नमी नहीं कहा बल्कि जहन्नम का ताला कहा है।'' फ़रमाया इस का क्या मत़लब ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि मुझे मेरे वालिदे गिरामी ने अपने वालिद और दादा से रिवायत करते हुवे येह बात बताई कि ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام से सुन कर येह बात इरशाद फ़रमाई :

يَكُوْنُ فِيْ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلٌ يُقَالُ لَهُ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ..... ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत में एक शख़्स आएगा, जिसे लोग **उ़मर बिन ख़त्ताब** कहेंगे।''

✿..... اَحْسَنُ النَّاسِ دِيْنًا وَّ اَحْسَنُهُمْ يَقِيْنًا مَادَامَ بَيْنَهُمُ الدِّيْنُ عَالِيٍ وَالدِّيْنُ فَاشٍ वोह सब से बेहतर दीन व यक़ीन वाला होगा, जब तक दुन्या वालों में रहेगा उन का दीन गा़लिब और यक़ीन मोह़कम रहेगा।"

✿..... وَاسْتَمْسَکَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى مِنَ الدِّيْنِ فَجَهَنَّمُ مُقْفَلَةٌ "लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रस्सी को मज़बूती से पकड़े रहेंगे और जहन्नम को ताला लगा रहेगा।"

✿..... فَاِذَا مَاتَ عُمَرُ يَرِقُّ الدِّيْنُ وَيَقِلُّ الْيَقِيْنُ وَتَقِلُّ اَعْمَارُ الصَّالِحِيْنَ وَافْتَرَقَ النَّاسُ عَلٰى فِرَقٍ مِّنَ الْاَهْوَاءِ "जब वोह चला जाएगा दीन कमज़ोर हो जाएगा, यक़ीन कम हो जाएगा, सालिह़ीन की उ़म्रें कम हो जाएंगी और लोग गुरौह दर गुरौह हो जाएंगे।"

✿..... فُتِحَتْ اَقْفَالُ جَهَنَّمَ فَيَدْخُلُ فِيْ جَهَنَّمَ مِنَ الْاٰدَمِيِّيْنَ كَثِيْرٌ "जहन्नम के ताले टूट जाएंगे और लोग उस में दाखि़ल होना शुरूअ़ हो जाएंगे।"(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म लोगों को जहन्नम से बचाने वाले हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक शख़्स ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा : "सय्यिदुना का'ब अह़बार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कह रहे हैं : اِنَّکَ عَلٰى بَابٍ مِّنْ اَبْوَابِ النَّارِ "या'नी सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जहन्नम के दरवाज़ों में से एक दरवाजे़ पर हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह सुन कर ख़ौफ़ त़ारी हुवा और बार बार कहने लगे : "जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहेगा, जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहेगा।" फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब अह़बार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलाया और कहा : مَرَّةً فِی الْجَنَّةِ وَمَرَّةً فِی النَّارِ "या'नी क्या कोई शख़्स बयक वक़्त जन्नत और जहन्नम दोनों में जा सकता है ? (या'नी मुझे नबी عَلَيْهِ السَّلَام ने जन्नत की बशारत दी है और आप मुझे जहन्नम के दरवाजे़ पर खड़ा कर रहे हैं।) उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! क्या बात है और मेरे बारे में आप को क्या ख़बर पहुंची है।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे फ़ुलां शख़्स ने बताया है कि तुम ने मेरे मुतअ़ल्लिक़ येह कहा है।" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : اَجَلْ وَالَّذِيْ نَفْسِيْ بِيَدِهٖ اِنِّيْ لَاَجِدُکَ عَلٰى بَابٍ مِّنْ اَبْوَابِ النَّارِ قَدْ سَدَدْتَهٗ اَنْ يَدْخُلَ "या'नी जी हां मैं ने येह कहा है और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का मन्सब भी येही है। ख़ुदा की क़सम ! आप ने जहन्नम का दरवाज़ा बन्द कर

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۳۳۴۔

रखा है और किसी को अन्दर नहीं जाने दिया या'नी लोगों को इस्लाम की राह पर डाल दिया है और वोह जहन्नम में जाने से बच गए हैं।" येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की परेशानी जाती रही।[1]

जहन्नम के दरवाज़े पर

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी ज़ौजए मुक़द्दसा ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को बुलाया जो अमीरुल मोमिनीन मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) व ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मतुज़्ज़ह़रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की लाडली शहज़ादी थीं और वोह रो रही थीं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रोने का सबब पूछा तो अ़र्ज़ किया : يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ! هٰذَا الْيَهُوْدِيُّ يَقُوْلُ اِنَّکَ عَلٰى بَابٍ مِّنْ اَبْوَابِ جَهَنَّم "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! येह यहूदी का'ब अह़बार कहता है कि आप जहन्नम के दरवाज़ों में से एक दरवाज़े पर हैं।" (ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अजिल्लए अइम्मए ताबेई़न व उ़लमाए किताबीन व आ'लमे उ़लमाए तौरेत से हैं, पहले यहूदी थे, ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे, शाहज़ादिये मौला अ़ली का उस वक़्त गुस्से की ह़ालत में इन्हें इस लफ़्ज़ से ता'बीर फ़रमाना बर बिनाए नाज़ुक मिज़ाजी था कि लाज़िमए शाहज़ादगी है رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : مَاشَاءَ اللّٰهُ وَاللّٰهِ اِنِّيْ لَاَرْجُوْ اَنْ يَّكُوْنَ رَبِّيْ خَلَقَنِيْ سَعِيْدًا "या'नी जो रब عَزَّوَجَلَّ चाहे। ख़ुदा की क़सम ! मुझे यक़ीन है कि मेरे रब ने मुझे सई़द (या'नी ख़ुश बख़्त) पैदा किया है।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुला भेजा, उन्हों ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ! لَا تَعْجَلْ عَلَيَّ، وَالَّذِيْ نَفْسِيْ بِيَدِهٖ لَا يَنْسَلِخُ ذُو الْحِجَّةِ حَتّٰى تَدْخُلَ الْجَنَّةَ "या'नी या अमीरल मोमिनीन ! मुझ पर जल्दी न फ़रमाएं, उस रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! ज़ि़ल ह़िज्जा का महीना ख़त्म न होने पाएगा कि आप जन्नत में तशरीफ़ ले जाएंगे।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ैरान हो कर इरशाद फ़रमाया : اَيُّ شَيْءٍ هٰذَا مَرَّةً فِي الْجَنَّةِ وَمَرَّةً فِي النَّارِ؟ "या'नी ऐ का'ब ! येह क्या बात हुई कभी तो जहन्नमी कहते हो, कभी जन्नती कहते हो ?" अ़र्ज़ की : وَالَّذِيْ نَفْسِيْ بِيَدِهٖ! اِنَّا لَنَجِدُکَ فِيْ كِتَابِ اللّٰهِ عَلٰى بَابٍ مِّنْ اَبْوَابِ جَهَنَّمَ تَمْنَعُ النَّاسَ اَنْ يَّقَعُوْا فِيْهَا، فَاِذَا مُتَّ لَمْ يَزَالُوْا يَقْتَحِمُوْنَ فِيْهَا اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ

1 ......رياض النضرة، ج ۲، ص ۳۰۷۔

या'नी या अमीरल मोमिनीन ! क़सम उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! आप को किताबुल्लाह में जहन्नम के दरवाज़ों से एक दरवाज़े पर पाते हैं कि आप लोगों को जहन्नम में गिरने से रोके हुवे हैं, जब आप इन्तिक़ाल फ़रमाएंगे तो क़ियामत तक लोग जहन्नम में गिरते रहेंगे।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म की रिहलत पर इस्लाम रोएगा

हज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सुल्तानुल मुतवक्किलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि मेरे पास जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام आए तो मैं ने उन्हें कहा : اَخْبِرْنِيْ عَنْ فَضَائِلِ عُمَرَ وَمَاذَا لَهٗ عِنْدَ اللّٰهِ تَعَالٰى "या'नी उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की फ़ज़ीलत और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां उन की क़द्रो क़ीमत बयान करो।" वोह कहने लगे : لَوْ جَلَسْتُ مَعَكَ قَدْرَ مَا لَبِثَ نُوْحٌ فِيْ قَوْمِهٖ لَمْ اَسْتَطِعْ اَنْ اَخْبَرَكَ بِفَضَائِلِ عُمَرَ وَمَا لَهٗ عِنْدَ اللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगर मैं हज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام की उ़म्र जितना वक़्त आप के पास बैठूं तो भी उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ज़ाइल और बारगाहे इलाही में आप का मक़ामो मर्तबा बयान नहीं कर सकता।" फिर जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने कहा : لَيَبْكِيَنَّ الْاِسْلَامُ مِنْ بَعْدِ مَوْتِكَ عَلٰى مَوْتِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इस्लाम दो मरतबा रोएगा एक तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिह़लत पर और दूसरी मरतबा उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रिह़लत पर।" (2)

आस्मानी कुतुब में आप की ता'रीफ़

हज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मुल्के शाम में अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मेरी मुलाक़ात हुई तो मैं ने कहा : "किताबुल्लाह में लिखा है कि ऐसे शहर जिन में बनी इस्राईल का बसेरा होगा उन की फ़त्ह़ एक ऐसे शख़्स के हाथ पर होगी जो नेकोकार, मुसलमानों पर रह़ीम, काफ़िरों पर अ़ज़ाबे अलीम और ज़ाहिरो बातिन में एक जैसा होगा, उस के क़ौलो फ़े'ल में तज़ाद नहीं होगा, अपने और बेगाने उस की नज़र में बराबर होंगे,

---

1 .....طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۵۳، فتاوٰی رضویہ، ج ۳۰، ص ۷۱۲۔

2 .....تاریخ ابن عساکر، ج ۳۰، ص ۱۲۲، مسند ابی یعلی، مسند عمار بن یاسر، ج ۲، ص ۱۱۹، حدیث: ۱۶۰۰، ص ۱۷۹۔
ریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۳۱۷ ملتقطا۔

और उस के साथ रातों को इबादत करने वाले, दिन को रोज़ा रखने वाले और लोगों की ग़म ख़्वारी करने वाले होंगे।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : اَحَقٌّ مَاتَقُوْلُ ''या'नी जो आप कह रहे हैं क्या येह सच है ?'' मैं ने कहा : ''उस रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम जो मेरी बात सुन रहा है ! येह बिल्कुल सच है।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَعَزَّنَا وَ كَرَّمَنَا وَشَرَّفَنَا وَرَحِمَنَا بِنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ وَرَحْمَتِهِ الَّتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ''या'नी तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही के लिये हैं जिस ने हमें इ़ज़्ज़त फ़ज़ीलत और शराफ़त बख़्शी और हमारे प्यारे नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और अपनी रह़मत के सदके़ रह़म फ़रमाया जो हर शै को मुह़ीत़ है।''(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म पर रब का ख़ुसूसी करम

रोज़े अ़रफ़ा फ़ारूके़ आ'ज़म पर ख़ुसूसी करम

ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन रबाह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रोज़े अ़रफ़ा मुझ से इरशाद फ़रमाया : ''ऐ बिलाल ! लोगों को ख़ामोश कराओ।'' जब सब ख़ामोश हो गए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''आज अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम पर करम फ़रमाया है, तुम्हारी नेकियों के सबब तुम्हारे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दिये हैं और जितना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा सवाब अ़त़ा फ़रमाया है, तो तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बरकत पर यहां से निकल खड़े हो, आज अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़िरिश्तों के सामने तमाम अहले अ़रफ़ा (हु़ज्जाजे किराम) पर उ़मूमी करम फ़रमाया है और उ़मर बिन ख़त़्त़ाब पर ख़ुसूसी करम फ़रमाया है।''(2)

फ़ारूके़ आ'ज़म का दीन सब से ज़ियादा है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सई़द ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''मैं सोया हुवा था, मैं ने ख़्वाब देखा कि लोग मेरे सामने पेश किये जा रहे हैं जिन्हों ने क़मीसें पहन रखी हैं। किसी की क़मीस सिर्फ़ उस के

---

1 ......تفسیر نظم الدرر، پ۲۶، الفتح، تحت الآیۃ: ۲۹، ج۷، ص۲۱۷، ریاض النضرۃ، ج۱، ص۳۱۹۔

2 ......ریاض النضرۃ، ج۱، ص۳۰۳۔

सीने तक है, किसी की उस से लम्बी है। जब उ़मर बिन ख़त्ताब पेश हुवे तो उन की क़मीस ज़मीन तक लम्बी थी।" सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह मुबारक ख़्वाब सुन कर सहा़बए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में से किसी सहा़बी ने पूछा : مَا اَوَّلْتَ يَا نَبِيَّ اللّٰهِ ذَالِكَ؟ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप ने इस ख़्वाब की क्या ता'बीर मुराद ली है।" फ़रमाया : "दीन।"(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म से मह़ब्बत का सिला

सय्यिदुना अनस बिन मालिक की शैख़ैन से मह़ब्बत

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : مَتَى السَّاعَةُ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ियामत कब क़ाइम होगी ?" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया : وَمَاذَا اَعْدَدْتَ لَهَا "या'नी तुम ने इस के लिये क्या तय्यारी की है ?" तो उस ने अ़र्ज़ की : لَا شَيْءَ إِلَّا أَنِّي أُحِبُّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهُ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तय्यारी तो कुछ नहीं की, मगर मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत करता हूं।" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَنْتَ مَعَ مَنْ اَحْبَبْتَ "या'नी तुम जिस से मह़ब्बत करते हो उसी के साथ होगे।" ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि हमें किसी चीज़ से इतनी ख़ुशी ह़ासिल नहीं हुई जितनी ख़ुशी शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान से हुई कि "तुम जिस के साथ मह़ब्बत करते हो उसी के साथ होगे।" ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه इरशाद फ़रमाते हैं :

فَاَنَا اُحِبُّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاَبَابَكْرٍ وَعُمَرَ وَاَرْجُو اَنْ اَكُوْنَ مَعَهُمْ بِحُبِّي اِيَّاهُمْ وَاِنْ لَمْ اَعْمَلْ بِمِثْلِ اَعْمَالِهِمْ

"या'नी मैं सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) से मह़ब्बत करता हूं और मुझे उम्मीद है कि इन से मह़ब्बत करने की वज्ह से मैं इन्हीं के साथ होऊंगा अगर्चे मेरे आ'माल इन की मिस्ल नहीं हैं।"(2)

---

1 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عمر ــــ الخ، ج ۲، ص ۵۲۸، حدیث: ۳۶۹۱ـ

2 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عمر ــــ الخ، ج ۲، ص ۵۲۵، حدیث: ۳۶۸۸ـ

शारेहे ह़दीस अ़ल्लामा नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : ''इस ह़दीसे पाक में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ, उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, सालिह़ीन और अहले ख़ैर से मह़ब्बत की फ़ज़ीलत है, ख़्वाह वोह सालिह़ीन ह़यात हों या वफ़ात पा चुके हों । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत की अ़लामत येह है कि मुसलमान उन के अह़काम पर अ़मल करता है और जिन कामों से उन्हों ने मन्अ़ किया है उन से बाज़ रहता है । जब कि सालिह़ीन से मह़ब्बत में येह शर्त़ नहीं है कि उन के आ'माल की मिस्ल अ़मल करे क्यूंकि अगर वोह उन के आ'माल की मिस्ल करेगा तो वोह ख़ुद सालिह़ीन में से होगा, उन की मिस्ल होगा न कि उन के मुह़िब्बीन में से होगा ।''[1]

फ़ारूके़ आ'ज़म से मह़ब्बत करने का इनआ़म

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ اَحَبَّ عُمَرَ عُمِرَ قَلْبُهُ بِالْاِيْمَانِ ''या'नी जिस ने उ़मर से मह़ब्बत की उस का दिल ईमान से मा'मूर कर दिया जाएगा ।''[2]

फ़ारूके़ आ'ज़म की नाराज़ी रब की नाराज़ी

फ़ारूके़ आ'ज़म की नाराज़ी से अल्लाह नाराज़ होता है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) से रिवायत है कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِتَّقُوْا غَضَبَ عُمَرَ، فَاِنَّ اللّٰهَ يَغْضِبُ اِذَا غَضَبَ ''या'नी उ़मर के ग़ज़ब से बचा करो क्यूंकि उन की नाराज़ी पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी नाराज़ होता है ।''[3]

1 ......شرح صحیح مسلم، کتاب الفضائل، باب المرء مع من احب، ج ۱۶، ص ۱۸۶، تحت الحدیث: ۱۶۲ ۱۔

2 ......ریاض النضرة، ج ۱، ص ۳۱۹۔

3 ......جمع الجوامع، حرف الهمزه، ج ۱، ص ۸۳، حدیث: ۴۳۴۔

फ़ारूक़े आ'ज़म की रिज़ा हुक्म है

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَتَانِيْ جِبْرِيْلُ عَلَيْهِ السَّلَام فَقَالَ اِقْرَاْ عُمَرَ السَّلَامَ وَقُلْ لَهُ اِنَّ رِضَاهُ حُكْمٌ وَاِنَّ غَضَبَهُ عِزٌّ ''या'नी मेरे पास जिब्रीले अमीन (عَلَیْہِ السَّلَام) आए और कहा कि उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से सलाम दे दें और उन्हें येह बता दें कि उन की रिज़ा हुक्म है, और उन की नाराज़ी (दीन के लिये) इ़ज़्ज़त है।''[1]

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रिज़ा को हुक्म और आप के ग़ज़ब को दीन के लिये इ़ज़्ज़त इस लिये फ़रमाया गया है कि आप फ़क़त़ ह़क़ बात के लिये ही राज़ी होते और गुस्सा फ़रमाते हैं।[2]

जिस ने उ़मर से बुग़्ज़ रखा उस ने मुझ से बुग़्ज़ रखा

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

مَنْ اَحَبَّ عُمَرَ فَقَدْ اَحَبَّنِيْ وَمَنْ اَبْغَضَ عُمَرَ فَقَدْ اَبْغَضَنِيْ

''या'नी जिस ने उ़मर से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने उ़मर से बुग़्ज़ रखा उस ने मुझ से बुग़्ज़ रखा।''[3]

ज़िन्दगी में इ़ज़्ज़त और रिह़लत में शहादत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) रिवायत करते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : صَاحِبُ رَحَادَارَةُ الْعَرَبِ يَعِيْشُ حَمِيْدًا وَيَمُوْتُ شَهِيْدًا ''या'नी वोह शख़्स अ़रब के शहरों का सरदार है, वोह ज़िन्दा रहेगा तो इ़ज़्ज़त से और रिह़लत करेगा तो शहादत से।'' अ़र्ज़ किया गया : ''वोह कौन है ?'' फ़रमाया : ''उ़मर बिन ख़त्ताब।''[4]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ......معجم كبير، باب العين، ج ١٢، ص ٤٨، حديث: ١٢٤٧٢۔

2 ......فيض القدير، ج ٢، ص ٤٨٢، تحت الحديث: ١٧٠٨ ملخصاً۔

3 ......الشفاء، الباب الثالث في تعظيم امره ووجوب توقيره، فصل من توقيره وبره، ج ٢، ص ٥٤۔

4 ......معجم اوسط، من اسمه مطلب، ج ٦، ص ٢٧٢، حديث: ٨٧٤٩۔

सातवां बाब
हिस्सए दुवुम

फ़ारूक़े आ'ज़म का इश्क़े रसूल

(रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की औलाद व अक़रबा से महब्बत)

इस बाब में मुलाहज़ा कीजिये.........

- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की अहले बैत से अक़ीदतो महब्बत
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ह़सनैने करीमैन (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) से अक़ीदतो महब्बत
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) से अक़ीदतो महब्बत
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़ातूने जन्नत सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से अक़ीदतो महब्बत
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ानदान से अक़ीदतो महब्बत
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा से अक़ीदतो महब्बत
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की बनी हाशिम से अक़ीदतो महब्बत

रसूलुल्लाह की औलाद व अक़रबा से महब्बत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! بِحَمْدِ اللّٰهِ تَعَالٰی मस्लके ह़क़ अहले सुन्नत व जमाअ़त वोह मुहज़्ज़ब, प्यारा और बा अदब मस्लक है जिस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हर मक़्बूल बन्दे का अदबो एह़तिराम मौजूद है, ह़बीबे खुदा, शाफ़ेए़ रोज़े जज़ा, मालिके हर दो सरा, हुज़ूर ख़ातमुल अम्बिया, अह़मदे मुज्तबा, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते गिरामी से जिस की भी निस्बत हो हर सुन्नी मुसलमान के दिल में उस की ता'ज़ीम व तकरीम ज़रूर होगी। बरादरे आ'ला ह़ज़रत मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن इसी अ़क़ीदे की तर्जुमानी करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं :

जो सर पे रखने को मिल जाए ना'ले पाके हुज़ूर
तो फिर कहेंगे कि हां ताजदार हम भी हैं

जब सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नूरानी तलवों को बोसे देने वाली ना'लैन शरीफ़ैन का येह अदबो एह़तिराम है तो अहले बैते अत़हार जो कि सरवरे कौनो मकां, वारिसे ज़मीनो आस्मां, मह़बूबे रब्बे दो जहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़ून मुबारक हैं उन का अदबो एह़तिराम और उन से अ़क़ीदतो उल्फ़त का क्या आ़लम होगा ! आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن अहले बैते अत़हार رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن की बारगाह में नज़रानए अ़क़ीदत पेश करते हुवे क्या ख़ूब इरशाद फ़रमाते हैं :

क्या बात रज़ा उस चमनिस्ताने करम की
ज़हरा है कली जिस में हुसैन और ह़सन फूल

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अहले बैते उ़ज़्ज़ाम की येह अ़ज़ीम मह़ब्बत मस्लके अहले सुन्नत व जमाअ़त को खुद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह से अ़त़ा हुई है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी लैला رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने वालिदे गिरामी से रिवायत करते हैं कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

لَا يُؤْمِنُ عَبْدٌ حَتّٰى اَكُوْنَ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ نَّفْسِهٖ وَتَكُوْنَ عِتْرَتِيْ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ عِتْرَتِهٖ وَ ذَاتِيْ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ ذَاتِهٖ وَيَكُوْنَ اَهْلِيْ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ اَهْلِهٖ

"या'नी कोई बन्दा उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसे उस की जान से ज़ियादा मह़बूब न हो जाऊं और मेरी औलाद उसे अपनी औलाद से ज़ियादा मह़बूब न हो जाए और मेरी ज़ात

उस की अपनी ज़ात से ज़ियादा महबूब न हो जाए और मेरे घर वाले उसे अपने घर वालों से ज़ियादा महबूब न हो जाएं।"(1)

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان जो नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शबो रोज़, नज़रे ईमान से ज़ियारत फ़रमाते थे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दमैने शरीफ़ैन के बोसे लेते थे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे नमाज़ें अदा फ़रमाते थे, उन से ज़ियादा इस हदीसे पाक का मफ़्हूम कौन समझ सकता है ? अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस हदीसे पाक के पक्के आमिल थे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कभी भी अपनी ज़ात, अपनी औलाद को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अहले बैत पर तरजीह न दी। आइये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अहले बैत से इश्क़ो महब्बत के दिल नशीन वाक़िआत को मुलाहज़ा कीजिये और अपने दिल में महब्बते अहले बैत की शम्अ़ को मज़ीद रौशन कीजिये :

हसनैने करीमैन से अ़क़ीदतो महब्बत

फ़ारूक़े आ'ज़म हसनैने करीमैन को अपनी औलाद पर तरजीह देते

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में **अल्लाह** तआला ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के हाथ पर मदाइन फ़त्ह किया और माले ग़नीमत मदीनए मुनव्वरा में आया तो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मस्जिदे नबवी में चटाइयां बिछवाईं और सारा माले ग़नीमत उन पर ढेर करवा दिया। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان माल लेने जम्अ़ हो गए। सब से पहले हज़रते सय्यिदुना इमामे हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खड़े हुवे और कहने लगे :

يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَعْطِنِيْ حَقِّيْ مِمَّا اَفَاءَ اللّٰهُ عَلَى الْمُسْلِمِيْنَ..... "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जो मुसलमानों को माल अ़ता फ़रमाया है उस में से मेरा हिस्सा मुझे अ़ता फ़रमा दें।"

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : بِالرَّحْبِ وَالْكَرَامَةِ "या'नी आप के लिये बड़ी पज़ीराई और करामत (इ़ज़्ज़त) है।" साथ ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक हज़ार दिरहम उन्हें दे दिये। उन्हों ने अपना हिस्सा लिया और चले गए।

---

(1) ......شعب الایمان، باب فی حب النبی، فصل فی براءته۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۱۸۹، حدیث: ۱۵۰۵۔

.....इन के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने खड़े हो कर अपना हि़स्सा मांगा।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : **بِالرَّحْبِ وَالْكَرَامَةِ** ''या'नी आप के लिये बड़ी पज़ीराई और करामत (इ़ज़्ज़त) है।'' साथ ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक हज़ार दिरहम उन्हें भी दे दिये।

.....इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उठे और अपना हि़स्सा मांगा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : **بِالرَّحْبِ وَالْكَرَامَةِ** ''या'नी आप के लिये भी बड़ी पज़ीराई और करामत (इ़ज़्ज़त) है।'' और साथ ही उन्हें पांच सौ दिरहम अ़त़ा फ़रमाए।

उन्हों ने अ़र्ज़ किया : ''ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं ने उस वक़्त भी हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ तल्वार उठा कर जिहाद किया है जब सय्यिदुना ह़सन व हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) कम उ़म्र मदनी मुन्ने थे। इस के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें एक एक हज़ार दिरहम और मुझे पांच सौ अ़त़ा किये ?'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह सुनना था कि अहले बैत की मह़ब्बत का समन्दर मौजें मारने लगा और इ़श्क़ो मह़ब्बत से सरशार हो कर इरशाद फ़रमाया : **اِذْهَبْ فَأْتِنِي بِأَبٍ كَأَبِيْهِمَا وَأُمٍّ كَأُمِّهِمَا وَجَدٍّ كَجَدِّهِمَا وَجَدَّةٍ كَجَدَّتِهِمَا وَعَمٍّ كَعَمِّهِمَا وَخَالٍ كَخَالِهِمَا فَإِنَّكَ لَا تَأْتِيْنِيْ بِهٖ** ''जी हां बिल्कुल ! (अगर तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें भी इन के बराबर हि़स्सा दूं तो) जाओ पहले तुम ह़सनैने करीमैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के बाप जैसा बाप लाओ, उन की वालिदा जैसी वालिदा, उन के नाना जैसा नाना, उन की नानी जैसी नानी, उन के चचा जैसा चचा, उन के मामूं जैसा मामूं और उन की ख़ालाओं जैसी ख़ालाएं लाओ और तुम कभी भी नहीं ला सकते।'' क्यूंकि :

.....**اَبُوْهُمَا فَعَلِيُّ الْمُرْتَضٰى** ''उन के वालिद अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।''

.....**اُمُّهُمَا فَفَاطِمَةُ الزَّهْرَاء** ''उन की वालिदा सय्यिदा फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हैं।''

.....**جَدُّهُمَا مُحَمَّدٌنِ الْمُصْطَفٰى** ''उन के नाना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं।''

.....**جَدَّتُهُمَا خَدِيْجَةُ الْكُبْرٰى** ''उन की नानी सय्यिदा ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हैं।''

.....**عَمُّهُمَا جَعْفَرُ بْنُ اَبِيْ طَالِبٍ** ''उन के चचा ह़ज़रते जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।''

.....**خَالُهُمَا اِبْرَاهِيْمُ بْنُ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ''उन के मामूं ह़ज़रते इब्राहीम बिन रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم व رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) हैं।''

خَالَتَاهُمَا رُقَيَّةُ وَاُمُّ كُلْثُوْمٍ اِبْنَتَا رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم..... "और उन की ख़ालाएं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बेटियां सय्यिदा रुक़य्या और सय्यिदा उम्मे कुल्सूम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) हैं।"(1)

आ'ला हज़रत सीरते फ़ारूक़ी के मज़्हर हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अहले बैत से इश्क़ो महब्बत का येह निहायत ही अनोखा अन्दाज़ है कि अपनी सगी औलाद के मुक़ाबले में अहले बैत के शहज़ादों को दो गुना अ़ता फ़रमाया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अहले बैत से येही महब्बत आज आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के उ़श्शाक़ में भी सीना ब सीना चली आ रही है। येही वज्ह है कि आ़शिके़ फ़ारूके़ आ'ज़म, आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत मौलाना शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن सीरते फ़ारूक़ी के मज़्हर हैं, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की आ़दाते मुबारका में से था कि जब मह़फ़िले मीलाद वग़ैरा में शीरीनी तक़्सीम होती तो सादाते किराम को दीगर लोगों की ब निस्बत दो गुना ह़िस्सा नज़्र किया जाता। चुनान्चे, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ख़लीफ़ा मौलाना ज़फ़रुद्दीन बिहारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं : "हुज़ूर (या'नी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) के यहां मजलिसे मीलाद मुबारक में सादाते किराम को ब निस्बत और लोगों के दो गुना ह़िस्सा बर वक़्त तक़्सीमे शीरीनी (या'नी शीरीनी तक़्सीम होते वक़्त) मिला करता था और इसी का इत्तिबाअ़ अहले ख़ानदान भी करते हैं।"(2)

अमीरे अहले सुन्नत सीरते फ़ारूक़ी के मज़्हर हैं

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी, आ़शिके़ आ'ला ह़ज़रत, अमीरे अहले सुन्नत, शैख़े त़रीक़त, रहबरे शरीअ़त, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ इस वक़्त आ़लमे इस्लाम की अ़ज़ीम इल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत हैं, आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ इश्क़े नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में फ़ना हैं और येह एक फ़ित़री अम्र है कि जिस से इश्क़ होता है उस से निस्बत रखने वाली हर चीज़ से भी इश्क़ हो जाता है। मह़बूब के घर से, इस के दरो दीवार से, मह़बूब के गली कूचों तक से अ़क़ीदत हो जाती है। फिर

1 ......رياض النضرة، ج ١، ص ٣٤٠۔

2 .....ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1 स. 182।

भला जो इश्के़ नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में गुम हो वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आल और अहले बैत से महब्बत क्यूं न रखेगा ! लिहाज़ा जहां आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को मदीनए पाक के ज़र्रे ज़र्रे से बे पनाह महब्बत है वहीं आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हज़राते सादाते किराम की ता'ज़ीमो तौक़ीर बजा लाने में भी पेश पेश रहते हैं। मुलाक़ात के वक़्त अगर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को बता दिया जाए कि येह सय्यिद साहिब हैं तो बारहा देखा गया है कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه निहायत ही आ़जिज़ी से सय्यिद ज़ादे का हाथ चूम लिया करते हैं। उन्हें अपने बराबर में बिठाते हैं, सादाते किराम के बच्चों से बे पनाह महब्बत और शफ़्क़त से पेश आते हैं। कभी कभी किसी सय्यिद ज़ादे को देख कर इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का येह शे'र झूम झूम कर पढ़ने लगते हैं।

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐ़ने नूर तेरा सब घराना नूर का

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه खुद इस शे'र की शर्ह़ करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : "मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस शे'र में फ़रमाते हैं : "या नूरल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप तो हैं ही नूर बल्कि **नूरुन अ़ला नूर** (या'नी नूर पर नूर)। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक नस्ल में ता क़ियामत जितने भी बच्चे होंगे या'नी सादाते किराम वोह भी सब के सब नूर हैं। ऐ नूर वाले प्यारे प्यारे आक़ा ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सारे का सारा घराना ही नूर, नूर और बस नूर है।"(1)

नूर अन्दर नूर बाहर घर का घर सब नूर है
आ गया वोह नूर वाला जिस का सारा नूर है

आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه सीरते फ़ारूक़ी के मज़्हर हैं कि बारहा मुशाहदे से येह बात सामने आई है कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की भी येह आ़दते मुबारका है कि आप से जो इस्लामी भाई मुलाक़ात के लिये आते हैं उन्हें उ़मूमन आप की त़रफ़ से कुछ न कुछ तोह़फ़तन ज़रूर अ़त़ा होता है, अगर किसी इस्लामी भाई के बारे में येह मा'लूम हो जाए कि येह सय्यिद साहिब हैं तो उस की ता'ज़ीम के लिये खड़े हो जाते हैं नीज़ दीगर लोगों के मुक़ाबले में अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की सुन्नत पर अ़मल करते हुवे उन सय्यिद साहिब को दो गुना तोह़फ़तन पेश करते हैं।

1.....नेकी की दा'वत, हि़स्सए अव्वल, स. 586।

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्हाबे हुज़ूर
नज्म हैं और नाव है इतरत रसूलुल्लाह की
सब सहाबा से हमें तो प्यार है
اِنْ شَآءَاللّٰہ अपना बेड़ा पार है
हम को अहले बैत से भी प्यार है
दो जहां में अपना बेड़ा पार है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हसनैने करीमैन की ख़ुशी में फ़ारूक़े आ'ज़म की ख़ुशी

हज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिदे गिरामी हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बाक़िर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास यमन से कुछ उ़म्दा कपड़े आए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह कपड़े मुहाजिरीन व अन्सार में तक़्सीम कर दिये। लोग उन कपड़ों को पहन कर बहुत फ़र्हत मह़सूस कर रहे थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिम्बरे रसूल और क़ब्रे अन्वर के दरमियान तशरीफ़ फ़रमा थे, लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में हाज़िर होते और आप को सलाम करते और दुआएं देते। अचानक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने शहज़ादिये कौनैन के काशानए अक़्दस से ह़सनैने करीमैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) बाहर तशरीफ़ लाए क्यूंकि सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का घर मस्जिदे नबवी के सेह़न ही में था। दोनों शहज़ादों के जिस्मों पर उन उ़म्दा कपड़ों में से कोई कपड़ा नहीं था। जैसे ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शहज़ादों को देखा तो आप के तैवर तब्दील हो गए, माथे पर शिकन पड़ गए, आप ने जलाल में आ कर इरशाद फ़रमाया : وَاللّٰهِ مَا هَنَانِيْ مَا كَسَوْتُكُمْ "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने जो तुम लोगों को क़ीमती कपड़े पहनाए हैं उन्हें देख कर मुझे ज़र्रा भर भी ख़ुशी नहीं हुई।" सब लोग येह सुन कर हैरान व परेशान हो गए और अ़र्ज़ करने लगे कि "हुज़ूर ऐसी क्या बात हो गई जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह इरशाद फ़रमा रहे हैं ? हालांकि येह तमाम कपड़े आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने खुद ही अ़ता फ़रमाए हैं।"

इरशाद फ़रमाया : مِنْ اَجْلِ الْغُلَامَیْنِ یَتَخَطَّیَانِ النَّاسَ لَیْسَ عَلَیْھِمَا مِنْھُمَا شَیْءٌ "या'नी येह बात मैं इन दोनों शहज़ादों की वज्ह से कह रहा हूं, जो लोगों के दरमियान इस ह़ालत में चल रहे हैं कि इन दोनों ने इन क़ीमती कपड़ों में से कोई कपड़ा पहना हुवा नहीं है।" रावी कहते हैं कि : ثُمَّ کَتَبَ اِلٰی صَاحِبِ الْیَمَنِ اَنْ اَبْعَثَ اِلَیَّ بِحُلَّتَیْنِ لِحَسَنٍ وَحُسَیْنٍ وَعَجِّلْ "या'नी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़ौरन ह़ाकिमे यमन को ख़त़ लिखा कि जल्द अज़ जल्द इमामे ह़सन और इमामे हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) के लिये दो बेहतरीन और क़ीमती हुल्ले तय्यार करवा के भेजो।" ह़ाकिमे यमन ने फ़ौरन हुक्म की ता'मील की और दो हुल्ले तय्यार करवा के भेज दिये। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़सनैने करीमैन को वोह जोड़े पहनाए और मसरूर हो कर इरशाद फ़रमाया : لَقَدْ کُنْتُ اَرَاھَا عَلَیْھِمْ فَمَا یَھْنِیْنِیْ حَتّٰی رَاَیْتُ عَلَیْھِمَا مِثْلَھَا "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम! जब तक इन दोनों शहज़ादों ने नए कपड़े नहीं पहने थे मुझे दूसरों के पहनने की कोई ख़ुशी न थी।"

एक रिवायत में यूं है कि ह़सनैने करीमैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) को कपड़े पहना कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اَلْآنَ طَابَتْ نَفْسِیْ "या'नी अब मैं ख़ुश हो गया हूं।"(1)

अपनी औलाद से ज़ियादा सादाते किराम से मह़ब्बत

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने बचपन का एक वाक़िआ़ बयान करते हुवे फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिम्बर पर ख़ुत़बा इरशाद फ़रमा रहे थे। मैं आया और मिम्बर पर चढ़ गया और अपनी नन्ही सोच के मुत़ाबिक़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहने लगा कि اِنْزِلْ عَنْ مِنْبَرِ اَبِیْ وَاذْھَبْ مِنْبَرَ اَبِیْکَ "या'नी आप मेरे वालिद के मिम्बर से उतर जाएं, अपने वालिद के मिम्बर पर जा कर बैठियें।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : اِنَّ اَبِیْ لَمْ یَکُنْ لَہٗ مِنْبَرٌ "या'नी मेरे वालिद का तो कोई मिम्बर ही नहीं।" येह कह कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे अपनी गोद में बिठा लिया, मेरे हाथ में कंकर थे जिन से मैं खेलता रहा। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ारिग़ हुवे तो मुझे अपने साथ अपने घर ले गए और फ़रमाया : مَنْ عَلَّمَکَ؟ "या'नी ऐ हुसैन बेटा! आप को येह बात किस ने सिखाई?" मैं ने कहा : "किसी ने नहीं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया :

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۱۴، ص ۱۷۷، ریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۳۴۱۔

اَیْ بُنَیَّ لَوْ جَعَلْتَ تَاْتِیْنَا ''या'नी ऐ मेरे बेटे ! मेरी तमन्ना है कि आप हमारे पास आया करें।'' चुनान्चे, मैं एक दिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर गया मगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ अ़लाह़िदगी में मसरूफ़े गुफ़्त्गू थे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दरवाजे़ पर खड़े इन्तिज़ार कर रहे थे। कुछ देर इन्तिज़ार के बा'द वोह वापस लौटने लगे तो उन के साथ ही मैं भी वापस लौट आया। बा'द में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मेरी मुलाक़ात हुई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : لَمْ اَرَکَ ''या'नी हुसैन बेटा ! आप हमारे पास दोबारा आए ही नहीं ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया : ''ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं तो आया था मगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ मसरूफ़े गुफ़्त्गू थे। आप के बेटे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी बाहर खड़े इन्तिज़ार कर रहे थे (मैं ने सोचा जब बेटे को अन्दर जाने की इजाज़त नहीं है, मुझे कैसे हो सकती है) लिहाज़ा मैं उन के साथ ही वापस चला गया।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : اَنْتَ اَحَقُّ بِالْاِذْنِ مِنْ عَبْدِ اللّٰہِ ابْنِ عُمَرَ اِنَّمَا اَنْبَتَ فِیْ رُؤُوْسِنَا اللّٰہُ ثُمَّ اَنْتُم ''या'नी ऐ मेरे बेटे हुसैन ! मेरी औलाद से ज़ियादा आप इस बात के ह़क़दार हैं कि आप अन्दर आ जाएं। और हमारे सरों पर येह जो बाल हैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बा'द किस ने उगाए हैं तुम सादाते किराम ने ही तो उगाए हैं।''(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म की शहज़ादए इमामे ह़सन के साथ वालिहाना मह़ब्बत

एक बार इमाम ह़सने मुज्तबा, लख़्ते जिगर मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने काशानए फ़ारूक़ी पर आने की इजाज़त त़लब की, अभी इजाज़त न आई थी कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साह़िबज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरवाजे़ पर ह़ाज़िर हो कर दाख़िल होने की इजाज़त मांगी। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इजाज़त न दी। येह देख कर सय्यिदुना इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी वापस आ गए। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें बुला भेजा। उन्हों ने आ कर कहा : ''या अमीरल मोमिनीन ! मैं ने येह ख़याल किया कि जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बेटे को अन्दर आने की इजाज़त नहीं दी तो मुझे क्यूं देंगे ?''

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۱۴، ص ۱۷۵۔

येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शहज़ादए अहले बैत से वालिहाना मह़ब्बत का इज़्हार करते हुवे इरशाद फ़रमाया : ''اَنْتَ اَحَقُّ بِالْاِذْنِ مِنْهُ وَهَلْ اَنْبَتَ الشَّعْرُ فِى الرَّاْسِ بَعْدَ اللّٰهِ اِلَّا اَنْتُم या'नी आप मेरे बेटे से ज़ियादा इजाज़त के मुस्तह़िक़ हैं और हमारे सरों पर येह बाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात के बा'द आप लोगों ने ही तो उगाए हैं।''(1)

आ'ला ह़ज़रत अ़ज़ीमुल बरकत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या में येह अह़ादीसे मुबारका नक़्ल करने के बा'द इरशाद फ़रमाते हैं : ''शहज़ादों से अमीरुल मोमिनीन के इस फ़रमाने का मत़लब भी वोही है जो लफ़्ज़े अव्वल में था कि येह बाल तुम्हारे मेहरबान बाप ही ने उगाए हैं (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) जिस त़रह़ अराकीने सल्त़नत अपने आक़ाज़ादों से कहते हैं कि जो ने'मत है तुम्हारी ही दी हुई है या'नी तुम्हारे ही घर से मिली है।''(2)

वज़ाइफ़ की तक़र्रुरी में सादात से इब्तिदा

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिदे गिरामी ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बाक़िर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वज़ाइफ़ मुक़र्रर करने के लिये मर्दुम शुमारी करवाई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने अस्ह़ाब से मश्वरा लिया कि ''सब से पहले किस का वज़ीफ़ा मुक़र्रर किया जाए ? आग़ाज़ किस से किया जाए ?'' सब कहने लगे : ''ऐ अमीरुल मोमिनीन ! सब से पहले आप अपना वज़ीफ़ा मुक़र्रर करें।'' मगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सादात से आग़ाज़ किया और ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये पांच पांच सौ दिरहम माहाना वज़ीफ़ा मुक़र्रर किया।(3)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 ......الصواعق المحرقة، ص ۱۷۹۔

2 .....फ़तावा रज़विय्या, जि. 30, स. 467।

3 ......الاوائل للعسكرى، ج ۱، ص ۴۶، رياض النضرة، ج ۱، ص ۳۴۱۔

मौला अ़ली से अ़क़ीदतो महब्बत

मौला अ़ली की दोस्ती के बिग़ैर शरफ़ की तक्मील नहीं

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं :

تَحَبَّبُوا اِلَى الْاَشْرَافِ وَتَوَدَّدُوْا وَاتَّقُوْا عَلٰى اَعْرَاضِكُمْ مِنَ السُّفْلَةِ وَاعْلَمُوْا اَنَّهٗ لَا يَتِمُّ شَرَفٌ اِلَّا بِوِلَايَةِ عَلِيٍّ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ

"या'नी अशराफ़ से इज़्हारे महब्बत करो और उन्हीं से महब्बत रखो, अपनी इ़ज़्ज़तों को जाहिलों से मह़फ़ूज़ रखो और अच्छी त़रह़ जान लो कि ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की दोस्ती के बिग़ैर शरफ़ मुकम्मल ही नहीं होता।"(1)

मौला अ़ली की तीन ख़ुसूसिय्यात ब ज़बाने फ़ारूक़े आ'ज़म

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

لَقَدْ اُعْطِيَ عَلِيُّ بْنُ اَبِي طَالِبٍ ثَلَاثَ خِصَالٍ لَاَنْ تَكُوْنَ لِيْ خَصْلَةٌ مِّنْهَا اَحَبُّ اِلَيَّ مِنْ اَنْ اُعْطِيَ حُمْرَ النَّعَمِ

"या'नी ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को तीन बातें वोह दी गईं कि उन में से मुझे एक भी मिल जाती तो वोह मुझे सुर्ख़ ऊंटों से ज़ियादा महबूब होती।"(2) किसी ने अ़र्ज़ किया : مَا هُنَّ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ "हुज़ूर वोह तीन बातें कौन सी हैं ?" फ़रमाया :

✿.....تَزَوُّجُهٗ فَاطِمَةَ بِنْتَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

"या'नी दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की लाडली शहज़ादी ह़ज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से निकाह़ करना।"

✿.....سُكْنَاهُ الْمَسْجِدَ مَعَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَحِلُّ لَهٗ فِيْهِ مَا يَحِلُّ لَهٗ

"या'नी ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मस्जिद में ब ह़ालते जनाबत रहना कि ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ व रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दोनों के लिये येह ह़लाल था।"

✿.....وَالرَّايَةُ يَوْمَ خَيْبَرَ "या'नी ख़ैबर के रोज़ शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) को फ़त्ह़ का झन्डा अ़त़ा फ़रमाना।"(3)

---

1 .....الصواعق المحرقة، ص ۱۷۸۔

2 .....वाज़ेह़ रहे कि सुर्ख़ ऊंट अ़रबों के नज़्दीक निहायत ही क़ीमती और अ़ज़ीज़ तरीन माल शुमार किया जाता है।

3 .....مستدرک حاکم، کتاب معرفة الصحابة، سدوا هذه الابواب۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۹۴، حدیث: ۴۶۸۹۔

मैं वहां न रहूं जहां मौला अ़ली न हों

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज के लिये तशरीफ़ ले गए, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने त़वाफ़े का'बा करते हुवे ह़जरे अस्वद की त़रफ़ देख कर इरशाद फ़रमाया : اِنِّیْ اَعْلَمُ اَنَّکَ حَجَرٌ لَا تَضُرُّ وَلَا تَنْفَعُ وَلَوْلَا اِنِّیْ رَاَیْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یُقَبِّلُکَ مَا قَبَّلْتُکَ या'नी मैं जानता हूं कि तू सिर्फ़ एक पथ्थर है जो न तो नफ़्अ़ दे सकता है और न ही नुक़्सान और अगर मैं ने दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तुझे चूमते हुवे न देखा होता तो मैं भी कभी तुझे न चूमता।'' फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे बोसा दिया। येह सुन कर मौला अ़ली शेरे खुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने अ़र्ज़ किया : یَا اَمِیْرَ الْمُؤْمِنِیْنَ اِنَّہٗ یَضُرُّ وَیَنْفَعُ ''या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! बेशक येह पथ्थर नफ़्अ़ भी देता है और नुक़्सान भी।'' फ़रमाया : ''वोह कैसे ?'' अ़र्ज़ किया :

اِنِّیْ اَشْھَدُ لَسَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یَقُوْلُ یُؤْتٰی یَوْمَ الْقِیَامَۃِ بِالْحَجَرِ الْاَسْوَدِ وَلَہٗ لِسَانٌ ذَلَقٌ یَشْھَدُ لِمَنْ یَسْتَلِمُہٗ بِالتَّوْحِیْدِ فَھُوَ یَا اَمِیْرَ الْمُؤْمِنِیْنَ یَضُرُّ وَیَنْفَعُ

''या'नी बेशक मैं इस बात की गवाही देता हूं कि मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि कल बरोज़े क़ियामत ह़जरे अस्वद को लाया जाएगा इस ह़ाल में कि उस की एक ज़बान होगी जिस के ज़रीए वोह गवाही देगा कि फ़ुलां शख़्स ने इसे ईमान की ह़ालत में बोसा दिया है। ऐ अमीरुल मोमिनीन ! येही उस का नुक़्सान और नफ़्अ़ देना है।'' येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اَعُوْذُ بِاللّٰہِ اَنْ اَعِیْشَ فِیْ قَوْمٍ لَسْتَ فِیْھِمْ یَا اَبَا الْحَسَن ''या'नी ऐ अबल ह़सन ! मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस बात की पनाह मांगता हूं कि मैं ऐसी क़ौम में रहूं जिस में आप न हों।''(1)

मौला अ़ली सब से बड़े क़ाज़ी हैं

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : عَلِیٌّ اَقْضَانَا وَاُبَیٌّ اَقْرَؤُنَا ''या'नी हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हम में सब से बड़े क़ाज़ी और हज़रते उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हम में सब से बड़े क़ारी हैं।''(2)

1 ......شعب الایمان للبیہقی، باب فی المناسک، فضیلۃ حجر الاسود، ج ۳، ص ۴۵۱، حدیث: ۴۰۴۰ ملتقطاً۔

2 ......مسند امام احمد، مسند الانصار، ج ۸، ص ۲، حدیث: ۲۱۱۴۳ مختصراً۔

मौला अ़ली को तक्लीफ़ देना रसूलुल्लाह को तक्लीफ़ देना है

हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन शाश رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ एक त़वील ह़दीस रिवायत करने के बा'द इरशाद फ़रमाते हैं कि सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ آذٰی عَلِیًّا فَقَدْ آذَانِیْ ''या'नी जिस ने अ़ली को तक्लीफ़ दी उस ने मुझे तक्लीफ़ दी।''(1)

मौला अ़ली के ख़िलाफ़ बातें करने वाले को सरज़निश

हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی मज़्कूरए बाला ह़दीसे पाक को नक़्ल करने के बा'द इरशाद फ़रमाते हैं : قَدْ كَانَتِ الصَّحَابَةُ يَعْرِفُوْنَ لَهٗ ذٰلِكَ ''या'नी सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان इस बात को अच्छी त़रह़ जानते थे कि मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) को तक्लीफ़ देना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तक्लीफ़ देना है।'' फिर बत़ौरे दलील इमाम दारे क़ुत़्नी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی से एक रिवायत बयान की, कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक आदमी को मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) के ख़िलाफ़ बातें करते देखा तो इरशाद फ़रमाया : وَيْحَكَ اَتَعْرِفُ عَلِيًّا هٰذَا ابْنُ عَمِّهٖ ''या'नी तेरा बुरा हो क्या तू जानता है कि ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा के बेटे हैं ?'' फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार की त़रफ़ इशारा करते हुवे इरशाद फ़रमाया : وَاللّٰهِ مَا آذَيْتَ اِلَّا هٰذَا فِيْ قَبْرِهٖ ''या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तू ने इस मज़ारे पुर अन्वार में मौजूद ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तक्लीफ़ दी है।'' (क्यूंकि तू ने मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुरा कह कर इन को तक्लीफ़ दी और मौला अ़ली को तक्लीफ़ देना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तक्लीफ़ देना है।)(2)

मौला अ़ली मेरे आक़ा व मौला हैं

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के मुक़ाबले में ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) के

---

1 ......مستدرک حاکم، کتاب معرفة الصحابة، من اطاع علیا...الخ، ج ۴، ص ۸۹، حدیث: ۴۶۷۷ مختصرا۔

2 ......فیض القدیر، حرف المیم، ج ۶، ص ۲۴، تحت الحدیث: ۸۲۶۵۔

साथ इम्तियाज़ी सुलूक फ़रमाया करते थे। जब सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने आप से इस की वज्ह पूछी तो इरशाद फ़रमाया : اِنَّهُ مَوْلَايَ "या'नी हज़रते अ़ली رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मेरे आक़ा व मौला हैं।"(1)

मौला अ़ली मेरे और हर मोमिन के मौला हैं

हज़रते सय्यिदुना अबू फ़ाख़िता رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है फ़रमाते हैं कि एक बार मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) एक ऐसी मजलिस में तशरीफ़ लाए जहां अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه तशरीफ़ फ़रमा थे। जैसे ही आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) को देखा तो सिमट गए और आ़जिज़ी करते हुवे मौला अ़ली رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के लिये जगह को कुशादा फ़रमा दिया। मजलिस के इख़्तिताम के बा'द जब मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) तशरीफ़ ले गए तो बा'ज़ सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की बारगाह में अ़र्ज़ किया : يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِنَّكَ تَصْنَعُ بِعَلِيٍّ صَنِيْعًا مَا تَصْنَعُهُ بِاَحَدٍ مِّنْ اَصْحَابِ مُحَمَّدٍ "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) के साथ हुस्ने सुलूक का जैसा अन्दाज़ है वैसा किसी और सहाबी के साथ नहीं है।" आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : مَا رَاَيْتُمُوْنِيْ اَصْنَعُ بِهٖ "या'नी आप लोगों ने क्या देखा, मेरा इन के साथ कैसा रवय्या है ?" अ़र्ज़ किया : رَاَيْنَاكَ كُلَّمَا رَاَيْتَهُ تَضَعْضَعْتَ وَتَوَاضَعْتَ وَاَوْسَعْتَ حَتّٰى يَجْلِسَ "या'नी हम ने देखा कि आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जब भी मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) को देखते हैं तो उन के लिये सिमट जाते हैं, उन के लिये आ़जिज़ी करते हुवे जगह को वसीअ़ कर देते हैं जहां वोह तशरीफ़ फ़रमा होते हैं।" येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : مَا يَمْنَعُنِيْ وَاللّٰهِ اَنَّهُ لَمَوْلَايَ وَمَوْلٰى كُلِّ مُؤْمِنٍ "या'नी मुझे मौला अ़ली رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के साथ इस हुस्ने सुलूक से कौन सी चीज़ रोक सकती है ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! बेशक येह मेरे मौला हैं और हर मोमिन के मौला हैं।"(2)

1 ......فیض القدیر، حرف المیم، ج ۶، ص ۲۸۲، تحت الحدیث: ۹۰۰۰، تاریخ ابن عساکر، ج ۴۲، ص ۲۳۵۔

2 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۲، ص ۲۳۵۔

मौला अ़ली के लिये अपनी चादर उतार कर बिछा दी

हज़रते अ़ल्लामा मौलाना हाफ़िज़ अबुल ह़सन अ़ली बिन उ़मर दारे कुत़नी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی बयान फ़रमाते हैं कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त फ़रमाया तो बताया गया कि वोह अपनी ज़मीनों की त़रफ़ गए हैं। इरशाद फ़रमाया : اِذْهَبُوْا بِنَا اِلَيْهِ ''या'नी हमें भी वहीं ले चलो।'' जब वहां पहुंचे तो देखा कि मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) काम कर रहे हैं, आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه भी तक़रीबन एक घन्टा उन के साथ काम करते रहे। फिर दोनों बैठ कर आपस में गुफ़्तगू करने लगे तो मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने अ़र्ज़ किया : يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَرَاَيْتَ لَوْ جَاءَكَ قَوْمٌ مِّنْ بَنِيْ اِسْرَائِيْلَ فَقَالَ لَكَ اَحَدُهُمْ اَنَا ابْنُ عَمِّ مُوْسٰى اَكَانَتْ لَهُ عِنْدَكَ اَثَرَةٌ عَلٰى اَصْحَابِهٖ या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अगर आप के पास बनी इस्राईल के कुछ लोग आएं और उन में से एक आदमी येह कहे कि मैं सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का चचाज़ाद भाई हूं तो क्या आप उसे उस के साथियों पर तरजीह़ देंगे ?'' आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : ''जी हां।'' तो मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने अ़र्ज़ किया : فَاَنَا وَاللهِ اَخُوْ رَسُوْلِ اللهِ وَابْنُ عَمِّهٖ ''या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चचाज़ाद भाई या'नी उन के चचा का बेटा हूं।'' रावी कहते हैं : فَنَزَعَ عُمَرُ رِدَاءَهٗ فَبَسَطَهٗ ''या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने येह सुनते ही अपनी चादर उतार कर बिछा दी और मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) को उस पर बिठा दिया और साथ ही इरशाद फ़रमाया : لَا وَاللهِ لَا يَكُوْنُ لَكَ مَجْلِسٌ غَيْرُهٗ حَتّٰى نَفْتَرِقَ ''या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब हमारे उठने तक यहां आप के इ़लावा कोई नहीं बैठ सकता। चुनान्चे, मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) मजलिस के ख़त्म होने तक उस चादर पर ही तशरीफ़ फ़रमा रहे।

इमाम दारे कुत़नी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं :

ذَكَرَ عَلِيٌّ لَهٗ ذٰلِكَ اِعْلَامًا بِاَنَّ مَا فَعَلَهٗ مَعَهٗ مِنْ مَجِيْئِهٖ اِلَيْهِ
وَعَمَلَهٗ مَعَهٗ فِيْ اَرْضِهٖ وَهُوَ اَمِيْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ اِنَّمَا هُوَ لِقَرَابَتِهٖ مِنْ رَّسُوْلِ اللهِ فَزَادَ عُمَرُ فِيْ اِكْرَامِهٖ وَاَجْلَسَهٗ عَلٰى رِدَائِهٖ

या'नी मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने अपने आप को ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा के बेटे होने का ज़िक्र अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर

फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने येह बताने के लिये किया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मोमिनीन होने के बा वुजूद जो मेरे साथ काम किया वोह दर अस्ल रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़राबत दारी की वज्ह से किया, येही वज्ह है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप के इकराम में मज़ीद इज़ाफ़ा फ़रमाया और आप को अपनी चादर पर बिठाया।"[1]

फ़रामीने मौला अ़ली ब ज़बाने फ़ारूक़े आ'ज़म

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم) ने बारह12 ऐसे कलिमात इरशाद फ़रमाए कि अगर लोग उन पर अ़मल करें तो कामयाबी व कामरानी से हमकिनार हो जाएं और कभी भी ग़लत़ ह़रकात न करें।" लोगों ने अ़र्ज़ किया : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! वोह कौन से कलिमात हैं ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : वोह नसीह़त आमोज़ कलिमात येह हैं :

﴾1﴿.....तू अपने मुसलमान भाई की पसन्द का ख़याल रख, उस के साथ भलाई कर। फिर तुझे भी उस की त़रफ़ से तेरी पसन्दीदा चीज़ ही मिलेगी ।

﴾2﴿.....कभी भी किसी मुसलमान भाई के कलाम में बद गुमानी न कर (या'नी हमेशा अच्छा पहलू तलाश कर) तुझे ज़रूर उस के कलाम में कोई अच्छी बात मिल जाएगी।

﴾3﴿.....जब तेरे सामने दो काम हों तो उस काम में हरगिज़ न पड़ जिस में नफ़्स की पैरवी करना पड़े क्यूंकि नफ़्स की पैरवी में सरासर नुक़्सान है।

﴾4﴿.....जब कभी तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपनी किसी ह़ाजत में ह़ाजत बर आरी चाहता हो तो दुआ़ से पहले उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़। बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स पर बहुत लुत़्फ़ो करम फ़रमाता है जो उस से अपनी ह़ाजतें त़लब करे। फिर अगर कोई शख़्स **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त से दो चीज़ें मांगता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे वोह चीज़ अ़त़ा फ़रमाता है जो उस के ह़क़ में बेहतर होती है और जो नुक़्सान देह हो उसे बन्दे से रोक लेता है।

1 ......الصواعق المحرقۃ،ص ۱۷۹۔

﴾5﴿.....जो शख़्स येह चाहे कि हर वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहे तो उसे चाहिये कि सब्र को अपना शिआ़र बना ले और हर मुसीबत पर सब्र करे।

﴾6﴿.....और जो शख़्स दुन्यवी ज़िन्दगी (में त़वालत) का ख़्वाहिशमन्द हो तो उसे चाहिये कि मसाइब के लिये तय्यार हो जाए।

﴾7﴿.....जो शख़्स इ़ज़्ज़तो वक़ार बर क़रार रखना चाहे तो वोह रियाकारी से बचे।

﴾8﴿.....जो शख़्स क़ाइदो रहनुमा (या'नी सरदार) बनना चाहे तो उसे चाहिये कि हर ह़ाल में अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करे। चाहे उसे कितनी ही दुश्वारी का सामना करना पड़े। (या'नी सरदारी के लिये ज़िम्मेदारियों को पूरा करने की मशक़्क़त बरदाश्त करना ज़रूरी है। बिग़ैर मशक़्क़त के इन्सान को बुलन्द रुत्बा ह़ासिल नहीं होता)।

﴾9﴿.....जिस बात से तेरा तअ़ल्लुक़ न हो ख़्वाह म ख़्वाह उस के बारे में सुवाल न कर।

﴾10﴿.....बीमारी से पहले सिह़्ह़त को ग़नीमत जान और फ़ुरसत के लम्ह़ात से भरपूर फ़ाइदा उठा, वरना ग़म व परेशानी का सामना होगा।

﴾11﴿.....इस्तिक़ामत आधी कामयाबी है, जैसा कि ग़म आधा बुढ़ापा।

﴾12﴿.....जो चीज़ तेरे दिल में खटके उसे छोड़ दे क्यूंकि उस को छोड़ देने ही में तेरी सलामती है।[1]

سُبْحَانَ اللہ عَزَّوَجَلَّ **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो!** हमारे बुज़ुर्गाने दीन ने हमारी रहनुमाई के लिये कैसे कैसे नसीह़त आमोज़ कलिमात इरशाद फ़रमाए, मज़्कूरए बाला कलिमात ऐसे जामेअ़ और ह़िक्मत आमोज़ हैं कि अगर कोई शख़्स इन पर अ़मल कर ले तो वोह दारैन की सआ़दतों से माला माल हो जाए, उसे दीनो दुन्या के किसी मुआ़मले में शर्मिन्दगी का सामना न करना पड़े, इन बारह कलिमात में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने हमें ज़िन्दगी गुज़ारने का बेहतरीन त़रीक़ा बता दिया है कि अगर इस त़रह़ ज़िन्दगी गुज़ारोगे तो बहुत जल्द तरक़्क़ी व कामयाबी की दौलत नसीब होगी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा नसीब होगी।

येह ह़ज़रात ख़ुद इल्मो अ़मल के पैकर हुवा करते थे और जो शख़्स मुख़्लिस व बा अ़मल हो उस के सीने में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इल्मो ह़िक्मत के चश्मे रवां फ़रमा देता है, फिर उस की ज़बान से

1.....उ़यूनुल ह़िकायात, जि. 1 स. 288।

निकले हुवे कलिमात कितने ही मुर्दा दिलों को ज़िन्दा कर देते हैं, कितनों की बिगड़ी बन जाती है। जब येह लोग किसी को नसीहत करते हैं तो ख़ैर ख़्वाही की निय्यत से करते हैं और जो बात दिल की गहराइयों से निकले वोह मुअस्सिर क्यूं न हो ? हक़ीक़तन वोही बात असर करती है जो दिल से निकलती है।

दिल से जो बात निकलती है, असर रखती है
पर नहीं, ताक़ते परवाज़ मगर रखती है

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें बुज़ुर्गाने दीन के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। اٰمِين بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ख़ातूने जन्नत सय्यिदा फ़ातिमा से अ़क़ीदतो महब्बत

तमाम मख़्लूक़ में सब से ज़ियादा महबूब

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ातूने जन्नत हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से इरशाद फ़रमाया :

يَابِنْتَ رَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم، وَاللّٰهِ مَا مِنَ الْخَلْقِ اَحَدٌ اَحَبَّ اِلَيْنَا مِنْ اَبِيک ، وَمَا مِنْ اَحَدٍ اَحَبُّ اِلَيْنَا بَعْدَ اَبِيک مِنْک

या'नी ऐ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शहज़ादी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तमाम मख़्लूक़ में कोई ऐसा नहीं जो हमें आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के वालिदे गिरामी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़ियादा महबूब हो और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के वालिदे गिरामी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से ज़ियादा हमें कोई महबूब नहीं।"(1)

रसूलुल्लाह के चचा से अ़क़ीदतो महब्बत

हज़रते अ़ब्बास के क़रीब से सुवार हो कर न गुज़रते

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी ज़िनाद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَھَّاب अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि :

اِنَّ الْعَبَّاسَ بْنَ عَبْدِالْمُطَّلِبِ لَمْ يَمُرُّ بِعُمَرَ وَلَا بِعُثْمَانَ وَهُمَا رَاكِبَانِ اِلَّا نَزَلَا حَتّٰى يَجُوْزَ الْعَبَّاسُ اِجْلَالًا لَهُ وَيَقُوْلَانِ عَمُّ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم

या'नी हज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब भी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़रीब से गुज़रते और वोह सुवार होते तो दोनों उन की ता'ज़ीम के लिये उन के गुज़रने तक सुवारी

---

(1) ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب المغازی، باب ماجاء فی خلافة ابی بکر، ج ۸، ص ۵۷۲، حدیث: ۴مختصراً۔

से उतर जाते और फ़रमाते कि येह दो आलम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा हैं।''[1]

हज़रते सय्यिदुना अब्बास की सुवारी की लगाम पकड़ कर चलते

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन शिहाब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है फ़रमाते हैं :

اِنَّ اَبَابَكْرٍ وَعُمَرَ زَمَنَ وِلَايَتِهِمَا كَانَ لَا يَلْقَاهُ وَاحِدٌ مِّنْهُمَا رَاكِبًا اِلَّا نَزَلَ وَقَادَ دَابَّتَهُ وَمَشٰى مَعَهُ حَتّٰى يَبْلُغَ مَنْزِلَهُ اَوْ مَجْلِسَهُ فَيُفَارِقُهُ

या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه व अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه दोनों अपने अपने दौरे ख़िलाफ़त में हज़रते सय्यिदुना अब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से सुवार हो कर नहीं मिला करते थे, बल्कि अपनी सुवारी से उतर कर उन की सुवारी की लगाम पकड़ लेते और उन के साथ साथ चलते यहां तक कि जब वोह अपने घर या अपनी मजलिस में पहुंच जाते तो येह दोनों अलग हो जाते।''[2]

हज़रते सय्यिदुना अब्बास को क़बूले इस्लाम की दरख़्वास्त

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने हज़रते सय्यिदुना अब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को क़बूले इस्लाम की दा'वत देते हुवे इरशाद फ़रमाया :

اَسْلِمْ فَوَاللّٰهِ اِنْ تُسْلِمْ اَحَبُّ اِلَيَّ مِنْ اَنْ يُسْلِمَ الْخَطَّابُ وَمَاذَاكَ اِلَّا لِاَنَّهُ كَانَ اَحَبَّ اِلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم

''या'नी आप इस्लाम क़बूल कर लीजिये क्यूंकि आप का इस्लाम क़बूल करना मुझे अपने वालिद ख़त्ताब के इस्लाम क़बूल करने से भी ज़ियादा महबूब है और इस की वज्ह येह है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा कि उन के नज़दीक भी आप का इस्लाम क़बूल करना बहुत पसन्दीदा है।''[3]

फ़ारूक़े आ'ज़म का ग़ैरते ईमानी से भरपूर जवाब

हज़रते सय्यिदुना अब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि जब फ़त्हे मक्का का मौक़अ़ आया तो हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने लश्कर के साथ मक्कए मुकर्रमा से बाहर रात के वक़्त **''मर्रुज़्ज़हरान''** मक़ाम पर उतरे। मैं ने दिल में कहा :

---

1 ......الاستيعاب، عباس بن عبد المطلب، ج ٢، ص ٣٦٠۔

2 ......الصواعق المحرقة، ص ١٧٨۔

3 ......مسند بزار، مسند ابن عباس، ج ١١، ص ١٨٢، حديث: ٤٩٢٤۔

وَاصَبَاحَ قُرَیْشٍ! وَاللّٰہِ لَئِنْ دَخَلَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مَکَّۃَ عَنْوَۃً قَبْلَ اَنْ یَاْتُوْہُ فَیَسْتَاْمَنُوْہُ اَنَّہُ لَھَلَاکُ قُرَیْشٍ اِلٰی آخِرِ الدَّھْرِ

या'नी हाए कु़रैश की सुब्ह़ ! (या'नी कल कु़रैश की सुब्ह़ कितनी भयानक होगी) ख़ुदा की क़सम ! अगर ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बज़ोरे शम्शीर मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हुवे और कु़रैश ने बढ़ कर अम्न की दरख़्वास्त न की तो वोह क़ियामत तक के लिये तबाह हो जाएंगे। मैं शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सफ़ेद ख़च्चर पर बैठ कर बाहर निकला और एक पीलू के दरख़्त तक ही पहुंचा था कि आगे से ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) से मुलाक़ात हो गई। मैं ने कहा : "ऐ अ़ली ! मक्कए मुकर्रमा से आने वाला कोई लकड़ हारा या कोई दूध वाला या कोई ह़ाजत मन्द शख़्स मिल जाए तो उसे हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आमद की इत्ति़लाअ़ दे दी जाए ताकि वोह मक्के वालों से जा कर कहे कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बज़ोरे शम्शीर मक्कए मुकर्रमा दाख़िल होने से क़ब्ल ही वोह बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अम्न के ख़्वास्तगार हो जाएं।" मैं इसी तलाश में था कि मुझे अबू सुफ़्यान की आवाज़ आई जो अपने साथी बुदैल बिन वरक़ा से मह़्वे गुफ़्त्गू थे। अबू सुफ़्यान उन से कह रहे थे : مَارَاَیْتُ کَاللَّیْلَۃِ نِیْرَانًا قَطُّ وَلَا عَسْکَرًا या'नी आज रात जितनी आग और जितना बड़ा लश्कर नज़र आया है पहले तो कभी नज़र नहीं आया। (क्यूंकि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने लश्कर में अपनी कसरत ज़ाहिर करने के लिये क़त़ार में ख़ै़मे लगवाए और इन में आतश रौशन करवाए थे।) बुदैल ने जवाब दिया : "ख़ुदा की क़सम ! येह बनू ख़ुजै़मा हैं जो जंग के इरादे से यहां आए हैं।" अबू सुफ़्यान ने उन्हें टोका कि "ख़ुज़ाआ़ का इतना लश्कर और इतनी आग नहीं हो सकती।"

"बनू ख़ुज़ाआ़" एक अ़रब क़बीला है जिन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام और ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام की औलाद से मक्कए मुकर्रमा की सरदारी छीन ली थी, फिर दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जद्दे अमजद ह़ज़रते सय्यिदुना हाशिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम कु़रैश को इकठ्ठा किया और बनू ख़ुज़ाआ़ से जंग कर के उन्हें मक्कए मुकर्रमा से मार भगाया। आज फ़त्ह़े मक्का की रात चूंकि ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अचानक लश्कर ले कर आए थे, और अहले मक्का को इस की कोई पेशगी इत्ति़लाअ़ न थी इस लिये वोह समझे येह शायद बनू ख़ुज़ाआ़ फिर मक्का पर क़ब्ज़ा करने आ गए हैं।"

बहर हाल हज़रते सय्यिदुना अब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि अबू सुफ़्यान की आवाज़ सुन कर मैं ने बा आवाज़े बुलन्द कहा : "ओ अबू हन्ज़ला।" अबू सुफ़्यान मेरी आवाज़ पहचान कर बोले : "अबुल फ़ज़्ल तुम यहां ?" (अबुल फ़ज़्ल हज़रते सय्यिदुना अब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत है) मैं ने कहा : "जी हां ! मैं हूं।" वोह कहने लगे : مَالَکَ؟ فِدَاکَ اَبِیْ وَاُمِّیْ या'नी क्या बात है ? आप पर मेरे मां-बाप कुरबान । मैं ने कहा : وَیْحَکَ یَا اَبَا سُفْیَانَ! ھٰذَا رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ فِی النَّاسِ या'नी ऐ अबू सुफ़्यान ! आप पर अफ़्सोस है। येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अज़ीम लश्कर ले कर आए हैं। खुदा की क़सम ! कल की सुब्ह कुरैश के लिये बड़ी भयानक है। वोह कहने लगे : فَمَا ھٰذِہِ الْحِیْلَۃُ فِدَاکَ اَبِیْ وَاُمِّیْ "या'नी आप पर मेरे मां-बाप कुरबान। अब हमें क्या करना चाहिये ?" मैं ने कहा : "खुदा की क़सम ! अगर आप इन के क़ाबू में आ गए तो ज़रूर आप की गर्दन उड़ जाएगी । मेरे पीछे इस ख़च्चर पर बैठ जाइये, मैं आप को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ले चलता हूं और आप के लिये अम्न तलब करूंगा।" हज़रते सय्यिदुना अब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि अबू सुफ़्यान मेरे पीछे सुवार हो गए। मैं अबू सुफ़्यान को ले कर सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लश्कर में पहुंच गया। मैं जिस ख़ैमे के आगे से गुज़रता मुसलमान आपस में चे मिगोइयां करते कि येह कौन है ? मगर जब वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दराज़ गोश पर मुझे बैठा देखते तो मुतमइन हो जाते कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़च्चर पर आप के चचा जा रहे हैं। जब हम अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़ैमे पर से गुज़रे तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उठ कर कहा : "येह कौन है ?" और जब उन्हों ने सुवारी के पीछे अबू सुफ़्यान को देखा तो पुकार उठे : اَبُوْ سُفْیَان عَدُوُّ اللّٰہِ اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ اَمْکَنَ مِنْکَ بِغَیْرِ عَقْدٍ وَّلَا عَھْدٍ "या'नी ओ दुश्मने खुदा अबू सुफ़्यान ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हम्द है जिस ने बिग़ैर किसी सुल्ह और मुआहदे के तुझे मेरे सामने कर दिया।" साथ ही वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तरफ़ भागे। मैं ने भी ख़च्चर को भगाया और सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के आने से क़ब्ल अबू सुफ़्यान को हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक पहुंचा दिया। साथ ही सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी पहुंच गए और कहने लगे :

يَارَسُوْلَ اللّٰهِ هٰذَا اَبُوْ سُفْيَان قَدْ اَمْكَنَ اللّٰهُ مِنْهُ بِغَيْرِ عَقْدٍ وَلَا عَهْدٍ فَدَعْنِيْ اَضْرِبْ عُنُقَهُ या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अबू सुफ़्यान किसी सुल्ह़ और मुआ़हदे के बिग़ैर हमारे क़ब्ज़े में आ गया है, अब आप इजाज़त दें कि मैं इस की गर्दन उड़ा दूं। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया : يَارَسُوْلَ اللّٰهِ اِنِّيْ قَدْ اَجَرْتُهُ या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं ने इन्हें अमान दे दी है। येह कह कर मैं ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सरे अन्वर पकड़ लिया और कहा : "आज की रात मेरे सिवा कोई शख़्स सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सरगोशी नहीं करेगा।" जब सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अबू सुफ़्यान के बारे में ज़ियादा कलाम किया तो मैं ने कहा : مَهْلًا يَاعُمَرُ وَاللّٰهِ لَوْ كَانَ رَجُلًا مِنْ بَنِيْ عَدِيِّ بْنِ كَعْبٍ مَا قُلْتَ هٰذَا وَلٰكِنَّكَ قَدْ عَرَفْتَ اَنَّهُ مِنْ رِجَالِ بَنِيْ عَبْدِ مُنَافٍ या'नी ऐ उ़मर ! बस कीजिये। ख़ुदा की क़सम ! अगर अ़दी बिन का'ब के क़बीले से कोई शख़्स होता (या'नी आप के क़बीले से होता) तो आप कभी येह बातें न करते। आप येह इस लिये कह रहे हैं कि अबू सुफ़्यान बनी अ़ब्दे मनाफ़ से हैं। सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ग़ैरते ईमानी से भरपूर जवाब देते हुवे कहा :

مَهْلًا يَاعَبَّاسُ فَوَاللّٰهِ لَاِسْلَامُكَ يَوْمَ اَسْلَمْتَ كَانَ اَحَبَّ اِلَيَّ مِنْ اِسْلَامِ الْخَطَّابِ لَوْ اَسْلَمَ وَمَابِيْ اِلَّا اَنِّيْ قَدْ عَرَفْتُ اَنَّ اِسْلَامَكَ كَانَ اَحَبَّ اِلَىٰ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ اِسْلَامِ الْخَطَّابِ

या'नी ऐ अ़ब्बास ! बस करें। ख़ुदा की क़सम ! जिस रोज़ आप इस्लाम लाए उस दिन आप का इस्लाम क़बूल करना मेरे नज़्दीक मेरे वालिद ख़त्ताब के इस्लाम लाने से भी ज़ियादा मह़बूब था अगर वोह इस्लाम क़बूल कर लेता और येह पसन्दीदगी फ़क़त़ मुझ तक नहीं है बल्कि मैं जानता हूं कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भी मेरे वालिद ख़त्ताब के इस्लाम लाने से आप का इस्लाम क़बूल करना ज़ियादा मह़बूब था। बा'दे अज़ां ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कलिमए शहादत पढ़ कर इस्लाम क़बूल कर लिया।(1)

रसूलुल्लाह के रिश्तेदार ज़ियादा मोहतरम थे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हर दुश्मन के लिये अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ज़ात नंगी तल्वार थी आप का सीना ग़ैरते इस्लामी का ख़ज़ीना था और येह भी

(1) شرح معانی الآثار، کتاب الحجة، باب فی فتح رسول اللہ۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۲۴۴، حدیث: ۵۳۲۷ مختصراً۔

मा'लूम हुवा कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अपने वालिद के इस्लाम से ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस्लाम को मह़बूब तर समझना सिर्फ़ इसी बुन्याद पर है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़्दीक सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रिश्तेदार सब से ज़ियादा मोह़्तरम थे।

सय्यिदुना अ़ब्बास का परनाला दोबारा लगा दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मेरे वालिदे गिरामी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मकान का एक परनाला था जो उस रास्ते में पड़ता था जहां से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ गुज़रते थे। एक बार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जुमुआ़ के दिन उजले कपड़े पहने मस्जिद जा रहे थे। और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हां दो चूज़े ज़ब्ह़ किये गए थे। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस परनाले के बिल्कुल नीचे पहुंचे तो ख़ून से मिला हुवा पानी आप पर आ गिरा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसी वक़्त परनाला उखाड़ने का हुक्म दे दिया। आप के हुक्म की ता'मील हुई और परनाला उखाड़ दिया गया। फिर आप वापस आए, कपड़े तब्दील किये और नमाज़े जुमुआ़ पढ़ाई। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप के पास आए और अ़र्ज़ किया : **وَاللّٰهِ اِنَّهٗ لَمَوْضَعُ الَّذِيْ وَضَعَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम! येह परनाला इस जगह ख़ुद ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने लगाया था। फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से कहा : **اَنَا اَعْزِمُ عَلَيْكَ لِمَا صَعِدْتَّ عَلٰى ظَهْرِيْ حَتّٰى تَضَعَهٗ فِي الْمَوْضَعِ الَّذِيْ وَضَعَهٗ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** या'नी मैं आप को ख़ुदा की क़सम दिलाता हूं कि आप मेरे साथ चलें, आप मेरी पीठ पर खड़े हों और जहां सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने परनाला लगाया था वहीं दोबारा लगाएं। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुक्म की ता'मील की और परनाला दोबारा वहीं लगा दिया।(1)

---

1 ......مسند امام احمد، حدیث العباس۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۴۴۹، حدیث: ۱۷۹۰۔

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास के वसीले से बारिश की दुआ़ फ़रमाते

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि जब क़ह्त़ पड़ता तो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा हज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वसीले से येह दुआ़ मांगते[1]:

اَللّٰھُمَّ اِنَّا کُنَّا نَتَوَسَّلُ اِلَیْکَ بِنَبِیِّنَا فَتَسْقِیْنَا وَاِنَّا نَتَوَسَّلُ اِلَیْکَ بِعَمِّ نَبِیِّنَا فَاسْقِنَا "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बेशक हम पहले तेरी बारगाह में अपने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वसीला पेश किया करते थे तो तू हम पर बारिश नाज़िल फ़रमाता था और अब हम अपने रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा के वसीले से दुआ़ मांगते हैं हमें बारिश अ़त़ा फ़रमा।" रावी कहते हैं कि जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह दुआ़ फ़रमाते तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बारिश नाज़िल फ़रमा देता।[2]

रसूलुल्लाह के ख़ानदान से इब्तिदा की जाए

हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़जलान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब रजिस्टर बनाया तो अपने अस्ह़ाब से मश्वरा लेते हुवे फ़रमाया : **بِمَنْ نَبْدَأُ؟** "या'नी सब से पहले किस से इब्तिदा की जाए ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अस्ह़ाब ने अ़र्ज़ किया : **بِنَفْسِکَ فَابْدَأْ** "या'नी हुज़ूर ! वज़ाइफ़ की तक़र्रुरी का आग़ाज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी ज़ात से करें क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इमाम हैं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : **لَا اِنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اِمَامُنَا فَبِرَھْطِہٖ نَبْدَأُ بِالْاَقْرَبِ فَالْاَقْرَبِ** "नहीं ! रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे इमाम हैं। इस लिये सब से पहले इन के ख़ानदान से आग़ाज़ किया जाता है, और इन के बा'द जो दरजा ब दरजा रिश्तेदार होंगे।"[3]

बनी हाशिम से अ़क़ीदतो मह़ब्बत

आप की अ़क़ीदत और इन के हुक़ूक़ की निगहदाश्त

हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है, फ़रमाते हैं :

---

1 .....वसीले से मुतअ़ल्लिक़ दीगर रिवायात व तफ़्सीली मा'लूमात के लिये "फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म" जिल्द दुवुम, स. 164 का मुत़ालआ़ कीजिये।

2 ......بخاری، کتاب الاستسقاء، باب سوال الناس۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۳۴۶، حدیث: ۱۰۱۰۔

3 ......کتاب الاموال لابی عبید، کتاب مخارج الفی۔۔۔الخ، تدوین عمر الدیوان۔۔۔الخ، ص ۲۳۶، الرقم: ۵۴۹۔

كَانَ عُمَرُ اِذَا اَتَاهُ مَالُ الْعِرَاقِ اَوْ خُمُسُ الْعِرَاقِ، وَلَمْ يَدَعْ رَجُلاً مِّنْ بَنِىْ هَاشِمٍ عَزْبًا اِلَّا زَوَّجَهُ، وَلَا رَجُلاً لَيْسَ لَهُ خَادِمٌ اِلَّا اَخْدَمَهُ

''या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास जब भी इराक़ से माले जिज़्या या ख़ुमुस आता आप बनी हाशिम के किसी ग़ैर शादीशुदा शख़्स की शादी कर देते और जिस के पास ख़ादिम न होता उसे ख़ादिम अ़त़ा फ़रमा देते।''(1)

तुम्हारे आस्ताने से कोई लौटा नहीं ख़ाली

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क्या शान है सादाते किराम, इन के नानाजान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और अहले बैते किराम की ! इस सख़ी घराने के साथ जो भी हुस्ने सुलूक करता है वोह मह़रूम नहीं रहता बल्कि उस पर इन्आ़मो इकराम की ऐसी बारिश होती है कि मोह़ताज और ग़मगीन लोगों के दिलों की मुरझाई कलियां खिल उठती हैं, गर्दिशे अय्याम की ज़द में आ कर सुन्सान व वीरान हो जाने वाले बाग़ात में बहार आ जाती है। जिस ने भी इन मुबारक हस्तियों से हुस्ने सुलूक किया वोह बेशुमार परेशानियों से नजात पा कर शादां व फ़रह़ा हो गया। और क्यूं न हो कि करीमों से तअ़ल्लुक़ रखने वाले पर भी ज़रूर करम किया जाता है। अहले बैते किराम चमनिस्ताने करम के महकते फूल हैं इन की ख़ुश्बू से आ़लमे इस्लाम महक रहा है, इन ही दरख़्शां सितारों की रौशनी से न जाने कितने भूले भटके मुसाफ़िरों को निशाने मन्ज़िल मिला। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, परवानए शम्ए़ रिसालत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن अहले बैते अत़्हार की शान बयान करते हुवे फ़रमाते हैं :

क्या बात रज़ा उस चमनिस्ताने करम की — ज़हरा है कली जिस में हुसैन और ह़सन फूल
तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का — तू है ऐ़ने नूर तेरा सब घराना नूर का

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या के सदक़े दीनो दुन्या की भलाइयां अ़त़ा फ़रमा, इन सादाते किराम का बा अदब बना, बे अदबों से हम सब को मह़फ़ूज़ फ़रमा। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इन की ग़ुलामी में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा और हमारा ख़ातिमा बिल ख़ैर फ़रमा।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

सह़ाबा का गदा हूं और अहले बैत का ख़ादिम
येह सब है आप की नज़्रे इनायत या रसूलल्लाह

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ......رياض النضرة، ج ۱، ص ۳۴۰، كتاب الاموال لابی عبيد، كتاب الخمس واحكامه، باب سهم ذی القربی ـــ الخ، ص ۳۴۵، الرقم: ۸۵۵ـ

सातवां बाब
हिस्सए सिवुम

फ़ारूके़ आ'ज़म का इश्के़ रसूल

(उम्महातुल मोमिनीन से अ़क़ीदतो मह़ब्बत)

इस बाब में मुलाहज़ा कीजिये..................

- .....उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ का खुसूसी शरफ़
- .....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की उम्महातुल मोमिनीन से अ़क़ीदतो मह़ब्बत
- .....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की उम्महातुल मोमिनीन की माली ख़ैर ख़्वाही
- .....उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के नज़्दीक सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मक़ामो मर्तबा
- .....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और उम्महातुल मोमिनीन की निगहबानी
- .....उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ का मुबारक ह़ज
- .....उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ के लिये ह़ज के खुसूसी इन्तिज़ामात
- .....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की उम्मुल मोमिनीन की गुस्ताख़ी करने वाले को सज़ा

उम्महातुल मोमिनीन से अ़क़ीदतो महब्बत

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلْجَنَّةُ تَحْتَ اَقْدَامِ الْاُمَّهَاتِ ''या'नी जन्नत माओं के क़दमों के नीचे है।''[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना बहज़ बिन ह़कीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से और वोह अपने दादा से रिवायत करते हुवे फ़रमाते हैं कि मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया : يَارَسُوْلَ اللّٰهِ مَنْ اَبَرُّ ''या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भलाई का सब से ज़ियादा ह़क़दार कौन है ?'' इरशाद फ़रमाया : اُمُّکَ ثُمَّ اُمُّکَ ثُمَّ اُمُّکَ ثُمَّ اَبُوْکَ या'नी तुम्हारी मां, फिर तुम्हारी मां, फिर तुम्हारी मां, फिर तुम्हारे वालिद।[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह तमाम फ़ज़ाइल व ह़ुक़ूक़ एक आ़म मोमिन की वालिदा के लिये हैं, ज़रा ग़ौर तो कीजिये कि सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ जो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजिय्यत के शरफ़ की वज्ह से उम्महातुल मोमिनीन के लक़ब से सरफ़राज़ हुईं। कुरआने पाक में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿اَلنَّبِیُّ اَوْلٰی بِالْمُؤْمِنِیْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ وَ اَزْوَاجُهٗۤ اُمَّهٰتُهُمْ﴾ (پ۲۱، الاحزاب:۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''येह नबी मुसलमानों का उन की जान से ज़ियादा मालिक है और इस की बीबियां उन की माएं हैं।''

अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ जिन को तमाम दुन्या की औ़रतों में येह खु़सूसी शरफ़ मिला है कि उन्हें ह़रमे नबी में दाखि़ल होने का शरफ़ नसीब हुवा और वोह दिन रात मह़बूबे खु़दा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत और उन की खि़दमत व सोह़बत के अन्वार व बरकात से सरफ़राज़ होती रहीं और जिन की फ़ज़ीलत व अ़ज़मत का खु़त़बा पढ़ते हुवे कुरआने अ़ज़ीम ने क़ियामत तक के लिये येह ए'लान फ़रमा दिया : ﴿یٰنِسَآءَ النَّبِیِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ﴾(پ۲۲، الاحزاب:۳۲) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ''ऐ नबी की बीबियो तुम और औ़रतों की त़रह़ नहीं हो।'' यक़ीनन अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ का मक़ामो मर्तबा और उन की ता'ज़ीमो तकरीम आ़म माओं से कहीं ज़ियादा है। अ़ल्लामा

---

1 ......فیض القدیر، حرف الجیم، فصل فی المحلی۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۴۷۷، تحت الحدیث: ۳۶۴۲۔

2 ......مسلم، کتاب البر والصلة۔۔۔الخ، باب بر الوالدین۔۔۔الخ، ص ۱۳۷۸، حدیث: ۱۔

ज़ुरक़ानी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ या'नी जिन से आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने निकाह़ फ़रमाया, चाहे दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी से पहले उन का इन्तिक़ाल हुवा हो या सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द उन्हों ने वफ़ात पाई हो, येह सब की सब उम्मत की माएं हैं और हर उम्मती के लिये उस की ह़क़ीक़ी मां से बढ़ कर लाइके़ ता'ज़ीम व वाजिबुल एह़तिराम हैं।"(1)

येही वज्ह है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन और जनाबे सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द तमाम उम्मत में अफ़्ज़ल होने के बा वुजूद उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ की बेह़द ता'ज़ीम व इकराम किया करते थे। नीज़ गाहे ब गाहे उन की माली ख़िदमत भी किया करते थे। चुनान्चे,

फ़ारूके़ आ'ज़म ने उम्मुल मोमिनीन की ख़ैर ख़्वाही की

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास कुछ माल बत़ौरे हदिय्या भेजा तो उन्हों ने उसी वक़्त सारा माल रिश्तेदारों और यतीमों में तक़्सीम कर दिया और यूं दुआ़ मांगी : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आइन्दा साल अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का अ़तिय्या मुझ तक न पहुंचे। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की दुआ़ क़बूल हुई और नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के बा'द अज़्वाजे मुत़ह्हरात (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ) में से सब से पहले विसाल फ़रमाया।"(2)

उम्मुल मोमिनीन के नज़्दीक फ़ारूके़ आ'ज़म का मक़ाम

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के नज़्दीक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द तमाम लोगों में सब से ज़ियादा अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मह़बूब हैं। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से

---

(1) ......شرح زرقانی علی المواھب، المقصد الثانی، الفصل الثالث فی ذکر ازواجہ الطاھرات، ج۴، ص۳۵۶۔

(2) ......طبقات کبری، زینب بنت جحش، ج۸، ص۸۷۔

रिवायत है फ़रमाते हैं कि मैं ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा : مَنْ كَانَ اَحَبَّ النَّاسِ اِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ ''या'नी ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नज़दीक लोगों में सब से ज़ियादा मह़बूब कौन है ?'' फ़रमाया : اَبُوْ بَكْرٍ ''या'नी मेरे वालिदे गिरामी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ।'' मैं ने अ़र्ज़ किया : ثُمَّ مَنْ؟ ''या'नी इन के बा'द कौन ज़ियादा मह़बूब है ?'' फ़रमाया : ثُمَّ عُمَرُ ''मेरे वालिदे गिरामी के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सब से ज़ियादा मह़बूब हैं ।''(1)

उम्महातुल मोमिनीन की निगहबानी

उम्महातुल मोमिनीन का ह़ज

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी नजीह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّ الَّذِيْ يُحَافِظُ عَلٰى اَزْوَاجِيْ بَعْدِيْ فَهُوَ الصَّادِقُ الْبَارُّ ''या'नी जो शख़्स मेरे बा'द मेरी अज़्वाज की ह़िफ़ाज़त करेगा, वोह सच्चा और नेकूकार होगा ।'' चुनान्चे, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में लोगों से फ़रमाया : مَنْ يَحُجُّ مَعَ اُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِيْنَ؟ ''या'नी उम्महातुल मोमिनीन के साथ कौन ह़ज की सआ़दत ह़ासिल करेगा ?'' (या'नी इन्हें ब ह़िफ़ाज़त ह़ज पर ले जाए और वापस भी लाए) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : ''اَنَا या'नी हु़ज़ूर इस सआ़दत के लिये मैं अपने आप को पेश करता हूं ।'' चुनान्चे, अमीरुल मोमिनीन के हु़क्म पर इन्हों ने उम्महातुल मोमिनीन की ख़ैर ख़्वाही की सआ़दत ह़ासिल की और उन्हें ह़ज करवाया । और ह़ज के लिये ऐसा मह़फ़ूज़ रास्ता इख़्तियार किया जिस में गहरी घाटियां थीं और वहां से आ़म लोगों की आमदो रफ़्त न थी, नीज़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पर्दे की ग़रज़ से ऊंटों के कजावों पर सब्ज़ चादरें भी डलवाईं ।(2)

उम्मुल मोमिनीन की गुस्ताख़ी करने वाले को सज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू वाइल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ''एक शख़्स ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से क़र्ज़ वापस लेना था । उस ने आ कर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا

---

1 ......مسند ابی یعلی، مسند عائشة، ج ۴، ص ۷۲۳، حدیث: ۱ ۴۷۸۔

2 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۳۵، ص ۲۸۶، ریاض النضرة، ج ۱، ص ۳۲۲۔

के साथ झगड़ा किया और ना मुनासिब रवय्या इख़्तियार किया नीज़ माल की वुसूली के लिये बार बार आप को तंग करना शुरूअ़ कर दिया। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को मा'लूम हुवा तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उम्मुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से गुस्ताख़ी के सबब उसे तीस कोड़े लगवाए।"[1]

उम्महातुल मोमिनीन की ख़ैर ख़्वाही

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ़दते मुबारका थी कि अपने घर से निकल कर जब भी उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ के घरों के क़रीब से गुज़रते तो आते जाते उन्हें सलाम करते, एक बार वापसी पर आप ने देखा कि एक शख़्स उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के दरवाज़े के बाहर बैठा हुवा है। आप ने उस से पूछा : "तुम यहां क्यूं बैठे हो ?" उस ने अ़र्ज़ किया : "उम्मुल मोमिनीन सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने मेरा कुछ क़र्ज़ देना है, वोही लेने के लिये यहां बैठा हूं।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ घर के अन्दर तशरीफ़ ले गए और सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया : "क्या आप की ज़रूरिय्यात के लिये सालाना छे हज़ार दिरहम काफ़ी नहीं हैं ?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "क्यूं नहीं, लेकिन मुझ पर चन्द और हुक़ूक़ भी हैं, मैं ने अपने सरताज अबुल क़ासिम मुह़म्मद रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि अगर किसी पर कुछ क़र्ज़ हो और वोह उस की अदाएगी की कोशिश में लगा रहे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के साथ एक मुह़ाफ़िज़ फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देता है। लिहाज़ा मैं चाहती हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से वोह मुह़ाफ़िज़ फ़िरिश्ता हमेशा मेरे साथ रहे।"[2]

अज़्वाजे मुत़ह्हरात के ह़ज के लिये ख़ुसूसी इन्तिज़ाम

ह़ज़रते सय्यिदुना मुन्ज़िर बिन सा'द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाज ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से ह़ज की इजाज़त त़लब की। तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन्कार फ़रमा दिया। अज़्वाजे मुत़ह्हरात ने इसरार किया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "आइन्दा साल आप को इजाज़त होगी और येह मेरी ज़ाती राए नहीं।" ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ किया : "मैं ने

1 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الحدود، باب فی التعزیر کم هو و کم یبلغ به، ج ۶، ص ۵۶۷، الحدیث: ۲۔

2 ......معجم اوسط، من اسمه علی، ج ۳، ص ۲۵، حدیث: ۳۷۵۹۔

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ह़ज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर सुना है आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''येह ह़ज और इस के बा'द ह़स्र है।'' फिर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के सिवा दीगर तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ को ह़ज पर भेज दिया और साथ ही ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को भेजा और इरशाद फ़रमाया : اَنْ يَّسِيْرَ اَحَدُهُمَا بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ وَالْاٰخَرُ خَلْفَهُنَّ وَلَا يُسَايِرُهُنَّ اَحَدٌ ''या'नी तुम दोनों में से एक शख़्स आगे चले और दूसरा पीछे। दोनों एक साथ चलने की कोशिश न करें।'' और त़वाफ़ के मुतअ़ल्लिक़ येह हुक्म जारी फ़रमाया : اِذَا طُفْنَ بِالْبَيْتِ لَا يَطُوْفُ مَعَهُنَّ اَحَدٌ اِلَّا النِّسَاءُ ''या'नी पहले मर्दों से ह़रम को ख़ाली कर दिया जाए और सिर्फ़ ख़्वातीन ही अज़्वाजे मुत़ह्हरात के साथ त़वाफ़ करें।''(1)

ह़दीसे मुबारका की शर्ह़

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़िब्बुद्दीन त़बरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ''येह भी मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अपने अ़ह्द में हर साल लोगों के साथ खुद ह़ज फ़रमाया करते थे। इस लिये मुमकिन है कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को अज़्वाजे मुत़ह्हरात के ह़िफ़ाज़ती उमूर की ज़िम्मेदारी इस लिये दी हो कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه दिगर मसरूफ़िय्यात के बाइ़स येह फ़रीज़ा ब ज़ाते खुद अन्जाम नहीं दे सकते थे। सह़ीह़ बुख़ारी में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़्वाज को अपने दौर के आख़िरी ह़ज में शिर्कत की इजाज़त दी, और इन के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को भेजा।(2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ......رياض النضرة، ج ۱، ص ۳۴۲۔

2 ......بخاری، کتاب جزاء الصيد، باب حج النساء، ج ۱، ص ۶۱۳، حديث: ۱۸۶۰، رياض النضرة، ج ۱، ص ۳۴۲۔

सातवां बाब
हिस्सए चहारुम

फ़ारूक़े आ'ज़म का इश्क़े रसूल

(रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्हाब से महब्बत)

इस बाब में मुलाहज़ा कीजिये..........

- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अक़ीदत
- .....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की माली ख़ैर ख़्वाही
- .....शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ
- .....शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ
- .....शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ
- .....शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا
- .....शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ
- .....शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ
- .....शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ
- .....शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदतुना उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا
- .....शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ
- .....शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ
- .....शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

अस्हाबे रसूल से अक़ीदतो महब्बत

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ में इश्के रसूल का एक पहलू येह भी है कि आप रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तमाम अस्हाब से भी अक़ीदतो महब्बत रखते थे । खुसूसन ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कि वोह आप के लिये मिसाली शख़्सिय्यत (आईडियल) थे । चुनान्चे,

सिद्दीके अक्बर से अक़ीदतो महब्बत

हयाते सिद्दीक़ का एक दिन और एक रात

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास एक बार हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़िक्र छिड़ गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रोते हुवे फ़रमाया : "मेरी येह तमन्ना है कि ऐ काश ! मेरे तमाम आ'माले सालेहा के बदले में मुझे सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक दिन और एक रात का अमल दे दिया जाए, उन का एक रात का अमल तो हिजरत के मौक़अ़ पर था जब वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ग़ार को चले थे, वहां पहुंचने पर सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! जब तक मैं अन्दर न जाऊं आप दाख़िल न हों, अगर इस में कोई नुक़्सान देह चीज़ होगी तो आप से पहले मुझ तक पहुंचेगी ।" तो वोह अन्दर गए ग़ार साफ़ किया, ग़ार में चारों तरफ़ सूराख़ थे, जिन्हें आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने तहबन्द के टुकड़े कर के पुर किया । दो सूराख़ रह गए उन पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना पाउं रख दिया और अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अन्दर तशरीफ़ ले आइये ।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दाख़िल हुवे और सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की गोद में सरे अन्वर रख कर इस्तिराहत फ़रमाने लगे, सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सूराख़ में से किसी ज़हरीली चीज़ ने डस लिया । मगर हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नींद में ख़लल आ जाने के ख़ौफ़ से उन्हों ने ज़रा जुम्बिश तक न की, मगर आंसू टपक पड़े जो रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रुख़े अन्वर के बोसे लेने लगे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेदार हुवे और फ़रमाया : "अबू बक्र ! तुम्हें क्या हुवा ?" अ़र्ज़ किया : "किसी (सांप) ने डस लिया, आप पर मेरे मां-बाप कुरबान !" सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुतअस्सिरा जगह पर लुआ़बे दहन लगाया तो वोह बिल्कुल

ठीक हो गया। और एक दिन का अ़मल येह है कि जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुन्या से पर्दा फ़रमाया तो कई अ़रब क़बाइल मुर्तद हो गए, वोह कहने लगे कि "हम ज़कात नहीं देंगे।" सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "अगर वोह ज़कात की एक रस्सी भी न देंगे तो मैं उन से जिहाद करूंगा, मैं ने (या'नी सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने) अ़र्ज़ किया : "ऐ ख़लीफ़ए रसूल ! लोगों से नर्मी बरतें।" आप رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने मुझे फ़रमाया : "तुम जाहिलिय्यत में बड़े सख़्त थे, अब इस्लाम में आ कर इतने नर्म क्यूं हो गए हो ? वह्य ख़त्म हो चुकी और दीन मुकम्मल हो चुका, अब किसी नर्मी का सुवाल ही पैदा नहीं हो सकता, क्या मेरे ज़िन्दा होते हुवे दीन में कमी कर दी जाएगी ?"[1]

पूरी ज़िन्दगी के जुम्ला आ'माल से बेहतर

हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की बारगाह में कुछ लोगों के मुतअ़ल्लिक़ अ़र्ज़ किया गया कि वोह आप को हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه पर फ़ज़ीलत देते हैं। येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फूट फूट कर रोने लगे और इरशाद फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की एक रात और एक दिन की नेकी मेरी ज़िन्दगी के जुम्ला नेक आ'माल से कहीं बेहतर है, अगर कहो तो तुम्हें सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का एक दिन और एक रात बतलाऊं ?" अ़र्ज़ किया गया : "अमीरल मोमिनीन ! ज़रूर बतलाइये।" फ़रमाया : "रात तो वोह है जब महबूबे रब्बे दावर, शफ़ीए रोज़े महशर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मक्कए मुकर्रमा से हिजरत कर के रात के वक़्त निकले। सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه भी आप के साथ थे, जो सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कभी आगे चलते और कभी पीछे, कभी दाएं कभी बाएं, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा : "अबू बक्र ! येह क्या है, तुम पहले तो कभी इस त़रह़ नहीं चले ?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "मुझे जब ख़ौफ़ आता है कि कोई दुश्मन आगे घात लगाए न बैठा हो तो आप के आगे चलने लगता हूं और जब येह ख़याल आता है कोई पीछा करने वाला पीछे से ह़म्ला आवर न हो तो आप के पीछे चलने लग जाता हूं और चूंकि अम्न नहीं इस लिये दाएं बाएं भी चल रहा हूं।" हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रात भर अपने पैरों की उंगलियों पर चलते रहे ताकि क़दमों के निशान न साबित हों जिस के सबब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

1 ......جامع الاصول، الكتاب السابع فی الغدر، الباب الرابع، الفرع الثانی فی فضائل الرجال علی الانفراد، ج٨، ص٤٥٨، حديث: ٦٤٢٦ـ

के क़दमैने मुबारका जा बजा ज़ख़्मी हो गए जब सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप के क़दमों की तक्लीफ़ देखी तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कन्धों पर उठा लिया और ग़ार के दहाने तक ले आए, वहां आप को उतारा फिर अ़र्ज़ किया : "ग़ार में पहले मैं जाता हूं, अगर कोई चीज़ होगी तो आप से पहले मुझे नुक़्सान देगी।" सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अन्दर गए और कोई मूज़ी शै न पाई तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उठा कर ग़ार में ले आए, जहां एक सूराख़ था, जिस में बिच्छू और सांप थे, सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को डर हुवा कहीं कोई मूज़ी शै निकल कर रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तक्लीफ़ न पहुंचाए उन्हों ने उस पर अपना क़दम रख दिया, तो उस सूराख़ में मौजूद सांप ने आप के क़दम पर डस लिया, आप ने जुम्बिश न की, कि कहीं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आराम में ख़लल वाक़ेअ़ न हो जाए मगर तक्लीफ़ के सबब आंसू छलक पड़े, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا "या'नी ऐ अबू बक्र ! ग़म न कर, बेशक **अल्लाह** तआ़ला हमारे साथ है।" पस आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इस बात से **अल्लाह** तआ़ला ने सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दिल पर सुकून नाज़िल कर दिया तो येह थी अबू बक्र की एक रात। और दिन वोह है जिस में सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्तिक़ाल फ़रमाया और कई अ़रब क़बाइल मुर्तद हो गए तो इस मौक़अ़ पर मेरे मन्अ़ करने के बा वुजूद ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कमाले फ़हमो फ़िरासत और दूर अन्देशी से काम लेते हुवे मुर्तद क़बाइल के ख़िलाफ़ जिहाद कर के उस फ़ितने को हमेशा के लिये ज़मीं बर्द कर दिया।" इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर फ़ज़ीलत देने वालों को एक तहदीद आमेज़ (या'नी सख़्त अल्फ़ाज़ वाला) ख़त़ लिखा जिस में उन्हें आइन्दा ऐसा करने से सख़्ती से मन्अ़ फ़रमा दिया।(1)

सह़ाबए किराम की माली ख़ैर ख़्वाही

फ़ारूके़ आ'ज़म ने 400 दीनार से ख़ैर ख़्वाही की

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने एक ग़ुलाम को ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये 400 दीनार दे कर भेजा और उसे उन के हां ठहरने का हुक्म दिया ताकि वोह देख सके कि उन दीनारों का वोह करते क्या हैं ? वोह ग़ुलाम

(1) ......دلائل النبوة، باب خروج النبی مع صاحبه ابی بکر الصدیق، ج ٢، ص ٤٧٦۔٤٧٧۔

दीनार ले कर गया और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और दीनार उन की बारगाह में पेश कर दिये। उन्हों ने कुछ ग़ौर किया फिर उन सब को तक़्सीम कर दिया। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ग़ुलाम आप के पास लौट आया और सारा वाक़िआ़ अ़र्ज़ कर दिया। ग़ुलाम ने येह भी देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ऐसे ही दीनार ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये भी तय्यार कर रखे हैं। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह दीनार ग़ुलाम को दे कर ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ भेजा और उसे उन के हां ठहरने का हुक्म दिया ताकि वोह देख सकें कि उन दीनारों का वोह क्या करते हैं। उस ने ऐसा ही किया और जब ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास दीनार ले कर ह़ाज़िर हुवा तो उन्हों ने भी वोह दीनार तक़्सीम कर दिये। जब उन की ज़ौजए मोह़तरमा को इस की ख़बर हुई तो वोह बोलीं : "ख़ुदा की क़सम ! हम भी मिस्कीन हैं, हमें भी अ़त़ा फ़रमाइये।" दो दीनार बचे थे आप ने वोह उन्हें दे दिये। फिर वोह ग़ुलाम अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास लौट आया और सारा माजरा अ़र्ज़ किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّهُمْ اِخْوَةٌ بَعْضُهُمْ مِّنْ بَّعْضٍ "या'नी येह लोग आपस में भाई हैं।"(1)

बिग़ैर सुवाल व चाहत के जो मिले ले लो

ह़ज़रते सय्यिदुना साइब बिन जै़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने सा'दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम्हारे पास कितना माल है ?" अ़र्ज़ किया : فَرَسَان وَعَبْدَان وَبَغْلَان اَغْزُوْ بِهِنَّ وَمَزْرَعَةٌ آكُلُ مِنْهَا "या'नी दो घोड़े, दो ग़ुलाम और दो ख़च्चर हैं, उन से मैं जिहाद करता हूं और एक खेत है जिस से खाता हूं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें एक हज़ार दीनार अ़त़ा किये और इरशाद फ़रमाया : خُذْ هٰذِهٖ فَاسْتَنْفِقْهَا "या'नी येह ले लो और इन्हें ख़र्च करो।" सय्यिदुना इब्ने सा'दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : اِنَّهُ لَا حَاجَةَ لِيْ اِلَيْهَا وَسَتَجِدُ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ مَنْ هُوَ اَحْوَجُ اِلَيْهَا مِنِّيْ "हुज़ूर ! मुझे इस की ह़ाजत नहीं। शायद आप को मुझ से ज़ियादा ह़ाजत मन्द आदमी मिल जाए।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया :

بَلٰى فَخُذْهَا فَاِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَعَانِيْ اِلٰى مِثْلِ مَا دَعَوْتُكَ اِلَيْهِ فَقُلْتُ لَهٗ مِثْلَ الَّذِيْ قُلْتَ

(1) ......معجم كبير، بقية الميم، ذكر مشاهد۔۔۔الخ، ج ٢٠، ص ٣٣، حديث: ٤٦۔

या'नी हां क्यूं नहीं लेकिन तुम ले लो क्यूंकि एक बार अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी मुझे कुछ अ़ता फ़रमाया तो मैं ने भी वोही जवाब दिया जो तुम ने दिया।'' तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

مَاجَاءَکَ اللّٰہُ بِہٖ مِنْ رِزْقٍ غَیْرِ مُتَشَوِّفَۃٍ اِلَیْہِ نَفْسُکَ وَلَا سَائِلَۃٍ فَاقْبَلْہُ فَاسْتَنْفِقْہُ فَاِنِ اسْتَغْنَیْتَ عَنْہُ فَتَصَدَّقْ بِہٖ وَمَالَمْ یَاْتِکَ فَدَعْہُ

या'नी ऐ उ़मर ! जो माल तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बिग़ैर चाहत और बिग़ैर सुवाल के अ़ता फ़रमाए वोह ज़रूर ले लो, अगर खु़द अपने लिये ज़रूरत नहीं तो ले कर सदक़ा कर दो और जो चीज़ न मिले उस की चाहत न रखो।(1)

आ़शिक़ाने रसूलुल्लाह से अ़क़ीदतो मह़ब्बत

रसूलुल्लाह के मुह़िब्बीन व मुक़र्रबीन को तरजीह़

ह़ज़रते सय्यिदुना अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपने बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर तरजीह़ और फ़ज़ीलत दी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस बारे में अपने वालिदे गिरामी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से गुफ़्त्गू की और अ़र्ज़ किया : ''न तो उसामा के वालिद का मक़ामो मर्तबा मेरे वालिद से ज़ियादा है और न ही उसामा रुत्बे के ए'तिबार से मुझ से बढ़ कर है, इस के बा वुजूद आप ने उसामा को एक हज़ार दीनार से ज़ाइद क्यूं दिये ?'' येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया :

لِاَنَّ زَیْدًا کَانَ اَحَبَّ اِلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مِنْ اَبِیْکَ وَکَانَ اُسَامَۃُ اَحَبَّ اِلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مِنْکَ

या'नी येह मैं ने इस लिये किया है कि (ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिद) ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तेरे वालिद उ़मर से ज़ियादा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मह़बूब थे और ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तुझ से ज़ियादा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मह़बूब थे।(2)

ऐ अमीर ! आप पर सलाम हो

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

1 ......رياض النضرة،ج ١،ص ٣٣٩۔

2 ......ترمذی، کتاب المناقب، مناقب زيدبن حارثه،ج ٥،ص ٤٤٥،حديث: ٣٨٣٩ملتقطاً۔

को देखते तो उन्हें यूं सलाम करते : اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ اَیُّھَا الْاَمِیْرُ "या'नी ऐ अमीर ! आप पर सलाम हो।" एक बार सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "ऐ अमीरुल मोमिनीन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप की मग़फ़िरत फ़रमाए, आप मुझे अमीर कह कर क्यूं पुकारते हैं ?" फ़रमाया : "ऐ उसामा बिन ज़ैद ! जब तक तुम ज़िन्दा हो मैं तुम्हें इसी त़रह़ "अमीर" ही कह कर पुकारता रहूंगा क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने इन्तिक़ाल के वक़्त तुम्हें ही अमीर बनाया था।"(1)

इश्क़ो महब्बत का दूसरा रुख़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अब तक आप ने जितने भी अक़्वाल व वाक़िआ़त मुलाह़ज़ा किये वोह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के इश्क़ो मह़ब्बत से मुतअ़ल्लिक़ थे, अब आप वोह अह़ादीसे मुबारका व वाक़िआ़त मुलाह़ज़ा कीजिये जो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मह़ब्बत व उल्फ़त से मुतअ़ल्लिक़ हैं।

शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर

सिद्दीक़े अक्बर की फ़ारूक़े आ'ज़म से मह़ब्बत

ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : وَاللّٰہِ اِنَّ عُمَرَ لَاَحَبُّ النَّاسِ اِلَیَّ "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तमाम लोगों में मुझे सब से ज़ियादा मह़बूब उ़मर हैं।"(2)

उ़मर से बेहतर किसी शख़्स पर सूरज तुलूअ़ नहीं हुवा

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यूं पुकारा : یَا خَیْرَ النَّاسِ بَعْدَ رَسُوْلِ اللّٰہِ "या'नी ऐ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द सब से बेहतर।" तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया :

---

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج۸، ص ۷۰۔

2 ......کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الفاروق، الجزء:۱۲، ج۶، ص ۲۴۴، حدیث: ۳۵۷۳۱۔

اَمَا اِنَّکَ اِنْ قُلْتَ ذَاکَ فَلَقَدْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یَقُوْلُ مَا طَلَعَتِ الشَّمْسُ عَلٰی رَجُلٍ خَیْرٍ مِنْ عُمَرَ

या'नी अगर तुम ने मुझे यूं पुकारा है तो फिर अपनी फ़ज़ीलत भी सुनो, मैं ने खुद ख़ातमुल मुर्सलीन, रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तुम्हारे मुतअल्लिक़ येह फ़रमाते सुना है कि उमर से बेहतर किसी शख़्स पर सूरज तुलूअ नहीं हुवा।(1)

मैं ने सब से बेहतर शख़्स को हाकिम बनाया

हज़रते सय्यिदुना जुबैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुला भेजा ताकि उन्हें ख़लीफ़ा बनाएं। तो लोगों ने आप की बारगाह में अर्ज़ किया :

اِسْتَخْلَفْتَ عَلَیْنَا فَظًّا غَلِیْظًا، فَلَوْ مَلَکَنَا کَانَ اَفَظَّ وَاَغْلَظَ، مَاذَا تَقُوْلُ لِرَبِّکَ اِذَا اَتَیْتَہ وَقَدِ اسْتَخْلَفْتَ عَلَیْنَا

या'नी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हम पर एक ऐसे शख़्स को ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमा रहे हैं जो पहले ही बहुत सख़्त मिज़ाज है, अगर वोह हम पर हाकिम बन गया तो फिर वोह ज़ियादा सख़्ती व शिद्दत से पेश आएगा। रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में जब आप जाएंगे तो क्या जवाब देंगे ? अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह सुन कर इरशाद फ़रमाया :

اَتُخَوِّفُوْنِي بِرَبِّي، اَقُوْلُ: اَللّٰھُمَّ اَمَّرْتُ عَلَیْھِمْ خَیْرَ اَھْلِکَ या'नी तुम मुझे रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में जवाब देही से डरा रहे हो सुनो मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ से अर्ज़ करूंगा : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ने उस शख़्स को इन पर हाकिम मुक़र्रर किया है जो सब से बेहतर है।"(2)

फ़ारूके आ'ज़म से ज़ियादा कोई महबूब नहीं

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है फ़रमाती हैं कि मेरे वालिदे माजिद अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : وَاللّٰہِ مَا عَلٰی وَجْہِ الْاَرْضِ رَجُلٌ اَحَبَّ اِلَیَّ مِنْ عُمَرَ "या'नी रूए ज़मीन पर कोई शख़्स ऐसा नहीं है जो मुझे हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ज़ियादा महबूब हो।"(3)

---

1 ......ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی حفص۔۔۔الخ، ج۵، ص ۳۸۴، حدیث: ۳۷۰۴۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الفضائل، ما ذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج۷، ص ۴۸۵، حدیث: ۲۶۔

3 ......الادب المفرد، باب الولد، مبخلۃ مجبنۃ، ص ۳۲، حدیث: ۸۴ ملتقطاً۔

शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने मौला अ़ली शेरे ख़ुदा

फ़ारूक़े आ'ज़म के औसाफ़े हमीदा

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त का पहला दिन था, मुहाजिरीन व अन्सार मस्जिदे नबवी में जम्अ़ थे। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) तशरीफ़ लाए और एक त़वील ख़ुत़बा दिया जिस में अव्वलन रब عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना बयान की, सानिय्यन रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मद्ह़ो सना बयान की, सालिसन अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मनाक़िब को बयान फ़रमाया, फिर अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मनाक़िब बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

❀.....قَامَ مَقَامَهُ الْفَارُوْقُ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ شَمَّرَ عَنْ سَاقَيْهِ وَحَسَّرَ عَنْ ذِرَاعَيْهِ "अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मन्सबे ख़िलाफ़त संभाला।" दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िलाफ़त को ब त़रीक़े अह़सन संभालने के लिये कमर बस्ता हो गए।

❀.....لَا تَأْخُذُهُ فِي اللّٰهِ لَوْمَةُ لَائِمٍ "फ़ारूक़े आ'ज़म की शख़्सिय्यत तो वोह थी कि उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुआ़मले में किसी मलामत करने वाले की मलामत का कोई ख़ौफ़ और कोई डर न था।"

❀.....كُنَّا نَرٰى اَنَّ السَّكِيْنَةَ تَنْطِقُ عَلٰى لِسَانِهٖ "हम देखते थे कि सकीना उ़मर की ज़बान पर बोलता है।"

❀.....وَكَيْفَ لَا اَقُوْلُ هٰذَا وَرَاَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَ اَبِيْ بَكْرٍ وَعُمَرَ، فَقَالَ
هٰكَذَا نُحْيِيْ وَهٰكَذَا نَمُوْتُ وَهٰكَذَا نُبْعَثُ وَهٰكَذَا نَدْخُلُ الْجَنَّةَ

"और मैं उन के औसाफ़ क्यूं न बयान करूं कि मैं ने ख़ुद सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के दरमियान देखा और येह फ़रमाते सुना कि दुन्या में हम इसी त़रह़ रहेंगे और दुन्या से इसी त़रह़ रुख़्सत होंगे, कल बरोज़े क़ियामत हमें एक साथ उठाया जाएगा और इसी त़रह़ इकठ्ठे जन्नत में दाख़िल होंगे।"

وَكَيْفَ لَا اَقُوْلُ هٰذَا فِي الْفَارُوْقِ وَالشَّيْطَانُ يَفِرُّ مِنْ حِسِّهٖ..... "और मैं अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के औसाफ़ क्यूं न बयान करूं कि शैत़ान भी उन की आहट से भाग जाता था।"

فَمَضٰى شَهِيْدًا رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ..... "मगर आह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी शहीद हो कर हम से बिछड़ गए। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो।"(1)

फ़ारूके आ'ज़म का ज़िक्र ज़रूर करो

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं : اِذَا ذُكِرَ الصَّالِحُوْنَ فَحَيَّ هَلًا بِعُمَرَ "या'नी जब सालिह़ीन (नेक लोगों) का ज़िक्र हो तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़िक्र ज़रूर किया करो।"(2)

शैख़ैन से मोमिन ही मह़ब्बत रखेगा

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन वहब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना सुवैद बिन ग़फ़ला رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ किया : يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِنِّيْ مَرَرْتُ بِنَفَرٍ يَذْكُرُوْنَ اَبَابَكْرٍ وَعُمَرَ بِغَيْرِ الَّذِيْ هُمَا اَهْلٌ لَهُ مِنَ الْاِسْلَامِ "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं एक ऐसे गुरौह के पास से गुज़रा जो सय्यिदुना सिद्दीके अक्बर व फ़ारूके आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का तज़किरा इस त़रह़ कर रहे थे जो इस्लाम में रवा नहीं।" येह सुन कर मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) मिम्बर से उठ खड़े हुवे और उन का हाथ पकड़ कर इरशाद फ़रमाया :

وَالَّذِيْ فَلَقَ الْحَبَّةَ وَبَرَاَ النَّسَمَةَ لَا يُحِبُّهُمَا اِلَّا مُؤْمِنٌ فَاضِلٌ وَلَا يَبْغَضُهُمَا وَيُخَالِفُهُمَا اِلَّا شَقِيٌّ مَارِقٌ فَحُبُّهُمَا قُرْبَةٌ وَبُغْضُهُمَا مُرُوْقٌ.....

"या'नी ख़ालिके काइनात की क़सम ! सिर्फ़ ह़क़ीक़ी मोमिन ही उन दोनों से मह़ब्बत करेगा और बदबख़्त व बद दीन ही उन से नफ़रत व मुख़ालफ़त करेगा क्यूंकि उन की मह़ब्बत क़ुर्बत (ईमाने ह़क़ीक़ी) और उन से नफ़रत बे दीनी है।"

---

1 ..... كنزالعمال، كتاب الخلافة مع الامارة، خلافة امير المؤمنين ـــ الخ، الجزء: ۵، ج ۳، ص ۲۸۵، حديث: ۱۴۲۳۸ ملخصا۔

2 ..... معجم اوسط، من اسمه محمد، ج ۴، ص ۱۵۵، حديث: ۵۵۴۹۔

مَا بَالُ اَقْوَامٍ يَذْكُرُوْنَ اَخَوَىْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ سَلَّمَ وَوَزِيْرَيْهِ وَصَاحِبَيْهِ وَسَيِّدَيْ قُرَيْشٍ..... وَاَبَوَيِ الْمُسْلِمِيْنَ فَاَنَابَرِيْءٌ مِّمَّنْ يَذْكُرُهُمَا وَعَلَيْهِ مُعَاقِبٌ

"या'नी लोगों को क्या हो गया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उन दोनों भाइयों, वज़ीरों, दोस्तों, क़ुरैश के सरदार और मुसलमानों के रूहानी वालिदैन का इस त़रह़ ज़िक्र करते हैं ह़ालांकि मैं हर उस शख़्स से बरी हूं जो उन का इस त़रह़ ज़िक्र करता है और उसे सज़ा दूंगा।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म महबूबे शेरे ख़ुदा हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा मुश्किल कुशा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के विसाल के बा'द ह़ाज़िर हुवे तो देखा कि आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه चादर ओढ़े आराम फ़रमा रहे हैं। मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने इरशाद फ़रमाया : مَا عَلَى وَجْهِ الْاَرْضِ اَحَدٌ اَحَبَّ اِلَيَّ اَنْ اَلْقَى اللّٰهَ بِصَحِيْفَتِهٖ مِنْ هٰذَا الْمُسَجّٰى "या'नी रूए ज़मीन पर मुझे इन चादर ओढ़े हुवे अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से ज़ियादा कोई शख़्स इतना मह़बूब नहीं है कि जिस के नामए आ'माल के साथ मैं रब عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात करूं।"(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म मौला अ़ली के ख़ास़ुल ख़ास़ दोस्त

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सफ़र رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है फ़रमाते हैं कि मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) को देखा गया कि आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه अक्सर एक मख़्सूस चादर ज़ेबे तन फ़रमाया करते थे। जब आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से इस का सबब पूछा गया तो इरशाद फ़रमाया : اِنَّهُ كَسَانِيْهِ خَلِيْلِي وَصَفِيِّي وَصَدِيْقِي وَخَاصِّي عُمَرُ اِنَّ عُمَرَ نَاصَحَ اللّٰهَ فَنَصَحَهُ اللّٰهُ ثُمَّ بَكٰى "या'नी येह चादर मेरे ख़लील, सफ़ी, सिद्दीक़ और ख़ास़ुल ख़ास़ दोस्त उ़मर ने पहनाई है। बेशक उ़मर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये ख़ैर ख़्वाही करते हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन से ख़ैर ख़्वाही फ़रमाता है। येह फ़रमाते हुवे रो पड़े।"(3)

---

1 ......حلية الاولياء، شعبة بن الحجاج، ج٧، ص٢٣٦، الرقم: ١٠٣٣٢۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الفضائل، ماذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج٧، ص٤٨٦، حدیث: ٥١۔

3 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الفضائل، ماذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج٧، ص٤٨١، حدیث: ٣٠۔

फ़ारूक़े आ'ज़म का फ़ैसला ज़र्रा भर तब्दील नहीं करूंगा

हज़रते सय्यिदुना सालिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अहले नजरान को मुल्क बदर कर दिया। मौला अ़ली शेरे खुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم) के दौरे ख़िलाफ़त में वोह लोग आप की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ किया : يَا اَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ كِتَابُكَ بِيَدِكَ وَ شَفَاعَتُكَ بِلِسَانِكَ اَخْرَجَنَا عُمَرُ مِنْ اَرْضِنَا فَارْدُدْنَا اِلَيْهَا ''या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अब काग़ज़ी कारवाई आप के हाथ में है, शफ़ाअ़त आप की ज़बान पर है, हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हमें हमारी ज़मीन से निकाल दिया था आप हमें दोबारा लौटने की इजाज़त मर्ह़मत फ़रमा दें।'' येह सुन कर मौला अ़ली शेरे खुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم) ने फ़रमाया : وَيْحَكُمْ اِنَّ عُمَرَ كَانَ رَشِيدَ الْاَمْرِ وَلَا اُغَيِّرُ شَيْئًا صَنَعَهُ عُمَرُ ''या'नी तुम्हारी बरबादी हो, बेशक हज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बिल्कुल दुरुस्त फ़ैसला फ़रमाने वाले थे और याद रखो हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो फ़ैसला फ़रमा दिया मैं उस में ज़र्रा भर तब्दीली नहीं करूंगा।''(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म का मुआ़हदा नहीं तोड़ूंगा

हज़रते सय्यिदुना इमाम शा'बी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे खुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم) कूफ़ा तशरीफ़ लाए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : مَا قَدِمْتُ لِاَحُلَّ عُقْدَةً شَدَّهَا عُمَرُ या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो मुआ़हदा कर लिया था मैं उसे हरगिज़ नहीं तोड़ूंगा।(2)

सिद्दीक़े अक्बर व फ़ारूक़े आ'ज़म हुक्मरानों के लिये हुज्जत

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे खुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم) ने इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ اللّٰهَ جَعَلَ اَبَابَكْرٍ وَعُمَرَ حُجَّةً عَلَى مَنْ بَعْدَهُمَا مِنَ الْوُلَاةِ اِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ فَسَبَقَا وَاللّٰهِ سَبْقًا بَعِيدًا، وَاَتْعَبَا وَاللّٰهِ مَنْ بَعْدَهُمَا اِتْعَابًا شَدِيدًا

''या'नी बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर व फ़ारूक़े आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) दोनों को उन के बा'द आने वाले तमाम हुक्मरानों के लिये क़ियामत तक के लिये हुज्जत बना दिया,

1 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الفضائل، ما ذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۸۳، حدیث: ۳۷۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الفضائل، ما ذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۸۳، حدیث: ۳۸۔

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह दोनों (अपने उमूरे ख़िलाफ़त को बेहतर त़रीक़े से अन्जाम देने में) बहुत दूर तक सब्क़त ले गए और इन्हों ने अपने बा'द में आने वालों को बहुत थका दिया।"[1]

शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास

फ़ारूक़े आ'ज़म का ज़िक्र कसरत से करो

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के शागिर्दे रशीद हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने उस्तादे मोह़तरम या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं :

اَكْثِرُوْا ذِكْرَ عُمَرَ فَاِنَّ عُمَرَ اِذَا ذُكِرَ ذُكِرَ الْعَدْلُ وَاِذَا ذُكِرَ الْعَدْلُ ذُكِرَ اللّٰهُ

"या'नी ऐ लोगो ! अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का कसरत से ज़िक्र किया करो क्यूंकि जब उन का ज़िक्र किया जाएगा तो उन के अ़द्लो इन्साफ़ का ज़िक्र होगा और जब अ़द्लो इन्साफ़ का ज़िक्र होगा तो रब عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र होगा।"[2]

फ़ारूक़े आ'ज़म एक होशयार परन्दे की त़रह हैं

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में पूछा गया तो फ़रमाया : كَانَ وَاللّٰهِ خَيْرًا كُلُّهٗ "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह तो सरापा ख़ैर ही ख़ैर थे।" और जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में पूछा गया तो इरशाद फ़रमाया :

كَانَ وَاللّٰهِ كَالطَّيْرِ الْحَذَرِ الَّذِيْ يُنْصَبُ لَهٗ فِيْ كُلِّ طَرِيْقٍ شَرَكٌ وَكَانَ يَعْمَلُ عَلٰى مَا يَرٰى مَعَ الْعُنْفِ وَشِدَّةِ النِّشَاطِ

"या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ तो उस परन्दे की त़रह़ हैं जिसे हर वक़्त येही खटका लगा रहता है कि हर जगह उसे फंसाने के लिये जाल बिछा दिया गया है और वोह हर काम शिद्दत व सख़्ती और चुस्ती के साथ करता रहता है।"[3] (या'नी आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ न तो धोका देते हैं और न ही धोका खाते हैं।)

---

1 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب التاسع عشر، ص ۴۲۔

2 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۳۸۰۔

3 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۳۰، ص ۳۸۶ملتقطا۔

शाने फ़ारूके़ आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा

जिस मजलिस में ज़िक्रे उ़मर हो वोह मजलिस अच्छी गुफ़्तगू वाली है

हज़रते सय्यिदुना इमाम शा'बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی से रिवायत है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है फ़रमाती हैं : **اِذَا ذُكِرَ عُمَرُ فِی الْمَجْلِسِ حَسُنَ الْحَدِيْثُ** "या'नी जब किसी मजलिस में अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का ज़िक्र किया जाए तो गुफ़्तगू में हुस्न पैदा हो जाता है।"(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म के ज़िक्र से मजालिस को मुज़य्यन करो

हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन बुर्क़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है फ़रमाती हैं : **زَيِّنُوْا مَجَالِسَكُمْ بِذِكْرِ عُمَرَ** "या'नी अपनी मजालिस को अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के ज़िक्र से मुज़य्यन करो।"(2)

ज़िक्रे सालेहीन के वक़्त ज़िक्रे उ़मर ज़रूर करो

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है फ़रमाती हैं : **اِذَا ذُكِرَ الصَّالِحُوْنَ فَحَيَّ هَلاً بِعُمَرَ** "या'नी जब सालेहीन या'नी नेक लोगों का ज़िक्र हो तो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का ज़िक्र ज़रूर किया करो।"(3)

फ़ारूके़ आ'ज़म तमाम उमूर को तने तन्हा अन्जाम देने वाले

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का तज़्किरा करते हुवे इरशाद फ़रमाती हैं : **كَانَ وَاللّٰهِ اَحْوَذِيًّا نَسِيْجَ وَحْدِهٖ** "या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अपने तमाम मुआ़मलात में माहिर और तने तन्हा मुश्किल उमूर को सर अन्जाम देने वाले थे।"(4)

---

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۳۸۰۔
کنزالعمال، کتاب الفضائل، فضائل الفاروق، الجزء: ۱۲، ج۶، ص ۲۶۳، حدیث: ۳۵۸۲۲۔

2 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۳۸۰۔

3 ......مسند امام احمد، مسند السیدۃ عائشۃ، ج ۹، ص ۴۸۴، حدیث: ۲۵۲۰۶۔

4 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب المغازی، ماجاء فی خلافۃ عمر بن الخطاب، ج۸، ص ۵۷۴، حدیث: ۱۴ ملتقطاً۔

शाने फ़ारूके़ आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द

फ़ारूके़ आ'ज़म का ज़िक्र ज़रूर करो

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ारिक़ बिन शिहाब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : **اِذَا ذُكِرَ الصَّالِحُوْنَ فَحَيَّ هَلاً بِعُمَرَ** ''या'नी जब सालेह़ीन या'नी नेक लोगों का ज़िक्र हो तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का ज़िक्र ज़रूर किया करो।''[1]

काश मैं उ़मर जैसा ख़ादिम होता

ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाया करते थे : **اِذَا ذُكِرَ الصَّالِحُوْنَ فَحَيَّ هَلاً بِعُمَرَ وَدَدْتُ اَنِّيْ خَادِمٌ لِمِثْلِ عُمَرَ حَتّٰى اَمُوْتَ** ''या'नी जब सालेह़ीन या'नी नेक लोगों का ज़िक्र हो तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का ज़िक्र ज़रूर किया करो और मेरी येह ख़्वाहिश है कि मैं अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का ख़ादिम बन कर रहूं यहां तक कि मेरा विसाल हो जाए।''[2]

फ़ारूके़ आ'ज़म की मुख़्तलिफ़ सिफ़ात

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़र बिन जैश رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की मुख़्तलिफ़ सिफ़ात बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

❀..... **اِذَا ذُكِرَ الصَّالِحُوْنَ فَحَيَّ هَلاً بِعُمَرَ** ''जब सालेह़ीन (नेक लोगों) का ज़िक्र हो तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का ज़िक्र ज़रूर किया करो।''

---

1 ..... مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الفضائل، ماذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۷۹، حدیث: ۹۔

2 ..... معجم کبیر، باب العین، من اسمه عبد الله، ج ۹، ص ۱۶۵، حدیث: ۸۸۱۸۔

❀.....اِنَّ اِسْلَامَهٗ كَانَ نَصْرًا وَاِنَّ اِمَارَتَهٗ كَانَتْ فَتْحًا "बेशक अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ का इस्लाम लाना मुसलमानों के लिये एक अ़ज़ीम मदद था और उन की ख़िलाफ़त एक शानदार फ़त्ह़ थी।"

❀.....وَاَيْمُ اللّٰهِ مَا اَعْلَمُ عَلَى الْاَرْضِ شَيْئًا اِلَّا وَقَدْ وَجَدَ فَقْدَ عُمَرَ حَتَّى الْعِضَاهُ "और अल्लाह عزوجل की क़सम ! मेरे इ़ल्म में रूए ज़मीन पर कोई शै ऐसी नहीं है जिस ने आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के विसाल पर आप की जुदाई मह़सूस न की हो यहां तक कि जिस्म के हर हर हिस्से ने आप की जुदाई मह़सूस की।"

❀.....وَاَيْمُ اللّٰهِ اِنِّي لَاَحْسَبُ بَيْنَ عَيْنَيْهِ مَلَكًا يُسَدِّدُهٗ وَيُرْشِدُهٗ "और अल्लाह عزوجل की क़सम ! मैं इस बात का गुमान करता हूं कि आप की दोनों आंखों के दरमियान एक फ़िरिश्ता था जो आप को सीधी राह दिखाता और रहनुमाई करता था।"

❀......وَاَيْمُ اللّٰهِ اِنِّي لَاَحْسَبُ الشَّيْطَانَ يَفْرَقُ اَنْ يُحْدِثَ فِي الْاِسْلَامِ فَيَرُدَّ عَلَيْهِ عُمَرُ "और अल्लाह عزوجل की क़सम ! मुझे यक़ीन है कि शैत़ान इस्लाम में कोई नई बात पैदा (या बिदअ़त ईजाद) करने से इस लिये घबराता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ उस का रद फ़रमा देंगे।"

❀.....وَاَيْمُ اللّٰهِ لَوْ اَعْلَمُ اَنَّ كَلْبًا يُحِبُّ عُمَرَ لَاَحْبَبْتُهٗ और अल्लाह عزوجل की क़सम ! अगर मुझे मा'लूम हो जाए कि फ़ुलां कुत्ता अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ से मह़ब्बत करता है तो मैं ज़रूर उस कुत्ते से मह़ब्बत करूंगा।[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म का इ़ल्म सब से वज़्नी

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ारिक़ बिन शिहाब رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رضی اللہ تعالٰی عنہ ने इरशाद फ़रमाया :

لَوْ اَنَّ عِلْمَ عُمَرَ وُضِعَ فِيْ كِفَّةِ مِيْزَانٍ وَوُضِعَ عِلْمُ اَهْلِ الْاَرْضِ فِيْ كِفَّةٍ لَرَجَحَ عِلْمُهٗ بِعِلْمِهِمْ या'नी अगर मीज़ान के एक पलड़े में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ का इ़ल्म रखा जाए और दूसरे पलड़े में पूरी दुन्या का इ़ल्म रखा जाए तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ का इ़ल्म तमाम दुन्या वालों के इ़ल्म से वज़्नी होगा।[2]

1 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الفضائل، ماذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۸۰، حدیث: ۲۲۔

2 ......معجم کبیر، باب العین، من اسمه عبد الله، ج ۹، ص ۱۶۳، حدیث: ۸۸۰۹۔

फ़ारूके़ आ'ज़म की ख़िलाफ़त रह़मत है

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़र बिन जैश رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुख़्तलिफ़ सिफ़ात बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

✿.....لَقَدْ اَحْبَبْتُ عُمَرَ حَتّٰى لَقَدْ خِفْتُ اللهَ "या'नी मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मह़ब्बत की तो मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ नसीब हो गया।"

✿.....وَلَوْ اَعْلَمُ اَنَّ كَلْباً يُحِبُّ عُمَرَ لَاَحْبَبْتُهُ "अगर मुझे मा'लूम हो जाए कि फ़ुलां कुत्ता ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मह़ब्बत करता है तो ज़रूर मैं उस कुत्ते से मह़ब्बत करूंगा।"

✿.....وَلَوَدَدْتُ اَنِّيْ كُنْتُ خَادِماً لِعُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ "और मेरी येह ख़्वाहिश है कि मैं अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़ादिम बन कर रहूं।"

✿.....وَلَقَدْ وَجَدَ فَقْدَهُ كُلُّ شَيْءٍ حَتَّى الْعِضَاهُ "और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म की वफ़ात पर आप की जुदाई को हर चीज़ ने मह़सूस किया यहां तक कि जिस्म के हर हर हिस्से ने आप की जुदाई मह़सूस की।"

✿.....وَاِنَّ هِجْرَتَهُ كَانَتْ نَصْراً وَاِنَّ سُلْطَانَهُ وَاِنْ كَانَ رَحْمَةً "और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हिजरत मुसलमानों की नुसरत थी और आप की ख़िलाफ़त मुसलमानों के लिये रह़मत थी।"[1]

फ़ारूके़ आ'ज़म की मह़ब्बत में रब की ख़शिय्यत मिल गई

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : لَقَدْ خَشِيْتُ اللهَ فِيْ حُبِّيْ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ "या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मह़ब्बत करने के सबब मुझे रब عَزَّوَجَلَّ की ख़शिय्यत मिल गई।"[2]

---

1 .....معجم کبیر، باب العین، من اسمہ عبد اللہ، ج ۹، ص ۱٦۴، حدیث: ۸۸۱۴۔

2 .....معجم کبیر، باب العین، من اسمہ عبد اللہ، ج ۹، ص ۱٦۴، حدیث: ۸۸۱٦۔

फ़ारूके़ आ'ज़म का इस्लाम मुसलमानों की फ़त्ह़ थी

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं :

اِنَّ كَانَ اِسْلَامُ عُمَرَ لَفَتْحاً وَاِمَارَتُهُ لَرَحْمَةً وَاللّٰهِ مَا اسْتَطَعْنَا اَنْ نُّصَلِّيَ بِالْبَيْتِ حَتّٰى اَسْلَمَ عُمَرُ فَلَمَّا اَسْلَمَ عُمَرُ قَابَلَهُمْ حَتّٰى دَعَوْنَا فَصَلَّيْنَا

''या'नी बेशक अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़बूले इस्लाम मुसलमानों के लिये फ़त्ह़ और उन की ख़िलाफ़त मुसलमानों के लिये रह़मत थी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप के क़बूले इस्लाम से क़ब्ल हम का'बतुल्लाह शरीफ़ में नमाज़ पढ़ने की जुरअत नहीं करते थे, लेकिन जैसे ही आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़बूले इस्लाम किया तो आप ने कुफ़्फ़ार का सामना किया यहां तक कि हम ने का'बतुल्लाह शरीफ़ में नमाज़ अदा की।''(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म के क़बूले इस्लाम से हम इ़ज़्ज़तदार हो गए

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : **مَا زِلْنَا اَعِزَّةً مُنْذُ اَسْلَمَ عُمَرُ** ''या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़बूले इस्लाम से हम इ़ज़्ज़तदार हो गए।''(2)

फ़ारूके़ आ'ज़म की आहट से शैत़ान भागता है

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : **اِنِّيْ لَاَحْسِبُ الشَّيْطَانَ يَفِرُّ مِنْ حِسِّ عُمَرَ** ''या'नी बेशक मुझे यक़ीन है कि शैत़ान अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की आहट से भाग जाता है।''(3)

फ़ारूके़ आ'ज़म की फ़िरिश्ता रहनुमाई करता है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू वाइल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : **مَا رَاَيْتُ عُمَرَ اِلَّا وَكَاَنَّ بَيْنَ عَيْنَيْهِ مَلَكًا يُسَدِّدُهُ** ''या'नी मैं ने देखा कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की दोनों आंखों के माबैन एक फ़िरिश्ता है जो उन की राहनुमाई करता है।''(4)

---

1 ......معجم كبير، باب العين، من اسمه عبد الله، ج ٩، ص ١٦٥، حديث: ٨٨٢٠۔

2 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عمر بن الخطاب۔۔۔الخ، ج ٢، ص ٥٢٦، حدیث: ٣٦٨٤۔

3 ......معجم كبير، باب العين، من اسمه عبد الله، ج ٩، ص ١٦٦، حديث: ٨٨٢٥۔

4 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الفضائل، ما ذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ٧، ص ٤٨٠، حدیث: ١٦۔

फ़ारूक़े आ'ज़म को जो ना पसन्द वोह मुझे भी ना पसन्द

हज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : اِنَّ عُمَرَ کَرِہَ الصَّلَاۃَ بَعْدَ الْعَصْرِ وَاَنَا اَکْرَہُ مَا کَرِہَ عُمَرُ ''या'नी बेशक अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़े अ़स्र के बा'द नवाफ़िल पढ़ना ना पसन्द करते थे और जो चीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ना पसन्द है वोह मुझे भी ना पसन्द है।''(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म की वफ़ात पर लोगों की हिचकियां

हज़रते सय्यिदुना अबू वाइल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जब ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया गया तो हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा से कूफ़ा तशरीफ़ ले गए। अहले कूफ़ा के सामने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना बयान की। फिर इरशाद फ़रमाया :

فَاِنَّ اَمِیْرَ الْمُؤْمِنِیْنَ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ مَاتَ فَلَمْ نَرَ نَشِیْجاً اَکْثَرَ مِنْ یَوْمَئِذٍ وَاِنَّا اِجْتَمَعْنَا اَصْحَابُ مُحَمَّدٍ وَلَمْ نَالُ عَنْ خَیْرِنَا ذَا فُوْقٍ فَبَایَعْنَاہُ فَبَایِعُوْا اَمِیْرَ الْمُؤْمِنِیْنَ عُثْمَانَ بْنَ عَفَّانَ

''या'नी जिस दिन अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल हुवा उस से ज़ियादा किसी दिन हम ने लोगों की हिचकियां न देखीं और फिर हम सहाबए किराम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) जम्अ़ हुवे और ब कोशिश तमाम अपने में से बेहतरीन और फ़ाइक़ शख़्स (या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) का इन्तिख़ाब कर के उस की बैअ़त कर ली, लिहाज़ा तमाम लोग अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअ़त कर लें।''(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म इस्लाम का मज़बूत क़लआ़

हज़रते सय्यिदुना अबू वाइल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिम्बर पर चढ़े, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात के मुतअ़ल्लिक़ हम से गुफ़्त्गू करना चाहते थे तो आप को दो तीन मरतबा शदीद खांसी आई। फिर इरशाद फ़रमाया :

---

1 ......معجم کبیر، باب العین، من اسمہ عبد اللہ، ج ۹، ص ۱۶۸، حدیث: ۸۸۳۴-

2 ......معجم کبیر، باب العین، من اسمہ عبد اللہ، ج ۹، ص ۱۶۹، حدیث: ۸۸۳۶-

اِنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ كَانَ حِصْنًا حَصِيْنًا لِّلْاِسْلَامِ يَدْخُلُ فِيْهِ وَلَا يَخْرُجُ مِنْهُ فَانْهَدَمَ الْحِصْنُ

''या'नी बेशक अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लाम के लिये एक मज़बूत़ क़ल्आ़ थे कि उस में कोई दाखि़ल तो हो सकता था लेकिन निकल नहीं सकता था। आह ! उस क़ल्ए़ को शहीद कर दिया गया।''(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म ने शैत़ान को ज़मीन पर पटख़ दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : لَقِيَ رَجُلٌ شَيْطَانًا فِي بَعْضِ طُرُقِ الْمَدِيْنَةِ فَاتَّخَذَا فَصَرَّعَ الشَّيْطَانَ ''या'नी मदीनए मुनव्वरा की गलियों में एक शख़्स की शैत़ान से मुलाक़ात हो गई, दोनों आपस में गुथ्थम गुथ्था हो गए तो उस शख़्स ने शैत़ान को ज़मीन पर पटख़ दिया।'' लोगों ने पूछा : ''हु़ज़ूर वोह कौन शख़्स था जिस ने शैत़ान को ज़मीन पर पटख़ दिया ?'' फ़रमाया : مَنْ يُطِيْقُ بِهِ اِلَّا عُمَرَ ''या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सिवा किस में इतनी त़ाक़त है ?''(2)

वोह रिहाइशी बहुत बुरे हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन वहब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : اِنَّ اَهْلَ الْبَيْتِ مِنَ الْعَرَبِ لَمْ تَدْخُلْ عَلَيْهِمْ مُصِيْبَةُ عُمَرَ لَاَهْلُ بَيْتِ سُوْءٍ ''या'नी बेशक अ़रब के वोह रिहाइशी बहुत बुरे हैं कि जिन्हें अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात का सदमा न पहुंचा।''(3)

फ़ारूके़ आ'ज़म की वफ़ात का सदमा

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन वहब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया :

مَا اَظُنُّ اَهْلَ بَيْتٍ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ لَمْ يَدْخُلْ عَلَيْهِمْ حُزْنُ عُمَرَ

يَوْمَ اُصِيْبَ عُمَرُ اِلَّا اَهْلَ بَيْتِ سُوْءٍ اِنَّ عُمَرَ كَانَ اَعْلَمَنَا بِاللّٰهِ وَاَقْرَاَنَا لِكِتَابِ اللّٰهِ وَاَفْقَهَنَا فِي دِيْنِ اللّٰهِ

---

1 ......معجم کبیر، باب العین، من اسمه عبد الله، ج ۹، ص ۱۷۰، حدیث: ۸۸۴۴۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الفضائل، ما ذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۷۹، حدیث: ۱۲۔

3 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الفضائل، ما ذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۸۰، حدیث: ۱۷۔

"या'नी मैं उस घर वालों को बहुत बुरा समझता हूं जिन्हें अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल के दिन उन की वफ़ात का सदमा न पहुंचा। बेशक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हम में सब से ज़ियादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त रखने वाले, किताबुल्लाह के सब से बड़े क़ारी और दीने इलाही के सब से बड़े फ़क़ीह थे।"(1)

जैसा फ़ारूक़े आ'ज़म ने क़ुरआन पढ़ाया वैसा पढ़ो

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन वहब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में दो शख़्स ह़ाज़िर हुवे। उन में से एक ने कहा : **يَا اَبَا عَبْدِ الرَّحْمٰنِ كَيْفَ تَقْرَاُ هٰذِهِ الْاٰيَةَ** "या'नी हमारा एक आयत की क़िराअत पर झगड़ा हो गया है येह इरशाद फ़रमाइये कि आप इस आयत को कैसे पढ़ेंगे ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक से पूछा **مَنْ اَقْرَاَکَ؟** या'नी तुम येह बताओ तुम्हें क़ुरआन किस ने पढ़ाया है ? उस ने अ़र्ज़ किया : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़कीम मुज़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने।" फिर आप ने दूसरे से पूछा : **مَنْ اَقْرَاَکَ؟** "या'नी तुम्हें क़ुरआन किस ने पढ़ाया है ?" उस ने अ़र्ज़ किया : **اَقْرَاَنِي عُمَرُ** "या'नी मुझे अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ुरआन पढ़ाया है।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : **اِقْرَاْ كَمَا اَقْرَاَکَ عُمَرُ** "या'नी तुम दोनों वैसे ही पढ़ो जैसा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पढ़ाया है।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़ारो क़ित़ार रोने लगे और इतना रोए कि आप के आंसू चटाई पर गिरने लगे। फिर इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ عُمَرَ كَانَ حِصْنًا حَصِيْنًا عَلَى الْاسْلَامِ يَدْخُلُ فِيْهِ وَلَا يَخْرُجُ مِنْهُ فَلَمَّا مَاتَ عُمَرُ اِنْثَلَمَ الْحِصْنُ فَهُوَ يَخْرُجُ مِنْهُ وَلَا يَدْخُلُ فِيْهِ

"या'नी बेशक अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लाम के लिये एक मज़बूत़ क़ल्आ़ थे, जिस में कोई दाख़िल तो हो सकता था लेकिन उस में से कोई निकल न सकता था, पस आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का जब विसाल हो गया तो वोह क़ल्आ़ मुन्हदिम हो गया अब उस से कोई निकल तो सकता है दाख़िल नहीं हो सकता।"(2)

---

(1) ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الفضائل، ما ذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۸۰، حدیث: ۲۱۔

(2) ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الفضائل، ما ذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۸۴، حدیث: ۴۰۔

शाने फ़ारूके़ आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना त़ल्ह़ा

फ़ारूके़ आ'ज़म की वफ़ात के सबब नक़्स दाख़िल हो गया

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जिस रोज़ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल हुवा तो ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : مَا اَهْلُ بَيْتٍ حَاضِرٍ وَّلَا بَادٍ اِلَّا وَقَدْ دَخَلَ عَلَيْهِمْ نَقْصٌ ''या'नी शहरी या देहाती घरों में से कोई घर ऐसा नहीं है जहां अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात के सबब नक़्स दाख़िल न हुवा हो ।''[1]

शाने फ़ारूके़ आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना अबू उ़स्मान

मीज़ाने फ़ारूक़ में बाल बराबर भी झुकाव न होता

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ में एक लाठी थी जिस पर आप सहारा ले कर चला करते थे और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अक्सर फ़रमाया करते थे : وَاللّٰهِ لَوْ اَشَاءُ اَنْ تَنْطِقَ قَنَاتِي هٰذِهٖ لَنَطَقَتْ لَوْ كَانَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ مِيزَانًا مَا كَانَ فِيهِ مِيطُ شَعْرَةٍ ''या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मैं येह चाहूं कि मेरी येह लाठी भी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान बयान करे तो वोह ज़रूर बयान करेगी और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अगर मीज़ान होते तो उस में बाल बराबर भी झुकाव न होता ।''[2]

शाने फ़ारूके़ आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना ह़सन

इस उम्मत के सब से बेहतरीन मर्द को छोड़ दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना मो'तमिर बिन सुलैमान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह फ़रमाते सुना :

خَطَبَ عُمَرُ وَالْمُغِيرَةُ بْنُ شُعْبَةَ امْرَاَةً فَاَنْكَحُوا الْمُغِيرَةَ وَتَرَكُوا عُمَرَ اَوْ قَالَ رَدُّوا عُمَرَ

1 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الفضائل، ماذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۸۰، حدیث: ۱۸۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الفضائل، ماذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۸۴، حدیث: ۴۱۔

या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ व ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शुअ़बा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ दोनों ने एक ख़ातून को निकाह़ का पैग़ाम भेजा तो उन लोगों ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शुअ़बा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का उस औ़रत से निकाह़ कर दिया और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को छोड़ दिया या उन को जवाब दे दिया। जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस बात का इ़ल्म हुवा तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَقَدْ تَرَكُوا اَوْ رَدُّوا خَيْرَ هٰذِهِ الْاُمَّةِ "या'नी उन लोगों ने इस उम्मत के सब से बेहतरीन मर्द को छोड़ दिया या जवाब दे दिया।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म तीन बातों में सब पर सबक़त ले गए

ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़िक्र किया करते तो कहा करते :

وَاللّٰهِ مَا كَانَ بِاَوَّلِهِمْ اِسْلَامًا وَلَا

اَفْضَلِهِمْ نَفَقَةً فِي سَبِيلِ اللّٰهِ وَلٰكِنَّهُ غَلَبَ النَّاسَ بِالزُّهْدِ فِي الدُّنْيَا وَالصَّرَامَةِ فِي اَمْرِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُ فِي اللّٰهِ لَوْمَةَ لَائِمٍ

"या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर्चे सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सब से पहले इस्लाम न लाए और न ही इस्लाम पर सब से ज़ियादा ख़र्च किया लेकिन वोह इन तीन बातों "दुन्या के मुआ़मले में किनारा कशी", "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुआ़मले में जल्दी करने" और "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुआ़मले में किसी मलामत करने वाले की मलामत से बे ख़ौफ़ होने" में तमाम लोगों पर सबक़त ले गए।"(2)

शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना सा'द

फ़ारूक़े आ'ज़म दुन्या से किनारा कशी में सबक़त ले गए

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सलमह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اَمَا وَاللّٰهِ مَا كَانَ بِاَقْدَمِنَا اِسْلَامًا وَلٰكِنْ قَدْ عَرَفْتُ بِاَيِّ شَيْءٍ فَضَلَنَا كَانَ اَزْهَدَنَا فِي الدُّنْيَا يَعْنِي عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सब से पहले इस्लाम नहीं लाए लेकिन मुझे मा'लूम है कि एक ख़ूबी के सबब वोह हम सब से अफ़्ज़ल हैं और वोह येह है कि उन्हों ने दुन्या से किनारा कशी इख़्तियार कर ली।"(3)

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الفضائل، ماذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۸۴، حدیث: ۴۲۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الفضائل، ماذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۷۵، حدیث: ۴۳۔

3 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الفضائل، ماذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۸۴، حدیث: ۴۵۔

शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना क़ुबैसा बिन जाबिर

फ़ारूक़े आ'ज़म सब से ज़ियादा मा'रिफ़ते इलाही रखने वाले

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना क़ुबैसा बिन जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : مَا رَاَيْتُ رَجُلاً اَعْلَمَ بِاللّٰهِ وَلَا اَقْرَاَ لِكِتَابِ اللّٰهِ وَلَا اَفْقَهَ فِي دِيْنِ اللّٰهِ مِنْ عُمَرَ "या'नी मैं ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से बढ़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त रखने वाला, क़ुरआने मजीद का क़ारी और दीने इलाही का फ़क़ीह नहीं देखा।"(1)

शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल

फ़ारूक़े आ'ज़म जन्नती हैं

हज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन सा'द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जन्नती हैं क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जो ख़्वाब में देखें वोह भी बिल्कुल सच होता है और रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद इरशाद फ़रमाया : بَيْنَمَا اَنَا فِي الْجَنَّةِ اِذْ رَاَيْتُ فِيْهَا دَارًا فَقُلْتُ لِمَنْ هٰذِهِ ؟ فَقِيْلَ لِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ "या'नी मैं जन्नत में मौजूद था कि मैं ने वहां एक आ़लीशान घर देखा मैं ने पूछा येह किस का है तो कहा गया कि येह उ़मर बिन ख़त्ताब का है।"(2)

शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदतुना उम्मे ऐमन

आज इस्लाम कमज़ोर हो गया

हज़रते सय्यिदुना त़ारिक़ बिन शिहाब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद कर दिया गया तो हज़रते सय्यिदतुना उम्मे ऐमन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इरशाद फ़रमाया : اَلْيَوْمَ وَهَى الْاِسْلَامُ "या'नी आज इस्लाम कमज़ोर हो गया।"(3)

---

1 ......مصنف ابن ابی شيبه، كتاب الفضائل، ما ذكر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۸۰، حديث: ۲۰۔

2 ......مصنف ابن ابی شيبه، كتاب الفضائل، ما ذكر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۸۰، حديث: ۲۳۔

3 ......مصنف ابن ابی شيبه، كتاب الفضائل، ما ذكر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۷۹، حديث: ۱۱۔

शाने फ़ारूके़ आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर

फ़ारूके़ आ'ज़म हमेशा अच्छाई पर क़ाइम रहे

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन अस्लम (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُم) अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने इरशाद फ़रमाया :

مَا زَالَ عُمَرُ جَادًّا جَوَّادًا مِنْ حِيْنِ قُبِضَ حَتّٰى اِنْتَهٰى ''या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ हमेशा अच्छी बात, अच्छे काम और सख़ावत करते रहे यहां तक कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ दुन्या से तशरीफ़ ले गए।''(1)

शाने फ़ारूके़ आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना हुज़ैफ़ा

हयाते फ़ारूके़ आ'ज़म में इस्लाम बहादुर मर्द की मिस्ल हो गया

हज़रते सय्यिदुना रिबई رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ को येह फ़रमाते सुना :

مَا كَانَ الْاِسْلَامُ فِيْ زَمَانِ عُمَرَ اِلَّا كَالرَّجُلِ الْمُقْبِلِ مَا يَزْدَادُ اِلَّا قُرْبًا فَلَمَّا قُتِلَ عُمَرُ كَانَ كَالرَّجُلِ الْمُدْبِرِ مَا يَزْدَادُ اِلَّا بُعْدًا

''या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ के ज़माने में गोया इस्लाम उस मर्द की त़रह़ हो गया जो छाती तान के आगे ही आगे बढ़ता जाता है और जब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ को शहीद कर दिया गया तो इस्लाम गोया उस शख़्स की त़रह़ हो गया जो पीठ फेर कर पीछे ही पीछे जाता है।''(2)

लोगों का इ़ल्म फ़ारूके़ आ'ज़म की गोद में आ जाए

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ फ़रमाते हैं :

كَاَنَّ عِلْمَ النَّاسِ كَانَ مَدْسُوْسًا فِيْ حُجْرِ عُمَرَ

''या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ के इ़ल्म के मुक़ाबले में लोगों का इ़ल्म इतना है कि वोह सारा इ़ल्म आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ की गोद में समा जाए।''(3)

1 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الفضائل، ماذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۸۲، حدیث: ۳۱۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الفضائل، ماذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۸۶، حدیث: ۵۴۔

3 ......تاریخ الخلفاء، ص ۹۵، تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۲۸۵۔

रब के मुआमले में मलामत करने वाले से बे ख़ौफ़

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं :

وَاللّٰهِ مَا اَعْرِفُ رَجُلًا لَا تَاْخُذُهٗ فِي اللّٰهِ لَوْمَةُ لَائِمٍ اِلَّا عُمَرَ

"या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इलावा किसी ऐसे शख़्स को नहीं जानता जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुआमले में किसी मलामत करने वाले की मलामत से क़त्अ़न ख़ौफ़ज़दा न हो।"(1)

शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना अमीरे मुआविय्या

फ़ारूक़े आ'ज़म ने दुन्या को धुत्कार दिया

हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविय्या बिन अबू सुफ़्यान ((رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا)) फ़रमाते हैं :

اَمَّا اَبُوْ بَكْرٍ فَلَمْ يُرِدِ الدُّنْيَا وَلَمْ تُرِدْهُ وَاَمَّا عُمَرُ فَاَرَادَتْهُ وَلَمْ يُرِدْهَا وَاَمَّا نَحْنُ فَتَمَرَّغْنَا فِيْهَا ظَهْرًا لِبَطْنٍ

"या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने न तो दुन्या का इरादा फ़रमाया और न ही दुन्या ने आप का इरादा किया। लेकिन अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दुन्या ने तो इरादा किया लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इसे धुत्कार दिया और हम तो दुन्या में पेट की ख़ातिर पुश्त तक लतपत हो चुके हैं।"(2)

नहीं ख़ुश बख़्त मोहताजाने आ़लम में कोई हम सा
मिला तक़्दीर से हाजत रवा फ़ारूक़े आ'ज़म सा
मुराद आई मुरादें मिलने की प्यारी घड़ी आई
मिला हाजत रवा हम को दरे सुल्ताने आ़लम सा

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۲۳۳، تاریخ الاسلام، ج ۳، ص ۲۷۱، تاریخ الخلفاء، ص ۹۵۔

2 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۲۸۷، تاریخ الاسلام، ج ۳، ص ۲۶۷۔

सातवां बाब
हिस्सए पन्जुम

फ़ारूक़े आ'ज़म का इश्क़े रसूल

(रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मन्सूबात से मह़ब्बत)

इस बाब में मुलाह़ज़ा कीजिये.........

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शहर से मह़ब्बत

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मक्कए मुकर्रमा से मह़ब्बत

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मदीनए मुनव्वरा से मह़ब्बत

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मसाजिद से मह़ब्बत

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और मस्जिदे ह़राम की तौसीअ़

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और मस्जिदे नबवी की तौसीअ़

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़जरे अस्वद से कलाम

.....इस्लाम में निस्बत की बहारें

रसूलुल्लाह के मन्सूबात से महब्बत

फ़ारूक़े आ'ज़म आ़शिक़े ह़क़ीक़ी थे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ महब्बत की उस मन्ज़िल पर फ़ाइज़ थे जिसे इश्क़ कहा जाता है। क्यूंकि जब महब्बत इन्तिहा को पहुंच जाए तो उसे इश्क़ कहा जाता है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से इश्क़ और महब्बत के दरमियान फ़र्क़ पूछा गया तो इरशाद फ़रमाया : اَلْحُبُّ لَذَّۃٌ تُعْمِيْ عَنْ رُؤْيَةِ غَيْرِ الْمَحْبُوْبِ فَإِذَا تَنَاهِيْ سُمِّيَ عِشْقًا ''या'नी महब्बत वोह लज़्ज़त है जो महबूब के इलावा किसी को भी देखने से अन्धा कर देती है और महब्बत की इन्तिहा को इश्क़ कहते हैं।''[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : حُبُّكَ الشَّيْءَ يُعْمِيْ وَيُصِمُّ ''या'नी किसी शै की महब्बत तुझे अन्धा और बहरा बना देती है।''[2]

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के इश्क़े रसूल के क्या कहने ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ात से महब्बत, औलाद से महब्बत, अज़्वाज से महब्बत, अस्ह़ाब से महब्बत बल्कि हर वोह चीज़ जिसे आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ निस्बत हो जाए उस से भी महब्बत फ़रमाते थे। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते त़य्यिबा के बे शुमार ऐसे वाक़िआ़त मिलते हैं जिन से इस इश्क़े ह़क़ीक़ी का वालिहाना इज़्हार होता है, चन्द वाक़िआ़त मुलाह़ज़ा कीजिये :

महबूब के शहर से महब्बत

फ़ारूक़े आ'ज़म की मक्कए मुकर्रमा से महब्बत

कुरआने पाक में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِۙ وَ اَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِۙ﴾ (پ۳۰، البلد: ۱تا۲) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ''मुझे इस शहर की क़सम कि ऐ महबूब तुम इस शहर में तशरीफ़ फ़रमा हो।''

---

1 ......شعب الایمان، فی محبۃ اللہ عزوجل، معانی المحبۃ، ج ۱، ص ۳۷۹، حدیث: ۴۵۷۔

2 ......شعب الایمان، فی محبۃ اللہ عزوجل، معانی المحبۃ، ج ۱، ص ۳۶۸، حدیث: ۴۱۲۔

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुफ़स्सिरीने किराम का इस बात पर इजमाअ़ है कि इस आयते मुबारका में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस शहर की क़सम याद फ़रमा रहा है वोह मक्कए मुकर्रमा है। इसी आयते मुबारका की त़रफ़ इशारा करते हुवे अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जनाब में यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुवे :

بِاَبِیْ اَنْتَ وَاُمِّیْ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ لَقَدْ بَلَغَ مِنْ فَضِیْلَتِکَ عِنْدَاللّٰہِ اَنْ اَقْسَمَ بِحَیَاتِکَ دُوْنَ سَائِرِ الْاَنْبِیَاءِ وَلَقَدْ بَلَغَ مِنْ فَضِیْلَتِکَ عِنْدَہٗ اَنْ اَقْسَمَ بِتُرَابِ قَدَمَیْکَ فَقَالَ لَا اُقْسِمُ بِھٰذَا الْبَلَدِ

''या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां-बाप आप पर फ़िदा हों ! आप की फ़ज़ीलत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां इतनी बुलन्द है कि आप की ह़याते मुबारका की ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने क़सम ज़िक्र फ़रमाई है न कि दूसरे अम्बिया की, और आप का मक़ामो मर्तबा उस के हां इतना बुलन्द है कि उस ने لَا اُقْسِمُ بِھٰذَا الْبَلَدِ के ज़रीए आप के मुबारक क़दमों की ख़ाक की क़सम ज़िक्र फ़रमाई है।''(1)

ह़ज़रते अ़ल्लामा शिहाबुद्दीन मुह़म्मद बिन उ़मर ख़ुफ़्फ़ाजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ''नसीमुर्रियाज़'' शर्हे शिफ़ा में फ़रमाते हैं :

قَدْ قَالُوْا اِنَّ ھٰذَا الْقَسَمَ اَدْخَلَ فِیْ تَعْظِیْمِہٖ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ
مِنَ الْقَسَمِ بِذَاتِہٖ وَبِحَیَاتِہٖ کَمَا اَشَارَ اِلَیْہِ عُمَرُ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ بِقَوْلِہٖ بِاَبِیْ اَنْتَ وَاُمِّیْ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ
قَدْ بَلَغْتَ مِنَ الْفَضِیْلَۃِ عِنْدَہٗ اَنْ اَقْسَمَ بِتُرَابِ قَدَمَیْکَ فَقَالَ: لَا اُقْسِمُ بِھٰذَا الْبَلَدِ

''या'नी मुफ़स्सिरीन ने तह़रीर किया है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के शहर की क़सम, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात और उ़म्र की क़सम से ज़ियादा ता'ज़ीम पर दलालत करती है जैसा कि इस की त़रफ़ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन अल्फ़ाज़ के साथ इशारा फ़रमाया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे वालिदैन आप पर फ़िदा हों ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां इतने बुलन्द मर्तबे वाले हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक क़दमों की क़सम ज़िक्र फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया है : لَا اُقْسِمُ بِھٰذَا الْبَلَدِ या'नी मैं इस शहरे मक्का की क़सम ज़िक्र करता हूं।''(2)

1 ...... شرح زرقانی علی المواھب، الفصل الخامس۔۔۔الخ، ج۸، ص ۴۹۳، फ़तावा रज़विय्या, जि. 5, स. 556

2 ...... نسیم الریاض، الباب الاول، الفصل الرابع فی قسمہ تعالی، ج ۱، ص ۳۱۷۔

अ़ल्लामा शिहाबुद्दीन अह़मद बिन मुह़म्मद क़स्त़लानी ''मवाहिबुल्लदुन्निय्या'' में फ़रमाते हैं :

عَلٰی کُلِّ حَالٍ فَھٰذَا مُتَضَمِّنٌ لِلْقَسَمِ بِبَلَدِ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ وَلَا یَخْفٰی مَافِیْہِ مِنْ زِیَادَۃِ التَّعْظِیْمِ وَقَدْ رُوِیَ اَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ قَالَ لِلنَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ: بِاَبِیْ اَنْتَ وَاُمِّیْ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ لَقَدْ بَلَغَ مِنْ فَضِیْلَتِکَ عِنْدَاللّٰہِ اَنْ اَقْسَمَ بِحَیَاتِکَ دُوْنَ سَائِرِ الْاَنْبِیَاءِ وَلَقَدْ بَلَغَ مِنْ فَضِیْلَتِکَ عِنْدَہٗ اَنْ اَقْسَمَ بِتُرَابِ قَدَمَیْکَ فَقَالَ لَاۤ اُقْسِمُ بِھٰذَا الْبَلَدِ

''या'नी हर ह़ाल में येह नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शहर की क़सम को शामिल है और इस क़सम में जो ता'ज़ीम व मर्तबे की ज़ियादती है वोह किसी पर मख़्फ़ी नहीं, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जनाब में यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुवे कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां-बाप आप पर फ़िदा हों ! आप की फ़ज़ीलत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां इतनी बुलन्द है कि आप की ह़याते मुबारका की ही उस ने क़सम ज़िक्र फ़रमाई है न कि दूसरे अम्बिया की, और आप का मक़ामो मर्तबा उस के हां इतना बुलन्द है कि उस ने **لَاۤ اُقْسِمُ بِھٰذَا الْبَلَدِ** के ज़रीए आप के मुबारक क़दमों की ख़ाक की क़सम ज़िक्र फ़रमाई है।''(1)

एक लत़ीफ़ नुक्ता

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला रिवायत से मा'लूम हुवा कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मक्कए मुकर्रमा से इस लिये भी मह़ब्बत फ़रमाते हैं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मह़बूब आक़ा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस शहर में तशरीफ़ फ़रमा हैं, और येह भी मा'लूम हुवा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह मह़ब्बत और इश्के़ ह़क़ीक़ी क़ुरआने पाक का अ़मली नमूना है ख़ुद रब عَزَّوَجَلَّ भी शहरे मक्का की क़सम को इस लिये ज़िक्र फ़रमा रहा है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस में तशरीफ़ फ़रमा हैं। यहां एक लत़ीफ़ नुक्ता क़ाबिले ज़िक्र है कि उ़मूमन जब कोई क़सम उठाता है तो किसी मुअ़ज़्ज़मे दीनी की उठाता है जो उस से अफ़्ज़ल होता है ताकि इस से उस की बात को ताईदो ताकीद ह़ासिल हो जाए। लेकिन जब रब عَزَّوَجَلَّ किसी शै की क़सम ज़िक्र फ़रमाए तो उस में येह ह़िक्मत होती है कि उस शै को अ़ज़मत व शरफ़ नसीब हो जाए। चुनान्चे, आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या, जि. 5 सफ़ह़ा 558 में मौलाना शाह अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के ह़वाले से इसी आयते मुबारका की तफ़्सीर में नक़्ल

(1) ......شرح زرقانی علی المواھب، الفصل الخامس---الخ، ج۸، ص ۴۹۳۔

फ़रमाते हैं : या'नी शहर की क़सम खाने से मुराद येही है कि उस ख़ाके पा की क़सम उठाई है क्यूंकि शहर से मुराद वोह ज़मीन और जगह है जहां हुज़ूर पाउं रख कर चलते हैं, ब ज़ाहिर येह अल्फ़ाज़ सख़्त मा'लूम होते हैं कि बारी तआ़ला हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के ख़ाके पा की क़सम उठाए, लेकिन अगर इस की ह़क़ीक़त को देखा जाए तो इस में कोई पोशीदगी व गुबार नहीं वोह इस त़रह़ कि **अल्लाह** तआ़ला जब अपनी ज़ातो सिफ़ात के इलावा किसी शै की क़सम उठाता है तो वोह इस लिये नहीं होती कि वोह शै (مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ) **अल्लाह** तआ़ला से अ़ज़ीम है, बल्कि ह़िक्मत येह होती है कि उस चीज़ को वोह शरफ़ो अ़ज़मत नसीब हो जाए जिस की वज्ह से आ़म लोगों पर उस का इम्तियाज़ क़ाइम हो और लोग मह़सूस करें कि येह शै ब निस्बत दूसरी चीज़ों के निहायत अ़ज़ीम है न कि वोह مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ब निस्बत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ीम है।"(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म की मदीनए मुनव्वरा से मह़ब्बत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه जिस त़रह़ मक्कए मुकर्रमा से मह़ब्बत फ़रमाते थे बि ऐनिही वैसे ही मदीनए मुनव्वरा से भी मह़ब्बत फ़रमाते थे, बल्कि न सिर्फ़ मह़ब्बत फ़रमाते बल्कि आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه मदीनए मुनव्वरा की अफ़्ज़लिय्यत के भी क़ाइल थे। और यक़ीनन येह मह़ब्बत व अफ़्ज़लिय्यत इसी वज्ह से थी कि येह शहरे मह़बूबे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है। चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 539 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत" (मुकम्मल चार ह़िस्से) सफ़ह़ा 236 से दो इक़्तिबास पेशे ख़िदमत हैं :

अ़र्ज़ : "हुज़ूर ! मदीनए त़य्यिबा में एक नमाज़ पचास हज़ार का सवाब रखती है और मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में एक लाख का, इस से मक्कए मुअ़ज़्ज़मा का अफ़्ज़ल होना समझा जाता है ?"

इरशाद : जमहूर ह़नफ़िय्या का येही मस्लक है और सय्यिदुना इमामे मालिक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के नज़दीक मदीना अफ़्ज़ल और येही मज़हब अमीरुल मोमिनीन (ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर) फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का है। एक सह़ाबी (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه) ने कहा : "मक्कए मुअ़ज़्ज़मा अफ़्ज़ल है।" फ़रमाया : "क्या तुम कहते हो कि मक्का मदीना से अफ़्ज़ल है ?" उन्हों ने कहा : وَاللّٰهِ بَيْتُ اللّٰهِ وَحَرَمُ اللّٰهِ फ़रमाया : मैं बैतुल्लाह और ह़रमुल्लाह में कुछ नहीं कहता, क्या तुम कहते हो कि मक्का मदीना से अफ़्ज़ल है ? इन्हों ने कहा : "ब ख़ुदा ख़ानए ख़ुदा व ह़रमे ख़ुदा।" फ़रमाया : "मैं ख़ानए ख़ुदा व ह़रमे ख़ुदा में कुछ नहीं कहता, क्या तुम कहते हो कि मक्का मदीना से अफ़्ज़ल है ?"(2)

1 ......مدارج النبوة، ج ۱، ص ۲۵۔

2 ......مؤطاامام مالک، کتاب الجامع، باب ماجاء فی امر المدینة، ج ۲، ص ۳۹۶، حدیث: ۱۷۰۰۔

वोह वोही कहते रहे और अमीरुल मोमिनीन (ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) येही फ़रमाते रहे और येही मेरा (या'नी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का) मस्लक है (कि मदीना अफ़्ज़ल है) सह़ीह़ ह़दीस में है नबी (करीम रऊफ़ुर्रह़ीम) صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : اَلْمَدِیْنَۃُ خَیْرٌ لَّھُمْ لَوْ کَانُوْا یَعْلَمُوْنَ या'नी मदीना उन के लिये बेहतर है अगर वोह जानें।(1)

दूसरी ह़दीस नस्से सरीह़ है कि फ़रमाया : اَلْمَدِیْنَۃُ خَیْرٌ مِّنْ مَّکَّۃَ "या'नी मदीना मक्का से अफ़्ज़ल है।"(2)

सवाब में फ़र्क़ क्यूं ?

और तफ़ावुते सवाब (या'नी सवाब में फ़र्क़) का जवाब बिस्सवाब (या'नी दुरुस्त जवाब) शैख़ मुह़क़्क़िक़ (शाह) अ़ब्दुल ह़क़ (मुह़द्दिस) देहलवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने क्या ख़ूब दिया कि : "मक्का में कमिय्यत ज़ियादा है और मदीना में कैफ़िय्यत (तारीख़े मदीना उर्दू तर्जमा "जज़्बुल क़ुलूब, स. 19) या'नी वहां "मिक़्दार" ज़ियादा है और यहां "क़द्र"अफ़्ज़ूं (या'नी ज़ियादा)। जिसे यूं समझें कि लाख रूपिया ज़ियादा कि पचास हज़ार अशरफ़ियां ? गिनती में वोह (या'नी लाख रूपे) दूने हैं और मालिय्यत में येह (या'नी पचास हज़ार अशरफ़ियां) दस गुनी। मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में जिस त़रह़ एक नेकी लाख नेकियां हैं यूं ही एक गुनाह लाख गुनाह हैं और वहां गुनाह के इरादे पर भी गिरिफ़्त है जिस त़रह़ नेकी के इरादे पर सवाब। मदीनए त़य्यिबा में नेकी के इरादे पर सवाब और गुनाह के इरादे पर कुछ नहीं और गुनाह करे तो एक ही गुनाह और नेकी करे तो पचास हज़ार नेकियां। अ़जब नहीं कि ह़दीस में "خَیْرٌ لَّھُمْ" का इशारा इसी त़रफ़ हो कि उन के ह़क़ में मदीना ही बेहतर है।(3)

तैबा न सही अफ़्ज़ल मक्का ही बड़ा ज़ाहिद
हम इश्क़ के बन्दे हैं क्यूं बात बढ़ाई है
सुनते हैं कि मह़शर में सिर्फ़ उन की रसाई है
गर उन की रसाई है लो जब तो बन आई है

1 ......بخاری، کتاب فضائل المدینۃ، باب من رغب عن المدینۃ، ج ۱، ص ۶۱۸، حدیث: ۱۸۷۵ ملتقطاً۔

2 ......معجم کبیر، عمرۃ بنت عبد الرحمن عن رافع، ج ۴، ص ۲۸۸، حدیث: ۴۴۵۰۔

3 .....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 238।

फ़ारूके आ'ज़म की मदीनए मुनव्वरा में मौत की तमन्ना

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मदीनए मुनव्वरा से इश्को महब्बत इस बात से भी उजागर होती है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा में वफ़ात की दुआ़ फ़रमाया करते थे। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिदे गिरामी हज़रते सय्यिदुना अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा में वफ़ात की यूं दुआ़ किया करते थे : اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِي شَهَادَةً فِي سَبِيلِكَ وَاجْعَلْ مَوْتِي فِي بَلَدِ رَسُولِكَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे अपनी राह में शहादत अ़ता फ़रमा और मुझे अपने महबूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शहर में मौत अ़ता फ़रमा।"(1)

एक अहम बात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाज़ेह रहे कि मदीनए मुनव्वरा या मक्कए मुकर्रमा की अफ़्ज़लिय्यत का मस्अला फ़रूई है, लिहाज़ा दोनों के क़ाइलीन पर कोई हुक्मे शरई नहीं। अगर कोई मक्कए मुकर्रमा को अफ़्ज़ल जानता है तो उस से भी नहीं उलझना चाहिये, अगर कोई मदीनए मुनव्वरा को अफ़्ज़ल कहता है तो उस से भी नहीं उलझना चाहिये। क्यूंकि येह तो इश्को महब्बत का एक अन्दाज़ है कि जो मक्कए मुकर्रमा को अफ़्ज़ल कहते हैं वोह भी दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वज्ह से अफ़्ज़ल कहते हैं और जो मदीनए मुनव्वरा को अफ़्ज़ल कहते हैं वोह भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वज्ह से अफ़्ज़ल कहते हैं। बा'ज़ उ़श्शाक़ मक्कए मुकर्रमा को इस लिये अफ़्ज़ल कहते हैं कि वोह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जाए पैदाइश है और इन के मुक़ाबले में दीगर उ़श्शाक़ मदीनए मुनव्वरा को इस लिये अफ़्ज़ल कहते हैं कि वोह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आख़िरी आराम गाह है। बा'ज़ उ़श्शाक़ मक्कए मुकर्रमा को इस लिये अफ़्ज़ल कहते हैं कि वहां एक नेकी का सवाब एक लाख के बराबर है और इन के मुक़ाबले में दीगर उ़श्शाक़ मदीनए मुनव्वरा को इस लिये अफ़्ज़ल कहते हैं कि मदीनए मुनव्वरा में अगर एक नेकी का सवाब पचास हज़ार के बराबर है तो एक गुनाह एक ही शुमार जब कि मक्कए मुकर्रमा में अगर एक नेकी एक लाख है तो एक गुनाह भी एक लाख गुनाह के बराबर है।

---

(1) ......بخاری، کتاب فضائل المدینۃ، باب کراھیۃ النبی---الخ، ج ۱، ص ۶۲۲، حدیث: ۱۸۹۰-

आ़शिक़े फ़ारूक़े आ'ज़म और मदीनए मुनव्वरा से महब्बत

आ़शिक़े फ़ारूक़े आ'ज़म, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने मदीनए मुनव्वरा की ह़ाज़िरी पर एक ना'तिया कलाम लिखा जो आप के शोहरए आफ़ाक़ ना'तिया दीवान "ह़दाइक़े बख़्शिश" में मौजूद है, इस के दो ह़िस्से हैं : एक ह़िस्से में इल्मी अन्दाज़ में मदीनए मुनव्वरा से मह़ब्बत का इज़्हार फ़रमाया और दूसरे ह़िस्से में इश्क़ के बोलों में इज़्हार फ़रमाया, चन्द अश्आ़र मअ़ शर्ह़ पेशे ख़िदमत हैं :

का'बे का नाम तक न लिया तै़बा ही कहा
पूछा था हम से जिस ने कि नुहज़्त किधर की है

शर्ह़ : "या'नी हम तो मदीनए मुनव्वरा के आ़शिक़ है कि हम से जिस ने भी जानने की कोशिश की, कि कहां का इरादा है ? तो हम ने सब से येही कहा कि मदीनए मुनव्वरा जा रहे हैं का'बतुल्लाह शरीफ़ का तो नाम तक न लिया।"

का'बा है बेशक अन्जुमन आरा दुल्हन मगर
सारी बहार दुल्हनों दुल्हा के घर की है

शर्ह़ : "या'नी बेशक का'बतुल्लाह शरीफ़ मह़फ़िल को ह़ुस्न व ख़ूब सूरती देने वाली दुल्हन की त़रह़ है मगर दुल्हनों के घर की ख़ूब सूरती से दुल्हा के घर की ख़ूब सूरती होती है कि दुल्हन ने भी ख़ुद जा कर दुल्हा के घर को ख़ूब सूरती और ज़ीनत देनी है दुल्हन की ह़ुस्ने ज़ीनत भी दुल्हा के लिये होती है।"

का'बा दुल्हन है तुर्बते अत़्हर नई दुल्हन
येह रश्के आफ़्ताब वोह ग़ैरत क़मर की है

शर्ह़ : "का'बतुल्लाह शरीफ़ दुल्हन की मिस्ल है और नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मज़ारे पुर अन्वार नई दुल्हन की मिस्ल है, अगर सूरज का'बतुल्लाह शरीफ़ की ताबानियों और सज धज व चमक दमक को देखता है तो चांद रौज़ए रसूलुल्लाह की ज़ेबो ज़ीनत को देखता है, अगर का'बतुल्लाह शरीफ़ आफ़्ताब का मन्ज़ूरे नज़र है तो रौज़ए मुबारका चांद का मन्ज़ूरे नज़र है, अगर सूरज का'बतुल्लाह शरीफ़ को देख कर रश्क करता है तो चांद रौज़ए अक़्दस को देख कर रश्क करता है।"

दोनों बनीं सजीली अनीली बनी मगर
जो पी के पास है वोह सुहागन कुंवर की है

शर्ह : "का'बतुल्लाह शरीफ़ और रौज़ए मुबारका दोनों दुल्हनें ख़ूब सूरती और ज़ीनत व सजावट में अपनी मिसाल आप हैं, मगर जो दुल्हन अपने ख़ावन्द के पास होती है उसी को सुहागन कहते हैं, वोही शहज़ादे की ज़ौजा होती है, जिस दुल्हन को कुंवर या'नी शहज़ादा अपनी राज कुमारी या'नी शहज़ादी बना कर रखे वोही सुहागन कहलाती है।"[1]

आ़शिक़े आ'ला हज़रत और मदीनए मुनव्वरा से महब्बत

आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, अमीरे अहले सुन्नत, शैख़े त़रीक़त, बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ की मदीनए मुनव्वरा से महब्बत के क्या कहने ! आप की ह़याते मुबारका का लम्ह़ा लम्ह़ा मदीनए मुनव्वरा व शहनशाहे मदीनए मुनव्वरा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की मह़ब्बत का ख़ज़ीना है। आप के मुरीदीन, मुह़िब्बीन, मो'तक़िदीन वग़ैरा में भी मदीनए मुनव्वरा की एक ख़ास मह़ब्बत देखी गई है, ज़िक्रे मदीना उन के क़ुलूब को गरमा के रख देता है, कई मुरीदीन तो मदीनए मुनव्वरा की मह़ब्बत में दीवाने नज़र आते हैं। अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ का मुनाजातों, ना'तों और मन्क़बतों का मुअ़त्त़र मुअ़त्त़र मदनी गुलदस्ता "वसाइले बख़्शिश" मदीनए मुनव्वरा की मह़ब्बत वाले अश्आ़र से भरा हुवा है। इज़्हारे इ़श्क़ो मह़ब्बत के लिये सिर्फ़ एक कलाम के चन्द अश्आ़र पेशे ख़िदमत हैं :

न दौलत न मालो ख़ज़ीने की बातें
सुनाओ हमें बस मदीने की बातें
मदीने की बातें सुनाओ कि हैं येह
मरीज़े महब्बत के जीने की बातें
शहा मेरा सीना मदीना बना दो
ख़यालों में हों बस मदीने की बातें

---

1 .....सुख़ने रज़ा, स. 253।

या इलाही عَزَّوَجَلَّ तुझे अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का वासित़ा हमें भी मदीनए मुनव्वरा की ह़क़ीक़ी मह़ब्बत अ़त़ा फ़रमा और मदीनए मुनव्वरा में अपनी राह में शहादत की मौत नसीब फ़रमा। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रसूलुल्लाह की मसाजिद से मह़ब्बत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मसाजिद से भी बहुत मह़ब्बत फ़रमाया करते थे कि येह वोह मुक़द्दस मक़ामात हैं जहां रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में अपनी जबीने नियाज़ को झुकाया।

फ़ारूक़े आ'ज़म ने मस्जिदे ह़राम की तौसीअ़ करवाई

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले मस्जिदे ह़राम की तौसीअ़ का एहतिमाम फ़रमाया। यक़ीनन जहां इस में दीगर मुसलमानों के लिये नमाज़ से मुतअ़ल्लिक़ा फ़वाइद मौजूद हैं वहीं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस मस्जिदे ह़राम से मह़ब्बत व अ़क़ीदत का भी इज़्हार होता है। चुनान्चे, शाह वलिय्युल्लाह मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक साल उ़मरह करने की निय्यत से मस्जिदे ह़राम का क़स्द फ़रमाया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मस्जिदे ह़राम को वसीअ़ व कुशादा करने का एहतिमाम फ़रमाया।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म ने मस्जिदे ह़राम की बैरूनी दीवार ता'मीर फ़रमाई

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मस्जिदे ह़राम की तौसीअ़ के साथ साथ इस के लिये दीवार भी ता'मीर फ़रमाई और येह अ़मल भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मस्जिदे ह़राम से मह़ब्बत पर दलालत करता है।

(1) ......ازالۃ الخفاء، ج۳، ص ۲۳۵۔

चुनान्चे, मरवी है कि : "अ़हदे रिसालत में मस्जिदे ह़राम की कोई बैरूनी दीवार नहीं थी, जब अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मन्सबे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन हुवे तो आप ने मस्जिद के क़रीब के घरों को ख़रीद कर उन्हें मस्जिद में शामिल कर दिया और फिर पूरी मस्जिद के गिर्द एक छोटी सी दीवार ता'मीर फ़रमा दी जिस पर चराग़ रखे जाते थे।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म का मस्जिदे नबवी का अदबो एह़तिराम

ह़ज़रते सय्यिदुना साइब बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं मस्जिद में सोया हुवा था मुझे एक शख़्स ने कंकर मारा मैं ने (उठ कर) देखा तो वोह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे। फ़रमाने लगे : اِذْهَبْ فَأْتِنِي بِهٰذَيْنِ "या'नी जाओ उन दोनों मर्दों को बुला लाओ। मैं गया और उन्हें बुला लाया।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से फ़रमाया : مَنْ اَنْتُمَا اَوْ مِنْ اَيْنَ اَنْتُمَا "या'नी तुम कौन हो और कहां से आए हो?" बोले : "हमारा तअ़ल्लुक़ ताइफ़ से है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : لَوْ كُنْتُمَا مِنْ اَهْلِ الْبَلَدِ لَاَوْجَعْتُكُمَا تَرْفَعَانِ اَصْوَاتَكُمَا فِي مَسْجِدِ رَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "या'नी अगर तुम यहां के रहने वाले होते तो मैं तुम्हें ज़रूर सज़ा देता। तुम ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मस्जिद में आवाज़ें बुलन्द कर रहे हो?"(2)

मस्जिदे नबवी के फ़र्श को पक्का करवा दिया

मस्जिदे नबवी में सब से पहले पथ्थर बिछाने वाले अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं कि मस्जिदे नबवी का फ़र्श कच्चा था, लोग जब सजदे से सर उठाते तो मिट्टी की वज्ह से अपने हाथों को झाड़ते, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मस्जिद का फ़र्श पक्का करने के लिये रैती बिछाने का हुक्म दिया चुनान्चे मक़ामे उ़क़ैक़ से बजरी लाई गई और मस्जिदे नबवी में बिछा कर उस के फ़र्श को पक्का कर दिया गया।"(3)

मसाजिद को आबाद करने का ख़ुसूसी एह़तिमाम

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में मसाजिद को आबाद करने के लिये उन्हें रौशन करने का ख़ुसूसी एहतिमाम फ़रमाया ताकि लोग

---

1 ......روح المعانی، پ۱۷، الحج، تحت الآیۃ: ۲۵، ج۱۷، ص۱۸۴۔

2 ......بخاری، کتاب الصلاۃ، باب رفع الصوت۔۔۔الخ، ج۱، ص۱۷۸، حدیث: ۴۷۰۔

3 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۱۵۔

रमज़ानुल मुबारक की रातों में आसानी से नमाज़े तरावीह़ वग़ैरा इबादात का एहतिमाम कर सकें। चुनान्चे, अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान फ़रमाते हैं :

اَوَّلُ مَنْ جَعَلَ فِی الْمَسْجِدِ الْمَصَابِيْحَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ ''या'नी मसाजिद में सब से पहले अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने रौशनी के लिये चराग़ जलाए।''(1)

मुतवल्ली को कैसा होना चाहिये ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस मज़्कूरए बाला तमाम ह़िकायात से जहां अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मसाजिद से बे पनाह अ़क़ीदतो मह़ब्बत का पता चलता है वहीं येह बात भी वाज़ेह़ होती है कि मसाजिद की ख़िदमत करना एक बहुत ही अ़ज़ीम काम है। कितने ख़ुश नसीब हैं वोह लोग जिन्हें मसाजिद की ख़िदमत की सआ़दत ह़ासिल होती है। उ़र्फ़े आ़म में आज कल ऐसे ख़ुश नसीबों को ''मुतवल्ली'' कहा जाता है। बा'ज़ मसाजिद में मस्जिद कमेटी या उस के सद्र को भी मुतवल्ली कहा जाता है लिहाज़ा सीरते फ़ारूक़ी की रौशनी में ''एक मुतवल्ली (या मस्जिद कमेटी) को कैसा होना चाहिये ?'' से मुतअ़ल्लिक़ चन्द मदनी फूल पेशे ख़िदमत हैं :

.....''मुतवल्ली को चाहिये कि ख़ुद को मस्जिद का ख़ादिम समझे और मस्जिद की ख़िदमत में येह निय्यत करे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के घर की ख़िदमत कर के उस की रिज़ा ह़ासिल करूंगा, न येह कि लोगों के सामने मेरा वक़ार बुलन्द हो और मस्जिद के मुआ़मलात पर मेरी इजारा दारी क़ाइम हो।''

.....''मस्जिद कमेटी या मुतवल्ली वग़ैरा बल्कि हर मुसलमान की येह ज़िम्मेदारी है कि मसाजिद को ग़ैर शरई मुआ़मलात से बचाए, और मस्जिद के आदाब का ख़ुसूसी एहतिमाम करे मसलन शोर शराबे, लड़ाई झगड़े, दुन्यावी गुफ़्तगू भीक मांगने, थूकने, उंगलियां चटख़ाने, मस्जिद को बच्चों पागलों और नजासत वग़ैरा से बचाने का एहतिमाम करे।''

.....''मस्जिद के इन्तिज़ामी मुआ़मलात के साथ साथ मस्जिद को पाकीज़ा रखने का भी ख़ुसूसी एहतिमाम करे, इस के लिये फ़क़त़ मस्जिद के ख़ादिम की सफ़ाई वग़ैरा पर इक्तिफ़ा करने के बजाए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये ब ज़ाते ख़ुद मस्जिद की सफ़ाई में ह़िस्सा ले कर इस त़रह़ दीगर नमाज़ियों में भी मसाजिद की सफ़ाई वग़ैरा के मुआ़मले में दिलचस्पी पैदा होगी।''

---

1 ......روح البیان، پ۱۰، التوبۃ، تحت الآیۃ: ۱۸، ج۳، ص۴۰۰۔

.....''मस्जिद के हर त़रह़ के आदाब को मल्हूज़े ख़ातिर रखे, ख़ुसूसन मस्जिद को बदबूदार होने से बचाए, इस के लिये अव्वलन इस्तिन्जा ख़ाने वग़ैरा मस्जिद से दूर किसी मक़ाम पर बनाने चाहिये ब सूरते दीगर रोज़ाना इन की सफ़ाई सुथराई का एहतिमाम करे ताकि मस्जिद बदबूदार होने से मह़फ़ूज़ रहे।[1]

.....''मस्जिद की बिजली चूंकि वक़्फ़ का माल है लिहाज़ा इसे ज़ाएअ़ होने से बचाने के लिये ख़ुसूसी एहतिमाम किया जाए, इस के लिये मस्जिद कमेटी ख़ादिमीन के बजाए आगे बढ़ कर ख़ुद ही इज़ाफ़ी पंखे, लाइटें वग़ैरा बन्द कर दिया करें। ख़ुसूसन पानी चढ़ाने वाली मोटरों पर ख़ुसूसी नज़र रखें कि बा'ज़ औक़ात टैंकी में पानी भर जाने की सूरत में मोटर चलती ही रहती है और पानी व बिजली दोनों का ज़ियाअ़ होता है।''

.....''मस्जिद की देखभाल पर ख़ुसूसी तवज्जोह दे और येह सोचे कि मेरे घर में जब कोई पंखा, लाइट वग़ैरा ख़राब हो जाए तो जल्द अज़ जल्द उसे दुरुस्त करने की कोशिश की जाती है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का घर तो इस बात का ज़ियादा मुस्तह़िक़ है कि इस की ख़राब हो जाने वाली चीज़ की फ़ौरन मरम्मत की जाए।''

.....''मस्जिद के इमाम व मुअज़्ज़िन पर अपना रो'ब और धोंस जमाने के बजाए उन के साथ हमेशा इ़ज़्ज़तो एह़तिराम और अदब के साथ पेश आए, उन्हें अपना ख़ादिम समझने के बजाए अपने आप को उन का ख़ादिम समझे कि आप की नमाज़ों का दारो मदार उन्ही पर है। नीज़ वोह वारिसाने मेह़राब व मिम्बर हैं और यक़ीनन वोह बहुत मर्तबे वाले हैं, जहां तक मुमकिन हो मस्जिद के मुआ़मलात में इमामे मस्जिद की राए ही को फ़ौक़िय्यत दी जाए जब कि शरीअ़त के मुत़ाबिक़ हो, ब सूरते दीगर उस से मुशावरत ज़रूर की जाए।''

.....''इमाम व मुअज़्ज़िन की गाहे ब गाहे मुक़र्ररा मुशाहरे के इलावा अपनी ज़ाती जेब से भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये बसद आ़जिज़ी ख़िदमत करते रहा करें कि जिस त़रह़ आप के मआ़शी मसाइल हैं इसी त़रह़ इन का भी इन मसाइल वग़ैरा से वासित़ा रहता है। नीज़ इन के मुक़र्ररा वज़ीफ़े वग़ैरा को भी ब ज़ाते ख़ुद उन की ख़िदमत में ब त़रीक़े अह़सन पेश करें।''

1.....मस्जिद को बदबूदार होने से बचाने और इसे ख़ुश्बूदार रखने से मुतअ़ल्लिक़ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ 60 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले ''मस्जिदे ख़ुश्बूदार रखिये'' का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

۞....."मस्जिद को आबाद करने का ख़ुसूसी एहतिमाम करे, इस के लिये बड़ी रातों में इजतिमाए ज़िक्रो ना'त वग़ैरा की तरकीब भी एक बेहतरीन ज़रीआ़ है।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ारूक़े आ'ज़म और ह़जरे अस्वद

फ़ारूक़े आ'ज़म का ह़जरे अस्वद से कलाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सरजिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज करते हुवे ह़जरे अस्वद को चूम कर इरशाद फ़रमाया :

وَاللّٰہِ اِنِّیْ لَاُقَبِّلُکَ وَاِنِّیْ اَعْلَمُ اَنَّکَ حَجَرٌ وَاَنَّکَ لَا تَضُرُّ وَلَا تَنْفَعُ وَلَوْلَا اَنِّیْ رَاَیْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَبَّلَکَ مَا قَبَّلْتُکَ

"या'नी ख़ुदा की क़सम ! मैं तुझे चूम रहा हूं ह़ालांकि मैं जानता हूं कि तू एक पथ्थर है, न तू किसी को नफ़्अ़ दे सकता है और न ही नुक़्सान और अगर मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तुझे चूमते हुवे न देखा होता तो मैं भी तुझे कभी न चूमता।"[2] येह सुन कर मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ किया :

بَلٰی یَا اَمِیْرَ الْمُؤْمِنِیْنَ اِنَّہٗ یَضُرُّ وَ یَنْفَعُ "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! क्यूं नहीं, येह ह़जरे अस्वद नफ़्अ़ भी देता है और नुक़्सान भी देता है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "वोह कैसे ?" अ़र्ज़ किया : "किताबुल्लाह में है।" फ़रमाया : "किताबुल्लाह में कहां है ?" अ़र्ज़ किया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَ اِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِیْۤ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّیَّتَهُمْ وَ اَشْهَدَهُمْ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى ۛۚ﴾ (پ۹، الاعراف:۱۷۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और ऐ मह़बूब याद करो जब तुम्हारे रब ने औलादे आदम की पुश्त से उन की नस्ल निकाली और उन्हें ख़ुद उन पर गवाह किया क्या मैं तुम्हारा रब नहीं सब बोले क्यूं नहीं।"

फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को पैदा फ़रमाया फिर आप की पीठ पर अपने दस्ते क़ुदरत से मस्ह़ फ़रमाया और तमाम औलादे आदम से अपनी रबूबिय्यत

1.....मस्जिद के मज़ीद आदाब जानने के लिये बहारे शरीअ़त, जि. 3, हि़स्सा 16, स. 497 का मुत़ालआ़ फ़रमाइये।

2.....مسلم، کتاب الحج، استحباب تقبیل الحجر الاسود، ص ۶۶۱، حدیث: ۱۲۷۰۔

का इक़रार लिया कि मैं तुम्हारा रब हूं और अ़बूदिय्यत का भी इक़रार लिया कि तुम सब मेरे बन्दे हो और फिर उन से अ़हदो मीसाक़ लिया और उन का येह मीसाक़ व अ़हद एक वर्क़ में लिख दिया। उस वक़्त ह़जरे अस्वद की दो आंखें और एक ज़बान थी रब عَزَّوَجَلَّ ने उस से फ़रमाया : "अपना मुंह खोल।" उस ने अपना मुंह खोला तो वोह वर्क़ उस के मुंह में डाल दिया।" फिर फ़रमाया : "ऐ ह़जरे अस्वद ! क़ियामत तक जो अपने अ़हद की पासदारी करे तू उस की गवाही देना।" मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने अ़र्ज़ किया : "मैं इस बात की गवाही देता हूं कि मैं ने दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि क़ियामत के दिन ह़जरे अस्वद को इस ह़ाल में लाया जाएगा कि उस की एक तेज़ और फ़सीह़ ज़बान होगी जिस से वोह उस शख़्स की गवाही देगा जिस ने ईमान की ह़ालत में इस का इस्तिलाम[1] किया होगा ऐ अमीरुल मोमिनीन ! येही तो ह़जरे अस्वद का नफ़्अ़ व नुक़्सान देना है।" मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) का येह कलामे मुबारका सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : **اَعُوْذُ بِاللّٰهِ اَنْ اَعِيْشَ فِيْ قَوْمٍ لَسْتَ فِيْهِمْ يَا اَبَا الْحَسَن** "या'नी मैं इस बात से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगता हूं कि मैं ऐसी क़ौम में ज़िन्दगी गुज़ारूं जहां ऐ अबल ह़सन तुम न हो।"[2]

रसूलुल्लाह की हजरे अस्वद पर मेहरबानी

ह़ज़रते सय्यिदुना सुवैद बिन ग़फ़ला رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़जरे अस्वद को चूमने के बा'द इरशाद फ़रमाया : **رَاَيْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِكَ حَفِيًّا** "या'नी ऐ ह़जरे अस्वद ! मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तुम पर मेहरबान देखा है।"[3]

उस्वए रसूलुल्लाह पर अ़मल करने की तरग़ीब

ह़ज़रते सय्यिदुना या'ला बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के हमराह त़वाफ़ में मश्ग़ूल थे। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़जरे अस्वद

---

1 .....ह़जर को बोसा देने या हाथ या लकड़ी से छू कर चूम लेने या इशारा कर के हाथों को बोसा देने को इस्तिलाम कहते हैं। बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा 6, स. 1096।

2 .....شعب الايمان، فضيلة الحجر الاسود۔۔۔الخ، ج ٣، ص ٤٥١، حديث: ٤٠٤٠۔

3 .....مسلم، كتاب الحج، استحباب تقبيل الحجر الاسود، ص ٦٦٢، حديث: ٢٥٢۔

का इस्तिलाम किया लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना या'ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने का'बे के चारों कोनों का इस्तिलाम किया। सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह अ़मल देख कर इरशाद फ़रमाया : "क्या आप ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ह़ज करने की सआ़दत ह़ासिल की है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "जी बिल्कुल की है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "क्या नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी का'बे के चारों कोनों का इस्तिलाम किया है ?" अ़र्ज़ किया : "नहीं।"[1] (या'नी जैसा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किया वैसे ही तुम भी किया करो।)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़जरे अस्वद से इस लिये मह़ब्बत फ़रमाया करते थे और उसे इस लिये चूमते थे कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे बोसा दिया, नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि ह़जरे अस्वद कल बरोज़े क़ियामत इस्तिलाम करने वालों के ईमान की गवाही देगा। कितने ख़ुश नसीब हैं वोह लोग जिन्हें ह़जरे अस्वद चूमने की सआ़दत नसीब हुई। जिन्हें अब तक येह सआ़दत ह़ासिल न हुई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदके़ उन्हें भी येह सआ़दत नसीब फ़रमाए और ऐ काश ! उन तमाम इस्लामी भाइयों का येह मदनी ज़ेह्न बन जाए कि अगर अब तक हमें येह सआ़दत ह़ासिल नहीं हुई तो हम ह़जरे अस्वद के इ़लावा दीगर चीज़ों के सामने कलिमए त़य्यिबा पढ़ कर उन्हें अपने मुसलमान होने पर गवाह कर लें। ताकि वोह अश्या कल बरोज़े क़ियामत हमारे ईमान की गवाही दें। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें भी अपने मह़बूबे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदके़ ह़जरे अस्वद को चूमने की सआ़दत अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

इस्लाम में निस्बत की बहारें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मन्सूब अश्या, अक़्वाल व अफ़्आ़ल से कितनी मह़ब्बत फ़रमाते थे, जब एक शै की निस्बत किसी मुअ़ज़्ज़म शख़्सिय्यत से हो जाए तो क्या वोह शै भी अ़ज़मत वाली हो जाती है ? जी हां ! वाके़ई अगर किसी आ़म चीज़ को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे बन्दों से निस्बत हो जाए तो वोह आ़म चीज़ फिर आ़म नहीं रहती बल्कि ख़ास हो जाती है। और

1 ......معجم اوسط، من اسمہ محمد، ج ۴، ص ۱۶، حدیث: ۵۰۵۳۔

पूरे आ़लम में उस के चर्चे होने लगते हैं, आ़ली निस्बतों से बे क़ीमत चीज़ें भी क़ीमती हो जाती हैं, हमारे मुआ़शरे में कई अश्या का मदार भी निस्बतों पर है, मुल्कों और मज़हबों की निस्बत से क़ौमें पहचानी जाती हैं, और क़ौमों की निस्बत से अफ़राद पहचाने जाते हैं, इन्ही निस्बतों पर रिश्तेदारियां क़ाइम हैं, इस्लामी मुआ़शरे का क़ियाम और इस की बक़ा भी निस्बतों की पासदारी पर है। दीने इस्लाम तो निस्बतों की बहारों से भरा हुवा है। चन्द मिसालें मुलाह़ज़ा कीजिये :

.....''मदीनए मुनव्वरा का क़दीम नाम ''यसरब'' था, येह बीमारियों का शहर कहलाता था लेकिन जैसे ही इसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत हो गई, वोह अब ''यसरब'' न रहा बल्कि ''मदीनए मुनव्वरा'' बन गया, और उसे ऐसी अ़ज़मत नसीब हुई कि जिस्मानी व रूहानी बीमारियों के लिये ''शिफ़ा ख़ाना'' बन गया।''

.....''घोड़ा एक आ़म जानवर है इस की हैसिय्यत भी एक आ़म जानवर की सी है लेकिन इसे मुजाहिदीन से निस्बत हो गई, जिस की बरकत से इसे ऐसी अ़ज़मत मिली कि क़ुरआने पाक में खुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पारह 30 सूरतुल आ़दियात में उन जिहादी घोड़ों की क़सम याद फ़रमाई।''

.....''अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुह़ाफ़ा को जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत हुई तो वोह सिद्दीक़े अक्बर बन गए, उ़मर बिन ख़त्ताब को जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत हुई तो वोह फ़ारूक़े आ'ज़म बन गए, उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत हुई तो ज़ुन्नूरैन बन गए, अ़ली बिन अबी त़ालिब को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत हुई तो शेरे खुदा बन गए।'' (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم)

.....''रमज़ानुल मुबारक का एक इम्तियाज़ येह बताया गया कि इस में क़ुरआने पाक नाज़िल हुवा यूं इस को नुज़ूले क़ुरआन से निस्बत है, इसी निस्बत की वज्ह से ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रमज़ानुल मुबारक को क़ुरआन से आबाद फ़रमाया।''

.....''क़ुरआने करीम का येह इम्तियाज़ बताया कि इस को शबे क़द्र में नाज़िल किया गया यूं क़ुरआन की शबे क़द्र से निस्बत है।''

.....''आबे ज़म ज़म को ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام के क़दमैन से निस्बत है इसी निस्बत ने इस को इतना मोह़तरम बना दिया कि हर त़वाफ़ करने वाला इस से अपनी प्यास बुझाता है।''

.....''मुजाहिदीन से निस्बत की वज्ह से इन की बीवियों के एह़तिराम की हिदायत की गई।''

.....''दाएं बाएं ऊपर नीचे तमाम सम्तें हैं लेकिन जब उन में से किसी को बैतुल्लाह से निस्बत हो गई तो उस के एह़तिराम में उस सम्त थूकने से मन्अ़ फ़रमा दिया गया।''

.....''मिट्टी की क्या ह़क़ीक़त है मगर जब येही मिट्टी ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام के सुमों से मस होती है तो तिरयाक़ व अक्सीर बन जाती है जिस बे जान में डालें उसे ज़िन्दा कर देती है।''

.....''ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام व ह़ज़रते सय्यिदुना हारून عَلَیْہِ السَّلَام के इस्ति'माल की मुबारक अश्या लकड़ी के एक सन्दूक़ में रखी गईं थी जिस को फ़िरिश्तों ने उठाया था और जिस की शान येह बताई गई कि मैदाने जंग में उस को आगे आगे रखते और उस की बरकत से मुसलमान फ़त्ह़ व नुस्रत पाते।''

.....''एक आ़म क़मीस किसी की आंखों पर डालने से कोई असर नहीं होता लेकिन जब इस क़मीस की ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام से निस्बत क़ाइम हो गई तो इस की येह शान हो गई कि ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلَیْہِ السَّلَام के चेहरे पर डाली गई तो आंखों में नूर आ गया।''

.....''दुन्या में लाखों ऊंट होंगे लेकिन जब एक ऊंटनी को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ عَلَیْہِ السَّلَام से निस्बत हो गई तो उस की येह शान हो गई कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे नाक़तुल्लाह या'नी **अल्लाह** की ऊंटनी फ़रमाया और उसे ईज़ा देने वाली क़ौमे समूद को तबाहो बरबाद कर दिया गया, क़ौम को हिदायत कर दी गई थी कि उसे बुराई से हाथ न लगाओ कि तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब आएगा और उसे बुरी त़रह़ हाथ न लगाना कि तुम को नज़्दीक अ़ज़ाब पहुंचेगा।''

.....''ऊंटनी तो ऊंटनी है कुत्ते भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूबों के मुह़ाफ़िज़ और दरबान बन जाएं तो मोह़तरम हो जाते हैं, अस्ह़ाबे कह्फ़ के कुत्ते की जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के उन वलियों से निस्बत हो गई तो उस की ऐसी शान हो गई कि क़ुरआने पाक में उस का तज़्किरा आ गया।'' एक पंजाबी शाइ़र निहायत ही ख़ूब सूरत अन्दाज़ में कुत्ते की निस्बत को बयान करते हैं :

जिनों निस्बत पाकां दी मिल जाए औ जन्नती ऐ
भावें कुत्ता हो वे बैठा कोई ग़ार दे बूहे ते
ज़िन्दगी दा मज़ा आवे सरकार दे बोहे ते
मौत आवे ते सर होवे सरकार दे बोहे ते

.....''निस्बतों से दिन मोह़तरम हो जाते हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या عَلَيْهِ السَّلَام के यौमे विलादत और यौमे विसाल का ब त़ौरे ख़ास ज़िक्र फ़रमाया है, इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने यौमे विलादत और यौमे विसाल का उस वक़्त ज़िक्र फ़रमा कर दुन्या को हैरान कर दिया जब वोह अभी शीर ख़्वार ही थे।''

.....''दुन्या में पथ्थर तो बहुत से हैं लेकिन जब उसे ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से निस्बत हो गई तो उस की शान बुलन्द हो गई और कु़रआने पाक में उसे मक़ामे इब्राहीम के नाम से याद फ़रमाया गया।''

.....''दुन्या में पहाड़ तो बहुत हैं मगर जब सफ़ा व मरवा को ह़ज़रते सय्यिदतुना हाजरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से निस्बत हो गई तो कु़रआन में उन का ज़िक्र आ गया बल्कि क़ियामत तक के मुसलमानों के लिये वोही सई करना सआ़दत का बाइ़स बन गई।''

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अम्बियाए किराम, सह़ाबए किराम, औलियाए उ़ज़्ज़ाम और उन से मन्सूब तमाम अश्या का अदबो एह़तिराम नसीब फ़रमा, हमें भी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रह़ सच्चा पक्का आ़शिके़ रसूल बना, हर मुसलमान को इत्तिबाए़ ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم व इत्तिबाए़ फ़िदायाने ह़बीब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से दोनों जहां में सुर्ख़ रूई नसीब फ़रमा, हमें अपनी राह में शहादत की मौत नसीब फ़रमा। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

फिर के गली गली तबाह ठोकरें सब की खाए क्यूं ?
दिल को जो अ़क़्ल दे ख़ुदा तेरी गली से जाए क्यूं ?
जान है इश्के़ मुस्त़फ़ा रोज़ फ़ुज़ूं करे ख़ुदा
जिस को हो दर्द का मज़ा नाज़े दवा उठाए क्यूं ?
संगे दरे हु़ज़ूर से हम को ख़ुदा न सब्र दे
जाना है सर को जा चुके दिल को क़रार आए क्यूं ?

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आठवां बाब

हिजरते फ़ारूके़ आ'ज़म

इस बाब में मुलाहज़ा कीजिये.........

- .....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और हिजरते ह़बशा
- .....आप ने हिजरते ह़बशा क्यूं न की ?
- .....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और हिजरते मदीना
- .....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का हिजरते मदीना का मुबारक अन्दाज़
- .....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का हिजरते मदीना का नक़्शा
- .....मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ हिजरत करने में आप के क़ाफ़िले के शुरका
- .....बा'दे हिजरत आप की मदीनए मुनव्वरा में रिहाइश
- .....मदीनए मुनव्वरा में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी का मा'मूल

हिजरते फ़ारूके़ आ'ज़म

फ़ारूके़ आ'ज़म और हिजरते ह़बशा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुफ़्फ़ार के ज़ुल्मो सितम से तंग आ कर मुसलमानों ने मक्कए मुकर्रमा से दो हिजरतें कीं, एक ह़बशा की त़रफ़ और एक मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़। ह़बशा की जानिब पहली हिजरत 5 बिअ़्सते नबवी ब मुत़ाबिक़ 45 विलादते नबवी को हुई और मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ हिजरत 13 बिअ़्सते नबवी ब मुत़ाबिक़ 53 विलादते नबवी को हुई। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़बशा की हिजरत में शरीक न हो सके क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने 6 बिअ़्सते नबवी ब मुत़ाबिक़ 46 विलादते नबवी में क़बूले इस्लाम फ़रमाया, जब कि हिजरते ह़बशा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़बूले इस्लाम से क़ब्ल हो चुकी थी इस लिये आप उस हिजरत में शिर्कत न कर सके।

फ़ारूके़ आ'ज़म और हिजरते मदीना

हिजरत का अनोखा अन्दाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने फ़रमाया : ''अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सिवा किसी ने ए'लानिय्या हिजरत नहीं की। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हिजरत का इरादा किया तो तल्वार ली। कमान कांधे पर लटकाई। तीरों का तरकश हाथ में ले कर ह़रम रवाना हुवे। का'बतुल्लाह शरीफ़ के सेह़न में कुरैश का एक गुरौह मौजूद था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूरे इत़मीनान से सात चक्कर लगा कर त़वाफ़ मुकम्मल किया। फिर सुकून से नमाज़ अदा की। कुफ़्फ़ार के एक एक ह़ल्के़ के सर पर जा कर खड़े हुवे और बबांगे दुहुल फ़रमाने लगे : ''तुम्हारे चेहरे ज़लील हो गए हैं ! जिस ने अपनी मां को नौह़ा करने वाली, बीवी को बेवा और बच्चों को यतीम करना हो वोह ह़रम से बाहर आ कर मुझ से दो दो हाथ कर सकता है।'' (येह फ़रमा कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बाहर तशरीफ़ ले आए।)[1]

1 ......اسد الغابة، عمر بن الخطاب، ج ۴، ص ۱۶۳ ـ

फ़ारूक़े आ'ज़म ने कमज़ोरों को राह दिखाई

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का'बतुल्लाह शरीफ़ में मौजूद कुफ़्फ़ारे कुरैश के गुरौह से मज़्कूरा गुफ़्त्गू फ़रमा कर बाहर तशरीफ़ ले आए और किसी काफ़िर को आप के पीछे आने की जुरअत न हुई। अलबत्ता चन्द कमज़ोर लोग आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के पीछे आ गए तो आप ने उन को सिखाया, कामयाबी का रास्ता बतलाया। फिर मदीनए मुनव्वरा रवाना हो गए।[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म के रफ़ीक़े हिजरत

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने इस्ह़ाक़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के रफ़ीक़े हिजरत ह़ज़रते सय्यिदुना इ़याश बिन अबी रबीआ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه थे, इन दोनों ने इकठ्ठे हिजरत की। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه इसे ख़ुद बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं कि हिजरत का इरादा कर के मैं, इ़याश बिन अबी रबीआ़ (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) और हिशाम बिन आ़स बिन वाइल (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) तीनों मक्कए मुकर्रमा से बाहर निकले और क़बीलए बनू ग़िफ़्फ़ार के क़रीब मक़ामे "तनाज़िब" पर इकठ्ठे हो कर मश्वरा किया कि कल सुब्ह़ हम तीनों यहां पहुंच जाएंगे। अगर तीनों में से कोई न आया तो उस के मुतअ़ल्लिक़ येही समझा जाएगा कि उसे रोक लिया गया है। लिहाज़ा बाक़ी दोनों हिजरत कर जाएंगे। फ़रमाते हैं : "अगले दिन मैं और इ़याश बिन अबी रबीआ़ तो पहुंच गए लेकिन हिशाम बिन आ़स बिन वाइल को रोक लिया गया। बहर ह़ाल हम मदीनए त़य्यिबा हिजरत कर गए।"[2]

हिजरते फ़ारूक़े आ'ज़म का मदनी क़ाफ़िला

ह़ज़रते सय्यिदुना इ़याश बिन अबी रबीआ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه तो वोह थे जिन्हों ने बा क़ाइदा मुशावरत के साथ आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की मइय्यत में हिजरते मदीना की, अलबत्ता इन के इ़लावा भी कई ऐसे सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان थे जिन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के साथ हिजरत की। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन इस्ह़ाक़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के साथ इन तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने भी हिजरत की :

1 ......اسد الغابة، عمر بن الخطاب، ج ۴، ص ۱۶۴ ـ

2 ......اسد الغابة، عمر بن الخطاب، ج ۴، ص ۱۶۴ ـ

(1) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के भाई ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (2) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन सुराक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (3) और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सुराक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (4) ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुनैस बिन ह़ुज़ाफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (5) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बहनोई ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (6) ह़ज़रते सय्यिदुना वाक़िद बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (7) ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ौली बिन अबी ख़ौली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (8) ह़ज़रते सय्यिदुना हिलाल बिन अबी ख़ौली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (9) ह़ज़रते सय्यिदुना इयाश बिन अबी रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (10) ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन बुकैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (11) ह़ज़रते सय्यिदुना अयास बिन बुकैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (12) ह़ज़रते सय्यिदुना आ़क़िल बिन बुकैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हिजरत कर के जब येह मदीनए मुनव्वरा पहुंचे तो येह तमाम ह़ज़रात क़बीलए बनू अ़म्र बिन औ़फ़ के सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना रिफ़ाअ़ बिन मुन्ज़िर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हां तशरीफ़ फ़रमा हुवे।(1)

बा'दे हिजरत तीसरे नम्बर पर मदीनए मुनव्वरा पहुंचे

ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरा हिजरत करने वालों में हमारे पास सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और इन के बा'द नाबीना सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पहुंचे और येह दोनों लोगों को कुरआन पढ़ाते थे। इन के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बीस सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के साथ पहुंचे। हम ने अ़र्ज़ किया : مَا فَعَلَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم "या'नी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हिजरत नहीं की ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : هُوَ عَلٰی اَثَرِيْ "या'नी वोह हमारे पीछे पीछे तशरीफ़ ला रहे हैं।" फिर चन्द दिनों के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ तशरीफ़ ले आए। ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : فَمَا رَاَیْتُ اَھْلَ الْمَدِیْنَۃِ فَرِحُوْا بِشَیْءٍ فَرَحَھُمْ بِرَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم "या'नी मैं ने मदीने वालों को इतना ख़ुश पहले कभी न देखा था जितना ख़ुश रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ आवरी पर देखा था।"(2)

---

1 ......تہذیب الاسماء، عمر بن الخطاب۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۳۲۶، اسد الغابۃ، عمر بن الخطاب، ج ۴، ص ۱۶۴۔

2 ......بخاری، کتاب مناقب الانصار، مقدم النبی صلی اللہ علیہ وسلم۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۶۰۰، حدیث: ۳۹۲۵۔
اسد الغابۃ، عمر بن الخطاب، ج ۴، ص ۱۶۴ ملخصاً۔

फ़ारूक़े आ'ज़म के बेटे सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर की हिजरत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द हिजरत की। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन हुरैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि किसी ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पहले हिजरत की थी या आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिद सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ? तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस बात पर नाराज़ी का इज़्हार करते हुवे इरशाद फ़रमाया : لَا بَلْ هُوَ هَاجِرٌ قَبْلِيْ وَهُوَ خَيْرٌ مِّنِّيْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से पहले हिजरत की थी और वोह दुन्या व आख़िरत दोनों में मुझ से बेहतर हैं।"(1)

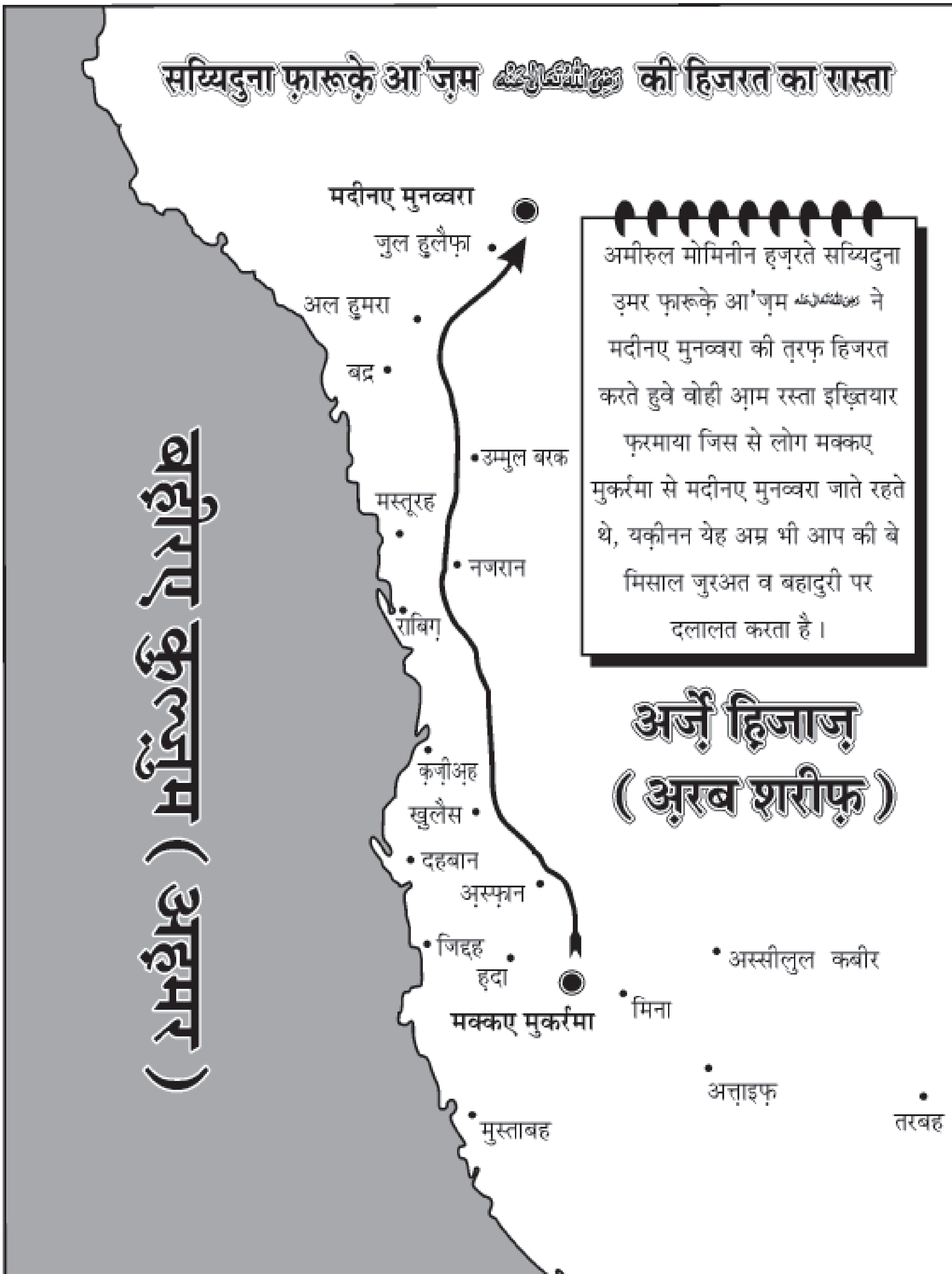
हिजरते फ़ारूक़ी सीरते फ़ारूक़ी का एक रौशन बाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हिजरत आप की सीरत का एक ऐसा रौशन बाब है जिस के हर पहलू से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इ़श्क़ो मह़ब्बत और आप की वाज़ेह़ शानो शौकत नुमायां नज़र आती है। मसलन :

.....जितने भी सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने हिजरत की कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के ज़ुल्मो सितम से तंग आ कर और उन से बचने के लिये ख़ुफ़्या त़ौर पर हिजरत की और काफ़िरों को इस बात का इ़ल्म न होने दिया जब कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने छुप कर नहीं बल्कि ए'लानिय्या हिजरत की और बा क़ाइदा कुफ़्फ़ार के पास जा कर उन के इ़ल्म में येह बात लाए कि मैं हिजरत कर के जा रहा हूं जिस ने जो करना है कर ले, येह अन्दाज़े हिजरत आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जुरअत व बहादुरी और अ़ज़ीमुश्शान शुजाअ़त का वाज़ेह़ सुबूत है।

---

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۵۲۔


सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म की हिजरत का रास्ता
मदीनए मुनव्वरा
ज़ुल हुलैफ़ा
अल हुमरा
बद्र
उम्मुल बरक
मस्तूरह
नजरान
राबिग़
क़ज़ीअह
खुलैस
दहबान
अस्फ़ान
जिद्दह
हदा
मक्कए मुकर्रमा
मिना
अस्सीलुल कबीर
अत्ताइफ़
तरबह
मुस्ताबह
बहीरए कुल्ज़ुम (अह्मर)
अर्ज़े हिजाज़
(अरब शरीफ़)
अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म ने मदीनए मुनव्वरा की तरफ़ हिजरत करते हुवे वोही आम रस्ता इख़्तियार फ़रमाया जिस से लोग मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरा जाते रहते थे, यक़ीनन येह अम्र भी आप की बे मिसाल जुरअत व बहादुरी पर दलालत करता है।

.....आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अन्दाज़े हिजरत देख कर गोया यूं मह़सूस होता है कि आप ने हिजरते मदीना फ़क़त़ इस लिये की, कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हिजरत का हुक्म इरशाद फ़रमाया है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते त़य्यिबा से भी येह बात सामने आती है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़याते त़य्यिबा का मदार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ पर था। एक मरतबा आप ने दौराने त़वाफ़ ह़जरे अस्वद को चूमा तो उसे मुख़ात़ब कर के येही इरशाद फ़रमाया कि मैं तुझे इस लिये चूम रहा हूं कि तुझे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चूमा है।

.....मुसलमान कुफ़्फ़ार के ज़ुल्मो सितम से इतना तंग आ चुके थे कि उन्हें हिजरत करते हुवे भी ख़ौफ़ मह़सूस होता था कि कहीं कुफ़्फ़ार इन का पीछा कर के कोई नुक़्सान न पहुंचाएं लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस जुरअत मन्दाना हिजरत ने दीगर मुसलमानों के ह़ौसले बुलन्द कर दिये और आप के पीछे पीछे दीगर मुसलमान भी हिजरत करने लग गए।

हिजरत के बा'द मदीनए मुनव्वरा में रिहाइश

अ़ह्दे रिसालत में मदीनए मुनव्वरा एक छोटा सा रिहाइशी अ़लाक़ा था, उस के मुख़्तसर रक़्बे का इस बात से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि अब मदीनए मुनव्वरा में मस्जिदे नबवी शरीफ़ जितने रक़्बे पर बनी हुई है दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हिजरत के वक़्त पूरा मदीनए मुनव्वरा इतने ही रक़्बे पर आबाद था। येही वज्ह है कि मक्कए मुकर्रमा से जब कोई सह़ाबी हिजरत कर के आता तो वोह मदीनए मुनव्वरा के अत़राफ़ के अ़लाक़े क़ुबा वग़ैरा में क़ियाम करता, मदीनए मुनव्वरा के अत़राफ़ के अ़लाक़ो को "अ़वालियुल मदीना" भी कहा जाता था। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब हिजरत कर के तशरीफ़ लाए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी इसी अ़लाक़े में रिहाइश इख़्तियार फ़रमाई। सह़ीह़ बुख़ारी की एक रिवायत में बिल्कुल वाज़ेह़ त़ौर पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रिहाइश का अ़वालियुल मदीना में होने की सराह़त मौजूद है। अलबत्ता जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा हिजरत कर के तशरीफ़ लाए और मस्जिदे नबवी की ता'मीर फ़रमाई तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अज़्वाजे मुत़ह्हरात व चन्द सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के घर मस्जिदे नबवी के साथ ही ता'मीर फ़रमाए। इन में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का घर भी था।(1)

1 ......بخاری، کتاب العلم، باب التناوب فی العلم، ج ۱، ص ۵۰، حدیث: ۸۹ ماخوذا۔

फ़ारूके़ आ'ज़म का रिश्तए मुवाख़ात

वाज़ेह़ रहे कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के माबैन दो मरतबा रिश्तए मुवाख़ात क़ाइम फ़रमाया था, एक तो मक्कए मुकर्रमा में और एक मदीनए मुनव्वरा में। मक्कए मुकर्रमा में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के साथ रिश्तए मुवाख़ात क़ाइम फ़रमाया था और जब सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा हिजरत कर के तशरीफ़ ले गए तो वहां सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के साथ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक रिवायत के मुत़ाबिक़ सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ही के साथ रिश्तए मुवाख़ात क़ाइम फ़रमाया और दीगर रिवायात में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़वैमिर बिन साइ़दा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه, ह़ज़रते सय्यिदुना इतबान बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन अ़फ़रा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का ज़िक्र भी है।(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म ने रसूलुल्लाह से पहले हिजरत क्यूं की ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه दोनों क़बूले इस्लाम के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सफ़र व ह़ज़र के साथी थे, वाके़ई येह बात बहुत अहम्मिय्यत की ह़ामिल है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने पहले हिजरत क्यूं की ? ह़ालांकि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه चाहते तो सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ भी हिजरत कर सकते थे। इस की चन्द नफ़ीस वुजूहात हैं :

.....पहली वज्ह तो वोह है जो शाह वलिय्युल्लाह मुह़द्दिसे देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने बयान की, फ़रमाते हैं : هجرت نمود بسوئے مدینہ قبل از آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم وتمہید وتوطیہ ساخت برائے قدوم وے صلی اللہ علیہ وسلم या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पहले हिजरत की, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी के लिये वहां की फ़ज़ा को मुनासिब व हमवार किया।(2)

1 ......طبقات کبری، ذکر ھجرۃ عمر بن ـــ الخ، ج ۳، ص ۲۰۶۔

2 ......ازالۃ الخفاء، ج ۳، ص ۱۲۰۔

✿.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से क़ब्ल हिजरत करने की ह़क़ीक़ी वज्ह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त है।

✿.....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ए'लानिय्या हिजरत देख कर ऐसा लगता है गोया आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी हिजरत के ज़रीए़ कुफ़्फ़ार के अ़ज़ाइम को जानना चाहते थे कि मेरी ए'लानिय्या हिजरत पर उन का रद्दे अ़मल क्या होता है ? जैसा रद्दे अ़मल होता आप के बा'द रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم या दीगर मुसलमान वैसा ही क़दम उठाते।

फ़ारूके़ आ'ज़म की बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी का मा'मूल

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जब हिजरत के बा'द मदीनए मुनव्वरा चले गए और बा'द में ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी तशरीफ़ ले गए तो सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने पड़ोसी सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना इ़तबान बिन मालिक अन्सारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जो बनू उमय्या बिन ज़ैद से तअ़ल्लुक़ रखते थे उन के साथ मुशावरत कर के येह मा'मूल बना लिया था कि एक दिन आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िरी देते और दूसरे दिन वोह ह़ाज़िरी देते और दोनों रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रामीन को अपने ज़ेहन में मह़फ़ूज़ कर लेते और एक दूसरे को बताते।(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म के मश्वरे से मुअज़्ज़िन का तक़र्रुर

जब तमाम मुसलमान हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा पहुंच गए और कुफ़्फ़ारे कु़रैश के शर से तक़रीबन मह़फ़ूज़ हो गए तो ताजदारे रिसालत शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सब से पहले इस बात की त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाई कि अब मुसलमानों के लिये इस्लाम के फ़राइज़ व अरकान वग़ैरा की ता'यीन की जाए। अब तक अज़ान का कोई ख़ास त़रीक़ा मुतअ़य्यन नहीं हुवा था। सब से पहले अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस बात का मश्वरा दिया कि अज़ान के लिये एक मुअज़्ज़िन मुक़र्रर किया जाए जो नमाज़ के लिये मुसलमानों को बुलाए।

---

(1)......بخاری، کتاب العلم، باب التناؤب فی العلم، ج ۱، ص ۵۰، حدیث: ۸۹۔

ارشاد الساری، کتاب العلم، باب التناؤب۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۳۲۹، تحت الحدیث: ۸۹ وغیرھا۔

चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं : "जब मुसलमान मदीनए मुनव्वरा हिजरत कर के आ गए तो नमाज़ की अदाएगी तो होती थी लेकिन अज़ान नहीं दी जाती थी तो एक दिन इस पर मुशावरत की गई, बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने नाक़ूस बजाने का मश्वरा दिया जिस त़रह़ नसारा अपनी इ़बादत के लिये बजाते थे, बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने बूक़ (बिगुल) बजाने का मश्वरा दिया जिस त़रह़ यहूदी बजाया करते थे। लेकिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत में मश्वरा देते हुवे अ़र्ज़ किया : اَوَلَا تَبْعَثُوْنَ رَجُلًا يُنَادِيْ بِالصَّلَاةِ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसा क्यूं न किया जाए कि एक शख़्स को मुक़र्रर कर दिया जाए जो नमाज़ के लिये बुलाया करे ?" शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आप का येह मश्वरा बहुत पसन्द आया और आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को नमाज़ के लिये बुलाने का हुक्म इरशाद फ़रमाया।(1)

अज़ान के जवाब की फ़ज़ीलत

मदीने के ताजदार, हम ग़रीबों के ग़म गुसार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक बार इरशाद फ़रमाया : "ऐ औ़रतो ! जब तुम बिलाल को अज़ान व इक़ामत कहते सुनो तो जिस त़रह़ वोह कहता है तुम भी कहो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे लिये हर कलिमे के बदले एक लाख नेकियां लिखेगा और एक हज़ार दरजात बुलन्द फ़रमाएगा और एक हज़ार गुनाह मिटाएगा।" ख़वातीन ने येह सुन कर अ़र्ज़ की : "येह तो औ़रतों के लिये है, मर्दों के लिये क्या है ?" फ़रमाया : "मर्दों के लिये दुगना।"(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर क़ुरबान ! उस ने हमारे लिये नेकियां कमाना, दरजात बढ़वाना और गुनाह बख़्शवाना किस क़दर आसान फ़रमा दिया है। अगर कोई इस्लामी बहन रोज़ाना पांचों अज़ानों और इक़ामतों का जवाब दे तो उसे रोज़ाना एक करोड़ बासठ लाख नेकियां मिलेंगी, एक लाख बासठ हज़ार दरजात बुलन्द होंगे और एक लाख बासठ हज़ार गुनाह मुआ़फ़ होंगे। जब कि इस्लामी भाई को दुगना या'नी तीन करोड़ चौबीस लाख नेकियां मिलेंगी, तीन लाख चौबीस हज़ार दरजात बुलन्द होंगे और तीन लाख चौबीस हज़ार गुनाह मुआ़फ़ होंगे।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

(1) ......بخاری، کتاب الاذان، باب بدء الاذان، ج ۱، ص ۲۲۰، حدیث: ۶۰۴ ملتقطاً۔

(2) ......کنز العمال، کتاب الصلاۃ، آداب المؤذن، الجزء: ۷، ج ۴، ص ۲۸۷، حدیث: ۲۱۰۰۵۔

नवां बाब

फ़ारूक़े आ'ज़म के ग़ज़वात व सराया

इस बाब में मुलाहज़ा कीजिये...........

.....ग़ज़्वए बद्र और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

.....ग़ज़्वए उहुद और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

.....ग़ज़्वए बनू नज़ीर और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

.....ग़ज़्वए बदरुल मौइद और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

.....ग़ज़्वए बनी मुस्तलिक़ और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

.....ग़ज़्वए ख़न्दक़ और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

.....ग़ज़्वए हुदैबिय्या और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

.....ग़ज़्वए ख़ैबर और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

.....ग़ज़्वए फ़त्हे मक्का और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

.....ग़ज़्वए हुनैन और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

.....ग़ज़्वए ताइफ़ और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

.....ग़ज़्वए तबूक और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जंगी मुहिम, जैशे ज़ातुस्सलासिल

.....जैशे उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

फ़ारूक़े आ'ज़म के ग़ज़्वात व सराया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इब्तिदाए इस्लाम में सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कुफ़्फ़ार से जंग करना ह़राम था, कुफ़्फ़ार से जंग का हुक्म सफ़रुल मुज़फ़्फ़र की 12 तारीख़ सिने 2 हिजरी को नाज़िल हुवा, इस इजाज़त से क़ब्ल सत्तर से ज़ाइद आयाते मुबारका जंग की मुमानअ़त में नाज़िल होती रहीं, जंग की मुमानअ़त की ज़ियादा तर आयात मक्कए मुकर्रमा में नाज़िल हुईं । जिहाद की इजाज़त का येह हुक्म इन्तिहाई मुनासिब वक़्त पर नाज़िल हुवा क्यूंकि मक्कए मुकर्रमा में मुसलमान क़लील ता'दाद और मुशरिकीन कसीर ता'दाद में थे । अगर वहां जंग का हुक्म नाज़िल होता तो मुसलमानों को सख़्त मुश्किल का सामना करना पड़ता । जब मक्कए मुकर्रमा में कुफ़्फ़ार की सरकशी ह़द से तजावुज़ कर गई, वहां से तमाम मुसलमानों को निकाल दिया गया और مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को शहीद करने की साज़िशें की जाने लगीं तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी मदीनए मुनव्वरा हिजरत कर के तशरीफ़ ले गए । सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان भी वहीं जम्अ़ हो गए और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुस्रत व ह़िमायत पर कमर बस्ता हो गए, मदीनए मुनव्वरा दारुल इस्लाम बन गया और मुसलमानों के लिये क़ल्ए का काम देने लगा तो जिहाद का भी हुक्म दिया ।(1)

"ग़ज़्वात" व "सराया" किसे कहते हैं ?

जिन जंगों में हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खुद शिर्कत फ़रमाई उन्हें मुह़द्दिसीन की इस्तिलाह़ में "मग़ाज़ी" और "ग़ज़्वात" कहा जाता है और जिन में आप खुद शरीक न हुवे बल्कि अपने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को अमीर बना कर भेजा उन्हें "सराया" और "बुऊ़स" कहा जाता है। इन चारों इस्तिलाहात में मुख़्तसर सा फ़र्क़ है। "मग़ाज़ी" जम्अ़ है "मग़ज़ा" की, जिस के मा'ना ग़ाज़ियों के औसाफ़ को बयान करना है। जब कि "ग़ज़्वात" जम्अ़ है "ग़ज़्वा" की। इसी त़रह़ "सराया" जम्अ़ है "सरिय्या" की, इस से मुराद वोह लश्कर है जो कम अज़ कम पांच अफ़राद पर मुश्तमिल हो। बा'ज़ उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं कि कम अज़ कम सौ अफ़राद पर मुश्तमिल हो तो "सरिय्या" कहलाएगा। "सरिय्या" के अफ़राद की ज़ियादा से ज़ियादा ता'दाद चार सौ400 होती है और बा'ज़ उ़लमा के नज़्दीक पांच सौ500। जब कि "बुऊ़स" जम्अ़ है "बा'स" की, इस से मुराद वोह फ़ौजी मुहिम होती है जो लश्कर से कुछ मुन्तख़ब अफ़राद को अलग कर के भेजी जाए।(2)

1.....شرح الزرقانی علی المواھب، کتاب المغازی، ج ۲، ص ۲۱۸ ملخصا، सीरते सय्यिदुल अम्बिया, स. 143

2.....सीरते सय्यिदुल अम्बिया, स. 176

रसूलुल्लाह की बा'ज़ जंगों में अ़दमे शिर्कत की वज्ह

"सराया" और "बुऊ़स" में दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शरीक न होने की वज्ह आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने खुद ही बयान फ़रमाई है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْلَا أَنَّ رِجَالًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَا تَطِيبُ أَنْفُسُهُمْ أَنْ يَتَخَلَّفُوا عَنِّي وَلَا أَجِدُ مَا أَحْمِلُهُمْ عَلَيْهِ مَا تَخَلَّفْتُ عَنْ سَرِيَّةٍ تَغْزُو فِي سَبِيلِ اللّٰهِ "या'नी उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर लोगों को छोड़ कर जिहाद के लिये जाने में मुसलमान मर्दों के दिल रन्जीदा होने का अन्देशा न होता और न ही मुझे इतनी सुवारियां मयस्सर हैं कि मैं उन सब को अपने साथ जिहाद पर ले जाने के लिये सुवार करूं तो मैं किसी लश्कर के साथ जिहाद पर जाने से न रुकता।"

وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوَدِدْتُ أَنِّي أُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ ثُمَّ أُحْيَا ثُمَّ أُقْتَلُ ثُمَّ أُحْيَا ثُمَّ أُقْتَلُ ثُمَّ أُحْيَا ثُمَّ أُقْتَلُ

"या'नी उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! मेरी येह शदीद ख़्वाहिश है कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में शहीद किया जाऊं, फिर ज़िन्दा किया जाऊं, फिर शहीद किया जाऊं, फिर ज़िन्दा किया जाऊं, फिर शहीद किया जाऊं, फिर ज़िन्दा किया जाऊं, फिर शहीद किया जाऊं।"(1)

इ़ल्मुल मग़ाज़ी की अहम्मिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ज़वात का इ़ल्म बड़ी शानो शौकत वाला इ़ल्म है, इस की सब से बड़ी वज्ह येह है कि इसे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत है और यक़ीनन जिस चीज़ को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत हो जाए तो वोह शान वाली हो जाती है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی फ़रमाते हैं : فِيْ عِلْمِ الْمَغَازِيْ عِلْمُ الْاٰخِرَةِ وَالدُّنْيَا "या'नी इ़ल्मे मग़ाज़ी में दुन्या व आख़िरत के उ़लूम मौजूद हैं।"(2)

इ़ल्मुल मग़ाज़ी क़ुरआन की त़रह़ सीखते

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साहिब ज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं :

---

1 ......بخاری، کتاب الجهاد والسیر، باب تمنی الشهادة، ج ۲، ص ۲۵۲، حدیث: ۲۷۹۷۔

2 ......البدایة والنهایة، ج ۲، ص ۶۴۲۔

كُنَّا نُعَلَّمُ مَغَازِي النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَمَا نُعَلَّمُ السُّوْرَةَ مِنَ الْقُرْآنِ

''या'नी हम रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मग़ाज़ी का इल्म इस तरह़ ह़ासिल करते जिस तरह़ क़ुरआने मजीद की सूरतें सीखा करते थे।''[1]

इल्मुल मग़ाज़ी तुम्हारे अजदाद का शरफ़ है

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के पोते ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन मुह़म्मद बिन सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद हमें मग़ाज़ी और सराया की ता'लीम देते थे और फ़रमाते थे : يَا بُنَيَّ هٰذِهٖ مَآثِرُ آبَائِكُمْ فَلَا تُضِيعُوْا ذِكْرَهَا ''या'नी ऐ बेटे ! येह इल्म तुम्हारे आबाओ अजदाद का शरफ़ है इस के ज़िक्र को ज़ाएअ़ मत करो।''[2]

रसूलुल्लाह के ग़ज़वात की ता'दाद

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ग़ज़वात की ता'दाद में इख़्तिलाफ़ है, इख़्तिलाफ़ की वज्ह ग़ज़वात की ता'दाद को शुमार करना है, बा'ज़ उ़लमाए किराम ने ''ग़ज़्वए अह़ज़ाब'' और ''ग़ज़्वए क़ुरैज़ा'' या ''ग़ज़्वए ख़ैबर'' और ''ग़ज़्वए वादियुल क़ुरा'' को एक शुमार किया है और बा'ज़ उ़लमाए किराम ने इन को अलग अलग शुमार किया है। तरतीबे ज़मानी (ज़माने) के ए'तिबार से इन ग़ज़वात की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

(1).....''ग़ज़्वतु अबवा'' इसे ''ग़ज़्वतु वद्दान'' भी कहा जाता है।

(2).....''ग़ज़्वतु बुवात़''

(3).....''ग़ज़्वतु सफ़वान'' येही ''ग़ज़्वतु बदरिल ऊला'' भी कहलाता है।

(4).....''ग़ज़्वतुल उ़शैरह''

(5).....''ग़ज़्वतु बदरिल कुब्रा''

(6).....''ग़ज़्वतु बनी सुलैम'' इसे ''ग़ज़्वतु क़रक़रतिल कुद्र'' भी कहा जाता है।

(7).....''ग़ज़्वतुस्सवीक़''

(8).....ग़ज़्वतुल ग़त़फ़ान'' इसे ''ग़ज़्वतु ज़िल अमर्र'' भी कहते हैं।

(9).....''ग़ज़्वतुल फ़ुरुअ़'' जो ह़िजाज़ के अ़लाक़ों में ''बुह़रान'' के मक़ाम पर पेश आया।

---

1 ......البداية والنهاية، ج ٢، ص ٢٤٢، سبل الهدى والرشاد، الباب الثانى، اختلاف الناس۔۔۔الخ، ج ٤، ص ١٠۔

2 ......سبل الهدى والرشاد، الباب الثانى، اختلاف الناس۔۔۔الخ، ج ٤، ص ١٠۔

(10).....''ग़ज़्वतु बनी क़ैनुक़ाअ़''

(11).....''ग़ज़्वतु उहुद''

(12).....''ग़ज़्वतु ह़मराइल असद''

(13).....''ग़ज़्वतु बनी नज़ीर''

(14).....''ग़ज़्वतु बदरिल अख़ीरह'' येह ''ग़ज़्वतु बदरिल मौइद'' भी कहलाता है।

(15).....''ग़ज़्वतु दूमतिल जन्दल''

(16).....''ग़ज़्वतु बनिल मुस्त़लिक़'' येह ''ग़ज़्वतुल मुरैसीअ़'' भी कहलाता है।

(17).....''ग़ज़्वतु ख़न्दक़''

(18).....''ग़ज़्वतु बनी क़ुरैज़ा''

(19).....''ग़ज़्वतु बनी लिह़्यान''

(20).....''ग़ज़्वतु हु़दैबिय्या''

(21).....ग़ज़्वतु ज़ी क़र्द''। ''ق'' और ''ر'' के ज़बर और पेश दोनों के साथ।

(22).....''ग़ज़्वतु ख़ैबर''

(23).....''ग़ज़्वतु ज़ातिर्रिक़ाअ़'' इसे ''ग़ज़्वतु बनी मुह़ारिब'' व ''ग़ज़्वतु बनी सा'लबा'' भी कहा जाता है।

(24).....''ग़ज़्वतु फ़त्ह़े मक्का''

(25).....''ग़ज़्वतु हु़नैन''

(26).....''ग़ज़्वतु त़ाइफ़''

(27).....''ग़ज़्वतु तबूक''

बा'ज़ मुह़द्दिसीन के नज़दीक इन तमाम ग़ज़्वात की तक़्दीम व ताख़ीर में भी इख़्तिलाफ़ है जिस की तफ़्सील सियर व तारीख़ की कुतुब में मुलाह़ज़ा की जा सकती है।[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म के ग़ज़्वात की ता'दाद

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हु़स्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ तक़रीबन तमाम ग़ज़्वात में शिर्कत फ़रमाई, चुनान्चे, अ़ल्लामा इब्ने असीर जज़री عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : وَشَهِدَ الْمَشَاهِدَ كُلَّهَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ''या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम ग़ज़्वात में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ शिर्कत फ़रमाई।''

1 .....سبل الهدی والرشاد، الباب الثانی، اختلاف الناس۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۸۔

ग़ज़वाते फ़ारूके आ'ज़म का तफ़्सीली नक्शा



अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती़ عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی अ़ल्लामा नववी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی का क़ौल नक़्ल फ़रमाते हैं : شَهِدَ عُمَرُ مَعَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَشَاهِدَ كُلَّهَا "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने तमाम ग़ज़्वात में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ शिर्कत फ़रमाई।"(1)

ग़ज़्वात में फ़ारूके़ आ'ज़म की सआ़दतें

ग़ज़्वात में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ह़ासिल होने वाली सआ़दतों में से सब से बड़ी सआ़दत तो येह है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मुख़्तलिफ़ जंगों में शिर्कत की। लेकिन इस अ़ज़ीम सआ़दत के इ़लावा भी आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मुख़्तलिफ़ ग़ज़्वात में कई सआ़दतें ह़ासिल हुईं। इन ग़ज़्वात में "ग़ज़्वए बद्र, ग़ज़्वए बदरिल मौइ़द, ग़ज़्वए उह़ुद, ग़ज़्वए ख़न्दक़, ग़ज़्वए बनी मुस्त़लिक़, ग़ज़्वए हुदैबिया, ग़ज़्वए ख़ैबर, ग़ज़्वए फ़त्ह़े मक्का, ग़ज़्वए हुनैन, ग़ज़्वए त़ाइफ़ और ग़ज़्वए तबूक़," क़ाबिले ज़िक्र हैं, तफ़्सील दर्जे ज़ैल है।

﴾2 हिजरी﴿ ग़ज़्वए बद्र और फ़ारूके़ आ'ज़म

.....''ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद हाशिम ठठवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی अपनी मश्हूर किताब "सीरते सय्यिदुल अम्बिया" स. 149 पर इरशाद फ़रमाते हैं : "ग़ज़्वए बद्र" को "बद्रे कुब्रा", "बद्रे उ़ज़्मा", बद्रे सानिय्या", "बद्रे क़िताल" और "यौमुल फ़ुरक़ान" भी कहते हैं। नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह जंग रमज़ानुल मुबारक में कुफ़्फ़ार के साथ लड़ी, येही वोह अ़ज़ीम वाक़िआ़ है जिस के नतीजे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस्लाम को ग़लबा अ़त़ा फ़रमाया, मक़ामे "बद्र" जिस में येह ग़ज़्वा पेश आया ह़रमैने शरीफ़ैन के दरमियान, मदीनए मुनव्वरा से तीन दिन की मसाफ़त पर वाके़अ़ है।"

.....आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم 11 रमज़ानुल मुबारक बरोज़ हफ़्ता तीन सौ पांच305 मुहाजिरीन व अन्सार सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की मइय्यत में मदीनए मुनव्वरा से बद्र की जानिब निकले। मश्हूर येह है कि अस्ह़ाबे बद्र की ता'दाद तीन सौ तेरह313 है लेकिन ह़क़ीक़त येह है कि आठ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان इस में ब नफ़्से नफ़ीस शामिल न थे। सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन,

(1).....جامع الاصول، الباب الثالث، فی ذکر العشرۃ من الصحابۃ، ج ۱۲، ص ۱۷۷، تاریخ الخلفاء، ص ۹۱۔

रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इजाज़त से कुछ ज़रूरी उमूर की वज्ह से पीछे रह गए थे। इस लिये आप ने ग़मीनत में से दूसरों के बराबर उन को भी ह़िस्सा अ़ता फ़रमाया और ख़ुश ख़बरी दी कि उन के लिये भी इतना ही सवाब है जितना इस में शामिल होने वालों का है, येह ह़ज़रात चूंकि ग़नीमत और सवाब के लिह़ाज़ से इस में शुमूलिय्यत करने वालों की मानिन्द हैं लिहाज़ा उ़लमाए किराम ने इन्हें उन में शुमार फ़रमाया है।

.....येह वोह पहला ग़ज़्वा है जिस में अन्सार हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ निकले इस से क़ब्ल किसी ग़ज़्वे में वोह शरीक न हुवे थे। इस ग़ज़्वे में कुफ़्फ़ार का लश्कर कसीर ता'दाद में घोड़ों, तल्वारों और सामाने ह़र्ब से लैस एक हज़ार फ़ौजियों पर मुश्तमिल था, जब कि मुसलमानों के पास सामान, घोड़ों, ज़ादे राह और अस्लेह़ा की क़िल्लत इतनी थी कि पूरे लश्कर में दो घोड़े और आठ तल्वारें थीं, इस के बा वुजूद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और मोमिनों को फ़त्ह़ व नुस्रत से नवाज़ा, कुफ़्फ़ार में से सत्तर मक़्तूल हुवे और सत्तर क़ैदी हो गए, मुसलमानों को बहुत सा माले ग़नीमत ह़ासिल हुवा, जिस की तफ़्सील ह़दीस व सीरत की किताबों में मौजूद है। बहर ह़ाल इस जंगे बद्र में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को बड़े बड़े फ़ज़ाइल ह़ासिल हुवे, तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

फ़ारूक़े आ'ज़म को क़ुरआनी ताईद ह़ासिल हो गई

मुल्के शाम से कुफ़्फ़ार का एक क़ाफ़िला साज़ो सामान के साथ आ रहा था, सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने अस्ह़ाब के साथ उस क़ाफ़िले से मुक़ाबले के लिये रवाना हुवे, उधर जब कुफ़्फ़ारे मक्का को मा'लूम हुवा तो अबू जहल भी क़ुरैश का एक बड़ा लश्कर ले कर मुल्के शाम से आने वाले क़ाफ़िले की मदद के लिये निकल खड़ा हुवा। लेकिन जब उस क़ाफ़िले को मा'लूम हुवा कि मुसलमान उन के मुक़ाबले के लिये आ रहे हैं तो उन्हों ने वोह रास्ता तब्दील कर दिया और समन्दरी रास्ते किसी और राह निकल गए। अबू जहल को जब येह मा'लूम हुवा तो उस के साथियों ने कहा कि क़ाफ़िला तो सह़ीह़ सलामत दूसरी राह निकल गया लिहाज़ा वापस मक्कए मुकर्रमा चलते हैं लेकिन उस ने वापस जाने से इन्कार कर दिया और मुसलमानों से जंग करने के लिये मक़ामे बद्र की त़रफ़ चल पड़ा। इधर नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

को मा'लूम हुवा तो आप ने अपने अस्ह़ाब से मश्वरा किया और फ़रमाया : "अल्लाह तआ़ला ने मुझ से वा'दा फ़रमाया है कि कुफ़्फ़ार के दोनों गुरौहों में से एक पर मुसलमानों को फ़त्ह़ अ़ता फ़रमाएगा ख़्वाह वोह मुल्के शाम वाला क़ाफ़िला हो या मक्कए मुकर्रमा से आने वाले कुफ़्फ़ारे कु़रैश का लश्कर।" क़ाफ़िला चूंकि निकल चुका था लिहाज़ा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बद्र की त़रफ़ जाने का इरादा फ़रमाया। बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "हम बा क़ाइ़दा जंग की तय्यारी से नहीं आए थे, लिहाज़ा अबू जहल के लश्कर से ए'राज़ कर के उसी मुल्के शाम वाले क़ाफ़िले का तआ़क़ुब करना चाहिये।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जैसा आप के रब عَزَّوَجَلَّ ने आप को हुक्म फ़रमाया है वैसा ही कीजिये या'नी बद्र की त़रफ़ तशरीफ़ ले चलिये।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुवाफ़िक़त में येह आयते मुबारका नाज़िल हो गई :

﴿كَمَاۤ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۪ وَ اِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ۙ۝۵﴾ (پ ۹، الانفال: ۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "जिस त़रह़ ऐ मह़बूब तुम्हें तुम्हारे रब ने तुम्हारे घर से ह़क़ के साथ बर आमद किया और बेशक मुसलमानों का एक गुरौह उस पर नाख़ुश था।" बा'दे अज़ां तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का बद्र जाने पर इज्माअ़ (इत्तिफ़ाक़) हो गया और ग़ज़्वए बद्र का वुक़ूअ़ हुवा।(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म का ईमान अफ़रोज़ जवाब

कुछ रिवायात में यूं भी है कि ग़ज़्वए बद्र के लिये जाते हुवे रास्ते में जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मक़ामे "रौह़ा" से रवाना हो कर मक़ामे "सफ़रा" के क़रीब पहुंचे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह ख़बर मिली कि मुशरिकीने मक्का आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से जंग की तय्यारी कर के मक्कए मुकर्रमा से निकल आए हैं। येह ख़बर सुन कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुहाजिरीन व अन्सार तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मश्वरा फ़रमाया कि "मुशरिकीन से जंग के लिये पेश क़दमी की जाए या नहीं ?" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना मिक़दाद बिन अस्वद किन्दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वग़ैरा तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने निहायत ही ख़ूब सूरत और उ़म्दा जवाब देते हुवे अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की क़ौम की त़रह़

(1)......تفسیر بیضاوی، پ ۹، الانفال، تحت الآیۃ: ۵، ج ۳، ص ۹۸ مختصرا، تاریخ الخلفاء، ص ۹۷، الصواعق المحرقۃ، ص ۱۰۰۔

आप को येह नहीं कहेंगे : ﴿فَاذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَاۤ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ﴾(پ۶، المائدۃ:۲۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "तो आप जाइये और आप का रब तुम दोनों लड़ों हम यहां बैठे हैं।" बल्कि हम तो आप की बारगाह में येह अ़र्ज़ करते हैं कि चलिये आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप का रब जंग फ़रमाएं हम आप के साथ जंग में शरीक होंगे, हम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दाएं, बाएं, आगे, पीछे लड़ने के लिये तय्यार हैं।" येह जवाब सुन कर हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बहुत मसरूर हुवे और ख़ुशी से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरए मुबारका मुनव्वर हो गया।[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म की ग़ैरते ईमानी

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जंगे बद्र में अपने अस्ह़ाब से फ़रमाया : "मैं जानता हूं कि बनू हाशिम और दीगर क़बाइल के चन्द मर्दों को कुफ़्फ़ार जंग में मजबूर कर के लाए हैं, उन्हें हमारे साथ लड़ने की कोई चाहत न थी, इस लिये अगर कोई हाशिमी सामने आए तो उसे क़त्ल न करना। अबुल बुख़्तरी बिन हिशाम को न मारना, और मेरे चचा अ़ब्बास को भी न मारना क्यूंकि उन्हें भी ज़बरदस्ती हम से लड़ने के लिये मजबूर कर के लाया गया है।" येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना अबू हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहने लगे : "आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे बाप, बेटों, भाइयों और रिश्तेदारों को क़त्ल कर रहे हैं तो हम आप के चचा अ़ब्बास को छोड़ देंगे ? ख़ुदा की क़सम ! अगर मुझे वोह मिल गया तो तल्वार से उस का मुंह ज़ख़्मी कर दूंगा।" हज़रते सय्यिदुना अबू हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह बात ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक पहुंची तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मलाल (दुख) पहुंचा और अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू ह़फ़्स !" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि येह वोह मौक़अ़ था जब पहली बार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे मेरी कुन्यत से पुकारा था। फ़रमाया : اَیُضْرَبُ عَمُّ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَ سَلَّمَ بِالسَّیْفِ या'नी क्या रसूले ख़ुदा के चचा का चेहरा तल्वार से मारा जाएगा ? येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ग़ैरते ईमानी जोश में आ गई और अ़र्ज़ किया : دَعْنِیْ وَ لَاَضْرِبُ عُنُقَ اَبِیْ حُذَیْفَۃَ بِالسَّیْفِ فَوَاللّٰہِ لَقَدْ نَافَقَ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

1 ......دلائل النبوۃ للبیہقی، باب ذکر سبب خروج النبی۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۳۴۔

मुझे इजाज़त दें मैं तल्वार से अबू हुज़ैफ़ा का सर उतार दूंगा। ख़ुदा की क़सम ! येह मुनाफ़िक़ हो गया है।" उस वक़्त तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जज़्बात में आ कर येह अल्फ़ाज़ कह दिये थे लेकिन जब बा'द में उन्हें एह़सास हुवा तो फ़रमाया करते थे :

وَاللّٰہِ مَا اَنَا بِآمِنٍ مِنْ تِلْکَ الْکَلِمَۃِ الَّتِیْ قُلْتُ یَوْمَئِذٍ وَلَا اَزَالُ مِنْہَا خَائِفًا اِلَّا اَنْ یُّکَفِّرَھَا اللّٰہُ عَزَّوَجَلَّ عَنِّیْ بِالشَّھَادَۃِ

"या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उस दिन जो मैं ने येह अल्फ़ाज़ कह दिये थे तब से मुझे सुकून नहीं मिला और हमेशा ख़ौफ़ज़दा रहता हूं, अलबत्ता अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस के कफ़्फ़ारे में मुझे शहादत अ़ता फ़रमाए तो बात बन सकती है। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह दुआ़ क़बूल हुई और आप ख़िलाफ़ते सिद्दीके़ अक्बर में मुसैलमा कज़्ज़ाब के ख़िलाफ़ लड़ी गई जंग "जंगे यमामा" में शहीद हो गए।"

अ़ल्लामा इब्ने इस्ह़ाक़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की रिवायत में येह भी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब को "अबुल बुख़्तरी" के क़त्ल से इस लिये रोका था कि उस ने मक्कए मुकर्रमा में कुफ़्फ़ार को जंगे बद्र पर जाने से बाज़ रखने की कोशिश की थी, उस ने कभी आप को तक्लीफ़ न दी थी और न ही उस की कोई ना पसन्दीदा बात कभी आप तक पहुंची।[1]

एक लत़ीफ़ नुक्ता और शाने फ़ारूके़ आ'ज़म

.....पीछे इस बात का ज़िक्र किया गया है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जब येह ख़बर मिली कि कुफ़्फ़ारे मक्का जंग के लिये मक्कए मुकर्रमा से निकल चुके हैं तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मश्वरा किया कि जंग के लिये पेश क़दमी करनी चाहिये या नहीं ? तो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने इ़श्क़ो मह़ब्बत से भरपूर जवाब दिया जिसे सुन कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का रुख़े रौशन जग मगा उठा। येही वज्ह थी कि अब तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के अन्दर एक ऐसा वलवला और जज़्बा पैदा हो चुका था जो जंग के बा'द ही ठन्डा होता, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان इन्ही जज़्बात में थे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ वग़ैरा के क़त्ल से मन्अ़ फ़रमाया जो उस वक़्त कुफ़्फ़ार के साथ थे। चूंकि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पहले हुक्म की ता'मील के लिये बेताब थे इस लिये उस दूसरे हुक्म की ह़िक्मते अ़मली को बा'ज़

---

1 .....مستدرک حاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، ذکر دعاء ابی حذیفۃ لشھادتہ، ج ۴، ص ۲۳۹، حدیث: ۵۰۴۲۔

सह़ाबा न समझ सके। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुज़ैफ़ा رضی اللہ تعالی عنہ का जवाब भी इन्हीं जज़्बात का पेश ख़ैमा था लेकिन रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم के बिल्कुल क़रीब रहने वाले सह़ाबए किराम علیہم الرضوان जैसे सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالی عنہ व सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالی عنہ उस ह़िक्मते अ़मली को फ़ौरन समझ गए। लिहाज़ा सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم ने इस बात का तदारुक फ़रमाने के लिये ब ज़ाते ख़ुद सय्यिदुना अबू हुज़ैफ़ा رضی اللہ تعالی عنہ से कुछ न इरशाद फ़रमाया बल्कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالی عنہ से इस बात को इरशाद फ़रमाया ताकि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالی عنہ अपनी ग़ैरते ईमानी का मुज़ाहरा करें और सय्यिदुना अबू हुज़ैफ़ा رضی اللہ تعالی عنہ के सामने येह बात वाज़ेह़ हो कि जब सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالی عنہ जैसे ग़ैरत मन्द सह़ाबी ने **अल्लाह** عزوجل के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم के फ़रमान पर कोई इज़्हारे ख़याल नहीं किया तो यक़ीनन इस में कोई बहुत बड़ी ह़िक्मत पिन्हां है, लिहाज़ा इस से बाज़ रहना चाहिये। येही वज्ह थी कि जब बा'द में सय्यिदुना अबू हुज़ैफ़ा رضی اللہ تعالی عنہ को वोह बात समझ में आ गई तो अपने कलाम पर अफ़्सोस का इज़्हार करते हुवे शहादत की तमन्ना किया करते थे। इस वाक़िए में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالی عنہ की और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुज़ैफ़ा رضی اللہ تعالی عنہ की चन्द वुजूह से शान ज़ाहिर होती है।

✿.....**अल्लाह** عزوجل के प्यारे ह़बीब صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم ने अपने चचा को क़त्ल न करने की ह़िमायत में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالی عنہ को आगे पेश किया।

✿.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالی عنہ ने सिर्फ़ और सिर्फ़ रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم के मलाल का लिह़ाज़ किया और इस के लिये अपनी ग़ैरते ईमानी का मुज़ाहरा किया वरना आप ही थे जिन्हों ने कुफ़्फ़ार से जंग के बा'द क़ैदियों को क़त्ल करने का मश्वरा दिया और इस को ताईदे क़ुरआनी ह़ासिल हुई।

✿.....सय्यिदुना अबू हुज़ैफ़ा رضی اللہ تعالی عنہ अपने जज़्बात की तलाफ़ी में जो दुआ़ मांगा करते थे वोह रब عزوجل ने पूरी फ़रमाई और आप को शहादत नसीब हो गई। रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم के तमाम सह़ाबए किराम علیہم الرضوان पर **अल्लाह** عزوجل की करोड़ों रह़मतें नाज़िल हों।

اٰمین بجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم

फ़ारूक़े आ'ज़म ने अपने मामूं को क़त्ल किया

इसी जंगे बद्र में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने मामूं आ़स बिन हिशाम को क़त्ल किया, और क़त्ल करने में मामूं की रिश्तेदारी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये मानेअ़ न हुई।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान में कुरआने पाक की येह आयते मुबारका नाज़िल हुई :

﴿لَا تَجِدُ قَوْمًا یُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِ یُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ لَوْ كَانُوْۤا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِیْرَتَهُمْؕ اُولٰٓىٕكَ كَتَبَ فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْاِیْمَانَ وَ اَیَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُؕ وَ یُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاؕ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُؕ اُولٰٓىٕكَ حِزْبُ اللّٰهِؕ اَلَاۤ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ۠ (۲۲)﴾

(پ۲۸، المجادلۃ: ۲۲)

''**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम न पाओगे उन लोगों को जो यक़ीन रखते हैं **अल्लाह** और पिछले दिन पर कि दोस्ती करें उन से जिन्हों ने **अल्लाह** और उस के रसूल से मुख़ालफ़त की अगर्चे वोह उन के बाप या बेटे या भाई या कुम्बे वाले हों येह हैं जिन के दिलों में **अल्लाह** ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी त़रफ़ की रूह़ से उन की मदद की और उन्हें बाग़ों में ले जाएगा जिन के नीचे नहरें बहें उन में हमेशा रहें **अल्लाह** उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** से राज़ी येह **अल्लाह** की जमाअ़त है सुनता है **अल्लाह** ही की जमाअ़त कामयाब है।

इस आयते मुबारका में लफ़्ज़ ''اَوْ عَشِیْرَتَهُمْ'' अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में नाज़िल हुवा है।[1]

फ़ारूक़ी क़बीले के कुफ़्फ़ार का बद्र में शरीक न होना

जंगे बद्र में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की त़रफ़ से तक़रीबन तमाम क़बाइल के अफ़राद ने शिर्कत की लेकिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़बीले में से आप के मामूं आ़स बिन हिशाम बिन मुग़ीरा के इ़लावा किसी फ़र्द ने भी कुफ़्फ़ार की त़रफ़ से शिर्कत न की, हो सकता है कि आप के क़बीले वाले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ग़ैरते ईमानी और रो'ब व दबदबे की वज्ह से शामिल न हुवे हों।

चुनान्चे, अ़ल्लामा इब्ने जरीर त़बरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं :

---

1 ......روح البیان، پ۲۸، المجادلۃ، تحت الآیۃ: ۲۲، ج۹، ص ۴۱۳۔

وَلَمْ يَكُنْ بَقِيَ مِنْ قُرَيْشٍ بَطَنٌ اِلَّا نَفَرٌ مِّنْهُمْ نَاسٌ اِلَّا بَنِي عَدِيِّ بْنِ كَعْبٍ لَمْ يَخْرُجْ مِنْهُمْ رَجُلٌ وَاحِدٌ

"या'नी जंगे बद्र में क़बाइले क़ुरैश में से कोई क़बीला ऐसा न था जिस के अफ़राद शरीक न हुवे हों मा सिवा बनी अ़दी बिन का'ब के कि इस क़बीले का एक फ़र्द भी जंग के लिये न निकला।"(1)

फ़ारूक़ी क़बीले के मुसलमानों की बद्र में शिर्कत

इस ग़ज़्वए बद्र में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़बीले या उन के ह़लीफ़ क़बीले में से जिन सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने शिर्कत की उन की ता'दाद तक़रीबन 14 है। तमाम के अस्मा दर्जे ज़ैल हैं :

- सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बड़े भाई ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ।
- ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सुराक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ।
- ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन सुराक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ। (येह दोनों भी भाई हैं)
- ह़ज़रते सय्यिदुना वाक़िद बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ।
- ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ौली बिन अबी ख़ौली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ।
- ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अबी ख़ौली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ।
- ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ।
- ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन बुकैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ।
- ह़ज़रते सय्यिदुना आ़क़िल बिन बुकैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ।
- ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन बुकैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ।
- ह़ज़रते सय्यिदुना इयास बिन बुकैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ।
- ह़ज़रते सय्यिदुना मुअ़व्विज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ।
- ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ।
- ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ।(2)

---

1 .....تاریخ طبری، ذکر وقعۃ بدر الکبری، ج ۲، ص ۲۹۔

2 .....البدایۃ والنھایۃ، ج ۳، ص ۸۸ تا ۹۴، الاصابۃ، عفراء بنت عبید۔۔۔الخ، ج ۸، ص ۲۴۰، الرقم: ۱۱۴۸۵۔
اسد الغابۃ، حرف العین، ج ۷، ص ۲۱۳، الرقم: ۷۱۰۵۔

ग़ज़वए बद्र में फ़ारूक़े आ'ज़म का अ़ज़ीम शरफ़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ग़ज़्वए बद्र में एक अ़ज़ीम शरफ़ येह भी ह़ासिल हुवा कि मुसलमानों की त़रफ़ से आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़लीफ़ क़बीले के एक ही घर के सात भाई इकठ्ठे जंगे बद्र में शरीक हुवे। मज़्कूरए बाला नामों में आख़िरी सात नाम इन्ही भाइयों के हैं। अलबत्ता येह सात भाई अख़्याफ़ी या'नी मां शरीक भाई हैं कि इन की वालिदए माजिदा का नाम ह़ज़रते सय्यिदतुना इफ़रा बिन्ते उ़बैद अन्सारिय्या नजारिय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہا है, पहले शोहर ह़ारिस बिन रिफ़ाआ़ अन्सारी की वफ़ात के बा'द बुकैर बिन अ़ब्दे यालील के निकाह़ में आईं। बुकैर बिन अ़ब्दे यालील से उन के हां चार बेटे पैदा हुवे जिन के अस्मा येह हैं :

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना इयास बिन बुकैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ (2) ह़ज़रते सय्यिदुना आ़क़िल बिन बुकैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ
(3) ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन बुकैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ (4) ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन बुकैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

इन से क़ब्ल ह़ारिस बिन रिफ़ाआ़ से आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہا के तीन बेटे थे, जिन के अस्मा येह हैं :

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना मुअ़व्विज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ (2) ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ
(3) ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہا के येह सातों बेटे जंगे बद्र में शरीक हुवे, और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये येह एक अ़ज़ीम शरफ़ है नीज़ येह अम्र अ़जाइबात में से है क्यूंकि इन के इ़लावा कोई और सात भाई जंगे बद्र में मौजूद न थे।[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म के साथ मलाइका की रफ़ाक़त

ग़ज़्वए बद्र के मौक़अ़ पर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह भी सआ़दत ह़ासिल हुई कि **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से मदद के लिये आने वाले मलाइका की आप को रफ़ाक़त ह़ासिल हुई। चुनान्चे,

1 .....الاصابة، کتاب النساء، حرف العین المھملة، ج۸، ص ۲۴۰، الرقم: ۱۱۴۸۵، البدایة والنھایة، ج۳، ص ۹۰۔

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा ((كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم)) फ़रमाते हैं कि ग़ज़्वए बद्र के मौक़अ़ पर ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ ((رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا)) से इरशाद फ़रमाया : "तुम में से एक के साथ जिब्रील (عَلَيْهِ السَّلَام) और एक के साथ मीकाईल (عَلَيْهِ السَّلَام) हैं।"[1]

बद्र के सब से पहले शहीद फ़ारूके़ आ'ज़म के ग़ुलाम थे

ग़ज़्वए बद्र में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को येह भी अ़ज़ीम सआ़दत ह़ासिल हुई कि मुसलमानों की त़रफ़ से जिस सह़ाबी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने सब से पहले जामे शहादत नोश किया वोह आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के ग़ुलाम "मिह्जअ़" थे। ह़ज़रते अ़ल्लामा इमाम मोह़्युद्दीन शरफ़ नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "मिह्जअ़ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के ग़ुलाम हैं और मुसलमानों में से येह वोह पहले सह़ाबी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हैं जो बद्र के दिन शहीद हुवे, इस त़रह़ कि येह दो सफ़ों के दरमियान में थे इन्हें एक तीर आ कर लगा और जामे शहादत नोश कर लिया और येह यमनी सह़ाबी थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि येह आयते मुबारका इन्ही ह़ज़रते मिह्जअ़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه, ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल, सय्यिदुना सुहैब, सय्यिदुना ख़ब्बाब, सय्यिदुना अ़म्मार, सय्यिदुना उ़तबा बिन ग़ज़्वान, सय्यिदुना औस बिन ख़ौली, सय्यिदुना आ़मिर बिन अबी फ़ुहैरा (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) के बारे में नाज़िल हुई :

﴿وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ؕ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝﴾ (پ۷، الانعام: ۵۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और दूर न करो उन्हें जो अपने रब को पुकारते हैं सुब्ह़ और शाम उस की रिज़ा चाहते तुम पर उन के ह़िसाब से कुछ नहीं और उन पर तुम्हारे ह़िसाब से कुछ नहीं फिर उन्हें तुम दूर करो तो येह काम इन्साफ़ से बईद है।"

इस आयते मुबारका का शाने नुज़ूल कुछ यूं है कि "कुफ़्फ़ार की एक जमाअ़त दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आई उन्हों ने देखा कि

[1] ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الفضائل، ماذکر فی ابی بکر، ج۷، ص۴۷۵، حدیث: ۳۲ مختصراً۔

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के गिर्द ग़रीब सहाबा की एक जमाअ़त हाज़िर है जो अदना दरजे के लिबास पहने हुवे हैं, येह देख कर वोह कहने लगे कि हमें इन लोगों के पास बैठते शर्म आती है, अगर आप इन्हें अपनी मजलिस से निकाल दें तो हम आप पर ईमान ले आएं और आप की ख़िदमत में हाज़िर रहें, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस को मन्ज़ूर न फ़रमाया। इस पर येह आयत नाज़िल हुई।"[1]

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म के ग़ुलाम का ए'ज़ाज़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ग़ुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना मिह्जअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बद्र के दिन सब से पहले जामे शहादत नोश किया तो सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के लिये इरशाद फ़रमाया : سَیِّدُ الشُّھَدَاءِ مِھْجَع وَھُوَ اَوَّلُ مَنْ یُّدْعٰی اِلٰی بَابِ الْجَنَّةِ مِنْ ھٰذِہِ الْاُمَّةِ "या'नी मिह्जअ़ शुहदा के सरदार हैं और मेरी उम्मत में क़ियामत के दिन जिसे सब से पहले जन्नत के दरवाज़े की त़रफ़ बुलाया जाएगा वोह येही हैं।"[2]

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म के दामाद का ए'ज़ाज़

इसी ग़ज़्वए बद्र में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दामाद और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बेटी उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पहले शोहर ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा सहमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी शरीक थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जंगे उहुद में ज़ख़्म लगे थे और वोही ज़ख़्म आप के इन्तिक़ाल का सबब बने।[3]

बद्र के क़ैदियों के बारे में फ़ारूके़ आ'ज़म की राए

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब जंगे बद्र में सत्तर काफ़िर क़ैद कर के ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में लाए गए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के मुतअ़ल्लिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मश्वरा त़लब फ़रमाया :

---

1 ......تهذیب الاسماء، مهجع، ج۲، ص۴۱۸؛ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 7, अल अन्आ़म : 52

2 ......روح المعانی، پ۲۰، ج۲۰، ص۴۵۶، تحت الآیة:۲، تفسیر خازن، پ۲۰، ج۳، ص۴۴۵، تحت الآیة:۲۔

3 ......اسد الغابة، خنیس بن حذافة، ج۲، ص۱۸۱، الاصابة، خنیس بن حذافة، ج۲، ص۲۹۰، الرقم:۲۲۹۹۔

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह तमाम क़ैदी हमारे मामूं, रिश्तेदारों और भाइयों की औलाद हैं, मेरी राए में इन्हें फ़िदया ले कर छोड़ दिया जाए कि इस त़रह़ मुसलमानों को माली क़ुव्वत ह़ासिल होगी और फ़िदया लेने की वज्ह से हो सकता है कि इन के दिल नर्म पड़ जाएं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन्हें हिदायत अ़त़ा फ़रमाए और येह मुसलमान हो जाएं।"

जब कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी राए तो येह है कि येह मुशरिकीन के सरदार, उन के पेश्वा और सर परस्त हैं इन की गर्दनें उड़ाएं। ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़क़ील पर और ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़ब्बास पर और मुझे मेरे रिश्तेदारों पर मुक़र्रर कीजिये कि उन की गर्दनें मार दें। ताकि वाज़ेह़ हो जाए कि हमारे दिलों में मुशरिकीन की मह़ब्बत नहीं।"

बहर ह़ाल रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए को पसन्द किया इसी पर इत्तिफ़ाक़ हो गया, और उन क़ैदियों से फ़िदया ले लिया।[1]

अशरफ़ुल उ़लमा, शैख़ुल ह़दीस अ़ल्लामा मुह़म्मद अशरफ़ सियालवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی यहां एक नुक्ता बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस मश्वरे पर ए'तिराज़ नहीं किया और इस इक़्दाम से मा'ज़िरत भी नहीं की बल्कि फ़क़त़ बारगाहे रिसालत से इशारे के मुन्तज़िर थे ह़ालांकि पहले भी अपने काफ़िर रिश्तेदारों को क़त्ल करते रहे थे मगर ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए को तरजीह़ दी और ज़ियादा मुनासिब ख़याल फ़रमाया। फिर इन मुख़्तलिफ़ आरा पर रद्दे अ़मल ज़ाहिर करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बा'ज़ बन्दों के दिलों को मख्खन से भी ज़ियादा नर्म बना दिया है और बा'ज़ के दिलों को पथ्थर से भी ज़ियादा सख़्त बना दिया है, ऐ अबू बक्र ! तुम्हारा ह़ाल रिक़्क़ते क़ल्बी और मुलाइमत के लिह़ाज़ से ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام की त़रह़ है जिन्हों ने कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन की तकालीफ़ बरदाश्त करते हुवे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ किया था :

---

1 ......مسند امام احمد، مسند عمر بن الخطاب، ج ۱، ص ۷۳، حدیث: ۲۰۸ مختصراً۔

﴿فَمَنْ تَبِعَنِیْ فَاِنَّهٗ مِنِّیْۚ وَ مَنْ عَصَانِیْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ﴾ (پ۱۳، ابراھیم: ۳۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तो जिस ने मेरा साथ दिया वोह तो मेरा है और जिस ने मेरा कहा न माना तो बेशक तू बख़्शने वाला मेहरबान है।"

ऐ उ़मर ! तुम्हारा ह़ाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल के दुश्मनान के ह़क़ में शिद्दत व सख़्ती के लिहाज़ से ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام की त़रह़ है, जिन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ किया था :

﴿رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِیْنَ دَیَّارًا﴾ (پ۲۹، نوح: ۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ मेरे रब ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई बसने वाला न छोड़।"[1]

लेकिन बा'द अज़ां येह आयते मुबारका अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए की मुवाफ़िक़त में नाज़िल हो गई :

﴿مَا كَانَ لِنَبِیٍّ اَنْ یَّكُوْنَ لَهٗۤ اَسْرٰى حَتّٰى یُثْخِنَ فِی الْاَرْضِؕ تُرِیْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْیَاۖ وَ اللّٰهُ یُرِیْدُ الْاٰخِرَةَؕ وَ اللّٰهُ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ﴾ (پ۱۰، الانفال: ۶۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "किसी नबी को लाइक़ नहीं कि काफ़िरों को ज़िन्दा क़ैद करे जब तक ज़मीन में उन का ख़ून ख़ूब न बहाए तुम लोग दुन्या का माल चाहते हो और अल्लाह आख़िरत चाहता है और अल्लाह ग़ालिब ह़िक्मत वाला है।"[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

وَافَقْتُ رَبِّي فِي ثَلَاثٍ فِي مَقَامِ اِبْرَاهِيمَ وَفِي الْحِجَابِ وَفِي أُسَارَى بَدْرٍ

"या'नी तीन बातों में रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मेरी मुवाफ़िक़त हुई : मक़ामे इब्राहीम को जाए नमाज़ बनाने, मुसलमान औ़रतों के पर्दे और बद्र के क़ैदियों के बारे में।"[3]

रसूलुल्लाह का बद्र के मुर्दा कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से ख़िताब

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ज़वए बद्र के इख़्तिताम के बा'द कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के जो लोग क़त्ल

1.....सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, स. 34 मुलख़्ख़सन।

2.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 10, अल अन्फ़ाल : 67।

3.....مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، من فضائل عمر، ص۱۳۰۶، حدیث: ۲۴۔

हुवे थे उन की लाशें जम्अ़ कर के एक कुंवें में डालने का हुक्म दिया। रसूले अकरम शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दते करीमा थी जब किसी मक़ाम को फ़त्ह़ फ़रमाते तो वहां तीन दिन क़ियाम फ़रमाते। यहां से तशरीफ़ ले जाते वक़्त उस कुंवें पर तशरीफ़ ले गए जिस में काफ़िरो की लाशें पड़ी थीं और उन्हें उन के नाम, उन के वालिद के नाम के साथ आवाज़ दे कर इरशाद फ़रमाया : يَا فُلَانُ بْنَ فُلَانٍ وَيَا فُلَانُ بْنَ فُلَانٍ اَيَسُرُّكُمْ اَنَّكُمْ اَطَعْتُمُ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّا قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا "या'नी ऐ फ़ुलां बिन फ़ुलां ! और ऐ फ़ुलां बिन फ़ुलां ! क्या अब तुम्हें येह पसन्द है कि तुम ने **अल्लाह** और उस के रसूल की इत़ाअ़त की होती। बहर ह़ाल हम ने उस वा'दे को सच्चा पाया जो हमारे रब ने हम से फ़रमाया था, क्या तुम ने भी उस वा'दे को सच्चा पाया जो तुम्हारे रब ने तुम से किया था ?" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने येह सुन कर अ़र्ज़ की : يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مَا تُكَلِّمُ مِنْ اَجْسَادٍ لَا اَرْوَاحَ لَهَا या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप क्या इन बे जान जिस्मों से कलाम फ़रमा रहे हैं ?" इरशाद फ़रमाया : وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهٖ مَا اَنْتُمْ بِاَسْمَعَ لِمَا اَقُوْلُ مِنْهُمْ "या'नी ऐ उ़मर ! उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! जो कुछ मैं कह रहा हूं उसे तुम कुछ इन से ज़ियादा नहीं सुनते।" (मगर इन्हें त़ाक़त नहीं कि मुझे लौट कर जवाब दें।)[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म इख़्तियाराते मुस्त़फ़ा के क़ाइल थे

۞.....**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की येह आ़दते मुबारका थी कि आप सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुख़्तलिफ़ सुवालात करते रहते थे, जिस से न सिर्फ़ आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को बारगाहे रिसालत से इ़ल्मी फ़ैज़ान मिलता बल्कि बारगाहे रिसालत में मौजूद दीगर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان भी फ़ैज़ाने रिसालत से फ़ैज़याब होते। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के मुर्दों के बारे में सुवाल करना इसी बिना पर था।

۞.....मज़्कूरए बाला रिवायत से येह बात वाज़ेह़ होती है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه इख़्तियाराते मुस्त़फ़ा के क़ाइल थे और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का येह अ़क़ीदा था कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बे शुमार इख़्तियारात अ़त़ा

---

1 ......بخاری، کتاب المغازی، باب قتل ابی جهل، ج ۳، ص ۱۱، حدیث: ۳۹۷۶ مختصرا، मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 269

फ़रमाए हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुर्दों की समाअ़त का सुवाल इस लिये किया था ताकि दीगर सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को भी मा'लूम हो जाए कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बे शुमार इख़्तियारात अ़त़ा फ़रमाए हैं। इस बात पर कई क़राइन मौजूद हैं। मसलन :

.....ग़ज़्वए बद्र में जो मुसलमान ब नफ़्से नफ़ीस लड़े थे उन की ता'दाद तीन सौ पांच थी। जब कि उन के मुक़ाबले में कुफ़्फ़ार की ता'दाद तीन चार गुना ज़ियादा थी, मुसलमानों के पास जंगी आलात न होने के बराबर थे, जब कि कुफ़्फ़ार जंगी आलात से लैस थे, मुसलमानों के मुक़ाबले में कुफ़्फ़ार के लश्कर में जंगी महारत रखने वाले लोग भी बहुत ज़ियादा थे, इन तमाम बातों के बा वुजूद اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुसलमानों को अ़ज़ीमुश्शान फ़त्ह़ ह़ासिल हुई, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नाम का बोल बाला हुवा, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़्दीक ग़ज़्वए बद्र की येह फ़त्ह़ ही इस बात की दलील थी कि रब عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ास मक़ामो मर्तबा अ़त़ा फ़रमाया है और ऐसे बे शुमार इख़्तियारात अ़त़ा फ़रमाए हैं जिन की बदौलत क़लील मुसलमान कसीर काफ़िरों पर ग़ालिब आ गए।

.....ग़ज़्वए बद्र में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुसलमानों की मदद अपने फ़िरिश्तों के ज़रीए फ़रमाई, येह बात अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इ़ल्म में थी जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये वाज़ेह़ दलील थी कि रब عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ुसूसी मक़ामो मर्तबा और अ़ज़ीमुश्शान इख़्तियारात अ़त़ा फ़रमाए हैं।

.....ख़ुद ग़ज़्वए बद्र में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कई मो'जिज़ात सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इ़ल्म में आए। "मसलन ❁ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कंकरियों की एक मुठ्ठी ली और तीन बार फ़रमाया : "चेहरे बिगड़ गए।" फिर उसे कुफ़्फ़ार की जानिब फेंक दिया, उन्ही कंकरियों की बदौलत वोह फ़रार हो गए। ❁ कुफ़्फ़ार की मदद के लिये शैत़ान अपने लश्कर समेत आया लेकिन फ़िरिश्तों के नुज़ूल से डर कर ख़ाइबो ख़ासिर हो कर भाग गया। ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़काशा बिन मेह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तल्वार टूट गई तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें खजूर की एक शाख़ अ़त़ा फ़रमाई जो उन के हाथ में आते ही तेज़ तल्वार बन गई। ❁ इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ में भी खजूर की शाख़ तल्वार बन गई।

❁ हज़रते सय्यिदुना क़तादा बिन नो'मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आंख ज़ख़्मी हो गई, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस पर अपना दस्ते अक़्दस फेरा तो फ़िलफ़ोर ठीक हो गई। ❁ हज़रते सय्यिदुना मुअ़व्विज़ बिन इफ़रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बाज़ू कट गया तो ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस पर अपना लुआ़बे दहन लगाया, वोह फ़िलफ़ौर ठीक हो गया।"

इन तमाम मो'जिज़ात का इ़ल्म होने के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से येह सुवाल करना कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप इन बिग़ैर रूह़ के काफ़िरों से ख़िताब कर रहे हैं ? यक़ीनन इस बात पर दलालत करता है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह अ़क़ीदा था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ुसूसी मक़ामो मर्तबा और अ़ज़ीमुश्शान इख़्तियारात अ़ता फ़रमाए हैं, और इन के लिये उन मुर्दों से कलाम करना कोई बड़ी बात नहीं है।

.....ग़ज़्वए बद्र से क़ब्ल इन मो'जिज़ात के इ़लावा भी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कई मो'जिज़ात दिखाए जो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये इस बात पर वाज़ेह़ दलाइल थे कि रब عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ुसूसी मक़ामो मर्तबा और अ़ज़ीमुश्शान इख़्तियारात अ़ता फ़रमाए हैं।

.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ऐसी क़ुदरते कामिला अ़ता फ़रमाई है कि वोह दूरो नज़्दीक से पुकारने वालों की आवाज़ सुन लेते हैं, येह सिफ़त आप को अपनी ह़याते ज़ाहिरी में भी ह़ासिल थी और अब भी ह़ासिल है, इसी त़रह़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तवस्सुल से औलियाए कामिलीन को भी येह सिफ़त ह़ासिल है बल्कि तमाम मुसलमानों के लिये भी उन की क़ब्रों के पास सुनना साबित है। ख़ुद अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इख़्तियाराते मुस्त़फ़ा के साथ साथ मुर्दों के समाअ़ के भी क़ाइल थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मश्हूर करामत है कि आप बा'दे इन्तिक़ाल एक नौजवान की क़ब्र पर तशरीफ़ ले गए और उस से कलाम फ़रमाया।(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म की बक़ीउ़ल ग़रक़द ह़ाज़िरी

.....ह़ज़रते अ़ल्लामा इमाम इब्ने अ़ब्दुल बर मालिकी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रिवायत करते हैं कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ "बक़ीउ़ल

1.....तफ़्सीली वाक़िआ़ पढ़ने के लिये इसी किताब का बाब "करामाते फ़ारूक़े आ'ज़म" स. 624 का मुत़ालआ़ कीजिये।

ग़रक़द'' क़ब्रिस्तान तशरीफ़ ले गए और वहां क़ब्र वालों को सलाम करते हुवे यूं इरशाद फ़रमाया :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ اَخْبَارٌ مَّا عِنْدَنَا اَنَّ نِسَاءَ كُمْ قَدْ تَزَوَّجْنَ وَدُوْرَكُمْ قَدْ سُكِنَتْ وَاَمْوَالُكُمْ قَدْ قُسِمَتْ

''या'नी तुम पर सलामती हो ऐ क़ब्र वालो ! हमारे पास तुम्हारे लिये येह ख़बरें हैं कि तुम्हारी बीवियों ने दूसरे निकाह़ कर लिये, तुम्हारे घरों में दीगर लोग रिहाइश पज़ीर हो गए और तुम्हारे अमवाल तक़्सीम हो गए।'' तो उन क़ब्र वालों की त़रफ़ से हातिफ़े ग़ैबी से आवाज़ आई :

يَا عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ اَخْبَارٌ مَّا عِنْدَنَا اَنَّ مَا قَدِمْنَا وَجَدْنَا وَمَا اَنْفَقْنَا فَقَدْ رَبِحْنَا وَمَا خَلَّفْنَا فَقَدْ خَسِرْنَاهُ

''या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! हमारे पास आप लोगों के लिये येह ख़बरें हैं कि जो हम ने आख़िरत के लिये जम्अ़ किया था वोह हम ने पा लिया और जो राहे ख़ुदा में ख़र्च किया था उस का नफ़्अ़ ह़ासिल कर लिया और जो दुन्या में ही छोड़ दिया था उस का कोई फ़ाइदा नहीं हुवा।''[1]

क्या मुर्दे सुनते हैं........?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाज़ेह़ रहे कि बर्ज़ख़ी (क़ब्रो ह़श्र) की ज़िन्दगी दुन्यावी ज़िन्दगी के मुक़ाबले में बहुत ज़ियादा फ़र्क़ वाली है, मरने के बा'द मुर्दे की क़ुव्वते समाअ़त वग़ैरा दुन्या से भी ज़ियादा तेज़ हो जाती है, मुर्दों के सुनने से मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीसे मुबारका ह़द्दे तवातुर तक पहुंची हुई हैं। ह़ुसूले बरकत के लिये समाए़ मौता पर फ़क़त़ तीन अह़ादीस पेशे ख़िदमत हैं :

(1).....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اَلْعَبْدُ اِذَا وُضِعَ فِي قَبْرِهِ وَتَوَلّٰى وَذَهَبَ اَصْحَابُهُ حَتّٰى اِنَّهُ لَيَسْمَعُ قَرْعَ نِعَالِهِمْ اَتَاهُ مَلَكَانِ فَاَقْعَدَاهُ

''या'नी जब मुर्दे को क़ब्र में लिटा दिया जाता है और उस के साथी लौट कर वापस जाते हैं तो वोह उन के जूतों की आवाज़ तक को सुन रहा होता है, फिर उस के पास दो फ़िरिश्ते आते हैं, उसे उठा कर बिठा देते हैं''........इलख़।[2]

(2).....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ब्रिस्तान तशरीफ़ ले गए और वहां जा कर यूं इरशाद फ़रमाया :

1 ......الاستذكار، كتاب الطهارة، باب جامع الوضوء، ج ١، ص ٢٢٥۔

2 ......بخاری، کتاب الجنائز، باب المیت یسمع خفق النعال، ج ١، ص ٤٥٠، حدیث: ١٣٣٨ مختصراً۔

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ دَارَ قَوْمٍ مُؤْمِنِيْنَ وَاِنَّا اِنْ شَاءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ "या'नी तुम पर सलामती हो ऐ मुसलमानों के घरों वालो ! और अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो अ़न क़रीब हम भी तुम से मिलने वाले हैं।"(1)

(3).....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

مَا مِنْ اَحَدٍ مَرَّ بِقَبْرِ اَخِيْهِ الْمُؤْمِنِ كَانَ يَعْرِفُهُ فِي الدُّنْيَا فَسَلَّمَ عَلَيْهِ اِلَّا عَرَفَهُ وَرَدَّ عَلَيْهِ السَّلَامَ "या'नी जब भी कोई शख़्स अपने किसी मोमिन भाई की क़ब्र के क़रीब से गुज़रता है जिसे वोह दुन्या में जानता था और उसे सलाम करता है तो वोह साह़िबे क़ब्र उसे पहचान लेता है और उस के सलाम का जवाब देता है।"(2)

ग़ैरते फ़ारूक़े आ'ज़म ब मुक़ाबलए दुश्मनाने मह़बूबे आ'ज़म

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़रवा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि (लश्करे कुफ़्फ़ार के दो फ़ौजियों) सफ़्वान बिन उमय्या और उ़मैर बिन वह्ब ने जंगे बद्र में होने वाले कुफ़्फ़ार के नुक़्सानात का आपस में तज़किरा किया तो उ़मैर कहने लगा : "ख़ुदा की क़सम ! तुम ने सच कहा। इन (या'नी अबू जहल वग़ैरा बड़े बड़े कुफ़्फ़ार के जंगे बद्र में क़त्ल हो जाने) के बा'द दुन्या में जीना बेकार है। अगर मुझ पर क़र्ज़ा न होता और बीवी बच्चों के ज़ाएअ़ होने का ख़दशा दामन गीर न होता तो (مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) मैं खुद जा कर मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को क़त्ल (शहीद) कर के आता। मेरे पास तो उन्हें क़त्ल (शहीद) करने की एक मा'क़ूल वज्ह भी है और येह कि मेरा बेटा उन के पास क़ैद है।" सफ़्वान बिन उमय्या ने उ़मैर बिन वह्ब के येह जज़्बात देखे तो उस ने मौक़अ़ ग़नीमत जाना और कहा : "तू अपने क़र्ज़े और बच्चों की फ़िक्र मत कर, तेरा क़र्ज़ा मेरे ज़िम्मे रहा, तेरे बाल बच्चे मेरे बच्चों के साथ रहेंगे, उन की ज़िम्मेदारी मैं लेता हूं मुझे उन्हें पालने में कोई दिक़्क़त नहीं।" उ़मैर बिन वह्ब ने कहा : "तो फिर इस गुफ़्तगू को सीग़ए राज़ में रखना, हम दोनों के इ़लावा किसी तीसरे तक येह बात क़त्अ़न न पहुंचे।" सफ़्वान बिन उ़मय्या ने ह़ामी भर ली और उ़मैर बिन वह्ब को अपनी तल्वार तेज़ करने के साथ ज़ह्र आलूद कर के थमा दी और वोह मदीनए त़य्यिबा आ गया।

जब वोह पहुंचा उसी वक़्त अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कई सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के साथ मस्जिदे नबवी के दरवाज़े पर बैठे जंगे बद्र के वाक़िआ़त का

1 ......مسلم، كتاب الطهارة، باب استحباب اطالة الغرة...الخ، ص ١٥٠، حديث: ٢٤٩ مختصرا۔

2 ......الاستذكار، كتاب الطهارة، باب جامع الوضوء، ج ١، ص ٢٢٥۔

तज़्किरा कर रहे थे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों का ज़िक्र भी कर रहे थे। अचानक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की नज़र उ़मैर बिन वह्ब पर पड़ गई जिस ने मस्जिद के दरवाज़े के सामने आ कर अपना ऊंट बिठाया था नीज़ उस ने अपने गले में तल्वार भी लटका रखी थी। उसे देख कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी बा कमाल फ़िरासत के ज़रीए जान लिया कि मुआ़मला कुछ गड़बड़ है, लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ग़ैरते ईमानी जोश में आ गई और फ़रमाया : هٰذَا الْکَلْبُ عَدُوُّ اللّٰہِ مَا جَاءَ اِلَّا لِشَرٍّ هٰذَا الَّذِیْ حَرَشَ بَیْنَنَا या'नी येह कुत्ता ख़ुदा का दुश्मन उ़मैर बिन वह्ब है जो बड़ा फ़ित्ना ले कर आया है। इसी ने बद्र के दिन हमारे और कुफ़्फ़ार में जंग भड़काई थी।

येह कह कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ किया :

هٰذَا عُمَیْرُ بْنُ وَهْبٍ قَدْ دَخَلَ الْمَسْجِدَ مَعَهُ السَّلَاحُ وَهُوَ الْفَاجِرُ الْغَادِرُ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ لَا تَاْمَنْهُ

"या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह दुश्मने ख़ुदा उ़मैर बिन वह्ब मस्जिद में अस्लेह़ा ले कर आया है और येह फ़ाजिर और ग़द्दार है इसे हरगिज़ अम्न न दीजियेगा।"

फ़रमाया : "उसे मेरे पास ले कर आओ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आए और तल्वार की डोरी जो गले में डाली जाती है उसे पकड़ कर उस के गले में फंदा डाल दिया और सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया कि आप लोग रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास पहुंचें और इस के शर से हि़फ़ाज़त करें क्यूंकि इस से अम्न की कोई उम्मीद नहीं है।" साथ ही उ़मैर बिन वह्ब को खींच कर दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर कर दिया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! इसे छोड़ दो।" फिर फ़रमाया : "ऐ उ़मैर ! मेरे क़रीब आ जाओ।" वोह क़रीब हो गया और ज़मानए जाहिलिय्यत का सलाम करते हुवे बोला : اَنْعِمُوْا صَبَاحاً "या'नी ने'मतों में सुब्ह़ करते रहो।" येह ज़मानए जाहिलिय्यत का सलाम था। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : قَدْ اَکْرَمَنَا اللّٰہُ عَزَّوَجَلَّ عَنْ تَحِیَّتِکَ وَجَعَلَ تَحِیَّتَنَا السَّلَامَ وَهِیَ تَحِیَّةُ اَهْلِ الْجَنَّةِ "या'नी ऐ उ़मैर ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमें तुम्हारे सलाम के बिग़ैर ही इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमाई है और हमें वोह सलाम अ़ता फ़रमाया है जो जन्नत वालों का सलाम है।"

फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह बताओ तुम यहां कैसे आए हो ?" वोह बोला : "उस क़ैदी के लिये आया हूं जो तुम्हारे पास है। उस से अच्छे बरताव का मुतमन्नी हूं।" फ़रमाया : "तो फिर तुम ने गले में तल्वार क्यूं लटका रखी है ?" वोह कहने लगा : "अल्लाह इस

तल्वार का बुरा करे, इस ने हमें आज तक क्या फ़ाइदा दिया है ?" आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सच कहो किस इरादे से आए हो ?" वोह कहने लगा : "सिर्फ़ इसी लिये आया हूं।" आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ैब की ख़बर देते हुवे इरशाद फ़रमाया : فَمَا شَرَطْتَّ لِصَفْوَانِ بْنِ اُمَيَّةَ الْجَمْحِيِّ فِي الْحُجْرِ؟ "क्या तुम ने सफ़्वान बिन उमय्या जमही से बन्द कमरे में कोई मुआहदा नहीं किया ? येह सुन कर उ़मैर बिन वह्ब घबरा गया और कहने लगा कि मैं ने उस से क्या मुआहदा किया है ?" इरशाद फ़रमाया : تَحَمَّلْتَ لَهُ بِقَتْلِيْ عَلٰى اَنْ يُعَوِّلَ بَيْنَكَ وَ يَقْضِيَ دَيْنَكَ وَ اللّٰهُ حَائِلٌ بَيْنَكَ وَ بَيْنَ ذٰلِكَ "या'नी तुम ने उस से मेरे क़त्ल का मुआहदा किया है इस शर्त पर कि वोह तुम्हारे अहलो इयाल की कफ़ालत करेगा और तुम्हारे क़र्ज़ को अदा कर देगा हालांकि तुम दोनों के माबैन होने वाली गुफ़्तगू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इल्म में है।" येह सुन कर उ़मैर बिन वह्ब बोला : "मैं गवाही देता हूं कि आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सच्चे रसूल हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं। या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम आप की आस्मानी ख़बरों को झुटलाया करते थे।"

फिर अ़र्ज़ करने लगा :

اِنَّ هٰذَا الْحَدِيْثَ الَّذِيْ كَانَ بَيْنِيْ وَبَيْنَ صَفْوَانَ فِي الْحُجْرِ كَمَا قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

لَمْ يَطَّلِعْ عَلَيْهِ اَحَدٌ غَيْرِيْ وَ غَيْرَهُ ثُمَّ اَخْبَرَكَ اللّٰهُ بِهٖ فَاٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ سَاقَنِيْ هٰذَا الْمَقَامَ

"या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़्वान और मेरे माबैन जो मुआहदा हुवा था वोह एक बन्द कमरे में था, हम दोनों के सिवा किसी को इस का इल्म नहीं था, लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को उस के बारे में बता दिया पस मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान ले आया और तमाम ता'रीफ़ें उस रब عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मुझे इस मक़ाम पर ला कर खड़ा किया।"

हज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़बूले इस्लाम पर तमाम मुसलमान बहुत खुश हुवे और अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना ईमान अफ़रोज़ तबसेरा करते हुवे इरशाद फ़रमाया : لَخِنْزِيْرٌ كَانَ اَحَبَّ اِلَيَّ مِنْهُ حِيْنَ اطَّلَعَ وَ لَهُوَ الْيَوْمَ اَحَبُّ اِلَيَّ مِنْ بَعْضِ بَنِيَّ "या'नी जब येह उ़मैर बिन वह्ब हालते कुफ़्र में यहां आए थे तो उस वक़्त मेरे नज़्दीक एक ख़िन्ज़ीर इन से ज़ियादा महबूब था और अब क़बूले इस्लाम के बा'द येही उ़मैर बिन वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुझे मेरी औलाद से भी ज़ियादा महबूब हैं।"

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : عَلِّمُوْا اَخَاکُمُ الْقُرْآنَ "या'नी अपने इस भाई को कु़रआन सिखाओ।" और उन का कै़दी भी छोड़ दिया गया। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : قَدْ كُنْتُ جَاهِداً مَا اسْتَطَعْتُ عَلٰى اِطْفَاءِ نُوْرِ اللّٰهِ فَالْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ سَاقَنِيْ هٰذَا الْمَسَاقَ فَلْتَاذَنْ لِيْ فَاَلْحِقُ بِقُرَيْشٍ فَاَدْعُوْهُمْ اِلَى الْاِسْلَامِ لَعَلَّ اللّٰهَ يَهْدِيْهِمْ وَ يَسْتَنْقِذُهُمْ مِّنَ الْهَلَكَةِ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पहले मैं हमेशा इस बात की कोशिश में लगा रहता था कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नूर को बुझा दूं लेकिन तमाम ता'रीफ़ें उस रब عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मुझे इस मक़ाम पर खड़ा कर दिया, अब आप मुझे इस बात की इजाज़त दीजिये कि मैं कु़रैश के पास जाऊं और उन्हें इस्लाम की दा'वत दूं, हो सकता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन में से किसी को हिदायत अ़ता फ़रमाए और उसे हलाकत से बचा ले।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मक्कए मुकर्रमा आ कर इस्लाम की दा'वत देने लगे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ पर कसीर लोगों ने इस्लाम क़बूल किया।(1)

रिवायत से ह़ासिल होने वाले मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला रिवायत से सीरते फ़ारूक़ी के नायाब पहलूओं समेत इ़ल्मो ह़िक्मत के बे शुमार मदनी फूल मिलते हैं, चन्द मदनी फूल पेशे ख़िदमत हैं :

.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़ता से बा कमाल फ़िरासत के मालिक थे, लोगों को देखते ही उन को पहचान लेते थे, बल्कि उन के अ़ज़ाइम को भी जान लेते थे कि फ़ुलां शख़्स किस निय्यत से आया है ?

.....आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दुश्मनों से शदीद बुग़्ज़ और नफ़रत किया करते थे, दीन के दुश्मन आप को एक नज़र न भाते थे, उन को देखते ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ग़ैरते ईमानी जोश में आ जाती।

.....येह भी मा'लूम हुवा कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मह़ब्बत व नफ़रत सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा के लिये होती थी।

---

1 ......معجم کبیر، باب العین، عمیر بن وھب، ج ۱۷، ص ۵۶، حدیث: ۱۱۷۔

.....आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी जान से ज़ियादा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जान अ़ज़ीज़ थी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका की हि़फ़ाज़त करना आप के ईमान की जान थी, येही वज्ह थी कि ख़त़रे की बू मह़सूस करते ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ब ज़ाते ख़ुद सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हि़फ़ाज़त के लिये बारगाहे रिसालत में भेज दिया।

.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तो येह बा कमाल फ़िरासत थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किसी शख़्स के चेहरे को देख कर पहचान लिया करते थे कि वोह किस इरादे से आया है, जब आप पर उस का इरादा ज़ाहिर हुवा जिस का क़रीना उस की तल्वार थी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़ौरन उसे पकड़ कर बारगाहे रिसालत में पेश कर दिया, नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि अगर कोई शख़्स किसी मुअ़ज़्ज़मे दीनी, या शआ़इरे इस्लाम की तौहीन करने के इरादे से उन की त़रफ़ कोई अस्लेह़ा वग़ैरा ले कर बढ़े तो उसे इस से रोका जाएगा, नीज़ उसे पकड़ कर ख़ुद सज़ा देने के बजाए क़ानून के ह़वाले कर दिया जाए कि नुक़्सान पहुंचाने के बा'द पकड़ने से मज़ीद नुक़्सान से बचत तो हो सकती है लेकिन जो नुक़्सान हो गया उस की तलाफ़ी बहुत मुश्किल है।

.....रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका की हि़फ़ाज़त से मुतअ़ल्लिक़ सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुबारक फ़े'ल इस बात पर दलालत करता है कि दुश्मनों और शरीरों के शर से बचाने के लिये छोटों का अपने बुज़ुर्गों के लिये हि़फ़ाज़ती इक़्दामात करना बहुत ज़रूरी है और येह सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सुन्नते मुबारका है।

.....इस मुबारक रिवायत के इब्तिदाई हि़स्से से मा'लूम होता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ग़ज़्वए बद्र में मुसलमानों की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ग़ैबी मदद, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़ात से ज़ाहिर होने वाले मो'जिज़ात और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ग़ज़्वए बद्र में जो बारगाहे रिसालत से इन्आ़मो इकराम मिले उन्हें अपने लिये बाइ़से सआ़दत और बाइ़से फ़ख़्र समझते थे और दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के साथ मिल बैठ कर उन का तज़्किरा भी किया करते और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों को याद किया करते थे।

फ़ारूके़ आ'ज़म के परपोते और ग़ज़वए बद्र का ज़िक्र

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इन सआ़दतों का चर्चा आप की औलाद में भी मुन्तकि़ल होता रहा, यहां तक कि अगर उन के सामने कोई ग़ज़वए बद्र का वाकि़आ़ बयान कर देता तो वोह ख़ुशी से झूम उठते। चुनान्चे, ग़ज़वए बद्र के मशहूर वाकि़आत में एक अ़ज़ीम वाकि़आ़ और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मो'जिज़ा येह भी है कि उस दिन ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा बिन नो'मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आंख ज़ख़्मी हो गई, चोट लगने के बाइ़स वोह अपनी जगह से निकल कर रुख़्सार पर ढलकने लगी, लोगों ने चाहा कि उसे काट डालें लेकिन वोह बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे और शिकायत की तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपनी जगह दबा कर अपना लुआ़बे मुबारक लगा दिया तो वोह आंख फ़िलफ़ौर इस त़रह़ ठीक हो गई कि देखने वाले देख कर हैरान रह जाते और न पहचान पाते कि दोनों आंखों में से सह़ीह़ आंख कौन सी थी ? और ज़ख़्मी आंख कौन सी थी ?

ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की औलाद में से कोई शख़्स अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के परपोते अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जिन्हें "उ़मरे सानी" भी कहा जाता है उन के दरबार में ह़ाज़िर हुवा। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस शख़्स से इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि तुम कौन हो ? वोह शख़्स चूंकि जानता था कि मेरे जद्दे अमजद या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और इन के जद्दे अमजद अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दोनों ग़ज़वए बद्र में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ शरीक थे, लिहाज़ा उस ने फ़िल बदीहा या'नी उसी वक़्त फ़ौरन दो अश्आ़र पढ़ कर अपना तआ़रुफ़ करवाया। वोह अश्आ़र येह हैं :

اَنَا اِبْنُ الَّذِيْ سَالَتْ عَلَى الْخَدِّ عَيْنُهُ
فَرُدَّتْ بِكَفِّ الْمُصْطَفٰى اَحْسَنَ الرَّدِّ

तर्जमा : या'नी मैं उन का बेटा हूं जिन की ग़ज़वए बद्र में रुख़्सार पर आंख बह गई थी, फिर दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक से अपनी जगह निहायत ही ख़ूब सूरती से लौट आई।"

فَعَادَتْ كَمَا كَانَتْ لِاَوَّلِ اَمْرِهَا
فَيَا حُسْنَ مَا عَيْنٍ وَ يَا حُسْنَ مَارَدٍّ

तर्जमा : ''और उस की ऐसी कैफ़िय्यत हो गई जैसी वोह पहली थी, वोह आंख कितनी मुबारक थी जिस ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक के बोसे लिये और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का उस आंख को अपनी पहली वाली ह़ालत पर लौटाना कितना ह़सीन था !''

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शानो अ़ज़्मत, अपने आबाओ अज्दाद के ज़िक्रे ख़ैर, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की नस्ले पाक की त़हारत से भरपूर अश्आ़र सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़ुशी से झूम उठे और उस शख़्स को बहुत से इन्आ़मो इकराम से नवाज़ा । कैसा ह़सीन इम्तिज़ाज है कि यहां ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की औलाद और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की औलाद की इस त़रह़ एक ख़ुश गवार मुलाक़ात हुई । और उस मुबारक अ़ह्द या'नी सिने 23 हिजरी में जब ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिक़ाल हुवा तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ही नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और आप के मां शरीक भाई ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सई़द ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप की क़ब्र में उतरे ।[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़फ़िरत हो । اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾3 हिजरी﴿ ग़ज़वए उहुद और फ़ारूके़ आ'ज़म

.....ग़ज़वए उहुद शव्वालुल मुकर्रम के महीने में पेश आया, तमाम ग़ज़वात से येह ग़ज़वा शदीद और मुश्किलात से भरपूर था, जमहूर उ़लमा का इत्तिफ़ाक़ है कि येह ग़ज़वा शव्वालुल मुकर्रम 3 हिजरी में पेश आया लेकिन इस की तारीख़ में इख़्तिलाफ़ है । उहुद एक मश्हूर और मुबारक पहाड़ है जो मदीनए त़य्यिबा से एक फ़र्सख़ पर वाके़अ़ है, इस पहाड़ के आग़ाज़ और मदीनए मुनव्वरा के बाबुल बक़ीअ़ के दरमियान $2\frac{4}{7}$ मील से कुछ ज़ियादा फ़ासिला है ।[2]

1 ......عمدۃ القاری، کتاب المغازی، ج ۱۲، ص ۲۴، تحت الحدیث: ۳۹۹۷۔

2 ......وفاء الوفاء، الفصل السابع، موقع احد من المدینۃ، ج ۳، ص ۹۲۷۔

येह वोही पहाड़ है जिस के बारे में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اُحُدٌ هٰذَا جَبَلٌ يُحِبُّنَا وَنُحِبُّهٗ ''या'नी उहुद वोह पहाड़ है जो हम से महब्बत करता है और हम उस से महब्बत करते हैं।''(1)

.....सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए उहुद के लिये एक हज़ार अफ़राद ले कर मदीनए मुनव्वरा से रवाना हुवे जिन में मुनाफ़िक़ीन भी शामिल थे लेकिन रईसुल मुनाफ़िक़ीन अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल अपने तीन सौ300 मुनाफ़िक़ साथियों के हमराह रास्ते से ही वापस आ गया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ अब सिर्फ़ सात सौ जां निसार सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان बाक़ी रह गए।(2)

.....मुसलमान सब पैदल थे, लश्करे इस्लाम में सिर्फ़ दो घोड़े थे, एक घोड़ा हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये और दूसरा घोड़ा हज़रते सय्यिदुना अबू बर्दा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه के पास था, नीज़ सौ100 ज़िरह पोश भी थे। जब कि मुशरिकीन की ता'दाद तीन हज़ार3000 थी, उन में सात सौ700 ज़िरह पोश, दो सौ200 घोड़े और तीन हज़ार3000 ऊंट भी थे, इस ग़ज़्वे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मदीनए मुनव्वरा में हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه को अपना नाइब मुक़र्रर फ़रमाया।(3)

.....इसी ग़ज़्वे में एक मौक़अ़ पर मुसलमानों को सख़्त हज़ीमत भी उठानी पड़ी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه को तक़रीबन पचास तीर अन्दाज़ों पर मुक़र्रर फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया : ''दो2 पहाड़ों के दरमियान इस जगह को मत छोड़ना ख़्वाह हम ग़ालिब आएं या मग़्लूब हो जाएं।'' जब कुफ़्फ़ार को शिकस्त हुई तो वोह भाग खड़े हुवे, दौराने जंग हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه और आप के बा'ज़ साथी साबित क़दम रहे और जामे शहादत नौश फ़रमाया और आप के ज़ियादा साथी येह समझ कर कि जंग ख़त्म हो गई है वोह माले ग़नीमत जम्अ़ करने में मसरूफ़ हो गए और हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه जो उस वक़्त मुसलमान नहीं हुवे थे और कुफ़्फ़ार की तरफ़ से लड़ रहे थे पहाड़ के अ़क़ब से मुसलमानों पर हम्ला आवर हो गए और ब ज़ाहिर मुसलमानों को हज़ीमत का सामना करना पड़ा।

---

(1)......بخاری، کتاب الجهاد والسیر، باب فضل الخدمة فی الغزو، ج ۲، ص ۲۷۸، حدیث: ۲۸۸۹ مختصرا۔
عمدة القاری، کتاب المغازی، باب غزوة احد، ج ۱۲، ص ۸۸۔

(2)......عمدة القاری، کتاب المغازی، باب غزوة احد، ج ۱۲، ص ۸۹۔

(3)......طبقات کبری، غزوة رسول الله احدا، ج ۲، ص ۲۸، شرح الزرقانی علی المواهب، غزوة احد، ج ۲، ص ۳۹۸۔

.....इस ग़ज़्वए उहुद में सत्तर सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان ने जामे शहादत नोश फ़रमाया, जिन में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा हज़रते सय्यिदुना अमीरे हम्ज़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡه की शहादत भी है, उन की शहादत पर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि "आप की शहादत से बढ़ कर मेरे लिये और कोई मुसीबत न होगी, इस मक़ाम से बढ़ कर ग़ज़ब नाक मक़ाम पर खड़ा होने का मुझे इस से क़ब्ल इत्तिफ़ाक़ न हुवा।" नीज़ येह भी फ़रमाया कि "फ़िरिश्ते आस्मानों में हज़रते अमीरे हम्ज़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡه को" **रब तआला और उस के रसूल का शेर**" कह कर पुकारते हैं।" आप का एक लक़ब "**सय्यिदुश्शुहदा**" भी है।(1)

.....ग़ज़्वए उहुद में सत्तर अन्सारी और पांच मुहाजिरीन सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان ने जामे शहादत नोश फ़रमाया, मुहाजिरीन में हज़रते सय्यिदुना हम्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श, हज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर, हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन शम्मास رِضۡوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡهِمۡ اَجۡمَعِيۡن के अस्माए मुबारका सरे फ़ेहरिस्त हैं।(2)

इस जंगे उहुद में भी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡه को बड़े बड़े फ़ज़ाइल हासिल हुवे, तफ़्सील दर्जे ज़ैल है।

फ़ारूक़े आ'ज़म ने दुश्मनों को भगा दिया

जंगे उहुद में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡه को एक सआदत येह भी हासिल हुई कि आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡه ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़्वाहिश को पूरा किया और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को मार भगाया। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन इस्हाक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡه का बयान है कि जंगे उहुद के रोज़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان के साथ एक पहाड़ की घाटी में मौजूद थे, जब कि क़ुरैश का एक टोला मुसलमानों को ढूंडता हुवा उसी पहाड़ के ऊपर चढ़ आया। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें अपने से ऊपर देखा तो इस बात को ना पसन्द फ़रमाया और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ करते हुवे अपनी ख़्वाहिश का यूं इज़्हार

---

1 ......سیرۃ ابن ہشام، غزوۃ احد، ج ۲، ص ۸۳۔

2 ......عمدۃ القاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ احد، ج ۱۲، ص ۸۹۔
شرح الزرقانی علی المواھب، غزوۃ احد، ج ۲، ص ۴۴۹، الروض الانف، دفن عبد اللہ ۔۔۔ الخ، ج ۳، ص ۲۸۴۔

फ़रमाया : لَيۡسَ لَهُمۡ اَنۡ يَعۡلُوۡنَا "या'नी येह कुफ़्फ़ार हम से बुलन्द न होने पाएं ।" चुनान्चे, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और दीगर कुछ मुहाजिर सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان उठे और उन्हें पहाड़ से नीचे भगा दिया ।[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म को दिफ़ाई जवाब देने का नबवी हुक्म

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन इस्ह़ाक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि क़बूले इस्लाम से क़ब्ल जब (ह़ज़रते सय्यिदुना) अबू सुफ़्यान (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने मैदाने उहुद से पलटने का इरादा किया तो वोह एक पहाड़ पर चढ़ कर बोले : "जंग एक खेल है, (जिस में हार भी है, और जीत भी) दिन का बदला दिन है, तुम ने बद्र में हमारे सत्तर 70 आदमी मारे और आज हम ने तुम्हारे सत्तर70 आदमी मार (शहीद कर) दिये , हुबल (बुत) का नाम बुलन्द रहे (مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ) ।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : قُمۡ فَاَجِبۡهُ "या'नी ऐ उमर ! उठ कर इसे जवाब दो ।" तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उठे और उसे जवाब देते हुवे इरशाद फ़रमाया : اَللّٰهُ اَعۡلٰى وَاَجَلُّ لَا سَوَاءَ قَتۡلَانَا فِي الۡجَنَّةِ وَقَتۡلَاكُمۡ فِي النَّارِ "या'नी सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही बुलन्द और बुज़ुर्ग व बरतर है, कोई बराबर का बदला नहीं हुवा क्यूंकि हमारे मक़्तूल (शुहदा) जन्नत में हैं और तुम्हारे दोज़ख़ में ।" जब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उसे जवाब दे चुके तो अबू सुफ़्यान ने कहा : "ऐ उ़मर ! इधर आओ ।" रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِئۡتِهٖ فَانۡظُرۡ مَا يَقُوۡلُ "या'नी ऐ उ़मर ! जाओ और सुनो येह क्या कहता है ?" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उस के पास गए तो वोह बोला : "ऐ उ़मर ! तुम्हें ख़ुदा की क़सम देता हूं, बताओ क्या मुह़म्मद (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को हम ने (مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ) ख़त्म (शहीद) कर दिया है ?" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : لَا وَاِنَّهٗ لَيَسۡمَعُ كَلَامَكَ الۡاٰنَ "या'नी ख़ुदा की क़सम ! हरगिज़ नहीं, बल्कि वोह इस वक़्त भी तेरी गुफ़्तगू सुन रहे हैं ।" अबू सुफ़्यान ने कहा : "यक़ीनन तुम मेरे नज़्दीक इब्ने क़िमिआ से ज़ियादा सच्चे हो, जिस ने मुझे कहा है कि मैं ने मुह़म्मद (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को (مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ) क़त्ल कर दिया है ।"[2]

1 ......الكامل في التاريخ، ذكر غزوة احد، ج ٢، ص ٥٢ ـ

2 ......اسد الغابة، عمر بن الخطاب، ج ٤، ص ١٦٥ ـ

फ़ारूक़े आ'ज़म की ग़ैरते ईमानी

एक रिवायत में यूं है कि जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शहादत की ख़बर मश्हूर हो गई और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के साथ पहाड़ के दामन में मौजूद थे तो अबू सुफ़्यान एक ऊंची जगह पर खड़े हो कर यूं पुकारने लगा : اَفِي الْقَوْمِ مُحَمَّدٌ "या'नी क्या तुम में मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) मौजूद हैं ?" रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से इरशाद फ़रमाया : لَا تُجِيبُوهُ "या'नी उसे जवाब न देना ।" उस ने दोबारा सुवाल किया : اَفِي الْقَوْمِ ابْنُ اَبِي قُحَافَةَ क्या इब्ने अबी कुहाफ़ा (या'नी सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़) तुम में मौजूद हैं ? रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से इरशाद फ़रमाया : لَا تُجِيبُوهُ "या'नी उसे जवाब न देना ।" उस ने दोबारा सुवाल किया : اَفِي الْقَوْمِ ابْنُ الْخَطَّابِ "क्या तुम में इब्ने ख़त्ताब (या'नी उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म) मौजूद हैं ?" तो वोह कहने लगा : اِنَّ هَؤُلَاءِ قُتِلُوا فَلَوْ كَانُوا اَحْيَاءً لَاَجَابُوا यक़ीनन येह सारे लोग क़त्ल (शहीद) हो चुके हैं, अगर ज़िन्दा होते तो ज़रूर जवाब देते । अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह सुन कर अपने आप पर क़ाबू न रख सके और जलाल में आ कर इरशाद फ़रमाया : كَذَبْتَ يَا عَدُوَّ اللّٰهِ اَبْقَى اللّٰهُ عَلَيْكَ مَا يُخْزِيكَ "या'नी ओ ख़ुदा के दुश्मन ! तू झूट बोल रहा है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझ पर बाक़ी रखा है उसे जो तुझे ज़लीलो रुस्वा कर देंगे ।" (या'नी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और मैं बिल्कुल ख़ैरिय्यत से हैं ।) फिर वोह कहने लगा : اُعْلُ هُبَلُ "या'नी हुबल बुत का नाम बुलन्द हो" (مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उसे जवाब दो ।" अ़र्ज़ किया : "क्या जवाब दें ?" फ़रमाया : اَللّٰهُ اَعْلَى وَاَجَلُّ "या'नी येह कहो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आ'ला और बुज़ुर्ग व बरतर है ।" अबू सुफ़्यान कहने लगा : لَنَا الْعُزّٰى وَلَا عُزّٰى لَكُمْ "या'नी हमारे लिये मददगार तो उ़ज़्ज़ा बुत है लेकिन तुम्हारा कोई मददगार नहीं ।" रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उसे जवाब दो ।" अ़र्ज़ किया : "क्या जवाब दें ?" फ़रमाया : اَللّٰهُ مَوْلَانَا وَلَا مَوْلَى لَكُمْ "या'नी हमारा मददगार अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है लेकिन तुम्हारा कोई मददगार नहीं ।"(1)

---

(1) ......بخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ احد، ج ۳، ص ۳۴، حدیث: ۴۰۴۳ مختصراً۔

फ़ारूके आ'ज़म रसूलुल्लाह के दिफ़ाई मुशीर हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला दोनों रिवायात से अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कई औसाफ़ और दीगर मदनी फूल ह़ासिल हुवे, जिन की तफ़्सील कुछ यूं है :

.....जब अबू सुफ़्यान ने फ़क़त् रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मौजूदगी की बात की तो सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ामोश रहे लेकिन जैसे ही उस ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सय्यिदुना सिद्दीके अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और आप के विसाल की बात की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रहा न गया और जज़्बए ग़ैरते ईमानी के साथ खड़े हो कर सख़्त अल्फ़ाज़ में जवाब दिया। मा'लूम हुवा कि अपनी ज़ात के मुक़ाबले में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ात को तरजीह़ देना सुन्नते फ़ारूक़ी और ऐ़न ईमान, बल्कि ईमान की जान है और सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह की ज़ात को अपनी ज़ात पर तरजीह़ क्यूं न देते कि येह ईमान अफ़रोज़ तरबिय्यत तो उन्हें बारगाहे रिसालत से ही अ़ता हुई थी। चुनान्चे, एक बार फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया : **يَارَسُوْلَ اللّٰهِ لَاَنْتَ اَحَبُّ اِلَيَّ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ اِلَّا مِنْ نَفْسِي** "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप की ज़ाते मुबारका मुझे हर चीज़ से ज़ियादा मह़बूब है सिवाए मेरी जान के।" इरशाद फ़रमाया : **لَا وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهٖ حَتّٰى اَكُوْنَ اَحَبَّ اِلَيْكَ مِنْ نَفْسِكَ** "नहीं ऐ उ़मर ! उस रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! बात उस वक़्त तक मुकम्मल न होगी जब तक मैं तुम्हारी जान से भी ज़ियादा मह़बूब न हो जाऊं।" सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : **فَاِنَّهُ الْاٰنَ وَاللّٰهِ لَاَنْتَ اَحَبُّ اِلَيَّ مِنْ نَفْسِي** "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अब आप मुझे मेरी जान से भी ज़ियादा मह़बूब हैं।" और इरशाद फ़रमाया : **اَلْاٰنَ يَا عُمَرُ** "या'नी ऐ उ़मर ! अब बात मुकम्मल हो गई।"[1]

अल्लाह की सर ता ब क़दम शान हैं येह
इन सा नहीं इन्सान वोह इन्सान हैं येह
क़ुरआन तो ईमान बताता है इन्हें
और ईमान येह कहता है मेरी जान हैं येह

1.....بخاری، کتاب الایمان والنذور، کیف کانت یمین النبی۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۲۸۳، حدیث: ۶۶۳۲۔

.....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका से येह वालिहाना महृब्बत आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी के वक्त भी देखने में आई की जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाले ज़ाहिरी हुवा तो येही सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बाहर तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : وَاللّٰہِ مَامَاتَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ "या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल नहीं हुवा।"[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तमाम उम्मते मुस्लिमा का इस बात पर इजमाअ़ है कि अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को वा'दए इलाहिय्या के मुताबिक़ फ़क़त् एक आन के लिये मौत आई और फिर दोबारा उन के अज्सामे मुबारका में रूह़ को लौटा दिया गया। और तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपनी कुबूर में ज़िन्दा हैं और रिज़्क़ दिये जाते हैं। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّ اللّٰہَ حَرَّمَ عَلَی الْاَرْضِ اَنْ تَاْکُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِیَاءِ فَنَبِیُّ اللّٰہِ حَیٌّ یُرْزَقُ "या'नी बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन पर ह़राम कर दिया है कि वोह अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के अज्सामे मुबारका को खाए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ज़िन्दा होते हैं और उन्हें रिज़्क़ दिया जाता है।"[2]

अम्बिया को भी अजल आनी है, मगर ऐसी कि फ़क़त् आनी है
फिर उसी आन के बा'द उन की ह़यात, मिस्ले साबिक़ वोही जिस्मानी है
रूह़ तो सब की है ज़िन्दा, उन का जिस्मे पुरनूर भी रूह़ानी है
औरों की रूह़ हो कितनी ही लत़ीफ़, उन के अज्साम की कब सानी है
पाउं जिस ख़ाक पे रख दें, वोह भी रूह़ है पाक है नूरानी है
उस की अज़्वाज को जाइज़ है निकाह़, उस का तर्का बटे जो फ़ानी है
येह हैं ह़य्ये अबदी उन को रज़ा, सिद्क़े वा'दा की क़ज़ा मानी है

आ'ला ह़ज़रत अ़ज़ीमुल बरकत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن ह़याते अम्बिया का अ़क़ीदा बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं :

1 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب قول النبی لو۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۵۲۱، حدیث: ۳۶۶۷ مختصراً۔

2 ......ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ذکر وفاتہ ودفنہ، ج ۲، ص ۲۹۰، حدیث: ۱۶۳۷ مختصراً۔

तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह
मेरे चश्मे आ़लम से छुप जाने वाले

.....मज़्कूरए बाला दोनों रिवायात से येह भी मा'लूम हुवा कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फे़'लन और क़ौलन दोनों त़रह़ दिफ़ाअ़ करने वाले हैं। कुफ़्फ़ार का लश्कर जब पहाड़ के ऊपर आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फे़'लन (जंग के ज़रीए) दिफ़ाअ़ किया कि दुश्मनों को मार भगाया और जब कुफ़्फ़ार की त़रफ़ से जंगी उमूर पर तबादलए ख़याल किया गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से क़ौलन (गुफ़्तगू कर के) दिफ़ाअ़ किया।

.....दीगर जय्यिद सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की मौजूदगी के बा वुजूद हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफु़र्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जवाब का इरशाद फ़रमाना इस बात पर दलालत करता है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस बात को पसन्द फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से कुफ़्फ़ार को जवाब दें।

.....अबू सुफ़्यान ने जब फ़क़त़ मौजूदगी के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जवाब देने से मन्अ़ फ़रमा दिया, लेकिन चौथी मरतबा जब शहादत की बात की तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जवाब देने से मन्अ़ न फ़रमाया और इस बार ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी जवाब दिया, तो गोया आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को चौथी मरतबा जवाब देने में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुवाफ़िक़त ह़ासिल हुई।

.....मज़्कूरए बाला दोनों रिवायात से येह भी मा'लूम हुवा कि अगर कोई दुश्मन वग़ैरा किसी के ख़िलाफ़ गुफ़्तगू करे तो उसे मुंह न लगाया जाए लेकिन जब वोह ह़द से तजावुज़ कर जाए तो उस का जवाब दिया जा सकता है। जैसा कि सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तीन मरतबा जवाब न दिया, चौथी मरतबा जवाब दिया।

.....येह भी मा'लूम हुवा कि जब बुज़ुर्गों की ज़ात के मुतअ़ल्लिक़ कोई बातें बनाए, उन की शान में गुस्ताख़ी करे या किसी भी क़िस्म का कलाम करे तो हमें चाहिये कि उन का दिफ़ाअ़ करें और उन की त़रफ़ से भरपूर जवाब दें अलबत्ता सज़ा देने की इजाज़त सिर्फ़ ह़ाकिम को है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदुना अबू सुफ़्यान का क़बूले इस्लाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला रिवायात में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़िक्र है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और आप की ज़ौजा हिन्दा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا दोनों ने रमज़ानुल मुबारक 8 हिजरी में फ़त्हे मक्का के दिन इस्लाम क़बूल किया। और येही सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कातिबे वह्य ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के वालिद हैं।[1]

﴿4 हिजरी﴾ ग़ज़्वए बनू नज़ीर और फ़ारूके आ'ज़म

.....ग़ज़्वए "बनू नज़ीर" रबीउ़ल अव्वल सिने 4 हिजरी में पेश आया। हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मदीनए मुनव्वरा में रहते हुवे आस पास के कई यहूदी क़बाइल जैसे औस, ख़ज़रज, बनू नज़ीर वग़ैरा से मुआ़हदा किया हुवा था कि वोह मुसलमानों के ख़िलाफ़ किसी मुहिम में कुफ़्फ़ारे मक्का का साथ नहीं देंगे, न ही उन के ह़लीफ़ या'नी मददगार बनेंगे। "बनू नज़ीर" यहूदियों का एक बहुत बड़ा क़बीला था। उस क़बीले वालों की रिहाइश मस्जिदे क़ुबा से पीछे आ़लिया की सम्त में मदीनए मुनव्वरा से छे मील के फ़ासिले पर थी।[2]

.....जंगे उहुद में जब मुसलमानों को वक़्ती तौ़र पर हज़ीमत का सामना करना पड़ा तो येही बनू नज़ीर अबू सुफ़्यान के ह़लीफ़ बन गए। नीज़ एक दो और मुआ़मलात में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चन्द सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के साथ इस क़बीले में तशरीफ़ ले गए, तो उन्हों ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ धोके से शहीद करने की कोशिश की लेकिन रब عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पहले ही उन के इस नापाक इरादे से ख़बरदार कर दिया। बहर ह़ाल रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की मदद करने और धोकादेही से काम लेने की वज्ह से मदीनए मुनव्वरा से जिला वत़नी का हुक्म इरशाद फ़रमा दिया। लेकिन रईसुल मुनाफ़िक़ीन अ़ब्दुल्लाह

---

1 .....الاصابۃ، صخر بن حرب۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۳۳۳، الرقم: ۴۰۴۶۔

2 .....شرح الزرقانی علی المواھب، حدیث بنی نضیر، ج ۲، ص ۵۰۵، سیرتِ سیدالانبیاء، ص ۱۵۸۔

बिन उबय ने उन्हें इस बात पर उभारा कि हम तुम्हारे साथ हैं लिहाज़ा तुम लोग डटे रहो तो सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के साथ इस क़बीले का मुहासरा कर लिया, मुनाफ़िक़ीन ने उन का कोई साथ न दिया बहर हाल मरऊ़ब हो कर उन्हों ने हथयार डाल दिये और जिला वतनी पर मजबूर हो गए।[1]

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म की सआदत मन्दी

.....रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़दते मुबारका थी कि जब कहीं किसी क़बीले में किसी मुआ़हदे वग़ैरा के लिये जाते तो अकाबिर सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को साथ ले कर जाते, इस "ग़ज़वए बनू नज़ीर" में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी येह सआ़दत ह़ासिल हुई कि "बनू नज़ीर" के साथ बात चीत के लिये रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी साथ ले कर गए।"[2]

﴾4 हिजरी﴿ ग़ज़वए बदरुल मौइ़द और फ़ारूक़े आ'ज़म

.....येह ग़ज़वा शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के महीने में सिने 4 हिजरी में पेश आया और एक क़ौल के मुताबिक़ यकुम ज़ी क़ा'दा को पेश आया, इस ग़ज़वे को इन नामों से भी याद किया जाता है : "बदरुल मौइ़द, बदरुल मीआ़द, बदरुस्सुग़रा, बदरुस्सालिसा, बदरुल अख़ीरह। ग़ज़वए उहुद से फ़ारिग़ होने के बा'द अबू सुफ़्यान और उस के साथियों ने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से वा'दा किया कि इसी साल के इख़्तिताम पर हम दोबारा "बद्र" और "सफ़रा" के मक़ाम पर आएंगे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से जंग करेंगे। सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन के मुक़ाबले के लिये निकले, इसी वज्ह से इस ग़ज़वे को "ग़ज़वतुल बदरुल मौइ़द या'नी मक़ामे बद्र में लौट कर दोबारा होने वाली जंग" रखा गया।

.....रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मदीनए मुनव्वरा पर अपना नाइब मुक़र्रर फ़रमाया। मुशरिकीन का लश्कर अबू सुफ़्यान और उस के साथियों समेत निकल कर "मर्रुज़्ज़हरान" तक पहुंचा जो मक्का और उ़स्फ़ान के दरमियान मक्कए

---

1 ......كتاب المغازى، غزوة بنى نضير، ج ١، ص ٣٦٤، سيرة ابن هشام، غزوة بدر۔۔۔الخ، امر اجلاء بنى النضير۔۔۔الخ، ج ٢، ص ١٦٤ ملخصاً۔

2 ......كتاب المغازى، غزوة بنى نضير، ج ١، ص ٣٦٤۔

मुकर्रमा से एक दिन की मसाफ़त पर वाक़ेअ़ है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुशरिकीन के दिलों में रो'ब डाल दिया और वोह वहीं से फ़रार हो गए, इस के बा'द रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी अपने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के साथ मदीनए मुनव्वरा वापस तशरीफ़ ले आए।[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म की सआ़दत मन्दी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की एक तो सब से अ़ज़ीम सआ़दत मन्दी येह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मइय्यत में इस ग़ज़्वे में शिर्कत की और दूसरी सआ़दत येह है कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم डेढ हज़ार (1500) सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के साथ मदीनए मुनव्वरा से रवाना हुवे और इस लश्कर में सिर्फ़ दस अफ़राद ऐसे थे जिन के पास घोड़े थे, उन में से एक सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه भी थे। जिस मुजाहिद के पास उस का घोड़ा होता है माले ग़नीमत में भी उस का ह़िस्सा दो गुना (Double) होता है।[2]

﴾5 हिजरी﴿ ग़ज़वए बनी मुस्त़लिक़ और फ़ारूक़े आ'ज़म

.....ग़ज़वए ''बनी मुस्त़लिक़'' सह़ीह़ क़ौल के मुत़ाबिक़ ग़ज़वए ख़न्दक़ से क़ब्ल शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के महीने में पेश आया। इसे ग़ज़वए ''मुरैसीअ़'' भी कहते हैं। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم 2 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म सिने 5 हिजरी को तक़रीबन सात सौ[700] सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के साथ इस मुहिम के लिये रवाना हुवे और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को मदीनए मुनव्वरा में अपना नाइब मुक़र्रर फ़रमाया, बा'ज़ अक़्वाल के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को अपना नाइब मुक़र्रर फ़रमाया। इस ग़ज़्वे में उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا और उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह थीं।[3]

---

1 ......كتاب المغازی، غزوة بدر الموعد، ج ۱، ص ۳۸۴، سیرة ابن هشام، ج ۲، ص ۱۸۰۔
شرح الزرقانی علی المواهب، غزوة بدر الاخیرة۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۵۳۶۔

2 ......كتاب المغازی، غزوة بدر الموعد، ج ۱، ص ۳۸۷۔

3 ......طبقات كبرى، غزوة رسول الله۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۴۸۔

.....इस ग़ज़्वे की वज्ह येह हुई कि ह़ारिस बिन अबी ज़रार जो अपने क़बीले "बनी मुस्त़लिक़" का सरदार था, उस ने बा'ज़ अ़रब क़बाइल को दा'वत दी ताकि मुसलमानों के ख़िलाफ़ जंगी लश्कर तय्यार किया जा सके। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जब इस बात का इ़ल्म हुवा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा बिन हु़सैब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को तह़क़ीक़ के लिये भेजा उन्हों ने उस के पास जा कर मा'लूम कर लिया कि वाक़ेई़ उन का जंग ही का इरादा है और फिर आ कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़बरदार कर दिया, इस पर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने लश्कर के साथ उन के ख़िलाफ़ जिहाद फ़रमाया।(1)

.....मुसलमानों को इस ग़ज़्वे में ग़लबा अ़त़ा हुवा, सिर्फ़ एक सह़ाबिये रसूल शहीद हुवे, जब कि दुश्मन के दस अफ़राद क़त्ल हुवे, सात सौ (700) या इस से ज़ाइद क़ैद हुवे, माले ग़नीमत में चौपाए और भेड़ बकरियां वग़ैरा भी हाथ आईं। क़ैदियों में ह़ज़रते सय्यिदतुना जुवैरिया बिन्ते ह़ारिस बिन अबी ज़रार (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) भी थीं, जो बा'द में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ौजिय्यत में आईं और उम्मुल मोमिनीन होने का शरफ़ ह़ासिल किया। जब येह ख़बर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को मिली तो उन्हों ने उन के क़बीले के तमाम क़ैदियों को आज़ाद कर दिया कि अब येह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सुसराली ख़ानदान है, चुनान्चे, बनी मुस्त़लिक़ के उन अफ़राद को आज़ादी नसीब हुई, सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि "मेरे इ़ल्म में कोई दूसरी औ़रत नहीं जो अपने ख़ानदान के लिये उन से बढ़ कर बाइ़से बरकत हो।"(2)

.....येह वोही ग़ज़्वा है जिस में उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का हार गुम हो गया था, जिस के सबब क़ियामत तक के मुसलमानों के लिये तयम्मुम जैसी अ़ज़ीम ने'मत ह़ासिल हुई। "मुरैसीअ़" इस क़बीले "बनी मुस्त़लिक़" के एक कुंवें का नाम है, कभी क़बीले की त़रफ़ निस्बत कर के उसे "ग़ज़्वए बनी मुस्त़लिक़" कहा जाता है और कभी कुंवें की त़रफ़ निस्बत कर के "ग़ज़्वए मुरैसीअ़" कहा जाता है।(3)

इस ग़ज़्वए बनी मुस्त़लिक़ में भी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को कई फ़ज़ाइल व शरफ़ ह़ासिल हुवे, जिन की तफ़्सील कुछ यूं है :

---

1 ......طبقات کبری، غزوۃ رسول اللہ۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۴۹۔

2 ......کتاب المغازی، غزوۃ المریسیع، ج ۱، ص ۴۱۱، طبقات کبری، ذکر ازواج رسول اللہ۔۔۔الخ، ج ۸، ص ۹۲۔

3 ......طبقات کبری، غزوۃ رسول اللہ۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۴۸۔

मुक़द्दिमतुल जैश के अफ़्सर फ़ारूके आ'ज़म

इस ग़ज़्वए मुस्तलिक़ में अव्वलन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह सआ़दत ह़ासिल हुई कि मुक़द्दिमतुल जैश के अफ़्सर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ही थे। "मुक़द्दिमतुल जैश" लश्कर के उस हिस्से को कहते हैं जो लश्कर के आगे आगे होता है और उस का काम दुश्मन की सूरते ह़ाल से पूरे लश्कर को आगाह करना होता है। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुफ़्फ़ार के एक जासूस को पकड़ लिया जो मुसलमान लश्कर की जासूसी करने आया था, नीज़ उस जासूस से लश्करे कुफ़्फ़ार की ज़रूरी मा'लूमात लेने के बा'द आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे क़त्ल कर दिया। जब कुफ़्फ़ार को इस बात का इ़ल्म हुवा तो उन पर मुसलमानों का रो'ब त़ारी हो गया, और येही उन की शिकस्त का सबब भी बना।[1]

फ़ारूके आ'ज़म निदा के लिये मामूर

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक और सआ़दत येह भी ह़ासिल हुई कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ऐ़न क़िताल के वक़्त आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस बात पर मामूर फ़रमाया कि आप येह निदा कर दें कि "जो कलिमए इस्लाम कहेगा उसे कुछ नहीं कहा जाएगा।"[2]

फ़ारूके आ'ज़म ने मुनाफ़िक़ को क़त्ल करने की इजाज़त त़लब की

"ग़ज़्वए बनी मुस्तलिक़" से फ़ारिग़ हो कर जब शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नुज़ूल फ़रमाया तो मुहाजिरीन व अन्सार के दो अफ़राद के माबैन कुछ तनाज़ोअ़ हो गया। मुहाजिर सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना जह्जाह बिन सईद ग़िफ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ थे जो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अजीर थे। बा'ज़ के नज़दीक इन का नाम ह़ज़रते सय्यिदुना जह्जाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ था।[3]

---

1 ......ازالۃ الخفاء، ج ۳، ص ۱۶۸ ماخوذاً۔

2 ......ازالۃ الخفاء، ج ۳، ص ۱۶۸ ماخوذاً۔

3 ......الاصابۃ، جہجاہ بن سعید، ج ۱، ص ۶۲۱، الرقم: ۱۲۴۸۔

इसी त़रह़ अन्सारी सह़ाबी के नाम से मुतअ़ल्लिक़ भी दो क़ौल हैं : एक क़ौल के मुत़ाबिक़ उन का नाम ह़ज़रते सय्यिदुना सिनान बिन फ़र्वह जुह़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ था और दूसरे क़ौल के मुत़ाबिक़ उन का नाम ह़ज़रते सय्यिदुना सिनान बिन तैम बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ था । बहर ह़ाल दोनों ने अपने अपने क़बीले के लोगों को बुलाना शुरूअ़ किया । रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस को ना पसन्द फ़रमाया । जब रईसुल मुनाफ़िक़ीन अ़ब्दुल्लाह बिन उबय को मा'लूम हुवा तो वोह अन्सार को वर्ग़लाने लगा और कहने लगा : لَاتُنْفِقُوا عَلٰی مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰہِ حَتّٰی یَنْفَضُّوا مِنْ حَوْلِہٖ "या'नी येह जो रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के इर्द गिर्द लोग (या'नी सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان) हैं उन पर तुम अपने मालो मताअ़ ख़र्च न करो येह लोग ख़ुद ही भाग जाएंगे ।" साथ वोह येह भी बकवास करने लगा : وَلَئِنْ رَجَعْنَا مِنْ عِنْدِہٖ لَیُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْھَا الْاَذَلَّ "या'नी हम फिर कर गए तो ज़रूर जो बड़ी इ़ज़्ज़त वाला है वोह उस में से निकाल देगा उसे जो निहायत ज़िल्लत वाला है ।" इस मुनाफ़िक़ ख़बीस ने "इ़ज़्ज़त वाले" से अपनी ज़ात मुराद ली और दूसरे लफ़्ज़ से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अर्फ़अ़ व आ'ला ज़ाते करीमा मुराद ली ।

۞.....ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब उस के अल्फ़ाज़ सुने तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ग़ैरते ईमानी से भरपूर जवाब देते हुवे इरशाद फ़रमाया : اِنَّ مُحَمَّدًا الْعَزِیْزُ، وَاَنْتَ الاَذَلُّ اَوْ اَنْتَ الذَّلِیلُ "या'नी बेशक मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इ़ज़्ज़त वाले हैं और तू ही सब से बड़ा ज़लील और ज़लीलो ख़्वार है ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह ख़बर ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पहुंचाई ।

۞.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी वहीं मौजूद थे, उन्हों ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया : دَعْنِي يَا رَسُوْلَ اللّٰہِ اَضْرِبْ عُنُقَ ھٰذَا الْمُنَافِقِ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप मुझे इस बात की इजाज़त दीजिये कि मैं इस मुनाफ़िक़ की गर्दन उड़ा दूं ।" रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : دَعْہُ لَا یَتَحَدَّثُ النَّاسُ اَنَّ مُحَمَّدًا یَقْتُلُ اَصْحَابَہٗ "या'नी ऐ उ़मर ! इसे छोड़ दो वरना लोग बातें बनाएंगे कि मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) अपने साथियों को क़त्ल करवा रहे हैं ।"

❁.....फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इल्म होने के बा वुजूद अ़ब्दुल्लाह बिन उबय को बुला कर उस से इस्तिफ़्सार फ़रमाया तो उस ने वाज़ेह़ तौ़र पर इन्कार कर दिया और क़सम उठा कर कहने लगा कि मैं भला ऐसी बात क्यूं करूंगा।" रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे कुछ न कहा तो ब ज़ाहिर यूं लगा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस की तस्दीक़ की और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तक्ज़ीब फ़रमाई। सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जब मा'लूम हुवा तो फ़रमाते हैं :

فَوَقَعَ عَلَيَّ مِنَ الْهَمِّ مَالَمْ يَقَعْ عَلٰى اَحَدٍ فَبَيْنَمَا اَنَا اَسِيرُ مَعَ رَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَفَرٍ قَدْ حَفَقْتُ بِرَأسِي مِنَ الْهَمِّ

"या'नी जब मुझे इस बात का मा'लूम हुवा तो मुझ पर ऐसी ग़म की कैफ़िय्यत त़ारी हो गई कि शायद ही किसी पर ऐसी कैफ़िय्यत त़ारी हुई हो। मैं एक बार सफ़र में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ था और ग़म की वज्ह से अपना सर झुकाया हुवा था।" फ़रमाते हैं :

❁..... اِذْ اَتَانِي رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَعَرَكَ اُذُنِي وَضَحِكَ فِي وَجْهِي "या'नी अचानक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे क़रीब तशरीफ़ लाए और मेरा कान पकड़ कर मरोड़ा और मेरे चेहरे की त़रफ़ देख कर मुस्कुराए।"

❁..... فَمَا كَانَ يَسُرُّنِي اَنَّ لِي بِهَا الْخُلْدَ فِي الدُّنْيَا "या'नी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इस मुबारक और प्यार भरी अदा से मुझे इतनी ख़ुशी हुई कि अगर मुझे हमेशा की ज़िन्दगी मिल जाती तो इतनी ख़ुशी न होती।"

❁..... ثُمَّ اِنَّ اَبَا بَكْرٍ لَحِقَنِي فَقَالَ مَا قَالَ لَكَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "या'नी फिर मुझे अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिले और फ़रमाने लगे कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तुम्हें क्या इरशाद फ़रमाया।" मैं ने अ़र्ज़ किया : مَا قَالَ لِي شَيْئًا اِلَّا اَنَّهُ عَرَكَ اُذُنِي وَضَحِكَ فِي وَجْهِي "या'नी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से कुछ न इरशाद फ़रमाया बस मेरा कान मरोड़ा और मेरे चेहरे की त़रफ़ देख कर मुस्कुराए।" सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : اَبْشِرْ तुम्हें ख़ुश ख़बरी हो।

❁..... ثُمَّ لَحِقَنِي عُمَرُ فَقُلْتُ لَهُ مِثْلَ قَوْلِي لِاَبِي بَكْرٍ "या'नी सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी मुझ से मिले" और फ़रमाया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तुम से क्या इरशाद फ़रमाया, मैं ने उन्हें भी वोही अ़र्ज़ किया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से कुछ न इरशाद फ़रमाया बस मेरा कान मरोड़ा और मेरे चेहरे

की त़रफ़ देख कर मुस्कुराए। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी मुझ से इरशाद फ़रमाया : اَبْشِرْ तुम्हें खुश ख़बरी हो। जब सुब्ह़ हुई तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ताईद में ''**सूरतुल मुनाफ़िक़ून**'' की आयात नाज़िल फ़रमाईं।

۞.....क़ुरआने पाक की आयात के नुज़ूल के बा'द अ़ब्दुल्लाह बिन उबय जब कभी बात करता तो उस की क़ौम उस को बुरा भला कहती, डांटती और सज़ा की धमकी देती और सब के सब उस से नफ़रत करने लगे। येह देख कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुख़ात़ब कर के इरशाद फ़रमाया : **كَيْفَ تَرٰى يَا عُمَرُ اَمَا وَاللّٰهِ لَوْ قَتَلْتُهُ يَوْمَ قُلْتَ لِيْ اُقْتُلْهُ لَاُرْعِدَتْ لَهُ آنِفٌ لَوْ اَمَرْتُهَا الْيَوْمَ بِقَتْلِهِ لَقَتَلَتْهُ** ''या'नी ऐ उ़मर ! अब तुम्हारा क्या ख़याल है ? ख़ुदा की क़सम ! अगर मैं उस दिन उस को क़त्ल कर देता जिस दिन तुम ने मुझ से उस के क़त्ल की इजाज़त मांगी थी तो येह सारे लोग उस के ह़िमायती बन जाते लेकिन आज इन की येह ह़ालत है कि मैं इन को अगर उसे क़त्ल करने का हुक्म दूं तो वोह उसे फ़िलफ़ौर क़त्ल कर दें।'' येह सुन कर सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इ़श्क़ो मह़ब्बत से सरशार हो कर अ़र्ज़ किया : **وَاللّٰهِ عَلِمْتُ لَاَمْرُ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَعْظَمُ بَرَكَةً مِنْ اَمْرِيْ** ''या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझ पर येह बात आश्कार हो गई कि मेरे फ़े'ल के मुक़ाबले में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक फ़े'ल में बहुत बड़ी बरकत थी।''

۞.....एक रिवायत में यूं भी है अ़ब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ के बेटे जो सह़ाबिये रसूल थे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जब उन्हें अपने वालिद की इस घिनावनी ह़रकत का मा'लूम हुवा तो उन्हों ने भी बारगाहे रिसालत से अपने वालिद के क़त्ल की इजाज़त त़लब की। लेकिन रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें भी मन्अ़ फ़रमा दिया।(1)

इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जहां इस त़वील रिवायत से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ग़ैरते ईमानी और शान ज़ाहिर होती है वहीं इ़ल्मो ह़िक्मत के दर्जे ज़ैल बे शुमार मदनी फूल भी मिलते हैं :

---

(1).....ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ المنافقین، ج۵، ص۲۰۵، حدیث: ۳۳۲۳، ۳۳۲۴ملخصا۔
سیرۃ ابن ھشام، غزوۃ بنی مصطلق، ج۲، ص۲۵۱۔

.....मज़्कूरए बाला रिवायत से मा'लूम हुवा कि बा'ज़ औक़ात सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के माबैन भी शकर रन्जियां हो जाती थीं, यक़ीनन येह इन्सानी फ़ित़रत का तक़ाज़ा है बा'ज़ औक़ात इन्सान की त़बीअ़त के मुवाफ़िक़ कोई बात नहीं होती तो उसे वोह क़बूल नहीं करता, लेकिन वाज़ेह़ रहे कि आ़म लोगों का मुआ़मला और सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का मुआ़मला बहुत जुदा है, क्यूंकि सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के माबैन इख़्तिलाफ़ात फ़क़त़ इख़्तिलाफ़े राए की बुन्याद पर होता था जब कि दीगर लोगों के इख़्तिलाफ़ात में बात़िनी अमराज़ मसलन ह़सद, तकब्बुर, वा'दा ख़िलाफ़ी, गाली गलोच वग़ैरा को दख़्ल होता है। आ़म लोगों के इख़्तिलाफ़ी मुआ़मलात से न सिर्फ़ उन को नुक़्सान होता है बल्कि उन से मुतअ़ल्लिक़ा दीगर लोगों को भी नुक़्सान उठाना पड़ता है जब कि सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के इख़्तिलाफ़ी मुआ़मलात से न तो उन्हें कोई नुक़्सान होता है और न ही दीगर लोगों को किसी क़िस्म का कोई नुक़्सान उठाना पड़ता है। बहर ह़ाल बुग़्ज़ो इनाद, मुनाफ़क़त और त़ा'न व तशनीअ़ के बाइ़स सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के इख़्तिलाफ़ात को आ़म लोगों में बयान करना अपने ईमान को दाव पर लगाने के मुतरादिफ़ है। मश्हूर मक़ूला है : خَطَائے بُزُرگ گِرفتَن خَطَااَست या'नी बुज़ुर्गों की ग़लत़ियां पकड़ना ख़ुद एक बड़ी ग़लत़ी है। ह़क़ीक़त येह है कि सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के इख़्तिलाफ़ी मुआ़मलात भी उम्मत के लिये बहुत बड़ी ने'मत हैं, उन के इख़्तिलाफ़ात न होते तो उम्मत बड़े बड़े फ़वाइद से मह़रूम हो जाती। मसलन मज़्कूरए बाला रिवायत में दो सहाबियों के जिस मुआ़मले का ज़िक्र है उस से येह फ़वाइद ह़ासिल हुवे :

.....''रईसुल मुनाफ़िक़ीन अ़ब्दुल्लाह बिन उबय की सहाबए किराम व रसूलुल्लाह के ख़िलाफ़ दुश्मनी खुल कर सामने आ गई।''

.....''तमाम लोगों को मा'लूम हो गया कि येह बद बात़िन मुनाफ़िक़ मुसलमानों को लड़ाने ही के लिये सरगर्म रहता है।''

.....''येह भी पता चल गया कि मुनाफ़िक़ीन का काम झूट बोलना और झूटी क़समें खाना है।''

.....''सूरतुल मुनाफ़िक़ून की आयात नाज़िल हुईं और मुनाफ़िक़ीन की तक्ज़ीब की गई।'' वग़ैरा वग़ैरा

.....येह भी मा'लूम हुवा कि जब दो मुसलमान आपस में किसी बात पर उलझ जाएं या उन का झगड़ा हो जाए तो कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन व मुनाफ़िक़ीन फ़ाइदा उठाते हैं। उन के इख़्तिलाफ़ात को हवा देते और उन में बुग़्ज़ो इनाद फैलाने की कोशिश करते हैं। तमाम उम्मते मुस्लिमा के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिय्या है वोह इस बात को हमेशा पेशे नज़र रखें और कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन और मुनाफ़िक़ीन के शर से मह़फ़ूज़ रहने के लिये उन के फ़ितनों से बा ख़बर रहें, आपस में इत्तिह़ादो इत्तिफ़ाक़ पैदा करें।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज के इस पुर फ़ितन दौर में जहां कुफ़्फ़ार व मुशरिक़ीन व मुनाफ़िक़ीन मुसलमानों में इफ़्तिराक़ व इन्तिशार पैदा करने की कोशिश में मसरूफ़ हैं, तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी सह़ीहुल अ़क़ीदा मुसलमानों में इत्तिह़ाद व इत्तिफ़ाक़ की राह को हमवार कर रही है, नीज़ उन में क़ुरआनो ह़दीस पर अ़मल करने का जज़्बा बेदार कर के उन को आख़िरत की फ़िक्र दिलाने में मसरूफ़े अ़मल है। दा'वते इस्लामी पूरी दुन्या के कमो बेश 187 मुमालिक में अपना मदनी पैग़ाम पहुंचा चुकी है नीज़ मज़ीद कोशिशें जारी व सारी हैं, आप भी दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता हो जाइये। अपने शहर में होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत फ़रमाइये, हर माह 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दीनो दुन्या की बे शुमार भलाइयां हाथ आएंगी।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

.....येह भी मा'लूम हुवा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से बुग़्ज़ो इनाद रखना मुनाफ़िक़ीन का त़रीक़ा है। नीज़ सह़ाबए किराम व मह़बूबे सह़ाबा (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की शान में गुस्ताख़ियां करना, उन की ज़ाते मुबारका से दीगर मुसलमानों को बद ज़न करना मुनाफ़िक़ीन का शेवा है। आज के दौर में भी बा'ज़ ऐसे लोग पाए जाते हैं जो ब ज़ाहिर कलिमा गो हैं, नमाज़ें पढ़ते हैं, रोज़े भी रखते हैं, ह़ज भी अदा करते हैं, ज़कात भी अदा करते हैं लेकिन उन के दिल इ़श्क़े रसूल से ख़ाली और बुग़्ज़े रसूल से भरे हुवे हैं। ऐसे लोगों से हर दम होशयार रहिये ! कभी भी उन की ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ वाली नमाज़ों पर न जाइये बल्कि हमेशा येह देखिये कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان, औलियाए इ़ज़्ज़ाम के बारे में उन का क्या अ़क़ीदा है ? अगर वोह इन से इ़श्क़ो मह़ब्बत रखता है तो यक़ीनन वोह हर वक़्त इन का ज़िक्रे ख़ैर ही करेगा न कि इन मुबारक हस्तियों की ज़ात में उ़यूबो नक़ाइस को तलाश कर के बयान करेगा। मुनाफ़िक़ीन को पहचानने और उन की मा'रिफ़त ह़ासिल करने के लिये उ़लमाए अहले सुन्नत की सोह़बत बहुत ज़ियादा ज़रूरी है, लिहाज़ा उ़लमाए किराम की सोह़बत इख़्तियार कीजिये और अपनी आख़िरत का सामान कीजिये।

सारे अम्बिया से हम को प्यार है
सब सह़ाबा से हमें तो प्यार है

रब के औलिया से हमें तो प्यार है
اِنْ شَآءَاللہ अपना बेड़ा पार है

.....मज़्कूरए बाला रिवायत से एक निहायत ही लत़ीफ़ नुक्ता येह भी सामने आता है कि अ़ह्दे रिसालत में दो त़रह़ के लोग थे, एक तो वोह जो हर वक़्त इस इन्तिज़ार में रहते थे कि कोई ऐसा मौक़अ़ मिले कि हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान में कोई न कोई गुस्ताख़ी करें, तौहीन आमेज़ अल्फ़ाज़ बकें, कोई न कोई ऐ़ब निकालें और यक़ीनन येह लोग कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन व मुनाफ़िक़ीन थे। जब कि दूसरे वोह लोग थे जिन की अपनी ज़ात के मुआ़मले में जब कोई बात की जाती तो क़त़अ़न उस की परवाह न करते, बल्कि कोई तक्लीफ़ पहुंचाता तो उसे भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मुआ़फ़ कर देते, अलबत्ता जब उन के मह़बूब आक़ा, रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़िलाफ़ कोई फ़क़त़ इरादा भी करता तो उन की ग़ैरते ईमानी जाग उठती, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नामूस के ख़िलाफ़ एक लफ़्ज़ सुनना भी उन्हें गवारा न था, बल्कि वोह गुस्ताख़ों के ख़िलाफ़ फ़िलफ़ौर ह़रकत में आ जाते, उन्हें मुंह तोड़ जवाब देते। यक़ीनन पहली क़िस्म के लोग दुन्या में भी ज़लीलो ख़्वार हैं और आख़िरत में भी तबाही उन का मुक़द्दर होगी, जब कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان जैसी मुबारक हस्तियां दुन्या में इ़ज़्ज़तो शरफ़ वाले और आख़िरत में भी बुलन्द मरातिब वाले होंगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की मह़ब्बत अ़त़ा फ़रमाए। आमीन

.....अ़ब्दुल्लाह बिन उबय के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने वालिद की गुस्ताख़ी पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अपने वालिद के क़त्ल की इजाज़त मांगी। मा'लूम हुवा कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के नज़्दीक रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका उन के मां-बाप, आल औलाद, माल जान सब से ज़ियादा मह़बूब थी, और क्यूं न होती कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद इरशाद फ़रमाया : **لَا یُؤْمِنُ اَحَدُکُمْ حَتّٰی اَکُوْنَ اَحَبَّ اِلَیْہِ مِنْ وَّالِدِہٖ وَوَلَدِہٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِیْنَ** या'नी तुम में कोई उस वक़्त तक कामिल मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उस के नज़्दीक उस के वालिदैन, औलाद और तमाम लोगों से ज़ियादा मह़बूब न हो जाऊं।(1)

.....अ़ब्दुल्लाह बिन उबय जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में आया तो उस ने झूट बोला और झूटी क़सम भी उठा ली। मा'लूम हुवा कि झूट बोलना और झूटी क़सम उठाना

---

1 .....بخاری، کتاب الایمان، حب الرسول۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۱۷، حدیث: ۱۵۔

दोनों मुनाफ़िक़ की अ़लामतें हैं। सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : اِنَّ الْكِذْبَ بَابٌ مِّنْ اَبْوَابِ النِّفَاقِ बेशक झूट मुनाफ़क़त के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा है।(1)

.....जब ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़ब्दुल्लाह बिन उबय की बातें बारगाहे रिसालत में पहुंचाईं और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से उन की तस्दीक़ न की गई तो सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه पर ग़म की कैफ़िय्यत त़ारी हो गई। मा'लूम हुवा कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के नज़्दीक रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह से किसी को ताईद मिलने की बड़ी अहम्मिय्यत थी। अगर किसी मुआ़मले में उन को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह से ताईद ह़ासिल हो जाती तो उन के वारे न्यारे हो जाते। येह भी मा'लूम हुवा कि किसी बात पर अगर बुज़ुर्गों की ताईद ह़ासिल हो जाए उस पर ख़ुश होना और ताईद न मिलने पर ग़मगीन होना एक फ़ित़री अ़मल है।

.....रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने अस्ह़ाब का ग़मज़दा होना पसन्द नहीं येही वज्ह है कि जब सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने निहायत ही ग़मगीन ह़ालत में देखा तो उन की दिलजूई फ़रमाई। नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि बुज़ुर्गों का छोटों के प्यार से कान वग़ैरा मरोड़ना जाइज़ है, नीज़ उन का मुस्कुरा कर देख लेना भी बहुत बड़ी ह़ौसला अफ़्ज़ाई है।

.....रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का कान मरोड़ा और मह़ब्बत से उन की त़रफ़ देख कर मुस्कुराए, गोया उन्हें मा'लूम हो गया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझ से राज़ी हैं और उन पर मेरा सारा मुआ़मला ज़ाहिर है। फ़रमाते हैं : فَمَا كَانَ يَسُرُّنِي اَنَّ لِي بِهَا الْخُلْدَ فِي الدُّنْيَا "या'नी रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस मुबारक और प्यार भरी अदा से मुझे इतनी ख़ुशी हुई कि अगर मुझे हमेशा की ज़िन्दगी मिल जाती तो इतनी ख़ुशी न होती।" سُبْحٰنَ اللّٰه सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का कितना प्यारा अ़क़ीदा था कि उन के लिये रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सिर्फ़ एक अदा ही दुन्या व माफ़ीहा बल्कि जन्नत से बढ़ कर है। क्यूंकि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का येह मुबारक अ़क़ीदा था कि जन्नत तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह

1 ......مساوی الاخلاق، باب ماجاء فی الکذب وقبح ما اتی به اهله، ص۷۶، حدیث: ۱۱۱۔

की सिर्फ़ एक ने'मत है। जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुन्या में कई सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को अ़त़ा फ़रमा दी। बल्कि कल बरोज़े क़ियामत जिसे भी जन्नत में दाख़िला नसीब होगा वोह दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़ूरो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त व इजाज़त से ही होगा।

तुझ से और जन्नत से क्या मत़लब मुनाफ़िक़ दूर हो
हम रसूलुल्लाह के जन्नत रसूलुल्लाह की
अ़र्शे ह़क़ है मस्नदे रिफ़्अ़त रसूलुल्लाह की
देखनी है ह़श्र में इ़ज़्ज़त रसूलुल्लाह की

.....अगर्चे अ़ब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ ने दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़ूरो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने झूट बोला और झूटी क़सम तक खाई लेकिन रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रब عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से बा ख़बर थे कि इस ने मेरे सामने झूट बोला है और झूटी क़सम उठाई है। नीज़ ज़ैद बिन अरक़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه बिल्कुल सच्चे हैं। क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को क़त्ल की इजाज़त न देना और इस की ह़िक्मते अ़मली को बयान करना, नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को मुस्कुरा कर देखना इस बात पर दलालत करता है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन के मुआ़मले से बा ख़बर थे अलबत्ता आप क़ुरआनी आयात के नुज़ूल का इन्तिज़ार फ़रमा रहे थे।

.....शैख़ैने करीमैन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه मिज़ाज शनासे रसूल हैं, आप दोनों इस बात को जानते थे कि अ़ब्दुल्लाह बिन उबय का किज़्ब (झूट) और ज़ैद बिन अरक़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का सिद्क़ (सच) रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़ल्म में है। येह भी मा'लूम हुवा कि शैख़ैने करीमैन (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) की रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हर हर अदा पर नज़र होती थी, येही वज्ह है जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के पास उन की दिलजूई फ़रमाई तो इस के फ़ौरन बा'द शैख़ैने करीमैन (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) भी उन के पास तशरीफ़ ले आए। नीज़ शैख़ैने करीमैन के इ़ल्म में येह बात थी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़क़त़ ज़ैद बिन अरक़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को देख कर मुस्कुराना ही इस बात पर दलील है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नज़्दीक वोही सच्चे हैं, इस लिये दोनों ने सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को ख़ुश ख़बरी दी।

.....हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की शान भी ज़ाहिर हुई कि **अल्लाह** عزّوجلّ ने उन की तस्दीक़ और अ़ब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ की तक्ज़ीब में सूरतुल मुनाफ़िक़ून की आयाते मुबारका नाज़िल फ़रमाईं ।

.....मज़्कूरए बाला रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा कि रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم के हर काम में ढेरों हिक्मतें पोशीदा होती हैं, क्यूंकि आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم **अल्लाह** عزّوجلّ की अ़ता से मुख़्तलिफ़ उमूर के अन्जाम को भी देख रहे होते हैं, बा'ज़ औक़ात आप किसी काम को करने से मन्अ़ फ़रमाते हैं कि उस वक़्त उस काम को न करने में ज़ियादा फ़ाइदा होता है, और बा'ज़ औक़ात किसी काम को फ़िलफ़ौर करने का हुक्म इरशाद फ़रमाते हैं कि, उस को फ़िलफ़ौर करने में ही फ़वाइद होते हैं। जैसा कि मज़्कूरए बाला वाक़िए में सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ को आप ने क़त्ल करने से मन्अ़ फ़रमाया और उस की हिक्मत भी खुद ही इरशाद फ़रमाई ।

.....अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ का येह अ़क़ीदा था कि रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم के हर फ़े'ल में बहुत बरकतें हैं और आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने निहायत ही ख़ूब सूरत अल्फ़ाज़ में इस मुबारक अ़क़ीदे को बयान फ़रमाया कि وَاللّٰهِ عَلِمْتُ لَاَمْرُ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَعْظَمُ بَرَكَةً مِنْ اَمْرِيْ "या'नी **अल्लाह** عزّوجلّ की क़सम ! मुझ पर येह बात आश्कार हो गई कि मेरे फ़े'ल के मुक़ाबले में रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم के मुबारक फ़े'ल में बहुत बड़ी बरकत थी।" नीज़ सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ का येह बयान इस बात पर भी दलालत करता है कि आप رضی اللہ تعالٰی عنہ प्यारे आक़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم को ख़ैरो बरकत का बाइ़स समझते थे, आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के नज़्दीक रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم की ज़ाते मुबारका से अ़ज़ीम बरकतें हासिल होती हैं। या **अल्लाह** عزّوجلّ हमें सहाबए किराम علیہم الرضوان के मुबारक अ़क़ाइद रखने इन पर अ़मल करने और इसे दूसरों तक पहुंचाने की तौफ़ीक़ मर्हमत फ़रमा ।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾5 हिजरी﴿ ग़ज़वए ख़न्दक़ और फ़ारूक़े आ'ज़म

.....''ग़ज़वए ख़न्दक़'' को ''ग़ज़वए अह़ज़ाब'' भी कहा जाता है। येह ग़ज़वा सिने 5 हिजरी शव्वाल के महीने में वुक़ूअ़ पज़ीर हुवा। सुल्ता़नुल मुतवक्किलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم 8 ज़ी क़ा'दा को ग़ज़वए ख़न्दक़ के लिये निकले।(1)

.....इस ग़ज़वे में मुसलमानों की ता'दाद तीन हज़ार 3000 थी, जब कि मुशरिकीन की ता'दाद कई गुना ज़ियादा थी। हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस ग़ज़वे में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मदीनए मुनव्वरा में अपना नाइब मुक़र्रर फ़रमाया। इस को ''ग़ज़वए ख़न्दक़'' इस लिये कहते हैं कि इस में मुसलमानों की त़रफ़ से एक बहुत बड़ी ख़न्दक़ खोदी गई थी। जब कि ''ग़ज़वए अह़ज़ाब'' कहने की वज्ह येह है कि इस में कुफ़्फ़ार की त़रफ़ से मुख़्तलिफ़ क़बाइल ने शिर्कत की थी और अ़रबी में ''ह़िज़्ब'' गुरौह या क़बीले को कहते हैं जिस की जम्अ़ ''अह़ज़ाब'' है।(2)

.....इस ग़ज़वे का बाइ़स यहूदियों की इस्लाम दुश्मनी और साज़िशी ज़ेहनिय्यत थी इसी लिये हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें जिला वत़न कर दिया था जो मुख़्तलिफ़ शहरों में जा कर आबाद हो गए थे। उन में से ख़ैबर में रहने वाले कुफ़्फ़ारे मक्का के पास आए और उन से हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़दावत और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शहादत पर अ़ह्दो पैमान किया, फिर वोही यहूदी दीगर क़बाइल में गए और मुसलमानों के ख़िलाफ़ उन से मुआ़हदे किये। बारगाहे नबवी में जब येह ख़बर पहुंची तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के मश्वरे से दुश्मनों के मुक़ाबले के लिये ख़न्दक़ खोदने का फ़ैसला फ़रमाया। ख़न्दक़ की खुदाई के दौरान एक बहुत बड़ी चट्टान निकल आई जिस की वज्ह से खुदाई में रुकावट पैदा होने लगी। दो जहां के ताजवर, सुल्ता़ने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कुदाल ले कर ''**बिस्मिल्लाह**'' पढ़ कर एक ज़र्ब लगाई जिस से उस का एक तिहाई ह़िस्सा टूट कर रैज़ा रैज़ा हो गया।

---

(1)......فتح الباری، کتاب المغازی، باب غزوۃ الخندق۔۔۔الخ، ج۸، ص ۳۳۵، تحت الحدیث: ۴۱۰۰۔
طبقات کبری، غزوۃ رسول الخندق۔۔۔الخ، ج۲، ص ۵۱۔

(2)......فتح الباری، کتاب المغازی، باب غزوۃ الخندق۔۔۔الخ، ج۸، ص ۳۳۵، تحت الحدیث: ۴۱۰۰۔
کتاب المغازی، غزوۃ الخندق، ج۲، ص ۴۴۱۔

۞.....फ़रमाया : اَللّٰهُ اَكْبَرُ اُعْطِيتُ مَفَاتِيحَ الشَّامِ وَاللّٰهِ اِنِّي لَاَبْصُرُ قُصُورَهَا الْحُمْرَ مِنْ مَكَانِي هٰذَا "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बहुत बड़ा है ! मुझे मुल्के शाम की कुन्जियां अ़ता की गई हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं सुर्ख़ मह़ल्लात अपनी इस जगह से देख रहा हूं।"

۞.....फिर **"बिस्मिल्लाह"** पढ़ कर दूसरी ज़र्ब लगाई तो दूसरी तिहाई टूट गई और फ़रमाया : اَللّٰهُ اَكْبَرُ اُعْطِيتُ مَفَاتِيحَ فَارِسَ وَاللّٰهِ اِنِّي لَاَبْصُرُ الْمَدَائِنَ وَاَبْصُرُ قَصْرَهَا الْاَبْيَضَ مِنْ مَكَانِي هٰذَا "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बहुत बड़ा है ! मुझे फ़ारस (ईरान) की कुन्जियां अ़ता की गई हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं उस के शहरों को देख रहा हूं और उस के सफ़ेद मह़ल्लात को यहां अपनी इस जगह से देख रहा हूं।"

۞.....फिर **"बिस्मिल्लाह"** पढ़ कर तीसरी ज़र्ब लगाई तो सारा पथ्थर टूट गया और फ़रमाया : اَللّٰهُ اَكْبَرُ اُعْطِيتُ مَفَاتِيحَ الْيَمَنِ وَاللّٰهِ اِنِّي لَاَبْصُرُ اَبْوَابَ صَنْعَاءَ مِنْ مَكَانِي هٰذَا "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बहुत बड़ा है ! मुझे यमन की कुन्जियां अ़ता की गई हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं सन्आ़ के दरवाज़ों को यहां से देख रहा हूं।"[1]

سُبْحَانَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कैसी त़ाक़त व कुव्वत अ़ता फ़रमाई है कि जो पथ्थर किसी से न टूट सका आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे रैज़ा रैज़ा फ़रमा दिया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कैसी बसारत अ़ता फ़रमाई है कि मदीनए मुनव्वरा के एक मक़ाम पर खड़े हो कर मुल्के शाम, मुल्के ईरान और मुल्के यमन के कुसूरो मह़ल्लात मुलाह़ज़ा फ़रमा रहे हैं !

۞.....मुसलमान ख़न्दक़ की खुदाई से फ़ारिग़ हुवे तो लश्करे कुफ़्फ़ार नुमूदार हुवा और ख़न्दक़ के बाहर ख़ैमाज़न हो कर मुह़ासरा कर लिया। इस ग़ज़्वे में मुसलमानों को बहुत मशक़्क़त उठानी पड़ी, मुह़ासरे की त़वालत से तंग आ कर मुशरिकीन ने एक रोज़ एक साथ ख़न्दक़ की एक जानिब से ह़म्ला कर दिया और रात गए तक जंग जारी रही, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ़ से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन पर शदीद आंधी और ज़लज़ला मुसल्लत़ फ़रमा दिया जिस से उन के ख़ैमे

1.....مسند امام احمد، مسند الکوفیین، حدیث البراء بن عازب، ج٦، ص ٣٤٤، حدیث: ١٨٧١٦-دلائل النبوة، باب ما ظهر فی حفر الخندق---الخ، ج٣، ص ٤٢١-سنن کبری للنسائی، کتاب السیرة، حفر الخندق، ج٥، ص ٢٦٩، حدیث: ٨٨٥٧-

उखड़ गए, खाने की देगें उलट गईं, उन के दिलों में रो'ब डाल दिया गया और वोह फ़रार हो गए। इस ग़ज़्वे में छे सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने शहादत पाई और मुशरिकीन से चार अफ़राद वासिले जहन्नम हुवे।(1)

इस ग़ज़्वए ख़न्दक़ में भी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه को कई फ़ज़ाइल व शरफ़ हासिल हुवे, जिन की तफ़्सील कुछ यूं है :

ख़न्दक़ की एक जानिब फ़ारूक़े आ'ज़म के पास

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه को ग़ज़्वए ख़न्दक़ में जो सआदतें हासिल हुईं उन में से एक येह भी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़न्दक़ की एक जानिब की हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه के सिपुर्द फ़रमा दी, और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه कुफ़्फ़ार से बर सरे पैकार हो गए।(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म ने लश्करे कुफ़्फ़ार पर हम्ला कर दिया

इसी जंगे ख़न्दक़ में एक दिन अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه और हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه दोनों ने कुफ़्फ़ार के लश्कर जो ख़न्दक़ पार करने की कोशिश में मसरूफ़ था एक ज़ोरदार हम्ला कर दिया और उस पूरे लश्कर को दरहम बरहम कर दिया। अलबत्ता उन में एक शह सुवार जो बहुत ही बहादुर और निडर था, जिस का नाम ज़रार बिन ख़त्ताब था पल्टा और अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه से उस का सामना हो गया, उस ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه पर वार करने के लिये नेज़ा खींचा लेकिन फिर उस को रोक लिया और कहने लगा : يَا ابْنَ الْخَطَّابِ اِنَّهَا نِعْمَةٌ مَشْكُوْرَةٌ وَاللّٰهِ مَا كُنْتُ لَاَقْتُلَكَ "या'नी ऐ ख़त्ताब के बेटे ! मैं ने तुम्हें क़त्ल नहीं किया और येह तुम्हारे लिये एक ऐसी ने'मत है जिस का तुम शुक्र अदा करो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तुम्हें क़त्ल नहीं करूंगा।"

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ येही ज़रार बिन ख़त्ताब बा'द में फ़त्हे मक्का के मौक़अ़ पर इस्लाम ले आए, येह निहायत ही बहादुर और जंग जू सिपाही थे, और फ़त्हे मक्का से क़ब्ल तक़रीबन तमाम जंगों में येह मुसलमानों के ख़िलाफ़ लड़े और येही वोह पहले शख़्स हैं जिन्हों ने इस्लाम के ख़िलाफ़ सब से पहले अश्आ़र कहे। इस्लाम लाने के बा'द सय्यिदुना ज़रार बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه मुसलमानों के ख़िलाफ़

1 ......المنتظم، فی ھذہ السنة کانت غزوۃ۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۲۳۸۔

2 ......ازالۃ الخفاء، ج ۳، ص ۱۶۷۔

लड़ी गई जंगों का तज़्किरा करते और मुसलमानों की शुजाअ़त व बहादुरी नीज़ सहाबए किराम عَلَيۡہِمُ الرِّضۡوَان की साबित क़दमी को ख़िराजे तह़सीन पेश करते। सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में शाम की फ़ुतूह़ात में बेहतरीन किरदार अदा किया।(1)

नमाज़ क़ज़ा होने पर रसूलुल्लाह की शफ़्क़त

ग़ज़्वए ख़न्दक़ में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कुफ़्फ़ार के साथ लड़ाई करते हुवे ऐसे मसरूफ़ हुवे कि नमाज़े अ़स्र न पढ़ सके। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस का बहुत अफ़्सोस हुवा, रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर ख़ुसूसी शफ़्क़त के साथ आप के तअस्सुफ़ का इलाज फ़रमाया। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है ग़ज़्वए ख़न्दक़ के दिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कुफ़्फ़ार को रोकने की मसरूफ़िय्यत के सबब सूरज ग़ुरूब होने के वक़्त तशरीफ़ लाए, तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जलाल में आ कर कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को बुरा भला कहने लगे और बारगाहे रिसालत में यूं अ़र्ज़ किया :
يَارَسُوۡلَ اللهِ مَا كِدۡتُ اَنۡ اُصَلِّيَ حَتّٰى كَادَتِ الشَّمۡسُ اَنۡ تَغۡرُبَ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे इतनी मोहलत भी न मिली कि मैं नमाज़े अ़स्र अदा कर लूं जब कि सूरज भी ग़ुरूब होने के क़रीब है।"

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने शफ़्क़त भरे लफ़्ज़ों से आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के तअस्सुफ़ का मदावा करते हुवे इरशाद फ़रमाया : **وَاللهِ مَا صَلَّيۡتُهَا** "या'नी ऐ उ़मर ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने ख़ुद अभी तक नमाज़ अदा नहीं की।" रावी कहते हैं कि फिर हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ बत़ह़ान नामी वादी में उतर गए और वहां वुज़ू किया, फिर नमाज़े अ़स्र अदा की और इस के बा'द नमाज़े मग़रिब अदा की।(2)

अपनी नमाज़ों की ह़िफ़ाज़त कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का नमाज़ों की अदाएगी का जज़्बा सद करोड़ मरह़बा ! अगर्चे कुफ़्फ़ार से जंग की मसरूफ़िय्यत के सबब नमाज़ फ़ौत हो गई मगर फिर भी दिल में मलाल पैदा हुवा। मगर आह ! सद करोड़ तअ़ज्जुब और अफ़्सोस है उन लोगों पर जो न तो राहे ख़ुदा के मुजाहिद, न कोई शरई मजबूरी, फिर भी नमाज़ों में सुस्ती करते हैं, यक़ीनन :

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۳۹۳۔
2 ......بخاری، کتاب المغازی، غزوۃ الخندق۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۵۴، حدیث: ۴۱۱۲۔

۞.....नमाज़ दीन का सुतून है, नमाज़ों में सुस्ती दुन्या व आख़िरत की तबाही का बाइस है।

۞.....नमाज़ से रोज़ी में बरकत होती है, नमाज़ों में सुस्ती रिज़्क़ में तंगी का बाइस है।

۞.....नमाज़ क़ब्र को रौशन करती है, नमाज़ों में सुस्ती क़ब्र में अन्धेरे का बाइस है।

۞.....नमाज़ ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आंखों की ठन्डक है, नमाज़ों में सुस्ती उन की तक्लीफ़ का बाइस है।

۞.....नमाज़ पुल सिरात़ के लिये आसानी है, नमाज़ों में सुस्ती पुल सिरात़ को पार करने में मुश्किल का बाइस है।

۞.....नमाज़ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा मिलती है, नमाज़ों में सुस्ती रब की नाराज़ी का बाइस है।

۞.....नमाज़ी को कल बरोज़े क़ियामत बे शुमार इन्आ़मात मिलेंगे, बे नमाज़ी को सख़्त तकालीफ़ का सामना होगा।

यक़ीनन समझदार वोही है जो अपनी नमाज़ों की ह़िफ़ाज़त करे, नमाज़ों में सुस्ती से अपने आप को बचाए और अपनी आख़िरत को दाव पर लगाने के बजाए नमाज़ों के ज़रीए़ इसे मुनव्वर करे, अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता पहले नमाज़ों में सुस्ती करते थे तो अब इस से सच्ची पक्की तौबा करें और क़ज़ा नमाज़ों का ह़िसाब लगा कर इन की अदाएगी की तरकीब बनाएं और आइन्दा किसी भी नमाज़ में सुस्ती न करने का अ़ह्द करें, बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने की भरपूर कोशिश फ़रमाएं।

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِیَہ के अ़त़ाकर्दा मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करने की कोशिश फ़रमाएं, और मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर माह अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाएं, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, नमाज़ों की अदाएगी के लिये कुढ़ने, नमाज़ों में सुस्ती से बचने, बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने, ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का मदनी ज़ेह्न बनेगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

हर इस्लामी भाई अपना येह मदनी ज़ेह्न बनाए **कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

अपनी इस्लाह़ के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या की इस्लाह़ की कोशिश के लिये जदवल के मुत़ाबिक़ मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾6 हिजरी﴿ ग़ज़्वए हुदैबिय्या और फ़ारूक़े आ'ज़म

....."ग़ज़्वए हुदैबिय्या" को "सुल्ह़े हुदैबिय्या" भी कहते हैं। क्यूंकि इस में कोई जंग न हुई बल्कि एक मुआ़हदे पर सुल्ह़ हो गई। हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस ग़ज़्वे के लिये मदीनए मुनव्वरा से पीर के रोज़ यकुम ज़ी क़ा'दा को तक़रीबन चौदह सौ 1400 सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के साथ रवाना हुवे। जब कि एक क़ौल के मुत़ाबिक़ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की ता'दाद पन्दरह सौ 1500 थी।(1)

....आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मदीनए मुनव्वरा में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपना नाइब मुक़र्रर फ़रमाया। बा'ज़ उ़लमा के नज़्दीक आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस सफ़र में ह़ज़रते सय्यिदुना नुमैला बिन अ़ब्दुल्लाह लैसी (या'नी सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी) رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपना नाइब मुक़र्रर फ़रमाया।(2)

...ज़ुल ह़लीफ़ा के मक़ाम से आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उ़मरे का एह़राम ज़ेबेतन फ़रमाया। कुफ़्फ़ार की अ़दावत के बाइ़स आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस साल उ़मरह अदा न फ़रमा सके। चुनान्चे, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अगले साल उ़मरह अदा फ़रमाया। हुदैबिय्या में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तेईस 23 रातें क़ियाम फ़रमाया और माहे ज़िल ह़िज्जा में वापस मदीनए मुनव्वरा का सफ़र इख़्तियार फ़रमाया।

---

1 ......المنتظم، وفی ھذہ السنة۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۲٦٧، شرح الزرقانی علی المواھب، امر الحدیبیة، ج ۳، ص ۱٧٠۔
طبقات کبری، غزوۃ رسول اللہ الحدیبیة، ج ۲، ص ٧۳۔

2 ......طبقات کبری، غزوۃ رسول اللہ الحدیبیة، ج ۲، ص ٧۳، سیرۃ ابن ھشام، امر الحدیبیة۔۔۔الخ، نمیلة علی المدینة، ج ۲، ص ۲٦۳۔

....''हुदैबिय्या'' मक्कए मुकर्रमा से मग़रिब की सम्त में एक छोटे से गाऊं का नाम है। जो मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से बारह 12 मील की मसाफ़त पर वाके़अ़ है, येह जिद्दा शरीफ़ और मक्कए मुकर्रमा के दरमियान वाके़अ़ है, इस जगह पर एक कुंवां है जिसे ''हुदैबिय्या'' कहते थे इस वज्ह से इस बस्ती को भी ''हुदैबिय्या'' कहने लगे, आज कल इस कुंवें को ''बीरे शुमैस'' कहा जाता है।(1)

ग़ज़्वए हुदैबिय्या में भी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कई फ़ज़ाइल व शरफ़ ह़ासिल हुवे, जिन की तफ़्सील कुछ यूं है :

फ़ारूके़ आ'ज़म की बैअ़ते रिज़्वान में शिर्कत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इसी हुदैबिय्या के मक़ाम पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से बबूल के एक दरख़्त के नीचे बैअ़त ली, इस को बैअ़ते रिज़्वान कहते हैं, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हाथ पर हाथ रख कर बैअ़त की। इस बैअ़त का ज़िक्र कुरआने मजीद में यूं किया गया :

﴿لَقَدْ رَضِیَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِیْنَ اِذْ یُبَایِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ﴾ (پ۲۶، الفتح: ۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''बेशक **अल्लाह** राज़ी हुवा ईमान वालों से जब वोह उस पेड़ के नीचे तुम्हारी बैअ़त करते थे।''

अ़ल्लामा इब्ने अ़ब्दुल बर मालिकी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ''شَهِدَ بَدْرًا وَبَيْعَةَ الرِّضْوَانِ وَكُلَّ مَشْهَدٍ شَهِدَهُ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ''या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बद्र और बैअ़ते रिज़्वान में भी शिर्कत की नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ तमाम जंगों में शिर्कत की।''(2)

बारगाहे रिसालत से दो अ़ज़ीम ए'ज़ाज़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चूंकि बैअ़ते रिज़्वान में शामिल थे इस लिये रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बैअ़ते रिज़्वान में शामिल होने वाले सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को जो जो ख़ुश ख़बरियां अ़ता फ़रमाईं वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी ह़ासिल हुईं। ख़ुसूसन जहन्नम में दाख़िल न होने की बिशारत। चुनान्चे,

---

1 .....सीरते सय्यिदुल अम्बिया, स. 167।

2 ......الاستیعاب، عمر بن الخطاب، ج۳، ص۲۳۶۔

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बैअ़ते रिज़्वान में शामिल होने वाले सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को बिशारत देते हुवे इरशाद फ़रमाया : اَنْتُمُ الْيَوْمَ خَيْرُ اَهْلِ الْاَرْضِ "या'नी आज के दिन तुम लोग पूरी दुन्या के लोगों से बेहतर हो।"(1)

और एक ह़दीसे मुबारका में है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यूं इरशाद फ़रमाया : لَا يَدْخُلُ النَّارَ اِنْ شَاءَ اللهُ مِنْ اَصْحَابِ الشَّجَرَةِ اَحَدُ الَّذِيْنَ بَايَعُوْا تَحْتَهَا "या'नी जिन्हों ने दरख़्त के नीचे बैअ़त की अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो उन में से कोई भी जहन्नम में दाख़िल नहीं होगा।"(2)

बैअ़ते रिज़्वान से कुफ़्फ़ार ख़ौफ़ज़दा हो गए

बैअ़त की ख़बर से कुफ़्फ़ार ख़ौफ़ज़दा हुवे और उन के अहले राए ने येही मुनासिब समझा कि सुल्ह़ कर लें, चुनान्चे, सुल्ह़ नामा लिखा गया और चूंकि येह मक़ामे हुदैबिय्या में लिखा गया था इस लिये "सुल्ह़े हुदैबिय्या" के नाम से मशहूर हो गया। सुल्ह़ नामे में येह तै़ पाया कि मुसलमान इस साल वापस मदीने चले जाएं और अगले साल आ कर उ़मरह कर लें मुसलमानों के लिये येह शर्त़ सख़्त तक्लीफ़ का बाइ़स थी ख़ुसूसन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने इसे मुसलमानों की तौहीन समझा और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم व ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه दोनों के सामने अपने जज़्बात का इज़्हार किया। चुनान्चे,

सुल्ह़े हुदैबिय्या पर फ़ारूक़े आ'ज़म की ग़ैरते ईमानी

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या आप अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सच्चे नबी नहीं?" फ़रमाया : "क्यूं नहीं?" मैं ने अ़र्ज़ की : "क्या हम ह़क़ पर और हमारा दुश्मन बात़िल पर नहीं?" फ़रमाया : "क्यूं नहीं?" मैं ने अ़र्ज़ की : "फिर हम दीन के मुआ़मले में इतने पस्त क्यूं हो गए?" सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

---

1 ......بخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ الحدیبیۃ، ج۳، ص۶۹، حدیث: ۴۱۵۴ ملتقطا۔

2 ......مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، باب من فضائل اصحاب الشجرۃ۔۔۔الخ، ص۱۳۵۲، حدیث: ۱۶۳۔

ने इरशाद फ़रमाया : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का रसूल हूं और उस की मरज़ी के ख़िलाफ़ नहीं चल सकता वोही मेरा मददगार है।" मैं ने अ़र्ज़ किया : "आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह नहीं फ़रमाया था कि हम अ़न क़रीब त़वाफ़े का'बा करेंगे ?" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्यूं नहीं लेकिन क्या मैं ने येह कहा था कि इसी साल त़वाफ़ करेंगे ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "नहीं।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम ज़रूर आओगे और का'बे का त़वाफ़ करोगे।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि फिर मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के पास आया और अ़र्ज़ की : "ऐ अबू बक्र ! क्या हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सच्चे नबी नहीं ?" फ़रमाया : "क्यूं नहीं ?" मैं ने कहा : "क्या हम ह़क़ पर और हमारा दुश्मन बात़िल पर नहीं ?" फ़रमाया : "यक़ीनन ऐसा ही है।" मैं ने कहा : "फिर हम दीन के मुआ़मले में इतना दबाव क्यूं तस्लीम कर रहे हैं ?" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! बिलाशुबा येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं, उस के ना फ़रमान नहीं हो सकते। यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन का मददगार है, आप अपनी जगह साबित क़दम रहें। ख़ुदा की क़सम ! वोह ह़क़ पर हैं।" मैं ने कहा : "क्या वोह येह नहीं फ़रमाते थे कि हम अ़न क़रीब त़वाफ़े का'बा करेंगे ?" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाने लगे : "क्यूं नहीं, क्या आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह फ़रमाया था कि तुम इसी साल त़वाफ़ करोगे ?" मैं ने कहा : "नहीं।" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "तो यक़ीन रखो तुम आइन्दा साल ज़रूर आओगे और बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ करोगे।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! चूंकि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और दीगर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان उ़मरह करने की निय्यत से ही आए थे और सुल्ह़ नामे में एक शर्त़ येह भी थी कि आप लोग इस साल चले जाएं अगले साल आएं, येह शर्त़ तमाम मुसलमानों के लिये नाक़ाबिले क़बूल थी, क्यूंकि इस में ब ज़ाहिर मुसलमानों की पस्ती और कुफ़्फ़ार की बरतरी नज़र आ रही थी इसी वज्ह से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इस पर कलाम किया। लेकिन यक़ीनन रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से आइन्दा साल पेश आने वाले इस सुल्ह़ के फ़वाइद को देख रहे थे जो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की नज़रों से पोशीदा थे, इस लिये आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस शर्त़ को बर क़रार रखा।

(1) ......بخاری، کتاب الشروط، باب الشروط فی الجهاد۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۲۲۶، حدیث: ۲۷۳۲ مختصرا۔

उस वक़्त तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने जज़्बात का इज़्हार कर दिया लेकिन बा'द में जब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर वोह तमाम ह़िक्मतें आश्कार हुईं तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे :

مَا زِلْتُ اَتَصَدَّقُ وَاَصُوْمُ وَاُصَلِّيْ وَاَعْتِقُ مِنَ الَّذِيْ صَنَعْتُ يَوْمَئِذٍ مَخَافَةَ كَلَامِي الَّذِيْ تَكَلَّمْتُ بِهٖ "या'नी उस दिन जो मैं ने कलाम किया था उस के ख़ौफ़ से मैं मुसलसल सदक़ा करता रहा, रोज़े रखता रहा, नमाज़ पढ़ता रहा और ग़ुलाम आज़ाद करता रहा।" और सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की रिवायत में है कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे : لَقَدْ اَعْتَقْتُ بِسَبَبِ ذٰلِكَ رِقَابًا وَصُمْتُ دَهْرًا "या'नी सुल्ह़े हुदैबिय्या के दिन जो मैं ने कलाम किया था इस के सबब मैं ने कई ग़ुलाम आज़ाद किये और एक अ़र्से तक रोज़े रखता रहा।"(1)

ह़ज़रते शाह वलिय्युल्लाह मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सुल्ह़े हुदैबिय्या से वापसी के वक़्त सूरतुल फ़त्ह़ सब से पहले सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को सुनाई और इस इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई से आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपने अस्ह़ाब में मुमताज़ फ़रमाया। गोया इस सूरत में येह ह़िक्मत मल्ह़ूज़ होगी कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ग़लबात की क़िस्मों के मुख़्तलिफ़ अह़काम की मा'रिफ़त ह़ासिल कर लें।"(2)

शाने फ़ारूके़ आ'ज़म और दो अ़ज़ीम नुक्ते

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते मुबारका से कई ऐसे वाक़िआ़त रू नुमा हुवे हैं कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत में अपनी आरा को पेश किया, कई आरा में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को खुद रब عَزَّوَجَلَّ और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ताईद ह़ासिल हुई जिन्हें मुवाफ़िक़ात के बाब में मुलाह़ज़ा किया जा सकता है और बा'ज़ आरा ऐसी भी थीं जिन के बा'द आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रुजूअ़ फ़रमाया और रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ज़्लो करम से उन ह़िक्मतों और मसालेह़ पर मुत्तलअ़ हुवे जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पेशे नज़र थीं। शाह वलिय्युल्लाह मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की इन्ही आरा के मुतअ़ल्लिक़ मज़्कूरए बाला रिवायत को बयान करने के बा'द

1 ......ارشاد الساری، کتاب الشروط، باب الشروط فی الجهاد، ج۶، ص ۲۳۲، تحت الحدیث: ۲۷۳۲۔

2 ......ازالة الخفاء، ج۳، ص ۱۷۲۔

इल्मुत्तसव्वुफ़ के दो[2] लतीफ़ नुक्ते बयान फ़रमाए हैं जिन से अमीरुल मोमिनीन की बहुत बुलन्द शाने करीमी ज़ाहिर होती है, हज़रते शाह साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का येह ख़ास्सा है कि ऐसी दक़ीक़ और लतीफ़ फ़ारूक़ी शान पर आप ने ही क़लम उठाया, इन दो[2] निकात का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है :

पहला नुक्ता

.....जब किसी मर्दे मोमिन का नूरे ईमान, क़ल्ब (दिल) के साथ मिल कर ऐसी कैफ़िय्यत में मुब्तला हो जाए कि उस से ऐसी बात सादिर हो जिस का रोकना उस की क़ुदरत से बाहर और बा'ज़ औक़ात वोह बात ब ज़ाहिर शरअ़ और अ़क़्ल के बा'ज़ आदाब के भी ख़िलाफ़ हो जाती है तो ऐसी कैफ़िय्यत को "ग़लबा" कहते हैं। चूंकि येह कैफ़िय्यत नूरे ईमान और त़बीअ़ते क़ल्ब के सबब पैदा होती है, लिहाज़ा इस कैफ़िय्यते ग़लबा की भी दो क़िस्में हुईं :

(1).....वोह ग़लबा कि क़ल्ब पर किसी हुक्मे शरीअ़त के ग़ालिब आ जाने से पैदा होता है लेकिन दर ह़क़ीक़त उस वक़्त शरीअ़त को उस हुक्म पर अ़मल मत़लूब नहीं होता। जैसे ग़ज़वए बनी क़ुरैज़ा में जब मुसलमानों ने कुफ़्फ़ार पर ग़लबा ह़ासिल कर लिया तो उन्हों ने बात चीत करने के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना अबू लुबाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه को बुलाया, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म से उन के पास गए और उन के पूछने पर इशारे से उन्हें बता दिया कि उन का अन्जाम मौत है।[1]

या'नी उस वक़्त सय्यिदुना अबू लुबाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه का क़ल्ब मग़लूब हो गया जिस का सबब "मख़्लूक़े ख़ुदा पर शफ़्क़त" था, ख़ल्क़े ख़ुदा पर शफ़्क़त अगर्चे बहुत अच्छी भी है और मत़लूबे शरई भी लेकिन यहां मत़लूबे शरई इस का ग़ैर था।

(2).....दूसरा ग़लबा वोह है कि जो नूरे ईमान की त़रफ़ से हो और आ'ला मक़ामात से बिजली की शुआ़अ़ की त़रह़ दिल में उतर जाए और इस का सबब रब عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्लो करम होता है, इसे कश्फ़ और इल्हामे रब्बानी भी कहते हैं।

....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه पर दोनों त़रह़ के ग़लबों का ह़ाल ज़ाहिर हुवा। मसलन सुल्ह़े हुदैबिय्या में जो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه के क़ल्ब ने मग़लूब हो कर कुफ़्फ़ार से सुल्ह़ के मुआ़हदे के मुतअ़ल्लिक़ अपने जज़्बात का इज़्हार किया उस का सबब एक अम्रे शरई या'नी "**सुल्ह़ न कर के मुसलमानों की रिफ़्अ़त व बुलन्दी**" था। लेकिन उस वक़्त वोह पसन्दीदा न था कि वोह मस्लिह़ते कुल्लिया के ख़िलाफ़ था नीज़ उस के मुक़ाबिल आइन्दा साल

---

1 .....اسد الغابة، رفاعة بن عبد المنذر، ج ٢، ص ٢٧٤ ملخصاً.

मुसलमानों को ह़ासिल होने वाली रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से फ़त्ह़े मुबीन थी। येही वज्ह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर जब येह बात वाज़ेह़ हुई तो इस के कफ़्फ़ारे में रोज़े रखते, सदक़ा करते और गु़लाम आज़ाद करते रहे। जब कि वोह तमाम वाक़िआ़त जिन में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को रब عَزَّوَجَلَّ और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ताईद ह़ासिल हुई वोह ग़लबे की दूसरी क़िस्म से हैं कि उन आरा में फ़ज़्ले खु़दावन्दी को दख़्ल था जिस से उस मुआ़मले में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कश्फ़ और इल्हामे रब्बानी हुवा। जैसे अ़ब्दुल्लाह बिन उबय की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाते वक़्त रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आगे खड़े हो गए उस वक़्त जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर ग़लबा था वोह दूसरी क़िस्म से था येही वज्ह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को न तो उस का कफ़्फ़ारा अदा करना पड़ा और न ही वोह ना पसन्दीदए इलाही था बल्कि वोह शरअ़न मह़मूद था कि बा'द में उसे रब عَزَّوَجَلَّ ही की ताईद ह़ासिल हो गई और मुनाफ़िक़ीन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने की मुमानअ़त वारिद हो गई।

.....वाज़ेह़ रहे कि बा'ज़ औक़ात सालिक या'नी मा'रिफ़ते इलाही की मन्ज़िलें त़ै करने वाले को ग़लबे की इन दोनों क़िस्मों में से एक क़िस्म का दूसरी क़िस्म पर इश्तबाह हो जाता है और उस की समझ बूझ इसे ह़ल नहीं कर पाती, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी कितनी ही मरतबा ग़लबात के दरमियान इश्तबाह वाके़अ़ हुवा था और हु़जू़र नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को अलग अलग कर के दिखा दिया, यहां तक कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस मुआ़मले में पूरे तजरिबाकार हो गए फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कोई इश्तबाह नहीं होता था उस वक़्त आप "**मुह़द्दसे कामिल**" हो गए। या'नी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ात ऐसी कामिल हो गई कि जब आप अपनी राए पेश करते तो वोह मुकम्मल इल्हामे रब्बानी का मज़्हर होती। येही वज्ह है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **اِنَّ لِكُلِّ اُمَّةٍ مُحَدَّثًا وَاِنَّ مُحَدَّثَ هٰذِهِ الْاُمَّةِ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ** "या'नी हर उम्मत में एक **मुह़द्दस** होता है, बेशक मेरी उम्मत के **मुह़द्दस** उ़मर बिन ख़त़्त़ाब हैं।"(1)

दूसरा नुक्ता

तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان खु़द से हिदायत याफ़्ता नहीं बल्कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ज़्लो करम से हिदायत याफ़्ता बने। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कु़रआने पाक में इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَ اِنَّكَ لَتَهْدِیْۤ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ﴿۵۲﴾﴾ (پ۲۵، الشوری:۵۲) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और बेशक तुम ज़रूर सीधी राह बताते हो।"

---

1 .....كنز العمال، كتاب الفضائل، فضائل الفاروق، الجزء: ۱۲، ج۶، ص ۲۶۹، حديث: ۳۵۸۶۸۔

ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पाकीज़ा ज़ाते मुबारका से सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की हिदायत व तरबिय्यत मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों से होती थी, कभी रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी बात का हुक्म इरशाद फ़रमाते, कभी किसी काम से मन्अ़ फ़रमा देते, इस त़रह़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को मा'लूम हो जाता कि फ़ुलां काम करना है और फ़ुलां काम नहीं करना। कभी किसी मुआ़मले में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जलाल फ़रमाते, कभी डराने वाला ख़ित़ाब फ़रमाते जिस से उस मुआ़मले की नौइय्यत सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان पर वाज़ेह़ हो जाती कि फ़ुलां काम को न करने की कितनी सख़्ती से मुमानअ़त है, और कभी फ़क़त़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बते मुबारका से ही तरबिय्यत हो जाती। पस रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अपने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को तम्बीह करना या उन की तहदीदो तख़्वीफ़ वग़ैरा येह सब उन को मर्तबए सआ़दत पर पहुंचाने के अस्बाब ही हैं और इस त़रह़ के वाक़िआ़त को तरबिय्यते नबवी के पैराए में बयान करते हुवे तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की शान और अ़ज़मत को बयान करना चाहिये। इसी बिना पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने अस्ह़ाब के बारे में रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में यूं अ़र्ज़ करते :

يَارَبِّ اِنِّي بَشَرٌ اَغْضِبُ كَمَا يَغْضِبُ الْبَشَرُ فَاَيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ سَبَبْتُ اَوْ لَعَنْتُ فَلَا تُعَاقِبْهُ بِهَا وَلَا تُعَذِّبْهُ وَاجْعَلْهَا لَهُ زَكَاةً وَاَجْرًا

"या'नी ऐ मेरे परवर दगार ! मेरी ज़ाहिरी सूरत बशर है और दूसरे इन्सानों की त़रह़ मैं भी ग़ुस्सा करता हूं लिहाज़ा हर वोह मुसलमान जिसे मैं ने सब्ब किया हो या उस पर किसी वज्ह से मलामत की हो तो मेरे इन अफ़्आ़ल के सबब न तो उस की पकड़ फ़रमाना और न ही अ़ज़ाब देना, बल्कि इन अफ़्आ़ल को क़ियामत के दिन उस के ह़क़ में रह़मत, पाकीज़गी और क़ुर्बत का ज़रीआ़ बना दे।"(1)

और अगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में से ऐसे अस्ह़ाब हों कि जिस की ज़ाते मुबारका रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के डराने के बिग़ैर ही आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मक़्सदे ह़क़ीक़ी तक पहुंच जाए तो येह रब عَزَّوَجَلَّ की इनायाते ख़ास्सा में से एक मख़्सूस इनायत है, कि इसे रब عَزَّوَجَلَّ अपने मख़्सूस बन्दों ही को नवाज़ता है। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से येह इनायते ख़ास्सा भी ह़ासिल हुई और बा'ज़ औक़ात तख़्वीफ़ो तहदीद या'नी डराने और धमकाने

---

(1) ......مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب من لعنہ النبی۔۔۔الخ، ص ۱۴۰۱، حدیث: ۸۹۔

वाली नबवी तरबिय्यत की सआदत भी ह़ासिल हुई। जब कि सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ तख़्वीफ़ो तहदीद वाली तरबिय्यते नबवी बहुत कम वुक़ूअ़ पज़ीर हुई।(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म की शान में आयते मुबारका का नुज़ूल

इसी सुल्ह़े हुदैबिय्या में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान में आयते मुबारका भी नाज़िल हुई, चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِیْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَ عَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ وَ اَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَ كَانُوْۤا اَحَقَّ بِهَا وَ اَهْلَهَاؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمًا۠(۲۶)﴾ (پ۲۶، الفتح:۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तो **अल्लाह** ने अपना इत्मीनान अपने रसूल और ईमान वालों पर उतारा और परहेज़गारी का कलिमा उन पर लाज़िम फ़रमाया और वोह उस के ज़ियादा सज़ावार और उस के अहल थे और **अल्लाह** सब कुछ जानता है।"(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म और कलिमए इख़्लास

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना : **اِنِّيْ لَاَعْلَمُ كَلِمَةً لَا يَقُوْلُهَا عَبْدٌ حَقًّا مِنْ قَلْبِهٖ اِلَّا حُرِّمَ عَلَى النَّارِ** "या'नी एक ऐसा कलिमा मेरे इ़ल्म में है जिस को कोई शख़्स सच्चे दिल से कहे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर जहन्नम की आग ह़राम फ़रमा देगा।" तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : **اَنَا اُحَدِّثُكُمْ مَّا هِيَ كَلِمَةُ الْاِخْلَاصِ الَّتِيْ اَلْزَمَهَا اللّٰهُ سُبْحَانَهٗ مُحَمَّدًا وَّ اَصْحَابَهٗ** "या'नी मैं तुम लोगों को बताता हूं कि वोह इख़्लास का कलिमा कौन सा है जिस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और उन के अस्ह़ाब पर लाज़िम फ़रमाया।" फिर फ़रमाया : "**कलिमतुत्तक़्वा** वोह है जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने चचा की मौत के वक़्त उन को फ़रमाया था या'नी **لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ**।(3) (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं)

---

1 ......ازالۃ الخفاء، ج ۳، ص ۱۷۶۔

2 ......ازالۃ الخفاء، ج ۳، ص ۱۷۱۔

3 ......مسند امام احمد، مسند عثمان بن عفان، ج ۱، ص ۱۳۸، حدیث: ۴۴۷۔

सुल्ह़ के लिये फ़ारूक़े आ'ज़म को भेजना

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुफ़्फ़ारे मक्का के साथ जब सुल्ह़ करना चाहीं तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बात चीत के लिये अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को भेजने का इरादा फ़रमाया, लेकिन आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने बसद आ़जिज़ी अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे कु़रैश की त़रफ़ से अपनी जान का ख़त़रा है, मक्कए मुकर्रमा में अ़दी बिन का'ब में से कोई ऐसा नहीं जो मेरी ह़िफ़ाज़त कर सके, आप तो जानते हैं कि कु़रैश मुझ से किस क़दर अ़दावत रखते हैं और मेरा रवय्या उन के ह़वाले से कितना सख़्त है, लेकिन मैं एक ऐसे शख़्स की निशान देही करता हूं जो मेरी ब निस्बत कु़रैश को ह़द दरजा अ़ज़ीज़ है और वोह उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हैं।"[1]

सुल्हे़ हु़दैबिय्या में फ़ारूक़े आ'ज़म बत़ौरे गवाह

सुल्हे़ हु़दैबिय्या में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को येह भी सआ़दत ह़ासिल हुई कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का नाम बत़ौरे गवाह सुल्ह़ नामे में तह़रीर किया गया। उस सुल्ह़ नामे के कातिब (लिखने वाले) अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे खु़दा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) थे। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के इ़लावा बाक़ी गवाहों में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه, ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सुहैल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه, ह़ज़रते सय्यिदुना मह़मूद बिन मस्लमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه, के अस्माए मुबारका सरे फ़ेहरिस्त हैं।[2]

सूरतुल फ़त्ह़ का नुज़ूल और फ़ारूक़े आ'ज़म

सुल्हे़ हु़दैबिय्या के मौक़अ़ पर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को एक ए'ज़ाज़ येह भी ह़ासिल हुवा कि जब सूरतुल फ़त्ह़ नाज़िल हुई तो सब से पहले रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से उस का ज़िक्र फ़रमाया। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को येह फ़रमाते सुना कि एक बार हम रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

1 ......سیرۃ ابن ھشام، عثمان رسول محمد الی قریش، ج ۲، ص ۲۶۸۔

2 ......سیرۃ ابن ھشام، من شھدوا علی الصلح، ج ۲، ص ۲۷۲۔

के साथ रात के वक़्त सफ़र में थे, मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कोई बात करना चाही तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ामोश रहे, मैं ने फिर बात करने की कोशिश की लेकिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ामोश रहे, मैं ने एक बार फिर बात करने की कोशिश की लेकिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस दफ़्आ़ भी ख़ामोश रहे। मुझे तशवीश लाह़िक़ हुई लिहाज़ा मैं ने अपने घोड़े को ह़रकत दी और आगे निकल गया, आगे जा कर मैं ने अपने आप से कहा :

ثَکِلَتْکَ اُمُّکَ یَا ابْنَ الْخَطَّابِ نَزَرْتَ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ کُلَّ ذٰلِکَ لَا یُکَلِّمُکَ مَا اَخْلَقَکَ بِاَنْ یَنْزِلَ فِیکَ قُرْآنٌ

"या'नी तेरी मां तुझे रोए ऐ ख़त्ताब़ के बेटे ! तू ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से तीन बार बात करने की कोशिश की लेकिन हर बार रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जवाब न दिया, क्या होगा कि जब तेरे बारे में कु़रआन की कोई आयत नाज़िल हो जाए।" फ़रमाते हैं कि थोड़ी ही देर बा'द एक शख़्स ज़ोर ज़ोर से मेरा नाम ले कर पुकारने लगा तो मैं फ़ौरन ही रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ लौट कर आ गया, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

یَا ابْنَ الْخَطَّابِ لَقَدْ اُنْزِلَ عَلَیَّ ھٰذِہِ اللَّیْلَۃَ سُوْرَۃٌ مَا اُحِبُّ اَنَّ لِي مِنْھَا مَا طَلَعَتْ عَلَیْہِ الشَّمْسُ اِنَّا فَتَحْنَا لَکَ فَتْحًا مُّبِیْنًا

"या'नी ऐ उ़मर ! आज की रात मुझ पर ऐसी सूरत नाज़िल हुई है जो मुझे हर उस चीज़ से प्यारी है जिस पर आफ़्ताब तुलूअ़ हुवा और वोह सूरत येह है : **اِنَّا فَتَحْنَا لَکَ فَتْحًا مُّبِیْنًا**।"(1)

सुल्ह़े हुदैबिय्या के नताइज

इस सुल्ह़ के नतीजे में मुसलमानों के लिये फ़ुतूह़ात का दरवाज़ा खुल गया और नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगले साल 11 रमज़ानुल मुबारक 8 हिजरी को बड़ी शानो शौकत के साथ तक़रीबन दस हज़ार सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के साथ मदीनए मुनव्वरा से मक्कए मुकर्रमा को रवाना हुवे और चन्द रोज़ बा'द 20 रमज़ानुल मुबारक को फ़त्ह़े अ़ज़ीम के साथ मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हुवे इसी का नाम फ़त्ह़े मक्का है।

रसूलुल्लाह का शाहाना मदनी जुलूस

मक्कए मुकर्रमा में मुसलमान इस शान से दाख़िल हुवे कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी ऊंटनी "क़स्वा" पर सुवार थे और आप एक सियाह रंग का इ़मामा बांधे हुवे

1 ......بخاری، کتاب المغازی، غزوۃ الحدیبیہ، ج ۳، ص ۷۳، حدیث: ۴۱۷۷۔

थे। आप के पीछे ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बैठे हुवे थे। आप के एक जानिब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और दूसरी जानिब ह़ज़रते सय्यिदुना उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे। आप के चारों त़रफ़ जोशो ख़रोश में भरा हुवा लश्कर था जिस के दरमियान रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शाही सुवारी थी। इस शाहाना जुलूस के जाहो जलाल के बा वुजूद ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने तवाज़ोअ़ का येह आ़लम था कि आप सूरए फ़त्ह़ की तिलावत फ़रमाते हुवे इस त़रह़ सर झुकाए ऊंटनी पर बैठे थे कि आप का सरे अन्वर ऊंटनी के पालान से बार बार लग जाता था। आप की येह कैफ़िय्यते तवाज़ोअ़ ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस का शुक्र अदा करने और उस की बारगाहे अ़ज़मत में अपनी इ़ज्ज़ो नियाज़ मन्दी का इज़्हार करने के लिये थी।(1)

﴾7 हिजरी﴿ ग़ज़वए ख़ैबर और फ़ारूक़े आ'ज़म

.....मुहर्रमुल ह़राम के महीने में हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ैबर पर लश्करकशी फ़रमाई। येह मदीनए मुनव्वरा से मुल्के शाम की जानिब बहुत से क़ल्ओं वाला शहर है जिस में यहूदी आबाद थे। मदीनए मुनव्वरा से मुल्के शाम की सम्त आठ[8] रोज़ की मसाफ़त पर वाक़ेअ़ है।

.....इस ग़ज़्वे में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चौदह सौ[1400] पैदल और दो सौ[200] सुवार सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के साथ इस मुहिम पर रवाना हुवे, उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी इस सफ़र में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह थीं।

.....मदीनए मुनव्वरा में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना सिबाअ़ बिन उ़रफ़ुत़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपना नाइब मुक़र्रर फ़रमाया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दस रोज़ से कुछ ऊपर उन का मुह़ासरा जारी रखा और आख़िरे कार सफ़रुल मुज़फ़्फ़र के महीने में उसे फ़त्ह़ कर लिया।(2)

इस ग़ज़वए ख़ैबर में भी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कई फ़ज़ाइल व शरफ़ ह़ासिल हुवे, जिन की तफ़्सील कुछ यूं है :

1 ......شرح الزرقانی علی المواهب، کتاب المغازی، باب غزوة الفتح الاعظم، ج ٣، ص ٤٣٢، सीरते सय्यिदुल अम्बिया, स. 171 मुलख़्ख़सन।

2 .....सीरते सय्यिदुल अम्बिया, स. 169।

लश्करे इस्लाम की दाईं जानिब की कमान्ड फ़ारूके़ आ'ज़म के पास

ग़ज़्वए ख़ैबर में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सब से बड़ी सआ़दत तो येही नसीब हुई कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मइय्यत में कुफ़्फ़ार के ख़िलाफ़ बर सरे पैकार थे, इस के इलावा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक येह सआ़दत भी ह़ासिल हुई कि आप को लश्करे इस्लाम की दाईं जानिब की कमान्ड दी गई।(1)

लश्कर के मुख़्तलिफ़ हि़स्सों के नाम

वाज़ेह़ रहे कि जंगी लश्कर और इस के मुख़्तलिफ़ हि़स्सों के मुख़्तलिफ़ नाम हैं, जिन की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

- .....**''मुक़द्दमतुल जैश'':** इस लश्कर को कहते हैं जिसे आगे भेज दिया जाए।
- .....**''त़लीआ़''** : इस लश्कर को कहते हैं जो फ़ौज के आगे दुश्मन की नक़्ल व ह़रकत का पता लगाता रहे, नीज़ पानी वाली और लश्कर ठहराने की बेहतरीन बा सहूलत जगह तलाश करे।
- .....**''हरावल''** : फ़ौज के उस थोड़े से हि़स्से को कहते हैं जो आगे आगे चले और लश्कर पेश ख़ैमा हो।
- .....**''मैमनह''** : दाईं त़रफ़ या दाईं बाज़ू की फ़ौज को कहा जाता है।
- .....**''मैसरह''** : बाईं त़रफ़ या बाईं बाज़ू की फ़ौज को कहा जाता है।
- .....**''मुक़द्दमा''** : फ़ौज के अगले हि़स्से को कहा जाता है।
- .....**''क़ल्ब''** : फ़ौज के दरमियानी हि़स्से को कहा जाता है।
- .....**''अ़क़ब''** : फ़ौज के पिछले हि़स्से को कहा जाता है।

फ़ारूके़ आ'ज़म की फ़त्हे़ ग़ज़्वए ख़ैबर में अ़ज़ीम मुआ़वनत

ग़ज़्वए ख़ैबर में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर रात किसी न किसी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़िम्मेदारी लगा देते थे जो रात को लश्कर की ह़िफ़ाज़त करता और दुश्मनों पर नज़र रखता। एक रात रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़िम्मेदारी लगाई, जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रात को पहरा दे रहे थे तो एक

1 ......ازالۃ الخفاء، ج۳، ص۱۷۶۔

यहूदी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़ब्ज़े में आ गया, उस को पकड़ कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश कर दिया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से ख़ैबर के हालात वग़ैरा दरयाफ़्त किये और उस के मुताबिक़ जंगी हिक्मते अ़मली तय्यार फ़रमाई। गोया सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का उस यहूदी को गिरिफ़्तार करना ग़ज़्वए ख़ैबर की फ़त्ह़ में बहुत मुआ़विन साबित हुवा।[1]

सिद्दीके़ अक्बर के बा'द फ़ारूके़ आ'ज़म को झन्डा दिया गया

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ग़ज़्वए ख़ैबर में येह भी सआ़दत ह़ासिल हुई कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को झन्डा अ़ता फ़रमाया। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने फ़रमाया :

لَمَّا نَزَلَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِحِصْنِ اَهْلِ خَيْبَرَ

اَعْطٰى رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللِّوَاءَ عُمَرَبْنَ الْخَطَّابِ وَنَهَضَ مَعَهُ مِنْ نَهَضٍ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ فَلَقُوْا اَهْلَ خَيْبَرَ

"या'नी जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ैबर वालों के क़ल्ए़ के क़रीब पहुंचे तो दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने झन्डा अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़ता फ़रमाया और मुसलमानों का एक लश्कर भी उन के साथ कर दिया फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अहले ख़ैबर पर चढ़ाई कर दी। बा'दे अज़ां आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह झन्डा अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़ता फ़रमाया।"[2]

बारगाहे रिसालत से ए'लान करने का हुक्म

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ग़ज़्वए ख़ैबर में येह भी सआ़दत ह़ासिल हुई कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

---

1 ......ازالة الخفاء، ج ٣، ص ١٧٦ ماخوذا۔

2 ......مسند امام احمد، حديث بريدة الاسلمی، ج ٩، ص ٢٨، حديث: ٢٣٠٩٣ مختصرا۔

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह निदा करने के लिये भेजा कि मोमिन ही जन्नत में जाएंगे। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खुद फ़रमाते हैं कि ख़ैबर के दिन कुछ सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان आपस में येह गुफ़्तगू कर रहे थे : **فُلَانٌ شَهِيدٌ فُلَانٌ شَهِيدٌ حَتّٰى مَرُّوا عَلٰى رَجُلٍ فَقَالُوا فُلَانٌ شَهِيدٌ** "या'नी फ़ुलां शख़्स भी शहीद हो गया, फ़ुलां भी शहीद हो गया, फिर एक शख़्स का तज़्किरा हुवा और उस के बारे में भी येही कहा कि फ़ुलां भी शहीद हो गया।" येह सुन कर नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **كَلَّا اِنِّي رَاَيْتُهُ فِي النَّارِ فِي بُرْدَةٍ غَلَّهَا اَوْ عَبَاءَةٍ** "या'नी येह हरगिज़ शहीद नहीं है, क्यूंकि चादर चुराने के सबब मैं ने इसे जहन्नम में देखा है।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे इरशाद फ़रमाया : **يَا ابْنَ الْخَطَّابِ اِذْهَبْ فَنَادِ فِي النَّاسِ اَنَّهُ لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ اِلَّا الْمُؤْمِنُونَ** "या'नी ऐ उ़मर ! जाओ और लोगों में ए'लान कर दो कि जन्नत में सिर्फ़ मोमिन ही दाख़िल होंगे। फ़रमाते हैं कि मैं गया और लोगों में येही ए'लान कर दिया।"(1)

ग़ज़्वए ख़ैबर में फ़ारूक़े आ'ज़म की फ़िरासत

ग़ज़्वए ख़ैबर में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक सआ़दत येह भी नसीब हुई कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक सहाबी को रह़्म की दुआ़ दी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी फ़िरासत से जान लिया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे शहादत की खुश ख़बरी सुनाई है। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमह बिन अक्वअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हम ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ख़ैबर की जानिब कूच किया, रात भर सफ़र का सिलसिला जारी रहा, ह़ज़रते सय्यिदुना उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना आ़मिर बिन अक्वअ़ से कहा : **اَلَا تُسْمِعُنَا مِنْ هُنَيْهَاتِكَ** "या'नी ऐ आ़मिर ! क्या आप हमें रजज़िय्या अश्आ़र नहीं सुनाएंगे ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नीचे उतरे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह अश्आ़र सुनाने लगे :

اَللّٰهُمَّ لَوْلَا اَنْتَ مَا اهْتَدَيْنَا وَلَا تَصَدَّقْنَا وَلَا صَلَّيْنَا

तर्जमा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अगर तू हिदायत न देता तो न तो आज हम हिदायत पाते, न ही सदक़ा करते और न ही नमाज़ें अदा करते।"

---

(1) ......مسلم، کتاب الایمان، غلظ تحریم الغلول...الخ، ص ۱۷، حدیث: ۱۸۲۔

فَاغْفِرْ فِدَاءً لَکَ مَا اَبْقَيْنَا وَثَبِّتِ الْاَقْدَامَ اِنْ لَّاقَيْنَا

तर्जमा : "जब तक सांस बाक़ी है तेरी राह में फ़िदा रहूं, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मग़फ़िरत का परवाना अ़ता फ़रमा और दुश्मन से मुक़ाबले के वक़्त हमें साबित क़दमी अ़ता फ़रमा।"

येह अश्आ़र सुन कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन को दुआ़ देते हुवे इरशाद फ़रमाया : **رَحِمَکَ رَبُّکَ** "या'नी तेरा रब عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़मो करम फ़रमाए।" रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की येह दुआ़ सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया : **وَجَبَتْ يَا نَبِيَّ اللّٰهِ وَاللّٰهِ لَوْ لَا اَمْتَعْتَنَا بِهٖ** "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस के ह़क़ में शहादत वाजिब हो गई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमें मज़ीद कुछ देर के लिये इन के अश्आ़र से मह़ज़ूज़ (लुत़्फ़ अन्दोज़) होने देते।" बहर ह़ाल वैसा ही हुवा कि ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अक्वअ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इसी ग़ज़्वए ख़ैबर में शहादत पाई।(1)

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की इस वज़ाह़त के बा'द सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह मो'जिज़ा मश्हूर हो गया कि जिसे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रह़्म की दुआ़ दे दें उसे शहादत नसीब हो जाती है।(2)

फ़ारूके़ आ'ज़म ने ख़ैबर की ज़मीन वक़्फ़ फ़रमा दी

ग़ज़्वए ख़ैबर के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को येह भी सआ़दत ह़ासिल हुई कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के ह़िस्से में जो ज़मीन आई आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उसे मुसलमानों के लिये वक़्फ़ फ़रमा दिया। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया कि ख़ैबर से मुझे कुछ ज़मीन मिली तो मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया :

يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اِنِّي اَصَبْتُ اَرْضًا بِخَيْبَرَ لَمْ اُصِبْ مَالًا قَطُّ اَنْفَسَ عِنْدِي مِنْهُ فَمَا تَاْمُرُ بِهٖ

1 ......بخاری، کتاب المغازی، غزوۃ خیبر، ج ۳، ص ۸۰، حدیث: ۴۱۹۶۔
عمدۃ القاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ خیبر، ج ۱۲، ص ۲۱۲، تحت الحدیث: ۴۱۹۶۔
ارشاد الساری، کتاب المغازی، باب غزوۃ خیبر، ج ۹، ص ۲۵۳، تحت الحدیث: ۴۱۹۶۔

2 .....सीरते सय्यिदुल अम्बिया, स. 404 माख़ूज़न

"या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ैबर की जो ज़मीन मेरे हिस्से में आई है ऐसा नफ़ीस माल कभी नहीं मिला, आप इरशाद फ़रमाइये कि मैं इस का क्या करूं ?" रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنْ شِئْتَ حَبَسْتَ اَصْلَهَا وَتَصَدَّقْتَ بِهَا "या'नी ऐ उ़मर ! अगर तुम चाहो तो इसे उस त़रह़ वक़्फ़ कर दो कि वोह ज़मीन तुम्हारी रहे और उस से ह़ासिल होने वाला नफ़्अ़ मुसलमानों को ह़ासिल हो।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं :

فَتَصَدَّقَ بِهَا عُمَرُ اَنَّهُ لَا يُبَاعُ وَلَا يُوهَبُ وَلَا يُورَثُ وَتَصَدَّقَ بِهَا

فِي الْفُقَرَاءِ وَفِي الْقُرْبٰى وَفِي الرِّقَابِ وَفِي سَبِيلِ اللهِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَالضَّيْفِ لَا جُنَاحَ عَلٰى مَنْ وَلِيَهَا اَنْ يَاْكُلَ مِنْهَا بِالْمَعْرُوفِ

"या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने उस ज़मीन को इन शराइत़ पर वक़्फ़ कर दिया कि न तो उस ज़मीन को बेचा जाएगा, न ही हिबा किया जाएगा और न तो उस का वारिस बनाया जाएगा। उस का नफ़्अ़ फ़ुक़रा, क़राबत दार, ग़ुलामों को आज़ाद करने, राहे ख़ुदा, मुसाफ़िरों और मेहमानों पर ख़र्च किया जाए। और जो उस ज़मीन का मुतवल्ली हो तो उस पर (उ़र्फ़ के मुत़ाबिक़) खाने में कोई ह़रज नहीं।"(1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿8 हिजरी﴾ ग़ज़वए फ़त्ह़े मक्का और फ़ारूक़े आ'ज़म

..... हुदैबिय्या का मुआ़हदा जो हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और क़ुरैश के दरमियान था, क़ुरैश ने तोड़ डाला, क्यूंकि उन्हों ने क़बीला बनू ख़ुज़ाआ़ से जंग की जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़िफ़ाज़त और अमान में थे। क़ुरैश ने येह अ़ह्द शिकनी शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 8 सिने हिजरी में सुल्ह़े हुदैबिय्या के बाईस माह के बा'द की।

.....इस ग़ज़्वे को **"ग़ज़वए फ़त्ह़े मक्का"** कहा जाता है और मुसलमानों की येह अ़ज़ीम तरीन फ़त्ह़ है कि इस के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और अपने दीन को ग़लबा अ़त़ा फ़रमाया, चुनान्चे, इस के बा'द अर्ज़े ह़िजाज़ में कोई काफ़िर न रहा। येह ग़ज़्वा रमज़ानुल मुबारक में हुवा और इस पर उ़लमाए किराम का इत्तिफ़ाक़ है। इस से पहले अहले अ़रब इस बात का इन्तिज़ार कर रहे थे कि अगर हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मक्कए मुकर्रमा पर फ़त्ह़ ह़ासिल कर लें तो वोह भी दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो जाएं, चुनान्चे, जब येह फ़त्ह़े अ़ज़ीम जुहूर पज़ीर हुई तो लोग दौड़ते हुवे इस्लाम लाने लगे। इस फ़त्ह़ के बा'द मुशरिकों के लिये कोई

1 ......بخاری، کتاب الشروط، باب الشروط فی الوقف، ج ۲، ص ۲۲۹، حدیث: ۲۷۳۷۔

जाए फ़िरार बाक़ी न रही। रब عَزَّوَجَلَّ ने इस फ़त्ह़ के ज़रीए़ अपने दीन को ग़ालिब फ़रमाया और अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मुज़फ़्फ़र व फ़त्ह़मन्द फ़रमा दिया। येह ऐसी फ़त्ह़ थी कि ज़मीनो आस्मान वाले मुबारक बाद पेश करने लगे।

.....सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस ग़ज़्वे के लिये बुध के दिन, अ़स्र के बा'द दस[10] रमज़ान शरीफ़ को मदीनए मुनव्वरा से रवाना हुवे एक क़ौल के मुत़ाबिक़ आप दो[2] रमज़ानुल मुबारक को रवाना हुवे। इस ग़ज़्वे के वुक़ूअ़ की तारीख़ में तीन[3] त़रह़ के अक़्वाल हैं, 17 रमज़ानुल मुबारक, 29 रमज़ानुल मुबारक और 20 रमज़ानुल मुबारक। फ़त्ह़े मक्का के दिन में भी इख़्तिलाफ़ है, मश्हूर येह है कि वोह जुमुअ़तुल मुबारक का दिन था।

.....रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दस हज़ार सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के साथ तशरीफ़ ले गए और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को मदीनए मुनव्वरा में अपना नाइब मुक़र्रर फ़रमाया। बा'ज़ उ़लमा के नज़्दीक ह़ज़रते सय्यिदुना अबू रुह्म कुल्सूम बिन ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को नाइब मुक़र्रर फ़रमाया।

इस ग़ज़्वए फ़त्ह़े मक्का में भी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को कई फ़ज़ाइल व शरफ़ ह़ासिल हुवे, जिन की तफ़्सील कुछ यूं है :

सुल्ह़ की दरख़्वास्त रद कर देने पर फ़ारूके आ'ज़म की ताईद

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को ग़ज़्वए फ़त्ह़े मक्का में सब से बड़ी सआ़दत ह़ासिल हुई कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रफ़ाक़त नसीब हुई, इस के इ़लावा येह भी सआ़दत ह़ासिल हुई कि जब कुफ़्फ़ारे मक्का का मश्हूर सरदार अबू सुफ़्यान सुल्ह़ के क़दीम मुआ़हदे को मुस्तह़्कम करने की दरख़्वास्त ले कर आया तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस की दरख़्वास्त को रद कर दिया, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की भी ताईद ह़ासिल हुई। चुनान्चे,

जब ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ ले गए तो उस वक़्त ज़मानए जाहिलिय्यत में क़बीलए बनू ख़ुज़ाआ़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ह़लीफ़ क़बीला था, जब कि क़बीलए बनू बक्र कुफ़्फ़ारे क़ुरैश का

हलीफ़ था लिहाज़ा बनू ख़ुज़ाआ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुल्ह़ में दाख़िल थे और बनू बक्र क़ुरैश की सुल्ह़ में दाख़िल थे। बनू ख़ुज़ाआ और बनू बक्र के दरमियान जंग छिड़ गई तो कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने बनू बक्र की मदद की, उन्हें अस्लिह़ा दिया, खाने पीने का सामान वग़ैरा भी दिया नीज़ उन की पुश्त पनाही भी की। इस जंगी मदद के नतीजे में बनू बक्र को बनू ख़ुज़ाआ पर ग़लबा ह़ासिल हो गया और उन के बहुत से अफ़राद क़त्ल हुवे, अब क़ुरैश ख़ौफ़ज़दा हुवे कि मुसलमान कहीं मुआ़हदा न तोड़ दें। लिहाज़ा उन्हों ने बच बचाव के लिये अपने बा असर सरदार अबू सुफ़्यान[1] को भेजा ताकि वोह मुआ़हदे को मज़बूत़ करे और लोगों में सुल्ह़ कराए। चुनान्चे, अबू सुफ़्यान मदीनए मुनव्वरा पहुंचा। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब को ग़ैब की ख़बर देते हुवे इरशाद फ़रमाया : قَدْ جَاءَكُمْ اَبُوْ سُفْيَانَ وَسَيَرْجِعُ رَاضِياً بِغَيْرِ حَاجَتِه "या'नी अबू सुफ़्यान तुम्हारे पास आ रहा है और अ़न क़रीब वोह राज़ी ख़ुशी अपना काम मुकम्मल किये बिग़ैर ही वापस लौट जाएगा।" अबू सुफ़्यान ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आया और कहने लगा कि "ऐ अबू बक्र ! लोगों से कहो कि मुआ़हदे की पासदारी करें।"

सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : لَيْسَ الْاَمْرُ اِلَيَّ اَلْاَمْرُ اِلَى اللّٰهِ وَاِلٰى رَسُوْلِهٖ "या'नी येह मुआ़मला मेरे हाथ में नहीं है बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास है।" फिर वोह सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में आया और उन से भी वोही बात कही जो सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कही थी, उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : اَنَقَضْتُمْ فَمَا كَانَ مِنْهُ جَدِيْداً فَاَبْلَاهُ اللّٰهُ وَمَا كَانَ مِنْهُ شَدِيْداً اَوْ قَالَ مَتِيْناً فَقَطَعَهُ اللّٰهُ "या'नी मुआ़हदा तुम लोगों ने तोड़ा है, अब इस में जो नई बात पैदा हुई है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इसे पुराना कर देगा और जो सख़्त बात पैदा हुई है उसे ख़त्म फ़रमा देगा।"

अबू सुफ़्यान ने बड़ी ह़ैरत से कहा : مَا رَاَيْتُ كَالْيَوْمِ شَاهِدَ عَشِيْرَةٍ "या'नी मैं ने ऐसा मज़बूत़ मुआ़शरा आज तक नहीं देखा।" (कि जिस में सब की राए एक ही हो।) बहर ह़ाल वोह दीगर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के पास भी गया लेकिन हर जगह से तक़रीबन येही जवाब मिला और वोह वापस मक्का लौट गया।[2]

---

1 .....सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बा'द में फ़त्ह़े मक्का के मौक़अ़ पर मुसलमान हो गए थे।

2 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب المغازی، حدیث فتح مکة، ج۸، ص ۵۳۱، حدیث: ۴۔

ग़ज़्वए फ़त्हे मक्का के लिये फ़ारूक़े आ'ज़म की राए को तरजीह

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक बहुत बड़ी सआ़दत येह भी ह़ासिल हुई कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ज़्वए फ़त्हे मक्का के मुआ़मले में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए को तरजीह़ दी। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ह़नफ़िय्या رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक दिन रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने ह़ुजरए मुबारका से बाहर तशरीफ़ लाए और दरवाज़े पर ही तशरीफ़ फ़रमा हो गए। आप की आ़दते मुबारका थी कि जब तन्हाई में तशरीफ़ फ़रमा होते तो आप की इजाज़त के बिग़ैर कोई नहीं आता था जब तक कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुद किसी को अपने पास न बुलाएं।

चुनान्चे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने थोड़ी देर बा'द इरशाद फ़रमाया : **اُدْعُ لِیْ اَبَابَکْرٍ** "या'नी अबू बक्र को मेरे पास बुला कर लाओ।" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुला लाए। जैसे ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ाज़िर हुवे तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने बैठ गए। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से काफ़ी देर तक गुफ़्तगू फ़रमाते रहे। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी दाईं त़रफ़ बिठा लिया। फिर इरशाद फ़रमाया : **اُدْعُ لِیْ عُمَرَ** "या'नी उ़मर को मेरे पास बुला कर लाओ।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ाज़िर हुवे और सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ बैठ गए। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से भी काफ़ी देर तक गुफ़्तगू फ़रमाते रहे लेकिन इस गुफ़्तगू में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आवाज़ बुलन्द हो गई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अ़र्ज़ कर रहे थे : **یَارَسُوْلَ اللّٰہِ ھُمْ رَاْسُ الْکُفْرِ ھُمُ الَّذِیْنَ زَعَمُوْا اَنَّکَ سَاحِرٌ وَاَنَّکَ کَاھِنٌ وَاَنَّکَ کَذَّابٌ وَاَنَّکَ مُفْتَرٍ** "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अहले मक्का कुफ़्र के बड़े सरदार हैं, येह वोह लोग हैं जिन्हों ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जादूगर कहा, काहिन कहा, झूटा कहा, बोहतान लगाने वाला कहा।" बहर ह़ाल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुफ़्फ़ारे मक्का के ख़िलाफ़ दीगर अहम बातें भी बयान कर दीं। फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी दूसरी जानिब बिठा दिया। अब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की एक जानिब सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और दूसरी जानिब सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ फ़रमा थे।

✿.....फिर आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को बुलाया और इरशाद फ़रमाया : اَلَا اُحَدِّثُكُمْ بِمِثْلِ صَاحِبَيْكُمْ هٰذَيْنِ؟ "या'नी क्या मैं तुम्हें इन दोनों की मिसाल न बयान करूं ?" सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया : "क्यूं नहीं या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ज़रूर बयान फ़रमाइये !"

✿.....फिर आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना रुखे़ अन्वर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जानिब किया और इरशाद फ़रमाया : اِنَّ اِبْرَاهِيْمَ كَانَ اَلْيَنَ فِي اللّٰهِ مِنَ الدُّهْنِ فِي اللَّبَنِ "या'नी बेशक ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुआ़मले में वैसे ही नर्म थे जैसे दूध में मौजूद घी ।"

✿.....फिर आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना रुखे़ अन्वर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जानिब किया और इरशाद फ़रमाया : اِنَّ نُوْحًا كَانَ اَشَدَّ فِي اللّٰهِ مِنَ الْحَجَرِ "या'नी बेशक ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुआ़मले में पथ्थर से ज़ियादा सख़्त थे ।"

✿.....फिर आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : وَاِنَّ الْاَمْرَ اَمْرُ عُمَرَ فَتَجَهَّزُوْا "या'नी जो उ़मर ने राए दी है उसी पर अ़मल किया जाएगा लिहाज़ा तमाम लोग तय्यारी करें ।"

येह सुन कर तमाम सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان खड़े हो गए और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास जा कर अ़र्ज़ करने लगे : يَا اَبَا بَكْرٍ اِنَّا كَرِهْنَا اَنْ نَسْاَلَ عُمَرَ مَا هٰذَا الَّذِيْ نَاجَاكَ بِهٖ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ "या'नी ऐ सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हम सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से सुवाल करते हुवे हिचकिचाते हैं, आप ख़ुद ही इरशाद फ़रमाइये कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से आप लोगों की क्या बात हुई ?" सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : قَالَ لِيْ كَيْفَ تَامُرُوْنِيْ فِيْ غَزْوِ مَكَّةَ؟ "या'नी रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से ग़ज़्वए मक्का के मुतअ़ल्लिक़ मश्वरा त़लब फ़रमाया ।" तो मैं ने अ़र्ज़ किया : يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ هُمْ قَوْمُكَ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह आप ही की क़ौम है" (या'नी उन के साथ नर्मी इख़्तियार फ़रमाएं) । सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं समझा शायद रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी बात को तस्लीम कर लेंगे

लेकिन आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलाया और उन से भी येही मश्वरा त़लब फ़रमाया तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह कुफ़्फ़ार के सर्गना हैं, फिर उन्हों ने उन की तमाम गुस्ताख़ियां गिनवानी शुरूअ़ कर दीं और जो जो कुफ़्फ़ारे मक्का बातें किया करते थे और साथ ही येह भी अ़र्ज़ किया : وَ اَیْمُ اللّٰہِ لَا تَذِلُّ الْعَرَبُ حَتّٰی یَذِلَّ اَھْلُ مَکَّۃَ "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अहले अ़रब उस वक़्त तक मग़्लूब न होंगे जब तक अहले मक्का ज़ेर न हो जाएं। तो आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर के मश्वरे के मुत़ाबिक़ कुफ़्फ़ारे मक्का के ख़िलाफ़ जंग की तय्यारी का हुक्म इरशाद फ़रमाया है।"[1]

दोनों रिवायात से ह़ासिल होने वाले मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला दोनों रिवायतों से दर्जे ज़ैल मदनी फूल ह़ासिल हुवे :

.....मा'लूम हुवा कि मुसलमान हमेशा से अपने मुआ़हदों की पाबन्दी करते आए हैं और कुफ़्फ़ार शुरूअ़ से मुसलमानों को धोका देते आए हैं, लिहाज़ा बेहतर येह है कि मुसलमान का लैन दैन मुसलमान से हो ताकि धोका वग़ैरा का मुआ़मला न हो और मुसलमानों का माल वग़ैरा मुसलमानों ही के पास जाए कुफ़्फ़ार उस से फ़ाइदा न उठाएं।

.....कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की त़रफ़ से जब अबू सुफ़्यान सफ़ीर बन कर आया तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहले ही सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को इस पर मुत्त़लअ़ फ़रमा दिया और येह भी बता दिया कि वोह ख़ुशी ख़ुशी यहां से जाएगा अलबत्ता जिस मक़्सद के लिये आएगा वोह मक़्सद पूरा न हो पाएगा। मा'लूम हुवा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से ग़ैबों पर ख़बरदार हैं, ग़ैब जानते और ग़ैब की ख़बरें सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को देते भी हैं।

.....सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का भी येह मुबारक अ़क़ीदा था कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से ग़ैब की ख़बरें देते हैं, क्यूंकि अगर वोह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इल्मे ग़ैब का अ़क़ीदा न रखते तो यक़ीनन रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस बात के बारे में पूछते कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अभी तो अबू सुफ़्यान आया भी नहीं और

---

1 .....مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب المغازی، حدیث فتح مکۃ، ج۸، ص ۵۴۲، حدیث: ۵۳۔

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के बारे में पहले ही बता दिया ? लेकिन सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ग़ैब की ख़बरें सुनते ही रहते थे। जिस पर मुख़्तलिफ़ अहादीस शाहिद हैं।

.....सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से सुल्ह के मुआमले पर बात करने के बा'द अबू सुफ़्यान जैसे उस वक़्त के सरदार भी सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के गुन गाने पर मजबूर हो गए और ऐसा क्यूं न होता कि तमाम सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان बारगाहे नबवी ही के तरबिय्यत याफ़्ता थे।

.....अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने चूंकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुबारक सुन लिया था इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अबू सुफ़्यान को सुल्ह के मुआमले में मायूस कर दिया। इस से आप की वाज़ेह शाने करीमी ज़ाहिर हुई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द दीगर सहाबा ने भी आप की इत्तिबाअ़ की।

.....येह भी मा'लूम हुवा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नज़दीक सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बड़ा मक़ामो मर्तबा है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मश्वरे के बा'द आप के मश्वरे की ताईद भी फ़रमाई।

ग़ज़वए फ़त्हे मक्का की ख़बर देने पर फ़ारूक़े आ'ज़म का जलाल

हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ज़वए फ़त्हे मक्का का मुआमला ख़ुफ़्या रखा, अलबत्ता एक साहिब ने इस की ख़बर मस्लिहत के सबब कुफ़्फ़ारे मक्का तक पहुंचाने की कोशिश की तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जलाल में आ गए और ग़ैरते ईमानी के सबब उन साहिब को क़त्ल करने की इजाज़त त़लब की। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ज़वए फ़त्हे मक्का की ख़बर चन्द मख़्सूस अस्हाब तक महदूद रखी जिन में हज़रते हातिब बिन अबी बल्तआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी थे। चुनान्चे, उन्हों ने अहले मक्का को एक ख़त लिखा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तुम्हारे ख़िलाफ़ जिहाद करना चाहते हैं। लेकिन रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ब ज़रीअ़ए वह्य ख़बर दे दी, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे (या'नी सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को) और हज़रते अबू

मर्सद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को भेजा, हमारे पास तेज़ रफ़्तार घोड़े थे, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ैब की ख़बर देते हुवे इरशाद फ़रमाया : اِئْتُوْا رَوْضَةَ خَاخٍ فَاِنَّکُمْ سَتُلْقَوْنَ بِهَا امْرَاَةً وَمَعَهَا کِتَابٌ فَخُذُوْهُ مِنْهَا "या'नी "ख़ाख़" बाग़ पर पहुंच जाओ, वहां तुम्हें एक औरत मिलेगी, उस के पास ख़त़ होगा वोह ख़त़ उस से ले लो।" हम चल पड़े और मुक़र्ररा जगह पर पहुंचे तो वाक़ेई हमें वहां एक औरत मिली, हम ने औरत से ख़त़ त़लब किया, उस ने कहा कि मेरे पास ख़त़ नहीं है। हम ने उस औरत का साज़ो सामान तलाश किया तो उस में से भी ख़त़ बर आमद न हुवा। ह़ज़रते अबू मर्सद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बोले : فَلَعَلَّهُ اَنْ لَّا يَكُوْنَ مَعَهَا كِتَابٌ "या'नी हो सकता है इस के पास ख़त़ न हो।" लेकिन फिर हम ने कहा कि जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है तो यक़ीनन इस के पास ख़त़ होगा क्यूंकि न तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुद झूट बोलते हैं और न ही उन्हों ने कभी हम से झूट बोला। हम ने उस औरत को धमकाया तो उस ने अपने बालों में से ख़त़ निकाल कर दे दिया। हम वोह ख़त़ ले कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में पहुंचे। आप ने जब ख़त़ को खोला तो वोह ह़ज़रते इब्ने अबी बल्तआ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़त़ निकला। येह देख कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जलाल में आ गए और खड़े हो कर अ़र्ज़ किया : يَارَسُوْلَ اللّٰهِ خَانَ اللّٰهَ وَخَانَ رَسُوْلَهُ اِئْذَنْ لِّيْ فَاضْرِبْ عُنُقَهُ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ख़ियानत की है मुझे इजाज़त दीजिये ताकि मैं इस की गर्दन उड़ा दूं।"

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रह़मत व शफ़्क़त से भरपूर जवाब देते हुवे सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : اَلَيْسَ قَدْ شَهِدَ بَدْرًا؟ "या'नी क्या येह ग़ज़्वए बद्र में शरीक न थे ?" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया : "क्यूं नहीं या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह तो ग़ज़्वए बद्र में शरीक थे।"

लेकिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : بَلٰی وَلٰكِنَّهُ قَدْ نَكَثَ وَظَاهَرَ اَعْدَاءَكَ عَلَيْكَ "या'नी इस ने बद्र में ज़रूर शिर्कत की है लेकिन आप के दुश्मनों की आप के ख़िलाफ़ पुश्त पनाही भी की है।" रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : فَلَعَلَّ اللّٰهَ قَدِ اطَّلَعَ عَلٰى اَهْلِ بَدْرٍ فَقَالَ: اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ "या'नी शायद इसी लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अहले बद्र पर नज़रे रह़मत फ़रमाई है और येह भी इरशाद फ़रमाया कि तुम जो चाहे करो।" येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रोने लग गए और अ़र्ज़ करने लगे :

اَللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَمُ "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं।" रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलाया और इरशाद फ़रमाया : مَاحَمَلَکَ عَلٰی مَاصَنَعْتَ؟ "या'नी तुम से ऐसा फ़े'ल क्यूं सरज़द हुवा ?" अ़र्ज़ किया :

يَارَسُوْلَ اللّٰهِ كُنْتُ اِمْرَاً مُلْصِقًا فِيْ قُرَيْشٍ، وَكَانَ بِهَا اَهْلِيْ وَمَالِيْ وَلَمْ يَكُنْ مِّنْ اَصْحَابِکَ اَحَدٌ اِلَّا وَلَهٗ بِمَكَّةَ مَنْ يَمْنَعُ اَهْلَهٗ وَمَالَهٗ فَكَتَبْتُ اِلَيْهِمْ بِذٰلِکَ وَاللّٰهِ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ اِنِّيْ لَمُؤْمِنٌ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِه "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ुरैश से मेरी कोई रिश्तेदारी नहीं, हां मेरे घर वाले और माल वग़ैरा मक्का में ही है और मेरा वहां कोई ऐसा नहीं जो उन की ह़िफ़ाज़त करे, आप के दीगर अस्ह़ाब के क़बाइल के कई लोग ऐसे हैं जो उन के अहलो माल वग़ैरा की ह़िफ़ाज़त करने वाले हैं, लेकिन मेरा कोई नहीं इस लिये मैं ने उन के साथ कोई एह़सान करने का सोचा ताकि मेरे अहलो माल मह़फ़ूज़ रहें और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान रखता हूं।"

येह सुन कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

صَدَقَ حَاطِبٌ فَلَا تَقُوْلُوْا لِحَاطِبٍ اِلَّا خَيْرًا "ह़ातिब ने सच कहा है, लिहाज़ा अब ह़ातिब के लिये अच्छाई के इलावा कोई बात न की जाए।" इस के बा'द येह आयते करीमा नाज़िल हो गई :

﴿ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّيْ وَعَدُوَّكُمْ اَوْلِيَآءَ تُلْقُوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ وَاِيَّاكُمْ اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ؕ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِيْ سَبِيْلِيْ وَابْتِغَآءَ مَرْضَاتِيْ ۖ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖ وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَاۤ اَخْفَيْتُمْ وَمَاۤ اَعْلَنْتُمْ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ۝ ﴾ (پ۲۸، الممتحنة: ۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ ईमान वालो मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ तुम उन्हें ख़बरें पहुंचाते हो दोस्ती से ह़ालांकि वोह मुन्किर हैं उस ह़क़ के जो तुम्हारे पास आया घर से जुदा करते हैं रसूल को और तुम्हें उस पर कि तुम अपने रब अल्लाह पर ईमान लाए अगर तुम निकले हो मेरी राह में जिहाद करने और मेरी रिज़ा चाहने को तो उन से दोस्ती न करो तुम उन्हें ख़ुफ़्या पयाम मह़ब्बत का भेजते हो और मैं ख़ूब जानता हूं जो तुम छुपाओ और जो ज़ाहिर करो और तुम में जो ऐसा करे वोह बेशक सीधी राह से बहका।"(1)

(1) ......بخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ الفتح، ج۳، ص۹۹، حدیث: ۴۲۷۴۔
کنز العمال، کتاب الغزوات والوفود، غزوۃ الفتح، الجزء: ۱۰، ج۵، ص۲۳۵، حدیث: ۳۰۱۸۰ ملتقطا۔

रिवायत से हासिल होने वाले मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! मज़्कूरए बाला रिवायत से दर्जे ज़ैल मदनी फूल हासिल हुवे :

हज़रते सय्यिदुना हातिब बिन अबी बल्तआ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़त के मज़्मून में कुफ़्फ़ार को लश्करे इस्लाम से ख़ौफ़ज़दा करने और उन की दिल शिकनी करने का बेहतरीन सामान मौजूद था। उस ख़त का मज़्मून येह था : **اما بعد!** ऐ कुरैश की जमाअत ! बेशक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तुम्हारे पास एक बहुत बड़ा लश्कर ले कर आ रहे हैं जो सैलाब की तरह चलता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर वोह तुम्हारे पास तन्हा भी आएं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की मदद फ़रमाएगा और उन से किये गए वा'दे को पूरा फ़रमाएगा।

.....मज़्कूरए बाला रिवायत से येह मा'लूम हुवा कि ईमान व यक़ीन का तअल्लुक़ दिल के साथ है, अगर कोई शख़्स सच्चे दिल से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से महब्बत करता है लेकिन इस के बा वुजूद ब तक़ाज़ए बशरिय्यत (इन्सान होने की वज्ह से) उस से कोई ऐसी बात सरज़द हो जाए जो ना पसन्दीदए इलाही हो और बन्दा उस पर नादिम हो तो रब عَزَّوَجَلَّ अपने अफ़्वो करम से मुआफ़ फ़रमा देता है। जैसा कि हज़रते सय्यिदुना हातिब बिन अबी बल्तआ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सच्ची पक्की महब्बत करते थे लेकिन अहलो माल की हिफ़ाज़त के सबब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से येह लग़्ज़िश हो गई जिस की बारगाहे रिसालत में वज़ाहत करते ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बारगाहे रिसालत से अफ़्वो दर गुज़र का परवाना मिला।

.....इस रिवायत से अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान भी ज़ाहिर होती है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुआमले में किसी की भी रिआयत न फ़रमाते, मगर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिसे अमान अता फ़रमा दें उस के बारे में नर्मी इख़्तियार फ़रमाते थे।

अशरफ़ुल उलमा शैख़ुल हदीस अल्लामा मुहम्मद अशरफ़ सियालवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی यहां एक नुक्ता बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : "अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना हातिब बिन बल्तआ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सर क़लम करने की इजाज़त तलब की क्यूंकि सय्यिदुना हातिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस इक़्दाम से ख़ुद हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका को भी नुक़्सान पहुंच सकता था कि कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन चोकस हो जाते और घात

लगा कर अचानक ह़म्ला आवर हो जाते। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान اَشِدَّآءُ عَلَی الْکُفَّارِ (कुफ़्फ़ार पर सख़्ती) वाली थी लिहाज़ा आप ने सय्यिदुना ह़ातिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस इक़्दाम को जो इस्लाम के लिये बिल उ़मूम और ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये बिल ख़ुसूस ईज़ा व तक्लीफ़ का मूजिब हो सकता था और मक़्सद के ह़ुसूल में भी बहुत बड़ी रुकावट बन सकता था मुनाफ़क़त पर मह़मूल फ़रमाया और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से उन के क़त्ल की इजाज़त त़लब की क्यूंकि उन्हें इस इक़्दाम से निफ़ाक़ में ग़लबए ज़न ही ह़ासिल हुवा था न कि यक़ीन, लिहाज़ा आप ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इज़्न त़लब किया ताकि आप की त़रफ़ से इजाज़त मिल जाने पर इस इरादे को अ़मली जामा पहनाया जाए न कि मह़ज़ ज़न व गुमान पर येह इक़्दाम किया जाए।(1)

....सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिब बिन बल्तआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते मुबारका से ब तक़ाज़ाए बशरिय्यत किसी लग़्ज़िश का वाक़ेअ़ होना और उन की सफ़ाई ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का देना इस बात पर वाज़ेह़ दलालत करता है कि किसी आ़म आदमी का मुआ़मला और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबी का मुआ़मला एक जैसा नहीं है।

.....रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आख़िरी अल्फ़ाज़े मुबारका सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत के मुआ़मले में तमाम लोगों के लिये मश्अ़ले राह हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि अब उन के बारे में कोई अच्छाई के इ़लावा बात न करे। मा'लूम हुवा कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के बारे में सिर्फ़ अच्छा ही कलाम करना, उन की ऐ़बजूई के बजाए उन की आ'ला सिफ़ात को बयान करना ज़रूरी है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दुश्मने ख़ुदा व रसूल के मुआ़मले में फ़ारूक़े आ'ज़म का जलाल

जब फ़त्ह़े मक्का का मौक़अ़ आया तो ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लश्कर के साथ मक्कए मुकर्रमा से बाहर रात के वक़्त ''मर्रुज़्ज़ह्रान'' पर उतरे। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दिल में सोचा कि अफ़्सोस क़ुरैश पर कितनी भयानक सुब्ह़ आने वाली है!

1.....सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, स. 137 मुलख़्ख़सन।

ख़ुदा की क़सम ! अगर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बज़ोरे शमशीर मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हुवे और क़ुरैश ने बढ़ कर अम्न की दरख़्वास्त न की तो वोह क़ियामत तक के लिये तबाहो बरबाद हो जाएंगे ।" फिर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़च्चर पकड़ा और उस पर सुवार हो कर ऐसे लोगों को ढूंडने लगे कि जिन्हें रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश करें । इतने में अबू सुफ़्यान की आवाज़ आई, वोह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लश्कर को देख कर इस पर तबसेरा कर रहे थे । आप उन के पास पहुंच गए और उन्हें बताया कि येह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का लश्कर है, फिर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अबू सुफ़्यान को अपने पीछे बिठाया ताकि उसे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश करें ।

आप मुसलमानों के लश्कर में दाख़िल हो गए जो भी देखता तो पूछता कि येह कौन हैं ? लेकिन जब येह देखता कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा हैं तो मुत़्मइन हो जाता, यहां तक कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के पास से गुज़रे तो वोह फ़ौरन खड़े हो गए और पूछा कि येह कौन है ? ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि मैं अ़ब्बास हूं, फिर सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने आप के पीछे अबू सुफ़्यान को बैठे देखा तो पहचान लिया और जलाल में आ गए, फ़रमाया : اَبُو سُفْيَانُ! عَدُوُّ اللّٰهِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَمْكَنَ مِنْكَ بِغَيْرِ عَقْدٍ وَّلَا عَهْدٍ "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अबू सुफ़्यान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दुश्मन है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है कि येह बिग़ैर किसी अ़ह्दो पैमान के हमारे हाथ लग गया है ।" फिर सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه व सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه दोनों बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो गए, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया : يَارَسُوْلَ اللّٰهِ هٰذَا اَبُوْ سُفْيَانَ عَدُوُّ اللّٰهِ قَدْ اَمْكَنَ اللّٰهُ مِنْهُ بِلَا عَهْدٍ وَّلَا عَقْدٍ فَدَعْنِيْ اَضْرِبْ عُنُقَهٗ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह अबू सुफ़्यान है, जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का दुश्मन है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इसे बिग़ैर किसी अ़ह्द और अ़क़्द के हमारे ह़वाले कर दिया है, आप मुझे इजाज़त अ़त़ा फ़रमाएं ताकि मैं इस की गर्दन उड़ा दूं ।"

सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया कि येह मेरी पनाह में है । बहर ह़ाल ह़ज़रते उ़मर इस्रार करते रहे तो मैं ने उन से कहा :

مَهْلًا يَا عُمَرُ اَمَا وَاللّٰهِ لَوْ كَانَ مِنْ رِجَالِ بَنِيْ عَدِيِّ بْنِ كَعْبٍ مَا قُلْتَ هٰذَا وَلٰكِنَّهُ اَحَدُ بَنِيْ عَبْدِ مُنَافٍ

"या'नी ऐ उ़मर ! बस कीजिये, अगर इस की जगह कोई आप के क़बीले बनी अ़दी बिन का'ब का होता तो आप इस त़रह़ की बात न करते, लेकिन येह बनी अ़ब्दे मुनाफ़ से तअ़ल्लुक़ रखता है इस लिये आप बार बार इस के क़त्ल का इस्रार कर रहे हैं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : مَهْلًا يَا اَبَا الْفَضْلِ فَوَاللّٰهِ لَاِسْلَامُكَ كَانَ اَحَبَّ اِلَيَّ مِنْ اِسْلَامِ رَجُلٍ مِنْ وَلَدِ الْخَطَّابِ لَوْ اَسْلَمَ "या'नी ठहर जाइये ऐ अबल फ़ज़्ल ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप का इस्लाम लाना मुझे इस बात से ज़ियादा मह़बूब है कि ख़त्ताब की औलाद में से कोई इस्लाम लाए। बहर ह़ाल रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुक्म इरशाद फ़रमाया कि अबू सुफ़्यान को कल सुब्ह़ हमारे पास ले कर आना, वोह सुब्ह़ लाए और बिल आख़िर उन्हों ने इस्लाम क़बूल कर लिया।"(1)

रिवायत से ह़ासिल होने वाले मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला रिवायत से दर्जे ज़ैल मदनी फूल ह़ासिल हुवे :

.....सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी अपने मह़बूब आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रह़ मख़्लूक़े ख़ुदा पर शफ़्क़त व रह़मत फ़रमाते थे, येही वज्ह थी कि जब सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि आप लश्कर ले कर आ गए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस बात की कोशिश में लग गए कि कोई मुझे मिल जाए और मैं उसे बारगाहे रिसालत में पेश कर के उसे अमान दिला दूं, और उस की जान मह़फ़ूज़ हो जाए।

.....मज़्कूरा रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा कि तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अहले बैत या'नी घर वालों, रिश्तेदारों को न सिर्फ़ अच्छी त़रह़ पहचानते थे बल्कि उन की ता'ज़ीम और अदबो एह़तिराम भी करते थे।

.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुआ़मले में किसी की परवाह न करते थे, जैसे ही आप के सामने दुश्मने ख़ुदा व रसूल आता, आप जलाल में आ जाते और बारगाहे रिसालत से उस के क़त्ल की इजाज़त त़लब करते और यक़ीनन येह कैफ़िय्यत आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ग़ैरते ईमानी पर दलालत करती है।

1.....معجم کبیر، باب الصاد، صخر بن حرب، ج۸، ص ۱۱، حدیث: ۷۲۶۴ ملخصاً

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के आख़िरी मुबारक कलिमात से येह ज़ाहिर होता है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का निहायत ही अदबो एह़तिराम किया करते थे यहां तक कि आप के नज़्दीक उन का इस्लाम क़बूल करना अपने रिश्तेदारों के इस्लाम क़बूल करने से भी ज़ियादा मह़बूब था।

फ़ारूक़े आ'ज़म का शानो शौकत के साथ दुख़ूले मक्का

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़त्ह़े मक्का के मौक़अ़ पर येह भी शान ज़ाहिर होती है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी बहुत ज़ियादा मसरूर थे। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़बूले इस्लाम के बा'द रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुक्म इरशाद फ़रमाया कि इन्हें ले कर बुलन्द टीले पर चढ़ जाओ और इन्हें लश्करे इस्लाम के मक्कए मुकर्रमा में दाख़िले का मन्ज़र दिखाओ ताकि इन पर इस्लाम की शानो शौकत ज़ाहिर हो। सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन्हें ले कर टीले पर चढ़ गए, फिर लश्करे इस्लाम के मुख़्तलिफ़ दस्तों की आमद शुरूअ़ हुई, सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सब का तआ़रुफ़ करवाते, सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हर लश्कर को येही समझते कि शायद येह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का लश्कर है लेकिन रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत न होती तो समझ जाते कि येह वोह नहीं है। लेकिन जैसे ही रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का लश्कर आया तो ऐसे लगा जैसे लोगों का तूफ़ान उमड़ आया हो। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी क़स्वा ऊंटनी पर सुवार तशरीफ़ ला रहे थे तो सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें बताया कि येह हैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन के दस्ते में मुहाजिरीन व अन्सार हैं और अन्सार के हर ख़ानदान के पास एक झन्डा और एक परचम था और उन के पूरे जिस्म पर ज़िरह थी, सिर्फ़ उन की आंखें नज़र आ रही थीं।

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी उसी दस्ते में थे और गरजदार आवाज़ से बातें कर रहे थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा कि येह कौन हैं? तो सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया कि येह सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े

आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं। सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "बनू अ़दी की शानो शौकत बढ़ गई है ह़ालांकि उन का क़बीला मुख़्तसर और जंगी मुआ़मलात में बे मक़ामो मर्तबा था।" सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : يَا اَبَا سُفْيَانَ اِنَّ اللهَ يَرْفَعُ مَنْ يَّشَاءُ بِمَا يَشَاءُ وَاِنَّ عُمَرَ مِمَّنْ رَفَعَهُ الْاِسْلَامُ "या'नी ऐ अबू सुफ़्यान ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिसे जिस सबब से चाहता है बुलन्दी अ़ता फ़रमाता है, सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ तो उन में से हैं जिन्हें इस्लाम ने बुलन्दी अ़ता की।"(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म को का'बतुल्लाह से तस्वीरें मिटाने का हुक्म

फ़त्ह़े मक्का के मौक़अ़ पर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक सआ़दत येह भी ह़ासिल हुई कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को का'बतुल्लाह शरीफ़ के अन्दर से तमाम तस्वीरें मिटाने का हुक्म दिया। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़त्ह़े मक्का के मौक़अ़ पर बत़ह़ा के मक़ाम पर इस बात का हुक्म इरशाद फ़रमाया कि वोह का'बतुल्लाह शरीफ़ जा कर उस में मौजूद तमाम तसावीर को मिटा दें, क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस वक़्त तक का'बतुल्लाह शरीफ़ में दाख़िल न होंगे जब तक उस में से तमाम तस्वीरें ख़त्म न हो जाएं।(2)

आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या, जि. 21, स. 437 में इरशाद फ़रमाते हैं : "का'बा में जो तस्वीरें थीं हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुक्म फ़रमाया कि इन्हें मिटा दो। उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और दीगर सह़ाबए किराम चादरें उतार उतार कर इम्तिसाले हुक्मे अक़्दस में सरगर्म हुवे, ज़म ज़म शरीफ़ से डोल के डोल भर कर आते और का'बा को अन्दर बाहर से धोया जाता, कपड़े भिगो भिगो कर तस्वीरें मिटाई जातीं, यहां तक कि वोह मुशरिकों के आसार सब धो कर मिटा दिये, जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़बर पाई कि अब कोई निशान बाक़ी न रहा उस वक़्त अन्दर रौनक़ अफ़रोज़ हुवे, इत्तिफ़ाक़ से बा'ज़ तसावीर मिस्ले

---

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۲۳، ص ۴۵۴ ملتقطاً۔

2 ......سنن کبری، کتاب الشہادات، باب ماجاء فی اللعب بالبنات، ج ۱۰، ص ۳۷۱، حدیث: ۲۰۹۸۲۔

तस्वीरे इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का निशान रह गया था, फिर नज़र फ़रमाई तो ह़ज़रते मरयम की तस्वीर भी साफ़ न धुली थी हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से एक डोल पानी मंगा कर ब नफ़्से नफ़ीस कपड़ा तर कर के उन के मिटाने में शिर्कत फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** की मार इन तस्वीर बनाने वालों पर।''

फ़त्हुल बारी शर्हे सह़ीह़ बुख़ारी में है :

فِیْ حَدِیْثِ اُسَامَۃَ اَنَّہٗ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ دَخَلَ الْکَعْبَۃَ فَرَیٰ صُوْرَۃَ اِبْرَاھِیْمِ فَدَعَا بِمَاءٍ فَجَعَلَ یَمْحُوْھَا وَھُوَ مَحْمُوْلٌ عَلٰی اَنَّہٗ بَقِیَتْ بَقِیَّۃٌ خَفِیَ عَلٰی مَنْ مَحَاھَا اَوَّلًا

''या'नी ह़ज़रते उसामा की ह़दीस में है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का'बा शरीफ़ के अन्दर तशरीफ़ ले गए तो कुछ तसावीर अनमिटी देख कर पानी मंगवाया और उन्हें अपने दस्ते अक़्दस से खुद मिटाने लगे, येह ह़दीस इस पर मह़मूल है कि बा'ज़ तस्वीरों के कुछ निशानात बाक़ी रह गए थे जिन्हें पहली दफ़्आ़ मिटाने वाला न देख सका, तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोबारा उन्हें मिटा दिया।''[1]

﴾8 हिजरी﴿ ग़ज़वए हुनैन और फ़ारूके आ'ज़म

.....शव्वालुल मुकर्रम की छे तारीख़ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से हुनैन की जानिब लश्कर कशी फ़रमाई। इसे ''ग़ज़वए हवाज़िन'' भी कहा जाता है क्यूंकि इस ग़ज़्वे में क़बीलए हवाज़िन ही के लोग आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से जंग के लिये आए थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मंगल की रात दस10 शव्वालुल मुकर्रम पिछले पहर मक़ामे हुनैन पर पहुंचे।

.....आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ उस वक़्त बारह हज़ार मुसलमान थे। जिन में दस हज़ार तो वोही थे जो मदीनए मुनव्वरा से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रवाना हुवे थे और दो2 हज़ार मक्कए मुकर्रमा में से थे जो फ़त्हे मक्का के रोज़ ईमान लाए थे। येह दो2 हज़ार मुसलमान ''तुलक़ा'' कहलाते थे कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें फ़त्हे मक्का के दिन यूं इरशाद फ़रमाया था : اِذْھَبُوْا فَاَنْتُمُ الطُّلَقَاءُ ''या'नी जाओ तुम लोग आज़ाद हो।''

.....हुनैन मक्कए मुकर्रमा के मशरिक़ में मक्कए मुकर्रमा और त़ाइफ़ के दरमियान एक वादी का नाम है जिस का फ़ासिला मक्कए मुकर्रमा से दस मील से कुछ ज़ाइद है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने

1 ......فتح الباری، کتاب المغازی، باب این رکز النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم۔۔۔الخ، ج ۹، ص ۱۵، تحت الحدیث: ۴۲۸۵۔

अपने महबूबे पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़त्ह़ और कसीर माले ग़नीमत से नवाज़ा। इस ग़ज़्वे में चार सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने जामे शहादत नोश फ़रमाया और सत्तर काफ़िर वासिले जहन्नम हुवे।(1)

इस ग़ज़्वए हुनैन में भी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को कई फ़ज़ाइल व शरफ़ ह़ासिल हुवे, जिन की तफ़्सील कुछ यूं है :

एक झन्डा फ़ारूक़े आ'ज़म को दिया गया

जंगी लश्कर चाहे मुसलमानों का हो या काफ़िरों का सब में येह उसूल नाफ़िज़ था कि लश्कर को तरतीब देने के साथ साथ मुख़्तलिफ़ जगहों पर उन में ऐसे अफ़राद को भी मुन्तख़ब किया जाता था जो अ़लामती झन्डे ले कर लश्कर के साथ साथ चलते थे, और बा'ज़ औक़ात येही झन्डे किसी जंग की फ़त्ह़ व शिकस्त का भी सबब बन जाते थे। ग़ज़्वए हुनैन में भी रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुसलमानों के लश्कर में कई झन्डे मुख़्तलिफ़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को अ़ता फ़रमाए और उन्हें लश्कर में मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर फ़ाइज़ फ़रमाया, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को भी येह सआ़दत ह़ासिल हुई कि "लश्कर के झन्डों में से एक झन्डा रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को अ़ता फ़रमाया।"(2)

तेज़ आंधी में फ़ारूक़े आ'ज़म की रफ़ाक़ते मुस्त़फ़ा

इस ग़ज़्वे में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को एक सआ़दत येह भी ह़ासिल हुई कि तेज़ आंधी में जब किसी को कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था, सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के बा'द सब से पहले आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को रफ़ाक़ते मुस्त़फ़ा नसीब हुई, और फिर दीगर मुसलमान भी रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब आ गए। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि ग़ज़्वए हुनैन के दिन एक अन्सारी नौजवान यूं आवाज़ लगा रहा था : **لَنْ نُهْزَمَ الْيَوْمَ مِنْ قِلَّةٍ** "या'नी आज के दिन हम कम होने के सबब हरगिज़ शिकस्त से दो चार नहीं होंगे।" रावी या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि फिर जब हमारा दुश्मन से सामना हुवा तो उस का लश्कर भाग खड़ा हुवा। हम "हस" नामी वादी

---

1 .....طبقات کبری، غزوۃ رسول اللہ الی حنین، ج ۲، ص ۱۱۴۔
سیرۃ ابن ھشام، خروج الرسول بجیشہ۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۳۷۳۔
شرح زرقانی علی المواھب، غزوۃ حنین، ج ۳، ص ۴۹۸۔

2 .....ازالۃ الخفاء، ج ۳، ص ۱۸۰۔

में थे और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने ख़च्चर पर सुवार थे, उस की लगाम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान बिन ह़ारिस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने और रिकाब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने थामी हुई थी। ऐसी तेज़ आंधी चली कि हाथ को हाथ सुजाई न देता था।

.....अचानक एक शख़्स रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ौरन क़रीब आ गया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : **مَنْ اَنْتَ** "या'नी तू कौन है ?" आवाज़ आई : **اَنَا اَبُوْ بَكْرٍ فِدَاکَ اَبِيْ وَاُمِّيْ** "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां-बाप आप पर कुरबान हों, मैं अबू बक्र हूं।"

.....फिर अचानक एक और शख़्स आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ौरन क़रीब आ गया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दोबारा इस्तिफ़्सार फ़रमाया : **مَنْ اَنْتَ** "या'नी तू कौन है ?" आवाज़ आई : **عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ فِدَاکَ اَبِيْ وَاُمِّيْ** "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां-बाप आप पर कुरबान हों, मैं उ़मर हूं।"

.....फिर एक और शख़्स आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ौरन क़रीब आ गया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दोबारा इस्तिफ़्सार फ़रमाया : **مَنْ اَنْتَ** "या'नी तू कौन है ?" आवाज़ आई : **عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانٍ فِدَاکَ اَبِيْ وَاُمِّيْ** "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां-बाप आप पर कुरबान हों, मैं उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान हूं।"

.....फिर एक और शख़्स आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ौरन क़रीब आ गया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दोबारा इस्तिफ़्सार फ़रमाया : **مَنْ اَنْتَ** "या'नी तू कौन है ?" आवाज़ आई : **عَلِيُّ بْنُ اَبِيْ طَالِبٍ فِدَاکَ اَبِيْ وَاُمِّيْ** "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे मां-बाप आप पर कुरबान हों, मैं अ़ली बिन अबी त़ालिब हूं।"

फिर तमाम लोग भी रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास आ गए, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **اَلَا رَجُلٌ صِيِّتٌ يَنْطَلِقُ فَيُنَادِيْ فِي الْقَوْمِ؟** "या'नी है कोई ऐसा बुलन्द आवाज़ वाला शख़्स जो क़ौम के अन्दर ए'लान करे।" तो एक शख़्स चीख़ता हुवा आया और उस की आवाज़ इतनी बुलन्द थी कि हर किसी के कान में पड़ रही थी, फिर सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुवार हुवे, सब मुसलमान भी अपनी सुवारियों पर सुवार हुवे और कुफ़्फ़ार शिकस्त फ़ाश से दो चार हुवे।(1)

---

1 .....مسند بزار، مسند ابی حمزہ انس بن مالک، ج ١٣، ص ١٢٨، حدیث: ٢٥١٨ ملتقطاً۔

रिवायत से ह़ासिल होने वाले मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला रिवायत से दर्जे ज़ैल मदनी फूल ह़ासिल हुवे :

.....ग़ज़्वए हुनैन में सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मइय्यत ह़ासिल थी इस वज्ह से उन सब के अ़ज़ाइम बहुत बुलन्द थे, नीज़ उन में फ़त्ह़ का अ़ज़ीम जज़्बा और कुफ़्फ़ार को शिकस्त देने का हौसला कूट कूट कर भरा हुवा था।

.....सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان जंगों में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को शाही ए'ज़ाज़ के साथ लाया करते थे, जैसा कि सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुबारक अ़मल से ज़ाहिर है।

.....इस ग़ज़्वे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेज़ आंधी के ज़रीए़ अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और मुसलमानों की मदद फ़रमाई जो उन की फ़त्ह़ व कामरानी और कुफ़्फ़ार की शिकस्त का बाइ़स बनी।

.....तेज़ आंधी में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह सआ़दत ह़ासिल हुई कि वोह सब से पहले रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में पहुंचे, इस से येह मा'लूम होता है कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को मुश्किल वक़्त में अपनी जान की कोई फ़िक्र नहीं होती बल्कि अपनी जान से ज़ियादा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका अ़ज़ीज़ थी।

.....मुसलमानों के जंगी लश्कर में भी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका एक क़ल्अ़ की हैसिय्यत रखती थी कि तेज़ आंधी में सब मुसलमान फ़ौरन रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में पहुंचे।

फ़ारूके़ आ'ज़म का फ़ैसला और बारगाहे रिसालत से तस्दीक़

ग़ज़्वए हुनैन के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत में अपनी राए पेश की और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तस्दीक़ व ताईद ह़ासिल की। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ग़ज़्वए हुनैन के दिन क़बीलए हवाज़िन के लोग अपने बच्चों, औ़रतों, ऊंटों और जानवरों को भी ले आए और उन्हों ने सफ़बन्दी कर ली ताकि

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर अपनी कसरत ज़ाहिर करें, बहर ह़ाल मुसलमानों और मुशरिकीन के माबैन जंग हुई तो मुसलमानों के लश्कर में भगदड़ मच गई। हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : يَاعِبَادَ اللّٰهِ اَنَا عَبْدُ اللّٰهِ وَرَسُوْلُهٗ "या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बन्दा और उस का रसूल हूं।" फिर इरशाद फ़रमाया : يَامَعْشَرَ الْاَنْصَارِ اَنَا عَبْدُ اللّٰهِ وَرَسُوْلُهٗ "या'नी ऐ गुरौहे अन्सार ! मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बन्दा और उस का रसूल हूं।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुशरिकीन को शिकस्त से दो चार किया ह़ालांकि ऐसा लगता था कि न तो कोई तल्वार चली और न ही कोई नेज़ा वग़ैरा। बहर ह़ाल जंग से फ़राग़त के बा'द रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ قَتَلَ كَافِرًا فَلَهٗ سَلَبُهٗ "या'नी जिस ने किसी काफ़िर को अकेले क़त्ल किया है तो उस का सब साज़ो सामान उसी का है।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस दिन कुफ़्फ़ार के बीस 20 आदमियों को क़त्ल किया था, उन सब का सामान आप को मिला। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया :

يَارَسُوْلَ اللّٰهِ اِنِّيْ ضَرَبْتُ رَجُلًا عَلَيَّ حَبَلُ الْعَاتِقِ وَعَلَيْهِ دِرْعٌ لَهٗ فَاُعْجِلْتُ عَنْهُ اَنْ آخُذَهَا فَانْظُرْ مَعَ مَنْ هِيَ

"या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने भी एक काफ़िर को क़त्ल किया था और उस के पास एक ज़िरह थी लेकिन मैं जल्दी में वोह उतार न सका, आप देखिये कि वोह ज़िरह किस के पास है ?" एक शख़्स खड़ा हुवा और बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ करने लगा : يَارَسُوْلَ اللّٰهِ اَنَا اَخَذْتُهَا فَاَرْضِهِ مِنْهَا وَاَعْطِنِيْهَا "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह ज़िरह मैं ने ले ली थी, आप उन्हें इस बात पर राज़ी कीजिये कि वोह येह ज़िरह मुझे दे दें।"

येह सुन कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ामोश हो गए क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दते मुबारका थी कि "जब कोई शख़्स आप से कुछ मांगता, या तो उसे अ़त़ा फ़रमा देते या ख़ामोश हो जाते।" येह देख कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया : لَا يُفِيْئُهَا عَلَي اَسَدٍ مِنْ اُسُدِهٖ وَيُعْطِيْكَهَا "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के शेरों में से एक को वोह किफ़ायत नहीं करेगी और वोह तुझे दे दी जाए ?" येह सुन कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुस्कुराए और इरशाद फ़रमाया : صَدَقَ عُمَرُ "या'नी उ़मर ने सच कहा।"(1)

---

(1)......مسند بزار، مسند ابی حمزہ انس بن مالک، ج ۱۳، ص ۸۵، حدیث: ۶۴۳۹۔
مسند امام احمد، مسند انس بن مالک، ج ۴، ص ۵۵۶، حدیث: ۱۳۹۷۷۔

रिवायत से ह़ासिल होने वाले मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला रिवायत से दर्जे ज़ैल मदनी फूल ह़ासिल हुवे :

.....मा'लूम हुवा कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बारगाहे रिसालत में बड़ा मक़ाम ह़ासिल है और जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी कोई राए पेश करते तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस की तस्दीक़ करते और ताईद फ़रमाते।

.....इस रिवायत के रावी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वज़ाह़त से येह बात भी सामने आती है कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की येह आ़दते मुबारका थी कि आप के दरबार से कोई ख़ा़ली नहीं जाता था, अगर आप उसे माल वग़ैरा पास न होने के सबब ब ज़ाहिर कुछ न भी अ़ता फ़रमाते तो मन्अ़ भी न फ़रमाते बल्कि ख़ा़मोशी इख़्तियार फ़रमाते।

.....मा'लूम हुवा कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का येह मुबारक अ़क़ीदा था कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से सब को अपने ख़ज़ाने तक़्सीम फ़रमाते हैं और सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का येह अ़क़ीदा क्यूं न होता कि उन्हों ने खु़द रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने ह़क़्के़ तर्जुमान से रब عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान सुना कि **اِنَّاۤ اَعْطَیْنٰکَ الْکَوْثَرَ** ''या'नी ऐ मह़बूब बेशक हम ने आप को ख़ैरे कसीर अ़ता किया।'' उन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने अस्ह़ाब में जन्नत तक़्सीम करते देखा, जन्नत की ने'मतें दुन्या में ही खिलाते देखा, उन्हों ने खु़द रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से येह मुबारक कलिमात सुने कि **اُعْطِیْتُ مَفَاتِیْحَ خَزَائِنِ الْاَرْضِ** ''या'नी मुझे ज़मीनी ख़ज़ानों की कुन्जियां अ़ता कर दी गई हैं।'' आ'ला ह़ज़रत अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत परवानए शम्ए रिसालत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सख़ावत को ख़िराजे तह़सीन पेश करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं :

मेरे करीम से गर क़त़रा किसी ने मांगा
दरया बहा दिये हैं, दुर बे बहा दिये हैं

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इत्तिबाए़ रसूल का अनोखा अन्दाज़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हिस्से में ग़ज़वए हुनैन के माले ग़नीमत से दो बांदियां आईं तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ में उन को आज़ाद फ़रमा दिया। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हिस्से में ग़ज़वए हुनैन के कै़दियों में से दो लौंडियां आईं तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बैतुल्लाह के एक मकान में उन्हें रिहाइश दे दी। बा'द में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुनैन के तमाम कै़दियों पर यूं एह़सान फ़रमाया कि उन तमाम को आज़ाद कर दिया, वोह सारे ग़ुलाम गलियों में भागते हुवे जा रहे थे, जब उन के शोर की आवाज़ सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सुनी तो सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया कि ऐ अ़ब्दुल्लाह ! देखो येह शोर कैसा है ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तमाम कै़दियों पर एह़सान फ़रमाते हुवे उन्हें आज़ाद फ़रमा दिया है। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اِذْهَبْ فَاَرْسِلِ الْجَارِيَتَيْنِ या'नी ऐ अ़ब्दुल्लाह ! जाओ और उन दोनों लौंडियों को भी आज़ाद कर दो।(1)

سُبْحَانَ اللہ عَزَّوَجَلَّ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इ़श्के़ रसूल मरह़बा ! इत्तिबाए़ रसूल का जज़्बा मरह़बा ! वाके़ई येह बहुत बड़ी कु़रबानी है कि अपनी ज़ाती चीज़ भी राहे ख़ुदा में कु़रबान कर दी, ऐ काश ! हमें भी इत्तिबाए़ रसूल नसीब हो जाए, काश ! हम भी सुन्नतों पर अ़मल करने वाले बन जाएं, ख़ुद भी नेक बनें दूसरों पर इनफ़िरादी कोशिश कर के उन्हें भी नेक बनने की तरग़ीब दिलाएं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन

बा'दे ग़ज़वए हुनैन फ़ारूके़ आ'ज़म का ए'तिकाफ़ के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से रिवायत है कि जब शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ज़वए हुनैन से वापस तशरीफ़ लाए तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ज़मानए जाहिलिय्यत में जो ए'तिकाफ़ की नज़्र मानी थी उसे पूरा करने के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया तो सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस नज़्र को पूरा करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया।(2)

---

1 ..... بخاری، کتاب فرض الخمس، ماکان النبی۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۳۵۷، حدیث: ۳۱۴۴۔

2 ..... بخاری، کتاب المغازی، باب قول اللہ تعالی ویوم حنین، ج ۳، ص ۱۱۲، حدیث: ۴۳۲۰۔

ग़ैरते फ़ारूक़े आ'ज़म बर नामूसे इमामे आ'ज़म

ग़ज़वए हुनैन से वापसी पर जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم माले ग़नीमत तक़्सीम फ़रमा रहे थे तो एक मुनाफ़िक़ ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में गुस्ताख़ी की तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जलाल में आ गए आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ग़ैरते ईमानी का मुज़ाहरा करते हुवे उस के क़त्ल की इजाज़त मांगी। चुनान्चे,

.....हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि एक बार हम हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर थे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم माले ग़नीमत तक़्सीम फ़रमा रहे थे। "**ज़ुल ख़ुवैसरह**" नामी मुनाफ़िक़ आ गया जो क़बीलए बनू तमीम से तअ़ल्लुक़ रखता था। कहने लगा : **يَا رَسُولَ اللّٰهِ اِعْدِلْ** "या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल ! इन्साफ़ कीजिये।"

.....सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **وَيْلَكَ وَمَنْ يَّعْدِلُ اِذَا لَمْ اَعْدِلْ قَدْ خِبْتَ وَخَسِرْتَ اِنْ لَّمْ اَكُنْ اَعْدِلُ** "या'नी तेरी हलाकत हो ! अगर मैं अ़द्ल न करूंगा तो कौन करेगा ? अगर मैं तेरे नज़्दीक आ़दिल नहीं तो यक़ीनन तू ख़ाइबो ख़ासिर हो गया।"

.....येह सुनते ही अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ग़ैरते ईमानी जोश में आ गई और अ़र्ज़ किया : **يَا رَسُولَ اللّٰهِ اِئْذَنْ لِي فِيهِ فَاَضْرِبَ عُنُقَهُ** "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे इजाज़त दें मैं इस मुनाफ़िक़ की गर्दन उतार दूं।"

.....आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ग़ैबों की ख़बर देते हुवे इरशाद फ़रमाया : **دَعْهُ فَاِنَّ لَهٗ اَصْحَابًا** "या'नी ऐ उ़मर ! इसे छोड़ दो। आइन्दा इस जैसे और भी पैदा होंगे।"

.....**يَحْقِرُ اَحَدُكُمْ صَلَاتَهٗ مَعَ صَلَاتِهِمْ وَصِيَامَهٗ مَعَ صِيَامِهِمْ** "या'नी उन की नमाज़ और रोज़े को देख कर तुम लोग अपनी नमाज़ों और रोज़ों को हक़ीर जानोगे।"

.....يَقْرَءُونَ الْقُرْآنَ لَا يُجَاوِزُ تَرَاقِيَهُمْ يَمْرُقُونَ مِنَ الدِّينِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ "या'नी वोह लोग कुरआन पढ़ेंगे मगर वोह उन के ह़ल्क़ से नीचे नहीं उतरेगा, वोह इस्लाम से यूं निकल जाएंगे जैसे तीर शिकार को चीरते हुवे दूसरी त़रफ़ से तेज़ी से निकल जाता है।"

.....फिर इरशाद फ़रमाया :

آيَتُهُمْ رَجُلٌ اَسْوَدُ اِحْدَى عَضُدَيْهِ مِثْلُ ثَدْيِ الْمَرْاَةِ اَوْ مِثْلُ الْبَضْعَةِ تَدَرْدَرُ وَيَخْرُجُونَ عَلَى حِينِ فُرْقَةٍ مِنَ النَّاسِ

"या'नी उन की निशानी येह है कि उन में एक सियाह आदमी भी होगा जिस का एक बाज़ू औ़रत के पिस्तान जैसा होगा या ऐसे होगा जैसे गोश्त का लोथड़ा ह़रकत कर रहा हो। येह लोग उस वक़्त ख़ुरूज करेंगे जब लोगों में इख़्तिलाफ़ हो जाएगा।"

.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं गवाही देता हूं कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से (येह ग़ैबी कलाम) ख़ुद सुना और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) को अपनी आंखों से उन्हें (या'नी ख़ारिजियों को) क़त्ल करते पाया। मैं भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ था। आप ने फ़रमाया : "उस शख़्स को तलाश करो जिस की रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़बर दी थी, चुनान्चे, तलाश के बा'द वोह मिल गया, देखा तो उस की शक्ल बिऐ़निही वैसी थी जैसा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया था।"(1)

रिवायत से ह़ासिल होने वाले इ़ब्रत के फूल

.....**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस मुनाफ़िक़ को क़त्ल करने से इस लिये मन्अ़ फ़रमाया कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इ़ल्म में था कि उस मुनाफ़िक़ की नस्ल से कुछ लोगों का पैदा होना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुक़द्दर फ़रमा चुका है।

.....येह भी मा'लूम हुवा कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में जहां आप के जानिसार सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان मौजूद होते थे वहीं मुसलमानों के पाकीज़ा लिबास में मुनाफ़िक़ीन भी मौजूद होते थे।

---

1 .....بخاری، کتاب المناقب، باب علامات النبوۃ فی الاسلام، ج ۲، ص ۵۰۳، حدیث: ۳۶۱۰۔

مسلم، کتاب الزکاۃ، ذکر الخوارج وصفاتھم، ص ۵۳۳، حدیث: ۱۴۸۔

.....सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तो वोह अ़ज़ीम हस्तियां थीं जिन की नज़र हमेशा दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रुख़े ज़ेबा पर होती थी और वोह हमेशा इस से बरकतें और रह़मतें ही लूटते थे, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तबर्रुकात उन्हें अपनी जान से भी ज़ियादा अ़ज़ीज़ थे। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तो वोह थे जिन्हें रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका में सिर्फ़ ख़ूबियां ही ख़ूबियां नज़र आया करती थीं। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه तो दरबारे रिसालत के सना ख़्वां थे। आप رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के लिये रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुद एहतिमाम फ़रमाया करते थे। बारगाहे रिसालत में मद्ह़ सराई करते हुवे फ़रमाते हैं :

وَاَحْسَنُ مِنْکَ لَمْ تَرَ قَطُّ عَيْنِيْ

तर्जमा : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरी आंखों ने आप से ज़ियादा ह़सीनो जमील देखा ही नहीं।"

وَاَجْمَلُ مِنْکَ لَمْ تَلِدِ النِّسَاءُ

तर्जमा : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप जैसा ह़सीनो जमील आज तक किसी औ़रत ने जना ही नहीं।"

خُلِقْتَ مُبَرَّاً مِنْ كُلِّ عَيْبٍ

तर्जमा : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रब عَزَّوَجَلَّ ने आप को हर ऐ़ब से बरी पैदा फ़रमाया।"

كَاَنَّکَ قَدْ خُلِقْتَ كَمَا تَشَاءُ

तर्जमा : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जैसा आप चाहते थे वैसा ही आप को पैदा किया गया।"(1)

जब कि मुनाफ़िक़ीन की नज़र हमेशा रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका में ऐ़बों को तलाश करती थीं जिस में हमेशा उन को नाकामी ही होती थी, और उन्हें इस नापाक मक़्सद में नाकामी क्यूं न होती कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को बे ऐ़ब पैदा फ़रमाया था, जिन की रिफ़्अ़त व बुलन्दी को ख़ुद रब عَزَّوَجَلَّ बयान करे उस ज़ात को कौन पस्त कर सकता है ?

आ'ला ह़ज़रत अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इश्क़ो मह़ब्बत से मा'मूर हो कर बारगाहे रिसालत में नज़रानए अ़क़ीदत पेश करते हुवे फ़रमाते हैं :

---

1 ......روح المعانی، پ ۱۱، تحت الآیۃ: ۲، ج ۱۱، ص ۸۳، دیوان حسان بن ثابت، حرف الھمزۃ، ص ۱۷۔

वोह कमाले हुस्ने हुज़ूर हैं कि गुमाने नक़्स जहां नहीं
येही फूल ख़ार से दूर है येही शम्अ़ है कि धुवां नहीं
सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र, दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
मल्कूतो मुल्क में कोई शै नहीं वोह जो तुझ पे इ़यां नहीं
करूं तेरे नाम पे जां फ़िदा न बस एक जां दो जहां फ़िदा
दो जहां से भी नहीं जी भरा करूं क्या करोड़ों जहां नहीं

....मज़्कूरए बाला रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका में ऐ़ब लगाना मुनाफ़िक़ीन का त़रीक़ा है, जब कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका को हर ऐ़ब से बरी मानना सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का मुबारक अ़क़ीदा है।

.....मज़्कूरए बाला रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका में ऐ़ब तलाश करने वाले भी क़ुरआने पाक पढ़ते होंगे, अलबत्ता क़ुरआन उन के ह़ल्क़ से नीचे नहीं उतरेगा, या'नी ब ज़ाहिर तो ख़ूब सूरत आवाज़ में तिलावत करते होंगे लेकिन उन की तिलावत इ़श्क़े रसूल की ख़ुश्बू से बहुत दूर होगी, क्यूंकि पूरा का पूरा क़ुरआन रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'ते मुबारका है और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मद्ह़ सराई का तअ़ल्लुक़ फ़क़त़ ज़बान से नहीं बल्कि क़ल्ब से है, अगर दिल में बुग़्ज़े रसूल हो तो अन्जाम जहन्नम के सिवा क्या हो सकता है ? रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस इरशाद में ऐसे लोगों के लिये इ़ब्रत के बे शुमार मदनी फूल हैं जो येह कहते हैं कि : **"मियां सब ठीक हैं, क़ुरआन एक, रसूल एक, दीन एक तो फिर इख़्तिलाफ़ कैसा ?"** रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वाज़ेह़ फ़रमा दिया कि अगर कोई ब ज़ाहिर ख़ुश इल्ह़ानी के साथ क़ुरआन पढ़ भी रहा हो तब भी वोह बद दीन हो सकता है कि उस का दिल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत से ख़ाली है। क़ुरआने पाक में ख़ुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ ۘ۸﴾ (پ۱، البقرۃ:۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और कुछ लोग कहते हैं कि हम **अल्लाह** और पिछले दिन पर ईमान लाए और वोह ईमान वाले नहीं।"

.....यहां से तेरह आयतें मुनाफ़िक़ीन के हक़ में नाज़िल हुईं जो बातिन में काफ़िर थे और अपने आप को मुसलमान ज़ाहिर करते थे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया مَاهُمۡ بِمُؤۡمِنِيۡنَ वोह ईमान वाले नहीं या'नी कलिमा पढ़ना, इस्लाम का मुद्दई होना, नमाज़ रोज़ा अदा करना, मोमिन होने के लिये काफ़ी नहीं जब तक दिल में तस्दीक़ न हो।

.....येह भी मा'लूम हुवा कि सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका के मुआमले में किसी तरह का समझौता नहीं करते थे, येही वज्ह है कि जैसे ही उस मुनाफ़िक़ ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में बे अदबी की तो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡه रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत और ग़ैरते ईमानी से उठ खड़े हुवे और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से उस के क़त्ल की इजाज़त तलब की।

.....येह भी मा'लूम हुवा कि नामूसे रिसालत के मुआमले में समझौता न करना सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان की सुन्नते मुबारका है। ऐ काश ! हमें भी सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان जैसा इश्के़ रसूल नसीब हो जाए, ऐ काश ! हमें भी सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان जैसी महब्बत नसीब हो जाए, ऐ काश हम भी सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان की तरह ज़ाहिरी इश्के़ रसूल के साथ साथ बातिनी या'नी अमली इश्के़ रसूल का मुज़ाहरा करने वाले भी बन जाएं।

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे अपने प्यारे हबीब, हम गुनाहगारों के तबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के प्यारे और जानिसार सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان का वासिता हमें भी सहाबए किराम ही जैसा इश्क़, महब्बत और अमल का जज़्बा अता फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالیٰ عليه واٰله وسلَّم

﴾8 हिजरी﴿ ग़ज़्वए ताइफ़ और फ़ारूके़ आ'ज़म

.....माहे शव्वालुल मुकर्रम के आख़िर में ग़ज़्वए हुनैन से फ़रागत के बा'द आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने माले ग़नीमत "जिइर्राना" के मक़ाम पर रोक दिया जो अभी तक तक़्सीम भी न हुवा था और खुद ग़ज़्वए ताइफ़ के लिये रवाना हुवे।

.....ताइफ़ मक्कए मुकर्रमा से मशरिक़ की जानिब दो या तीन मर्हलों के फ़ासिले पर एक मश्हूर शहर है, जहां अंगूर, खजूरें और दीगर फल इतनी कसरत से होते हैं कि एक वक़्त में चारों मौसिमों या'नी मौसिमे बहार, ख़ज़ां, गर्मी और सर्दी के फल वहां पाए जाते हैं। उस जगह सक़ीफ़ क़बीला आबाद था।

.....रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन पर लश्कर कशी फ़रमाई। सहीह क़ौल के मुताबिक़ दस से कुछ ज़ाइद दिनों तक इस शहर का मुहासरा जारी रखा। बा'ज़ अक़्वाल के मुताबिक़ तीस[30] दिन जारी रखा और बा'ज़ उ़लमा के नज़्दीक चालीस[40] दिन तक मुहासरा जारी रहा। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस शहर को फ़त्ह करने के लिये "मिन्जनीक़" नस्ब फ़रमाई, मिन्जनीक़ लकड़ी से बनाई गई ऐसी मशीन को कहते हैं जो दूर तक पथ्थर फेंकने की सलाहिय्यत रखती हो। इस के इलावा किसी और ग़ज़्वे में मिन्जनीक़ का इस्ति'माल नहीं किया गया और येह अ़हदे इस्लाम की पहली मिन्जनीक़ थी जिस से संग बारी की गई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुसलमानों को फ़त्ह अ़ता फ़रमाई और उन्हें फ़त्हो नुस्रत से सरफ़राज़ फ़रमाया।

फ़त्ह का मफ़्हूम येह है कि दुश्मन पर इस्लाम की धाक बैठ गई, येह क़ल्आ़ उस वक़्त फ़त्ह न हुवा बल्कि पन्दरह सोलह और ब रिवायते दीगर चालीस दिन[40] के मुहासरे के बा'द मुसलमानों ने इरशादे नबवी के मुताबिक़ मुहासरा उठा लिया। ग़ज़्वए तबूक से वापसी के बा'द इस क़बीले का वफ़्द मदीनए मुनव्वरा हाज़िर हुवा और ईमान क़बूल कर लिया।

.....ग़ज़्वए ताइफ़ में बारह[12] मुसलमान शहीद हुवे जिन में उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के भाई हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या मख़्ज़ूमी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه थे, जो फ़त्हे मक्का के दिनों में मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे थे। हज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़स अमवी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه भी शुहदा में शामिल थे, बहुत से कुफ़्फ़ार वासिले जहन्नम हुवे।

.....इसी ग़ज़्वे में हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) भी ज़ख़्मी हुवे लेकिन बा'द में उन का ज़ख़्म मुन्दिमल हो गया और एक अ़र्से तक बा हयात रहे, फिर वोह ज़ख़्म हरा हो गया जिस के सबब आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने वालिदे माजिद अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के दौरे ख़िलाफ़त में विसाल फ़रमाया।

.....इस ग़ज़्वे में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दो अज़्वाजे मुतहहरात हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا और हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़श رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا भी हमराह थीं। येही दोनों उम्महातुल मोमिनीन ग़ज़्वए फ़त्हे मक्का में भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ थीं।(1)

(1)....مدارج النبوة،ج٢،ص٣١٩، सीरते सय्यिदुल अम्बिया, स. 172

इस ग़ज़्वए ताइफ़ में भी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कई फ़ज़ाइल व शरफ़ ह़ासिल हुवे, जिन की तफ़्सील कुछ यूं है :

फ़ारूके़ आ'ज़म को ए'लान करने का हुक्म दिया गया

ग़ज़्वए ताइफ़ में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़त्ह़ की इजाज़त न दी गई तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुसलमानों को वापस कूच का हुक्म इरशाद फ़रमाया और इस के लिये अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ए'लान करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया। चुनान्चे,

जब हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ताइफ़ में मौजूद थे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक ख़्वाब देखा कि ''एक मख्खन से भरा हुवा प्याला है जिस में मुर्ग़ ने चौंच मार कर उसे परागन्दा कर दिया।'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ चूंकि ख़्वाबों की ता'बीर बताने के माहिर जनाब सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मौजूद थे, उन्हों ने इस ख़्वाब की ता'बीर येह बयान फ़रमाई कि मौजूदा ह़ालात में ताइफ़ की फ़त्ह़ मुयस्सर नहीं होगी। इतने में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़ुवैला बिन्ते ह़कीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आईं और अ़र्ज़ करने लगीं कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को ताइफ़ पर फ़त्ह़ अ़ता फ़रमाए तो बादिया बिन्ते ग़ैलान के ज़ेवरात मुझे अ़ता फ़रमाइयेगा। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि अगर हमें बनू सक़ीफ़ पर फ़त्ह़ अ़ता न की गई तो फिर क्या करोगी? बहर ह़ाल वोह ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास गईं और उन्हें सारी सूरते ह़ाल से आगाह किया। वोह बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे और सारा मुआ़मला दरयाफ़्त करने के बा'द अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगर ऐसा मुआ़मला है तो मैं लश्कर में वापस कूच करने का ए'लान कर दूं? रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इजाज़त अ़ता फ़रमाई तो आप ने पूरे लश्कर में वापस कूच करने का ए'लान कर दिया।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस से बड़ी वाज़ेह़ शान ज़ाहिर होती है कि जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मा'लूम हुवा कि

---

1 ......سیرۃ ابن ھشام، رویا الرسول وتفسیر ابی بکر لھا، ج ۲، ص ۴۱۱۔

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ऐसा फ़रमाया है तो आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़ौरन बारगाहे रिसालत से तस्दीक़ त़लब की और जब तस्दीक़ हो गई तो आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने पसो पेश से काम लेने के बजाए फ़ौरन उस से अगले मर्ह़ले या'नी लश्कर को वापस ले जाने के बारे में सुवाल किया। इस की वज्ह येह थी कि अ़ाम आदमी का ख़्वाब सच्चा भी हो सकता है और झूटा भी हो सकता है लेकिन अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ख़्वाब हमेशा सच्चे होते हैं इस लिये आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को जैसे ही मा'लूम हुवा तो आप ने फ़ौरन उसे तस्लीम कर लिया और फिर वापसी का इरादा ज़ाहिर फ़रमाया।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾9 हिजरी﴿ ग़ज़्वए तबूक और फ़ारूक़े आ'ज़म

.....''ग़ज़्वए तबूक'' को ''ग़ज़्वए उ़सरह'' व ''ग़ज़्वए साअ़तुल उ़सरह'' और ''ग़ज़्वए फ़ाज़िह़ा'' भी कहते हैं। ''उ़सरतुन'' अ़रबी ज़बान में मुश्किल को कहते हैं, जब कि ''साअ़तुल उ़सरह'' मुश्किल वक़्त को कहते हैं, चूंकि इस ग़ज़्वे में मुसलमान बहुत ज़ियादा मुश्किलात का शिकार हुवे और तबूक का रास्ता निहायत ही दुश्वार था इस लिये इसे येह नाम दिया गया। जब कि ''फ़ाज़िह़ा'' का मा'ना है ''रुस्वा करने वाली'' इस नाम की वज्हे तस्मिय्या येह है कि इस ग़ज़्वे में मुनाफ़िक़ीन के बारे में ऐसी आयात नाज़िल हुईं जिस से वोह ज़लीलो रुस्वा हुवे।

.....रजबुल मुरज्जब के महीने में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए तबूक के लिये रवाना हुवे और येह आख़िरी फ़ौजी मुहिम थी जिस में ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ब नफ़्से नफ़ीस शरीक हुवे। ''तबूक'' मुल्के शाम की जानिब एक जगह का नाम है, मदीनए मुनव्वरा और उस के दरमियान चौदह14 रोज़ और दिमश्क़ और उस के माबैन दस10 दिन का फ़ासिला है। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस मुहिम पर जुमा'रात के रोज़ मदीनए मुनव्वरा से रवाना हुवे। येह ग़ज़्वा ह़ज्जतुल वदाअ़ से क़ब्ल 9 हिजरी में पेश आया और इस में किसी का कोई इख़्तिलाफ़ नहीं।

.....ग़ज़्वए तबूक तंगी व तुर्शी और मौसिमे गर्मा की शिद्दत व ह़रारत के ज़माने में पेश आया नीज़ येह अ़लाक़ा भी ख़ुश्क साली की लपेट में था और फल पक चुके थे। लोगों को फलों और सायादार दरख़्तों में क़ियाम पसन्द था इस मौसिम में सफ़र करना उन के लिये एक दुश्वार अम्र था, इ़लावा अज़ीं उन के पास ज़ादे राह और सुवारियों की भी क़िल्लत थी, कुफ़्फ़ार और दुश्मनों की कसरत

थी, सह़रा का त़वील सफ़र दरपेश था, सारा सफ़र जिस में चौदह दिन जाने और उतने ही वापसी पर लगते थे, शाम के सह़रा में पड़ता था, शाम के अ़ज़ीम सह़रा को तै़ करने में चालीस रोज़ चलना पड़ता था जहां न कोई दरख़्त और न कोई साया, पानी भी बहुत कम मिक़्दार में दस्तयाब होता था। लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या के दिलों को मज़बूत़ रखा, मुनाफ़िक़ीन और तीन मुख़्लिस सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के सिवा जो भी सफ़र की त़ाक़त रखता था पीछे न रहा। इस ग़ज़्वे में मह़बूबे ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ तीस हज़ार सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان थे।(1)

.....इस ग़ज़्वए तबूक में भी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को कई फ़ज़ाइल व शरफ़ ह़ासिल हुवे, जिन की तफ़्सील कुछ यूं है :

आधा माल बारगाहे रिसालत में पेश कर दिया

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की हर ग़ज़्वे में सब से बड़ी सआ़दत तो येह होती कि आप रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ उस जंग में शिर्कत करते, मगर ग़ज़्वए तबूक में आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को एक सआ़दत येह भी ह़ासिल हुई कि जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से माली तआ़वुन त़लब किया तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के बा'द आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने सब से बढ़ कर अपना माल पेश किया। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को येह कहते सुना कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें राहे ख़ुदा में माल सदक़ा करने का इरशाद फ़रमाया। मेरे पास भी माल था मैं ने सोचा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه हर दफ़्आ़ इन मुआ़मलात में मुझ से सब्क़त ले जाते हैं इस बार ज़ियादा से ज़ियादा माल सदक़ा कर के उन से सब्क़त ले जाऊंगा। चुनान्चे, वोह घर गए और घर का सारा माल इकठ्ठा किया उस के दो ह़िस्से किये एक घर वालों के लिये छोड़ा और दूसरा ह़िस्सा ले कर बारगाहे रिसालत में पेश कर दिया। सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने

1..... البداية والنهاية، ج٣، ص٥٩٤ ماخوذا۔ सीरते सय्यिदुल अम्बिया, स. 174

इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! घर वालों के लिये क्या छोड़ आए हो ?" अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आधा माल घर वालों के लिये छोड़ आया हूं।"[1]

रिवायत से ह़ासिल होने वाले मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला रिवायत से दर्जे ज़ैल मदनी फूल ह़ासिल हुवे :

.....मा'लूम हुवा कि राहे खुदा में ख़र्च करने के लिये तरग़ीब दिलाना जाइज़ और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित है। यक़ीनन जो माल राहे खुदा में ख़र्च कर दिया गया वोही आख़िरत के लिये मह़फ़ूज़ हो गया।

.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्म की ता'मील करने लगे तो आप के ज़ेह्न में येह मदनी सोच आई कि आज तो मैं सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से सब्क़त ले जाऊंगा, मा'लूम हुवा कि नेकियों में सब्क़त करना या इस बात की ख़्वाहिश करना कि मैं फ़ुलां नेकी में अपने फ़ुलां भाई से सब्क़त ले जाऊं सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के अ़मल से साबित है। वाज़ेह़ रहे कि उ़मूमन दीन की माली ख़िदमत करने में शैत़ान भी मुदाख़लत कर के रियाकारी जैसे मूज़ी मरज़ में मुब्तला कर देता है, नीज़ वोह माल कि जिसे आख़िरत की बेहतरी के लिये इस्ति'माल करना था रियाकारी की तबाहकारी की नज़्र हो जाता है। लिहाज़ा हमेशा अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ नेकियों में सब्क़त की तरकीब बनाइये और हर क़िस्म की दीनी मुआ़मलात में मदद करने से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मदद व नुस्रत और ह़िमायत ह़ासिल करने के लिये उस रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से शैत़ान के मक्रो फ़रेब से पनाह भी मांगते रहिये।

.....मज़्कूरए बाला रिवायत से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की शाने करीमी भी वाज़ेह़ होती है कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه दीनी मुआ़मलात में ख़र्च करने और नेकियों में सब्क़त ले जाने की कोशिशों में मसरूफ़ रहा करते थे। नीज़ ग़ज़्वए तबूक के मौक़अ़ पर दीगर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की माली ख़िदमात के साथ साथ आप का भी बहुत बड़ा माली तआ़वुन शामिल है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 .....ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی بکر وعمر، ج۵، ص ۳۸۰، حدیث: ۳۶۹۵۔

फ़ारूके आ'ज़म की जंगी मुहिम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ग़ज़्वात में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल की बा'ज़ जंगों में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अमीर बना कर भेजा गया और बा'ज़ जंगों में शरीक बना कर भेजा ताकि दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की भी ह़ौसला अफ़्ज़ाई हो । चुनान्चे,

.....सिने 7 हिजरी, शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के महीने में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ''तुरबह'' की मुहिम पर भेजा । मक्कए मुकर्रमा के क़रीब येह एक वादी का नाम है, जिस का फ़ासिला मक्कए मुकर्रमा से तक़रीबन दो2 रोज़ की मसाफ़त पर है । क़बीलए हवाज़िन के बाक़ी मांदा कुफ़्फ़ार यहीं मुक़ीम थे ।

...अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तीस30 सुवारों की हमराही में इस मुहिम पर रवाना हुवे, एक राहनुमा भी हमराह था जिस का तअ़ल्लुक़ क़बीलए बनू बिलाल से था । रात को चलते और दिन को छुप जाते लेकिन जैसे ही दुश्मनों को मुसलमानों के इस क़ाफ़िले की ख़बर मिली तो वोह दुम दबा कर भाग गए, जंग की नौबत ही न आई और सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने रुफ़क़ा के साथ वापस तशरीफ़ ले आए ।[1]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जैशे ज़ातुस्सलासिल और फ़ारूके आ'ज़म

.....''जैशे ज़ातुस्सलासिल'' दर अस्ल ''सिरया अ़म्र बिन आ़स'' है । जमादल ऊला सिने 8 हिजरी में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ''ज़ातुस्सलासिल'' की मुहिम पर रवाना किया गया । ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को तीन सौ शेर दिल मुहाजिरीन और अन्सार की कमान सिपुर्द फ़रमा कर मुशरिकीन के क़बाइल कुज़ाआ़, आ़मिला, लख़्म और जुज़ाम की सर ज़निश पर मुक़र्रर फ़रमाया ।

.....''सलासिल'' के मक़ाम पर मुजाहिदों का कुफ़्फ़ार से आमना सामना हुवा । मुसलमानों के हाथों वोह क़त्ल हुवे । ग़नीमत समेत मुसलमानों का लश्कर मदीनए मुनव्वरा वापस आ गया । इस लश्कर के अमीर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे ।

1 ......طبقات کبری، سریۃ عمر بن الخطاب، ج۲، ص۸۹۔


फ़ारूक़े आ'ज़म की जंगी मुहिम
الصديرات
عرجاء
وادی ساحوق
النخيل
نفودالعريق
بلغة
الدناكية
بواط
الظاهرية
الصويدرية
جبل الابرد
الفقرة
مدينة المنورة
الزبدة
الدسو
ينبع النخل
جبل شعباء
آبارالماشي
صديرة
وادی الشقة
ثرب
بدر
اليتمة
العصق
حرة
مهدالذهب
ارض
الحضارة
الاكول
السويرقية
الدفينة
مستورة
صفينة
رهط
حرة كشب
رابغ
حفركشب
اللصب
المداني
دغيجة
ظلم
الكامل
الحجاز
خليص
عسفان
مدركة
الموية
عشيرة
الجموم
جدة
الخرمة
السيل الكبير
جبال حضن
مكة المكرمة
سديرة
الحوية
حضن
الغريف
حرة نواصف
الطائف
كلاخ
تربة
رتبة
قبا
يلملم
الغرابة
الشعبية
السعن
هوازن
الغافة
السعدية
القوامة
الفرات
حرة البقوم
العفرية
عصيقة
دعية
الليث
العقيق
قلوة

.....सलासिल जम्अ़ है "सलसिलह" की, जिस का मा'ना है ज़न्जीर। इस जंग को "ज़ातुस्सलासिल" के नाम से इस वज्ह से ता'बीर किया जाता है कि यहां सह़रा में रैत के तोदे एक दूसरे से मिले हुवे हैं और वोह ज़न्जीर की त़रह़ पाउं को जकड़ कर चलने से रोकते हैं। एक क़ौल येह है कि "सलासिल" क़बीलए जुज़ाम के अ़लाक़े में एक चश्मे का नाम है जहां वोह रहते थे, येह "वादियुल क़ुरा" के आगे मदीनए मुनव्वरा से दस 10 मील के फ़ासिले पर है। चूंकि येह लड़ाई इसी चश्मे के क़रीब लड़ी गई इस लिये इसे "सरिय्यए ज़ातुस्सलासिल" कहते हैं। एक वज्हे तस्मिय्या येह भी है कि मुशरिकीन ने आपस में एक दूसरे को बांध लिया था ताकि कोई फ़र्द भाग न जाए इस लिये इसे "सरिय्यए ज़ातुस्सलासिल" कहते हैं।

.....हुज्जतुल इस्लाम, उ़म्दतुल मुह़द्दिसीन, रिह़लतुत्त़ालिबीन, इमामे रब्बानी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना इमाम अबुल फ़ज़्ल अह़मद बिन अ़ली बिन मुह़म्मद अल मा'रूफ़ इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की तस्रीह़ के मुत़ाबिक़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन्ही सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को "ग़ज़्वए ज़ातुस्सलासिल" में इसी इलाही फ़ौज का सरदार किया। जिस में सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर व सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) थे।"[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जैशे उसामा बिन ज़ैद और फ़ारूक़े आ'ज़म

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जैशे उसामा बिन ज़ैद में आप को शरीक बना कर भेजा। चुनान्चे,

....."उब्ना" जो "बलक़ा" के क़रीब "शराह" के अ़लाक़े और मुल्के शाम में वाक़ेअ़ है के मुक़ीम लोगों की त़रफ़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ह़याते त़य्यिबा का आख़िरी लश्कर रवाना फ़रमाया। 26 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र बरोज़ हफ़्ता हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रूमियों के मुक़ाबले के लिये जंग की तय्यारी का हुक्म फ़रमाया। रूमी उस वक़्त मुल्के शाम पर क़ाबिज़ थे। ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को हुक्म दिया कि कल 27 सफ़र बरोज़ इतवार इस मुहिम पर रवाना हो जाएं।

---

1 .....सीरते सय्यिदुल अम्बिया, स. 208, فتح البارى، كتاب المغازى، باب غزوة ذات السلاسل، ج ٩، ص ٦٣، تحت الحديث: ٤٣٥٨ـ

.....30 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र बुध की रात को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़लालत का आग़ाज़ हुवा, आप को दर्दे सर और बुख़ार लाहिक़ हो गया। जुमा'रात यकुम रबीउ़ल अव्वल को आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते अक़्दस से उन के लिये झन्डा तय्यार फ़रमाया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुहाजिरीन व अन्सार के एक क़ाफ़िले के हमराह रवाना फ़रमा दिया।

.....मुहाजिरीन में से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वग़ैरा जलीलुल क़द्र सहा़बा शामिल थे। जब कि अन्सार में से ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा बिन नो'मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना सलमह बिन अस्लम बिन ह़रीश رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वग़ैरा थे।

.....रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि लश्करे उसामा की रवानगी का बन्दोबस्त करो फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें ख़ुद रवाना फ़रमाया, सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जर्फ़ के मक़ाम में पड़ाव डाला ताकि लश्कर वहां इकठ्ठा हो सके। सहा़बए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शिद्दते मरज़ के बारे में सुना तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और कुछ दीगर सहा़बए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان मदीनए मुनव्वरा वापस लौट आए। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले इस लश्कर[1] को उसी मुहिम पर रवाना फ़रमाया जिस पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे रवाना फ़रमाया था।[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1.....इस लश्कर की मज़ीद तफ़्सीलात के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 723 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "फ़ैज़ाने सिद्दीके़ अक्बर" स. 343 मुलाहज़ा कीजिये।

2..... اسد الغابہ، اسامۃ بن زید، ج ۱، ص ۱۰۴, सीरते सय्यिदुल अम्बिया, स. 227।

दसवां बाब

फ़ारूक़े आ'ज़म और विसाले ह़बीबे ख़ुदा

इस बाब में मुलाह़ज़ा कीजिये................

.....रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मौजूदगी में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की इमामत

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه और ह़दीसे क़िरत़ास की नफ़ीस तौजीहात

.....रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की मुवाफ़िक़त

.....सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की मुवाफ़िक़त

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तक्लीफ़ से बचाना

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की बा कमाल फ़िरासत

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की मदनी सोच

.....विसाले मह़बूब पर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के दर्दनाक जज़्बात

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के सदमे की कैफ़िय्यत

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के बारगाहे रिसालत में दुरूदो सलाम के गुलदस्ते

फ़ारूक़े आ'ज़म और विसाले रसूलुल्लाह

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर येह कहा जाए कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये बल्कि तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के लिये उन की ह़यात का सब से बड़ा सदमा ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाले ज़ाहिरी था तो बेजा न होगा। क्यूंकि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के लिये :

❁ येही तो वोह मुबारक हस्ती थी जो उन्हें कुफ़्रो शिर्क की अन्धेरी वादियों से निकाल कर ईमान व इस्लाम के उजालों की त़रफ़ खींच लाई थी। ❁ येही तो वोह मुबारक ज़ात थी जिस ने उन्हें कुफ़्र के वह़शत नाक माह़ोल से निकाल कर इस्लाम के पाकीज़ा और नफ़ीस माह़ोल का रास्ता दिखाया था। ❁ येही तो वोह हस्ती थी जो उन के तमाम दुखों का मदावा करती थी। ❁ येही तो वोह ज़ात थी जिसे देख कर उन की सारी परेशानियां और तक्लीफ़ें दूर हो जाया करती थीं। ❁ येही तो वोह मुबारक हस्ती थी जिस के मुक़ाबले में वोह अपनी आल, औलाद, घर बार सब कुछ यहां तक कि अपनी जान की भी परवाह न किया करते थे। ❁ येही तो वोह मुबारक हस्ती थी जिस की ख़ातिर अपनी जान की परवाह किये बिग़ैर कुफ़्फ़ार से जंगो जिदाल करने लग जाते थे।

जब किसी शख़्स का इन्तिक़ाल हो जाए, वोह दुन्या से चला जाए तो सब से ज़ियादा दुख उस के उन दोस्तों को होता है जिन के साथ वोह अक्सर वक़्त गुज़ारा करता था, आह....ज़रा ग़ौर तो कीजिये ! ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी पर शैख़ैने करीमैन सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क्या ह़ाल हुवा होगा जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सफ़र व ह़ज़र के साथी थे। वाक़ेई सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़याते त़य्यिबा का येह पहलू निहायत ही दर्दनाक है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा के आख़िरी लश्कर "जैशे उसामा" रवाना करने से ले कर सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़लीफ़ा बनने तक सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ बीसियों ऐसे वाक़िआ़त पेश आए जिन से بِحَمْدِ اللّٰہِ تَعَالٰی आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान ज़ाहिर होती है। जैशे उसामा को रवाना फ़रमाने के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अ़लील हो गए, इस दौरान कई नमाज़ें भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुजरए मुबारका में ही अदा फ़रमाईं। एक बार सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा में नमाज़ पढ़ाने की सआ़दत ह़ासिल हुई। चुनान्चे,

रसूलुल्लाह की मौजूदगी में फ़ारूक़े आ'ज़म की इमामत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़म्आ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मरज़ुल मौत ने जब शिद्दत इख़्तियार की, मैं उस वक़्त मुसलमानों की एक जमाअ़त के साथ मौजूद था, हज़रते सय्यिदुना बिलाल हबशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़ के लिये अज़ान दी तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जाओ और किसी से नमाज़ पढ़ाने के लिये कह दो।" हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बाहर आए तो लोगों में हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मौजूद थे अलबत्ता हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मौजूद न थे, लिहाज़ा उन्हों ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से नमाज़ के लिये अ़र्ज़ कर दिया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़ की इमामत करवाई।"....इलख़।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़म्आ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अव्वलन सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा और बा'दे अज़ां सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से हुक्मे हबीबे ख़ुदा बयान कर दिया। मा'लूम हुवा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हयाते तय्यिबा के आख़िरी अय्याम तक सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और उन के बा'द अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ही सब से अफ़्ज़ल समझते थे।

फ़ारूक़े आ'ज़म और हदीसे क़िरतास

हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मरज़े वफ़ात का मशहूर वाक़िआ़ "क़िरतास" का वाक़िआ़ है जिस में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने विसाले ज़ाहिरी से तीन रोज़ क़ब्ल इरशाद फ़रमाया कि "लाओ मैं तुम्हारे लिये ऐसी तहरीर लिख दूं कि तुम आइन्दा बहक न सको।" इस हदीसे क़िरतास से अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते तय्यिबा के कई मुबारक पहलू वाज़ेह होते हैं। तफ़्सीली हदीसे पाक कुछ यूं है :

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि जब रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी का वक़्त क़रीब आया तो

1 ......ابوداود، کتاب السنة، باب فی استخلاف ابی بکر، ج۴، ص ۲۸۳، حدیث: ۴۶۶۰۔

आप के हुजरए मुबारका में बहुत से सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان मौजूद थे । जिन में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه भी मौजूद थे । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : هَلُمَّ اَكْتُبْ لَكُمْ كِتَابًا لَا تَضِلُّوا بَعْدَهُ "या'नी आओ मैं तुम्हें एक तह़रीर लिख दूं ताकि इस के बा'द तुम न बहक सको ।" (एक रिवायत में शाने की हड्डी लाने का ज़िक्र है) येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाने लगे : اِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ غَلَبَ عَلَيْهِ الْوَجَعُ وَعِنْدَكُمُ الْقُرْآنُ حَسْبُنَا كِتَابُ اللّٰهِ "या'नी इस वक़्त हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बीमारी की तक्लीफ़ ज़ियादा है तुम्हारे पास क़ुरआन है वोही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किताब तुम्हारे लिये काफ़ी है ।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का येह फ़रमान सुन कर वहां मौजूद सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में इख़्तिलाफ़ वाक़ेअ़ हो गया बा'ज़ ने कहा कि सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास लिखने का सामान वग़ैरा ले आओ ताकि वोह तुम्हारे लिये तह़रीर लिख दें, जब कि बा'ज़ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه वाला मौक़िफ़ इख़्तियार किया कि इस वक़्त रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ालते तक्लीफ़ में हैं लिहाज़ा इस अम्र की ह़ाजत नहीं । जब इख़्तिलाफ़ ज़ियादा हुवा तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : قُوْمُوْا "या'नी तुम लोग मेरे पास से उठ जाओ ।"(1)

रसूलुल्लाह से फ़ारूक़े आ'ज़म की राए की मुवाफ़िक़त

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते तृय्यिबा में भी येह आ़दते मुबारका थी कि बा'ज़ औक़ात रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कोई बात इरशाद फ़रमाते तो आप उस के बा'द अपनी राए का इज़्हार फ़रमाते और बारहा ऐसा हुवा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस की मुवाफ़िक़त फ़रमाई और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की राए को क़बूल फ़रमाया । जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की मश्हूर ह़दीसे पाक है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें अपनी ना'लैने मुबारका दे कर भेजा और इरशाद फ़रमाया कि "जो दिल से इस बात की गवाही दे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं उसे जन्नत की बिशारत दे दो ।" लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया :

---

1 ......بخاری، کتاب المرضی، باب قول المریض قوموا عنی، ج ۴، ص ۱۲، حدیث: ۵۶۶۹ ملتقطا۔

"या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस त़रह़ तो लोग इसी पर तक्या कर के बैठ जाएंगे और अ़मल करना छोड़ देंगे लिहाज़ा आप लोगों को अ़मल करने दें।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की इस राए को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़बूल फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! अगर ऐसी बात है तो उन्हें अ़मल करने दो।"(1)

ह़दीसे क़िरत़ास में भी ऐसा ही हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तह़रीर लिखने का इरशाद फ़रमाया लेकिन आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपनी राए पेश की, कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस वक़्त तक्लीफ़ में हैं लिहाज़ा इस की ह़ाजत नहीं तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी इन्कार न फ़रमाया और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की राए की मुवाफ़िक़त फ़रमाई।

फ़ारूक़े आ'ज़म की राए की सह़ाबए किराम से मुवाफ़िक़त

जब आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपनी राए का इज़्हार फ़रमाया तो वहां मौजूद सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان में अव्वलन थोड़ा इख़्तिलाफ़ ज़ाहिर हुवा लेकिन बा'दे अज़ां किसी ने भी इस मुआ़मले में कोई पेश रफ़्त न की क्यूंकि इस वाक़िए के तक़रीबन तीन दिन बा'द दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुन्या से पर्दा फ़रमाया और आख़िरी दिन या'नी पीर के रोज़ तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़बीअ़त काफ़ी बेहतर थी मगर इन तीन दिनों में किसी सह़ाबी ने न तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने इस बात का तज़्किरा किया और न ही अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के सामने इस का तज़्किरा किया जो इस बात की वाज़ेह़ दलील है कि इब्तिदाई इख़्तिलाफ़ के बा'द वहां मौजूद तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان ने भी आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की राए से मुवाफ़िक़त कर ली थी।

मौला अ़ली से फ़ारूक़े आ'ज़म की राए की मुवाफ़िक़त

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم व दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان के साथ साथ ख़ुद मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم) से भी आप की राए की मुवाफ़िक़त ज़ाहिर है। मौला

1 ......مسلم، کتاب الایمان، الدلیل علی ان من مات علی التوحید۔۔۔الخ، ص ۳۷، حدیث: ۵۲ ملخصاً۔

अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे हुक्म दिया कि ''मैं एक त़बक़ ले कर आऊं जिस पर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऐसी चीज़ लिख दें जिस की वज्ह से आप की उम्मत आप के बा'द गुमराह न हो।'' फ़रमाते हैं : فَخَشِيْتُ اَنْ تَفُوْتَنِيْ نَفْسُهُ ''या'नी मुझे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दुन्या से तशरीफ़ ले जाने का ख़ौफ़ था।'' लिहाज़ा मैं ने इस बात की ज़रूरत महसूस न की और अ़र्ज़ किया : اِنِّيْ اَحْفَظُ وَاَعِيْ ''या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप मुझे बयान फ़रमा दें मैं इस को याद कर के मह़फ़ूज़ कर लूंगा।'' आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اُوْصِيْ بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ''या'नी मैं तुम्हें नमाज़, ज़कात की अदाएगी, ग़ुलामों और बांदियों के साथ हुस्ने सुलूक की वसिय्यत करता हूं।''(1)

इस ह़दीसे मुबारका से वाज़ेह़ है कि ख़ुद मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) भी आप की त़बीअ़त को देखते हुवे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये लिखने का सामान वग़ैरा न लाए क्यूंकि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه और आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه दोनों रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह के तरबिय्यत याफ़्ता जानिसार सह़ाबा थे इन दोनों की मदनी सोच में कैसे फ़र्क़ हो सकता था जब कि आप दोनों के इ़श्क़े रसूल की बे शुमार रिवायात कुतुबे अह़ादीस में मौजूद हैं।

फ़ारूक़े आ'ज़म का रसूलुल्लाह को तक्लीफ़ से बचाना

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की ज़ाते मुबारका वोह ज़ात थी जिस ने अपनी पूरी ज़िन्दगी रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत और ह़िफ़ाज़त में गुज़ार दी, आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का इ़श्क़े रसूल तो ऐसा था कि अगर कोई मुसलमान भी ऐसी बात करता जिस से आप को अज़िय्यते रसूल का ख़दशा होता तो उस की गर्दन मारने के लिये तय्यार हो जाते आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़िय्यत और तक्लीफ़ किसी सूरत गवारा न थी येही वज्ह है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब तह़रीर के लिये सामान त़लब फ़रमाया तो आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मशक़्क़त में पड़ना गवारा न किया और आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का येह फ़े'ल रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से शदीद मह़ब्बत और आप को तक्लीफ़ से बचाने की ग़रज़ से था।

---

(1) ......مسند امام احمد، مسند علی بن ابی طالب، ج ۱، ص ۱۹۵، حدیث: ۶۹۳۔

रसूलुल्लाह से फ़ारूक़े आ'ज़म का हुस्ने ज़न

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह हुस्ने ज़न था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस वक़्त तक विसाले ज़ाहिरी नहीं फ़रमाएंगे जब तक तमाम मुनाफ़िक़ीन को तहे तेग़ न कर लें और फ़ारिस और रूम पर इस्लाम के झन्डे न गाड़ दें और उन का येह भी ख़याल था कि अगर इस वक़्त रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नहीं लिखा तो कोई बात नहीं जब तन्दुरुस्त हो जाएंगे तो बा'द में लिख देंगे। जैसा कि इमाम इब्ने सा'द बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने मरज़े वफ़ात में इरशाद फ़रमाया : وَائْتُوْنِيْ بِدَوَاةٍ وَصَحِيْفَةٍ اَكْتُبُ لَكُمْ كِتَابًا لَنْ تَضِلُّوْا بَعْدَهُ اَبَدًا ''या'नी मुझे दवात और काग़ज़ ला कर दो मैं तुम को ऐसी चीज़ लिख कर दूंगा जिस के बा'द तुम कभी गुमराह नहीं होगे।'' तो हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया :

مَنْ لِفُلَانَةٍ وَفُلَانَةٍ مَدَائِنُ الرُّوْمِ اِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْسَ بِمَيِّتٍ حَتّٰى نَفْتَتِحَهَا

''या'नी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! फुलां फुलां और रूम के शहरों का क्या होगा, जब तक हम उन शहरों को फ़त्ह न कर लें आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस दुन्या से तशरीफ़ नहीं ले जाएंगे।''(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म की बा कमाल फ़िरासत

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी फ़िरासत से जान लिया था कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस चीज़ को लिखवाने का इरशाद फ़रमा रहे हैं वोह कोई हुक्मे शरई नहीं है। क्यूंकि अगर ऐसा होता तो सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस को ज़रूर लिखवाते कि ख़ुद रब عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : ﴿يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ؕ﴾ (پ٦، المائدة: ٦٧) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ''ऐ रसूल पहुंचा दो जो कुछ उतरा तुम्हें तुम्हारे रब की त़रफ़ से और ऐसा न हो तो तुम ने उस का कोई पयाम न पहुंचाया।'' येही वज्ह थी कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कुफ़्फ़ारे मक्का की त़रफ़ से दी जाने वाली इतनी अज़िय्यतों और तकालीफ़ के बा

1 ......طبقات کبری، ذکر الکتاب الذی اراد۔۔۔الخ، ج ٢، ص ١٨٨۔

वुजूद नेकी की दा'वत को कभी तर्क न फ़रमाया। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बा कमाल फ़िरासत थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह जान लिया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कोई अहम शरई हुक्म नहीं लिखवाना चाहते। इस बात की यूं भी ताईद होती है कि अगर कोई ज़रूरी अम्रे दीनी लिखवाना होता तो नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस वाक़िए़ के तक़रीबन तीन[3] दिन बा'द तक दुन्या से तशरीफ़ ले गए तो इन तीन दिनों में वोह अम्र लिखवा देते, मगर आप ने न लिखवाया जो इस बात पर वाज़ेह़ दलील है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी अहम तरीन हुक्मे शरई को नहीं लिखवाना चाहते थे।

फ़ारूक़े आ'ज़म की मदनी सोच

बा'ज़ उ़लमाए किराम ने यहां येह नुक्ता भी बयान फ़रमाया है कि हो सकता है दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कोई ज़रूरी अम्रे दीनी बयान न फ़रमाना चाहते हों बल्कि जो शरई अह़काम बयान हो चुके हैं उन की ताकीद के तौ़र पर कुछ लिखवाना चाहते हों, लेकिन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **حَسْبُنَا كِتَابُ اللهِ** "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे लिये किताबुल्लाह ही काफ़ी है।" कह कर अपनी इस मदनी सोच का इज़्हार किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप ने बिला वासित़ा खुद हमें तमाम अह़कामे शरइय्या बयान फ़रमा दिये तो हमें अब किसी ताकीद की ह़ाजत नहीं, आप तक्लीफ़ न फ़रमाएं। लिहाज़ा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी इस की ज़रूरत मह़सूस न फ़रमाई।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रसूलुल्लाह की आख़िरी नमाज़ें

9 रबीउ़ल अव्वल जुमुआ़ की रात को दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मरजुल वफ़ात ने शिद्दत इख़्तियार कर ली और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर इस के बाइस तीन[3] बार ग़शी त़ारी हो गई। इसी वज्ह से नमाज़े इशा के लिये तशरीफ़ न ला सके और इरशाद फ़रमाया : **مُرُوْا اَبَابَكْرٍ اَنْ يُّصَلِّىَ بِالنَّاسِ** "या'नी अबू बक्र को हुक्म दो कि वोह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं।" सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जगह खड़े हो कर नमाज़ पढ़ाई और बाक़ी तीन दिनों की नमाज़े पंजगाना की

इमामत भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ही कराई। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो नमाज़ बैठ कर अदा फ़रमाई वोह हफ़्ता या इतवार की नमाज़े ज़ोहर थी और इस में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इमाम थे। जब कि वोह नमाज़ जो एक कपड़े में अदा फ़रमाई वोह पीर की नमाज़े फ़ज्र थी और उस नमाज़ की इमामत के फ़राइज़ सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सर अन्जाम दिये। येही वोह फ़ज्र की आख़िरी नमाज़ है जो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अदा फ़रमाई इस के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दुन्या से तशरीफ़ ले गए।(1)

सिद्दीक़े अक्बर का नसीहत आमोज़ ख़ुत़बा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द तमाम सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان शिद्दते ग़म से निढाल थे और किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि अब क्या होगा ? ऐसे में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के बिखरे हुवे जज़्बात को यक्जा करने और शीराज़ए इस्लाम को मुन्तशिर होने से बचाने के लिये एक नसीहत आमोज़ ख़ुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया :

فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ يَعْبُدُ مُحَمَّدًا صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَإِنَّ مُحَمَّدًا قَدْ مَاتَ وَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ يَعْبُدُ اللّٰهَ فَإِنَّ اللّٰهَ حَيٌّ لَا يَمُوتُ

''या'नी तुम में से जो शख़्स रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इ़बादत करता था तो वोह सुन ले कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस दुन्या से तशरीफ़ ले गए हैं और जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करता है तो वोह भी सुन ले कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़िन्दा है उसे कभी मौत नहीं आएगी।'' फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

﴿وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَاۡئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ؕ
وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْــٴًـا ؕ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ۝﴾ (پ ۴، آل عمران: ۱۴۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''और मुह़म्मद तो एक रसूल हैं इन से पहले और रसूल हो चुके तो क्या अगर वोह इन्तिक़ाल फ़रमाएं या शहीद हों तो तुम उलटे पाउं फिर जाओगे और जो उलटे पाउं फिरेगा अल्लाह का कुछ नुक़्सान न करेगा और अ़न क़रीब अल्लाह शुक्र वालों को सिला देगा।''

---

1 ..... مرقاۃ المفاتیح، کتاب الصلوۃ، باب ماعلی الماموم من المتابعۃ وحکم المسبوق، الفصل الثالث، ج ۳، ص ۲۲۹، सीरते सय्यिदुल अम्बिया, स. 600।

येह आयते मुबारका सुन कर लोगों को ऐसे लगा कि गोया ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस आयत को पढ़ने से क़ब्ल वोह इसे जानते ही न थे, येह आयत सुनते ही हर शख़्स येही आयत दोहराने लगा। और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं कि : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से येह आयते मुबारका सुन कर मैं ह़ैरान व शशदर रह गया और मुझ पर सक्ता त़ारी हो गया, मेरी टांगों ने मेरा साथ छोड़ दिया और मैं ज़मीन पर गिर गया। बहर ह़ाल आयते मुबारका सुन कर मुझे यक़ीन हो गया कि वाक़ेई आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दुन्या से तशरीफ़ ले जा चुके हैं।"[1]

बारगाहे रिसालत में सिद्दीक़ व फ़ारूक़ का सलाम

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन ह़ारिस तैमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "जब दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कफ़न दे दिया गया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जसदे मुबारक चारपाई पर रख दिया गया तो शैख़ैने करीमैन या'नी सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) अन्दर दाख़िल हुवे और यूं सलाम अ़र्ज़ किया : اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ اَیُّھَا النَّبِیُّ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ "या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप पर सलाम हो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और उस की बरकतें नाज़िल हों।" और इन दोनों के साथ इतने मुहाजिरीन व अन्सार थे कि सारा कमरा भर गया उन सब ने सफ़ें बना लीं और कोई इमाम न था, फिर उन सब ने भी शैख़ैने करीमैन की त़रह़ सलाम अ़र्ज़ किया। शैख़ैने करीमैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) पहली सफ़ में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मुंह कर के खड़े थे, अ़र्ज़ करने लगे :

✿.....اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَشْھَدُ اَنْ قَدْ بَلَّغَ مَا اُنْزِلَ اِلَیْہِ "या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम इस बात की गवाही देते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम तक वोह तमाम बातें अच्छी त़रह़ पहुंचा दी हैं जो इन पर नाज़िल की गईं।"

✿.....وَنَصَحَ لِاُمَّتِہٖ وَجَاھَدَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ حَتّٰی اَعَزَّ اللّٰہُ دِیْنَہٗ "और इन्हों ने अपनी उम्मत को अच्छी त़रह़ नसीह़त की, राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ऐसा जिहाद किया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने दीन को इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमाई।"

---

1 ......بخاری، کتاب المغازی، مرض النبی ووفاتہ، ج ۳، ص ۱۵۸، حدیث: ۴۴۵۴۔

عمدۃ القاری، کتاب المغازی، باب مرض النبی ۔۔۔ الخ، ج ۱۲، ص ۴۰۰، تحت الحدیث: ۴۴۵۴۔

.....وَتَمَّتْ كَلِمَاتُهٗ فَاٰمِنُ بِهٖ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ "और रब عَزَّوَجَلَّ का कलाम तमाम हो गया, पस मैं उस पर ईमान लाता हूं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं।"

.....فَاجْعَلْنَا يَااِلٰهَنَا مِمَّنْ يَّتَّبِعُ الْقَوْلَ الَّذِيْ اُنْزِلَ مَعَهٗ "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें उन लोगों में से बना दे जो उस कुरआने पाक की इत्तिबाअ़ करने वाले हों जो तूने उन पर नाज़िल फ़रमाया है।"

.....وَاجْمَعْ بَيْنَنَا وَبَيْنَهٗ حَتّٰى يَعْرِفَنَا وَنَعْرِفَهٗ "और हमें और उन्हें मिला दे कि वोह हमें पहचान लें और हम उन्हें पहचान लें।"

.....فَاِنَّهٗ كَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَؤُفًا رَّحِيْمًا "क्यूंकि येह मोमिनों पर बहुत मेहरबान और रह़्म फ़रमाने वाले हैं।"

.....لَانَبْتَغِيْ بِالْاِيْمَانِ بَدْلًا وَلَا نَشْتَرِيْ بِهٖ ثَمَنًا اَبَدًا "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम ईमान का बदला नहीं चाहते और न ही किसी क़ीमत पर इसे फ़रोख़्त करना चाहते हैं।"

इस दुआ़ पर तमाम लोग "आमीन-आमीन" कहने लगे। फिर जिन लोगों ने सलाम अ़र्ज़ कर दिया था वोह बाहर निकलते गए और दीगर लोग अन्दर आ कर सलाम अ़र्ज़ करते रहे यहां तक कि तमाम मर्दों औ़रतों और बच्चों तक ने सलाम अ़र्ज़ कर दिया। फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जसदे अत़्हर को क़ब्रे मुनव्वर में उतार दिया गया।(1)

विसाले मह़बूब पर फ़ारूके़ आ'ज़म के दर्दनाक जज़्बात

मह़बूबे रब्बे जुल जलाल, शहनशाहे खुश ख़िसाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले पुर मलाल के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़िराके़ रसूल में रोते हुवे अ़र्ज़ करने लगे :

....."या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे मां-बाप आप पर कुरबान ! आप खजूर के तने से टेक लगा कर खुत़्बा इरशाद फ़रमाया करते थे, जब ता'दाद में इज़ाफ़ा हुवा तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मिम्बर बनवाया ताकि लोग बा आसानी खुत़्बा सुन सकें, आप के फ़िराक़ में उस तने ने गिर्या व ज़ारी की तो आप ने दस्ते मुबारक फेर कर तसल्ली दी तो वोह चुप हो गया, या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप की जुदाई में आप की उम्मत पर उस तने से ज़ियादा रोने का ह़क़ है।

---

1 .....طبقات کبری، ذکر الصلاۃ علی رسول اللہ، ج۲، ص ۲۲۱۔

.....या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे मां–बाप आप पर कुरबान ! बारगाहे इलाही में आप का मक़ाम इस क़दर बुलन्द है कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने आप की इत़ाअ़त को अपनी इत़ाअ़त क़रार देते हुवे इरशाद फ़रमाया : ﴿مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ﴾ (پ۵، النساء:۸۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''जिस ने रसूल का हुक्म माना बेशक उस ने अल्लाह का हुक्म माना।''

.....या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां–बाप आप पर कुरबान ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस क़दर फ़ज़ीलत है कि आप के लिये अ़फ़्व की नवीद सुनाई और फ़रमाया : ﴿عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ﴾ (پ۱۰، التوبۃ:۴۳) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ''अल्लाह तुम्हें मुआ़फ़ करे तुम ने इन्हें क्यूं इज़्न दे दिया ?''

.....या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे मां–बाप आप पर कुरबान ! रब तआ़ला के हां आप को इस दरजे की फ़ज़ीलत ह़ासिल है कि उस ने आप को सब से आख़िर में मबऊ़स फ़रमाया लेकिन ज़िक्र सब से पहले किया : ﴿وَ اِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ وَ مِنْكَ وَ مِنْ نُّوْحٍ وَّ اِبْرٰهِيْمَ﴾ (پ۲۱، الاحزاب:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''और ऐ मह़बूब याद करो जब हम ने नबियों से अ़ह्द लिया और तुम से और नूह़ और इब्राहीम।''

.....या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां–बाप आप पर कुरबान ! आप ने बारगाहे इलाही में इतनी फ़ज़ीलत पाई है कि जहन्नमी जहन्नम के मुख़्तलिफ़ त़बक़ात में जल रहे होंगे और आप की इत़ाअ़त न करने पर ग़म व ह़सरत का इज़्हार करते होंगे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने पाक में इसे यूं बयान फ़रमाया : ﴿يٰلَيْتَنَاۤ اَطَعْنَا اللّٰهَ وَ اَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ۝۶۶﴾ (پ۲۲، الاحزاب:۶۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''हाए किसी त़रह़ हम ने अल्लाह का हुक्म माना होता और रसूल का हुक्म माना होता।''

.....''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे मां–बाप आप पर कुरबान ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन दावूद عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के क़ब्ज़े में हवा ऐसी कर दी जिस के ज़रीए़ सुब्ह़ो शाम में एक एक महीने का फ़ासिला तै़ किया जा सकता था और इस से भी अ़जीब तर आप का बुराक़ था जिस पर आप न सिर्फ़ सातवें आस्मान तक पहुंचे बल्कि नमाज़े फ़ज्र वादिये अब्त़ह़ में अदा फ़रमाई।

.....''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे मां–बाप आप पर कुरबान ! अगर ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा बिन मरयम عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुर्दे ज़िन्दा करने का मो'जिज़ा अ़ता फ़रमाया तो इस से ज़ियादा तअ़ज्जुब ख़ैज़ मुआ़मला येह है कि ज़ह्र आलूद भुनी हुई बकरी के शाने ने आप से कलाम किया और अ़र्ज़ किया : मुझे तनावुल न फ़रमाइये क्यूंकि मुझ में ज़ह्र मिलाया गया है।''

.....या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां–बाप आप पर कुरबान ! ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम के ख़िलाफ़ दुआ़ की, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस त़रह़ बयान फ़रमाया : ﴿رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا﴾ (پ۲۹، نوح:۲۶) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ''ऐ मेरे रब ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई बसने वाला न छोड़।'' अगर आप भी इसी की मिस्ल बारगाहे इलाही में इल्तिजा करते तो सब हलाक हो जाते, आप की पीठ मुबारक को तक्लीफ़ दी गई, रुख़े अन्वर को लहू लुहान किया गया, दन्दाने मुबारक (के कुछ हिस्से) शहीद किये गए, लेकिन आप ने उन के लिये भलाई ही मांगी और बारगाहे इलाही में यूं अ़र्ज़ की : اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِیْ فَاِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ''या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी क़ौम के लोगों को मुआ़फ़ फ़रमा दे येह मुझे नहीं जानते।'' या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे मां–बाप आप पर कुरबान ! आप की उ़म्र मुबारक और ज़मानए तब्लीग़ कम लेकिन आप पर ईमान लाने वालों की ता'दाद ज़ियादा है जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की उ़म्र और ज़मानए तब्लीग़ ज़ियादा लेकिन उन पर ईमान लाने वालों की ता'दाद कम रही।

.....''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां–बाप आप पर कुरबान ! अगर आप अपने साथ सिर्फ़ अपने बराबर के लोगों को बिठाते तो हमें न बिठाते, अगर आप अपने बराबर के लोगों में शादी करना चाहते तो हमारे ख़ानदान में आप का निकाह़ न होता, अगर आप अपने बराबर के लोगों के साथ खाना खाना चाहते तो हमारे साथ न खाते, लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप ने हमें अपनी हम नशीनी का शरफ़ बख़्शा, हमारे ख़ानदान में शादी की, हमें खाने में साथ बिठाया, ऊन का लिबास ज़ेबे तन फ़रमाया, दराज़ गोश को सुवारी बनाया, सुवारी पर अपने पीछे दूसरों को बिठाया, ज़मीन पर बैठ कर खाना खाया, बत़ौरे तवाज़ोअ़ अपनी उंगलियां चाटीं।''(1)

1 ......इह़याउल उ़लूम, जि, 1, स. 926

फ़ारूके़ आ'ज़म के सदमे की कैफ़िय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, हम गुनहगारों के त़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी का तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को बहुत शदीद सदमा पहुंचा, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه पर तो आप के ग़म की कुछ अ़जीब ही कैफ़िय्यत थी। क्यूंकि,

- आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वोह जानिसार साथी थे जो खुद आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ़ के सबब ईमान लाए थे।
- आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराज़ व हम नशीन थे।
- आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه वोह अव्वलीन शख़्सिय्यत थे जिन्हें प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने ह़क़्क़े तर्जुमान से "**फ़ारूक़**" का लक़ब अ़त़ा हुवा।
- आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इस्लाम की तब्लीग़ को अपनी ह़यात का जुज़्ए लाज़िमी बना रखा था।
- आप हर वक़्त नामूसे रिसालत पर अपनी जान लुटाने के लिये ह़ाज़िरे ख़िदमत रहा करते थे।
- आप की तल्वार नामूसे रिसालत के दुश्मनों के लिये हर वक़्त नियाम से बाहर आ जाती थी।
- आप सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मलाल के वक़्त आप की दिलजूई की कोशिशें करते थे।
- आप रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात, आल औलाद, इ़ज़्ज़त व नामूस और आप के अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم के मुह़ाफ़िज़ थे।
- आप ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में इ़ल्मी सुवालात करने की सआ़दत पाते थे।

ख़ातमुल मुर्सलीन रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका के साथ आप के इन तमाम गहरे रिश्तों के सबब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले मुबारका ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه

को सदमे से चूर चूर कर दिया था, तमाम सहाबए किराम عَلَیۡهِمُ الرِّضۡوَان अश्क बार थे, ऐसा मह़सूस होता था कि काइनात के ज़र्रे ज़र्रे ने विसाले मह़बूब को मह़सूस किया, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ पर अ़जीब कैफ़िय्यत त़ारी थी ऐसा लगता था हर चीज़ आप से पूछ रही हो :

.....ऐ फ़ारूक़ ! क्या तुम अपने मह़बूब के बिग़ैर ज़िन्दा रह पाओगे...?

.....ऐ फ़ारूक़ ! अब सुब्ह़ो शाम किस के रुख़े अन्वर की ज़ियारत करोगे...?

.....ऐ फ़ारूक़ ! अब तुम किस की बारगाह से इ़ल्मी सुवालात पूछा करोगे...?

.....ऐ फ़ारूक़ ! अब तुम अपने दिल की बातें किस से किया करोगे...?

.....ऐ फ़ारूक़ ! अब तुम किस की दिलजूई करोगे...?

.....ऐ फ़ारूक़ ! अब तुम्हारे नाज़ कौन उठाएगा....?

.....ऐ फ़ारूक़ ! अब तुम्हें कौन शफ़्क़त व रह़मत भरी नज़रों से देखेगा...?

.....ऐ फ़ारूक़ ! अब तुम किस से अपने मुआ़मलात की मुशावरत करोगे...?

शायद येही वज्ह थी कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ इस कैफ़िय्यत को बरदाश्त न कर सके और बा'ज़ रिवायात के मुत़ाबिक़ तल्वार निकाल कर इरशाद फ़रमाया कि अगर किसी ने कहा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم विसाल फ़रमा गए तो उस की गर्दन उड़ा दूंगा।[1] यक़ीनन आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ पर जो कैफ़िय्यत त़ारी थी वोह इन्ही जज़्बात का तक़ाज़ा करती थी, येह तो सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ जैसे दोस्त की रफ़ाक़त थी जिस ने फ़सीह़ो बलीग़ ख़ुत़बे के ज़रीए़ इन जज़्बात को तस्कीन पहुंचाई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर करोड़ों रह़मतें नाज़िल हों।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रसूलुल्लाह की वफ़ात कब हुई....?

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن **फ़तावा रज़विय्या शरीफ़** में इरशाद फ़रमाते हैं : "क़ौले मश्हूर व मो'तमदे जमहूर दवाज़दहुम (या'नी बारह) रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ है, इब्ने सा'द ने त़बक़ात में ब त़रीक़े उ़मर बिन अ़ली मुर्तज़ा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) अमीरुल मोमिनीन मौला अ़ली (کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجۡہَہُ الۡکَرِیۡم)

1 ......مدارج النبوۃ، ج ۲، ص ۴۳۳۔

से रिवायत की : مَاتَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یَوْمَ الْاِثْنَیْنِ لِاِثْنَتَیْ عَشَرَۃَ مَضَتْ مِنْ رَبِیْعِ الْاَوَّلِ ''या'नी हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात शरीफ़ रोजे़ दो शम्बा (पीर शरीफ़) बारहवीं तारीख़ रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ को हुई।''

मज़ीद फ़रमाते हैं : ''और तह़क़ीक़ येह है कि (तारीखे़ वफ़ात) ह़क़ीक़तन बि ह़स्बे रूइयत मक्कए मुअ़ज़्ज़मा रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ की तेरहवीं थी, मदीनए त़य्यिबा में रूइयत न हुई लिहाज़ा उन के हि़साब से बारहवीं ठहरी। वोही रुवात ने अपने हि़साब की बिना पर रिवायत की और मश्हूरो मक़्बूले जमहूर हुई।''[1]

अहम वज़ाह़ती मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाजे़ह़ रहे कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तारीखे़ विसाल में बा'ज़ उ़लमाए अहले सुन्नत का इख़्तिलाफ़ भी मज़्कूर है। लेकिन तारीखे़ विसाल जो भी हो आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात पर सोग किसी सूरत नहीं मनाया जाएगा कि सोग तीन दिन से ज़ियादा ह़लाल नहीं सिवाए उस औ़रत के जिस के शोहर का इन्तिक़ाल हो चुका हो कि उस का सोग चार माह दस दिन तक है। चुनान्चे, उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा व उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़श (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि हु़ज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जो औ़रत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखती है, उसे येह ह़लाल नहीं कि किसी मय्यित पर तीन रातों से ज़ियादा सोग करे, मगर शोहर पर कि चार महीने दस दिन सोग करे।''[2]

ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का यौमे विलादत बारह रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ है और दुन्या भर के आ़शिक़ाने रसूल इस मुबारक तारीख़ को आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का यौमे मीलाद बड़ी धूम धाम से मनाते हैं, वाजे़ह़ रहे कि विलादत पर ख़ुशी मनाने का शरअ़ में कोई वक़्त मुक़र्रर नहीं है, विलादत की ख़ुशी किसी भी दिन, किसी भी वक़्त क़ियामत तक मनाई जा सकती है। येही वज्ह है कि बा'ज़ उ़श्शाक़ तो पूरा साल ही मीलाद मनाते रहते थे।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 .....फ़तावा रज़विय्या, जि. 26, स. 415-417।

2 .....بخاری، کتاب الجنائز، باب حد المرأۃ علی غیر زوجھا، ج ۱، ص ۴۳۳، حدیث: ۱۲۸۲، ۱۲۸۱۔

ग्यारहवां बाब

फ़ारूक़े आ'ज़म अ़ह्दे सिद्दीक़ी में

इस बाब में मुलाहृज़ा कीजिये...............

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अ़ह्दे सिद्दीक़ी में ख़िदमात

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअ़त

.....सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़िलाफ़त के लिये पेश कर दिया।

.....अपना हाथ बैअ़त के लिये बढ़ाइये।

.....एक नियाम में दो तल्वारें एक साथ नहीं रह सकतीं।

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नसीहृत आमोज़ ख़ुत़बा

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ब हैसिय्यते वज़ीर व मुशीरे सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आ़लमे इस्लाम के सब से पहले क़ाज़ी

.....सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ख़िलाफ़ते फ़ारूक़े आ'ज़म

...   .

फ़ारूके़ आ'ज़म अ़हदे सिद्दीक़ी में

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अ़हदे ख़िलाफ़त शुरूअ़ हुवा । अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जिस त़रह़ अ़हदे रिसालत में अ़ज़ीम किरदार अदा किया इसी त़रह़ अ़हदे सिद्दीक़ी में भी ला जवाब किरदार पेश किया। ख़ुसूसन अमीरुल मोमिनीन, ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बहुत ही आ'ला किरदार अदा किया, क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द मुसलमानों के लिये सब से बड़ा मस्अला एक ऐसे अ़ज़ीम रहनुमा का था जो उन की हर हर मुआ़मले में रहनुमाई करता । इस लिये मुहाजिरीन व अन्सार में मा'मूली सा इख़्तिलाफ़ भी वाके़अ़ हुवा । इस दौरान कई ऐसे वाक़िआ़त रू नुमा हुवे जो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अ़ज़मत पर दलालत करते हैं ।

फ़ारूके़ आ'ज़म और बैअ़ते सिद्दीके़ अक्बर

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द मुहाजिरीन व अन्सार पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जो सब से पहली फ़ज़ीलत ज़ाहिर हुई वोह येह कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नामे नामी ख़िलाफ़त के लिये पेश कर दिया । चुनान्चे,

ख़िलाफ़त के लिये फ़ारूके़ आ'ज़म को पेश कर दिया

सक़ीफ़ए बनी साइदा में जहां मुहाजिरीन व अन्सार जम्अ़ थे, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब के सामने एक फ़सीह़ो बलीग़ ख़ुत़बा दिया जिस में अव्वलन मुहाजिरीन के ऐसे फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए जिन से उन्हें ऐसे लगा कि ख़लीफ़ा मुहाजिरीन ही में से होगा, बा'द में अन्सार के ऐसे फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए जिन से सामेईन ने मह़सूस किया कि ऐसा ख़लीफ़ा अन्सार ही में से होगा । लेकिन इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक वज्हे तरजीह़ बयान फ़रमाई कि चूंकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुश्किल वक़्त में मुहाजिरीन ने उन का साथ दिया, कुफ़्फ़ारे मक्का का मुक़ाबला किया इस लिये ख़िलाफ़त के ह़क़दार येही हैं । लेकिन अन्सार की मदद से येह बातें मुमकिन हुईं, इस लिये अन्सार की मुशावरत के बिग़ैर ख़लीफ़ा का तक़र्रुर नहीं होगा । जब

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस त़रह़ की वुजूहे तरजीह़ बयान फ़रमाई तो तमाम मुहाजिरीन व अन्सार का इख़्तिलाफ़ दूर हो गया और एक निहायत ही प्यारी फ़ज़ा क़ाइम हो गई। हो सकता था कि किसी के ज़ेह्न में येह ख़याल पैदा होता कि शायद सय्यिदुना सिद्दीके अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह रास्ता अपने लिये हमवार किया हो। लिहाज़ा इस वस्वसे की काट के लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हाथ पकड़ कर इरशाद फ़रमाया : قَدْ رَضِیْتُ لَکُمْ اَحَدَ هٰذَیْنِ الرَّجُلَیْنِ فَبَایِعُوْا اَیَّهُمَا شِئْتُمْ "या'नी मैं आप लोगों के सामने दो[2] क़ुरैशी हस्तियों को पेश करता हूं आप लोग दोनों में से जिस की चाहो बैअ़त कर सकते हो।"

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये येह निहायत ही शरफ़ की बात थी कि सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को ख़िलाफ़त के लिये पेश किया था, लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अच्छी त़रह़ जानते थे कि सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह अ़ज़ीम हस्ती हैं जिन्हें रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी ह़याते त़य्यिबा में ही इशारतन इस चीज़ के लिये नामज़द फ़रमा दिया था, लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं :

كَانَ وَاللّٰهِ اَنْ اُقَدَّمَ فَتُضْرَبَ عُنُقِي لَا یُقَرِّبُنِي ذٰلِکَ مِنْ اِثْمٍ اَحَبَّ اِلَيَّ مِنْ اَنْ اَتَاَمَّرَ عَلٰى قَوْمٍ فِيهِمْ اَبُوْ بَكْرٍ "या'नी ख़ुदा की क़सम ! उस दिन बिग़ैर किसी गुनाह के मेरी गर्दन का उड़ा दिया जाना मुझे इस से कहीं बेहतर नज़र आता था कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के होते हुवे मैं लोगों पर ख़लीफ़ा व ह़ाकिम बनूं।"[1]

बैअ़त के लिये अपना हाथ बढ़ाइये

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : اُبْسُطْ یَدَکَ نُبَایِعْ لَکَ "या'नी आप अपना हाथ आगे बढ़ाइये ताकि हम आप की बैअ़त करें।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : اَنْتَ اَفْضَلُ مِنِّيْ "या'नी आप मुझ से अफ़्ज़ल हैं।" आप ने जवाब दिया : اَنْتَ اَقْوٰی مِنِّيْ "या'नी ऐ उ़मर ! आप मुझ से ज़ियादा तवाना और त़ाक़त वर हैं।" और बार बार येही फ़रमाते रहे तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : فَاِنَّ قُوَّتِيْ لَکَ مَعَ فَضْلِکَ "या'नी आप की फ़ज़ीलत के साथ मेरी क़ुव्वत भी आप के साथ है।"[2]

---

1 ......بخاری، کتاب المحاربین۔۔۔الخ، باب رجم الحبلی من الزنا۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۳۴۶، حدیث: ۶۸۳۰ ملتقطاً۔

2 ......طبقات کبری، ذکر صفۃ ابی بکر، ج ۳، ص ۱۵۸۔

एक नियाम में एक साथ दो तल्वारें नहीं रह सकतीं

जब आप رضی اللہ تعالٰی عنہ सक़ीफ़ा बनी साइदा में तशरीफ़ ले गए और वहां मौजूद बा'ज़ लोगों ने मुख़ालिफ़ ए'तिराज़ात व तहफ़्फ़ुज़ात पेश किये तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने उन का बेहतरीन जवाब इरशाद फ़रमाया। चुनान्चे,

अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा में से एक सहाबी ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन उ़बैद رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि अन्सार ने जब येह बात कही कि "दो अमीर बना लिये जाएं एक मुहाजिरीन का और एक अन्सार का।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने इस बात का ब त़रीक़े अह़सन एक ही जुम्ले में जवाब देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "जिस त़रह़ एक नियाम में दो तल्वारें एक साथ नहीं रह सकतीं इसी त़रह़ मुसलमानों के दो ख़लीफ़ा एक साथ नहीं हो सकते।" फिर आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ का हाथ थाम कर इरशाद फ़रमाया : "जो तीन ख़स्लतें इन्हें ह़ासिल हैं वोह किसी और को ह़ासिल नहीं : (1) اِذْ هُمَا فِی الْغَارِ (2) اِذْ یَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ (3) اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا "येह तीन ख़ुसूसिय्यात (या'नी यारे ग़ार होना, रसूलुल्लाह का साह़िब होना और अल्लाह عزوجل की मइय्यत का होना) किस में हैं ?" फिर आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ की बैअ़त कर ली और लोगों से फ़रमाया : "तुम भी इन की बैअ़त करो।" तो तमाम लोगों ने भी आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की बैअ़त कर ली।[1]

एक अमीर अन्सार से, एक मुहाजिरीन से

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि जब शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم का विसाल मुबारक हुवा तो अन्सार ने कहा : مِنَّا اَمِیْرٌ وَّ مِنْکُمْ اَمِیْرٌ "एक अमीर हम में से और एक अमीर तुम में से होगा।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رضی اللہ تعالٰی عنہ उन के पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया : "ऐ अन्सार ! क्या तुम नहीं जानते कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ को लोगों की इमामत कराने का हुक्म दिया था। अब बताओ तो सही ! कि तुम में

---

1 ......سنن کبری للنسائی، کتاب المناقب، فضل ابی بکر الصدیق، ج۵، ص۷۳، حدیث: ۸۱۰۹۔

से कौन है जिस का दिल येह पसन्द करता हो कि वोह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के आगे खड़ा हो ?" अन्सार ने कहा : "खुदा की पनाह ! हमारी क्या जुरअत कि हम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के आगे खड़े हों ।"(1)

वाज़ेह़ रहे कि ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दो[2] त़रह़ बैअ़त की गई : (1) बैअ़ते ख़ास्सा (2) बैअ़ते आ़म्मा । बैअ़ते ख़ास्सा सक़ीफ़ए बनी साइ़दा में मौजूद मख़्सूस लोगों ने की थी जिन में सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ पर बैअ़त की और खुद ही उसे बयान भी फ़रमाया । चुनान्चे,

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म की बैअ़त

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बयान के बा'द इस से पहले कि लोग इन्तिशार का शिकार होते, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की : "अपना हाथ बढ़ाएं ।" उन्हों ने हाथ बढ़ाया मैं ने बैअ़त की, मुझे देख कर सब मुहाजिरीन ने बैअ़त कर ली और फिर अन्सार भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर टूट पड़े और वहां पर मौजूद तक़रीबन सब ही लोगों ने बैअ़त कर ली ।"(2)

सब से ज़ियादा मुत्तफ़िक़ा बात

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि "खुदा की क़सम ! हम ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअ़त से ज़ियादा मुत्तफ़िक़ा बात कोई न देखी ।"(3)

फ़ारूक़े आ'ज़म का नसीह़त आमोज़ ख़ुत़बा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक बार मिम्बर पर खड़े हो कर ख़ुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "कोई शख़्स इस धोके में न रहे कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअ़त उ़ज्लत (जल्दी) में कर ली गई थी । सुन लो बेशक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअ़त में कोई शर न था और

1 ......سنن کبری للنسائی، کتاب الامامۃ، باب ذکر الامامۃ والجماعۃ، ج ۱، ص ۲۷۹، حدیث: ۸۵۳۔

2 ......بخاری، کتاب المحاربین من اھل الکفر۔۔۔الخ، رجم الحبلی من الزنا اذا احصنت، ج ۴، ص ۳۴۶، حدیث: ۶۸۳۰ ملتقطا۔

3 ......بخاری، کتاب المحاربین من اھل الکفر۔۔۔الخ، باب رجم الحبلی من الزنا اذا احصنت، ج ۴، ص ۳۴۶، حدیث: ۶۸۳۰ ملتقطا۔

आज तुम में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसा कोई शख़्स नहीं जिस के लिये लोग अपनी गर्दनें झुकाने पर तय्यार हों, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के बा'द सारी उम्मत में सब से बेहतर आप ही थे।"(1)

मुआ़मलाते ख़िलाफ़त के ज़ियादा ह़क़दार

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़ुत़बा देते हुवे येह फ़रमाते सुना कि "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुआ़मलाते ख़िलाफ़त के ज़ियादा ह़क़दार हैं लिहाज़ा आगे बढ़ो और इन की बैअ़त करो।" चुनान्चे, वहीं उसी मजलिस में मुसलमानों की एक जमाअ़त ने उन के हाथ पर बैअ़त कर ली और बैअ़ते आ़म्मा का सिलसिला उस वक़्त शुरूअ़ हुवा जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हुवे।(2)

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म का एक और ख़ुत़बा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है जिस रोज़ सक़ीफ़ा बनी साइदा में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअ़त की गई, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक ख़ुत़बा दिया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना के बा'द इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! मैं ने कल तुम्हें एक बात कही थी जो न मैं ने किताबुल्लाह से ली है और न नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के किसी अ़ह्द और वसिय्यत से। अलबत्ता मैं ने देखा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस (या'नी ख़िलाफ़ते अबू बक्र सिद्दीक़) की त़रफ़ इशारा फ़रमाया है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे दरमियान नूरे हिदायत रख दिया है जिस से तुम हिदायत पाते हो। अगर इसे मज़बूत़ी से पकड़े रखोगे तो हिदायत याफ़्ता रहोगे। और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारी ह़ुकूमत का मुआ़मला एक ऐसे शख़्स के हाथ में दिया है जो नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जानिसार साथी, सानिये असनैन और सब से बढ़ कर ख़िलाफ़त के ह़क़दार हैं। लिहाज़ा उठो और इन की बैअ़त करो।" वहां मौजूद सब लोगों ने बैअ़त की। सक़ीफ़ा की बैअ़त के बा'द येह पहली बैअ़ते आ़म्मा थी।(3)

---

1 ......بخاری، کتاب المحاربین، باب رجم الحبلی من الزنا اذا احصنت، ج ۴، ص ۳۴۴، حدیث: ۶۸۳۰ ملتقطاً۔

2 ......بخاری، کتاب الاحکام، باب الاستخلاف، ج ۴، ص ۴۸۰، حدیث: ۷۲۱۹ ملتقطاً۔

3 ......صحیح ابن حبان، اخباره صلی اللہ علیہ وسلم۔۔۔الخ، ذکر الخبر المدحض۔۔۔الخ، الجز: ۹، ج ۶، ص ۱۵، حدیث: ۶۸۳۶۔

अल्लाह की क़सम ! हम आप की बैअ़त न तोड़ेंगे

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि एक बार हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की बारगाह में हाज़िर हुवे क्या देखते हैं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه अपनी ज़बान पकड़ कर फ़रमा रहे हैं : "इसी ने मुझे मसाइब में मुब्तला किया है ।" फिर हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से इरशाद फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! मुझे तुम्हारी अमारत की कोई हा़जत नहीं ।" हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : "अल्लाह की क़सम ! हम न आप की बैअ़त तोड़ेंगे न ऐसा मुता़लबा करेंगे ।"(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ारूके़ आ'ज़म सिद्दीके़ अक्बर के वज़ीर व मुशीर

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने पूरी ज़िन्दगी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ गुज़ारी थी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से मुशावरत फ़रमाते रहते थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वज़ीर व मुशीरे ख़ा़स की हैसिय्यत हा़सिल थी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने बारगाहे नबवी से येही तरबिय्यत ली थी कि बिग़ैर मश्वरे के कोई काम किया जाए तो उस का ख़ा़तिर ख़्वाह फ़ाइदा नहीं होता, जब कि मश्वरे से जो काम किया जाए उस के फ़वाइद कहीं ज़ियादा हैं । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की आ़दते मुबारका थी कि कोई भी काम बिग़ैर मश्वरे के न करते थे, इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने मन्सबे ख़िलाफ़त संभालने के बा'द रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तमाम सहा़बा में अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को अपना वज़ीर व मुशीर मुक़र्रर फ़रमाया और हर छोटे बड़े मुआ़मले में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से ही मुशावरत फ़रमाया करते थे ।(2)

लश्करे उसामा बिन ज़ैद के बारे में फ़ारूके़ आ'ज़म की गुफ़्तगू

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रही़म, صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने आख़िरी अय्याम में हज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की कमान्ड में एक लश्कर रवाना फ़रमाया, जब येह लश्कर

1 ......رياض النضرة،ج ۱،ص ۲۵۱۔

2 ......ازالۃ الخفاء،ج ۳،ص ۱۸۳ ماخوذا۔

जुरुफ़ के मक़ाम पर पहुंचा तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाले ज़ाहिरी हो गया। इस लश्कर में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه भी मौजूद थे। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की कमान्ड में भेजा हुवा लश्कर जब मक़ामे जुरुफ़ पर जा कर रुक गया और उन्हें मा'लूम हुवा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाल हो गया है तो अमीरे लश्कर ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की बारगाह में अ़र्ज़ किया : "आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की ख़िदमत में जाइये और उन से इस बात की इजाज़त लीजिये कि मैं लश्कर को वापस मदीनए मुनव्वरा ले आऊं ? क्यूंकि तमाम अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तो मेरे साथ हैं और मुझे इस बात का ख़दशा है कि ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और तमाम मुसलमानों की तक्लीफ़ से अम्न में नहीं हूं कि कहीं मुशरिकीन उन्हें किसी क़िस्म का नुक़्सान न पहुंचाएं।"

साथ ही अन्सार सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया : "अगर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه इस बात को तस्लीम न फ़रमाएं तो आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه हमारी त़रफ़ से येह पैग़ाम दे दीजियेगा कि ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه तो निहायत ही कम उ़म्र हैं, आप किसी बड़ी उ़म्र के तजरिबाकार सह़ाबी को हमारा अमीरे लश्कर मुक़र्रर फ़रमा दीजिये।"

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه येह दोनों पैग़ाम ले कर सीधा अमीरुल मोमिनीन, ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की बारगाह में पहुंचे और सब से पहले सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का पैग़ाम सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की बारगाह में पेश किया। पैग़ाम सुन कर सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : لَوْ خَطَفَتْنِي الْكِلَابُ وَالذِّئَابُ لَمْ اَرُدَّ قَضَاءً قَضٰى بِهٖ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "या'नी अगर कुत्ते और भेड़िये मुझे नोच डालें तब भी मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो फ़ैसला फ़रमा दिया है उसे तब्दील नहीं कर सकता।"

फिर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अन्सार का पैग़ाम पहुंचाया कि वोह ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की जगह कोई पुख़्ता उ़म्र का अमीरे लश्कर चाहते हैं। येह सुनना था

कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जलाल में आ गए और सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दाढ़ी मुबारका पकड़ कर इरशाद फ़रमाया : ثَكِلَتْكَ اُمُّكَ وَعَدِمَتْكَ يَاابْنَ الْخَطَّابِ اِسْتَعْمَلَهُ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَتَاْمُرُنِيْ اَنْ اَنْزِعَهُ "या'नी ऐ उ़मर ! तुम्हारी मां तुम्हें रोए और तुम्हें गुम कर दे, ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने खुद अमीरे लश्कर बनाया है और तुम मुझे येह कह रहे हो कि मैं उन को हटा के किसी और को अमीर बना दूं ?"

फिर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लश्कर में वापस तशरीफ़ लाए तो लोगों ने पूछा कि क्या हुवा ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नाराज़ी का इज़्हार करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "निकल चलो ! तुम्हारी माएं तुम्हें रोएं कि मैं ने तुम्हारी वज्ह से ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह से ऐसी मुलाक़ात की जिस में उन्हों ने नाराज़ी का इज़्हार फ़रमाया।" बा'दे अज़ां ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खुद बाहर तशरीफ़ लाए और लश्कर के साथ पैदल चलते हुवे उसे आगे तक छोड़ के आए।(1)

इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल

.....**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अगर्चे लश्कर के अमीर ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे लेकिन उन्हें भी येह मा'लूम था कि जिस त़रह़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में शैख़ैने करीमैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) बात करने की हिम्मत किया करते थे इसी त़रह़ सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में सिर्फ़ फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही बात कर सकते हैं, येही वज्ह है कि आप ने दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की मौजूदगी में सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अपना मुद्दआ़ बारगाहे सिद्दीक़ी में पेश करने की अ़र्ज़ की।

.....अन्सार सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का अपनी बात फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़रीए सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में पहुंचाना इस बात पर दलालत करता है कि सिर्फ़ अमीरे लश्कर सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही नहीं बल्कि तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان इस बात से आगाह थे कि सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही हैं जो हमारी गुफ़्त्गू दरबारे सिद्दीक़ी में पहुंचा सकते हैं। इन दोनों बातों से मा'लूम हुवा कि सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मक़ामो मर्तबा तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان जानते और इस को मल्ह़ूज़े ख़ातिर रखते थे।

---

(1)......تاریخ طبری، ج۲، ص۲۴۶۔

.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अव्वलन ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और अन्सार सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की पूरी गुफ़्त्गू सुनी, फिर बारगाहे सिद्दीक़ी में ह़ाज़िर हो कर उसे पेश किया, बा'दे अज़ां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان पर नाराज़ी का इज़्हार किया। इस से सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दो सिफ़ात ज़ाहिर हुईं : एक तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मोह़तात़ ह़िक्मते अ़मली कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के सबब सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के ग़मगीन क़ुलूब को तक्लीफ़ न पहुंचे, इसी सबब से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम लोगों की गुफ़्त्गू को इत़्मीनान से सुना और उसे बारगाहे सिद्दीक़ी में भी पहुंचाया। दूसरा ख़लीफ़ए वक़्त की इत़ाअ़त कि जब उन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ में लश्करे उसामा को न रोका तो हमें भी चाहिये कि ख़लीफ़ए वक़्त की इत़ाअ़त करें और फ़ौरन रवाना हो जाएं येही वज्ह है कि जैसे ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे सिद्दीक़ी से वापस आए तो लश्कर को चलने का हुक्म फ़रमाया।

.....नीज़ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुबारक अ़मल से येह भी सीखने को मिला कि निगरान व अमीर अगर्चे उ़म्र में छोटा हो लेकिन उस की इत़ाअ़त की जाएगी।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मानेईने ज़कात के बारे में फ़ारूक़े आ'ज़म की गुफ़्त्गू

ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दौरे ख़िलाफ़त जैसे ही शुरूअ़ हुवा मुख़्तलिफ़ फ़ितनों ने सर उठाना शुरूअ़ कर दिया, क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के बा'द कुफ़्फ़ार इस ख़ुश फ़हमी में मुब्तला हो गए थे कि अब मुसलमानों की कमर टूट चुकी है, कहीं कोई क़बीला मुर्तद हो गया तो कहीं मुन्किरीने ज़कात पैदा हो गए। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ज़्लो करम और मज़बूत़ ह़िक्मते अ़मली के साथ इन फ़ितनों का بِحَمْدِ اللّٰہِ تَعَالٰی डट कर मुक़ाबला किया और बिल आख़िर अ़रब शरीफ़ को उन फ़ितनों से पाक फ़रमा दिया। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुन्किरीने ज़कात के ख़िलाफ़ जिहाद का इरादा फ़रमाया तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप के इस फ़े'ल पर तशवीश का इज़्हार किया और बा'द में तसल्ली पाई। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुर्तदीन व मानेईने ज़कात के ख़िलाफ़ क़िताल का इरादा फ़रमाया, चूंकि ब ज़ाहिर तो येह लोग मुसलमान थे इस लिये अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने तह़फ़्फ़ुज़ात का इज़्हार करते हुवे अ़र्ज़ किया : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप उन लोगों से किस त़रह़ क़िताल करेंगे ह़ालांकि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह फ़रमाया है : मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं लोगों से क़िताल करूं ह़त्ता कि वोह येह कहें لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہ पस जिस ने येह कलिमा पढ़ लिया उस ने मुझ से अपने माल और अपनी जान को मह़फ़ूज़ कर लिया सिवा इस के जो उस पर इस्लाम का ह़क़ हो और उस का ह़िसाब **अल्लाह** के ज़िम्मे है।"

.....येह सुन कर ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : وَاللّٰہِ لَاُقَاتِلَنَّ مَنْ فَرَّقَ بَیْنَ الصَّلَاۃِ وَالزَّکَاۃِ "या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं उन लोगों से ज़रूर जिहाद करूंगा जो नमाज़ और ज़कात के माबैन फ़र्क़ करेंगे। क्यूंकि ज़कात माल का ह़क़ है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर वोह ज़कात में बकरी का एक बच्चा भी न दें जिसे वोह रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बत़ौरे ज़कात दिया करते थे तो भी मैं उन से जिहाद करूंगा।"

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं : فَوَاللّٰہِ مَاھُوَ اِلَّا اَنْ قَدْ شَرَحَ اللّٰہُ صَدْرَ اَبِیْ بَکْرٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ فَعَرَفْتُ اَنَّہُ الْحَقُّ "या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ येह कलाम इस लिये फ़रमा रहे थे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन का सीना इस मुआ़मले में खोल दिया था और मैं ने भी जान लिया कि जो आप फ़रमा रहे हैं वोही ह़क़ है।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म ने महब्बत से सर चूम लिया

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 723 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर**" सफ़ह़ा 366 पर है : "ह़ज़रते अबू रजा इमरान उ़त़ारिदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मैं मदीनए मुनव्वरा आया तो मैं ने देखा कि एक जगह काफ़ी लोग इकठ्ठे हैं और उन में से

(1) ......بخاری، کتاب الزکاۃ، باب وجوب الزکاۃ، ج ۱، ص ۴۷۲، حدیث: ۱۳۹۹، ۱۴۰۰۔

एक शख़्स किसी दूसरे का सर चूम रहा है और साथ ही येह भी कह रहा है कि اَنَا فِدَاؤُکَ لَوْلَا اَنْتَ لَھَلَکْنَا "या'नी मैं तुम पर फ़िदा हूं, अगर तुम न होते तो हम तबाह हो जाते।" मैं ने किसी से पूछा : "येह दोनों कौन हैं ?" बताया गया : "येह सर चूमने वाले ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिन का सर चूम रहे हैं वोह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं, क्यूंकि इन्हों ने ज़कात न देने वालों से जिहाद किया और अब वोह मानेईने ज़कात ज़लील हो कर खुद इन की बारगाह में ज़कात लाए हैं।"(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म और यमन से मुआ़ज़ बिन जबल की वापसी

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यमन भेजा था, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के बा'द जब वोह मदीनए मुनव्वरा वापस आ गए तो सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस मुआ़मले में सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से गुफ़्त्गू की। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन का'ब बिन मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी क़ौम के मुअ़ज़्ज़ज़ लोगों में से थे अलबत्ता उन पर बहुत ज़ियादा क़र्ज़ हो गया यहां तक कि उन का सारा का सारा माल उस क़र्ज़ की अदाएगी में चला गया, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें कुछ माल वग़ैरा दे कर मुल्के यमन भेज दिया ताकि येह वहां तिजारत भी करें और दीन का काम भी करें। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द येह भी यमन से मदीनए मुनव्वरा वापस आ गए।

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में यूं अ़र्ज़ किया : "आप ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ किसी को भेजिये ताकि वोह उन से उन की ज़रूरत के इ़लावा ज़ाइद माल वग़ैरा ले आएं।" येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "इन्हें रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने माल दे कर भेजा था मैं इन से कुछ भी नहीं लूंगा हां अगर येह खुद दे दें तो ले लूंगा।"

---

1 ......المنتظم، ذکر خبر ردۃ الیمن، ج۴، ص۸۷۔

येह देख कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खु़द ही ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास तशरीफ़ ले गए और उन से वोही बात इरशाद फ़रमाई। चूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस वक़्त अमीरुल मोमिनीन नहीं थे इस लिये उन्हों ने उस वक़्त आप की बात मानने से इन्कार कर दिया। लेकिन बा'दे अज़ां वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ किया : قَدْ اَطَعْتُکَ وَاَنَا فَاعِلٌ مَا اَمَرْتَنِيْ بِهٖ فَاِنِّيْ رَاَيْتُ فِيْ الْمَنَامِ اَنِّيْ فِيْ حَوْمَةِ مَاءٍ قَدْ خَشِيْتُ الْغَرَقَ فَخَلَّصْتَنِيْ مِنْهُ يَا عُمَرُ "या'नी मैं आप की इत़ाअ़त करने के लिये तय्यार हूं और मैं उस बात पर अ़मल करूंगा जिस का आप ने मुझे हुक्म दिया था, क्यूंकि आज रात मैं ने ख़्वाब देखा कि मैं गहरे पानी में हूं और मुझे ऐसे लगा जैसे मैं उस में डूब जाऊं लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे डूबने से बचा लिया।"

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे सिद्दीक़ी में ह़ाज़िर हुवे और सारा मुआ़मला उन के सामने पेश कर दिया नीज़ येह भी अ़र्ज़ किया कि हु़ज़ूर मैं इस माल में से ज़र्रा बराबर न छुपाऊंगा, लेकिन सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप से कुछ न लिया। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी आप से बहुत खु़श हो गए। बा'दे अज़ा आप दोबारा शाम चले गए।(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला रिवायत से जहां अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इ़श्के़ रसूल व इत्तिबाए़ रसूल का पता चलता है वहीं अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत भी ज़ाहिर होती है कि न सिर्फ़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़हदे मुबारका में ताईद व तौसीक़ ह़ासिल होती थी बल्कि अ़हदे सिद्दीक़ी में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को लोगों की ताईद व तौसीक़ ह़ासिल होती थी। येही वज्ह है कि सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए के मुत़ाबिक़ अ़मल न किया लेकिन उन के ख़्वाब ने उन पर रौशन कर दिया कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही की इत़ाअ़त की जाए। येही वज्ह है कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़हदे ख़िलाफ़त में येही ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप के मा तह़्त अमीर रहे और नुमायां कारनामे सर अन्जाम दिये।

(1) ......الاستیعاب، معاذ بن جبل الخزرجی، ج ٣، ص ١٤٦٢۔

सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी के मुतअ़ल्लिक़ फ़िरासते फ़ारूक़े आ'ज़म

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द मुख़्तलिफ़ फ़ितनों ने सर उठाया, जिन में बा'ज़ फ़ितने वोह थे जिन का तअ़ल्लुक़ इर्तिदाद या'नी दीन से फिर जाने से था, उन्हीं मुर्तदीन में यमन का एक शख़्स अस्वद अ़न्सी भी था,(1) इस ने मुसलमानों पर बे शुमार ज़ुल्मो सितम ढाए। जिन में से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی का वाक़िआ़ निहायत ही पुर सोज़ है, इस में आप عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की करामत और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म की शान वाज़ेह़ होती है। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़हबी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि अस्वद अ़न्सी ने मुर्तद होने के बा'द मुसलमानों पर ज़ुल्मो सितम शुरूअ़ कर दिये, उस ने एक बहुत बड़ी आग जलाई और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को बुलाया, फिर उन्हें उस में डाल दिया, लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नज़रे रह़मत से वोह बिल्कुल मह़फ़ूज़ रहे। येह देख कर लोगों में उन का बहुत ही अच्छा तअस्सुर क़ाइम हो गया और अस्वद अ़न्सी को लोग झूटा समझने लगे। अस्वद अ़न्सी के क़रीबी साथियों ने उस से कहा : "अगर तू ने उन को यहां से न निकाला तो तेरे मुत्तबेईन तेरे ही ख़िलाफ़ फ़साद बरपा कर देंगे।" येह सुन कर अस्वद अ़न्सी ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को यमन से निकाल दिया। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सीधा मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ ले आए, अपनी सुवारी से उतरने के बा'द मस्जिदे नबवी में नमाज़ पढ़ने के लिये तशरीफ़ ले गए, अचानक अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की नज़र उन पर पड़ गई। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन के पास तशरीफ़ लाए और पूछा : "कहां से आए हो ?" अ़र्ज़ किया : "यमन से आया हूं।" फ़रमाया : "उस शख़्स का क्या ह़ाल है जिसे कज़्ज़ाब अस्वद अ़न्सी ने आग में डाला ?" अ़र्ज़ किया : "वोह तो अ़ब्दुल्लाह बिन सुवब हैं।" फ़रमाया : "मैं तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम देता हूं, बताओ क्या तुम वोही हो ?" अ़र्ज़ किया : "यक़ीनन मैं वोही हूं।" जैसे ही सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह सुना तो उन्हें फ़ौरन गले लगा लिया और ज़ारो क़ित़ार रोने लगे। फिर उन्हें अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ले गए और उन्हें सामने बिठा दिया, फिर फ़रमाया :

(1).....अस्वद अ़न्सी के ख़िलाफ़ सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जिहाद की तफ़्सीलात पढ़ने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 723 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर**" सफ़ह़ा 390 का मुत़ालआ़ कीजिये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ لَمْ یُمِتْنِیْ حَتّٰی اَرَانِیْ فِیْ اُمَّۃِ مُحَمَّدٍ مَنْ صُنِعَ بِہٖ کَمَا صُنِعَ بِاِبْرَاھِیْمَ الْخَلِیْلِ "या'नी तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मुझे मौत न दी यहां तक कि उस पाक ज़ात ने मुझे उम्मते मुहम्मदिय्या का वोह खुश नसीब शख़्स दिखा दिया जिस के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जैसा सुलूक किया गया।" (या'नी उन्हें भी आग में डाला गया था और आग ठन्डी हो गई और इन्हें भी आग में डाला गया और आग ठन्डी हो गई।[1]

इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल

.....अस्वद अ़न्सी कज़्ज़ाब ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی को आग में डाला और वोह आग आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के लिये ठन्डी हो गई, यक़ीनन येह आप की बदीही करामत थी नीज़ आप की येह करामत रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एक अ़ज़ीम मो'जिज़ा है, क्यूंकि औलियाए उम्मत की करामात उन के नबी के मो'जिज़ात होते हैं।

.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی की येह करामत उम्मते मुह़म्मदिय्या عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लिये भी अ़ज़ीम सआ़दत है कि पिछली उम्मत के नबी ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को जो मो'जिज़ा अ़ता हुवा था वोह इस उम्मत के अफ़्ज़ल वली ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی के ह़िस्से में बत़ौरे करामत आया।

.....येह भी मा'लूम हुवा कि राहे ख़ुदा में तकालीफ़ मिलना कोई अ़जीबो ग़रीब बात नहीं बल्कि अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان व औलियाए उ़ज़्ज़ाम को भी राहे ख़ुदा में बहुत तकालीफ़ दी गईं।

.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی को यमन में आग में डाला गया, जब कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा में मौजूद थे, जैसे ही सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی मदीनए मुनव्वरा पहुंचे तो सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से फ़ौरन इस वाक़िए़ के बारे में इस्तिफ़्सार फ़रमाया जो उन के साथ यमन में पेश आया था। मा'लूम हुवा कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम, रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रह़मतो अ़त़ा से मदीनए मुनव्वरा में बैठ कर उन के साथ पेश आने वाले वाक़िए़ को मुलाह़ज़ा फ़रमा रहे थे। नीज़ येह वाक़िआ़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़ुदादाद फ़िरासते ताम्मा पर बहुत बड़ी दलील है।

1 ......سیر اعلام النبلاء، الطبقۃ الاولی من التابعین، ج۵، ص ۱۲، الرقم: ۶۹۳۔

.....जब इस बात की तस्दीक़ हो गई कि आग में जलाए जाने वाले ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ही हैं तो सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन्हें गले लगा लिया और बा'दे अज़ां गिर्या व ज़ारी फ़रमाने लगे। मा'लूम हुवा कि राहे ख़ुदा में तकालीफ़ उठाने वाले उ़श्शाक़ाने रसूल को गले से लगाना नीज़ उन की दिलजूई करना अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की सुन्नते मुबारका है।

हम को सारे औलिया से प्यार है
اِنْ شَآءَ الله अपना बेड़ा पार है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सय्यिदुना अबान बिन सई़द की नाम ज़द्‌गी पर फ़ारूके़ आ'ज़म की राए

.....हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ह़याते त़य्यिबा में मुख़्तलिफ़ शहरों पर मुख़्तलिफ़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को आ़मिल व गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया था। बह़रैन पर ह़ज़रते सय्यिदुना अबान बिन सई़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه मुक़र्रर थे। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाल के बा'द येह बह़रैन से वापस आ गए। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन पर नाराज़ी का इज़्हार करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "तुम्हें वहां से वापस नहीं आना चाहिये था और न ही अपने काम को अपने इमाम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की इजाज़त के बिग़ैर तर्क करना चाहिये था फिर इन नाज़ुक ह़ालात में तुम यहां आ गए ह़ालांकि तुम वहां उन के अमीन थे।"

.....येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबान बिन सई़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया : "आप बजा फ़रमा रहे हैं लेकिन बस रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द अब मेरा दिल नहीं करता कि मैं किसी के मा तह़्त रह कर काम करूं और हां अब तक जो मैं सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के लिये काम करता रहा वोह इस वज्ह से कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सब से अफ़्ज़ल और क़दीमुल इस्लाम हैं, लेकिन रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द अब मैं किसी के मा तह़्त रह कर काम नहीं कर सकता।"

۞.....येह सूरते ह़ाल देख कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मुशावरत की, कि बह़रैन में किस की तरकीब बनाई जाए ? अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस शख़्स को वहां भेजिये जिसे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भेजा था, इस पर उन का इस्लाम और इताअ़त मुक़द्दम है, वोह सब इसे जानते हैं और येह उन सब को जानता है और येह उन तमाम अ़लाक़ों को भी जानता है। मेरी मुराद ह़ज़रते अ़ला बिन अल ह़ज़रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।"

۞.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ला बिन अल ह़ज़रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बह़रैन भेजना ना पसन्द फ़रमाया और सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इरशाद फ़रमाया : "मेरा मश्वरा वोही है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबान बिन सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही को भेजा जाए, मैं उन को इस लिये मजबूर कर रहा हूं कि येह उन के ह़लीफ़ हैं।"

۞.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ज़रते सय्यिदुना अबान बिन सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मजबूर करने से मन्अ़ कर दिया और इरशाद फ़रमाया : "मैं ऐसे शख़्स को क़त्अ़न मजबूर नहीं कर सकता जिस का येह मौक़िफ़ हो कि मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द किसी के मा तह़्त रह कर काम नहीं करना चाहता।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ला बिन अल ह़ज़रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही को भेजने का फ़ैसला फ़रमा लिया।[1]

इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल

.....**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मा'लूम हुवा कि ज़िम्मेदारी सलाह़िय्यतों की बिना पर दी जाए तो ज़ियादा फ़ाइदा होता है कि जो शख़्स जिस काम का अहल हो, जिस काम को अच्छी त़रह़ जानता हों अगर उसे वोही काम दिया जाए तो वोह बेहतर अन्दाज़ में कर सकेगा, जैसा कि मज़्कूरा रिवायत में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मौक़िफ़ था, अगर्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबान बिन सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ विसाले रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वज्ह से दिल बरदाश्ता थे। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ भी इस बात की ताकीद फ़रमाते रहते हैं कि जो इस्लामी भाई जिस काम को अच्छी त़रह़ करना जानता हो उस से वोही काम लिया जाए तो ज़ियादा फ़वाइद ह़ासिल होंगे।

1.....تاریخ ابن عساکر، ج۲، ص۱۳۶، کنز العمال، کتاب الخلافۃ مع الامارۃ، الباب الاول۔۔۔الخ، الجزء: ۵، ج۳، ص۲۴۸، حدیث: ۱۴۰۸۹۔

.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शूराई निज़ाम के क़ाइल थे, येही वज्ह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बह़रैन का गवर्नर मुक़र्रर करने के लिये अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मुशावरत की और जमहूर की राए के मुत़ाबिक़ अ़मल फ़रमाया।

.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सय्यिदुना अबान बिन सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ मदनी रवय्ये से येह बात भी सामने आती है कि अपने मा तह़त इस्लामी भाइयों को किसी सूरत किसी काम पर मजबूर न किया जाए, बल्कि प्यार व मह़ब्बत और शफ़्क़त के साथ उन से मदनी काम लिया जाए, अगर बिलफ़र्ज़ वोह उस काम को करने से दिल बरदाश्ता होते हैं तो उन्हें ज़ाएअ़ करने के बजाए उन से कोई और काम ले लिया जाए।

.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुबारक मदनी सोच से येह मदनी फूल मिलता है किसी जगह इस्लामी भाई की तक़र्रुरी में इस बात को ज़रूर मल्हूज़े ख़ात़िर रखा जाए कि मज़्कूरा इस्लामी भाई वहां के अ़लाक़े, लोगों और उन की नफ़्सियात वग़ैरा से भी वाक़िफ़िय्यत रखता है या नहीं, यक़ीनन किसी शख़्स को ऐसी ज़िम्मेदारी दे देना जिस से वोह बिल्कुल ही वाक़िफ़ न हो नुक़्सान का बाइ़स हो सकता है।

.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़ज़रते सय्यिदुना अबान बिन सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ इब्तिदाई मुकालमे से येह मदनी फूल ह़ासिल हुवा कि अगर कोई इस्लामी भाई बा सलाह़िय्यत है मगर किसी मख़्सूस वज्ह से वोह उस काम से दिल बरदाश्ता हो गया है तो अव्वलन उस की दिलजूई करते हुवे उस का मदनी ज़ेह्न बनाया जाए कि आप ही उस काम को बेहतर अन्दाज़ में अन्जाम दे सकते हैं अगर फिर भी उन का ज़ेह्न न बने तो उन से कोई दूसरा मदनी काम ले लिया जाए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सिद्दीक़े अक्बर ने फ़ारूक़े आ'ज़म को मदीनए मुनव्वरा का क़ाज़ी बनाया

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़ह्दे रिसालत में भी येह सआ़दत ह़ासिल रही थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुख़्तलिफ़ मुआ़मलात के फ़ैसले फ़रमाया करते थे, लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बा क़ाइदा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मदीनए मुनव्वरा का क़ाज़ी मुक़र्रर फ़रमा दिया। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़ई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی से रिवायत है, फ़रमाते हैं :

اَوَّلُ مَنْ وُلِّیَ شَیْئاً مِنْ اُمُوْرِ الْمُسْلِمِیْنَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ وَلَّاہُ اَبُوْبَکْرٍ الْقَضَاءَ فَکَانَ اَوَّلَ قَاضٍ فِی الْاِسْلَامِ

"या'नी अगर मुसलमानों के उमूर पर किसी को सब से पहला वाली बनाया गया तो वोह अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बनाया गया, ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को मन्सबे क़ज़ा पर फ़ाइज़ फ़रमाया, इस त़रह़ आप को इस्लाम के पहले क़ाज़ी बनने की सआ़दत ह़ासिल हुई।" सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को क़ाज़ी मुक़र्रर करने के बा'द इरशाद फ़रमाया : "आप मुख़्तलिफ़ मुआ़मलात के फ़ैसले फ़रमाएं, मैं दीगर उमूर को संभालता हूं।"(1)

आ़लमे इस्लाम के सब से पहले क़ाज़ी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाज़ेह़ रहे कि इस्लाम में सब से पहले जिसे बा क़ाइदा क़ाज़ी मुक़र्रर किया गया वोह अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते गिरामी थी, चुनान्चे, किताबुल अवाइल लिल अ़स्करी में है :

اَوَّلُ قَاضٍ فِی الْاِسْلَامِ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ "या'नी इस्लाम के सब से पहले क़ाज़ी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।"(2)

मुसलमान मक़्तूलीन की दियत के मुतअ़ल्लिक़ फ़ारूक़े आ'ज़म की राए

हज़रते सय्यिदुना त़ारिक़ बिन शिहाब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि बनी असद और बनी ग़त़फ़ान का एक वफ़्द ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास सुल्ह़ की ग़रज़ से आया। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें इरशाद फ़रमाया : "या तो फ़ैसला कुन जंग इख़्तियार कर लो या ज़िल्लत आमेज़ सुल्ह़।" वोह कहने लगे : "फ़ैसला कुन जंग का मत़लब तो हम जानते हैं मगर येह ज़िल्लत आमेज़ सुल्ह़ से आप की क्या मुराद है ?" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "तुम से ज़िरहें और हथयार वग़ैरा सब ले लिये जाएंगे, जो माले ग़नीमत हमें ह़ासिल होगा वोह हमारा ही होगा और जो कुछ तुम हम से ह़ासिल करोगे वोह वापस कर दोगे। तुम हमारे मक़्तूलीन की दियतें अदा

1 ......الاستیعاب، عمر بن الخطاب، ج۳، ص۲۳۹۔

2 ......الاوائل للعسکری، ص۲۵۷۔

करोगे मगर तुम्हारे मक़्तूलीन जहन्नम में जाएंगे। (या'नी हम उन का ख़ून बहा अदा नहीं करेंगे) तुम्हें ऐसी क़ौमों की त़रह़ आज़ाद छोड़ दिया जाएगा जो ऊंटों की दुम के पीछे खींची चली जाती हैं। येह मुआ़मला तुम से उस वक़्त तक किया जाता रहेगा जब तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा और मुहाजिरीन पर कोई दूसरी सूरत ज़ाहिर न कर दे जिस के सबब तुम्हें मा'ज़ूर क़रार दे दिया जाए।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने येह गुफ़्तगू आ़म मुसलमानों के सामने पेश की ताकि उन की भी राए मा'लूम की जा सके। तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया : "ह़ुज़ूर येह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه का फ़ैसला था हमारी अ़र्ज़ येह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़ैसला कुन जंग और ज़िल्लत आमेज़ सुल्ह़ की बात बहुत अच्छी कही है, यूंही हम उन से जो लें वोह हमारा और वोह जो कुछ ले लें वोह भी हमारा, येह भी बड़ी अच्छी बात है। अलबत्ता येह जो आप ने कहा है कि हमारे मक़्तूलीन की दियतें अदा की जाएंगी और उन के मक़्तूलीन जहन्नम में हैं। इस के मुतअ़ल्लिक़ अ़र्ज़ येह है कि हमारे शुहदा यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में क़ुरबान हुवे हैं हमें उन की दियतें लेने की क्या ज़रूरत ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की इस बात पर अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه समेत पूरी क़ौम ने इत्तिफ़ाक़े राए ज़ाहिर किया और इसी बात पर कुफ़्फ़ार से सुल्ह़ कर ली गई।[1]

तुम ख़िलाफ़त के लिये मुझ से ज़ियादा क़वी हो

.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़यैना बिन हि़स्न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه और ह़ज़रते सय्यिदुना अक़रअ़ बिन ह़ाबिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के पास आए और अ़र्ज़ किया : "ऐ ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ! हमारे पास बन्जर ज़मीन है, उस में कोई फ़स्ल वग़ैरा फ़ाइदे मन्द चीज़ें नहीं पैदा होती, अगर आप मुनासिब समझें तो येह ज़मीन हमें दे दें ताकि हम इस में खेती करें शायद कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इसे कार आमद बना दे।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने अस्ह़ाब से मश्वरा कर के वोह ज़मीन उन दोनों को अ़त़ा फ़रमा दी और उन्हें एक तह़रीर भी लिख दी अलबत्ता उस में बत़ौरे गवाह ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه का नाम लिखा लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه वहां मौजूद न थे। इस लिये येह दोनों ह़ज़रात बारगाहे फ़ारूक़ी में पहुंचे ताकि उन्हें गवाह

---

1 .....مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الجهاد، ماقالوافی الرجل۔۔۔الخ، ج۷، ص۵۹۵، حدیث:۲۔

سنن کبری، کتاب الاشربة، باب قتال اهل الردة۔۔۔الخ، ج۸، ص۵۸۱، حدیث:۱۷۶۳۲۔

बना लें। जब सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस तह़रीर को सुना तो उन के हाथ से ले कर उस तह़रीर को मिटा दिया और इरशाद फ़रमाया : مَقَالَةٌ سَيِّئَةٌ क्या ही बुरी तह़रीर है।

.....फिर इरशाद फ़रमाया : "रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तालीफ़े क़ल्ब के लिये ऐसे उमूर उस वक़्त सर अन्जाम दिया करते थे जब इस्लाम कमज़ोर था, आज तो بِحَمْدِاللّٰهِ تَعَالٰى इस्लाम को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बड़ी क़द्रो मन्ज़िलत अ़त़ा फ़रमाई है, किसी को तालीफ़े क़ल्ब के लिये कुछ नहीं दिया जाए लिहाज़ा तुम दोनों जाओ और अपनी मेह़नत से काम काज करो, अगर तुम अपने लिये रिआ़यत तलाश करोगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम से रिआ़यत नहीं फ़रमाएगा।"

.....येह दोनों ह़ज़रात अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे और नाराज़ी का इज़्हार करते हुवे अ़र्ज़ किया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हमें तो येह ही नहीं मा'लूम कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीर हैं या ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ?" फ़रमाया : "वोही हैं और अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो वोही होंगे।"

....इतने में सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी वहां पहुंच गए और आप जलाल में थे, बारगाहे सिद्दीक़ी में अ़र्ज़ किया : "मुझे येह इरशाद फ़रमाइये कि ज़मीन जो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन दोनों को दी है क्या वोह सिर्फ़ आप ही की है या तमाम मुसलमानों की है ?" फ़रमाया : "तमाम मुसलमानों की है।"

.....अ़र्ज़ किया : "फिर क्या वज्ह है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम मुसलमानों को छोड़ कर येह ज़मीन सिर्फ़ इन दोनों को दे दी ?" फ़रमाया : "मैं ने अपने गिर्द मौजूद सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से मश्वरा किया तो उन्हों ने मुझे येही मश्वरा दिया।"

.....अ़र्ज़ किया : "आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सिर्फ़ अपने गिर्द मौजूद सह़ाबा से मश्वरा किया ? या तमाम मुसलमानों की रिज़ा इस में शामिल थी ?" फ़रमाया : "मैं ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से पहले ही कहा था कि आप इस मुआ़मले में मुझ से ज़ियादा क़वी हैं लेकिन आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे ही आगे कर दिया।"(1)

---

1 .....سنن کبری، کتاب قسم الصدقات، باب سقوط سھم۔۔۔الخ، ج۷، ص ۳۲، حدیث: ۱۳۱۸۹۔

کنزالعمال، کتاب احیاء الموات، فصل فیما یتعلق بالاقطاعات، الجزء: ۳، ج ۲، ص ۳۶۹، حدیث: ۹۱۴۷۔

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला रिवायत से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बारगाहे सिद्दीक़ी में मक़ामो मर्तबे का पता चलता है कि सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी ब ज़ाते ख़ुद ख़लीफ़ा होने के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़िलाफ़त का अहल समझते थे, इस की सब से बड़ी वज्ह येही थी कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वज़ीर व मुशीर थे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन की हर मुआ़मले में मुआ़वनत फ़रमाते रहते थे। येही वज्ह है कि जब अ़हदे सिद्दीक़ी में उस वक़्त के नामवर और सब से बड़े फ़ितने या'नी मुसैलमा कज़्ज़ाब के ख़िलाफ़ जंग लड़ी गई तो उस में कसीर ता'दाद में हुफ़्फ़ाज़ सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان शहीद हुवे तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जम्ए़ क़ुरआन का मश्वरा दिया जिसे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़बूल फ़रमाया। चुनान्चे,

जम्ए़ क़ुरआन में फ़ारूक़े आ'ज़म का अ़ज़ीम किरदार

अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौर में मुसैलमा कज़्ज़ाब के ख़िलाफ़ एक ज़बरदस्त जंग लड़ी गई जिस में कसीर ता'दाद में हुफ़्फ़ाज़ सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की शहादत हुई। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी फ़ह्मो फ़िरासत से येह बात जान ली कि अगर यूंही मुख़्तलिफ़ जंगों में सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان शहीद होते रहे तो क़ुरआन का अक्सर ह़िस्सा जाता रहेगा। लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह मदनी मश्वरा दिया और उन का ज़ेह्न बनाया कि मौजूदा हुफ़्फ़ाज़ सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की मुआ़वनत से जम्ए़ क़ुरआन की तरकीब बनाई जाए। अव्वलन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस से इन्कार फ़रमाया लेकिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इनफ़िरादी कोशिश से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ राज़ी हो गए, बा'दे अज़ां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने चन्द मौजूदा हुफ़्फ़ाज़ सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की मुआ़वनत से जम्ए़ क़ुरआन का अ़ज़ीम काम पायए तक्मील तक पहुंचाया।[1]

---

[1] بخاری، کتاب فضائل القرآن، باب جمع القرآن، ج ٣، ص ٣٩٨، حدیث: ٤٩٨٦ "जम्ए़ क़ुरआन" की तफ़्सील के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 722 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर" बाब "ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े अक्बर" मौज़ूअ़ "सिद्दीक़े अक्बर और जम्ए़ क़ुरआन" स. 415 का मुतालआ़ कीजिये।

ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी की कामयाबी का ताज फ़ारूक़े आ'ज़म के सर

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दौरे हुकूमत बहुत ही क़लील मुद्दत रहा है लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने इस दौरे हुकूमत में इन्तिख़ाबे ख़लीफ़ा से ले कर मुख़ालिफ़ फ़ितनों की सरकोबी, फ़ुतूहाते शाम व इराक़, जम्ए क़ुरआन वग़ैरा बड़े बड़े मुआ़मलात को जिस ख़ुश उस्लूबी से सर अन्जाम दिया इस से येही ज़ाहिर होता है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते मुबारका ख़ुद प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एक बहुत बड़ा मो'जिज़ा थी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़याते तृय्यिबा के जिस पहलू पर भी नज़र डालते हैं इल्मो ह़िक्मत के बे शुमार अनमोल मदनी फूल चुनने को मिलते हैं, आप ही के अ़हद में इस्लामी फ़ौजी क़ुव्वत में बेहद इज़ाफ़ा हुवा, इस्लामी तहज़ीब की नश्वो नुमा हुई और किताब व सुन्नत की तरवीजो इशाअ़त के दाइरे वसीअ़ से वसीअ़ तर हुवे। आप की ह़याते तृय्यिबा के येह वोह अ़ज़ीम कारनामे हैं जिन से ग़ैरों के इलावा ख़ुद मुसलमान भी इन्तिहाई मुतअ़ज्जिब थे।

वाज़ेह़ रहे कि किसी भी बादशाह की कामयाबी का दारो मदार उस के वज़ीर और मुशीर पर होता है, जैसा उस का वज़ीर व मुशीर होगा उस की हुकूमत पर वैसा ही असर पड़ेगा, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वज़ीर व मुशीर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसी अ़ज़ीम हस्ती थी, सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी सच्ची फ़िरासत से येह जान लिया था कि अगर मैं फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपना वज़ीर व मुशीर बनाऊं तो यक़ीनन ख़िलाफ़त के उमूर को बेहतर अन्जाम दे पाऊंगा, येही वज्ह थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कोई काम सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुशावरत के बिग़ैर सर अन्जाम नहीं देते थे, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वज़ारत व मुशावरत ही का नतीजा था कि जो काम सालों में होना मुश्किल था वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सई़ये मुसलसल और तदबीर व दानिशमन्दी से चन्द महीनों में तक्मील की मन्ज़िल को पहुंच गया।

सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वज़ारत ने लोगों के दिलों में ऐसा तअस्सुर क़ाइम किया कि लोग इस बात की ख़्वाहिश करने लगे कि काश इस मदनी हुकूमत से दुन्या क़ियामत तक मुस्तफ़ीज़ होती रहे। मगर मशिय्यते इलाही है कि كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ "या'नी हर जान को मौत का मज़ा चखना है।" यक़ीनन काइनात को जिस हस्ती की ज़रूरत है वोह नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही की है लेकिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी दुन्या से वा'दए इलाही के मुताबिक़ विसाल फ़रमा गए और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप के ख़लीफ़ा मुक़र्रर हुवे उन को भी इस दुन्या से रुख़्सत होना ही था। मा'रिकए अजनादैन के वक़्त आप मरज़ुल मौत में मुब्तला हुवे और इस मा'रिके की फ़त्ह़ की ख़ुश ख़बरी जब क़ासिद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में लाया उस वक़्त आप पर नज़्अ़ की कैफ़िय्यत त़ारी थी। बिल आख़िर आख़िरी वसाया और अपने बा'द मुसलमानों के ख़लीफ़ा की नाम ज़दगी के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी 21 जुमादल उख़रा 13 सिने हिजरी ब मुत़ाबिक़ 22 अगस्त 634 ईसवी अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी से जा मिले। (اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ)

सिद्दीक़े अक्बर और ख़िलाफ़ते फ़ारूक़े आ'ज़म

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त के मुआ़मले में मुसलमानों में थोड़े बहुत इख़्तिलाफ़ हुवे लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने इन्तिक़ाल से क़ब्ल मुख़्तलिफ़ अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की मुशावरत से ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब फ़रमाया ताकि उन के इन्तिक़ाल के बा'द किसी क़िस्म का कोई इख़्तिलाफ़ पैदा न होने पाए और मुसलमान बिग़ैर इन्तिशार के अपने मुआ़मलात संभाल लें।

ख़िलाफ़ते फ़ारूक़े आ'ज़म के मुआ़मले में मुशावरत

जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़बीअ़त ज़ियादा नासाज़ हुई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुला कर इरशाद फ़रमाया : "आप ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुतअ़ल्लिक़ क्या कहते हैं ?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "ह़ुज़ूर ! जिस मस्अले के मुतअ़ल्लिक़ आप मुझ से दरयाफ़्त फ़रमा रहे हैं उसे आप बेहतर जानते हैं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "फिर भी कुछ तो कहो।" अ़र्ज़ किया : "ख़ुदा की क़सम ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में जो (अपने बा'द ख़लीफ़ा बनाने की) राए क़ाइम की है वोह इस से भी कहीं ज़ियादा अफ़्ज़लो आ'ला हैं।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को त़लब फ़रमाया और उन से भी येही पूछा कि "मुझे उ़मर फ़ारूक़ के बारे में बताइये।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब दिया : "ह़ुज़ूर ! आप हम से बेहतर जानते हैं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "इस के इ़लावा कुछ कहो।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : اَللّٰھُمَّ عِلْمِیْ بِہٖ اَنَّ سَرِیْرَتَہٗ خَیْرٌ مِّنْ عَلَانِیَتِہٖ وَاَنَّہٗ لَیْسَ فِیْنَا مِثْلُہٗ "ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में मेरा इ़ल्म येही है कि इन का बात़िन इन के ज़ाहिर से कहीं बेहतर है

और हमारे दरमियान इन की मिस्ल कोई नहीं है।'' सय्यिदुना सिद्दीके अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए।'' फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और सय्यिदुना उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ साथ दीगर मुहाजिरीन व अन्सार से भी मश्वरा किया। ह़ज़रते सय्यिदुना उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया :

اَللّٰھُمَّ اَعْلَمُہُ الْخَیْرَ بَعْدَکَ، یَرْضٰی لِلرِّضَا وَیَسْخَطُ لِلسُّخْطِ الَّذِیْ یُسِرُّ خَیْرٌ مِّنَ الَّذِیْ یُعْلِنُ، وَلَنْ یَلِیَ ھٰذَا الْاَمْرَ اَحَدٌ اَقْوٰی عَلَیْہِ مِنْہُ

''या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बेहतर जानता है, मैं आप के बा'द उन्हें सरापा ख़ैर समझता हूं, वोह तो अच्छे काम पर राज़ी और बुरे काम पर नाराज़ होते हैं, जो वोह छुपा कर रखते हैं, उस की ब निस्बत कहीं बेहतर है जो वोह ज़ाहिर करते हैं।'' ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ब निस्बत कोई भी अम्रे ख़िलाफ़त पर ज़ियादा मज़बूत़ और कुव्वत वाला हरगिज़ नज़र नहीं आएगा।(1)

फ़ारूके आ'ज़म मौला अ़ली के पसन्दीदा ख़लीफ़ा हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना सय्यार अबी अल ह़कम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़बीअ़त जब ज़ियादा नासाज़ हुई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुजरए मुबारका के सूराख़ से लोगों की त़रफ़ झांका और उन्हें मुख़ात़ब कर के इरशाद फ़रमाया : یَا اَیُّھَا النَّاسُ اِنِّیْ قَدْ عَھِدْتُ عَھْدًا اَفَتَرْضَوْنَ بِہٖ ''या'नी ऐ लोगो ! मैं ने ख़लीफ़ा बनाने के मुआ़मले में एक फ़ैसला किया है क्या तुम लोग इस के बारे में अपनी रिज़ा ज़ाहिर करते हो ?'' तो तमाम लोग खड़े हो गए और अ़र्ज़ करने लगे : قَدْ رَضِیْنَا या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! क्यूं नहीं बिल्कुल हम अपनी रिज़ा का इज़्हार करते हैं। अचानक अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم) खड़े हुवे और अ़र्ज़ करने लगे : لَا نَرْضٰی اِلَّا اَنْ یَکُوْنَ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ ''या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़लीफ़ा बनाने का फ़ैसला फ़रमाया है तो हम राज़ी हैं वरना नहीं।'' जब सय्यिदुना सिद्दीके अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़लीफ़ा का ए'लान फ़रमाया तो वोह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم) की ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही थे।(2)

---

1 ......طبقات کبری، ذکر وصیۃ ابی بکر، ج ۳، ص ۱۴۸۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الفضائل، ما ذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۸۶، حدیث: ۵۳۔

सिद्दीक़े अक्बर का परवानए ख़िलाफ़त ब नाम फ़ारूक़े आ'ज़म

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन सा'द عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَحَد बयान करते हैं चन्द सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास उस वक़्त आए जब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपना जा नशीन बनाने का तहिय्या कर लिया था। चुनान्चे, कुछ अफ़राद ने लब कुशाई करते हुवे आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ किया : "अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को जा नशीन बनाने के बारे में सुवाल किया तो आप क्या जवाब देंगे ?" तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मुझे बिठाओ।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बिठाया गया। इरशाद फ़रमाया : "मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िरी से डरा रहे हो ? वोह शख़्स हलाक हुवा जिस ने तुम लोगों की हुकूमत ह़ासिल कर के ज़ुल्म की पूंजी कमाई। मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में येह अ़र्ज़ करूंगा : ऐ **अल्लाह** ! मैं तेरी ज़मीन पर आबाद सारी मख़्लूक़ से बेहतर शख़्स को अपना ख़लीफ़ा बना कर आया हूं। मेरी येह बात दूसरे लोगों तक पहुंचा दो।" येह कह कर आप फिर लेट गए। फिर हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ लाए तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की जानशीनी का परवाना दर्जे ज़ैल अल्फ़ाज़ में इम्ला करवाया :

"**अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान निहायत रह़्म वाला ! येह वोह बात है जो अबू बक्र ने दुन्या से जाते हुवे और आ़लमे आख़िरत में क़दम रखते हुवे कही थी। ऐसे पुर ख़त़र वक़्त में काफ़िर कलिमा पढ़ लिया करता है, बद किरदार आदमी तौबा कर लेता है और झूटा इन्सान भी सच्ची बात कह देता है। मैं ने अपने बा'द उ़मर बिन ख़त्ताब को तुम पर अमीर बनाया है। तुम पर लाज़िम है कि उस की बात सुनो और उस की इत़ाअ़त करो ! मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, दीने इस्लाम, अपनी और तुम्हारी ज़ात के बारे में कभी कोई कोताही नहीं की। अगर उ़मर ने अ़द्ल किया और येही मुझे उम्मीद है। तो हर आदमी को अपने नेक आ'माल की जज़ा मिलती है और अगर ना इन्साफ़ी की तो हर किसी को गुनाह की सज़ा मिलती है। ताहम मैं ने अपनी त़रफ़ से बेहतर काम कर दिया है। मुझे ज़ाती त़ौर पर इल्मे ग़ैब ह़ासिल नहीं और ज़ालिमों को अ़न क़रीब मा'लूम हो जाएगा कि वोह किस अन्जाम को पहुंचते हैं। وَالسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَۃُ اللہِ[1]

1 ......طبقات کبری، ذکر وصیۃ ابی بکر، ج ۳، ص ۱۴۹ ۔

फिर इस हुक्म नामे को हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ले कर बाहर तशरीफ़ ले आए। तमाम लोगों ने बैअ़त की और इस पर रज़ा व रग़बत का इज़्हार किया। बा'दे अज़ां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुला कर नसीह़तों के मदनी फूल इरशाद फ़रमाए।

फ़ारूक़े आ'ज़म को नसीहते सिद्दीक़े अक्बर

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वक़्ते विसाल आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलाया और इरशाद फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरते रहा करो और याद रखो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के काम जो दिन में होने वाले हैं रात तक पीछे नहीं किये जाते और रात वाले काम दिन पर नहीं छोड़े जाते। नवाफ़िल तब ही क़बूल होते हैं जब फ़राइज़ अदा कर दिये जाएं। रोज़े क़ियामत उसी शख़्स की नेकियां भारी होंगी जो दुन्या में ह़क़ की इत्तिबाअ़ करता था। ऐसे शख़्स के लिये मीज़ाने अ़द्ल का ह़क़ है कि वज़्नी साबित हो, जो ह़क़ से अ़दूल करता रहा उस की नेकियां हल्की होंगी और ऐसे शख़्स के लिये मीज़ान का ह़क़ है कि हल्का साबित हो। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अहले जन्नत का ज़िक्र किया तो निहायत आ'ला सिफ़ात के साथ किया और उन के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये। जब मैं उन्हें याद करता हूं तो (ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब) जन्नती न होने से डरता हूं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जहन्नमियों का ज़िक्र किया तो निहायत बुरे आ'माल के साथ किया और उन के बेहतर कामों का बदला उन्हें दुन्या में ही दे दिया। जब मैं उन्हें याद करता हूं तो (रह़मते इलाही के सबब) जहन्नमी न होने की उम्मीद करता हूं। इस लिये बन्दे को ख़ौफ़ और उम्मीद के दरमियान रहना चाहिये इस त़रह़ कि न तो फ़क़त़ रह़मत पर तवक्कुल कर बैठे (कि बिल्कुल नेकियां करना ही छोड़ दे) और न ही रह़मत से मायूस हो (कि लवाज़िमाते दुन्या से बिल्कुल कनाराकशी इख़्तियार कर ले)। ऐ उ़मर ! अगर तुम ने मेरी वसिय्यत याद रखी तो मौत से ज़ियादा कोई चीज़ तुम्हें मह़बूब न होगी। मगर उसे कोई अपने इख़्तियार में नहीं ला सकता।"[1]

उम्मीद व ख़ौफ़ के दरमियान रहो

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : "अगर आप ने मेरी वसिय्यत याद न रखी तो कोई चीज़ आप को मौत से

1 ......معرفة الصحابة، معرفة نسبة الصديق۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۵۹، الرقم: ۱۱۴۔

ज़ियादा बुरी नज़र न आएगी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने नर्मी के साथ सख़्ती भी रख दी है ताकि मोमिन उम्मीद और ख़ौफ़ के माबैन रहे। मैं जब अहले जन्नत का ज़िक्र करता हूं तो ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी के सबब येह ख़याल आता है कि मैं उन में से नहीं हूं और अहले जहन्नम का तज़्किरा कर के रह़मते इलाही के सबब येही तसव्वुर करता हूं कि मैं उन में से भी नहीं हूं। इस लिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अहले जन्नत का निहायत बेहतर सिफ़ात के साथ और अहले जहन्नम का बेह़द बुरे आ'माल के साथ तज़्किरा फ़रमाया है। जन्नतियों के कुछ गुनाह भी थे जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मिटा दिये और जहन्नमियों के पास नेकियां भी थीं जो ज़ाएअ़ हो गईं।"(1)

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म के ह़क़ में सिद्दीक़े अक्बर की दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को वसिय्यतें फ़रमाने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आ़लमे तन्हाई में परवर दगारे आ़लम के हुज़ूर हाथ उठा कर यूं दुआ़ की : "ऐ मेरे परवर दगार ! मैं लोगों की ख़ैरो भलाई का ख़्वाहिश मन्द हूं। मुझे इन पर फ़ितना व आज़्माइश के साया फ़िगन होने का ख़ौफ़ हुवा तो मैं ने वोही किया जिसे तू औरों की ब निस्बत ब ख़ूबी जानने वाला है। मैं ने भरपूर ग़ौरो फ़िक्र के बा'द इन में से बेहतर, क़वी और नेकी पर ह़रीस शख़्सिय्यत को निगरान बनाया है। तेरा अम्रे यक़ीनी मेरे पास आ चुका। लिहाज़ा तू इन के दरमियान मेरा जा नशीन मुक़र्रर फ़रमा दे। येह तेरे ही तो बन्दे हैं। इन की पेशानियां तेरे दस्ते क़ुदरत में हैं। ऐ अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ! उन के हुक्मरानों की इस्लाह़ फ़रमा। ऐ रब्बुल आ़लमीन ! इस के लिये अ़वाम को दुरुस्त फ़रमा।" आमीन(2)

फ़िरासते सिद्दीक़े अक्बर

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि : اَفْرَسُ النَّاسِ ثَلَاثَۃٌ या'नी तीन शख़्सिय्यात पुख़्ता राए और फ़िरासत की मालिक हैं। इन में से एक ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी हैं कि आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी फ़िरासत के ज़रीए ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया।(3)

---

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۳۰، ص ۴۱۴۔

2 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۳۰، ص ۴۱۱۔

3 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب المغازی، ماجاء فی خلافۃ عمر، ج ۸، ص ۵۷۵، حدیث: ۳۔

फ़ारूके़ आ'ज़म मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ हो गए

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वज़ीर व मुशीर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़लीफ़ा मुक़र्रर करने और ज़रूरी वसाया के बा'द बिल आख़िर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ 21 जमादल उख़रा 13 सिने हिजरी ब मुत़ाबिक़ 22 अगस्त 634 ईसवी पीर के दिन अपने ख़ालिके़ ह़क़ीक़ी से जा मिले। और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मंगल के रोज़ मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ हो गए।[1]

ख़िलाफ़ते फ़ारूके़ आ'ज़म का सुन्हरा दौर

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कमो बेश 10 साल और कुछ माह मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ रहे। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 856 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म"** जिल्द दुवुम में आप की ख़िलाफ़त के सुन्हरे दौर को बित्तफ़्सील 14 अबवाब में बयान किया गया है जिन की तफ़्सील कुछ यूं है :

(1)...ख़िलाफ़ते फ़ारूके़ आ'ज़म
(2)...बा'दे ख़िलाफ़त इब्तिदाई मुआ़मलात
(3)...फ़ारूके़ आ'ज़म ब हैसिय्यते ख़लीफ़ा
(4)...फ़ारूके़ आ'ज़म और हुक़ूकु़ल इ़बाद
(5)...अ़ह्दे फ़ारूक़ी का शूराई निज़ाम
(6)...निज़ामे अ़ह्दे फ़ारूक़ी की वुस्अ़त
(7)...अ़ह्दे फ़ारूक़ी का निज़ामे अ़दलिय्या
(8)...निज़ामे अ़दलिय्या में मुसावात का क़ियाम
(9)...अ़ह्दे फ़ारूक़ी का निज़ामे एह़तिसाब
(10)..अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मुह़कमए पोलीस व फ़ौज
(11)...अ़ह्दे फ़ारूक़ी में इ़ल्मी सरगर्मियां
(12)...अ़ह्दे फ़ारूक़ी की फ़ुतूह़ात
(13)...फ़ारूक़ी गवर्नर और इन से मुतअ़ल्लिक़ा उमूर
(14)...अ़ह्दे फ़ारूक़ी की ता'मीरात

आख़िर में मुकम्मल ख़िलाफ़त के सुन्हरे दौर को ब ए'तिबारे तारीख़ भी बयान किया गया है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الثامن والعشرون، ص ۶۰ ماخوذا۔

बारहवां बाब

करामाते फ़ारूक़े आ'ज़म

इस बाब में मुलाहज़ा कीजिये.................

.....करामाते औलिया हक़ हैं।

.....करामत की ता'रीफ़

.....सहाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان अफ़्ज़लुल औलिया हैं।

.....करामत की मुख़्तलिफ़ अक़्साम का बयान

.....ज़ाहिरी करामत किसे कहते हैं ?

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ गुलिस्ताने करामत के महकते फूल हैं।

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की चन्द ज़ाहिरी करामात

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की सेंकड़ों मील की दूरी से इस्लामी लश्कर की दस्तगीरी

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ख़ुश्की व समन्दर दोनों पर हुक्मरानी

.....मा'नवी करामत किसे कहते हैं ?

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की चन्द मा'नवी करामात

....

करामाते फ़ारूक़े आ'ज़म

करामाते औलिया हक़ हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल, बीबी आमिना के महकते फूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक दौर से आज तक इस बात पर इजमाअ़ है कि सहा़बए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की करामतें हक़ हैं, हर ज़माने में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वलियों से करामात का सुदूर होता रहा और ता क़ियामत येह सिलसिला जारी व सारी रहेगा।

सहा़बए किराम अफ़्ज़लुल औलिया हैं

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : ''उ़लमा व अकाबिरीने इस्लाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि तमाम सहा़बए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن **''अफ़्ज़लुल औलिया''** हैं। क़ियामत तक के तमाम औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰه अगर्चे दरजए विलायत की बुलन्द तरीन मन्ज़िल पर फ़ाइज़ हो जाएं मगर हरगिज़ हरगिज़ वोह किसी सहा़बी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के कमालाते विलायत तक नहीं पहुंच सकते। **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ने मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे रिसालत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के गुलामों को विलायत का वोह बुलन्दो बाला मक़ाम अ़त़ा फ़रमाया और इन मुक़द्दस हस्तियों رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को ऐसी ऐसी अ़ज़ीमुश्शान करामतों या'नी बुज़ुर्गियों से सरफ़राज़ फ़रमाया कि दूसरे तमाम औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के लिये इस मे'राजे कमाल का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता। इस में शक नहीं कि ह़ज़राते सहा़बए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से इस क़दर ज़ियादा करामतों का तज़्किरा नहीं मिलता जिस क़दर कि दूसरे औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से करामतें मन्क़ूल हैं। येह वाज़ेह़ रहे कि कसरते करामत, अफ़्ज़लिय्यते विलायत की दलील नहीं क्यूंकि विलायत दर ह़क़ीक़त क़ुर्बे बारगाहे अह़दिय्यत عَزَّوَجَلَّ का नाम है और येह क़ुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ जिस को जिस क़दर ज़ियादा ह़ासिल होगा उसी क़दर उस का दरजए विलायत बुलन्द से बुलन्द तर होगा। सहा़बए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن चूंकि निगाहे नबुव्वत के अन्वार और फ़ैज़ाने रिसालत के फ़ुयूज़ो बरकात से मुस्तफ़ीज़ हुवे, इस लिये बारगाहे रब्बे लम यज़ल عَزَّوَجَلَّ में इन बुज़ुर्गों को जो **क़ुर्ब व तक़र्रुब** ह़ासिल है वोह दूसरे औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰه को ह़ासिल नहीं। इस लिये अगर्चे सहा़बए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से बहुत कम करामतें मन्क़ूल हुईं लेकिन फिर भी उन का दरजए विलायत दीगर औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से ह़द दरजा अफ़्ज़लो आ'ला और बुलन्दो बाला है।(1)

---

(1).....करामाते फ़ारूक़े आ'ज़म, स. 9।

सरकारे दो आ़लम से मुलाक़ात का आ़लम
आ़लम में है मे'राजे कमालात का आ़लम
येह राज़ी ख़ुदा से हैं ख़ुदा इन से है राज़ी
क्या कहिये सह़ाबा की करामात का आ़लम

करामत किसे कहते हैं ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''बहारे शरीअ़त'' जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 58 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی करामत की ता'रीफ़ बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : ''नबी से जो बात ख़िलाफ़े आ़दत क़ब्ले नबुव्वत ज़ाहिर हो उस को इरहास कहते हैं और वली से जो ऐसी बात सादिर हो उस को करामत कहते हैं।''

करामत की दो क़िस्में हैं

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن करामत की अक़्साम बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : ''करामत दो क़िस्मों पर है : (1) मह़सूसे ज़ाहिरी (2) मा'क़ूले मा'नवी।''[1]

मह़सूसे ज़ाहिरी करामत क्या होती है ?

''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली की ज़ाते बा बरकत से ज़ाहिर होने वाली ऐसी ख़िलाफ़े आ़दत बात जिसे ज़ाहिरन मह़सूस किया जा सके मह़सूसे ज़ाहिरी करामत कहलाती है।'' ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی ने ह़ज़रते अ़ल्लामा ताजुद्दीन सुबकी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के ह़वाले से ''मह़सूसे ज़ाहिरी'' करामात की इन पच्चीस अक़्साम को बयान फ़रमाया है : (1) मुर्दों को ज़िन्दा करना (2) मुर्दों से कलाम करना (3) दरयाओं पर तसर्रुफ़ (4) किसी चीज़ की अस्ल तब्दील कर देना (5) ज़मीन के सिमट जाने से फ़ासिला मुख़्तसर हो जाना (6) नबातात व जमादात से गुफ़्तुगू

1.....फ़तावा रज़विय्या, जिल्द 21, स. 549।

(7) शिफ़ाए अमराज़ (8) जानवरों का फ़रमां बरदार होना (9) ज़माने का मुख़्तसर (10) या त़वील हो जाना (11) मक़्बूलिय्यते दुआ़ (12) सुकूत और कलाम पर क़ुदरत (13) दिलों को अपनी त़रफ़ माइल कर लेना (14) ग़ैब की ख़बरें देना (15) खाए पिये बिग़ैर ज़िन्दा रहना (16) निज़ामे आ़लम में तसर्रुफ़ात (17) कसीर ग़िज़ा खाने पर क़ुदरत (18) ह़राम खाने से मह़फ़ूज़ रहना (19) दूरो दराज़ के मक़ामात का मुशाहदा करना (20) हैबत व दबदबा (21) मुख़्तलिफ़ सूरतों में ज़ाहिर हो जाना (22) दुश्मनों के शर से बचना (23) ज़मीन के ख़ज़ानों पर मुत्तलअ़ होना (24) क़लील मुद्दत में कसीर तसानीफ़ का मन्ज़रे आ़म पर आ जाना (25) हलाकत ख़ेज़ अश्या का असर न होना।[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म गुलिस्ताने करामत के महकते फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बारगाहे रिसालत से फ़ैज़ याफ़्ता, वज़ीरे रिसालते मआब, आस्माने रिफ़्अ़त के दरख़्शां माहताब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अफ़्ज़लुल बशर बा'दल अम्बिया, ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द तमाम सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से अफ़्ज़ल हैं। रब्बे काइनात عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को दीगर ख़ुसूसिय्यात के साथ साथ ज़ाहिरी और मा'नवी दोनों त़रह़ की करामात का ताजे फ़ज़ीलत अ़त़ा फ़रमाया। नीज़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ आफ़्ताबे रिसालत, माहताबे नबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मा'रिफ़त व करामत का नूर ह़ासिल कर के आस्माने विलायत के क़ुत़्ब सितारे की मानिन्द चमक उठे। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की चन्द ज़ाहिरी करामात पेशे ख़िदमत हैं :

फ़ारूक़े आ'ज़म की ज़ाहिरी करामात

(1).....फ़ारूक़े आ'ज़म की एक नेक जवान की क़ब्र पर तशरीफ़ आवरी

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन अय्यूब ख़ुज़ाई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی से रिवायत है फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में एक नेक परहेज़गार नौजवान था जो हर वक़्त मस्जिद में मसरूफ़े इ़बादत रहता। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी उस की इस कैफ़िय्यत पर बहुत तअ़ज्जुब फ़रमाया करते थे। जब वोह अपनी रात की इ़बादत व रियाज़त से फ़ारिग़ होता तो अपने बूढ़े बाप

[1] حجۃ اللہ علی العالمین، المطلب الثانی فی انواع الکرامات، ص٦٠٨۔

के पास चला जाता और उस की ख़िदमत करता। उसी रास्ते में एक फ़ाहिशा औरत का घर भी था, वोह औरत रास्ते में खड़े हो कर उस नौजवान को बहुत तंग करती। एक रोज़ वोह नौजवान को ज़बरदस्ती अपने घर ले गई। वोह इबादत गुज़ार नौजवान जैसे ही उस के घर में दाख़िल होने लगा तो बे साख़्ता उस की ज़बान से येह आयते मुबारका जारी हुई :

﴿اِنَّ الَّذِیۡنَ اتَّقَوۡا اِذَا مَسَّهُمۡ طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّیۡطٰنِ تَذَكَّرُوۡا فَاِذَا هُمۡ مُّبۡصِرُوۡنَ ﴿۲۰۱﴾﴾ (پ۹، الاعراف:۲۰۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक वोह जो डर वाले हैं जब उन्हें किसी शैतानी ख़याल की ठेस लगती है होशयार हो जाते हैं उसी वक़्त उन की आंखें खुल जाती हैं।"

बस फिर क्या था आयत के जारी होते ही उस पर ऐसा ख़ौफ़े ख़ुदा तारी हुवा कि बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर गया। उस फ़ाहिशा औरत ने अपनी बांदी की मदद से उसे घसीट कर दरवाज़े के बाहर फेंक दिया। जब बेटा वक़्त पर घर न पहुंचा तो बाप को फ़िक्र दामनगीर हुई, बेटे को तलाश करने निकल खड़ा हुवा, बिल आख़िर तलाश करते हुवे फ़ाहिशा के घर तक पहुंच गया जहां उस का नेक बेटा बेहोश पड़ा था। उसे उठा कर घर ले आया। रात गए जब नौजवान को होश आया तो बाप ने माजरा दरयाफ़्त किया। नौजवान ने सारा वाक़िआ बयान कर दिया। बाप ने पूछा बेटा तू ने कौन सी आयत तिलावत की थी। बेटे ने जैसे ही वोह आयत दोबारा तिलावत की तो एक बार फिर उस पर ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब लर्ज़ा तारी हो गया और वोह बेहोश हो गया। उसे होश में लाने की बहुत कोशिश की गई लेकिन ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब उस की रूह क़फ़से उ़नसुरी से परवाज़ कर चुकी थी। बाप ने रातों रात ग़ुस्ल व कफ़न दे कर उसे दफ़्ना दिया। सुब्ह़ जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस वाक़िए की इत्तिलाअ़ मिली तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अव्वलन उस के वालिद के पास ता'ज़िय्यत के लिये तशरीफ़ ले गए और शिकवा करते हुवे इरशाद फ़रमाया। اَلَاآذَنْتَنِیْ "या'नी तुम ने मुझ को इत्तिलाअ़ क्यूं न दी?" उस के वालिद ने रात का उ़ज़्र पेश कर दिया। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस नेक परहेज़गार नौजवान की क़ब्र पर तशरीफ़ ले गए, उस से मुख़ात़ब हो कर यूं इरशाद फ़रमाया : "ऐ फ़ुलां ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है : ﴿وَ لِمَنۡ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿۴۶﴾﴾ (پ۲۷، الرحمن:۴۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और जो अपने रब के हु़ज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें हैं।"

उस नौजवान ने क़ब्र से जवाब दिया : يَا عُمَرُ! قَدْ اَعطَانِيهِمَا رَبِّيْ عَزَّوَجَلَّ فِي الْجَنَّةِ مَرَّتَيْن ''या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने (मुझ पर अपना फ़ज़्लो करम फ़रमाते हुवे) दो जन्नतें अ़ता फ़रमा दी हैं।''[1]

(2).....फ़ारूक़े आ'ज़म की अहले बक़ीअ़ से गुफ़्तगू

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक मरतबा अहले बक़ीअ़ से मुख़ात़ब हो कर यूं इरशाद फ़रमाया : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُور ''या'नी ऐ क़ब्र वालो ! तुम पर सलामती हो। हमारे पास तुम्हारे लिये नई ख़बरें येह हैं कि तुम्हारी औ़रतों ने शादियां रचा कर घर बसा लिये, तुम्हारी रिहाइशगाहें दूसरे लोगों से आबाद हो गईं, तुम्हारे मालो दौलत के अम्बार तक़्सीम हो गए।'' तो उन क़ब्रों की नुमाइन्दगी करते हुवे एक आवाज़ आई : ''ऐ उ़मर बिन ख़त़्त़ाब ! हमारी त़रफ़ से आप के लिये नई ख़बरें येह हैं कि हमारी नेकियों का अज्र हमें मिल चुका, राहे ख़ुदा में ख़र्च की जाने वाली रक़म से हमें फ़ाइदा हुवा, दुन्या में छोड़ी हुई रक़म से हमें सरा सर नुक़्सान हुवा।''[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह दो बहुत बड़ी करामतें हैं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक साहि़बे क़ब्र और जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़ून लोगों से दो त़रफ़ा गुफ़्तगू की। नीज़ इस से येह भी मा'लूम हुवा कि क़ब्रों पर जाना सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सुन्नते मुबारका है और क्यूं न हो कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को इस का हुक्म ख़ुद दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दिया। चुनान्चे, हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को मुख़ात़ब कर के इरशाद फ़रमाया : إِنِّي كُنْتُ نَهَيْتُكُمْ عَنْ زِيَارَةِ الْقُبُورِ فَزُوْرُوْهَا تُذَكِّرُكُمُ الاٰخِرَةَ ''या'नी पहले मैं ने तुम्हें ज़ियारते क़ुबूर से मन्अ़ किया था लेकिन अब तुम क़ब्रों की ज़ियारत किया करो क्यूंकि येह अ़मल तुम्हें आख़िरत की याद दिलाएगा।''[3]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उस नेक नौजवान की हि़कायत से येह भी मा'लूम हुवा कि जो शख़्स नेकियों भरी ज़िन्दगी गुज़ारेगा और ख़ौफ़े ख़ुदा से लर्ज़ां व तर्सां रहेगा, बारगाहे इलाही में खड़ा

---

1 .....تاریخ ابن عساکر، ج ۴۵، ص ۴۵۰۔

2 .....شرح الصدور، باب زیارۃ القبور، ص ۲۰۹۔

3 .....مصنف ابی شیبہ، کتاب الجنائز، من رخص فی زیارۃ القبور، ج ۳، ص ۲۲۳، حدیث: ۳۔

होने से डरेगा, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मते कामिला से **दो जन्नतों का ह़क़दार** क़रार पाएगा। जवानी में इ़बादत करने और ख़ौफ़ रखने वालों को मुबारक हो कि बरोज़े क़ियामत जब सूरज सवा मील पर रह कर आग बरसा रहा होगा, सायए अ़र्श के इ़लावा उस जां गुज़ा या'नी जान को तक्लीफ़ में डालने वाली गर्मी से बचने का कोई ज़रीआ़ न होगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐसे ख़ुश क़िस्मत मुसलमान को अपने अ़र्शे पनाहगाहे अहले अ़र्श का सायए रह़मत अ़त़ा फ़रमाएगा। चुनान्चे, **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 88 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा ?**" सफ़ह़ा 20 पर है : "ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ ख़त़ लिखा कि इन सिफ़ात के ह़ामिल लोग अ़र्श के साए में होंगे : (उन में से दो येह हैं) (1) वोह शख़्स जिस की नश्वो नुमा इस ह़ाल में हुई कि उस की सोह़बत, जवानी और क़ुव्वत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पसन्द और रिज़ा वाले कामों में सर्फ़ हुई और (2) वोह शख़्स जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किया और उस के ख़ौफ़ से उस की आंखों से आंसू बह निकले।[1]

मेरे अश्क बहते रहें काश हर दम
तेरे ख़ौफ़ से या ख़ुदा या इलाही
तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा
मैं थर थर रहूं कांपता या इलाही
मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो
कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही
बना दे मुझे नेक नेकों का सदक़ा
गुनाहों से हर दम बचा या इलाही

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(3).....फ़ारूके़ आ'ज़म और सेंकड़ों मील दूर इस्लामी लश्कर की दस्तगीरी

ईरान के शहर हम्दान के जुनूबी ह़िस्से में पहाड़ों के पास वाक़ेअ़ एक बस्ती जिस का नाम "निहावन्द" है, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते

1 .....مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الزھد، کلام سلمان، ج۸، ص ۱۷۹، حدیث:۲۱ ملتقطاً۔

सय्यिदुना सारिया बिन ज़ुनैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक लश्कर का सिपह सालार बना कर ''निहावन्द'' की सर ज़मीन पर जिहाद करने के लिये रवाना फ़रमाया। जंग की सूरते ह़ाल कुछ इस त़रह़ थी कि इस्लामी लश्कर खुले मैदान में लड़ रहा था और दुश्मन इस्लामी लश्कर को चार जानिब से घेर कर पस्पा करने की कोशिश में लगा हुवा था, जब जंग फ़ैसला कुन मर्ह़ले में दाख़िल हुई तो इस्लामी लश्कर ''सख़्त आज़माइश'' का शिकार था। ऐन उस मौक़ए पर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिदे नबवी में मिम्बरे रसूल पर जल्वा अफ़रोज़ हो कर ख़ुत़बा इरशाद फ़रमा रहे थे। जब इस्लामी लश्कर पर कुफ़्फ़ार के ग़ालिब होने के आसार देखे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वहीं मिम्बर से इस्लामी लश्कर की दस्त्गीरी फ़रमाते हुवे लश्कर के सिपह सालार ''ह़ज़रते सय्यिदुना सारिया बिन ज़ुनैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ'' को इन अल्फ़ाज़ में जंगी हिदायत इरशाद फ़रमाई : **یَاسَارِیَۃُ الْجَبَلَ** ''या'नी ऐ सारिया ! पहाड़ को अपनी आड़ बना कर लड़ो।'' ह़ज़रते सय्यिदुना सारिया बिन ज़ुनैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सेंकड़ो मील दूर निहावन्द की सर ज़मीन पर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह हुक्म सुन लिया और फ़ौरन ''लब्बैक'' कहते हुवे इस पर अ़मल किया। अमीरुल मोमिनीन के हुक्म पर अ़मल करते ही जंग का पांसा पलट गया। मुजाहिदीने इस्लाम की बहादुरी और दिलैरी देख कर कुफ़्फ़ार के क़दम उखड़ने लगे और मैदाने जंग से भागने में ही आ़फ़िय्यत जानी और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ''**दस्त्गीरी**'' के सबब लश्करे इस्लाम ने फ़त्ह़ पाई।[1]

क़ासिद ने आ कर तस्दीक़ की

इस वाक़िए के चन्द दिन बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ासिद आया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ से उस ने एक रुक़्आ़ पहुंचाया जिस में लिखा था : ''जुमुआ़ के दिन हम ने फ़ुलां जगह सुब्ह़ से जुमुआ़ के वक़्त कुफ़्फ़ार से घुमसान की जंग लड़ी यहां तक कि सूरज ढलने लगा तो अचानक एक आवाज़ आई : **یَاسَارِیَۃُ الْجَبَلَ** तो हम फ़ौरन पहाड़ के पीछे हो गए और हम अपने दुश्मन पर क़ह्‌र बन कर टूट पड़े, आख़िरे कार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें कुफ़्फ़ार पर फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमाई और दुश्मनों को ज़लीलो ख़्वार कर दिया।''[2]

---

1 ......دلائل النبوۃ، باب ماجاء فی اخبار النبی۔۔۔الخ، ج٦، ص ٣٧٠۔

مشکاۃ المصابیح، کتاب احوال القیامۃ وبدء الخلق، الفصل الثالث، ج ٢، ص ٤٠١، حدیث: ٥٩٥٤۔

اسد الغابۃ، ساریۃ بن زنیم، ج ٢، ص ٣٦٤ ملتقطا۔

2 ......دلائل النبوۃ لابی نعیم، الفصل التاسع والعشرون، ماظہر علی یدعمر۔۔۔الخ، ص ٣٤٥، الرقم: ٥٢٨ ملتقطا۔

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ का इस्तिफ़्सार

जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दौराने खु़त़बा "یَاسَارِیَۃُ الْجَبَلَ" के अल्फ़ाज़ इरशाद फ़रमाए तो लोग बहुत ह़ैरान हुवे, क्यूंकि खु़त़बे में तो ऐसे अल्फ़ाज़ नहीं थे और न ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस से पहले कभी ऐसे अल्फ़ाज़ खु़त़बे में इरशाद फ़रमाए थे। लिहाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में अ़र्ज़ की : ''या अमीरल मोमिनीन ! आज आप ने दौराने खु़त़बा "یَاسَارِیَۃُ الْجَبَلَ" के अल्फ़ाज़ फ़रमाए, इन का क्या मत़लब था ?'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन्तिहाई नर्मी से जवाब देते हुवे इरशाद फ़रमाया : ''मैं ने देखा कि इ़राक़ के शहर निहावन्द में सारिया और उन के साथी कुफ़्फ़ार के नर्गे़ (घेरे) में हैं मुझ से ज़ब्त़ न हो सका और मैं ने इस्लामी लश्कर की मदद के लिये येह अल्फ़ाज़ कहे।''[1]

वाह क्या बात है फ़ारूके़ आ'ज़म की !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस आ़लीशान करामत से इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल चुनने को मिलते हैं :

.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और आप के सिपह सालार दोनों साहि़बे करामत हैं क्यूंकि मदीनए मुनव्वरा से सेंकड़ों मील की दूरी पर आवाज़ को पहुंचा देना येह अमीरुल मोमिनीन की करामत है और सेंकड़ों मील की दूरी से किसी आवाज़ को सुन लेना येह ह़ज़रते सय्यिदुना सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की करामत है।

.....जा नशीने रसूले मक़्बूल, गुलशने सहा़बिय्यत के महकते फूल, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बरकत से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस जंग में मुसलमानों को फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमाई।[2]

.....अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मदीनए त़य्यिबा से सेंकड़ों मील की दूरी पर निहावन्द के मैदाने जंग और इस के अह़वाल व कैफ़िय्यात को देख लिया और फिर मुश्किलात का ह़ल भी मिम्बर पर खड़े खड़े लश्करे इस्लाम के सिपह सालार को बता दिया। इस

---

1 .....دلائل النبوۃ لابی نعیم، الفصل التاسع والعشرون، ماظھر علی یدعمر۔۔۔الخ، ص ۳۴۵، الرقم: ۵۲۸ ملتقطاً۔

2 .....करामाते सहा़बा, स. 74

से मा'लूम हुवा कि औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के कान और आंख और इन की सम्अ़ व बसर की ताक़तों को आ़म इन्सानों के कान व आंख और उन की क़ुव्वतों पर हरगिज़ हरगिज़ क़ियास नहीं करना चाहिये बल्कि येह ईमान रखना चाहिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने महबूब बन्दों के कान और आंख को आ़म इन्सानों से बहुत ही ज़ियादा ताक़त अ़ता फ़रमाई है और उन की आंखों, कानों और दूसरे आ'ज़ा की ताक़त इस क़दर बे मिस्ल और बे मिसाल है और इन से ऐसे ऐसे कारहाए नुमायां अन्जाम पाते हैं कि जिन को देख कर करामत के सिवा कुछ भी नहीं कहा जा सकता। क्यूंकि बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीसे पाक में मौजूद है कि बन्दा जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब पा लेता है तो फिर वोह अपनी ज़ाती ताक़त से नहीं बल्कि रब عَزَّوَجَلَّ की अ़ताकर्दा मख़्सूस ताक़त से देखता, सुनता, चलता और पकड़ता है, अगर वोह रब عَزَّوَجَلَّ से किसी चीज़ का सुवाल करे तो उसे ज़रूर अ़ता की जाती है और किसी चीज़ से पनाह मांगे तो उसे ज़रूर पनाह दी जाती है।(1)

.....ह़दीसे मज़्कूरए बाला से येह भी साबित होता है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की हुकूमत हवा पर भी थी और हवा भी इन के कन्ट्रोल में थी इस लिये कि आवाज़ों को दूसरों के कानों तक पहुंचाना दर ह़क़ीक़त हवा का काम है कि हवा के तमव्वुज ही से आवाज़ें लोगों के कानों के पर्दों से टकरा कर सुनाई दिया करती हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने जब चाहा अपने क़रीब वालों को अपनी आवाज़ सुना दी और जब चाहा तो सेंकड़ों मील दूर वालों को भी सुना दी, इस लिये कि हवा आप के ज़ेरे फ़रमान थी, जहां तक आप ने चाहा हवा से आवाज़ पहुंचाने का काम ले लिया।(2)

.....अपने किसी मुसलमान भाई को मुसीबत में देख कर उस की मदद करना सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सुन्नत है जैसा कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना सारिया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को आज़माइश में देखा तो उन की मदद करते हुवे रहनुमाई फ़रमाई।

.....जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इस बात की वज़ाह़त फ़रमाई कि मैं ने इस्लामी लश्कर की मदद के लिये येह अल्फ़ाज़ अदा किये तो किसी सह़ाबी ने येह न कहा कि ''हुज़ूर मददगार तो सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई

1.....بخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، ج ۴، ص ۲۴۸، حدیث: ۶۵۰۲ ملخصاً

2.....करामाते सह़ाबा, स. 76

मदद नहीं कर सकता।" इस से मा'लूम हुवा कि तमाम सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان का येह अ़क़ीदा था कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से उस के बन्दे भी मदद करते हैं।"

.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की वज़ाह़त पर किसी सहाबी ने येह भी न कहा कि "ह़ुज़ूर आप तो यहां हमारे सामने मौजूद हैं, फिर येह कैसे हो सकता है कि आप सेंकड़ों मील दूर निहावन्द में मौजूद इस्लामी लश्कर की मदद फ़रमाएं।" इस से मा'लूम हुवा कि सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان का येह भी अ़क़ीदा था कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों को येह ताक़त भी अ़ता फ़रमाता है कि वोह एक ही जगह बैठ कर उस जगह के अह़वाल से भी वाक़िफ़ रहें और सेंकड़ों मील दूर किसी और जगह के अह़वाल से भी वाक़िफ़ रहें बल्कि न सिर्फ़ वहां के ह़ालात से वाक़िफ़ हों बल्कि उन ह़ालात में तब्दीली की ताक़त भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अ़ता फ़रमाई है। जैसा कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه मदीनए मुनव्वरा में बैठ कर मदीनए मुनव्वरा के ह़ालत से भी बा ख़बर थे नीज़ उसी वक़्त आप सेंकड़ों मील दूर निहावन्द में मौजूद इस्लामी लश्कर के ह़ाल से भी वाक़िफ़ थे, बल्कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ताकर्दा ताक़त से वहां के ह़ालात भी तब्दील फ़रमा दिये।

.....निहावन्द में जब अमीरे लश्कर ह़ज़रते सय्यिदुना सारिया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की आवाज़ सुनी तो उन्हों ने इस पर फ़ौरन अ़मल किया। इस से मा'लूम हुवा कि उन्हें पहले ही से येह मा'लूम था कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को इतनी ताक़त अ़ता फ़रमाई है कि वोह मदीनए मुनव्वरा में बैठे बैठे यहां सेंकड़ों मील दूर निहावन्द में हमारी मदद फ़रमा सकते हैं, वरना उस आवाज़ को सुन कर अपना वह्म समझते और उस पर अ़मल न करते।

किस ने ज़र्रों को उठाया और सह़रा कर दिया
किस ने क़त़रों को मिलाया और दरया कर दिया
किस की ह़िक्मत ने यतीमों को किया दुर्रे यतीम
और ग़ुलामों को ज़माने भर का मौला कर दिया
शौकते मग़रूर का किस शख़्स ने तोड़ा त़िलिस्म
मुन्हदिम किस ने इलाही क़स्रे किसरा कर दिया

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِيۡب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(4).....फ़ारूक़े आ'ज़म बह्रो बर (समन्दर और ख़ुश्की) दोनों पर हाकिम

क़दीम दौर में मिस्र की तमाम तर पैदावार का दारो मदार दरयाए नील पर था इसी लिये मिस्र अपनी खुशहाली और ज़रख़ैज़ी के लिये हमेशा "दरयाए नील" का मर्हूने मिन्नत रहा है। जब दरयाए नील सूख जाता तो दोबारा उसे रवां दवां करने के लिये कई सदियों से एक "बेहूदा रस्म" पर अ़मल जारी था। रस्म येह थी कि एक ह़सीनो जमील दोशीज़ा को ख़ूब सूरत लिबास और आ'ला ज़ेवरात से आरास्ता कर के दरया के सिपुर्द कर दिया जाता इस त़रह़ दरयाए नील दोबारा जारी हो जाता नीज़ इस रस्म का नाम "**अ़रूसुन्नील**" था। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में जब मिस्र फ़त्ह़ हुवा तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को वहां का गवर्नर मुक़र्रर किया गया, अहले मिस्र ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कुछ इस त़रह़ फ़रयाद की : "हुज़ूर ! दरयाए नील की एक पुरानी आ़दत है जिस के बिग़ैर वोह जारी नहीं होता।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "वोह कौन सी रस्म है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "जब इस महीने की ग्यारह तारीख़ आती है तो हम एक नौजवान और कंवारी दोशीज़ा के वालिदैन के पास जाते हैं और उन्हें उन की बेटी को दरयाए नील की भेंट चढ़ाने पर राज़ी करते हैं फिर उसे ख़ूब सूरत लिबास और क़ीमती ज़ेवरात से सजा संवार कर दरयाए नील के सिपुर्द कर देते हैं इस त़रह़ येह दरया दोबारा जारी हो जाता है।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन्तिहाई नर्मी से उन्हें समझाते हुवे इरशाद फ़रमाया : "इस रस्म को इस्लाम में कभी पज़ीराई नहीं मिल सकती क्यूंकि इस्लाम तो इस त़रह़ की बेहूदा रुसूमात का ख़ातिमा करता है।" अभी चन्द दिन गुज़रे थे कि दरयाए नील का पानी ख़ुश्क होने लगा जिस के सबब कई लोगों ने मिस्र छोड़ने का इरादा कर लिया। जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह देखा तो फ़िलफ़ौर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को तमाम सूरते ह़ाल से आगाह करने के लिये एक मक्तूब रवाना फ़रमाया। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस का जवाब इरसाल फ़रमाया और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इरशाद फ़रमाया : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नुक़्त़ए नज़र बिल्कुल दुरुस्त है बिलाशुबा इस्लाम बेहूदा रुसूमात का ख़ातिमा करता है, मैं ने इस मक्तूब के साथ एक रुक़्आ़ भी रवाना किया है आप इसे दरयाए नील में डाल दें।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस रुक़्ए़ को खोला तो उस में येह मज़्मून दर्ज था :

اِلٰی نِیْلَ مِصْرَ مِنْ عَبْدِ اللّٰہ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ اَمَّا بَعْدُ! فَاِنْ کُنْتَ تَجْرِیْ بِنَفْسِکَ فَلَا حَاجَۃَ لَنَا اِلَیْکَ وَاِنْ کُنْتَ تَجْرِیْ بِاللّٰہ فَاْنجَرَّ عَلٰی اِسْمِ اللّٰہ

"या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे उ़मर बिन ख़त्ताब की त़रफ़ से मिस्र के दरयाए नील की त़रफ़ ! अगर तू खुद ब खुद जारी हुवा करता था तो हमें तेरी कोई ज़रूरत नहीं और अगर तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से जारी होता था तो फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से जारी हो जा।"

जब येह रुक्अ़ा दरया में डाला गया तो उसी रात दरया जारी हो गया और कई गज़ ऊंचा पानी चढ़ आया, जब कि हर साल छे गज़ पानी उस में आता था। एक रिवायत में येह भी है कि जब से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़त़ दरयाए नील में डाला गया, उस वक़्त से आज तक दरयाए नील मुसलसल चल रहा है।"[1]

किसी शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा है :

चाहें तो इशारों से अपने काया ही पलट दें दुन्या की
येह शान है ख़िदमत गारों की, सरदार का आ़लम क्या होगा

नाजाइज़ रस्मो रवाज और मुसलमानों की ह़ालते ज़ार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जहां इस ह़िकायत से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह करामत ज़ाहिर होती है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खुश्की के साथ साथ समन्दर पर भी ह़ाकिम थे वहीं इस ह़िकायत में इ़ब्रत के कई मदनी फूल भी मिलते हैं। चुनान्चे, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ इस ह़िकायत को ज़िक्र करने के बा'द फ़रमाते हैं : "जिस त़रह़ अहले मिस्र में दरयाए नील को जारी रखने के लिये रस्मे बद जारी थी इसी त़रह़ दौरे ह़ाज़िर में भी बा'ज़ क़बीह़ और नाजाइज़ रुसूमात ज़ोर पकड़ती जा रही हैं और येह ख़िलाफ़े शरअ़ रुसूमात मुसलमानों को पस्ती व बरबादी के अ़मीक़ (या'नी गहरे) गढ़े की त़रफ़ धकेलती और सुन्नते रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दूर करती चली जा रही हैं। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 170 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल एक ज़बरदस्त किताब "इस्लामी ज़िन्दगी" सफ़ह़ा 12 ता 16

1 ......تاریخ الخلفاء، ص ۱۰۰۔
حجۃ اللہ علی العالمین، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء۔۔۔الخ، المطلب الثالث فی ذکر جملۃ جمیلۃ۔۔۔الخ، ص ۶۱۲ ملخصاً۔

पर **मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने बुरी रुसूमात और मुसलमानों के बिगड़े हुवे ह़ालात की जो कुछ कैफ़िय्यात बयान फ़रमाई हैं उन का ख़ुलासा कुछ यूं है :

आज कौन सा दर्द रखने वाला दिल है जो मुसलमानों की मौजूदा पस्ती और इन की मौजूदा ज़िल्लतो ख़्वारी और नादारी पर न दुखता हो और कौन सी आंख है जो इन की ग़ुर्बत, मुफ़्लिसी, बेरोज़गारी पर आंसू न बहाती हो, हुकूमत इन से छिनी, दौलत से येह मह़रूम हुवे, इ़ज़्ज़त व वक़ार इन का ख़त्म हो चुका, ज़माने भर की मुसीबत का शिकार मुसलमान बन रहे हैं, इन ह़ालात को देख कर कलेजा मुंह को आता है, मगर दोस्तो ! फ़क़त़ रोने धोने से काम नहीं चलता बल्कि ज़रूरी येह है कि इस के इ़लाज पर ग़ौर किया जाए। इ़लाज के लिये चन्द चीज़ें सोचनी चाहियें (1) अस्ल बीमारी क्या है ? (2) इस की वज्ह क्या ? मरज़ क्यूं पैदा हुवा ? (3) इस का इ़लाज क्या है ? (4) इस इ़लाज में परहेज़ क्या क्या है ? अगर इन चार बातों में ग़ौर कर लो तो समझ लो कि इ़लाज आसान है। कई लीडराने क़ौम और पेश्वायाने मुल्क ने अक़्वामे मुस्लिम के इ़लाज का बीड़ा उठाया मगर नाकामी ही मिली और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के जिस किसी नेक बन्दे ने मुसलमानों को उन का सह़ीह़ इ़लाज बताया तो बा'ज़ नादान मुसलमानों ने उस का मज़ाक़ उड़ाया, उस पर फब्तियां कसीं, ज़बाने त़ा'न दराज़ की, ग़रज़ येह कि सह़ीह़ त़बीबों की आवाज़ पर कान न धरा। मुसलमानों की बादशाहत गई, इ़ज़्ज़त गई, दौलत गई, वक़ार गया, सिर्फ़ एक वज्ह से वोह येह कि हम ने शरीअ़ते मुस्त़फ़ा की पैरवी छोड़ दी, हमारी ज़िन्दगी **इस्लामी ज़िन्दगी** न रही। इन तमाम नुहूसतों की वज्ह येह है कि हमें नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शर्म और आख़िरत का डर न रहा। आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

दिन लह्व में खोना तुझे शब सुब्ह़ तक सोना तुझे
शर्मे नबी, ख़ौफ़े ख़ुदा, येह भी नहीं वोह भी नहीं

मस्जिदें हमारी वीरान, मुसलमानों से सिनेमा व तमाशे आबाद, हर क़िस्म के उ़यूब मुसलमानों में मौजूद, नाजाइज़ रस्में हम में क़ाइम हैं, हम किस त़रह़ इ़ज़्ज़त पा सकते हैं, जैसे किसी ने कहा है :

वाए नाकामी ! मताए कारवां जाता रहा
कारवां के दिल से एह़सासे ज़ियां जाता रहा

तीन ख़त़रनाक बीमारियां

मुसलमानों की अस्ल बीमारी तो अह़कामे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ व सुन्नते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को छोड़ना है, अब इस की वज्ह से और बहुत सी बीमारियां पैदा हो गईं। मुसलमानों की सदहा बीमारियां तीन में मुन्ह़सिर हैं : **अव्वल** रोज़ाना नए नए मज़हबों की पैदावार और हर आवाज़ पर मुसलमानों का आंखें बन्द कर के चल पड़ना। **दूसरे** मुसलमानों की आपस की ख़ाना जंगियां और मुक़द्दमा बाज़ियां और आपस की अ़दावतें। **तीसरे** जाहिल लोगों की घड़ी हुई ख़िलाफ़े शरअ़ या फ़ुज़ूल रस्में, इन तीन क़िस्म की बीमारियों ने मुसलमानों को तबाह कर डाला, बरबाद कर दिया, घर से बे घर बना दिया, मक़रूज़ कर दिया ग़रज़ येह कि ज़िल्लत के गढ़े में धकेल दिया।[1]

मज़कूरा बीमारियों का इलाज

❁ पहली बीमारी का इ़लाज येह है कि हर बद मज़हब की सोह़बत से बचो, उस आ़लिमे ह़क़ और सुन्निय्युल मज़हब शख़्स के पास बैठो जिस की सोह़बते फ़ैज़ असर से सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इ़श्क़ और इत्तिबाए़ शरीअ़त का जज़्बा पैदा हो। ❁ दूसरी बीमारी का इ़लाज येह है कि अक्सर फ़ितना व फ़साद की जड़ दो चीज़ें हैं : एक ग़ुस्सा और अपनी बड़ाई और दूसरा हुक़ूक़े शरइय्या से ग़फ़्लत। हर शख़्स चाहता है कि मैं सब से ऊंचा रहूं और सब मेरे हुक़ूक़ अदा करें मगर मैं किसी का ह़क़ अदा न करूं अगर हमारी त़बीअ़त में से ग़ुरूर व तकब्बुर निकल जाए, आ़जिज़ी और तवाज़ोअ़ पैदा हो जाए, हम में से हर शख़्स दूसरे के हुक़ूक़ का ख़याल रखे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कभी झगड़े की नौबत ही न आए। ❁ तीसरी बीमारी कि हमारे अक्सर मुसलमानों में बच्चे की पैदाइश से ले कर मरने तक मुख़्तलिफ़ मौक़ओ़ं पर ऐसी तबाहकुन रस्में जारी हैं जिन्हों ने मुसलमानों की जड़ें खोखली कर दी हैं। शादी बियाह की रस्मों की ब दौलत हज़ारों मुसलमानों की जाईदादें, मकानात, दुकानें सूदी क़र्ज़े में चली गईं और बहुत से आ'ला ख़ानदानों के लोग आज किराए के मकानों में गुज़र कर रहे हैं और ठोकरें खाते फिरते हैं। अपनी क़ौम की इस मुसीबत को देख कर मेरा दिल भर आया। त़बीअ़त में जोश पैदा हुवा कि कुछ ख़िदमत करूं। रौशनाई के चन्द क़त़रे ह़क़ीक़त में मेरे आंसूओं के क़त़रे हैं ख़ुदा करे कि इस से क़ौम की इस्लाह़ हो जाए। मैं ने येह मह़सूस किया कि बहुत से लोग इन शादी बियाह और दीगर फ़ुज़ूल रस्मों से बेज़ार तो हैं मगर

---

[1].....इस्लामी ज़िन्दगी, स. 16 मुलख़्ख़सन।

बरादरी के ता'नों और अपनी नाक कटने के ख़ौफ़ से जिस त़रह़ हो सकता है क़र्ज़ ले कर इन जाहिलाना रस्मों को पूरा करते हैं। कोई तो ऐसा मर्दे मुजाहिद हो जो बिला ख़ौफ़ो ख़त़र हर एक के ता'ने बरदाश्त कर के तमाम नाजाइज़ व ह़राम रस्मों पर लात मार दे और सुन्नते सरवरे काइनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ज़िन्दा कर के दिखा दे कि जो शख़्स सुन्नत को ज़िन्दा करे उस को 100 शहीदों का सवाब मिलता है। क्यूंकि शहीद तो एक दफ़्आ़ तल्वार का ज़ख़्म खा कर दुन्या से पर्दा कर जाता है मगर येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नेक बन्दा उ़म्र भर लोगों की ज़बानों के ज़ख़्म खाता रहता है। वाज़ेह़ रहे कि मुरव्वजा रस्में दो क़िस्म की हैं : एक तो वोह जो शरअ़न नाजाइज़ हैं दूसरी वोह जो तबाह कुन हैं और बहुत दफ़्आ़ इन के पूरा करने के लिये मुसलमान सूदी क़र्ज़े की नुहूसत में भी मुब्तला हो जाता है। ह़ालांकि सूद का लैन दैन गुनाहे कबीरा है और यूं येह रुसूमात बहुत सारी आफ़ात में फंसा देती हैं, इन से दूरी ही में आ़फ़िय्यत है।[1]

शादियों में मत गुनह नादान कर
ख़ाना बरबादी का मत सामान कर
छोड़ दे सारे ग़लत़ रस्मो रवाज
सुन्नतों पर चलने का कर अ़ह्द आज
ख़ूब कर ज़िक्रे ख़ुदा व मुस्त़फ़ा
दिल मदीना उन की यादों से बना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(5).....फ़ारूके़ आ'ज़म के अ़द्ल का वसीला

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने किसरा के दारुल हुकूमत "मदाइन" फ़त्ह़ करने के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की सर परस्ती में एक लश्कर भेजा और क़ियादत ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के सिपुर्द की। मदाइन पहुंचने के लिये **"दरयाए दिजला"** उ़बूर करना पड़ता था जब येह लश्कर दरयाए दिजला

1.....इस्लामी ज़िन्दगी स. 12 ता 16 बित्तसर्रुफ़। ग़लत़ व क़बीह़ रुसूमात के नुक़्सानात जानने और इन के इलाज की तफ़्सीली मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये "मक्तबतुल मदीना" की मत़बूआ़ किताब "इस्लामी ज़िन्दगी" हदिय्यतन ह़ासिल कर के मुत़ालआ़ फ़रमाइये।

के किनारे पहुंचा तो वहां किसी कश्ती का नामो निशान भी न था। इधर लश्करे इस्लाम मदाइन पर परचमे इस्लाम लहराने के लिये बेताब था और दिजला को अपने मक़्सूद के हुसूल में रुकावट समझ रहा था। ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लश्करे इस्लाम की बेताबी से आगाह थे लिहाज़ा उन्हों ने दरया को मुख़ात़ब करते हुवे इरशाद फ़रमाया : يَا بَحْرُ اِنَّکَ تَجْرِيْ بِاَمْرِ اللّٰهِ فَبِحُرْمَةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَبِعَدْلِ عُمَرَ خَلِيْفَةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ اِلَّا خَلَّيْتَنَا وَالْعُبُوْرَ "या'नी ऐ दिजला ! तू यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म पर चलता है। तुझे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हुरमत और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़द्ल का वासित़ा ! हमारे मक़्सद के हुसूल में रुकावट न बन।" येह इरशाद फ़रमा कर लश्कर को दरया में घोड़े दौड़ाने का हुक्म दिया, लश्कर ने हुक्म की ता'मील की और इस शान से दरयाए दिजला उ़बूर किया कि किसी का पाउं तक न भीगा।[(1)]

इस वाक़िए की त़रफ़ इशारा करते हुवे शाइरे मशरिक़ ने क्या ख़ूब कहा है :

दश्त तो दश्त दरया भी न छोड़े हम ने
बह़्रे ज़ुल्मात में दौड़ा दिये घोड़े हम ने

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन दोनों मज़्कूरए बाला वाक़िआ़त से मा'लूम हुवा कि जिस त़रह़ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुश्की के ह़ाकिम हैं। वैसे ही आप की हुक्मरानी का परचम दरयाओं के पानियों पर भी लहरा रहा था कि दरयाओं की रवानी भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़रमांबरदार थी। जिस त़रह़ आप का हुक्म लोगों पर चलता था बि ऐ़निही वैसा हुक्म समन्दर पर भी चलता था, जिस त़रह़ लोग आप को ह़ाकिम समझते और आप के फ़रामीन पर अ़मल पैरा होते थे वैसे ही समन्दर भी आप को अपना ह़ाकिम समझता और आप के फ़रमान पर अ़मल पैरा होता था। नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अस्ह़ाब के भी इ़ल्म में था कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दोनों हुक्मरानियां अ़त़ा फ़रमाई हैं जब ही तो इन्हों ने समन्दर को अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वासित़ा दिया।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ......رياض النضرة، ج ۱، ص ۳۳۱۔

(6).....फ़ारूक़े आ'ज़म की ज़मीन पर हुक्मरानी

हज़रते अ़ल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इमामुल ह़रमैन की किताब ''अश्शामिल'' के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के दौरे ख़िलाफ़त में मदीने शरीफ़ में शदीद ज़लज़ला आया और ज़मीन हिलने लगी। आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه कुछ देर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना करते रहे मगर ज़लज़ला ख़त्म न हुवा। फ़ौरन जलाल में आ गए और अपना दुर्रा ज़मीन पर मार कर फ़रमाया : قَرِّىْ اَلَمْ اَعْدِلْ عَلَيْكِ فَاسْتَقَرَّتْ مِنْ وَقْتِهَا ''या'नी ऐ ज़मीन ! साकिन हो जा क्या मैं ने तेरे ऊपर इन्साफ़ नहीं किया है ?'' येह फ़रमाते ही फ़ौरन ज़लज़ला ख़त्म हो गया और ज़मीन ठहर गई।(1)

(7).....ज़मीन ने तेल वापस कर दिया

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में एक ख़ातून का तेल ज़मीन पर गिर गया। तेल ज़मीन पर गिर कर ज़मीन में जज़्ब हो गया। वोह औ़रत फ़र्ते ग़म से खड़ी रो रही थी कि वहां से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه गुज़रे। आप ने उस ख़ातून से रोने की वज्ह पूछी तो उस ने सारा मुआ़मला अ़र्ज़ कर दिया। आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه कोड़ा ले कर ज़मीन को मारने लगे और फ़रमाने लगे : ''ऐ ज़मीन ! क्या तू ने मेरे दौरे ख़िलाफ़त में इस ख़ातून का तेल ग़स्ब किया ? तेल वापस कर।'' येह फ़रमाना था कि ज़मीन ने तेल उगल दिया और उस ख़ातून ने उसे अपने बरतन में डाल दिया।(2)

(8).....हुक्मे फ़ारूक़ी से आग फ़ौरन ठन्डी हो गई

इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि एक बार मदीनए मुनव्वरा के घरों में आग लग गई जो बुझने का नाम न लेती थी, लोग बहुत ज़ियादा परेशान हो गए और बारगाहे फ़ारूक़ी में ह़ाज़िर हो कर अपनी परेशानी का इज़्हार किया तो आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने एक रुक़्आ़ पर लिखा يَانَارُ! اُسْكُنِيْ بِاِذْنِ اللهِ ''या'नी ऐ आग ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से रुक जा।'' और वोह रुक़्आ़ लोगों को दिया कि इसे आग में डाल दो। लोग वोह रुक़्आ़ ले कर गए और जैसे ही आग में डाला तो आग फ़ौरन ठन्डी हो गई।(3)

1.....جامع كرامات الاولياء، هذه كرامات اربعة وخمسين ـــ الخ، ج ١، ص ١٥٧ـ

2.....मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8 स. 381।

3.....تفسير كبير، پ ١٥، الكهف، تحت الآية: ٩، ج ٧، ص ٤٣٣ـ

(9).....फ़ारूक़े आ'ज़म की चादर देख कर आग बुझ गई

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में एक मरतबा अचानक एक पहाड़ के ग़ार से बहुत ही ख़त़रनाक आग नुमूदार हुई जिस ने आस पास की तमाम चीज़ों को जला कर राख का ढेर बना दिया। जब लोगों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में फ़रयाद की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना तमीम दारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी चादर मुबारक अ़ता फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया कि तुम मेरी येह चादर ले कर आग के पास चले जाओ। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना तमीम दारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस मुक़द्दस चादर को ले कर रवाना हो गए और जैसे ही आग के क़रीब पहुंचे यका यक वोह आग बुझने और पीछे हटने लगी यहां तक कि वोह ग़ार के अन्दर चली गई और जब येह चादर ले कर ग़ार के अन्दर दाख़िल हो गए तो वोह आग बिल्कुल ही बुझ गई और फिर कभी भी ज़ाहिर नहीं हुई।[1]

(10).....बादलों ने फ़ारूक़े आ'ज़म की इत़ाअ़त की

हज़रते सय्यिदुना ख़व्वात बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौर में शदीद क़ह़त़ पड़ा। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों को दो रक्अ़त "नमाज़े इस्तिस्क़ा" (या'नी बारिश के लिये पढ़ी जाने वाली नमाज़) पढ़ाई। इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने चादर का दायां हिस्सा बाएं कन्धे पर और बायां हिस्सा दाएं कन्धे पर डाला। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दस्ते सुवाल दराज़ करते हुवे यूं इल्तिजा की : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम तुझ से ही मग़फ़िरत के त़ालिब हैं और तेरी वह़दहु ला शरीक ज़ात से बारिश का सुवाल करते हैं।" अभी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी जगह से हटे भी न थे कि बारिश बरसने लगी। कुछ दिनों बा'द चन्द आ'राबी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! हम अपने अ़लाक़े में बैठे थे कि अचानक कहीं से बादल आ गए जिन से येह आवाज़ आ रही थी : "ऐ अबू ह़फ़्स ! मदद आ गई, ऐ अबू ह़फ़्स ! मदद आ गई !"[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़कूरए बाला पांचों वाक़िआ़त से मा'लूम होता है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हुक्मरानी न सिर्फ़ ज़मीन

---

1 ......ازالۃ الخفاء، ج۴، ص۱۰۹۔

2 ......موسوعۃ لابن ابی الدنیا، الھواتف، ج۲، ص۴۴۱، الرقم:۱۶۔

वालों पर थी बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हुक्मरानी खुद ज़मीन पर भी चलती थी, सूरज भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जलाल को पहचानता था, आग आप का हुक्म मानती थी, बादल आप के हुक्म के ताबेअ़ थे और क्यूं न होते कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ग़ुलामी जो इख़्तियार कर ली थी। यक़ीनन जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ को अपना ज़ेवर बना लिया उस की कुल काइनात पर हुक्मरानी क़ाइम हो गई।

उन के जो ग़ुलाम हो गए
वक़्त के इमाम हो गए
नाम लेवा उन के जो हुवे
उन के ऊंचे नाम हो गए

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(11).....फ़ारूक़े आ'ज़म की दुआ़ क़बूल हो गई

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह ख़बर मिली कि इराक़ के लोगों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुक़र्रर कर्दा गवर्नर को उन के मुंह पर कंकरियां मार कर और ज़लीलो रुस्वा कर के शहर से बाहर निकाल दिया है तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस ख़बर से बे पनाह सदमा हुवा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इन्तिहाई जलाल में मस्जिदे नबवी तशरीफ़ लाए और नमाज़ शुरूअ़ फ़रमा दी। चूंकि आप इस वाक़िए़ की वज्ह से बहुत मुज़्तरिब (बे चैन) थे इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को नमाज़ में सह्व हो गया। सह्व की वज्ह से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ज़ियादा बेताब हो गए, नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर इन्तिहाई रन्जो ग़म की ह़ालत में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह दुआ़ मांगी : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! क़बीलए सक़ीफ़ के ग़ुलाम (ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी) को उन लोगों पर मुसल्लत़ फ़रमा दे जो ज़मानए जाहिलिय्यत की रविश पर चले, न नेकूकार की नेकी का लिह़ाज़ करे, न बुरों की बुराई से रू गर्दानी करे। उन इराक़ियों के नेक व बद किसी को भी मुआ़फ़ न करे।" (आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह दुआ़ क़बूल हुई और अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान उमवी के दौरे हुकूमत में ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी इराक़ का गवर्नर बना और उस ने इराक़ के बाशिन्दों पर ऐसे ज़ुल्मो सितम के पहाड़ तोड़े कि इराक़ की

ज़मीन बिलबिला उठी। हज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी इतना ज़ालिम था कि उस ने जिन लोगों को रस्सी में बांध कर अपनी तल्वार से क़त्ल किया उन मक्तूलों की ता'दाद एक लाख और इस से कुछ ज़ाइद ही है और जो लोग उस के हुक्म से क़त्ल किये गए उन की गिनती का तो शुमार ही नहीं।) अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने लहीआ़ मुहृद्दिस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया कि "जिस वक़्त अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने येह दुआ़ मांगी थी उस वक़्त हज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी पैदा भी नहीं हुवा था।"(1)

औलियाए किराम को भी इ़ल्मे ग़ैब होता है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला अपने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام को ग़ैब की बातों का भी इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाता है। चुनान्चे, रिवायते मज़्कूरए बाला में आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमा लिया कि अभी हज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी पैदा भी नहीं हुवा था लेकिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को येह मा'लूम हो गया था कि हज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी नामी एक बच्चा पैदा होगा जो बड़ा हो कर गवर्नर बनेगा और इन्तिहाई ज़ालिम होगा।

ज़ाहिर है कि क़ब्ल अज़ वक़्त इन बातों का मा'लूम हो जाना यक़ीनन ग़ैब का इ़ल्म है। अब येह मस्अला आफ़्ताबे आ़लम ताब से भी ज़ियादा रौशन हो गया कि जब **अल्लाह** तआ़ला अपने औलिया को ग़ैब का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाता है तो फिर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام खुसूसन हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भी **अल्लाह** तआ़ला ने यक़ीनन उ़लूमे ग़ैबिय्या का ख़ज़ाना अ़त़ा फ़रमाया है और येह ह़ज़रात बेशुमार ग़ैब की बातों को खुदा तआ़ला के बता देने से जानते हैं और दूसरों को भी बताते हैं। चुनान्चे, अहले ह़क़ ह़ज़रात उ़लमाए अहले सुन्नत का येही अ़क़ीदा है कि **अल्लाह** तआ़ला ने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बिल खुसूस हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बे शुमार उ़लूमे ग़ैबिय्या के ख़ज़ाने अ़त़ा फ़रमाए हैं और येही अ़क़ीदा ह़ज़राते ताबेई़न व ह़ज़राते सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का भी था। चुनान्चे, मवाहिबुल्लदुनिय्या शरीफ़ में है कि

---

(1)......ازالۃ الخفاء، ج۴، ص۱۰۸ مختصرا، دلائل النبوۃ، جماع ابواب اخبار النبی، ماجاء فی اخبارہ۔۔۔الخ، ج۶، ص۴۸۷ ملتقطا۔
تاریخ الخلفاء، ص۱۰۱۔

قَدِ اشْتَهَرَ وَانْتَشَرَ اَمْرُ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَ اَصْحَابِهٖ بِالْاِطِّلَاعِ عَلَى الْغُيُوْبِ

''या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गुयूब पर मुत्तलअ़ हैं येह बात सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में आ़म तौ़र पर मश्हूर और ज़बान ज़द ख़ासो आ़म थी।''(1)

इसी त़रह़ मवाहिबुल्लदुनिय्या की शर्ह़ में अ़ल्लामा मुह़म्मद अ़ब्दुल बाक़ी ज़ुरक़ानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى तह़रीर फ़रमाते हैं : وَاَصْحَابُهٗ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَازِمُوْنَ بِاِطِّلَاعِهٖ عَلَى الْغَيْب ''या'नी सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का येह पुख़्ता अ़क़ीदा था कि ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ैब की बातों पर मुत्तलअ़ हैं।''(2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(12).....ऐ उ़मर......! मेरी ख़बर लीजिये

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने किसी शहर में मुजाहिदीने इस्लाम का एक लश्कर भेजा। फिर कुछ दिनों के बा'द निहायत ही बुलन्द आवाज़ से आप ने दो मरतबा येह फ़रमाया : يَالَبَّيْكَاهُ ! يَالَبَّيْكَاهُ ! ''या'नी ऐ शख़्स ! मैं तेरी पुकार पर ह़ाज़िर हूं।'' अहले मदीना ह़ैरान रह गए और उन की समझ में कुछ भी न आया कि आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه किस फ़रयाद करने वाले की फ़रयाद का जवाब दे रहे हैं ? फिर चन्द दिनों के बा'द वोह लश्कर मदीनए मुनव्वरा वापस आया और उस लश्कर का सिपह सालार अपनी फ़ुतूह़ात और अपने जंगी कारनामों का ज़िक्र करने लगा तो आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया कि इन बातों को छोड़ दो ! पहले येह बताओ कि जिस मुजाहिद को तुम ने ज़बरदस्ती दरया में उतारा था और उस ने يَاعُمَرَاهُ ! يَاعُمَرَاهُ ! ''या'नी ऐ मेरे उ़मर ! मेरी ख़बर लीजिये।'' पुकारा था उस का क्या वाक़िआ़ था ? इस्लामी लश्कर के सिपह सालार ने आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से अ़र्ज़ किया कि ''ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मुझे अपनी फ़ौज को दरया के पार उतारना था इस लिये मैं ने पानी की गहराई का अन्दाज़ा करने के लिये उस मुजाहिद को दरया में उतरने का हुक्म दिया, चूंकि मौसिम बहुत ही सर्द था और ज़ोरदार हवाएं चल रही थीं इस लिये उसे सर्दी लग गई और उस ने दो मरतबा ज़ोर ज़ोर से يَاعُمَرَاهُ ! يَاعُمَرَاهُ ! कह कर आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को पुकारा, फिर यकायक उस की रूह़ परवाज़ कर गई। ख़ुदा गवाह है कि मैं ने क़त़अ़न उस को हलाक करने के इरादे से दरया में उतरने का हुक्म नहीं दिया था।'' जब अहले मदीना ने सिपह सालार की ज़बानी येह क़िस्सा सुना तो उन लोगों की समझ में

1.....شرح زرقانی علی المواهب، الفصل الثالث فی انبائه ۔۔۔ الخ، ج ۱۰، ص ۱۱۲ ۔

2.....شرح زرقانی علی المواهب، الفصل الثالث فی انبائه ۔۔۔ الخ، ج ۱۰، ص ۱۱۳ ۔

आ गया कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस दिन जो दो मरतबा یَالَبَّیْکَاہ!یَالَبَّیْکَاہ! इरशाद फ़रमाया था दर ह़क़ीक़त येह उसी मज़्लूम मुजाहिद की फ़रयाद रसी का जवाब था। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सिपह सालार का बयान सुन कर जलाल में आ गए और इरशाद फ़रमाया : "अगर मुझे इस त़रीक़े के राइज होने का अन्देशा न होता तो मैं तेरी गर्दन उड़ा देता, सर्द मौसिम और ठन्डी हवाओं के झोंकों में उस मुजाहिद को दरया की गहराई में उतारना येह क़त्ले ख़त़ा के हुक्म में है, लिहाज़ा तुम अपने माल में से उस के वारिसों को उस का ख़ूनबहा अदा करो और ख़बरदार ! आइन्दा किसी सिपाही से हरगिज़ हरगिज़ कभी कोई ऐसा काम न लेना जिस में उस की हलाकत का अन्देशा हो क्यूंकि मेरे नज़्दीक एक मुसलमान का हलाक हो जाने से बढ़ कर कोई हलाकत नहीं।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से इल्मो ह़िक्मत के दर्जे ज़ैल मदनी फूल मिलते हैं :

.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह त़ाक़त अ़त़ा फ़रमाई है कि वोह अपनी जगह बैठ कर सेंकड़ों मील दूर के ह़ालात को मुलाह़ज़ा फ़रमा लें।

.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की हुकूमत हवा पर भी थी और हवा भी उन के कन्ट्रोल में थी इस लिये कि आवाज़ों को दूसरों के कानों तक पहुंचाना दर ह़क़ीक़त हवा का काम है कि हवा के तमव्वुज ही से आवाज़ें लोगों के कानों के पर्दों से टकरा कर सुनाई दिया करती हैं। इस लिये आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जब चाहते उस हवा से किसी की आवाज़ सुनने या किसी को सुनाने का काम ले लिया करते कि हवा आप के ज़ेरे फ़रमान थी।

....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से मुश्किल कुशा हैं या'नी मुसलमानों की मुश्किलात को ह़ल फ़रमाने वाले हैं।

.....सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का येह मुबारक अ़क़ीदा था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से उस के बन्दे भी मदद करते हैं जभी तो मुश्किल में उस मुजाहिद ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को मदद के लिये पुकारा था नीज़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस की पुकार का जवाब दिया।

---

(1).....ازالۃ الخفاء،ج۴،ص۱۰۹۔

(13).....फ़ारूक़े आ'ज़म के मुहाफ़िज़ दो ग़ैबी शेर

एक मरतबा बादशाहे रूम का अ़जमी क़ासिद मदीनए मुनव्वरा आया और लोगों से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर का पता पूछा। उस का ख़याल था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किसी आ़लीशान मह़ल में रिहाइश पज़ीर होंगे, लेकिन उस के इस्तिफ़्सार पर लोगों ने बताया कि इस वक़्त अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सह़रा में बकरी का दूध दोह रहे होंगे। येह क़ासिद ढूंडते ढूंडते आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास पहुंचा तो क्या देखता है कि आप ने चमड़े का दुर्रा अपने सर के नीचे रखा हुवा है और ज़मीन पर आराम फ़रमा रहे हैं। क़ासिद को आप के इस त़रह़ ज़मीन पे आराम फ़रमा होने पर बड़ी ह़ैरत हुई, उस ने दिल ही दिल में कहा : "मशरिक़ो मग़रिब के सब लोग इस से ख़ौफ़ खाते हैं और इस शख़्स की ह़ालत येह है कि ख़ाली ज़मीन पर आराम कर रहा है। दूसरा येह कि इस के साथ कोई मुह़ाफ़िज़ भी नहीं, इसे क़त्ल करना कितना आसान है !" फिर उस ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़त्ल के इरादे से तल्वार निकाली, जूंही तल्वार निकाली यका यक कहीं से "दो ग़ैबी शेर" ज़ाहिर हो कर उस की त़रफ़ लपके। शेरों को देख कर उस पर कपकपी त़ारी हो गई, ख़ौफ़ के बाइ़स उस के हाथ से तल्वार गिर गई। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी बेदार हो गए। फिर उस क़ासिद से ख़ौफ़ व दह्शत का सबब दरयाफ़्त फ़रमाया तो उस ने सारा माजरा कह सुनाया। येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस क़ासिद से बहुत ही नर्मी से पेश आए और उसे मुआ़फ़ फ़रमा दिया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस मह़ब्बत भरे रवय्ये से वोह बहुत मुतअस्सिर हुवा, इस्लाम की मह़ब्बत उस के दिल में घर कर गई और कलिमए शहादत पढ़ कर फ़ौरन मुसलमान हो गया।(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते त़य्यिबा के कई पहलू निखर कर सामने आते हैं :

.....आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़लीफ़ा होने के बा वुजूद निहायत ही सादगी से ज़िन्दगी बसर फ़रमाते थे। न तो शाहाना लिबास पहनते कि जिसे देख कर लोग समझते कि येह अमीरुल मोमिनीन हैं, न ही किसी शाहाना बिस्तर पर आराम फ़रमाते बल्कि ज़मीन पर ही आराम फ़रमा हो जाते। आप की वज़्अ़ क़त़्अ़ में इतनी सादगी थी कि अगर कोई अन्जान (Unknown) शख़्स आप को देखता तो वोह कभी आप को न पहचान पाता कि आप ही अमीरुल मोमिनीन हैं।

---

1 .....تفسیر کبیر، پ۱۵، الکھف، تحت الآیۃ: ۹، ج۷، ص۴۳۳۔

.....आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी में अपनी ज़िन्दगी बसर फ़रमाते, हर वक़्त ख़ौफ़े ख़ुदा आप के पेशे नज़र रहता, ज़ुल्मो सितम से किनारा कशी और अ़द्लो इन्साफ़ की पासदारी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शैवा था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मख़्लूक़े ख़ुदा की हिफ़ाज़त फ़रमाते और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप की हिफ़ाज़त फ़रमाता।

.....आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अह़कामे शरइय्या की पासदारी की तो रब عَزَّوَجَلَّ ने आप की ज़ाते मुबारका में वोह हैबत, रो'बो दबदबा पैदा कर दिया कि जो दुश्मन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखता थर थर कांपने लग जाता।

.....आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शरीअ़त के मुआ़मले में बहुत सख़्त थे लेकिन अपने ज़ाती मुआ़मलात में बहुत ही नर्मी फ़रमाते थे, जैसा कि रूम के क़ासिद ने आप के क़त्ल का इरादा किया लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये उसे मुआ़फ़ फ़रमा दिया और येही नर्मी उस के क़बूले इस्लाम का सबब बन गई।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(14).....फ़ारूक़े आ'ज़म की आइन्दा रू नुमा होने वाले वाक़िए पर नज़र

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हम अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में एक वफ़्द के साथ ह़ाज़िर हुवे। मुझे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़ियादा क़रीब बैठने की सआ़दत मिली। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वहां मौजूद एक शख़्स पर सर सरी सी नज़र डाल कर फेर ली। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुझ से मुख़ात़ब हुवे और इरशाद फ़रमाया : "क्या येह शख़्स भी तुम्हारे वफ़्द में शामिल है ?" मैं ने कहा : "जी हां।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इसे हलाक फ़रमा कर अपने मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत को इस के शर से बचाए, मेरे ख़याल में इस शख़्स के बाइ़स मुसलमानों पर तक्लीफ़ों भरा ज़माना आएगा।"(1)

(15).....मुबारक फ़रज़न्द की बिशारत

एक दिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नींद से बेदार हुवे और अपनी आंखें मलते हुवे कई बार येह बात इरशाद फ़रमाई : "उ़मर की औलाद में न जाने कौन

(1).....تاریخ ابن عساکر، ج۵۶، ص۳۷۷۔

उस शख़्स को देखेगा जो उ़मर की सीरत पर अ़मल करने वाला होगा।" (आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इशारा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जानिब था जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़रज़न्द ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नवासे थे)[1]

(16).....आग से नजात पर फ़ारूक़े आ'ज़म की मुबारक बाद

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ यमन में क़ियाम पज़ीर थे कि अस्वद अ़न्सी ने नबुव्वत का दा'वा कर दिया, जब उसे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में पता चला तो उस ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़ौरन पकड़ कर लाने का हुक्म दिया। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उस के सामने पेश किया गया तो उस ने कहा : "क्या तुम इस बात की गवाही देते हो कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का रसूल हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मुझे सुनाई नहीं दिया कि तुम ने क्या कहा ?" अस्वद अ़न्सी ने दोबारा कहा : "क्या तुम इस बात की गवाही देते हो कि मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जी हां।" उस ने फिर कहा : "क्या तुम इस बात की गवाही देते हो कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का रसूल हूं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब दिया : "मुझे समझ नहीं आया कि तुम ने क्या कहा ?" इस बात से अस्वद अ़न्सी को बहुत तै़श आया और उस ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को आग में जलाने का हुक्म दिया। जब आग के शो'ले बुलन्द होने लगे तो उस ज़ालिम ने भड़कती आग में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को डाल दिया, लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़र्रा बराबर नुक़्सान न पहुंचा। जब अस्वद अ़न्सी ने आप की येह करामत देखी तो हक्का बक्का रह गया, उस की ह़ालत देख कर उस के नाम निहाद मुख़्लिस दोस्तों ने मश्वरा दिया : "अगर तू ने इस को यमन से न निकाला तो येह तेरे पैरूकारों को भी मुख़ालिफ़ बना देगा।" अस्वद अ़न्सी को येह मश्वरा निहायत भला लगा लिहाज़ा उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को यमन से निकाल दिया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ यमन से मदीनए मुनव्वरा ह़ाज़िर हुवे (उस वक़्त शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दुन्या से पर्दा फ़रमा चुके थे और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा मुक़र्रर हो चुके थे लिहाज़ा) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सब से पहले मस्जिदे नबवी शरीफ़ ह़ाज़िर

---

1 ......رياض النضرة،ج ١،ص ٣٣١۔

हुवे और नमाज़ अदा फ़रमाई । इत्तिफ़ाक़ से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी मस्जिद में मौजूद थे । जैसे ही सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की नज़र आप पर पड़ी तो इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू मुस्लिम ! आप कहां से तशरीफ़ लाए हैं ?" हालांकि सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और दीगर लोगों ने इस वाक़िए को न तो सुना था और न ही देखा था । उन्हों ने अ़र्ज़ की : "यमन से ।" फ़रमाया : "उस शख़्स का क्या हुवा जिसे अस्वद अ़न्सी कज़्ज़ाब ने आग में जलाने की कोशिश की थी ?" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बड़ा तअ़ज्जुब हुवा और अ़र्ज़ की : "उन का नाम तो अ़ब्दुल्लाह बिन सौब है ।" सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम दे कर पूछता हूं क्या वोह आप नहीं हैं ?" अ़र्ज़ किया : "जी हां वोह मैं ही हूं ।" येह सुनते ही अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़ारो क़िताार रोने लगे और रोते हुवे आप को अपने गले से लगाया और फ़र्ते मह़ब्बत से पेशानी पर बोसा दिया, फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सिद्दीक़े अक्बर की बारगाह में ले गए और शफ़्क़त के साथ अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के माबैन बिठा कर इरशाद फ़रमाया : "तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं कि जिस ने मुझे ज़िन्दगी में उस शख़्स की ज़ियारत का शरफ़ दिया जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़लील ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे आग में कूद गया और उस ख़ुश नसीब शख़्स को आग ने कुछ नुक़्सान न पहुंचाया ।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह बिल्कुल वाज़ेह़ करामत है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अगर्चे अस्वद अ़न्सी के दरबार में मौजूद न थे मगर वहां मौजूद सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ जो मुआ़मलात पेश आए आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम और उस की अ़त़ा से मा'लूम हो गए ।

(17).....फ़ारूके आ'ज़म ने दिल की बात जान ली

एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पहाड़ से एक आ'राबी को उतरता देख कर इरशाद फ़रमाया : "इस शख़्स के बेटे का इन्तिक़ाल हो गया है जिस

(1)......كنزالعمال، كتاب الايمان والاسلام، فضائل الايمان متفرقة، الجزء: ١، ج ١، ص ١٢٠، حديث: ١٤٢٧، تاريخ ابن عساكر، ج ٢٧، ص ٢٠١، حلية الاولياء، ابومسلم الخولانى، ج ٢، ص ١٥٠، مرقاة المفاتيح، كتاب المناقب، ج ١٠، ص ٤١٥، تحت الحديث: ٦٠٥٥ـ

के बाइस येह सख़्त रन्जीदा है। और अपने फ़ौत शुदा लख़्ते जिगर के बारे में उस ने चन्द अश्आ़र भी लिखे हैं, अगर वोह चाहेगा तो ज़रूर मैं तुम्हें वोह अश्आ़र सुनवाऊंगा। चुनान्चे, जब वोह नीचे आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से इरशाद फ़रमाया : ऐ आ'राबी ! तुम कहां से आ रहे हो ?" उस ने कहा : "पहाड़ से।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "तुम वहां क्या कर रहे थे ?" उस ने जवाब दिया : "वहां अपनी अमानत सिपुर्दे ख़ाक करने गया था।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "वोह अमानत क्या है ?" कहने लगा : "मेरा फ़ौतशुदा बेटा है जिसे मैं वहां दफ़्न कर के आ रहा हूं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम ने अपने बेटे के लिये अश्आ़र भी मुरत्तब किये हैं ?" उस ने बड़ी हैरानगी से कहा : "अमीरल मोमिनीन ! आप को इन अश्आ़र के बारे में कैसे पता चला ?" मैं ने तो अभी तक किसी से इस का ज़िक्र भी नहीं किया। बहर हाल मैं वोह अश्आ़र आप को सुनाता हूं फिर उस ने अश्आ़र पढ़ना शुरूअ़ किये :

يَا غَائِباً مَا يَئُوْبُ مِنْ سَفَرٍ ... عَاجَلَهُ عِنْدَ مَوْتِهٖ عَلٰى صِغْرِهٖ

तर्जमा : "ऐ जाने वाले ! तेरी सफ़र से वापसी मुमकिन नहीं, तुझे मौत ने बचपन में ही आ लिया।"

يَا قُرَّةَ الْعَيْنِ كُنْتَ لِيْ اُنْساً ... فِيْ طُوْلِ لَيْلِيْ نَعَمْ وَ فِيْ قَصْرِهٖ

तर्जमा : "ऐ मेरी आंखों की ठन्डक ! छोटी और लम्बी रातों में तू मेरी उन्सिय्यत का बाइस था।"

مَا تَقَعُ الْعَيْنُ حِيْنَ مَا وَقَعَتْ ... فِى الْحَيِّ مِنِّى الْاَعْلٰى اَثَرِهٖ

तर्जमा : "जब मैं महल्ले में चलता हूं तो तेरे नन्हे नन्हे क़दमों के निशानात पर आंखें गड़ कर रह जाती हैं।"

شَرِبْتَ كَاْساً اَبُوْكَ شَارِبُهُ ... لَا بُدَّ مِنْهُ لَهُ عَلٰى كِبَرِهٖ

तर्जमा : "तू ने मौत का वोह जाम अभी से पी लिया है जो तेरे बाप ने बुढ़ापे में पीना था।"

بِشُرْبِهَا وَالْاَنَامُ كُلُّهُمْ ... مَنْ كَانَ فِيْ بَدْوِهٖ وَفِيْ حَضْرِهٖ

तर्जमा : "येह जाम तो हर किसी ने पीना है ख़्वाह वोह शहरी हो या देहाती।"

فَالْحَمْدُ لِلّٰهِ لَا شَرِيْكَ لَهُ ... فِيْ حُكْمِهٖ كَانَ ذَا وَفِيْ قَدْرِهٖ

तर्जमा : "तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस का कोई शरीक नहीं, उस के फ़ैसले और तक़्दीर में ऐसा ही मुक़द्दर था।"

قَدَّرَ موتاً عَلَى الْعِبَادِ فَمَا ... يَقْدِرُ خَلْقٌ يَزِيْدُ فِىْ عُمُرِهٖ

तर्जमा : "उसी ने बन्दों के लिये मौत मुक़द्दर फ़रमाई है इसी लिये कोई अपनी उ़म्र बढ़ा नहीं सकता।"

येह दर्द भरे अश्आ़र सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इतना रोए कि आप की दाढ़ी मुबारक तर हो गई और फ़रमाया : "ऐ आ'राबी ! तू ने सच कहा।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जहां इस वाक़िए से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह करामत ज़ाहिर होती है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस शख़्स के साथ पेश आने वाले वाक़िए और उस के अश्आ़र की पहले ही ख़बर दे दी थी वहीं इन ह़िक्मत भरे अश्आ़र से येह भी सबक़ मिलता है कि मौत बरह़क़ है, मौत न तो बच्चे को देखती है और न ही जवान व बूढ़े को। मौत का जो वक़्त मुक़र्रर है वोह उस वक़्त पे आ कर ही रहेगी। कई हंसते खेलते नौजवान अचानक मौत का शिकार हो कर अन्धेरी क़ब्र में चले जाते हैं। हमें भी यूंही एक दिन मरना पड़ेगा और अन्धेरी क़ब्र में उतरना पड़ेगा। यक़ीनन समझदार वोही है जिसे जितना दुन्या में रहना है उतना दुन्या के लिये और जितना आख़िरत में रहना है उतना आख़िरत की तय्यारी में मश्ग़ूल रहे। आख़िरत की तय्यारी का एक बेहतरीन ज़रीआ़ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल भी है, अगर आप अभी तक इस मदनी माह़ोल से वाबस्ता नहीं हुवे तो फ़िलफ़ौर इस मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, दा'वते इस्लामी के इजतिमाआ़त में शिर्कत कीजिये, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये, मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये और अपनी आख़िरत की बेहतरी का सामान कीजिये।

इसी माह़ोल ने अदना को आ'ला कर दिया देखो
उजाला ही उजाला ही उजाला कर दिया देखो
अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 ......مرقاة المفاتيح، كتاب المناقب، مناقب عمر بن خطاب، ج ١٠، ص ٤١٦ـ

(18).....मुस्तक़्बिल में होने वाले वाक़िआत की ख़बरें

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि एक दिन अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ठन्डा सांस लिया जिस से मुझे येह गुमान हुवा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रूह़ क़फ़से उ़न्सरी से परवाज़ कर चुकी है, फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आस्मान की जानिब सर उठाया और एक दर्द भरी आह ली । मैं ने अ़र्ज़ किया : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो दर्द भरी आह ली है, ऐसा लगता है जैसे आप किसी अहम मुआ़मले के बारे में सोच रहे हैं ।" फ़रमाया : "हां वाक़ेई बहुत अहम मुआ़मला है । दर अस्ल मैं इस लिये परेशान हूं कि अपने बा'द किसे मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ करूं ?" हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) हज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह, हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम, हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास और हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के नाम पेश किये । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हर एक के बारे में मुस्तक़्बिल में पेश आने वाली कोई न कोई मुश्किल ज़ाहिर की ।(1)

एक बाग़ी के मुतअ़ल्लिक़ पेशनगोई

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि हमारे क़बीले का एक वफ़्द अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाहे ख़िलाफ़त में आया तो उस जमाअ़त में "इश्तर" नाम का एक शख़्स भी था, दूसरे लोगों की ब निस्बत मेरा उन से क़रीबी तअ़ल्लुक़ था । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उसे बार बार जलाली निगाहों से देखते रहे फिर मुझ से दरयाफ़्त फ़रमाया कि "क्या येह शख़्स तुम्हारे ही क़बीले का है ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "जी हां ।" उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह तआ़ला इस को ग़ारत करे और इस के शर व फ़साद से इस उम्मत को मह़फ़ूज़ रखे ।" अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस दुआ़ के बीस बरस बा'द जब बाग़ियों ने हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद किया तो येही "इश्तर" उस बाग़ी गुरौह का एक बहुत बड़ा लीडर था ।(2)

---

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۴۳۸ ملتقطاً۔

2 ......ازالۃ الخفاء، ج ۴، ص ۱۰۹، ۹۷، الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۳۲۵۔

एक ख़ारिजी के मुतअ़ल्लिक़ पेशनगोई

इसी त़रह़ एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुल्के शाम के कुफ़्फ़ार से जिहाद करने के लिये लश्कर भरती फ़रमा रहे थे। अचानक एक गुरौह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन्तिहाई कराहत के साथ उन से मुंह फेर लिया। फिर दोबारा येह लोग आप के रू बरू आए तो आप ने मुंह फेर कर उन लोगों को इस्लामी फ़ौज में भरती करने से इन्कार फ़रमा दिया। लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस त़र्ज़े अ़मल पर इन्तिहाई ह़ैरान थे लेकिन आख़िर में येह राज़ खुला कि उस गुरौह में "अस्वद तजीबी" भी था जिस ने इस वाक़िए से बीस बरस बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी तल्वार से शहीद किया और उस गुरौह में अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुल्जिम मुरादी भी था जिस ने इस वाक़िए से तक़रीबन छब्बीस बरस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم) को अपनी तल्वार से शहीद कर डाला।[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म को तक़्दीर का ह़ाल मा'लूम हो जाता था

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला करामतों में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रबीआ़ बिन उमय्या बिन ख़लफ़ के ख़ातिमे के बारे में बरसों पहले येह ख़बर दे दी कि वोह काफ़िर हो कर मरेगा और बीस बरस पहले आप ने "इश्तर" के शर व फ़साद से उम्मत के मह़फ़ूज़ रहने की दुआ़ मांगी और "अस्वद तजीबी" से इस बिना पर मुंह फेर लिया और इस्लामी लश्कर में उस को भरती करने से इन्कार कर दिया कि येह दोनों ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़ातिलों में से थे और छब्बीस बरस पहले आप ने अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुल्जिम मुरादी को ब नज़रे कराहत देखा और इस्लामी लश्कर में इस बिना पर भरती नहीं फ़रमाया कि वोह ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم) का क़ातिल होगा। इन मुस्तनद रिवायतों से येह साबित होता है कि औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम और उस की अ़त़ा से लोगों की तक़्दीरों का ह़ाल मा'लूम हो जाता है। इसी लिये ह़ज़रते मौलाना जलालुद्दीन रूमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अपनी मस्नवी शरीफ़ में फ़रमाते हैं :

لوح محفوظ است پیش اولیاء
از چہ محفوظ است محفوظ از خطا

---

1 ......ازالۃ الخفاء، ج۴، ص ۱۰۹۔

या'नी ''लौहे़ मह़फ़ूज़'' औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام के पेशे नज़र रहती है जिस को देख कर वोह इन्सानों की तक़्दीरों में क्या लिखा है उस को जान लेते हैं। ''लौहे़ मह़फ़ूज़'' को इस लिये ''लौहे़ मह़फ़ूज़'' कहते हैं कि वोह ग़लति़यों और ख़त़ाओं से मह़फ़ूज़ है।

(19).....फ़ारूके़ आ'ज़म ने जैसा कहा वैसा ही हुवा

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन सईद رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक शख़्स से पूछा : مَا اسْمُکَ ''या'नी तुम्हारा नाम क्या है?'' वोह कहने लगा : جَمْرَہ ''या'नी अंगारा'' आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फिर पूछा : اِبْنُ مَنْ ''या'नी किस के बेटे हो?'' उस ने जवाब दिया : اِبْنُ شِہَابٍ ''या'नी शो'लों का बेटा'' आप ने फ़रमाया : مِمَّنْ ''या'नी किस ख़ानदान से तअ़ल्लुक़ रखते हो?'' कहने लगा : اَلْحُرْقَۃُ ''या'नी जलन से'' आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : اَیْنَ مَسْکَنُکَ ''या'नी रहते कहां हो?'' उस ने कहा : بِحَرَّۃِ النَّار ''या'नी तपिश में।'' आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : بِاَیِّہَا ''या'नी किस क़बीले से तअ़ल्लुक़ है?'' उस ने कहा : بِذَاتِ لَظٰی ''या'नी शो'ले से'' आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : اَدْرِکْ اَہْلَکَ فَقَدِ احْتَرَقُوْا ''या'नी जल्दी जल्दी घर पहुंचो तुम्हारे घर वाले जल चुके हैं।'' येह सुन कर वोह शख़्स बहुत तेज़ी से अपने घर वालों की त़रफ़ लौटा लेकिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़रमान के मुत़ाबिक़ वोह सब जल चुके थे।''(1)

ख़बर दी आग लग जाने की ह़िरा के साकिन को
करामत सब पे ज़ाहिर हो गई फ़ारूके़ आ'ज़म की
हैं येह सिद्दीक़ फ़ैज़ाने सिद्दीके़ अक्बर से
कि है सिद्दीक़ होना भी करामत फ़ारूके़ आ'ज़म की

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(20).....फ़ारूके़ आ'ज़म अल्लाह के नूर से देखते हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) फ़रमाते हैं : ''मैं ने ख़्वाब में सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़े

1 ......موطا امام مالک، کتاب الاستئذان، باب مایکرہ من الاسماء، ج۲، ص۴۵۴، حدیث: ۱۸۷۱۔

फ़ज्र अदा फ़रमा रहे थे। नमाज़ की अदाएगी के बा'द आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दीवार से टेक लगा कर तशरीफ़ फ़रमा हुवे। इतने में एक बच्ची ने तर खजूरों का थाल ला कर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने पेश किया। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक खजूर उठाई और मुझ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़ली ! तुम भी लो।" मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم !" फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खुद ही अपने दस्ते मुबारक से मुझे एक खजूर खिलाई। फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दूसरी खजूर ली और दोबारा मुझ से वोही इरशाद फ़रमाया कि "ऐ अ़ली ! तुम भी लो।" मैं ने फिर इस्बात में जवाब दिया और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दूसरी खजूर भी अपने दस्ते अक़्दस से मुझे खिला दी। जब मैं बेदार हुवा तो मेरा दिल सुल्तानुल मुतवक्किलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की याद में बहुत बे क़रार था और खजूरों की मिठास मेरे मुंह में ब दस्तूर बाक़ी थी। मैं ने उठ कर वुज़ू किया और मस्जिद में ह़ाज़िर हो कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की इक़्तिदा में बा जमाअ़त नमाज़ अदा की। नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बा'द आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रह़ दीवार से टेक लगा कर बैठ गए। मैं ने सोचा कि रात वाला मुबारक ख़्वाब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को सुनाता हूं, अभी मैं येह सोच ही रहा था कि एक औ़रत आ कर मस्जिद के दरवाज़े पर खड़ी हो गई, उस के साथ खजूरों का एक थाल भी था। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह थाल मंगवा कर मेरे सामने रख दिया और उस में से एक खजूर उठाई और मुझ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़ली ! तुम भी लो।" मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने खुद ही एक खजूर उठा कर मुझे खिलाई। फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दूसरी खजूर ली और दोबारा मुझ से वोही इरशाद फ़रमाया कि "ऐ अ़ली ! तुम भी लो।" मैं ने फिर इस्बात में जवाब दिया और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दूसरी खजूर भी अपने दस्ते मुबारक से मुझे खिला दी। फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बक़िय्या खजूरें दाएं बाएं तशरीफ़ फ़रमा मुख़्तलिफ़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के माबैन तक़्सीम फ़रमा दीं ह़ालांकि मेरा मज़ीद खजूरें खाने का दिल चाह रहा था। अभी येह ख़याल मेरे दिल में ही था कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे मुख़ात़ब कर के इरशाद फ़रमाया : "अगर सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तुम्हें ख़्वाब में दो से ज़ाइद खजूरें अ़त़ा फ़रमाते तो हम भी इस में इज़ाफ़ा कर देते।" मैं आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस बात पर ह़ैरान रह गया और अ़र्ज़ की :

"अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप को मेरे ख़्वाब पर मुत्तलअ़ फ़रमा दिया है?" फ़रमाया : اَلْمُؤْمِنُ يَنْظُرُ بِنُوْرِ اللّٰهِ या'नी मोमिन अल्लाह के नूर से देखता है।" मैं ने अ़र्ज़ की : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बिल्कुल बजा फ़रमाया, मैं ने कल रात इसी त़रह़ ख़्वाब देखा था और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक से खजूर खाने की जैसी मिठास मह़सूस की थी वैसी ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हाथ में भी मह़सूस की।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म की मा'नवी करामात

मा'नवी करामत किसे कहते हैं ?

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن मा'नवी करामत के बारे में इरशाद फ़रमाते हैं : "करामाते मा'नविय्या को सिर्फ़ ख़वास पहचानते हैं वोह (मा'नवी करामात) येह हैं कि (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का पसन्दीदा बन्दा अपने) नफ़्स पर आदाबे शरइय्या की हिफ़ाज़त रखे, उ़म्दा ख़स्लतें ह़ासिल करने और बुरी आ़दतों से बचने की तौफ़ीक़ दिया जाए, तमाम वाजिबात ठीक अदा करने का इल्तिज़ाम रखे।"(2)

मा'क़ूले मा'नवी करामत किसे मिलती है ?

ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی इरशाद फ़रमाते हैं : "मा'नवी करामात की मा'रिफ़त सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा बन्दों ही को ह़ासिल होती है, आ़म लोगों की वहां तक रसाई नहीं, मा'नवी करामत में येह भी है कि आदाबे शरीअ़त उस "वलिय्युल्लाह" में रच बस जाते हैं। बेहतरीन अख़्लाक़ अपनाने की तौफ़ीक़ मिलती है, बुरी आ़दतों से इजतिनाब की सआ़दत नसीब होती है। वोह औक़ाते मुक़र्ररा में वाजिबात अदा करने की पाबन्दी करता है। भलाइयों और नेकियों में जल्दी करता है, उस का सीना बुग़्ज़ो कीना और ह़सद व बद गुमानी से पाक हो जाता है, उस का दिल हर बुरी सिफ़्त से पाक हो कर मुराक़बे की ह़लावत से आरास्ता हो जाता है। और दीगर अश्या के मुआ़मले में हुक़ूक़ुल्लाह की रिआ़यत करता है।" मज़ीद फ़रमाते हैं : "हमारे नज़्दीक येह तमाम करामात "मा'नविया" हैं कि जिन में धोका और फ़रेब को ज़र्रा बराबर दख़्ल नहीं।"(3)

1 ......رياض النضرة، ج ١، ص ٣٣١۔

2 .....फ़तावा रज़विय्या, जि. 21, स. 550।

3 .....جامع کرامات اولیاء، ج ١، ص ٦٢۔

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म की चन्द मा'नवी करामात

अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की तमाम मा'नवी करामात का तफ़्सीली बयान "**फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म**" जिल्द अव्वल के बाब "औसाफ़े फ़ारूके़ आ'ज़म" व जिल्द दुवुम "ख़िलाफ़ते फ़ारूके़ आ'ज़म" के तह़त मुलाह़ज़ा कीजिये। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ चालीसवें मोमिन हैं, इसी निस्बत से आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की चालीस मा'नवी करामात पेशे ख़िदमत हैं :

(1).....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़क़ीक़ी ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले थे।

(2).....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अल्लाह व रसूल की नाराज़ी से हमेशा डरते थे।

(3).....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हर काम में अल्लाह व रसूल के हुक्म को मुक़द्दम रखते थे।

(4).....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सिर्फ़ ह़क़ और सच बात फ़रमाते थे।

(5).....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ग़ीबत, चुग़ली, ह़सद से अपना दामन पाको साफ़ रखते थे।

(6).....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का सीना ग़ुरूर व तकब्बुर, बड़ाई, उ़ज्ब पसन्दी से पाक था।

(7).....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ तजस्सुस और चापलूसी जैसी गन्दी आ़दात से पाक थे।

(8).....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कभी झूट व ग़लत़ बयानी का सहारा न लिया।

(9).....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मक्रो फ़रेब और धोकादेही से इजतिनाब फ़रमाते थे।

(10).....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़ुल्मो तशद्दुद जैसी बुरी सिफ़ात से हमेशा पाको साफ़ रहे।

(11).....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़िक्रुल्लाह की कसरत किया करते थे।

(12).....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ आ़जिज़ी व इन्किसारी को पसन्द फ़रमाते थे।

(13).....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत मुत्तक़ी व परहेज़गार थे।

(14).....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बा कमाल फ़ह्मो फ़िरासत के मालिक थे।

(15).....सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ ख़ौफ़े ख़ुदा में गिर्या व ज़ारी करते थे।

(16).....सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ फ़राइज़ के साथ साथ नवाफ़िल का भी ख़ुसूसी एहतिमाम फ़रमाते थे।

(17).....सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ हुक़ूक़ुल्लाह में किसी शख़्स की मलामत की परवाह नहीं करते थे।

(18).....सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ नामूसे रिसालत के मुआमले में किसी की रिआयत नहीं करते थे।

(19).....सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ अहले बैत से ख़ुसूसी महब्बत रखते थे।

(20).....सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ हुक़ूक़ुल इबाद की पासदारी फ़रमाते थे।

(21).....सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ पाबन्दिये वक़्त का ख़याल रखते और वक़्त के ज़ियाअ़ से बचते थे।

(22).....सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ नेकी की दा'वत देने और बुराइयों से मन्अ़ करने वाले थे।

(23).....सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ छोटे बच्चों पर शफ़्क़त फ़रमाते थे।

(24).....सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ बुज़ुर्गों का अदबो एहतिराम करने वाले थे।

(25).....सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ उमूरे ख़ैर में सब्क़त करने वाले थे।

(26).....सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ मरीज़ों की इयादत करने वाले थे।

(27).....सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ लवाहिक़ीन से ता'ज़िय्यत फ़रमाने वाले थे।

(28).....सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ मुनाफ़िक़ीन पर शिद्दत फ़रमाने वाले थे।

(29).....सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ इबादात का ख़ुसूसी एहतिमाम फ़रमाने वाले थे।

(30).....सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ राहे ख़ुदा में सदक़ा व ख़ैरात करने वाले थे।

(31).....सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ सख़ावत को पसन्द फ़रमाते थे।

(32).....सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ कन्जूसी और बुख़्ल से नफ़रत करते थे।

(33).....सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ हमेशा फ़िक्रे आख़िरत में मश्ग़ूल रहते थे।

(34).....सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ कसरत से तिलावते क़ुरआन फ़रमाते थे।

(35).....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ नमाज़ अदा फ़रमाने वाले थे।

(36).....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी रिआ़या के साथ हुस्ने सुलूक फ़रमाने वाले थे।

(37).....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अल्लाह व रसूल की मा'रिफ़त रखने वाले थे।

(38).....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिदों को आबाद फ़रमाने वाले थे।

(39).....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दीन में तफ़क़्क़ोह रखने वाले थे।

(40).....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हर मुआ़मले में शरीअ़त की पासदारी फ़रमाने वाले थे।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाज़ेह़ रहे कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ज़ाइलो कमालात, मा'नवी करामात, औसाफ़े ह़मीदा पर आज तक जितनी कुतुब तस्नीफ़ की गई हैं उन में सिर्फ़ आप के वोही फ़ज़ाइल व मनाक़िब बयान किये गए हैं जिन का रिवायात में किसी न किसी त़रह़ तज़्किरा आ गया, लेकिन ह़क़ीक़त येह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के औसाफ़ का इह़ात़ा करना बहुत मुश्किल ही नहीं बल्कि ना मुमकिन है। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि एक बार सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन रह़मतुल्लिल आ़लमीन, صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام के साथ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्तगू फ़रमा रहे थे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **يَا جِبْرِيْلُ! اُذْكُرْ لِيْ فَضَائِلَ عُمَرَ وَمَا لَهُ عِنْدَ اللّٰه** ''या'नी ऐ जिब्रील ! मेरे सामने उ़मर के फ़ज़ाइल और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां इन का मक़ामो मर्तबा बयान करो।'' तो सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया :

لَوْ جَلَسْتُ مَعَكَ مِثْلَ مَا جَلَسَ نُوْحٌ فِيْ قَوْمِهٖ مَا بَلَغْتُ فَضَائِلَ عُمَرَ وَلَيَبْكِيَنَّ الْاِسْلَامُ بَعْدَ مَوْتِكَ يَا مُحَمَّدُ عَلٰى عُمَرَ

''या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास बैठ कर इतना अ़र्सा ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ज़ाइल बयान करूं जितना ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपनी क़ौम में (तब्लीग़ के लिये) ठहरे रहे (या'नी 950 साल) तब भी ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ज़ाइल बयान न कर सकूं और या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस्लाम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी पर रोएगा और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते गिरामी के विसाल पर रोएगा।''[1]

1 ......اللآلی المصنوعۃ، ج ۱، ص ۲۷۸۔

हमें फ़ारूके आ'ज़म से प्यार है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुज्जतुल्लाहि अ़लल आ़लमीन, वज़ीरे सय्यिदुल मुर्सलीन, मुहि़ब्बुल मुस्लिमीन, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आ़लीशान मर्तबा अ़ता फ़रमाया और बहुत ज़ियादा इ़ज़्ज़त व शराफ़त और फ़ज़ाइलो करामात से नवाज़ा । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शाने रिफ़्अ़त निशान को तस्लीम करना, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बरह़क़ जान कर राहे हिदायत का रौशन मीनार समझना और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मह़ब्बत व अ़क़ीदत रखना बहुत ज़रूरी है जैसा कि जलीलुल क़द्र सहाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि मह़बूबे रब्बे दो जहान, शाहे कौनो मकान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तवज्जोह निशान है : **مَنْ اَبْغَضَ عُمَرَ فَقَدْ اَبْغَضَنِیْ وَمَنْ اَحَبَّ عُمَرَ فَقَدْ اَحَبَّنِیْ** ''या'नी जिस शख़्स ने उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) से बुग़्ज़ रखा उस ने मुझ से बुग़्ज़ रखा और जिस ने उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की ।''(1)

वोह उ़मर वोह ह़बीबे शहे बह़ रो बर
वोह उ़मर ख़ासए हाशिमी ताजवर
वोह उ़मर खुल गए जिस पे रह़मत के दर
वोह उ़मर जिस के आ'दा पे शैदा सक़र
उस ख़ुदा दोस्त ह़ज़रत पे लाखों सलाम

सह़ाबए किराम की अ़ज़मतो शान

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 193 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''सवानेहे़ करबला'' सफ़ह़ा 31 पर ह़दीसे पाक मन्क़ूल है : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, मह़बूबे रब्बुल इ़बाद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त बुन्याद है : ''मेरे अस्ह़ाब के ह़क़ में ख़ुदा से डरो, ख़ुदा का ख़ौफ़ करो, इन्हें मेरे बा'द निशाना न बनाओ, जिस ने इन्हें मह़बूब रखा मेरी मह़ब्बत की वज्ह से मह़बूब (या'नी प्यारा) रखा और जिस ने इन से बुग़्ज़

(1) ......معجم اوسط، بقیۃ ذکر من اسمہ محمد، ج۵، ص۱۰۲، حدیث:۶۷۲۶ ملتقطاً۔

किया उस ने मुझ से बुग़्ज़ किया, जिस ने इन्हें ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी, जिस ने मुझे ईज़ा दी बेशक उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी, जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी क़रीब है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे गिरिफ़्तार करे।"[1]

हम को अस्हाबे नबी से प्यार है
اِنْ شَآءَالله अपना बेड़ा पार है

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : "मुसलमान को चाहिये कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का निहायत अदब रखे और दिल में उन की अ़क़ीदत व मह़ब्बत को जगह दे। उन की मह़ब्बत हु़ज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की मह़ब्बत है और जो बद नसीब सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की शान में बे अदबी के साथ ज़बान खोले वोह दुश्मने खुदा (عَزَّوَجَلَّ) व रसूल (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) है, मुसलमान ऐसे शख़्स के पास न बैठे।" (सवानेहे़ करबला, स. 31)

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं :

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्ह़ाबे हु़ज़ूर
नज्म हैं और नाव है इ़तरत रसूलुल्लाह की

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ व इ़श्के़ मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पाने, दिल में सह़ाबए किराम व औलियाए उ़ज़्ज़ाम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की मह़ब्बत जगाने, नेक सोह़बतों से फ़ैज़ उठाने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र इख़्तियार कीजिये और कामयाब ज़िन्दगी गुज़ारने और अपनी आख़िरत संवारने के लिये रोज़ाना "**फ़िक्रे मदीना**" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कीजिये और हर मदनी माह के इब्तिदाई 10 दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत कीजिये और दा'वते इस्लामी के हर दिल अ़ज़ीज़ मदनी चैनल के सिलसिले

1 ......ترمذی، کتاب المناقب، باب فی من سبّ اصحاب النبی، ج۵، ص ۴۶۳، حدیث: ۳۸۸۸۔

देखिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप अपने दिल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुक़र्रबीन व सालिहीन की महब्बत को दिन ब दिन बढ़ता हुवा महसूस फ़रमाएंगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या का फ़ैज़ान और इन की नज़्रे शफ़क़त शामिले ह़ाल होगी। तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार पेश की जाती है चुनान्चे,

शराबी आया और मुअज़्ज़िन बन गया

महाराष्ट्र (हिन्द) के इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्तगी से क़ब्ल मैं मरज़े इस्यां (या'नी गुनाहों की बीमारी) में इन्तिहा दर्जे तक मुब्तला हो चुका था। दिन भर मज़दूरी करने के बा'द जो रक़म ह़ासिल होती रात को उसी से مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ शराब ख़रीद कर ख़ूब अय्याशी करता, शोर शराबा करता, गालियां बकता और वालिदैन व अहले मह़ल्ला को ख़ूब तंग करता इस के इलावा मैं परले दरजे का जुवारी व बदतरीन बे नमाज़ी भी था। इसी ग़फ़्लत में मेरी ज़िन्दगी के क़ीमती अय्याम ज़ाएअ़ (ضا۔ءِع) होते रहे, आख़िरे कार मेरे मुक़द्दर का सितारा चमका। हुवा यूं कि ख़ुश क़िस्मती से मेरी मुलाक़ात **दा'वते इस्लामी** के एक ज़िम्मेदार इस्लामी भाई से हुई। उन्हों ने **इनफ़िरादी कोशिश** करते हुवे मुझे मदनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र की तरग़ीब दी, उन के मीठे बोल ने कुछ ऐसा रंग जमाया कि मुझ से इन्कार न हो सका और मैं हाथों हाथ तीन दिन के **मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया।** मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत मिली और दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़्बूआ़ रसाइल भी सुनने को मिले। जिस की येह बरकत ह़ासिल हुई कि मुझ जैसा पक्का बे नमाज़ी, शराबी व जुवारी ताइब हो कर न सिर्फ़ नमाज़ पढ़ने वाला बन गया बल्कि सदाए मदीना लगाने (या'नी फ़ज्र की नमाज़ के लिये मुसलमानों को जगाने) और दूसरों को मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनाने वाला बन गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरी इनफ़िरादी कोशिश से (ता दमे बयान) 30 इस्लामी भाई मदनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बन चुके हैं और इस वक़्त **मैं एक मस्जिद में मुअज़्ज़िन हूं** और मदनी कामों की धूमें मचाने की कोशिश कर रहा हूं।[1]

छोड़ें मै नोशियां मत बकें गालियां
आएं तौबा करें क़ाफ़िले में चलो

1.....नेकी की दा'वत, स. 47।

ऐ शराबी तू आ आ जुवारी तू आ
छूटें बद आ़दतें क़ाफ़िले में चलो
होगा लुत्फ़े ख़ुदा, आओ भाई दुआ़
मिल के सारे करें, क़ाफ़िले में चलो

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! बे नमाज़ी, शराबी, जुवारी, मां बाप का दिल दुखाने और पड़ोसियों को सताने, गाली गलोच करने वाला नौजवान मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी की **"इनफ़िरादी कोशिश"** के नतीजे में मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बना, वहां आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बतों में **सुन्नतों भरे मदनी रसाइल** सुनने और ताइब हो कर सुन्नतों के मदनी फूल लुटाने वाला, सदाए मदीना लगाने वाला, मस्जिद में अज़ानें दे कर नमाज़ों के लिये बुलाने वाला बना और मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बन कर दूसरों को बनाने वाला बन गया। आप भी गुनाहों से बचने और नेक बनने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी माह़ोल की बरकत से आ'ला अख़्लाक़ी औसाफ़ ग़ैर मह़सूस त़ौर पर आप के किरदार का ह़िस्सा बनते चले जाएंगे। अपने शहर में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत और राहे ख़ुदा में सफ़र करने वाले मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये। इन मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की बरकत से अपने साबिक़ा त़र्ज़े ज़िन्दगी पर ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ़ मिलेगा और दिल ह़ुस्ने आ़क़िबत के लिये बेचैन हो जाएगा जिस के नतीजे में इर्तिकाबे गुनाह की कसरत पर नदामत मह़सूस होगी और तौबा की तौफ़ीक़ मिलेगी। आ़शिक़ाने रसूल के **मदनी क़ाफ़िलों** में मुसलसल सफ़र करने के नतीजे में ज़बान पर फ़ोह़्श कलामी और फ़ुज़ूल गोई की जगह दुरूदे पाक जारी हो जाएगा। येह तिलावते क़ुरआन, ह़म्दे इलाही और ना'ते रसूल की आ़दी बन जाएगी, ग़ुसीला पन रुख़्सत हो जाएगा और इस की जगह नर्मी ले लेगी, बे सब्री की आ़दत तर्क कर के साबिरो शाकिर रहना नसीब होगा, बद गुमानी की आ़दते बद निकल जाएगी और ह़ुस्ने ज़न की आ़दत बनेगी, तकब्बुर से जान छूट जाएगी और **एह़तिरामे मुस्लिम** का जज़्बा मिलेगा, दुन्यावी मालो दौलत की लालच से पीछा छूटेगा और नेकियों की ह़िर्स मिलेगी, अल ग़रज़ बार बार राहे ख़ुदा में सफ़र करने से ज़िन्दगी में **मदनी इन्क़िलाब** बरपा हो जाएगा।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तेरहवां बाब

आयाते फ़ज़ाइले फ़ारूके़ आ'ज़म

इस बाब में मुलाह़ज़ा कीजिये............

.....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान में नाज़िल होने वाली दो त़रह़ की आयाते मुबारका

.....वोह आयात जो सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान में नाज़िल हुईं।

.....वोह आयाते मुबारका जो सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुवाफ़िक़त में नाज़िल हुईं।

.....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान में नाज़िल होने वाली बीस आयाते मुबारका

.....फ़क़त़ सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान में नाज़िल कर्दा आयात

.....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म व सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) दोनों की शान में नाज़िल कर्दा आयात

.....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की शान में नाज़िल कर्दा आयात

....

फ़ारूके़ आ'ज़म की शान में नाज़िल होने वाली आयात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान में नाज़िल होने वाली आयात की दो क़िस्में हैं : (1) आयाते फ़ज़ीलत : वोह आयात जो मुत़्लक़न आप की फ़ज़ीलत में नाज़िल हुईं। फिर इस में वोह आयात भी शामिल हैं जो शैख़ैन या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) दोनों के ह़क़ में नाज़िल हुईं या ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के बारे में भी नाज़िल हुईं। (2) आयाते मुवाफ़िक़ात : वोह आयात जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए की मुवाफ़िक़त में नाज़िल हुईं। इन दोनों क़िस्मों की मजमूई आयात की ता'दाद 41 है। अव्वलन उन आयात को बयान किया जाता है जो फ़क़त़ फ़ज़ीलत में नाज़िल हुई हैं। और इन के बा'द उन आयात को बयान किया जाएगा जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुवाफ़िक़त में नाज़िल हुई हैं।

आयत नम्बर (1)....पैरूकार मुसलमान काफ़ी हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर 39 लोग ईमान ला चुके थे। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसलमान हुवे और मुसलमानों की ता'दाद चालीस हो गई तब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई : ﴿یٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَ مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ۠﴾ (پ۱۰، الانفال: ۶۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) **अल्लाह** तुम्हें काफ़ी है और येह जितने मुसलमान तुम्हारे पैरू हुवे।"(1)

आयत नम्बर (2)....रसूलुल्लाह की त़रफ़ रुजूअ़ का हुक्म

एक बार सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ से जुदाई इख़्तियार फ़रमा ली। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में येह मश्हूर हो गया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात को त़लाक़ दे दी है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जब मा'लूम हुवा तो फ़ौरन काशानए नबुव्वत में ह़ाज़िर हुवे और

---

1 ......معجم کبیر، احادیث عبد اللہ ابن عباس، ج ۱۲، ص ۴۷، حدیث: ۱۲۴۷۰۔

जब सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस्तिफ़्सार किया तो मा'लूम हुवा कि येह ख़बर ग़लत़ है। बा'दे अज़ां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ मस्जिदे नबवी आए और ए'लान कर दिया कि ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी अज़्वाजे मुत़हहरात رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ को त़लाक़ नहीं दी। तब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई :

﴿وَ اِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ؕ وَ لَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ وَ اِلٰۤى اُولِی الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِیْنَ یَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ؕ وَ لَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَیْكُمْ وَ رَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّیْطٰنَ اِلَّا قَلِیْلًا ﴿۸۳﴾﴾ (پ۵، النساء: ۸۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और जब उन के पास कोई बात इत़मीनान या डर की आती है उस का चर्चा कर बैठते हैं और अगर उस में रसूल और अपने ज़ी इख़्तियार लोगों की त़रफ़ रुजूअ़ लाते तो ज़रूर उन से इस की ह़क़ीक़त जान लेते येह जो बा'द में काविश करते हैं और अगर तुम पर **अल्लाह** का फ़ज़्ल और उस की रह़मत न होती तो ज़रूर तुम शैत़ान के पीछे लग जाते मगर थोड़े।"[1]

आयत नम्बर (3)....मुर्दे को ज़िन्दगी दे दी

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि येह आयते मुबारका ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه और अबू जह्ल के बारे में नाज़िल हुई :

﴿اَوَ مَنْ كَانَ مَیْتًا فَاَحْیَیْنٰهُ وَ جَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا یَّمْشِیْ بِهٖ فِی النَّاسِ كَمَنْ مَّثَلُهٗ فِی الظُّلُمٰتِ لَیْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ زُیِّنَ لِلْكٰفِرِیْنَ مَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۲﴾﴾ (پ۸، الانعام: ۱۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और क्या वोह कि मुर्दा था तो हम ने उसे ज़िन्दा किया और उस के लिये एक नूर कर दिया जिस से लोगों में चलता है वोह उस जैसा हो जाएगा जो अन्धेरियों में है उन से निकलने वाला नहीं यूं ही काफ़िरों की आंख में उन के आ'माल भले कर दिये गए हैं।"[2]

आयत नम्बर (4)....नेक ईमान वाले मददगार हैं

﴿فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَ جِبْرِیْلُ وَ صَالِحُ الْمُؤْمِنِیْنَ ۚ﴾ (پ۲۸، التحريم: ۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "तो बेशक **अल्लाह** उन का मददगार है और जिब्रील और नेक ईमान वाले।" ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन

1 ......مسلم، كتاب الطلاق، في الايلاء واعتزال النساء، ص ۷۸۴، حديث: ۳۰ ملتقطا۔

2 ......درمنثور، پ۸، الانعام، تحت الآية: ۱۲۲، ج ۳، ص ۳۵۲۔

जुबैर رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं : आयते मुबारका का येह हिस्सा ''صَالِحُ الْمُؤْمِنِیْنَ'' ख़ास तौर पर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ के बारे में नाज़िल हुवा।(1)

आयत नम्बर (5)........रब عَزَّوَجَلَّ क़रीब है

﴿وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌ﴾(پ۲،البقرۃ:۱۸۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''और ऐ मह़बूब जब तुम से मेरे बन्दे मुझे पूछें तो मैं नज़्दीक हूं।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं कि येह आयते मुबारका अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ के बारे में नाज़िल हुई।(2)

आयत नम्बर (6)....सब्र करने और मुआ़फ़ करने की तल्क़ीन

एक काफ़िर ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ के बारे में बेहूदा कलिमा ज़बान से निकाला था तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप رضی اللہ تعالٰی عنہ को इस आयते मुबारका में सब्र करने और मुआ़फ़ करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया :

﴿وَ قُلْ لِّعِبَادِیْ یَقُوْلُوا الَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُؕ اِنَّ الشَّیْطٰنَ یَنْزَغُ بَیْنَهُمْؕ اِنَّ الشَّیْطٰنَ كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِیْنًا﴾(پ۱۵،بنی اسرائیل:۵۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''और मेरे बन्दों से फ़रमाओ वोह बात कहें जो सब से अच्छी हो बेशक शैत़ान उन के आपस में फ़साद डाल देता है बेशक शैत़ान आदमी का खुला दुश्मन है।''(3)

आयत नम्बर (7)....फ़ारूके़ आ'ज़म को दरगुज़र करने का हुक्म

सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं : ''ग़ज़्वए बनी मुस्त़लिक़ में मुसलमान बीरे मुरैसीअ़ पर उतरे येह एक कुंवां था अ़ब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ ने अपने ग़ुलाम को पानी के लिये भेजा वोह देर में आया तो उस से सबब दरयाफ़्त किया उस ने कहा कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ कुंवें के किनारे पर बैठे थे जब तक हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ की मश्कें न भर

1 ......درمنثور، پ۲۸، التحریم، تحت الآیۃ:۴، ج۸، ص۲۲۳۔

2 ......الکشف والبیان، پ۲، البقرۃ، تحت الآیۃ:۱۸۶، ج۲، ص۷۴۔

3 ......خازن، پ۱۵، بنی اسرائیل، تحت الآیۃ:۵۳، ج۳، ص۱۷۷۔

गई उस वक़्त तक उन्हों ने किसी को पानी भरने न दिया येह सुन कर उस बदबख़्त ने उन ह़ज़रात की शान में गुस्ताख़ाना कलिमे कहे। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस की ख़बर हुई तो आप तल्वार ले कर तय्यार हुवे इस पर येह आयत नाज़िल हुई :

﴿ قُلْ لِّلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا یَغْفِرُوْا لِلَّذِیْنَ لَا یَرْجُوْنَ اَیَّامَ اللّٰهِ لِیَجْزِیَ قَوْمًۢا بِمَا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ﴾ (پ۲۵، الجاثیة:۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ईमान वालों से फ़रमाओ दरगुज़रें उन से जो **अल्लाह** के दिनों की उम्मीद नहीं रखते ताकि **अल्लाह** एक क़ौम को उस की कमाई का बदला दे।"

एक क़ौल येह भी है कि क़बीलए बनी ग़फ़्फ़ार के एक शख़्स ने मक्कए मुकर्रमा में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को गाली दी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे पकड़ने का इरादा किया इस पर येह आयत नाज़िल हुई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुआ़फ़ करने का हुक्म दिया गया।(1)

आयत नम्बर (8)........ईमान वालों की सिफ़ात

येह आयते मुबारका भी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में नाज़िल हुई :

﴿ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ اِذَا كَانُوْا مَعَهٗ عَلٰۤى اَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ یَذْهَبُوْا حَتّٰى یَسْتَاْذِنُوْهُؕ اِنَّ الَّذِیْنَ یَسْتَاْذِنُوْنَكَ اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ یُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖۚ فَاِذَا اسْتَاْذَنُوْكَ لِبَعْضِ شَاْنِهِمْ فَاْذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ وَ اسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللّٰهَؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴾ (پ۱۸، النور:۶۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ईमान वाले तो वोही हैं जो **अल्लाह** और उस के रसूल पर यक़ीन लाए और जब रसूल के पास किसी ऐसे काम में ह़ाज़िर हुवे हों जिस के लिये जम्अ़ किये गए हों तो न जाएं जब तक उन से इजाज़त न ले लें वोह जो तुम से इजाज़त मांगते हैं वोही हैं जो **अल्लाह** और उस के रसूल पर ईमान लाते हैं फिर जब वोह तुम से इजाज़त मांगें अपने किसी काम के लिये तो उन में जिसे तुम चाहो इजाज़त दे दो और उन के लिये **अल्लाह** से मुआ़फ़ी मांगो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।"(2)

1.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह, 25, अल जासिया, तह़्तुल आयत : 14, स. 918 الکشف والبیان، پ۲۵، الجاثیہ، تحت الآیۃ:۱۴، ج۸، ص۳۵۹۔

2.....تفسیر مقاتل، پ۱۸، النور، تحت الآیۃ:۶۲، ج۲، ص۴۲۷۔

आयत नम्बर (9)....गुस्सा आए तो मुआफ़ कर देते हैं

﴿وَ الَّذِیْنَ یَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓىٕرَ الْاِثْمِ وَ الْفَوَاحِشَ وَ اِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ یَغْفِرُوْنَ﴾(پ۲۵، الشوری:۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और वोह जो बड़े बड़े गुनाहों और बे ह़याइयों से बचते हैं और जब गुस्सा आए मुआफ़ कर देते हैं।" येह आयते मुबारका भी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़क़ में नाज़िल हुई।[1]

आयत नम्बर (10)....मोमिन व काफ़िर बराबर नहीं

﴿اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا ؕ لَا یَسْتَوٗنَ﴾(پ۲۱، السجدۃ:۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तो क्या जो ईमान वाला है वोह उस जैसा हो जाएगा जो बे हुक्म है येह बराबर नहीं।" अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "इस आयते मुबारका का एक शाने नुज़ूल येह भी है कि येह आयते मुबारका अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़क़ में नाज़िल हुई।" इस आयत में मोमिन से मुराद सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।[2]

आयत नम्बर (11)....शुक्र का इरादा करने वाले

﴿وَ هُوَ الَّذِیْ جَعَلَ الَّیْلَ وَ النَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ یَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا﴾(پ۱۹، الفرقان:۶۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और वोही है जिस ने रात और दिन की बदली रखी उस के लिये जो ध्यान करना चाहे या शुक्र का इरादा करे।" येह आयते मुबारका भी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में नाज़िल हुई।[3]

आयत नम्बर (12)....अल्लाह व रसूल के दुश्मनों से दोस्ती न करना

﴿لَا تَجِدُ قَوْمًا یُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِ یُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ لَوْ كَانُوْۤا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِیْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓىٕكَ كَتَبَ فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْاِیْمَانَ وَ اَیَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ؕ وَ یُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ؕ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ ؕ اُولٰٓىٕكَ حِزْبُ اللّٰهِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ﴾(پ۲۸، المجادلۃ:۲۲)

1 ......تفسیر مقاتل، پ۲۵، الشوری، تحت الآیۃ:۳۷، ج۳، ص۱۸۰۔

2 ......زاد المسیر، پ۲۱، السجدۃ، تحت الآیۃ:۱۸، ج۵، ص۱۱۷۔

3 ......تفسیر ابن عبد السلام، پ۱۹، الفرقان، تحت الآیۃ:۶۲، ج۴، ص۲۲۰۔

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तुम न पाओगे उन लोगों को जो यक़ीन रखते हैं **अल्लाह** और पिछले दिन पर कि दोस्ती करें उन से जिन्हों ने **अल्लाह** और उस के रसूल से मुख़ालफ़त की अगर्चे वोह उन के बाप या बेटे या भाई या कुम्बे वाले हों येह हैं जिन के दिलों में **अल्लाह** ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी त़रफ़ की रूह़ से उन की मदद की और उन्हें बाग़ों में ले जाएगा जिन के नीचे नहरें बहें उन में हमेशा रहें **अल्लाह** उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** से राज़ी येह **अल्लाह** की जमाअ़त है सुनता है **अल्लाह** ही की जमाअ़त कामयाब है।"

इस आयते मुबारका में लफ़्ज़ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में नाज़िल हुवा है जब जंगे बद्र में उन्हों ने अपने रिश्तेदार मामूं आ़स बिन हिशाम बिन मुग़ीरा को क़त्ल किया।[1]

आयत नम्बर (13)....बारगाहे रिसालत के मुशीर

﴿فَاعْفُ عَنْهُمْ وَ اسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَ شَاوِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ ۚ فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ۝۱۵۹﴾ (پ۴، آل عمران:۱۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तो तुम उन्हें मुआ़फ़ फ़रमाओ और उन की शफ़ाअ़त करो और कामों में उन से मश्वरा लो और जो किसी बात का इरादा पक्का कर लो तो **अल्लाह** पर भरोसा करो बेशक तवक्कुल वाले **अल्लाह** को प्यारे हैं।"

सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस आयत की तफ़्सीर में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का क़ौल नक़्ल फ़रमाते हैं कि येह आयते मुबारका ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के बारे में नाज़िल हुई। ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन ग़नम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम दोनों किसी मश्वरे पर मुत्तफ़िक़ हो जाओ तो मैं तुम्हारी मुख़ालफ़त नहीं करूंगा।"[2]

आयत नम्बर (14)....आवाज़ पस्त करने वाले

﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَ لَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ﴾ الآية (پ۲۶، الحجرات:۲)

1 ......خازن، پ۲۸، المجادلة، تحت الآية:۲۲، ج۴، ص۲۴۳۔

2 ......درمنثور، پ۴، آل عمران، تحت الآية:۱۵۹، ج۲، ص۳۵۹۔

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''ऐ ईमान वालो अपनी आवाजें ऊंची न करो उस गै़ब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से और उन के हुज़ूर बात चिल्ला कर न कहो।''

जब मज़्कूरए बाला आयाते मुबारका नाज़िल हुई तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) और बा'ज़ सह़ाबा ने बहुत एह़तियात़ लाज़िम कर ली और ख़िदमते अक़्दस में बहुत ही पस्त आवाज़ से अ़र्ज़ो मा'रूज़ करते फिर इन ह़ज़रात के ह़क़ में येह आयते मुबारका नाज़िल हुई :

﴿اِنَّ الَّذِیْنَ یَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰىؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ عَظِیْمٌ۝۳﴾ (پ۲۶، الحجرات:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''बेशक वोह जो अपनी आवाजें पस्त करते हैं रसूलुल्लाह के पास वोह हैं जिन का दिल **अल्लाह** ने परहेज़गारी के लिये परख लिया है उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है।''(1)

आयत नम्बर (15)....औसाफ़े हमीदा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि येह आयते मुबारका शैख़ैने करीमैन या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के ह़क़ में नाज़िल हुई :

﴿اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ اٰنَآءَ الَّیْلِ سَاجِدًا وَّ قَآىٕمًا یَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَ یَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهٖؕ قُلْ هَلْ یَسْتَوِی الَّذِیْنَ یَعْلَمُوْنَ وَ الَّذِیْنَ لَا یَعْلَمُوْنَؕ اِنَّمَا یَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ۝۹﴾ (پ۲۳، الزمر:۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''क्या वोह जिसे फ़रमां बरदारी में रात की घड़ियां गुज़ारें सुजूद में और क़ियाम में आख़िरत से डरता और अपने रब की रह़मत की आस लगाए क्या वोह ना फ़रमानों जैसा हो जाएगा तुम फ़रमाओ क्या बराबर हैं जानने वाले और अन्जान नसीह़त तो वोही मानते हैं जो अ़क़्ल वाले हैं।''(2)

आयत नम्बर (16)........ईमान वालों का अज्र

﴿اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِیْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا۝۳۰﴾ (پ۱۵، الکہف:۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''बेशक जो ईमान लाए और नेक काम किये हम उन के नेग (अज्र) ज़ाएअ़ नहीं करते जिन के काम अच्छे हों।''

---

1 ......البحر المحیط، پ۲۶، الحجرات، تحت الآیۃ:۲، ۳، ج۸، ص۱۰۶۔

2 ......خازن، پ۲۳، الزمر، تحت الآیۃ:۹، ج۴، ص۵۰۔

येह आयते मुबारका हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, सय्यिदुना उमर फ़ारूक़, सय्यिदुना उस्माने ग़नी और सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) के बारे में नाज़िल हुई, इन चारों की मौजूदगी में एक आ'राबी ने सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह आयत किस के बारे में नाज़िल हुई है ?'' तो इरशाद फ़रमाया : ''अपनी क़ौम को बता दो कि येह आयते मुबारका इन चारों के बारे में नाज़िल हुई है।''(1)

आयत नम्बर (17)....तवाज़ोअ़ करने वाले

येह आयते मुबारका भी हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ व सय्यिदुना उस्माने ग़नी व सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) के बारे में नाज़िल हुई :

﴿وَ لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّیَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِیْمَةِ الْاَنْعَامِؕ
فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗۤ اَسْلِمُوْاؕ وَ بَشِّرِ الْمُخْبِتِیْنَۙ﴿۳۴﴾﴾ (پ۱۷، الحج: ۳۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''और हर उम्मत के लिये हम ने एक कुरबानी मुक़र्रर फ़रमाई कि **अल्लाह** का नाम लें उस के दिये हुवे बे ज़बान चोपायों पर तो तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है तो उसी के हुज़ूर गर्दन रखो और ऐ महबूब ख़ुशी सुना दो उन तवाज़ोअ़ वालों को।''(2)

आयत नम्बर (18)....अल्लाह की त़रफ़ से कुफ़्फ़ार की तक्ज़ीब

﴿وَ قَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا سَبِیْلَنَا وَ لْنَحْمِلْ خَطٰیٰكُمْؕ وَ مَا هُمْ بِحٰمِلِیْنَ
مِنْ خَطٰیٰهُمْ مِّنْ شَیْءٍؕ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ﴿۱۲﴾﴾ (پ۲۰، العنکبوت: ۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''और काफ़िर मुसलमानों से बोले हमारी राह पर चलो और हम तुम्हारे गुनाह उठा लेंगे ह़ालांकि वोह उन के गुनाहों में से कुछ न उठाएंगे बेशक वोह झूटे हैं।''

इस आयते मुबारका में ''لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوا'' या'नी मोमिनीन से मुराद अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अरत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं। कुफ़्फ़ारे मक्का ने मोमिनीन से कहा था कि तुम हमारा और हमारे बाप दादा का दीन इख़्तियार करो तुम्हें **अल्लाह** की त़रफ़ से जो मुसीबत पहुंचेगी उस के हम कफ़ील हैं और तुम्हारे गुनाह हमारी गर्दन पर। या'नी अगर हमारे त़रीक़े पर रहने से

---

1 ......المحرر الوجیز، پ۱۵، الکھف، تحت الآیۃ: ۳۰، ج۳، ص۵۱۵۔

2 ......المحرر الوجیز، پ۱۷، الحج، تحت الآیۃ: ۳۴، ج۴، ص۱۲۲۔

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम को पकड़ा और अ़ज़ाब किया तो तुम्हारा अ़ज़ाब हम अपने ऊपर ले लेंगे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की तक्ज़ीब फ़रमाई।(1)

आयत नम्बर (19)....रह़मते इलाही के सज़ावार

﴿وَ اِذَا جَآءَكَ الَّذِیْنَ یُؤْمِنُوْنَ بِاٰیٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَیْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَۙ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًۢا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَ اَصْلَحَ فَاَنَّهٗ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ﴾ (پ۷، الانعام: ۵۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और जब तुम्हारे हु़ज़ूर वोह ह़ाज़िर हों जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं तो उन से फ़रमाओ तुम पर सलाम तुम्हारे रब ने अपने ज़िम्मए करम पर रह़मत लाज़िम कर ली है कि तुम में जो कोई नादानी से कुछ बुराई कर बैठे फिर इस के बा'द तौबा करे और संवर जाए तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि येह आयते मुबारका अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم), ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल, ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अबी उ़बैदा, ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊ़न, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर, ह़ज़रते सय्यिदुना अरक़म बिन अबी अरक़म, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सलमह बिन अ़ब्दुल असद رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के बारे में नाज़िल हुई।(2)

आयत नम्बर (20)....आपस में भाई भाई

﴿وَ نَزَعْنَا مَا فِیْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِیْنَ﴾ (پ۱۴، الحجر: ۴۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और हम ने उन के सीनों में जो कुछ कीने थे सब खींच लिये आपस में भाई हैं तख़्तों पर रूबरू बैठे।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन अ़ली बिन हु़सैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि "येह आयते मुबारका बनू हाशिम, बनू तमीम, बनू अ़दी, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते

1 ......تفسیر مقاتل، پ ۲۰، العنکبوت، تحت الآیۃ: ۱۲، ج ۲، ص ۵۱۳۔

2 ......خازن، پ ۷، الانعام، تحت الآیۃ: ۵۴، ج ۲، ص ۲۰۔

सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ के बारे में नाज़िल हुई ।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू जा'फ़र बाक़िर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पूछा गया कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन हु़सैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से जो येह बात मन्क़ूल है कि येह आयते मुबारका ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) के बारे में नाज़िल हुई दुरुस्त है ? उन्हों ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह आयत इन्हीं के बारे में नाज़िल हुई है अगर इन के बारे में नाज़िल नहीं हुई तो फिर किस के बारे में नाज़िल हुई है ?" पूछा गया कि इस में तो इन के कीने का ज़िक्र है ह़ालांकि इन के दिलों में तो एक दूसरे के लिये कोई कीना नहीं है ? फ़रमाया : "उस कीने से मुराद ज़मानए जाहिलिय्यत वाला कीना है जो इन के क़बाइल बनू अ़दी, बनू तमीम, बनू हाशिम में पाया जाता था जब येह तमाम लोग इस्लाम ले आए, तो कीना ख़त्म हो गया और आपस में शीरो शकर हो गए, नीज़ इन के माबैन इस क़दर उल्फ़त व मह़ब्बत पैदा हो गई कि एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पहलू में दर्द हुवा तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) अपने हाथ को गर्म कर के आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पहलू को सिकाई करने लगे । रब तआ़ला को येह अदा इतनी पसन्द आई कि इस पर येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई ।"(1)

इ़श्क़ो मह़ब्बत के मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जहां इस आयते मुबारका से शैख़ैने करीमैन या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शाने मुबारका ज़ाहिर होती है वहीं येह बात भी रोजे़ रौशन की त़रह़ वाजे़ह़ हो जाती है कि ख़ुलफ़ाए राशिदीन رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के दरमियान बे पनाह उल्फ़त व मह़ब्बत थी । बल्कि ऐसी मह़ब्बत थी कि ख़ुद कु़रआने अ़ज़ीम जैसी मुक़द्दस किताब में इस को बयान फ़रमाया गया । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज भी सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के उ़श्शाक़ उन की बाहमी उल्फ़त व मह़ब्बत को निहायत ही अ़क़ीदत व मह़ब्बत से बयान करते हैं और क़ियामत तक करते रहेंगे । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

सब सह़ाबा से हमें तो प्यार है .... اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपना बेड़ा पार है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

(1) ......درمنثور، پ ۱۴، الحجر، تحت الآیۃ: ۴۷، ج ۵، ص ۸۴۔۸۵۔

चौदहवां बाब

मुवाफ़िक़ाते फ़ारूक़े आ'ज़म

इस बाब में मुलाहज़ा कीजिये............

.....कुरआने पाक में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए के मुवाफ़िक़ अह़काम

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुवाफ़िक़ात की चार अक़्साम की तफ़्सील

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की किताबुल्लाह से मुवाफ़िक़त

.....आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुवाफ़िक़त में नाज़िल होने वाली आयाते मुबारका

.....मक़ामे इब्राहीम से मुतअ़ल्लिक़ अहम मा'लूमात

..... **شعائر الله** की ता'ज़ीम दिलों का तक़्वा है।

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रसूलुल्लाह से मुवाफ़िक़त

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मुवाफ़िक़त

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुवाफ़िक़ात से मुतअ़ल्लिक़ दीगर वाक़िआत

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दीगर आस्मानी किताबों से मुवाफ़िक़त

मुवाफ़िक़ाते फ़ारूक़े आ'ज़म

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर्चे किसी शख़्स की बात का फ़ी नफ़्सिही (ब ज़ाते ख़ुद) दुरुस्त होना एक अच्छा वस्फ़ है लेकिन उस की बात को अगर किसी और मुसल्लमा शख़्सिय्यत की ताईद व तौसीक़ हासिल हो जाए तो येह इस से भी बढ़ कर कमाल है क्यूंकि येह ताईद व तौसीक़ उस के लिये सनद का दरजा रखती है। क़ुरबान जाइये अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शानो अ़ज़मत पर ! यूं तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बे शुमार फ़ज़ाइलो कमालात हैं मगर आप की "हिक्मत व दानाई और पुख़्ता फ़ह्मो फ़िरासत" जैसी इम्तियाज़ी ख़ुसूसिय्यत के सबब आप को बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में वोह बुलन्द मक़ाम ह़ासिल था कि आप के अक़्वाल, फ़ैसले और मश्वरों की मुवाफ़िक़त किताबुल्लाह और ताईद रसूलुल्लाह से हो जाती और यक़ीनन जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ताईद ह़ासिल हो जाए येह उस की सआ़दतों की मे'राज है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुवाफ़िक़त के तो ख़ुद सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी तज़्किरे करते रहते थे। चुनान्चे,

क़ुरआन में आप की राए के मुवाफ़िक़ अह़काम

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) फ़रमाते हैं : اِنَّ فِی الْقُرْآنِ لَقُرْآناً مِنْ رَأْیِ عُمَرَ "या'नी यक़ीनन क़ुरआने पाक में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए के मुवाफ़िक़ अह़काम मौजूद हैं।"(1)

आप की राए के मुवाफ़िक़ नुज़ूले क़ुरआन

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं : كَانَ عُمَرُ یَرَی الرَّأْیَ فَیَنْزِلُ بِہِ الْقُرْآنُ "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब कोई राए पेश फ़रमाते तो उस के मुत़ाबिक़ क़ुरआने पाक नाज़िल हो जाता।"(2)

---

1 ......سیرۃ حلبیہ، باب الھجرۃ الاولی الی ارض الحبشۃ۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۴۷۴۔
تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۹۵، الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۲۹۸۔

2 ......تاریخ الخلفاء، ص ۹۶، الصواعق المحرقۃ، ص ۹۹۔

क़ुरआने करीम आप की राए के मुताबिक़ नाज़िल होता

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि : "जब किसी मुआ़मले में मुख़्तलिफ़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से राए त़लब की जाती और साथ ही मेरे वालिदे गिरामी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी अपनी राए पेश करते तो क़ुरआने करीम आप की राए के मुताबिक़ नाज़िल होता।"(1)

एक अहम वज़ाहत

सीरते फ़ारूक़े आ'ज़म का गहरी नज़र से मुत़ालआ़ किया जाए तो येह बात सामने आती है कि आप की राए (या'नी आप के क़ौल) की मुवाफ़िक़ात के साथ साथ बसा औक़ात आप के फ़े'ल को भी मुवाफ़िक़त ह़ासिल हो जाती थी कि आप से कोई फ़े'ल सादिर हुवा और उस की किताबुल्लाह से या दीगर ज़राएअ़ से मुवाफ़िक़त हो गई। लिहाज़ा इस बाब में आप की क़ौली, फ़े'ली वग़ैरा तमाम मुवाफ़िक़ात को ज़िक्र किया गया है। नीज़ इस बाब "मुवाफ़िक़ाते फ़ारूक़े आ'ज़म" को चार ह़िस्सों में तक़्सीम किया गया है :

(1) किताबुल्लाह की मुवाफ़िक़त
(2) रसूलुल्लाह की मुवाफ़िक़त
(3) सह़ाबए किराम की मुवाफ़िक़त
(4) दीगर मुवाफ़िक़ात

किताबुल्लाह से मुवाफ़िक़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़ुरआने पाक की कमो बेश बीस आयाते मुबारका ऐसी हैं जो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़ौल या फ़े'ल की मुवाफ़िक़त में नाज़िल हुईं।

(1).....पहली आयते मुबारका : मक़ामे इब्राहीम को मुसल्ला बनाओ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया कि तीन बातों में रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मेरी मुवाफ़िक़त हुई (इन में से एक येह भी है कि) मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया : لَوِ اتَّخَذْنَا مِنْ مَّقَامِ اِبْرَاهِيْمَ مُصَلًّى "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगर हम मक़ामे इब्राहीम को मुसल्ला (या'नी नमाज़ पढ़ने की जगह) बनाएं (तो कैसा रहेगा ?)" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येही आयते

1 ......فضائل الصحابة، ومن فضائل عمر بن الخطاب، ج ١، ص ٥١٤، حديث: ٤٨٨، تاريخ الخلفاء، ص ٩٦۔

मुबारका मेरी ताईद में नाज़िल फ़रमा कर मक़ामे इब्राहीम को मुसल्ला बनाने का हुक्म इरशाद फ़रमा दिया : ﴿وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى﴾ (پ۱،البقرۃ:۱۲۵) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और इब्राहीम के खड़े होने की जगह को नमाज़ का मक़ाम बनाओ ।"(1)

"मक़ामे इब्राहीम" से मुतअ़ल्लिक़ 6 मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की तमाम मुवाफ़िक़ात में मक़ामे इब्राहीम को मुसल्ला या'नी जाए नमाज़ बनाने वाली मुवाफ़िक़त बहुत ही मा'रूफ़ है, लेकिन कई लोगों को येह मा'लूम ही नहीं होता कि येह मक़ामे इब्राहीम है क्या ? लिहाज़ा क़ारिईन के फ़ाइदे के लिये मक़ामे इब्राहीम से मुतअ़ल्लिक़ 6 मदनी फूल पेशे ख़िदमत हैं :

(1).....मक़ामे इब्राहीम वोह मुबारक पथ्थर है जिस पर चढ़ कर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने का'बतुल्लाह शरीफ़ की दीवारें बुलन्द फ़रमाई थीं, आप عَلَیْہِ السَّلَام ने जैसे ही इस पर अपने क़दम रखे तो ख़ास वोह ह़िस्सा रब عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरते कामिला से मिट्टी की त़रह़ नर्म हो गया और क़दमैने मुबारका का नक़्श इस में सब्त हो गया जब कि बक़िय्या ह़िस्सा वैसा ही रहा । येह आप عَلَیْہِ السَّلَام का बहुत ही अ़ज़ीम मो'जिज़ा था । क़ुरआने पाक में दो जगह पारह 4 सूरए आले इमरान आयत नम्बर 97 और पारह 1 सूरए बक़रह आयत नम्बर 125 में मक़ामे इब्राहीम का ज़िक्र है ।(2)

(2).....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : "रुक्न (ह़जरे अस्वद) और मक़ामे इब्राहीम जन्नत के याक़ूतों में से दो याक़ूत हैं, अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन दोनों का नूर न मिटा देता तो येह मशरिक़ो मग़रिब की हर चीज़ को रौशन कर देते ।"(3)

(3).....सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "त़वाफ़ के बा'द मक़ामे इब्राहीम में आ कर आयए करीमा : ﴿وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى﴾ पढ़ कर दो रक्अ़त त़वाफ़ पढ़े और येह नमाज़ वाजिब है, (अलबत्ता येह नमाज़ मक़ामे इब्राहीम पर

1 ......بخاری، کتاب الصلوۃ، باب ماجاء فی القبلۃ۔۔۔الخ، ج۱، ص۱۵۸، حدیث:۴۰۲ملتقطا۔
درمنثور، پ۱، البقرۃ، تحت الآیۃ:۱۲۵، ج۱، ص۲۹۰۔

2 ......تفسیر کبیر، پ۳، آل عمران، تحت الآیۃ:۹۶، ج۳، ص۲۹۷۔

3 ......ترمذی، کتاب الحج، باب ماجاء فی فضل الحجر والاسود والرکن، ج۲، ص۲۴۸، حدیث:۸۷۹۔

पढ़ना सुन्नते मुबारका है) पहली (रक्अ़त) में قُلْ या दूसरी में قُلْ هُوَ اللّٰه पढ़े बशर्ते कि वक़्ते कराहत मसलन तुलूए सुब्ह से बुलन्दिये आफ़्ताब तक या दोपहर या नमाज़े अ़स्र के बा'द ग़ुरूब तक न हो, वरना वक़्ते कराहत निकल जाने पर पढ़े। ह़दीस में है : "जो मक़ामे इब्राहीम के पीछे दो रक्अ़तें पढ़े, उस के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे और क़ियामत के दिन अम्न वालों में महशूर होगा (या'नी उठाया जाएगा)।"(1)

(4).....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के दौर में येह पथ्थर का'बतुल्लाह शरीफ़ के सामने रखा हुवा था और आप عَلَیْہِ السَّلَام इसी पथ्थर की त़रफ़ रुख़ कर के नमाज़ अदा फ़रमाते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मक़ामे इब्राहीम में पड़े हुवे निशान (पथ्थर) के बारे में सुवाल किया तो उन्हों ने फ़रमाया : "जब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام को ए'लाने ह़ज का हुक्म दिया गया तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने इसी पथ्थर पर खड़े हो कर ए'लाने ह़ज फ़रमाया। ए'लान से फ़ारिग़ हुवे तो हुक्म दिया कि इस पथ्थर को ले जा कर का'बतुल्लाह शरीफ़ के दरवाज़े के सामने रख दिया जाए। चुनान्चे, इसे वहीं रख दिया गया और आप عَلَیْہِ السَّلَام इसी पथ्थर की त़रफ़ रुख़ कर के नमाज़ पढ़ा करते थे।"(2)

(5).....मक़ामे इब्राहीम ख़ानए का'बा से तक़रीबन सवा 13 मीटर मशरिक़ की जानिब क़ाइम है। इस पथ्थर में एक क़दम मुबारक के निशान की गहराई दस सेन्टी मीटर और दूसरे की नव सेन्टी मीटर है, अलबत्ता इन पर अब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मुबारक उंगलियों के निशानात नहीं हैं, इस की वज्ह येह है कि इब्तिदाअन येह पथ्थर किसी फ्रेम या बॉक्स वग़ैरा में मह़फ़ूज़ नहीं था और उ़श्शाक़ इस से बरकात लेने के लिये इस को छूते और बोसे लेते थे इसी सबब से उंगलियों के निशानात बाक़ी न रहे। इस मुबारक पथ्थर में हर क़दम की लम्बाई बाईस सेन्टी मीटर और चौड़ाई ग्यारह सेन्टी मीटर है। इस के मुतअ़ल्लिक़ ह़ैरत अंगेज़ बात येह है कि ज़मानए जाहिलिय्यत में मुशरिकीने अ़रब पथ्थरों की पूजा किया करते थे लेकिन इस मुबारक पथ्थर को शरफ़ ह़ासिल है कि येह हर क़िस्म की पूजा और परस्तिश से हर ज़माने में मह़फ़ूज़ रहा और بِحَمْدِاللّٰہِ تَعَالٰی किसी ने भी इस की पूजा नहीं की। 1967 से पहले मक़ामे इब्राहीम की ह़िफ़ाज़त के ख़ातिर अव्वलन एक ह़िफ़ाज़ती ख़ौल

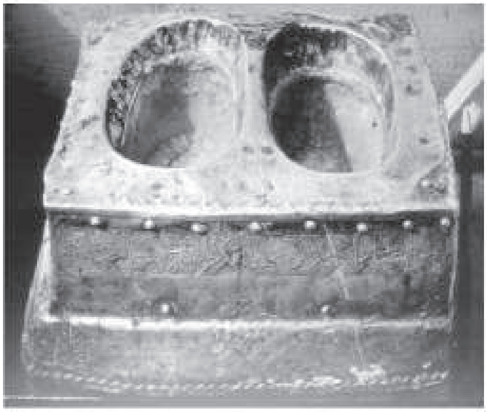
1.....बहारे शरीअ़त, जि. 1 ह़िस्सा 6, स. 1102

2.....درمنثور، پ ۱، البقرۃ، تحت الآیۃ ۱۲۵، ج ۱، ص ۲۹۲ ملتقطاً۔

मक़ामे इब्राहीम की मुख़्तलिफ़ तसावीर



मक़ामे इब्राहीम का अन्दरूनी मन्ज़र



मक़ामे इब्राहीम का बैरूनी मन्ज़र



मक़ामे इब्राहीम सोने के बोक्स में (जदीद)



मक़ामे इब्राहीम लकड़ी के शेड में (क़दीम)

बनाया गया। पहले इस पथ्थर को एक चांदी के सन्दूक़ में बन्द कर के इस के ऊपर एक गुम्बद नुमा कमरा बना दिया गया जिस का रक़्बा अठ्ठारह मर्बअ़ मीटर था। बा'दे अज़ां त़ाइफ़ीन की राह में रुकावट के सबब उस इमारत को ख़त्म कर के शीशे का एक ख़ौल तय्यार किया गया और मक़ामे इब्राहीम को एक शानदार क्रिस्टल में नस्ब कर के इस के गिर्द लोहे की मज़बूत़ जाली लगा दी गई नीज़ इस को संगे मर मर के एक बड़े पथ्थर में नस्ब कर दिया गया। इस ख़ौल के ढांचे को पीतल से बना कर अन्दरूनी जाली पर सोने का पानी चढ़ाया गया है और बैरूनी जानिब दस मिली मीटर एक ऐसा शफ़्फ़ाफ़ शीशा नस्ब कर दिया गया है जो "Bullet Proof" होने के साथ साथ "Heat Proof" भी है या'नी न तो इस पर गोली असर कर सकती है और न ही सूरज की शुआएं वग़ैरा। इस शीशे में से ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मुबारक क़दमैन की वाज़ेह़ तौर पर ज़ियारत की जा सकती है।

شعائر اللّٰہ की ता'ज़ीम दिलों का तक़्वा है

(6).....**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के क़दमैन मुबारका की बरकत से मक़ामे इब्राहीम شعائر اللّٰہ बन गया और इस की ता'ज़ीम ऐसी लाज़िम हो गई कि त़वाफ़ के नफ़्ल इस के सामने खड़े हो कर पढ़ना क़रार पाए। मा'लूम हुवा कि जिस जगह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़द्दस बन्दों का कोई निशान मौजूद हो वोह जगह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक बहुत ज़ियादा इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत वाली है और उस जगह ख़ुदा की इ़बादत ख़ुदा के नज़दीक बहुत ही बेहतर और मह़बूब तर है। जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारों के क़दम पड़ जाने से सफ़ा व मरवा और मक़ामे इब्राहीम شعائر اللّٰہ बन गए और क़ाबिले ता'ज़ीम हो गए तो अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام के उन मज़ाराते मुक़द्दसा की अ़ज़मत क्या होगी जिन में उन ह़ज़रात के नुफ़ूसे क़ुदसिय्या ब ज़ाते ख़ुद क़ियाम फ़रमा हैं। नीज़ सय्यिदुल अम्बिया वल औलिया, ह़ज़रते मह़बूबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर की अ़ज़मत व बुज़ुर्गी और इस के तक़द्दुस व शरफ़ का क्या आ़लम होगा कि जहां ह़बीबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सिर्फ़ निशान ही नहीं बल्कि ख़ुदा के मह़बूबे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पूरा जिस्मे अन्वर मौजूद है और उस ज़मीन का ज़र्रा ज़र्रा अन्वारे नबुव्वत की तजल्लियों से रश्के आफ़्ताब व ग़ैरते माहताब बना हुवा है। यक़ीनन येह شعائر اللّٰہ हैं और इन की ता'ज़ीम लाज़िम है। रब तआ़ला क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَیْهِمْ بُنْیَانًا ؕ رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ ؕ قَالَ الَّذِیْنَ غَلَبُوْا عَلٰۤی اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَیْهِمْ مَّسْجِدًا ﴿۲۱﴾﴾ (پ ۱۵، الکھف: ۲۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तो बोले इन के ग़ार पर कोई इमारत बनाओ इन का रब इन्हें ख़ूब जानता है वोह बोले जो इस काम में ग़ालिब रहे थे क़सम है कि हम तो इन पर मस्जिद बनाएंगे।"

अस्हाबे कह्फ़ के ग़ार पर जो इन की आरामगाह है गुज़श्ता मुसलमानों ने मस्जिद बनाई और रब ने इन के काम पर नाराज़ी का इज़्हार न फ़रमाया, पता चला कि वोह जगह شعائر الله बन गई जिस की ता'ज़ीम ज़रूरी हो गई।

फ़रमाता है : ﴿وَ الْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآىِٕرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِیْهَا خَیْرٌ ﴾(پ۱۷، الحج:۳۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और कुरबानी के डीलदार जानवर ऊंट और गाए हम ने तुम्हारे लिये अल्लाह की निशानियों से किये तुम्हारे लिये उन में भलाई है।"

जो जानवर कुरबानी के लिये या का'बए मुअ़ज़्ज़मा के लिये नामज़द हो जाए वोह شعائر الله है इस का एह्तिराम चाहिये जैसे कुरआन का जुज़दान और का'बे का ग़िलाफ़ और ज़मज़म का पानी और मक्का शरीफ़ की ज़मीन। क्यूं ? इस लिये कि इन को रब या रब के प्यारों से निस्बत है इन सब की ता'ज़ीम ज़रूरी है।

फ़रमाता है : ﴿لَاۤ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِۙ(۱) وَ اَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِۙ(۲)﴾(پ۳۰، البلد: ۱تا۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "मुझे इस शहर की क़सम कि ऐ मह़बूब तुम इस शहर में तशरीफ़ फ़रमा हो।"

फ़रमाता है : ﴿وَ التِّیْنِ وَ الزَّیْتُوْنِۙ(۱) وَ طُوْرِ سِیْنِیْنَۙ(۲) وَ هٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِیْنِۙ(۳)﴾(پ۳۰، التین: ۱تا۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "अन्जीर की क़सम और ज़ैतून और तूरे सीना और इस अमान वाले शहर की।"

तूरे सीना पहाड़ और मक्कए मुअ़ज़्ज़मा इस लिये अ़ज़मत वाले बन गए कि तूर को ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से और मक्कए मुअ़ज़्ज़मा को ह़बीबुल्लाह हुज़ूर सय्यिदुल अनाम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत हो गई। ख़ुलासा येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारों की चीज़ें شعائر الله हैं जैसे कुरआन शरीफ़, ख़ानए का'बा, सफ़ा व मरवा पहाड़, मक्कए मुअ़ज़्ज़मा, बैतुल मुक़द्दस, तूरे सीना, मक़ाबिरे औलिया उल्लाह व अम्बियाए किराम, आबे ज़मज़म वग़ैरा। और شعائر الله की ता'ज़ीम व तौक़ीर कुरआन की रू से तक़्वा है। लिहाज़ा जो कोई नमाज़ी और रोज़ादार तो हो मगर उस के दिल में तबर्रुकात और شعائر الله की ता'ज़ीम न हो यक़ीनन वोह ह़क़ीक़ी परहेज़गार नहीं।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1.....इल्मुल कुरआन, 48, अ़जाइबुल कुरआन मअ़ ग़राइबुल कुरआन, स. 68 माख़ूज़न।

(2).....दूसरी आयते मुबारका : मुसलमान औ़रतों को पर्दे का हुक्म

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया : اِنَّ نِسَاءَکَ یَدْخُلُ عَلَیْھِمُ الْبَرُّ وَالْفَاجِرُ لَوْاَمَرْتَ اُمَّھَاتَ الْمُؤْمِنِیْنَ بِالْحِجَابِ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप के पास नेक और बद हर क़िस्म के लोग ह़ाज़िर आते हैं, पस आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उम्महातुल मोमिनीन को ह़िजाब में रहने का हुक्म दें।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुवाफ़िक़त में येह आयते ह़िजाब नाज़िल हो गई :

﴿یٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَ بَنٰتِكَ وَ نِسَآءِ الْمُؤْمِنِیْنَ
یُدْنِیْنَ عَلَیْهِنَّ مِنْ جَلَابِیْبِهِنَّ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ یُّعْرَفْنَ فَلَا یُؤْذَیْنَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا ﴾ (پ۲۲،الاحزاب:۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ नबी अपनी बीबियों और साह़िबज़ादियों और मुसलमानों की औ़रतों से फ़रमा दो कि अपनी चादरों का एक ह़िस्सा अपने मुंह पर डाले रहें येह इस से नज़्दीक तर है कि उन की पहचान हो तो सताई न जाएं और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।"[1]

(3).....तीसरी आयते मुबारका : अज़्वाजे मुत़ह्हरात से ख़ित़ाब

एक बार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मुल मोमिनीन ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर में रौनक़ अफ़रोज़ हुवे, वोह आप की इजाज़त से अपने वालिदे गिरामी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इ़यादत के लिये तशरीफ़ ले गईं। उन के जाने के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदतुना मारिया क़िब्त़िया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को ख़िदमत से सरफ़राज़ फ़रमाया तो येह बात ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पर गिरां गुज़री। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की दिलजूई के लिये फ़रमाया : "मैं ने मारिया को अपने ऊपर ह़राम किया।" वोह इस से ख़ुश हो गईं और निहायत ख़ुशी में उन्हों ने येह तमाम गुफ़्तगू ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को बता दी। बा'दे अज़ां रब عَزَّوَجَلَّ ने इन दोनों अज़्वाजे मुत़ह्हरात से तम्बीहन ख़ित़ाब फ़रमाया। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस बात का इ़ल्म हुवा तो उन्हों ने इन दोनों अज़्वाजे मुत़ह्हरात से इरशाद फ़रमाया : عَسٰی رَبُّہٗۤ اِنْ طَلَّقَکُنَّ اَنْ یُّبْدِلَہٗۤ اَزْوَاجًا خَیْرًا مِّنْکُنَّ "या'नी उन का रब क़रीब है अगर वोह तुम्हें त़लाक़ दे

1 ......بخاری، کتاب التفسیر، باب قولہ لا تدخلوا۔۔۔الخ، ج۳، ص۳۰۴، حدیث:۴۷۹۰۔

दें कि उन्हें तुम से बेहतर बीबियां बदल दे ।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुवाफ़िक़त में इन ही अल्फ़ाज़ में येह आयते मुबारका नाज़िल हो गई : ﴿عَسٰی رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ یُّبْدِلَهٗۤ اَزْوَاجًا خَیْرًا مِّنْكُنَّ﴾(پ۲۸،التحریم:۵)
तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "उन का रब क़रीब है अगर वोह तुम्हें त़लाक़ दे दें कि उन्हें तुम से बेहतर बीबियां बदल दे ।"(1)

(4).....चौथी आयते मुबारका : बद्र के क़ैदियों के मुतअ़ल्लिक़ राए

जब जंगे बद्र में सत्तर काफ़िर क़ैद कर के ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में लाए गए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के मुतअ़ल्लिक़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मश्वरा त़लब फ़रमाया। अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह आप की क़ौम व क़बीले के लोग हैं मेरी राए में इन्हें फ़िदया ले कर छोड़ दिया जाए इस से मुसलमानों को कुव्वत भी पहुंचेगी और क्या बई़द कि **अल्लाह** तआ़ला इसी सबब से इन्हें दौलते इस्लाम से सरफ़राज़ फ़रमा दे। जब कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन लोगों ने आप की तक्ज़ीब की, आप को मक्कए मुकर्रमा में न रहने दिया येह कुफ़्र के सरदार और सरपरस्त हैं इन की गर्दनें उड़ाएं। **अल्लाह** तआ़ला ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़िदये से ग़नी किया है, अ़लिय्युल मुर्तज़ा को अ़क़ील पर और ह़ज़रते ह़म्ज़ा को अ़ब्बास पर और मुझे मेरे रिश्तेदारों पर मुक़र्रर कीजिये कि इन की गर्दनें मार दें।" बहर ह़ाल अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही की राए पर सब का इत्तिफ़ाक़ हो गया और फ़िदया लेने की राए क़रार पाई। लेकिन बा'दे अज़ां येह आयते मुबारका अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए की मुवाफ़िक़त में नाज़िल हो गई :

﴿مَا كَانَ لِنَبِیٍّ اَنْ یَّكُوْنَ لَهٗۤ اَسْرٰی حَتّٰی یُثْخِنَ فِی الْاَرْضِؕ
تُرِیْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْیَا ۖۗ وَ اللّٰهُ یُرِیْدُ الْاٰخِرَةَؕ وَ اللّٰهُ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ ۝﴾(پ۱۰،الانفال:۶۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "किसी नबी को लाइक़ नहीं कि काफ़िरों को ज़िन्दा क़ैद करे जब तक ज़मीन में उन का ख़ून ख़ूब न बहाए तुम लोग दुन्या का माल चाहते हो और **अल्लाह** आख़िरत चाहता है और **अल्लाह** ग़ालिब ह़िक्मत वाला है।"(2)

1.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह, 28, अत्तह़रीम तह़तुल आयत : 5, स. 1037 عمدۃ القاری، کتاب الصلاۃ، باب ماجاء فی القبلۃ۔۔۔الخ، ج۳، ص۳۸۹
2.....तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह, 10, अल अन्फ़ाल : तह़तुल आयत : 67, स. 350 مسلم، کتاب الجہاد، باب الامداد۔۔۔الخ، ص۹۷۰، حدیث:۹۰

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : وَافَقْتُ رَبِّي فِي ثَلَاثٍ فِي مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ وَفِي الْحِجَابِ وَفِي أُسَارَى بَدْرٍ "या'नी मैं ने अपने रब की तीन चीज़ों में मुवाफ़िक़त की : मक़ामे इब्राहीम में, हिजाब में और बद्र के क़ैदियों में।"[1]

(5 ता 7).....पांचवी, छटी, सातवीं आयते मुबारका : हुर्मते शराब का हुक्म

शराब की हुर्मत से मुतअ़ल्लिक़ तीन आयाते मुबारका अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुवाफ़िक़त में नाज़िल हुईं। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अ़म्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब शराब की हुर्मत का हुक्म नाज़िल हुवा तो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यूं दुआ़ की : اَللّٰهُمَّ بَيِّنْ لَنَا فِي الْخَمْرِ بَيَانًا شِفَاءً "या'नी या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारे लिये शराब के बारे में वाज़ेह हुक्म बयान फ़रमा।" तो सूरए बक़रह की येह आयते मुबारका नाज़िल हो गई : ﴿يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَ الْمَيْسِرِ ؕ قُلْ فِيْهِمَاۤ اِثْمٌ كَبِيْرٌ﴾(پ۲، البقرۃ:۲۱۹) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "तुम से शराब और जूए का हुक्म पूछते हैं तुम फ़रमा दो कि इन दोनों में बड़ा गुनाह है।" अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलाया गया और उन्हें येह आयते मुबारका सुनाई गई तो उन्हों ने दोबारा येही दुआ़ की : اَللّٰهُمَّ بَيِّنْ لَنَا فِي الْخَمْرِ بَيَانًا شِفَاءً "या'नी या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमारे लिये शराब के बारे में वाज़ेह हुक्म बयान फ़रमा।" तो सूरए निसा की येह आयते मुबारका नाज़िल हो गई : ﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَ اَنْتُمْ سُكٰرٰى﴾(پ۵، النساء:۴۳) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "ऐ ईमान वालो नशे की ह़ालत में नमाज़ के पास न जाओ।" अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलाया गया और उन्हें येह आयते मुबारका सुनाई गई तो उन्हों ने दोबारा येही दुआ़ की : اَللّٰهُمَّ بَيِّنْ لَنَا فِي الْخَمْرِ بَيَانًا شِفَاءً "या'नी या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमारे लिये शराब के बारे में वाज़ेह हुक्म बयान फ़रमा।" तो सूरए माइदह की येह आयते मुबारका नाज़िल हो गई :

﴿اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَ الْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ وَ الْمَيْسِرِ وَ

يَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ۝۹۱﴾ (پ۷، المائدۃ:۹۱)

---

1 ......مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، باب من فضائل عمر، ص ۱۳۰۶، حدیث:۲۴۔

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''शैत़ान येही चाहता है कि तुम में बेर और दुश्मनी डलवा दे शराब और जूए में और तुम्हें **अल्लाह** की याद और नमाज़ से रोके तो क्या तुम बाज़ आए ?'' जब येह तीसरी आयते मुबारका नाज़िल हुई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इत़्मीनान का इज़्हार फ़रमाया।[1]

(8).....आठवीं आयते मुबारका : अल्लाह बड़ी बरकत वाला है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ख़लील सालेह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर येह आयते मुबारका नाज़िल हुई :

﴿وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِیْنٍ ﴿۱۲﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِیْ قَرَارٍ مَّكِیْنٍ ﴿۱۳﴾ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ۗ ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ﴾ (پ۱۸، المؤمنون: ۱۲ تا ۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''और बेशक हम ने आदमी को चुनी हुई मिट्टी से बनाया फिर उसे पानी की बूंद किया एक मज़्बूत़ ठहराव में फिर हम ने उस पानी की बूंद को ख़ून की फटक किया फिर ख़ून की फटक को गोश्त की बोटी फिर गोश्त की बोटी को हड्डियां फिर उन हड्डियों पर गोश्त पहनाया फिर उसे और सूरत में उठान दी।'' तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यूं फ़रमाया : فَتَبَارَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخَالِقِیْنَ तो येही अल्फ़ाज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुवाफ़िक़त में नाज़िल हो गए और सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِہٖ اِنَّھَا خَتَمَتْ بِالَّذِیْ تَكَلَّمْتَ یَا عُمَر ''या'नी ऐ उ़मर ! उस रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कु़दरत में मेरी जान है ! येह आयते मुबारका तो बिऐ़निही उन्ही अल्फ़ाज़ पर ख़त्म कर दी गई है जो अल्फ़ाज़ तुम्हारी ज़बान से निकले थे।''[2]

(9).....नवीं आयते मुबारका : मुनाफ़िक़ीन की नमाज़े जनाज़ा और तदफ़ीन की मुमानअ़त

जब मुनाफ़िक़ीन के सरदार अ़ब्दुल्लाह बिन उबय का इन्तिक़ाल हुवा तो उस के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उबय رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो मुसलमान, सालेह़, मुख़्लिस सह़ाबी और कसीरुल इबादत थे येह ख़्वाहिश ज़ाहिर की, कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन के वालिद

1 ......ابوداود، کتاب الاشربة، باب فی تحریم الخمر، ج ۳، ص ۴۵۴، حدیث: ۳۶۷۰۔

2 ......درمنثور، پ ۱۸، المؤمنون، تحت الآیة: ۱۴، ج ۶، ص ۹۲۔

अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल को कफ़न के लिये अपनी क़मीस मुबारक इनायत फ़रमाएं और नमाजे़ जनाज़ा भी पढ़ाएं। येह सुन कर सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन दोनों उमूर के इरादे से आगे बढ़े तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं फ़ौरन उठा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गु़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बिल्कुल सामने खड़ा हो गया और दस्त बस्ता अ़र्ज़ की : اَعَلٰی عَدُوِّ اللهِ ابْنِ اُبَيِّ الْقَائِلِ يَوْمَ كَذَا وَكَذَا كَذَا وَكَذَا : "या'नी क्या आप उस दुश्मने खु़दा इब्ने उबय की नमाजे़ जनाज़ा पढ़ते हैं जिस ने फ़ुलां फ़ुलां दिन ऐसी ऐसी गुस्ताखि़यां की थीं ?" लेकिन सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस मुनाफ़िक़ को अपनी क़मीस भी अ़ता फ़रमाई और उस के जनाजे़ में भी शिर्कत फ़रमाई। बा'द में येह आयते मुबारका अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की मुवाफ़िक़त में नाज़िल हो गई :

﴿وَلَا تُصَلِّ عَلٰۤى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۸۴﴾﴾ (پ۱۰، التوبة:۸۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और उन में से किसी की मय्यित पर कभी नमाज़ न पढ़ना और न उस की क़ब्र पर खड़े होना बेशक वोह **अल्लाह** व रसूल से मुन्किर हुवे और फ़िस्क़ ही में मर गए।"(1)

मुनाफ़िक़ को क़मीस अ़ता फ़रमाने और जनाजे़ में शिर्कत की ह़िक्मतें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इ़ल्म होने के बा वुजूद मुनाफ़िक़ों के सरदार अ़ब्दुल्लाह बिन उबय को अपनी क़मीस भी अ़ता की और उस के जनाजे़ में भी शिर्कत की। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस अ़मल में फ़वाइद से भरपूर बे शुमार ह़िक्मतें थीं, चन्द दर्जे ज़ैल हैं :

(1).....रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुनाफ़िक़ अ़ब्दुल्लाह बिन उबय को जब अपनी मुबारक क़मीस अ़ता फ़रमाई और जनाजे़ व तदफ़ीन में शिर्कत की उस वक़्त मुमानअ़त का हुक्म नाज़िल नहीं हुवा था।

1.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह, 10, अत्तौबह : तह़्तुल आयत : 84, स. 376, تاريخ الخلفاء، ص ۹۷ ملخصاً۔الصواعق المحرقة

(2).....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मा'लूम था कि आप का येह अ़मल एक हज़ार आदमियों के ईमान लाने का बाइ़स होगा इसी लिये आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़ब्दुल्लाह बिन उबय को अपनी क़मीस भी इनायत फ़रमाई और जनाज़े में भी शिर्कत की।

(3).....क़मीस देने की एक वज्ह येह भी थी कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो बद्र में असीर हो कर आए थे उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन उबय ने अपना कुर्ता पहनाया था तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपनी क़मीस अ़त़ा फ़रमा कर बदला पूरा कर दिया।

(4).....सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़े'ल में एक ह़िक्मत येह भी थी कि कुफ़्फ़ार आप के इस रवय्ये से मुतअस्सिर होंगे चुनान्चे, जब कुफ़्फ़ार ने देखा कि ऐसा शदीद अ़दावत रखने वाला शख़्स जब दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कुर्ते से बरकत ह़ासिल करना चाहता है तो उस के अ़क़ीदे में भी आप अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब और उस के सच्चे रसूल हैं तो येह सोच कर एक हज़ार काफ़िर मुसलमान हो गए।"[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(10).....दसवीं आयते मुबारका : मुनाफ़िक़ीन के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत

दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब मुनाफ़िक़ीन के इस्तिग़फ़ार की कसरत की तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़बान पर येह कलिमात आए : سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप का इन मुनाफ़िक़ीन के लिये इस्तिग़फ़ार फ़रमाना या न फ़रमाना दोनों बराबर हैं।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन ही अल्फ़ाज़ में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुवाफ़िक़त में येह आयते करीमा नाज़िल फ़रमा दी :

﴿سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ﴾ (پ۲۸، المنافقون:۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "उन पर एक सा है तुम उन की मुआ़फ़ी चाहो या न चाहो।"[2]

---

1 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह, 10, अत्तौबह, तह़्तुल आयत : 84, स. 376।

2 ......الصواعق المحرقة، ص ۱۰۰، تاریخ الخلفاء، ۹۷۔

(11).....ग्यारहवीं आयते मुबारका : मक़ामे बद्र की त़रफ़ जाने का हुक्म

मुल्के शाम से कुफ़्फ़ार का एक क़ाफ़िला साज़ो सामान के साथ आ रहा था, सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने अस्ह़ाब के साथ उस क़ाफ़िले से मुक़ाबले के लिये रवाना हुवे, उधर जब कुफ़्फ़ारे मक्का को मा'लूम हुवा तो अबू जह्ल भी क़ुरैश का एक बड़ा लश्कर ले कर मुल्के शाम से आने वाले क़ाफ़िले की मदद के लिये निकल खड़ा हुवा। लेकिन जब उस क़ाफ़िले को मा'लूम हुवा कि मुसलमान उन के मुक़ाबले के लिये आ रहे हैं तो उन्हों ने वोह रास्ता तब्दील कर दिया और समन्दरी रास्ते से किसी और राह निकल गए। अबू जह्ल को जब येह मा'लूम हुवा तो उस के साथियों ने कहा कि क़ाफ़िला तो सह़ीह़ सलामत दूसरी राह निकल गया लिहाज़ा वापस मक्कए मुकर्रमा चलते हैं लेकिन उस ने वापस जाने से इन्कार कर दिया और मुसलमानों से जंग करने के लिये मक़ामे बद्र की त़रफ़ चल पड़ा। इधर नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मा'लूम हुवा तो आप ने अपने अस्ह़ाब से मश्वरा किया और फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से वा'दा फ़रमाया है कि कुफ़्फ़ार के दोनों गुरौहों में से एक पर मुसलमानों को फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमाएगा ख़्वाह वोह मुल्के शाम वाला क़ाफ़िला हो या मक्कए मुकर्रमा से आने वाले कुफ़्फ़ारे क़ुरैश का लश्कर।" क़ाफ़िला चूंकि निकल चुका था लिहाज़ा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बद्र की त़रफ़ जाने का इरादा फ़रमाया। बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "हम बा क़ाइदा जंग की तय्यारी से नहीं आए थे, लिहाज़ा अबू जह्ल के लश्कर से ए'राज़ कर के उसी मुल्के शाम वाले क़ाफ़िले का तआ़क़ुब करना चाहिये।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! जैसा आप के रब عَزَّوَجَلَّ ने आप को हुक्म फ़रमाया है वैसा ही कीजिये या'नी बद्र की त़रफ़ तशरीफ़ ले चलिये।" तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की मुवाफ़िक़त में येह आयते मुबारका नाज़िल हो गई : ﴿كَمَاۤ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَیْتِكَ بِالْحَقِّ۪ وَ اِنَّ فَرِیْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِیْنَ لَكٰرِهُوْنَۙ(۵)﴾ (پ۹، الانفال:۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "जिस त़रह़ ऐ मह़बूब तुम्हें तुम्हारे रब ने तुम्हारे घर से ह़क़ के साथ बर आमद किया और बेशक मुसलमानों का एक गुरौह इस पर ना ख़ुश था।"(1)

1.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह, 9, अल अन्फ़ाल, तह़्तुल आयत : 5, स. 334।

تفسیر البیضاوی، پ ۹، الانفال، تحت الآیۃ: ۵، ج ۳، ص ۸۹ تاریخ الخلفاء، ص ۹۷، الصواعق المحرقۃ، ص ۱۰۰

(12).....**बारहवीं आयते मुबारका : सय्यिदा आइशा सिद्दीक़ा की पाकीज़गी का बयान**

5 हिजरी में ग़ज़्वए बनी मुस्तलिक़ से वापसी के वक़्त क़ाफ़िला मदीनए मुनव्वरा के क़रीब एक मक़ाम पर ठहरा तो उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ज़रूरत के लिये किसी गोशे में तशरीफ़ ले गईं वहां आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का हार टूट गया, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا उस की तलाश में मसरूफ़ हो गईं और क़ाफ़िले वाले आप को क़ाफ़िले में समझ कर रवाना हो गए। बा'दे अज़ां आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا हज़रते सय्यिदुना सफ़्वान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ आ गईं तो क़ाफ़िले में मौजूद मुनाफ़िक़ीन ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की शान में बदगोई शुरूअ़ कर दी और औहामे फ़ासिदा (ग़लत वस्वसे) फैलाना शुरूअ़ कर दिये। सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से इस मुआमले में गुफ़्तगू फ़रमाई तो तमाम सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की पाक दामनी की गवाही दी। चुनान्चे, अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया : **مَنْ زَوَّجَکَهَا** "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के साथ आप का निकाह किस ने फ़रमाया ?" फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने।" अ़र्ज़ किया : **اَتَظُنُّ اَنَّ رَبَّکَ دَلَّسَ عَلَیْکَ فِیْهَا** "या'नी क्या आप येह गुमान करते हैं कि आप के रब عَزَّوَجَلَّ ने आप को ऐबदार चीज़ अ़ता फ़रमाई है ? हरगिज़ नहीं।" फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़बान से येह अल्फ़ाज़ अदा हुवे **سُبْحَانَکَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِیْمٌ** "या'नी इलाही पाकी है तुझे येह बड़ा बोहतान है।" तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मुवाफ़िक़त में येही अल्फ़ाज़ रब عَزَّوَجَلَّ ने नाज़िल फ़रमा दिये :

﴿وَلَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۗ سُبْحٰنَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ﴿١٦﴾﴾ (پ۱۸، النور: ۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और क्यूं न हुवा जब तुम ने सुना था कहा होता कि हमें नहीं पहुंचता कि ऐसी बात कहें इलाही पाकी है तुझे येह बड़ा बोहतान है।"(1)

(13).....**तेरहवीं आयते मुबारका : रमज़ान की रातों में मुबाशरत की इजाज़त**

इब्तिदाए इस्लाम में रमज़ानुल मुबारक की रातों में अपनी ज़ौजा से मुबाशरत करना जाइज़ नहीं था, लेकिन अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ व दीगर चन्द

(1).....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह, 18, अन्नूर, तह़्तुल आयत : 16, स. 552।

عمدة القاری، کتاب الصلاة، باب ماجاء فی القبلة۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۳۸۷، تحت الحديث: ۴۰۲ملتقطاً۔

सह़ाबए किराम ने जिमाअ़ कर लिया तो रमज़ानुल मुबारक की रातों में जिमाअ़ के जवाज़ की येह आयते मुबारका नाज़िल हो गई :

﴿اُحِلَّ لَكُمْ لَیْلَةَ الصِّیَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَآىٕكُمْؕ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَ اَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَیْكُمْ وَ عَفَا عَنْكُمْۚ فَالْـٰٔنَ بَاشِرُوْهُنَّ﴾ (پ۲، البقرۃ:۱۸۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "रोज़ों की रातों में अपनी औ़रतों के पास जाना तुम्हारे लिये ह़लाल हुवा वोह तुम्हारी लिबास हैं और तुम उन के लिबास अल्लाह ने जाना कि तुम अपनी जानों को ख़ियानत में डालते थे तो उस ने तुम्हारी तौबा क़बूल की और तुम्हें मुआ़फ़ फ़रमाया तो अब उन से सोह़बत करो ।"(1)

(14).....चौदहवीं आयते मुबारका : जो जिब्रील का दुश्मन, अल्लाह उस का दुश्मन

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी ह़ातिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी लैला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से एक यहूदी की मुलाक़ात हुई तो उस ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा : اِنَّ جِبْرِیْلَ الَّذِیْ یَذْکُرُ صَاحِبُکُمْ عَدُوٌّ لَّنَا "या'नी येह जो जिब्रील है जिस का तज़्किरा तुम्हारे दोस्त (मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) करते हैं वोह हमारा दुश्मन है ।" येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ کَانَ عَدُوًّا لِّلّٰہِ وَمَلَائِکَتِہٖ وَرُسُلِہٖ وَجِبْرِیلَ وَمِیکَائِیلَ فَاِنَّ اللّٰہَ عَدُوٌّ لِّلْکَافِرِینَ "या'नी जो कोई दुश्मन हो अल्लाह और उस के फ़िरिश्तों और उस के रसूलों और जिब्रील और मीकाईल का तो अल्लाह दुश्मन है काफ़िरों का ।" चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुवाफ़िक़त में इन्ही अल्फ़ाज़ में येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमा दी :

﴿مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَ مَلٰٓىٕكَتِهٖ وَ رُسُلِهٖ وَ جِبْرِیْلَ وَ مِیْكٰىلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِیْنَ(۹۸)﴾ (پ۱، البقرۃ:۹۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "जो कोई दुश्मन हो अल्लाह और उस के फ़िरिश्तों और उस के रसूलों और जिब्रील और मीकाईल का तो अल्लाह दुश्मन है काफ़िरों का ।"(2)

---

(1)......سنن ابی داود، کتاب الاذان، کیف الاذان، ج۱، ص۲۱۳، الحدیث:۵۰۶، ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, पारह, 2, अल बक़रह : 187

(2)......درمنثور، پ۱، البقرۃ، تحت الآیۃ:۹۷، ج۱، ص۲۲۴۔

(15).....पन्द्रहवीं आयते मुबारका : रसूलुल्लाह को हकम बनाने का हुक्म

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी हातिम और हज़रते सय्यिदुना इब्ने मरदवया (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) हज़रते सय्यिदुना अबुल अस्वद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि दो शख़्सों ने अपना मुक़द्दमा ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश किया तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के माबैन फ़ैसला फ़रमा दिया। जिस के ख़िलाफ़ फ़ैसला हुवा था उस ने दूसरे से कहा कि आओ हम हज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़ैसला करवाते हैं। दोनों बारगाहे फ़ारूक़ी में पहुंचे तो जिस के हक़ में फ़ैसला हुवा था उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे हक़ में फ़ैसला फ़रमा दिया है। येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : **مَكَانَكُمَا حَتّٰى اَخْرُجَ اِلَيْكُمَا فَاَقْضِيَ بَيْنَكُمَا** ''या'नी मेरे वापस आने तक यहीं ठहरो, मैं अभी तुम दोनों के दरमियान फ़ैसला करता हूं।'' फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अन्दर तशरीफ़ ले गए और नंगी तल्वार हाथ में लिये बाहर तशरीफ़ लाए और जिस के ख़िलाफ़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़ैसला फ़रमाया था उस का सर क़लम कर दिया। येह देख कर दूसरा शख़्स ख़ौफ़ से भाग कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में पहुंचा और अ़र्ज़ किया : **قَتَلَ عُمَرُ وَاللّٰهِ صَاحِبِيْ** ''या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मेरे साथी को क़त्ल कर दिया है।'' शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **مَا كُنْتُ اَظُنُّ اَنْ يَّجْتَرِئَ عُمَرُ عَلٰى قَتْلِ مُؤْمِنٍ** ''या'नी मुझे यक़ीन है कि उ़मर किसी मोमिन को क़त्ल करने की जुरअत नहीं कर सकता।'' फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुवाफ़िक़त में येह आयते मुबारका नाज़िल हुई : ﴿فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝﴾ (پ۵، النساء:۶۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''तो ऐ महबूब तुम्हारे रब की क़सम वोह मुसलमान न होंगे जब तक अपने आपस के झगड़े में तुम्हें हाकिम न बनाएं फिर जो कुछ तुम हुक्म फ़रमा दो अपने दिलों में इस से रुकावट न पाएं और जी से मान लें।''(1)

(16).....सोलहवीं आयते मुबारका : बिग़ैर इजाज़त घरों में दाख़िले की मुमानअ़त

एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रात के वक़्त आराम फ़रमा रहे थे तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़ादिम आप के कमरे में दाख़िल हुवा। आप चूंकि नींद की

---

1 ......درمنثور، پ۵، النساء، تحت الآیۃ: ۶۵، ج۲، ص۵۸۵۔

ह़ालत में थे लिहाज़ा बदन से कुछ कपड़ा हटा हुवा था ऐसी ह़ालत में आप رضی اللہ تعالٰی عنہ को गुलाम का बिला इजाज़त दाख़िल होना अच्छा न लगा तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में यूं दुआ़ की : اَللّٰھُمَّ حَرِّمِ الدُّخُوْلَ عَلَیْنَا فِیْ وَقْتِ نَوْمِنَا ''या'नी या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमारे सोने के औक़ात में बिला इजाज़त दाख़िला ह़राम फ़रमा दे ।'' तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की मुवाफ़िक़त में येह आयते मुबारका नाज़िल हो गई :

﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُیُوْتًا غَیْرَ بُیُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَ تُسَلِّمُوْا عَلٰۤى اَهْلِهَاؕ ذٰلِكُمْ خَیْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ۝۲۷﴾ (پ۱۸، النور: ۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''ऐ ईमान वालो अपने घरों के सिवा और घरों में न जाओ जब तक इजाज़त न ले लो और उन के साकिनों पर सलाम न कर लो येह तुम्हारे लिये बेहतर है कि तुम ध्यान करो ।''(1)

(17).....सत्तरहवीं आयते मुबारका : कुफ़्फ़ार को हकम बनाने की मुमानअ़त

﴿اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْنَ یَزْعُمُوْنَ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْكَ وَ مَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ یُرِیْدُوْنَ اَنْ یَّتَحَاكَمُوْۤا اِلَى الطَّاغُوْتِ وَ قَدْ اُمِرُوْۤا اَنْ یَّكْفُرُوْا بِهٖؕ وَ یُرِیْدُ الشَّیْطٰنُ اَنْ یُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًۢا بَعِیْدًا۝۶۰﴾ (پ۵، النساء: ۶۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन का दा'वा है कि वोह ईमान लाए उस पर जो तुम्हारी त़रफ़ उतरा और उस पर जो तुम से पहले उतरा फिर चाहते हैं कि शैत़ान को अपना पंच बनाएं और उन का तो हुक्म येह था कि उसे अस्लन न मानें और इब्लीस येह चाहता है कि उन्हें दूर बहकावे ।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि बिशर नामी एक मुनाफ़िक़ का एक यहूदी से झगड़ा था, यहूदी ने कहा : ''चलो सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم से तै़ करा लें क्यूंकि वोह तुम्हारे सच्चे नबी हैं ।'' मुनाफ़िक़ ने सोचा कि सरकार صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم तो किसी की रिआ़यत किये बिग़ैर सिर्फ़ सच्चा फ़ैसला करेंगे और इस से मत़लब ह़ासिल न होगा इस लिये उस ने बा वुजूद मुद्दइये ईमान होने के येह कहा कि ऐसा करते हैं का'ब बिन अशरफ़ यहूदी के पास चल कर उस से फ़ैसला करवाते हैं । (कुरआने करीम में त़ागूत से उस का'ब बिन अशरफ़ के पास फ़ैसला ले जाना मुराद है) यहूदी जानता था कि का'ब रिश्वत ख़ोर है इस लिये उस ने बा वुजूद हम मज़हब होने के उस को पंच तस्लीम न किया । बिल आख़िर मुनाफ़िक़ को फ़ैसले के लिये हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर होना पड़ा ।

1 ......ارشاد الساری، کتاب تفسیر القرآن، سورۃ الاحزاب، باب قولہ: لا تدخلوا۔۔۔الخ، ج۱۰، ص۵۹۶، تحت الحدیث: ۴۷۹۰۔

सरकार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रीक़ैन की बात सुनने के बा'द यहूदी के ह़क़ में फ़ैसला सुना दिया। फ़ैसला सुनने के बा'द मुनाफ़िक़ ने उसे तस्लीम न किया और यहूदी को इस बात पर मजबूर किया कि "ऐसा करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में चलते हैं वोह जो फ़ैसला करेंगे मुझे मन्ज़ूर होगा।" दोनों बारगाहे फ़ारूक़ी में ह़ाज़िर हुवे तो यहूदी ने अ़र्ज़ किया कि "**अल्लाह** के रसूल صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे ह़क़ में फ़ैसला दिया है लेकिन येह शख़्स आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ैसले से मुत्तफ़िक़ नहीं, येह आप से फ़ैसला करवाना चाहता है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह सुन कर इरशाद फ़रमाया : مَكَانَكُمَا حَتّٰى اَخْرُجَ اِلَيْكُمَا "या'नी तुम दोनों मेरे वापस आने तक यहीं ठहरो।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अन्दर तशरीफ़ ले गए और नंगी तल्वार ले कर बाहर आए और उस मुनाफ़िक़ की गर्दन तन से जुदा कर दी। इरशाद फ़रमाया : هٰكَذَا اَقْضِيْ لِمَنْ لَّمْ يَرْضَ بِقَضَاءِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ "या'नी जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ैसले से राज़ी नहीं उ़मर उस का फ़ैसला यूं करेगा।"(1)

(18).....अठ्ठारहवीं आयते मुबारका : साबिक़ीन जन्नतियों के दो गुरौह

क़ियामत के दिन तीन त़रह़ के लोग होंगे : (1) اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ "या'नी जिन के नामए आ'माल उन के दाहिने हाथों में दिये जाएंगे।" (2) اَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ "या'नी वोह जिन के नामए आ'माल बाएं हाथों में दिये जाएंगे।" (3) السّٰبِقُوْنَ "या'नी वोह लोग जो नेकियों में सब्क़त ले गए।" फिर उन के जन्नती होने का बयान है। इस तीसरी क़िस्म के लोगों की दो क़िस्में बयान की गई हैं : (1) अगले या'नी पहले वाले (2) पिछले या'नी बा'द वाले। अगलों से मुराद सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और पिछलों से मुराद बा'द वाले लोग हैं। फ़रमाया गया : ﴿ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۳﴾ وَ قَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿۱۴﴾﴾ (پ۲۷، الواقعۃ: ۱۳، ۱۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "अगलों में से एक गुरौह और पिछलों में से थोड़े।" तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगलों में से पूरा एक गुरौह और पिछलों में सिर्फ़ थोड़े से ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुवाफ़िक़त में येह आयते मुबारका नाज़िल हो गई : ﴿ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۳۹﴾ وَ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿۴۰﴾﴾ (پ۲۷، الواقعۃ: ۳۹، ۴۰) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "अगलों में से एक गुरौह और पिछलों में से एक गुरौह।"(2)

---

1 ......درمنثور، پ۵، النساء، تحت الآیۃ: ۶۰، ج۲، ص۵۸۲۔

2 ... درمنثور، پ۲۷، الواقعۃ، تحت الآیۃ: ۱۳، ج۸، ص۷، تاریخ ابن عساکر، ج۴۰، ص۲۲۹، नूरुल इरफ़ान, पारह 27, अल वाक़िआ़ तह़तुल आयत : 13

(19).....उन्नीसवीं आयते मुबारका : हुक्म की उ़मूमिय्यत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक शख़्स अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में हाज़िर हुवा और अपना वाक़िआ़ कुछ यूं अ़र्ज़ करने लगा कि एक औ़रत मेरे पास कुछ ख़रीदने आई तो मैं उसे अपने कमरए ख़ास में ले गया और ज़िना के इ़लावा सब कुछ किया । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया وَيْحَكَ لَعَلَّهَا مُغِيْبٌ فِي سَبِيْلِ اللّٰهِ तेरी बरबादी हो शायद उस का शोहर जिहाद पर गया है ? उस ने कहा : ''जी हां ।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में जाओ ।'' वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में गया और सारा मुआ़मला बयान किया तो उन्हों ने भी हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुवाफ़िक़त करते हुवे इरशाद फ़रमाया : لَعَلَّهَا مُغِيْبٌ فِي سَبِيْلِ اللّٰه शायद उस का शोहर जिहाद पर गया है ? उस ने कहा : ''जी हां ।'' फिर वोह सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में गया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी वोही इरशाद फ़रमाया जो हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया था ।'' फिर सूरए हूद की आयते करीमा नाज़िल हो गई :

﴿وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَ زُلَفًا مِّنَ الَّيْلِؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ۚ﴾ (پ۱۲، ھود: ۱۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''और नमाज़ क़ाइम रखो दिन के दोनों किनारों और कुछ रात के हिस्सों में बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं येह नसीहत है नसीहत मानने वालों को ।''

तो उस शख़्स ने पूछा : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या इस आयत में जो हुक्म है वोह सिर्फ़ मेरे लिये ख़ास है ?'' अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस के सीने पर हाथ मारा और फ़रमाया : ''येह तेरे लिये ख़ास नहीं बल्कि सब के लिये आ़म है ।'' हुज़ूर नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ताईद करते हुवे इरशाद फ़रमाया : صَدَقَ عُمَرُ ''या'नी उ़मर ने सच कहा ।''[1]

---

1 .....مسند امام احمد، مسند عبد اللہ بن عباس، ج ۱، ص ۲۵۹، حدیث: ۲۲۰۶۔

रसूलुल्लाह की मुवाफ़िक़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़याते त़य्यिबा के बे शुमार ऐसे वाक़िआ़त भी हैं जिन में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को खु़द सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह से किसी मुआ़मले में ताईद और मुवाफ़िक़त अ़त़ा हुई, चन्द वाक़िआ़त पेशे ख़िदमत हैं :

(20).....अल्फ़ाजे़ अज़ान के मुतअ़ल्लिक़ फ़ारूके़ आ'ज़म का ख़्वाब

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जै़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने लोगों को नमाज़ की दा'वत के लिये नाक़ूस बजाने का हुक्म दिया तो मैं ने ख़्वाब में देखा कि एक शख़्स दो सब्ज़ कपड़ों में मल्बूस हाथ में एक नाक़ूस ले कर मेरे पास आया। मैं ने कहा : "ऐ अल्लाह के बन्दे ! क्या येह नाक़ूस मुझे बेचोगे ?" वोह कहने लगा : "येह तुम्हारे किस काम का ?" मैं ने कहा : "मैं इस के साथ लोगों को नमाज़ की त़रफ़ बुलाऊंगा।" वोह कहने लगा : "अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें नमाज़ के लिये बुलाने का इस से बेहतर त़रीक़ा न बताऊं ?" मैं ने कहा : "ज़रूर बताइये।" वोह कहने लगा : "तुम येह कहा करो : اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ" और उस ने सारी अज़ान कह सुनाई। फिर उस ने कहा : "जब तुम जमाअ़त क़ाइम करने लगो तो यूं कहो اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ" और उस ने सारी इक़ामत कह सुनाई। जब सुब्ह़ हुई तो मैं हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और अपना ख़्वाब बयान किया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो येह ख़्वाब ज़रूर सच होगा। तुम बिलाल के साथ जाओ और जो कुछ तुम ने ख़्वाब में सुना है वोह बिलाल को सुनाते जाओ क्यूंकि उस की आवाज़ तुम से बुलन्द है।" तो मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को साथ खड़ा कर लिया, मैं सय्यिदुना बिलाल को कलिमाते अज़ान बताता रहा और आप अज़ान देते रहे। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने घर में येह आवाज़ सुनी तो दौड़े दौड़े मस्जिद में आए और उन की ह़ालत येह थी कि उन की चादर ज़मीन पर घिसटती आ रही थी और वोह कह रहे थे : وَالَّذِیْ بَعَثَکَ بِالْحَقِّ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ لَقَدْ رَاَیْتُ مِثْلَ مَارَاٰی "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! उस ख़ुदा की क़सम जिस ने आप को रसूल बनाया है, मैं ने

आज ख़्वाब में येही अल्फ़ाज़ सुने हैं।" हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ "या'नी तमाम ता'रीफ़ें रब عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं।"(1)

(21).....फ़ारूक़े आ'ज़म की राए पर अल्फ़ाज़े अज़ान में इज़ाफ़ा

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि मुअज़्ज़िने रसूल हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه इब्तिदाअन अज़ान में "اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا الله" के बा'द "حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ" कहा करते थे। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "ऐ बिलाल "اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا الله" के बा'द "اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ الله" कहा करो।" येह सुन कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को हुक्म इरशाद फ़रमाया : قُلْ كَمَا اَمَرَكَ عُمَرُ "या'नी ऐ बिलाल ! जैसा उ़मर ने तुम्हें हुक्म दिया है वैसा ही कहो।"(2)

(22).....ग़ज़्वए उहुद में आप के क़ौल की मुवाफ़िक़त

ग़ज़्वए उहुद में जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शहादत की ख़बर फैल गई तो अबू सुफ़्यान (जो फ़त्ह़े मक्का के मौक़अ़ पर मुसलमान हो गए थे) ने इस बात की तस्दीक़ के लिये तीन सुवालात किये तो रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस का जवाब देने से सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को दो मरतबा मन्अ़ फ़रमाया लेकिन तीसरी बार मन्अ़ न फ़रमाया। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उसे जवाब दिया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तीसरी बार जवाब देने से मन्अ़ न करना अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के अबू सुफ़्यान को जवाब देने की मुवाफ़िक़त थी। चुनान्चे, ग़ज़्वए उहुद में हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه व दीगर चन्द सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के साथ एक पहाड़ के दामन में मौजूद थे। अबू सुफ़्यान ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शहादत की तस्दीक़ करने के लिये उस पहाड़ पर आ कर ब आवाज़े बुलन्द कहा : اَفِي الْقَوْمِ مُحَمَّدٌ "या'नी क्या तुम में मुहम्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मौजूद हैं ?"

(1).....ابوداود، کتاب الصلاۃ، باب کیف الاذان، ج ۱، ص ۲۱۰، حدیث: ۴۹۹۔

(2).....صحیح ابن خزیمۃ، کتاب الصلاۃ، باب فی بدء الاذان والاقامۃ، ج ۱، ص ۱۸۸، حدیث: ۳۶۲۔

तो सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को ख़ामोश रहने का हुक्म इरशाद फ़रमाया। उस ने फिर पूछा : اَفِي الْقَوْمِ ابْنُ اَبِي قُحَافَةَ "या'नी क्या तुम में अबू क़ुहाफ़ा का बेटा (हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه) है ?" इस बार भी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को ख़ामोश रहने का हुक्म इरशाद फ़रमाया। उस ने फिर पूछा : اَفِي الْقَوْمِ ابْنُ الْخَطَّابِ "या'नी क्या तुम में ख़त्ताब का बेटा (हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه) है ?" लेकिन इस बार रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को ख़ामोश रहने का हुक्म इरशाद न फरमाया। अबू सुफ़्यान कहने लगा : اِنَّ هٰؤُلَاءِ قُتِلُوا فَلَوْ كَانُوا اَحْيَاءً لَاَجَابُوا "या'नी येह सारे क़त्ल (शहीद) हो गए हैं अगर ज़िन्दा होते तो ज़रूर जवाब देते।" अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने जैसे ही अपने महबूब आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शहादत का सुना तो आप की ग़ैरते ईमानी जोश में आ गई और चूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी अब जवाब देने से मन्अ़ न फ़रमाया था तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुवाफ़िक़त भी आप को हासिल थी लिहाज़ा आप ने बा आवाज़े बुलन्द इरशाद फ़रमाया : كَذَبْتَ يَا عَدُوَّ اللّٰهِ اَبْقَى اللّٰهُ عَلَيْكَ مَا يُخْزِيكَ "या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन ! तू झूटा है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरे ख़िलाफ़ उस चीज़ को बाक़ी रखा है जो तुझे ज़लील कर देगी।"[1]

(23).....फ़ारूक़े आ'ज़म का मदनी मश्वरा और लश्कर की शिकम सैरी

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी अ़मरह अन्सारी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि मुझे मेरे वालिद ने बताया कि हम एक बार जंगी सफ़र में हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ थे और ज़ादे राह तक़रीबन ख़त्म हो चुका था जब भूक की शिद्दत ने तंग किया तो लोगों ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस बात की इजाज़त तलब की, कि बा'ज़ सुवारियां ज़ब्ह कर ली जाएं ताकि कुछ तो भूक कम की जा सके।" अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने जब येह देखा कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन्हें इस बात की इजाज़त देने ही वाले हैं तो उन्हों ने आगे बढ़ कर अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर हम अपनी सुवारियां

---

1 ......بخاری، کتاب المغازی، غزوۃ احد، ج ۳، ص ۳۴، حدیث: ۴۰۴۳۔

ज़ब्ह़ कर के खाना शुरूअ़ कर दें तो दुश्मन के सामने हम भूके और बिग़ैर सुवारियों के होंगे।'' फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत में मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही से भरपूर मदनी मश्वरा देते हुवे अ़र्ज़ किया :

اِنْ رَاَیْتَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ اَنْ تَدْعُوَ لَنَا بِبَقَایَا اَزْوَادِھِمْ فَتَجْمَعَھَا ثُمَّ تَدْعُوَ اللّٰہَ فِیْھَا بِالْبَرَکَۃِ فَاِنَّ اللّٰہَ تَبَارَکَ وَتَعَالٰی سَیُبَلِّغُنَا بِدَعْوَتِکَ

''या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरा मश्वरा येह है कि तमाम लश्कर वाले ऐसा करें कि जिस के पास जो कुछ भी थोड़ा बहुत खाने के लिये कुछ बचा हुवा है वोह आप की बारगाह में ह़ाज़िर कर दे। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस खाने के ढेर पर बरकत की दुआ़ फ़रमा दें तो **अल्लाह** तआ़ला आप की दुआ़ से उस खाने में ऐसी बरकत पैदा फ़रमा देगा कि वोह खाना हम सब के लिये काफ़ी व वाफ़ी होगा।''

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह मश्वरा बहुत ही पसन्द आया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस मदनी मश्वरे की मुवाफ़िक़त फ़रमाते हुवे इस पर अ़मल पैरा होने का हुक्म इरशाद फ़रमाया। चुनान्चे, जिस के पास जो कुछ बचा हुवा था सब ने बारगाहे रिसालत में ला कर पेश कर दिया। रावी कहते हैं : فَجَمَعَھَا رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ ثُمَّ قَامَ فَدَعَا مَا شَاءَ اللّٰہُ اَنْ یَّدْعُوَ ''या'नी मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन तमाम अश्या को एक जगह जम्अ़ कर दिया, फिर खड़े हुवे और इस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मर्ज़ी से जो दुआ़ फ़रमानी थी फ़रमा दी।'' फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने लश्कर के तमाम लोगों को हुक्म इरशाद फ़रमाया कि अपने अपने बरतन इस से भर लें। रावी फ़रमाते हैं कि : فَمَا بَقِیَ فِی الْجَیْشِ وِعَاءٌ اِلاَّ مَلَاُوْہُ وَبَقِیَ مِثْلُہٗ ''या'नी लश्कर में मौजूद तमाम के तमाम बरतन उस से भर गए और वोह वैसा ही रहा उस में भी कुछ कमी न आई।'' येह देख कर हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इतना मुस्कुराए कि आप की मुबारक दाढ़ें ज़ाहिर हो गईं। इरशाद फ़रमाया : اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلاَّ اللّٰہُ وَاَنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰہِ لَا یَلْقَی اللّٰہَ عَبْدٌ مُّؤْمِنٌ بِھِمَا اِلاَّ حُجِبَتْ عَنْہُ النَّارُ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ ''या'नी मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का रसूल हूं, येह दोनों कलिमात पढ़ने वाला कल बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मुलाक़ात करेगा कि उस के और दोज़ख़ के माबैन एक आड़ क़ाइम कर दी जाएगी।''[1]

[1]......مسند امام احمد، حدیث ابی عمرۃ الانصاری، ج۵، ص ۲۶۴، ص ۱۵۴۴۹ ۔

फ़ारूक़े आ'ज़म का नबिय्ये करीम से मदद त़लब करने का अ़क़ीदा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला वाक़िए से इल्मो हिक्मत के बे शुमार मदनी फूल मिलते हैं चुनान्चे, चन्द मदनी फूल पेशे ख़िदमत हैं इन्हें अपने दिल के मदनी गुलदस्ते में सजा लीजिये :

.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह अ़क़ीदा था कि जब कोई मुश्किल घड़ी आ जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मदद मांगना जाइज़ है।

.....नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह भी अ़क़ीदा था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल, बीबी आमिना के फूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुश्किल घड़ी में मदद फ़रमा सकते हैं, जभी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत से मदद त़लब की।

.....आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कसीर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के सामने सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस्लामी लश्कर के लिये मदद त़लब की और किसी सह़ाबी ने इस बात पर इन्कार न फ़रमाया। मा'लूम हुवा कि तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का इस बात पर इजमाअ़ है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मदद मांगना जाइज़ है।

.....ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सच्चे रसूल हैं, आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) **اٰمِرٌ بِالْمَعْرُوْف** "या'नी नेकी का हुक्म देने वाले" और **نَاهِیْ عَنِ الْمُنْکَر** "या'नी बुराई से मन्अ़ फ़रमाने वाले हैं।" अगर ग़ैरुल्लाह से मदद त़लब करना नाजाइज़ होता अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मदद त़लब की तो आप ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़ौरन मन्अ़ फ़रमा देते कि ऐ उ़मर ग़ैरुल्लाह से मदद मांगना नाजाइज़ है लिहाज़ा तुम सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही से मदद त़लब करो।"

.....हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मन्अ़ करने के बजाए आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए की मुवाफ़िक़त फ़रमाई और पूरे लश्कर को उन की राए पर अ़मल करने का हुक्म दिया और लश्कर ने इस पर अ़मल भी किया। मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे बन्दों से मदद त़लब करने की बात करना और उन से मदद त़लब करना दोनों बातें सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से साबित हैं।

.....इस वाक़िए से येह भी मा'लूम हुवा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बे शुमार इख़्तियारात अ़ता फ़रमाए हैं और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर किसी चीज़ में बरकत की दुआ़ फ़रमा दें तो रब तआ़ला उस में इतनी बरकत पैदा फ़रमा देता है कि कसीर ता'दाद उस से फ़ैज़याब हो जाए तब भी उस में किसी क़िस्म की कोई कमी नहीं आती।

जिस को जो मिला उन से मिला لا وَرَبِّ الْعَرْش
बटती है कौनैन में ने'मत रसूलुल्लाह की
अ़र्शे ह़क़ है मस्नदे रिफ़अ़त रसूलुल्लाह की
देखनी है ह़श्र में इ़ज़्ज़त रसूलुल्लाह की

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(24).....ताऊ़न ज़दा अ़लाक़े में न जाने के मुतअ़ल्लिक़ आप की मुवाफ़िक़त

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه मुल्के शाम की त़रफ़ निकले। जब आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه तबूक के क़रीब एक बस्ती सर्ग़ में पहुंचे तो रास्ते में मुल्के शाम की त़रफ़ से आने वाले सह़ाबिये रसूल अमीनुल उम्मत ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه और दीगर उमराए लश्कर की आप से मुलाक़ात हो गई। उन्हों ने आप को इस बात से मुत्तलअ़ किया कि मुल्के शाम में त़ाऊ़न की वबा फैल गई है। सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने मुझे हुक्म दिया कि "साबिक़ुल हिजरत मुहाजिरीन सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को बुला लाओ।" मैं गया और उन तमाम सह़ाबा को बुलाया। आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने उन्हें सूरते ह़ाल से आगाह किया और मश्वरा लिया तो उन में दो गुरौह हो गए। बा'ज़ कहने लगे कि हम ने जिस काम का इरादा किया है उस से पीछे नहीं हटना चाहिये येह मुनासिब नहीं है। जब कि बा'ज़ की राए येह थी कि त़ाऊ़न ज़दा अ़लाक़े में दाख़िल होना मुनासिब नहीं।

आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने उन तमाम को भेज दिया और मुझे हुक्म इरशाद फ़रमाया कि अब "अन्सार" को बुला लाओ। मैं गया और अन्सार सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को बुला लाया। आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने उन से भी मश्वरा त़लब किया तो उन में भी दो गुरौह हो गए। बा'ज़ कहने लगे कि हम जिस काम का इरादा कर के आए हैं उसे ज़रूर पूरा करना चाहिये। उस से पीछे हटना मुनासिब नहीं जब कि बा'ज़ की राए येह थी कि त़ाऊ़न ज़दा अ़लाक़े में दाख़िल होना मुनासिब नहीं।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन तमाम को भी भेज दिया और मुझे हुक्म इरशाद फ़रमाया कि अब उन्हें बुलाओ जो फ़त्हे मक्का के क़रीब इस्लाम लाने वाले क़ुरैश हैं। मैं गया और उन तमाम सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को बुला लाया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से भी मश्वरा त़लब किया लेकिन उन सब से इस बात पर इत्तिफ़ाक़ किया कि वापस लौट चलें त़ाऊ़न ज़दा अ़लाक़े में दाख़िल न हों। बहर ह़ाल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब उन तमाम सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मश्वरा ले लिया तो हुक्म इरशाद फ़रमाया कि तमाम सुब्ह़ वापस जाएंगे। सुब्ह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : اَفِرَارًا مِنْ قَدَرِ اللّٰہِ "हुज़ूर ! येह आप ने क्या फ़ैसला फ़रमाया है ?" क्या हम अल्लाह की तक़्दीर से भाग कर वापस जाएंगे ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू उ़बैदा ! अगर येह बात किसी और ने कही होती तो बेहतर होता।" फिर फ़रमाया : نَعَمْ! نَفِرُّ مِنْ قَدَرِ اللّٰہِ اِلٰی قَدَرِ اللّٰہِ "हां ! हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तक़्दीर से भाग कर उस की तक़्दीर ही की त़रफ़ लौटेंगे।" ज़रा एक बात बताओ ! अगर तुम ह़ालते सफ़र में ऊंट पर सुवार हो और तुम्हें एक ऐसी वादी में उतरना पड़े जिस के दो किनारे हों, एक सर सब्ज़ और दूसरा ख़ुश्क। वहां अगर तुम अपना ऊंट चरने के लिये सर सब्ज़ किनारे पर छोड़ो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तक़्दीर से ऐसा करोगे और अगर ख़ुश्क किनारे में छोड़ दो तो भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तक़्दीर से ही ऐसा करोगे।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि इतने में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ तशरीफ़ ले आए जो किसी ह़ाजत के लिये बाहर गए हुवे थे। जब उन्हें मा'लूम हुवा तो वोह फ़रमाने लगे कि हुज़ूर इस मुआ़मले में मेरे पास एक ह़दीसे पाक है। मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना है कि اِذَا سَمِعْتُمْ بِہٖ بِاَرْضٍ فَلَا تَقْدَمُوْا عَلَیْہِ وَاِذَا وَقَعَ بِاَرْضٍ وَاَنْتُمْ بِہَا فَلَا تَخْرُجُوْا فِرَارًا مِنْہُ "या'नी जब तुम सुनो कि किसी अ़लाक़े में त़ाऊ़न की वबा आ गई है तो वहां मत जाओ और अगर तुम ऐसे अ़लाक़े में मौजूद हो जिस में त़ाऊ़न की वबा है तो उस से डर कर वहां से मत भागो।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी राए की मुवाफ़िक़त में जब येह ह़दीसे मुबारका सुनी तो आप ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना बयान की और फिर वापस लौट आए।(1)

---

(1)......بخاری، کتاب الطب، باب مایذکر فی الطاعون، ج۴، ص۲۸، حدیث: ۵۷۲۹۔
صحیح ابن حبان، کتاب الجنائز، ذکر الزجر عن القدوم علی البلد۔۔۔الخ، الجزء: ۴، ج۳، ص۲۶۵، حدیث: ۲۹۴۲۔

(25).....फ़ारूके आ'ज़म की राए कि "लोग अ़मल करना छोड़ देंगे"

हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि मैं अपनी क़ौम के कुछ लोगों के साथ हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवा। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اَبْشِرُوا وَبَشِّرُوا مَنْ وَرَاءَكُمْ، اَنَّهُ مَنْ شَهِدَ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ صَادِقًا بِهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ

"या'नी तुम्हारे लिये खुश ख़बरी है और तुम अपने बा'द वालों को खुश ख़बरी दे दो कि जो शख़्स सच्चे दिल से इस बात की गवाही दे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं तो वोह जन्नत में दाख़िल हो गया।"

येह सुन कर जब हम बारगाहे रिसालत से वापस आए तो लोगों को इस बात की खुश ख़बरी देने लगे इतने में हमारा सामना अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से हो गया, हमारी गुफ़्तगू सुन कर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हमें ले कर बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो गए और अ़र्ज़ किया : يَارَسُوْلَ اللّٰهِ اِذًا يَتَّكِلُ النَّاس "या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगर लोगों में येह बात फैला दी जाए तो वोह इसी पर तक्या कर के दीगर अ़मल वग़ैरा छोड़ देंगे।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह बात सुन कर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ामोश हो गए और इन्कार न फ़रमाया।[1] (गोया आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए को तक़रीरी मुवाफ़िक़त हासिल हो गई।)

(26).....दुआ़ए नबवी से फ़ारूके आ'ज़म की मुवाफ़िक़त

हज़रते सय्यिदुना अज़्रक़ बिन क़ैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हमें एक सहाबी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़ पढ़ाई जिन की कुन्यत अबू रमसा थी। नमाज़ के बा'द उन्हों ने एक वाक़िआ़ हमें बयान किया कि मैं ने मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इक़्तिदा में येही या कोई और नमाज़ अदा की। अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दाईं त़रफ़ सफ़े अव्वल में खड़े होते थे। मैं ने देखा कि सफ़े अव्वल में एक ऐसा शख़्स भी था जो तक्बीरे ऊला में शरीक हुवा था। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जैसे ही नमाज़ ख़त्म की तो वोह शख़्स वहीं खड़ा हो कर दो रक्अ़त पढ़ने लगा। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर

1.....مسند امام احمد، حديث ابی موسی اشعری، ج ۷، ص ۱۴۴، حديث: ۱۹۶۱۴۔

फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जैसे ही उसे देखा तो फ़ौरन उठे और उसे कन्धे से पकड़ कर झन्झोड़ा और फ़रमाया : اِجْلِسْ فَاِنَّہٗ لَمْ یَہْلِکْ اَھْلُ الْکِتَابِ اِلَّا اَنَّہٗ لَمْ یَکُنْ بَیْنَ صَلَوَاتِہِمْ فَصْلٌ "या'नी बैठ जाओ ! अहले किताब इसी लिये हलाक हुवे कि उन्हों ने अपनी नमाज़ों (या'नी फ़राइज़ व सुनन) में फ़ासिला न रखा।" मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने निगाह उठा कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ देखा और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़े'ल की मुवाफ़िक़त फ़रमाते हुवे यूं दुआ़ इरशाद फ़रमाई : اَصَابَ اللّٰہُ بِکَ یَا ابْنَ الْخَطَّابِ "या'नी ऐ उ़मर ! अल्लाह तुझे हमेशा साइबुर्राए रखे।"(1)

(27).....फ़ारूक़े आ'ज़म की राए की बारगाहे रिसालत में क़बूलिय्यत

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार हम दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर थे हमारे साथ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी मौजूद थे। अचानक सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उठ कर कहीं तशरीफ़ ले गए। जब काफ़ी देर हो गई तो तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को तशवीश लाह़िक़ हुई। सब से पहले मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तलाश में निकल खड़ा हुवा और मेरे पीछे पीछे दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी निकल आए। मैं बनू नज्जार के एक बाग़ तक पहुंच गया मगर बाग़ में दाख़िल होने का कोई रास्ता नज़र न आया बिल आख़िर एक छोटी सी जगह मिल गई जिस से मैं अन्दर दाख़िल हो गया। जैसे ही रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रुख़े अन्वर की ज़ियारत की तो सुख का सांस लिया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जैसे ही मुझे देखा तो इरशाद फ़रमाया : مَا شَاْنُکَ "या'नी ऐ अबू हुरैरा ! क्या बात है ?" मैं ने सारा माजरा बयान कर दिया और साथ ही येह भी बता दिया कि दीगर अस्ह़ाब मेरे पीछे पीछे आ रहे हैं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे अपनी ना'लैन (मुबारक चप्पल) अ़त़ा करते हुवे इरशाद फ़रमाया : اِذْھَبْ بِنَعْلَيَّ ھَاتَیْنِ فَمَنْ لَقِیتَ مِنْ وَرَاءِ ھَذَا الْحَائِطِ یَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُسْتَیْقِنًا بِھَا قَلْبُہٗ فَبَشِّرْہُ بِالْجَنَّۃِ "या'नी मेरी येह ना'लैन ले जाओ और इस बाग़ के बाहर जिस शख़्स से मुलाक़ात हो और वोह दिल से गवाही दे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं तो उसे जन्नत की ख़ुश ख़बरी दे दो।" फ़रमाते हैं कि मैं वोह ना'लैने मुबारका ले कर जैसे ही बाग़ के बाहर आया तो सब से पहले मेरी मुलाक़ात अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से हो गई। उन्हों ने मेरे हाथ

1.....ابوداود، کتاب الصلوۃ، باب فی الرجل یتطوع فی مکانہ، ج ۱، ص ۳۷۶، حدیث: ۱۰۰۷ مختصرا۔

में जब ना'लैने मुबारका देखीं तो पूछा : مَاھَاتَانِ النَّعْلَانِ یَا اَبَاھُرَیْرَۃ "या'नी ऐ अबू हुरैरा ! येह ना'लैन कैसी हैं ?" मैं ने अ़र्ज़ किया कि येह ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ना'लैने मुबारका हैं और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे येह दे कर भेजा है और इरशाद फ़रमाया कि ऐ अबू हुरैरा ! इस दीवार के पीछे जिस शख़्स से मुलाक़ात हो और वोह दिल से इस बात की गवाही दे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं तो उसे जन्नत की ख़ुश ख़बरी दे दो ।

येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मेरे सीने में इतने ज़ोर की ज़र्ब लगाई कि मैं पीठ के बल गिर गया और फ़रमाया : "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में वापस चलो ।" मैं रोता हुवा बारगाहे रिसालत में पहुंचा तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि : مَالَکَ یَا اَبَاھُرَیْرَۃ "ऐ अबू हुरैरा क्या हुवा ?" मैं ने सारा माजरा बयान कर दिया तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : یَا عُمَرُ مَا حَمَلَکَ عَلٰی مَا فَعَلْتَ "या'नी ऐ उ़मर ! तुम्हें किस बात ने ऐसा करने पर मजबूर किया ?"

सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या आप ने अबू हुरैरा को अपनी ना'लैन दे कर भेजा था और साथ में येह भी फ़रमाया था कि जो दिल से इस बात की गवाही दे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं तो उसे जन्नत की ख़ुश ख़बरी दे दो ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हां ।" अ़र्ज़ किया : فَلَا تَفْعَلْ فَاِنِّی اَخْشٰی اَنْ یَّتَّکِلَ النَّاسُ عَلَیْھَا فَخَلِّھِمْ یَعْمَلُوْنَ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसा मत कीजिये क्यूंकि मुझे ख़ौफ़ है कि लोग इसी पर तक्या कर के बैठ जाएंगे और कोई अ़मल वग़ैरा नहीं करेंगे लिहाज़ा आप उन्हें अ़मल करने दीजिये ।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए की मुवाफ़िक़त करते हुवे इरशाद फ़रमाया : فَخَلِّھِمْ "या'नी ऐ उ़मर ! अगर ऐसी बात है तो ठीक है उन्हें अ़मल करने दो ।"(1)

सह़ाबए किराम की मुवाफ़िक़त

(28).....फ़ारूक़े आ'ज़म की राए, सिद्दीक़े अक्बर की मुवाफ़िक़त

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ारिक़ बिन शिहाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि बनी असद और बनी ग़त़फ़ान का एक वफ़्द ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास सुल्ह़ की

1 .....مسلم، کتاب الایمان، الدلیل علی ان من مات علی التوحید، ص ۳۷، حدیث: ۵۲۔

ग़रज़ से आया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें इरशाद फ़रमाया : "या तो फ़ैसला कुन जंग इख़्तियार कर लो या ज़िल्लत आमेज़ सुल्ह़।" वोह कहने लगे : "फ़ैसला कुन जंग का मत़लब तो हम जानते हैं मगर येह ज़िल्लत आमेज़ सुल्ह़ से आप की क्या मुराद है ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "तुम से ज़िरहें और हथयार वग़ैरा सब ले लिये जाएंगे, जो माले ग़नीमत हमें ह़ासिल होगा वोह हमारा ही होगा और जो कुछ तुम हम से ह़ासिल करोगे वोह वापस कर दोगे। तुम हमारे मक़्तूलीन की दीयतें अदा करोगे मगर तुम्हारे मक़्तूलीन जहन्नम में जाएंगे। (या'नी हम उन का ख़ूनबहा अदा नहीं करेंगे) तुम्हें ऐसी क़ौमों की त़रह़ आज़ाद छोड़ दिया जाएगा जो ऊंटों की दुम के पीछे खींची चली जाती हैं। येह मुआ़मला तुम से उस वक़्त तक किया जाता रहेगा जब तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा पर कोई दूसरी सूरत ज़ाहिर न कर दे जिस के सबब तुम्हें मा'ज़ूर क़रार दे दिया जाए।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह गुफ़्तगू आ़म मुसलमानों के सामने पेश की ताकि उन की भी राए मा'लूम की जा सके। तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर येह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का फ़ैसला था हमारी अ़र्ज़ येह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़ैसला कुन जंग और ज़िल्लत आमेज़ सुल्ह़ की बात बहुत अच्छी कही है, यूंही हम उन से जो लें वोह हमारा और वोह जो कुछ ले लें वोह भी हमारा, येह भी बड़ी अच्छी बात है। अलबत्ता येह जो आप ने कहा है कि हमारे मक़्तूलीन की दीयतें अदा की जाएंगी और उन के मक़्तूलीन जहन्नम में हैं। इस के मुतअ़ल्लिक़ अ़र्ज़ येह है कि हमारे शुहदा यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में क़ुरबान हुवे हैं हमें उन की दीयतें लेने की क्या ज़रूरत ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस बात पर अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ समेत पूरी क़ौम ने इत्तिफ़ाक़े राए ज़ाहिर किया और इसी बात पर कुफ़्फ़ार से सुल्ह़ कर ली गई।[1]

(29).....सिद्दीके़ अक्बर की जम्ए क़ुरआन में फ़ारूके़ आ'ज़म की मुवाफ़िक़त

अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौर में मुसैलमा कज़्ज़ाब के ख़िलाफ़ एक ज़बरदस्त जंग लड़ी गई जिस में कसीर ता'दाद में हुफ़्फ़ाज़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की शहादत हुई। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी फ़ह्मो फ़िरासत से येह बात जान ली कि अगर यूंही मुख़्तलिफ़ जंगों में सह़ाबए

1 .....سنن کبری، کتاب الاشربہ، قتال اھل الردۃ، ج۸، ص ۵۸۱، حدیث: ۱۷۲۳۲ ملخصاً۔

किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان शहीद होते रहे तो कुरआने करीम का अक्सर हिस्सा जाता रहेगा। लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ को येह राए और मदनी मश्वरा दिया कि मौजूदा हुफ़्फ़ाज़ सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان की मुआवनत से जम्ए़ कुरआन की तरकीब बनाई जाए। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ की राए की मुवाफ़िक़त फ़रमाई और जम्ए़ कुरआन का अज़ीम काम पायए तक्मील तक पहुंचाया।[1]

(30).....सहाबए किराम की बैअ़ते सिद्दीक़े अक्बर में फ़ारूक़े आ'ज़म की मुवाफ़िक़त

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द अमीरुल मोमिनीन, ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ की बैअ़त के मुआमले में जब मुहाजिरीन व अन्सार सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان में इख़्तिलाफ़ वाक़ेअ़ हुवा तो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने फ़ौरन आगे बढ़ कर हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ की बैअ़त कर ली। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ का बैअ़त करना था कि मुहाजिरीन व अन्सार सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ की मुवाफ़िक़त में टूट पड़े और तमाम सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان ने बैअ़त कर ली।[2]

फ़ारूक़े आ'ज़म की दीगर मुवाफ़िक़ात

(31).....जैसा आप चाहते वैसा ही होता

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ को जब भी येह कहते हुवे देखा कि "मेरे ख़याल में येह काम यूं होना चाहिये।" तो वोह काम उसी त़रह़ हो के रहा। चुनान्चे, एक बार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ बैठे हुवे थे कि वहां से एक ख़ूबरू नौजवान गुज़रा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने फ़रमाया : "मुझे लगता है कि येह शख़्स जाहिलिय्यत में अपनी क़ौम का नुजूमी था। इसे बुलाओ।" लोग उसे बुला कर लाए तो

---

1 ......بخاری، کتاب فضائل القرآن، باب جمع القرآن، ج ۳، ص ۳۹۸، حدیث: ۴۹۸۶ ملتقطاً۔
"जम्ए़ कुरआन" की तफ़्सीलात के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 723 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर" बाब "ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े अक्बर" मौज़ूअ़ "सिद्दीक़े अक्बर और जम्ए़ कुरआन" स. 415 का मुत़ालआ़ कीजिये।

2 ......سنن کبری للنسائی، کتاب المناقب، باب فضل ابی ابکر الصدیق، ج ۵، ص ۳۷، حدیث: ۸۱۰۹ ملتقطاً۔
اسد الغابۃ، عبد اللہ بن عثمان، خلافتہ، ج ۳، ص ۴۳۸ ملتقطاً۔

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से फ़रमाया : ''मेरा गुमान ग़लत़ भी हो सकता है मगर लगता है कि ज़मानए जाहिलिय्यत में तुम नुजूमी थे ?'' वोह कहने लगा : ''इस से क़ब्ल किसी मुसलमान शख़्स से मेरी ऐसी मुलाक़ात नहीं हुई ।'' आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''मैं तुम्हें क़सम देता हूं कि मेरी बात का जवाब दो ।'' वोह कहने लगा : ''आप ने सह़ीह़ कहा मैं वाक़ेई कुफ़्फ़ार का नुजूमी था ।'' आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''तुम्हारे जिन्न ने तुम्हें जो सब से अ़जीब ख़बर दी हो वोह बताओ ।'' वोह कहने लगा कि एक दिन मैं बाज़ार में था, मेरा जिन्न मेरे पास डरा हुवा आया और कहने लगा : ''क्या तुम को मा'लूम नहीं जब से जिन्नात को आस्मान की ख़बरों से रोक दिया गया है वोह किस क़दर ख़ौफ़ज़दा और मायूस हैं और ऊंटनियों के पालानों और उन के झोलों के साथ चिमट गए हैं ।'' या'नी वोह जिन्न मुझे बता रहा था कि हमारी जिन्न क़ौम हर मक़ाम की ख़बर ह़ासिल कर लेती है और अब उन्हें नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नबुव्वत का इ़ल्म हो गया है और जिन्नात उन पर ईमान ला रहे हैं। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : उस जिन्न ने सच कहा था क्यूंकि एक बार मैं भी दौरे जाहिलिय्यत में कुफ़्फ़ार के झूटे ख़ुदाओं के पास था कि एक शख़्स ने उन के चरनों में एक बछड़ा ला कर ज़ब्ह़ किया उस बछड़े ने ज़ोरदार चीख़ मारी ऐसी शदीद चीख़ मैं ने कभी नहीं सुनी थी, फिर उस बछड़े ने कहा : ऐ वोह शख़्स जिस के सर के बाल थोड़े हैं, बड़ा सब्र आज़्मा मर्ह़ला आ गया है। एक फ़सीहुल्लिसान शख़्स कह रहा है : لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا اللہ येह सुन कर लोग उछल पड़े तो मैं ने दिल में फ़ैसला किया कि जब तक इस आवाज़ की ह़क़ीक़त मा'लूम न हो जाए मुझे यहां से नहीं जाना चाहिये। चुनान्चे, फिर आवाज़ आई। एक फ़सीहुल्लिसान शख़्स कह रहा है : لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا اللہ येह सुन कर मैं उठ खड़ा हुवा और येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी हैं।(1)

(32).....अजनबी शख़्स की पहचान

एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे साथ ही आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अस्ह़ाब भी थे कि एक शख़्स का वहां से गुज़र हुवा उन का नाम सय्यिदुना सवाद बिन क़ारिब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ था। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उन्हें न जानते थे इस के बा वुजूद उन से इरशाद फ़रमाया : ''क्या तुम अभी तक अपने इ़ल्मे नुजूम पर अ़मल पैरा हो ?'' इस पर उन्हें ग़ुस्सा आ गया और वोह कहने लगे : ''ख़ुदा की क़सम ! जब से मैं मुसलमान

(1).....بخاری، کتاب المناقب، اسلام عمر بن خطاب، ج ۲، ص ۵۷۸، حدیث: ۳۸۶۶۔

हुवा हूं आप जैसी बात किसी ने नहीं कही।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ज़मानए जाहिलिय्यत में हम शिर्क की बुराई में मुब्तला थे जो यक़ीनन तुम्हारे इल्मे नुजूम से ज़ियादा बुरी बात थी। चलो मुझे येह बताओ कि तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़ुहूर की ग़ैबी इत्तिलाअ़ कैसे दी थी ? हज़रते सय्यिदुना सवाद बिन क़ारिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "ठीक है मैं बताता हूं।" फिर फ़रमाया : "एक रात मैं बेदारी और ख़्वाब की मिली जुली कैफ़िय्यत में था कि एक जिन्न आया, उस ने मुझे पाउं से ठोकर मारी और कहने लगा : सवाद बिन क़ारिब ! उठो, अगर समझदार हो तो समझ लो, अगर तुम्हें अ़क़्ल है तो येह बात अपनी अ़क़्ल में बिठा लो कि लुवय बिन ग़ालिब की औलाद में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने एक रसूल भेजा है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत की दा'वत देता है। इस के बा'द उस जिन्न ने येह अश्आ़र कहना शुरूअ़ किये :

عَجِبْتُ لِجِنٍّ وَتَجَسُّسَاتِهَا ... وَسَدِّهَا الْعِيْسِ بِاَحْلَاسِهَا

तर्जमा : "मुझे जिन्नों और उन की सुराग़ रसानियों पर तअ़ज्जुब है, वोह कहां कहां तक सफ़र कर के जा पहुंचते हैं।"

تَهْوِى اِلٰى مَكَّتَهُ تَبْغِى الْهُدٰى ... مَاخَيْرُ الْجِنِّ كَاَنْجَاسِهَا

तर्जमा : "येह जिन्न मक्का में आ पहुंचे हैं, हिदायत की तलाश में, और अच्छे जिन्न गन्दे जिन्नों की त़रह़ नहीं हैं।"

فَارْحَلْ اِلَى الصَّفْوَةِ مِنْ هَاشِمٍ ... وَاسْمِ بَغْيَتَكَ اِلٰى رَاْسِهَا

तर्जमा : "अपने अस्ल मक़्सूद पर नज़र रखते हुवे बनू हाशिम के बर गुज़ीदा इन्सान की त़रफ़ हिजरत करो।"

इस के बा'द दो तीन रातें वोह जिन्न इसी त़रह़ आता रहा और मुझे अश्आ़र सुनाता रहा। तब मेरे दिल में इस्लाम की महब्बत बैठ गई। चुनान्चे, चौथे रोज़ की सुब्ह़ मैं ने रख़्ते सफ़र बांधा और मक्कए मुकर्रमा जा पहुंचा। वहां मुझे पता चला कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो मदीनए मुनव्वरा हिजरत कर गए हैं तो मैं भी मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरा आ गया। यहां पहुंचने पर मा'लूम हुवा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा हैं। चुनान्चे, मैं ने मस्जिद के बाहर अपनी ऊंटनी बांधी और मस्जिद में दाख़िल हो गया। आप मुझे अपने क़रीब बुलाते रहे यहां तक कि मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बिल्कुल सामने पहुंच गया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मुझे अपना क़िस्सा सुनाओ।" मैं ने अपने साथ पेश आने वाला येह सारा वाक़िआ़ सुना

दिया और साथ ही कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गया। सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان बहुत ही मसरूर हुवे और उन के चेहरे ख़ुशी से दमकने लगे।" ह़ज़रते सय्यिदुना सवाद बिन क़ारिब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का येह वाक़िआ़ सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه उठे और उन से बग़ल गीर हो गए। फ़रमाया : "मेरी तमन्ना थी कि मैं येह वाक़िआ़ तुम्हारी ज़बान से सुनूं।"[1]

आस्मानी किताबों से आप की मुवाफ़िक़त

(33).....फ़ारूक़े आ'ज़म के अल्फ़ाज़ और तौरात की मुवाफ़िक़त

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन शिहाब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत करते हैं कि एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब अह़बार ने जो यहूद के बहुत बड़े आ़लिम थे अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की बारगाह में येह अ़र्ज़ किया : وَيْلٌ لِّسُلْطَانِ الْاَرْضِ مِنْ سُلْطَانِ السَّمَاءِ "या'नी आस्मानों के मालिक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ज़मीन के बादशाह के लिये तबाही व बरबादी है।" येह सुन कर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : اِلَّا مَنْ حَاسَبَ نَفْسَهٗ "या'नी येह तबाही व बरबादी उस बादशाह के लिये नहीं है जो अपने नफ़्स का मुह़ासबा करे।" येह सुनते ही ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब अह़बार رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़ौरन अ़र्ज़ किया : وَالَّذِيْ نَفْسِيْ بِيَدِهٖ اِنَّهَا فِي التَّوْرَاةِ "या'नी उस रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है! तौरात शरीफ़ में बिऐ़निही येही लिखा हुवा है जो आप ने इरशाद फ़रमाया है।" जैसे ही अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने येह सुना तो اللّٰهُ اكبر कहा और सजदा रेज़ हो गए।[2]

(34).....फ़ारूक़े आ'ज़म का जवाब और तौरात की मुवाफ़िक़त

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ारिक़ बिन शिहाब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि क़ौमे यहूद में एक शख़्स अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की बारगाह में ह़ाज़िर

---

1 ......مستدرک حاکم، کتاب معرفۃ الصحابہ، ذکر سواد بن قارب الازدی، ج ۴، ص ۷۹۸، حدیث: ۶۶۱۷ ملتقطا۔
معجم کبیر، سواد بن قارب، ج ۷، ص ۹۲، حدیث: ۶۴۷۵ ملتقطا۔

2 ......الرد علی الجھمیہ للدارمی، باب استواء الرب۔۔۔الخ، الرقم: ۸۴، ص ۵۹، الصواعق المحرقۃ، ص ۱۰۱، تاریخ الخلفاء، ص ۹۹۔

हुवा और अ़र्ज़ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान के बारे में आप की क्या राए है :

﴾وَ سَارِعُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ جَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَ الْاَرْضُۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِیْنَۙ﴿۱۳۳﴾﴿ (پ۴، آل عمران:۱۳۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और दौड़ो अपने रब की बख़्शिश और ऐसी जन्नत की त़रफ़ जिस की चौड़ान में सब आस्मानो ज़मीन आ जाएं परहेज़गारों के लिये तय्यार रखी है।"

अगर जन्नत की चौड़ाई इतनी बड़ी है तो फिर दोज़ख़ कहां गई ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस का सुवाल सुन कर अपने पास बैठे हुवे दीगर अस्ह़ाब से फ़रमाया : "इसे जवाब दो।" लेकिन उन में से किसी ने जवाब न दिया । तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से जवाबन एक सुवाल किया : **اَرَاَیْتَ النَّھَارَ اِذَا جَاءَ اَلَیْسَ یَمْلَاُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ** "या'नी क्या तुम ने कभी दिन को नहीं देखा जब वोह आता है तो ज़मीनो आस्मान उस की रौशनी से भर जाते हैं, या'नी दिन ही दिन होता है ?" उस ने कहा : "जी हां वाके़ई ऐसा होता है।" फ़रमाया : **فَاَیْنَ اللَّیْلُ** तो फिर रात कहां जाती है ? उस ने अ़र्ज़ किया : **حَیْثُ شَاءَ اللّٰہُ عَزَّ وَجَلَّ** "या'नी जहां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहे।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : **فَالنَّارُ حَیْثُ شَاءَ اللّٰہُ عَزَّ وَجَلَّ** "बस फिर दोज़ख़ भी वहीं चली गई जहां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा।" येह सुन कर उस ने अ़र्ज़ किया : **وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِہٖ یَا اَمِیْرَ الْمُؤْمِنِیْنَ اِنَّھَا لَفِیْ کِتَابِ اللّٰہِ الْمُنَزَّلِ کَمَا قُلْتَ** "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! उस रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! जैसा आप ने फ़रमाया है वैसा ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाज़िल कर्दा किताब (तौरात) में लिखा है।"(1)

मिली ताईदे ख़ुदा, ताईदे ह़बीबे ख़ुदा, मिल गई ताईदे अस्ह़ाबे ख़ैरुल वरा
दिया ह़क़ ने उन का साथ है फ़ारूके़ आ'ज़म की क्या बात है
पैकरे सिद्क़ो सफ़ा, उन के ह़क़ में रसूले ख़ुदा की दुआ़
जब भी तू कुछ कहे ह़क़ तेरे साथ है, फ़ारूके़ आ'ज़म की क्या बात है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(1)......درمنثور، پ۴، آل عمران، تحت الآیۃ: ۱۳۳، ج۲، ص۳۱۵۔
کنز العمال، کتاب القیامۃ، باب النار، الجزء: ۱۴، ج۷، ص۲۷۸، حدیث: ۳۹۲۷۸۔

पन्द्रहवां बाब

ख़ुसूसिय्याते फ़ारूक़े आ'ज़म

इस बाब में मुलाहज़ा कीजिये..................

...... ख़ास्सा किसे कहते हैं ?

......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की 23 ख़ुसूसिय्यात का तफ़्सीली बयान

......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुरादे रसूल हैं।

......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चालीसवें मुसलमान हैं।

......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़बूले इस्लाम पर आयत का नुज़ूल हुवा।

......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़बूले इस्लाम से इस्लाम और मुसलमानों दोनों को तक़्विय्यत मिली।

......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बिला ख़ौफ़ो ख़त़र ए'लानिय्या हिजरत की।

......ह़क़ हमेशा सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ रहा।

......सब से ज़ियादा फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुवाफ़िक़त में आयात नाज़िल हुईं।

......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जन्नती मह़ल को ख़ुद रसूलुल्लाह ने जन्नत में मुलाह़ज़ा फ़रमाया।

......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस उम्मत के मुह़द्दस हैं।

... ...

खुसूसिय्याते फ़ारूके़ आ'ज़म

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! "ख़ास्सा" किसी शख़्स की ज़ात में मौजूद उस वस्फ़ को कहते हैं जो सिर्फ़ उसी की ज़ात में पाया जाए उस के ग़ैर में न पाया जाए। या उस के ग़ैर में पाया तो जाए लेकिन वोह इतना मश्हूर न हो । अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते मुबारका में भी कई ऐसी खुसूसिय्यात हैं जो किसी और में नहीं पाई जातीं या अगर पाई भी जाती हैं तो मश्हूर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ात से ही हैं। चन्द खुसूसिय्यात पेशे ख़िदमत हैं :

(1).....फ़ारूके़ आ'ज़म मुरादे रसूल

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह खुसूसिय्यत ह़ासिल है कि आप मुरादे रसूल हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने खुद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से मांगा है । चुनान्चे, उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है, फ़रमाती हैं कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये यूं दुआ़ फ़रमाई : اَللّٰھُمَّ اَعِزَّ الْاِسْلَامَ بِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ خَاصَّۃً या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! खुसूसन उ़मर बिन ख़त्ताब के ज़रीए़ इस्लाम को इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमा ।[1]

(2).....फ़ारूके़ आ'ज़म चालीसवें मुसलमान

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक खुसूसिय्यत येह भी है कि आप चालीसवें नम्बर पर इस्लाम लाए और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह खुसूसिय्यत बदीही (बिल्कुल वाज़ेह़) है क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पहले जो इस्लाम लाए वोह उन्तालीसवें और जो आप के बा'द इस्लाम लाए वोह इक्तालीसवें सह़ाबी थे, लिहाज़ा येह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की खुसूसिय्यत है कि आप चालीसवें मुसलमान हैं। आ'ला ह़ज़रत अ़ज़ीमुल बरकत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن इरशाद फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस वक़्त ईमान लाए जब कुल मर्द व औ़रत 39 मुसलमान थे। आप चालीसवें मुसलमान हैं, इसी वासिते़ आप का नाम "मुतम्मिमुल अरबईन" है या'नी चालीस मुसलमानों के पूरा करने वाले ।"[2]

1.....ابن ماجہ، کتاب السنۃ، فضل عمر رضی اللہ عنہ، ج ۱، ص ۷۷، حدیث: ۱۰۵۔

2.....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 397 ।

(3).....फ़ारूके़ आ'ज़म के क़बूले इस्लाम पर आयत का नुज़ूल

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर 39 अफ़राद इस्लाम ला चुके थे हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुसलमान होने पर चालीस की ता'दाद मुकम्मल हो गई तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई : ﴿يٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَ مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ۠﴾(پ۱۰، الانفال:۶۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "ऐ ग़ैब की ख़बरे बताने वाले (नबी) **अल्लाह** तुम्हें काफ़ी है और येह जितने मुसलमान तुम्हारे पैरू हुवे।"(1)

(4).....क़बूले इस्लाम के बा'द इज़हारे इस्लाम

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़ुसूसिय्यात में से येह भी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़बूले इस्लाम के फ़ौरन बा'द इस का इज़्हार फ़रमा दिया और बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या हम ह़क़ पर नहीं हैं? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्यूं नहीं?" अ़र्ज़ किया : "फिर इज़्हारे ह़क़ में ख़ौफ़ और ख़त़रे का एह़सास क्यूं।" बा'दे अज़ां तमाम मुसलमान दो क़ित़ारों में का'बतुल्लाह शरीफ़ गए।(2)

(5).....क़बूले इस्लाम के बा'द कुफ़्फ़ार के घरों में इज़्हारे इस्लाम

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़ुसूसिय्यात में से येह बात है कि क़बूले इस्लाम के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बड़े बड़े कुफ़्फ़ारे मक्का के घरों में ख़ुद गए और उन पर अपना इस्लाम ज़ाहिर किया। नीज़ का'बतुल्लाह शरीफ़ में जा कर अपने क़बूले इस्लाम का इज़्हार किया जिस से तमाम कुफ़्फ़ारे मक्का में येह बात फ़िलफ़ौर फैल गई।(3)

(6).....फ़ारूके़ आ'ज़म के क़बूले इस्लाम के बा'द तक़्विय्यते इस्लाम

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह भी ख़ुसूसिय्यत है कि आप के क़बूले इस्लाम से इस्लाम को सब से ज़ियादा फ़ाइदा पहुंचा, इस्लाम को तक़्विय्यत मिली, मुसलमानों के हौसले बढ़ गए और

---

1 ......معجم کبیر، احادیث عبد اللہ بن العباس ــــ الخ، ج ۱۲، ص ۴۷، حدیث: ۱۲۴۷۰۔

2 ......تاریخ الخلفاء، ص ۹۰۔

3 ......طبقات کبری، ذکر اسلام عمر، ج ۳، ص ۲۰۴۔

ए'लानिय्या इस्लाम की दा'वत दी जाने लगी, मुसलमानों ने का'बतुल्लाह शरीफ़ में कुफ़्फ़ारे मक्का के सामने ए'लानिय्या नमाज़ अदा की, कुफ़्फ़ार की ताक़त टूट गई और मुसलमानों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इ़ज़्ज़त बख़्शी।[1]

(7).....फ़ारूके़ आ'ज़म महबूबे ख़ुदा

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह भी ख़ुसूसिय्यत है कि आप महबूबे ख़ुदा हैं। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यूं दुआ़ फ़रमाई : اَللّٰھُمَّ أَعِزَّ الْإِسْلَامَ بِأَحَبِّ ھٰذَیْنِ الرَّجُلَیْنِ إِلَیْکَ بِأَبِي جَھْلٍ أَوْ بِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ "या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अबू जह्ल और उ़मर बिन ख़त्ताब में से जो तेरा मह़बूब है उस के ज़रीए इस्लाम को इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमा।"[2]

तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दोनों में से आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़रीए इस्लाम को इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमाई गोया आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब हैं।

(8).....फ़ारूके़ आ'ज़म के क़बूले इस्लाम पर फ़िरिश्तों की ख़ुशी

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह भी ख़ुसूसिय्यत है कि आप के क़बूले इस्लाम पर फ़िरिश्तों ने भी ख़ुशियां मनाईं, आप के क़बूले इस्लाम के बा'द जिब्रीले अमीन ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! لَقَدِ اسْتَبْشَرَ اَھْلُ السَّمَآءِ بِاِسْلَامِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ "या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस्लाम लाने पर आस्मान वाले एक दूसरे को ख़ुश ख़बरी दे रहे हैं।"[3]

(9).....फ़ारूके़ आ'ज़म की ए'लानिय्या हिजरते मदीना

जब कुफ़्फ़ारे मक्का का ज़ुल्मो सितम ह़द से बढ़ा तो मुसलमानों ने मक्के से मदीनए मुनव्वरा हिजरत करना शुरूअ़ कर दी, तमाम मुसलमान तक़रीबन छुप कर हिजरत करते थे ताकि कुफ़्फ़ार के ज़ुल्मो सितम से मह़फ़ूज़ रहें लेकिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह ख़ुसूसिय्यत है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ए'लानिय्या मदीनए मुनव्वरा हिजरत की।[4]

---

1 ......تہذیب الاسماء، عمر بن الخطاب، ج ۲، ص ۳۲۴ ماخوذا۔

2 ......ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی حفص۔۔۔الخ، ج ۵، ص ۳۸۳، حدیث: ۳۷۰۱۔

3 ......ابن ماجه، کتاب السنة، فضل عمر، ج ۱، ص ۷۶، حدیث: ۱۰۳۔

4 ......تہذیب الاسماء، عمر بن الخطاب، ج ۲، ص ۳۲۶۔

(10).....मेरे बा'द नबी होते तो उ़मर होते

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक बहुत बड़ी ख़ुसूसिय्यत येह भी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह वाह़िद ख़लीफ़ा हैं जिन के बारे में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَوْ كَانَ بَعْدِي نَبِيٌّ لَكَانَ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ ''या'नी अगर मेरे बा'द कोई नबी होता तो ज़रूर वोह उ़मर होते।'' आप के इलावा किसी ख़लीफ़ा के लिये येह फ़रमान जारी न हुवा।(1)

(11).....फ़ारूक़े आ'ज़म से शैत़ान की घबराहट

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक ख़ुसूसिय्यत येह भी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हैबत से शैत़ान भी डरता है, बल्कि जिस रास्ते से आप गुज़रते हैं शैत़ान वोह रास्ता ही तब्दील कर लेता है। शैत़ान आप की आहट से भी भाग जाता है।(2)

(12).....फ़ारूक़े आ'ज़म की वफ़ात पर इस्लाम रोएगा

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक ख़ुसूसिय्यत येह भी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल पर इस्लाम रोया। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जिब्रीले अमीन ने मुझे बताया : لَيَبْكِ الْإِسْلَامُ عَلٰى مَوْتِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ ''या'नी इस्लाम ह़ज़रते उ़मर की वफ़ात पर रोएगा।''(3)

(13).....ऐ उ़मर ! हमें दुआ़ओं में याद रखना

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह भी ख़ुसूसिय्यत है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह सह़ाबी हैं कि एक बार उ़मरह के सफ़र पर जाने लगे तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ब ज़ाते ख़ुद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी दुआ़ओं में याद रखने का फ़रमाया।

---

1 .....ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی حفص۔۔۔الخ، ج۵، ص۳۸۵، حدیث:۳۷۰۶۔

2 .....इस मौज़ूअ़ के मुख़्तलिफ़ वाक़िआ़त इस किताब में सफ़ह़ा 173 पर मुलाह़ज़ा कीजिये।

3 .....معجم کبیر، سن عمر ووفاتہ۔۔۔الخ، ج۱، ص۶۷، حدیث:۷۱۔

चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह अपने वालिद से रिवायत करते हैं अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "एक बार मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से उ़मरह की इजाज़त मांगी तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इजाज़त अ़त़ा फ़रमाई और साथ ही इरशाद फ़रमाया : **لَا تَنْسَنَا يَا أُخَيَّ مِنْ دُعَائِكَ** "या'नी ऐ भाई ! हमें अपनी दुआ़ओं में न भूल जाना ।"(1)

तिरमिज़ी में येह अल्फ़ाज़ हैं : **اَيْ اُخَيَّ اَشْرِكْنَا فِي دُعَائِكَ وَلَا تَنْسَنَا** "या'नी ऐ मेरे भाई ! हमें भी अपनी दुआ़ओं में शरीक रखना कहीं भूल न जाना ।"(2)

(14).....ग़ैरते फ़ारूक़े आ'ज़म

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह भी ख़ुसूसिय्यत है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ग़ैरत को ख़ुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बयान फ़रमाया । चुनान्चे, :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन राफ़ेअ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **اِنَّ اللّٰهَ غَيُوْرٌ يُحِبُّ الْغَيُوْرَ وَاِنَّ عُمَرَ غَيُوْرٌ** "या'नी बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ग़ैरत फ़रमाने वाला है और ग़ैरत मन्द को पसन्द फ़रमाता है और बेशक उ़मर भी ग़ैरत मन्द हैं ।"(3)

(15).....फ़ारूक़े आ'ज़म की रिज़ा अल्लाह की रिज़ा

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह भी ख़ुसूसिय्यत है कि शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रिज़ा को रब की रिज़ा और रब की रिज़ा को आप की रिज़ा फ़रमाया । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से रिवायत है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

---

1 ......ابوداود، کتاب الوتر، باب الدعاء، ج۲، ص۱۱۴، حدیث: ۱۴۹۸۔

2 ......ترمذی، احادیث شتی، باب من ابواب الدعوات، ج۵، ص۳۲۹، حدیث: ۳۵۷۳۔

3 ......کنزالعمال، کتاب الفضائل، فضل عمر بن الخطاب، الجزء: ۱۱، ج۶، ص۲۶۵، حدیث: ۳۲۷۴۳۔

رِضَا اللّٰہِ رِضَا عُمَرَ وَ رِضَا عُمَرَ رِضَا اللّٰہِ

"या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा उ़मर की रिज़ा है और उ़मर की रिज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा है।"(1)

(16).....फ़ारूके़ आ'ज़म हमेशा मुसीब रहे

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह भी ख़ुसूसिय्यत है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सच्चाई और ह़क़गोई की गवाही ख़ुद रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दी। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **اِنَّ اللّٰہَ جَعَلَ الْحَقَّ عَلٰی لِسَانِ عُمَرَ وَقَلْبِہٖ** "या'नी बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उ़मर के दिल और ज़बान पर ह़क़ को जारी फ़रमा दिया।"(2)

(17).....ह़क़ और सच्चाई हमेशा फ़ारूके़ आ'ज़म के साथ है

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह भी ख़ुसूसिय्यत है कि ह़क़ और सच्चाई हमेशा आप के साथ रही, चाहे आप दुन्या के किसी भी गोशे में हों। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **اَلصِّدْقُ وَالْحَقُّ بَعْدِیْ مَعَ عُمَرَ حَیْثُ کَانَ** "या'नी ह़क़ और सच्चाई उ़मर के साथ है वोह जहां भी रहें।"(3)

(18).....फ़ारूके़ आ'ज़म को बारगाहे रिसालत से इसाबत की दुआ़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह भी ख़ुसूसिय्यत है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़ुद शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसाबत (दुरुस्तगी) की दुआ़ दी। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अज़्रक़ बिन क़ैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार मस्जिदे नबवी में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक नमाज़ी को फ़र्ज़ नमाज़ के फ़ौरन बा'द नमाज़ पढ़ने से मन्अ़ फ़रमाया तो शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को दुआ़ देते हुवे इरशाद फ़रमाया : **اَصَابَ اللّٰہُ بِکَ یَا ابْنَ الْخَطَّابِ** "या'नी ऐ ख़त़्त़ाब के बेटे ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें इसाबत (दुरुस्तगी) अ़त़ा फ़रमाए।"(4)

---

1 ......کنز العمال، کتاب الفضائل، فضل عمر بن الخطاب، الجزء: ۱۱، ج۶، ص۲۶۵، حدیث: ۳۲۷۴۵۔

2 ......ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی۔۔۔الخ، ج۵، ص۳۸۳، حدیث: ۳۷۰۲۔

3 ......جمع الجوامع، حرف الصاد، ج۵، ص۹۶، حدیث: ۱۳۷۳۲۔

4 ......ابوداود، کتاب الصلوۃ، باب فی الرجل یتطوع۔۔۔الخ، ج۱، ص۳۷۶، حدیث: ۱۰۰۷ ملتقطا۔

(19).....बारगाहे रिसालत से फ़ारूक़ लक़ब अ़ता हुवा

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह भी ख़ुसूसिय्यत है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बारगाहे रिसालत से लक़ब **फ़ारूक़** अ़ता हुवा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुद इस को बयान फ़रमाया कि जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़बूले इस्लाम किया तो तमाम मुसलमानों ने ए'लानिय्या का'बतुल्लाह शरीफ़ में नमाज़ अदा की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़क़ व बात़िल या'नी इस्लाम व कुफ़्र के माबैन इम्तियाज़ के सबब लक़बे फ़ारूक़ अ़ता फ़रमाया।[1]

(20).....सूरए बक़रह की तफ़्सीर 12 साल में रसूलुल्लाह से पढ़ी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह भी ख़ुसूसिय्यत है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत से बारह साल तक सूरतुल बक़रह की तफ़्सीर पढ़ी। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं :

تَعَلَّمَ عُمَرُ الْبَقَرَةَ فِي اِثْنَتَيْ عَشَرَةَ سَنَةً فَلَمَّا خَتَمَهَا نَحَرَ جَزُوْراً

"या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सूरए बक़रह की तफ़्सीर बारह साल तक पढ़ी। जब तफ़्सीर मुकम्मल हो गई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शुक्राने में एक ऊंट ज़ब्ह़ किया।"[2]

(21).....फ़ारूक़े आ'ज़म की क़ुरआनी मुवाफ़िक़त

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह भी ख़ुसूसिय्यत है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुवाफ़िक़त में क़ुरआने पाक की सब से ज़ियादा आयात नाज़िल हुईं, जिन की ता'दाद कमो बेश इक्कीस है।[3]

(22).....फ़ारूक़े आ'ज़म इस उम्मत के "मुह़द्दस"

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह भी ख़ुसूसिय्यत है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस उम्मत के मुह़द्दस हैं। चुनान्चे, उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना

---

1 ......طبقات کبری، ذکر اسلام عمر، ج ۳، ص ۲۰۵، تاریخ الخلفاء، ص ۹۰۔

2 ......شرح زرقانی علی الموطا، کتاب القرآن، باب ماجاء فی القرآن، ج ۲، ص ۲۹، تحت حدیث: ۴۸۰، फ़तावा रज़विय्या, जि. 7 स. 690,

3 ..इन तमाम आयत की तफ़्सील के लिये इसी किताब का मौज़ूअ़ "मुवाफ़िक़ते फ़ारूक़े आ'ज़म" स. 674 का मुत़ालआ़ कीजिये।

आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से रिवायत है कि सुल्तानुल मुतवक्किलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "पहली उम्मतों में मुहद्दस होते थे मेरी उम्मत में अगर कोई मुहद्दस है तो उ़मर है।"(1)

मुहद्दस किसे कहते हैं ?

अ़ल्लामा मुहिब त़बरी عَلَیْہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : "यहां मुहद्दस का मा'ना येह है कि जिस पर रब्बानी इल्हाम हो, या'नी वोह लोग जिन पर वह़्य नहीं आती मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन के आईनए क़ल्ब पर असरार नाज़िल फ़रमाता है।"(2)

(23).....फ़ारूक़े आ'ज़म के जन्नती मह़ल को रसूलुल्लाह ने देखा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जब मैं जन्नत में दाख़िल हुवा तो मैं ने एक सोने का मह़ल देखा। मैं ने पूछा : لِمَنۡ ھٰذَا الۡقَصۡرُ "या'नी येह मह़ल किस का है ?" तो फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ किया : لِرَجُلٍ مِّنَ الۡعَرَبِ "या'नी येह एक अ़रबी नौजवान का है।" मैं ने कहा : اَنَا عَرَبِیٌّ "मैं भी अ़रबी हूं।" तो फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ किया : لِرَجُلٍ مِنۡ قُرَیۡشٍ "या'नी येह क़ुरशी नौजवान है।" मैं ने कहा : "क़ुरशी तो मैं भी हूं, फिर येह किस का है ?" तो फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ किया : لِرَجُلٍ مِّنۡ اُمَّۃِ مُحَمَّدٍ "या'नी येह उम्मते मुह़म्मदिय्या के एक शख़्स का है।" मैं ने कहा : اَنَا مُحَمَّدٌ "या'नी मुह़म्मद तो मैं हूं।" फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ किया : لِعُمَرَ بۡنِ الۡخَطَّابِ "या'नी येह मह़ल उ़मर बिन ख़त़्त़ाब का है।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : فَلَوۡلَا مَاعَلِمۡتُ مِنۡ غَیۡرَتِکَ لَدَخَلۡتُہٗ "या'नी ऐ उ़मर ! अगर मुझे तुम्हारी ग़ैरत का इ़ल्म न होता तो मैं उस मह़ल में ज़रूर दाख़िल होता।" येह सुन कर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ आबदीदा हो गए और अ़र्ज़ करने लगे : بِاَبِیۡ وَاُمِّیۡ عَلَیۡکَ یَارَسُوۡلَ اللّٰہِ اَغَارُ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या मैं आप पर भी ग़ैरत करूंगा ?"(3)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عمر بن الخطاب، ج ۲، ص ۵۸۷، حدیث: ۳۶۸۹۔

2 ......ریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۲۸۷۔

3 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عمر بن الخطاب۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۵۲۵، حدیث: ۳۶۷۹۔
مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، باب من فضائل عمر، ص ۱۳۰۴، حدیث: ۲۰۔
ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی حفص۔۔۔الخ، ج ۵، ص ۳۸۵، حدیث: ۳۷۰۹ ملتقطا۔

सोलहवां बाब

अव्वलिय्याते फ़ारूक़े आ'ज़म

इस बाब में मुलाहज़ा कीजिये..............

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाती अव्वलिय्यात

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मज़हबी अव्वलिय्यात

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़लाही अव्वलिय्यात

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इदारती अव्वलिय्यात

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मआ़शी अव्वलिय्यात

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जंगी अव्वलिय्यात

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की उख़रवी अव्वलिय्यात

अव्वलिय्याते फ़ारूके़ आ'ज़म

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ''अव्वलिय्यात'' जम्अ़ है ''अव्वल'' की और ''अव्वल'' उस काम को कहते हैं जो किसी शख़्स से सब से पहले सादिर हो। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़बूले इस्लाम से उन के विसाले ज़ाहिरी तक कई ऐसे मुआ़मलात हैं जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अव्वलिय्यात हैं। नीज़ बरोज़े क़ियामत भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को चन्द अव्वलिय्यात ह़ासिल होंगी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अव्वलिय्यात की कुल ता'दाद 64 है, इन तमाम अव्वलिय्यात को दर्जे ज़ैल सात ह़िस्सों में तक़्सीम किया गया है :

(1).....**ज़ाती अव्वलिय्यात :** उन अव्वलिय्यात का ज़िक्र जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़ाती उमूर से तअ़ल्लुक़ रखती हैं।

(2).....**मज़्हबी अव्वलिय्यात :** उन अव्वलिय्यात का ज़िक्र जो मज़्हबी उमूर से तअ़ल्लुक़ रखती हैं।

(3).....**फ़लाह़ी अव्वलिय्यात :** उन अव्वलिय्यात का ज़िक्र जो रफ़ाहे आ़म्मा और फ़लाह़ी उमूर से तअ़ल्लुक़ रखती हैं।

(4).....**इदारती अव्वलिय्यात :** उन अव्वलिय्यात का ज़िक्र जो शो'बाजात के क़ियाम से तअ़ल्लुक़ रखती हैं।

(5).....**मआ़शी अव्वलिय्यात :** उन अव्वलिय्यात का ज़िक्र जो सल्त़नत के मआ़शी उमूर से तअ़ल्लुक़ रखती हैं।

(6).....**जंगी अव्वलिय्यात :** उन अव्वलिय्यात का ज़िक्र जो जंगी व फ़ौजी उमूर से तअ़ल्लुक़ रखती हैं।

(7).....**उख़रवी अव्वलिय्यात :** उन अव्वलिय्यात का ज़िक्र जो रोज़े क़ियामत आप को ह़ासिल होंगी।

फ़ारूके़ आ'ज़म की ज़ाती अव्वलिय्यात

(1).....सब से पहले कुफ़्फ़ार के सामने अपना इस्लाम ज़ाहिर करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह पहले मुसलमान हैं जिन्हों ने इस्लाम क़बूल करते ही कुफ़्फ़ार के सामने जा कर अपना इस्लाम ज़ाहिर फ़रमाया। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि اَوَّلُ مَنْ جَهَرَ بِالْاِسْلَامِ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ ''या'नी जिस शख़्स ने सब से पहले अपने इस्लाम को ज़ाहिर किया वोह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।''(1)

---

(1).....معجم كبير، طاوس عن ابن عباس، ج ١١، ص ١٣، حديث: ١٠٨٩٠۔

क़बूले इस्लाम के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बड़े बड़े कुफ़्फ़ारे मक्का के घरों में जा जा कर उन्हें अपने इस्लाम पर आगाह करते रहे बिल आख़िर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का'बतुल्लाह शरीफ़ गए और एक ऐसे शख़्स के सामने अपने इस्लाम का इज़्हार किया जिस ने तमाम कुफ़्फ़ार को आप के इस्लाम पर मुत्तलअ़ कर दिया नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़बूले इस्लाम देख कर कुफ़्फ़ारे मक्का ने आप को त़रह त़रह की तक्लीफ़ें भी दी लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी उन से डट कर मुक़ाबला फ़रमाया।[1]

(2).....सब से पहले सिद्दीक़े अक्बर की बैअ़त करने वाले

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द जब सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त का मुआ़मला आया तो अन्सार व मुहाजिरीन में इख़्तिलाफ़ हुवा तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम मुसलमानों को जम्अ़ करने के लिये सब से पहले अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअ़त की। चुनान्चे, अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि सक़ीफ़ा बनी साइ़दा में जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अन्सार व मुहाजिरीन के माबैन तक़रीर फ़रमाई और सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बैअ़त के लिये पेश किया तो उन्हों ने आगे बढ़ कर अ़र्ज़ किया : **بَلْ نُبَايِعُكَ، اَنْتَ سَيِّدُنَا، وَخَيْرُنَا، وَاَحَبُّنَا اِلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ** "या'नी येह लोग मेरी नहीं बल्कि हम सब आप की बैअ़त करते हैं क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हमारे सरदार हैं, हम में सब से बेहतर हैं और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नज़्दीक हम में सब से ज़ियादा मह़बूब हैं।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हाथ पकड़ा और आप की बैअ़त कर ली। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देख कर सब लोगों ने बैअ़त कर ली। अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **اَنَّ عُمَرَ اَوَّلُ مَنْ بَايَعَ اَبَابَكْرٍ** "या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह पहले शख़्स हैं जिन्हों ने सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअ़त की।"[2]

---

1 ......صحیح ابن حبان، ذکر وصف اسلام عمر ـــ الخ، الجزء: ۹، ج۶، ص۱۶، حدیث: ۶۸۴۰ ملخصاً۔

2 ......التلخیص الحبیر، کتاب الامامۃ وقتل البغاۃ، ج۴، ص۱۲۷۔

بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، ج۲، ص۵۲۱، حدیث: ۳۶۶۸ ملتقطاً۔

(3).....सब से पहले अमीरुल मोमिनीन का लक़ब पाने वाले

अ़ल्लामा नूरुद्दीन अ़ली बिन अबी बक्र हैसमी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : فِيْ مَنَاقِبِ عُمَرَ اَوَّلُ مَنْ سُمِّيَ اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मनाक़िब में से येह भी है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह पहले ख़लीफ़ा हैं जिन्हें **अमीरुल मोमिनीन** कहा गया।"

चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को तो "ख़लीफ़ए रसूले ख़ुदा" कहा जाता था, जब कि मुझे येह नहीं कहा जा सकता क्यूंकि मैं तो सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़लीफ़ा हूं और (अगर मुझे "ख़लीफ़ए ख़लीफ़ए रसूले ख़ुदा" कहा जाए तो) यूं बात त़वील हो जाएगी।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शो'बा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "आप हमारे अमीर हैं और हम मोमिनीन, तो आप हुवे **अमीरुल मोमिनीन**।" येह सुन कर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "येह सह़ीह़ है।"(1)

(4).....सब से पहले क़ाज़ी बनने वाले

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़ई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं :

اَوَّلُ مَنْ وُلِیَ شَيْئًا مِنْ اُمُوْرِ الْمُسْلِمِيْنَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ وَلَّاهُ اَبُوْبَكْرٍ الْقَضَاءَ فَكَانَ اَوَّلَ قَاضٍ فِی الْاِسْلَامِ

"या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुसलमानों के मुआ़मलात को संभालने के लिये क़ाज़ी मुक़र्रर फ़रमाया। यूं आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लाम के सब से पहले क़ाज़ी कहलाए।"(2)

(5).....सब से पहले "दुर्रा" बनाने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले दुर्रा ईजाद फ़रमाया। अ़ल्लामा अबू ज़करिय्या मुह़िय्युद्दीन यह़या बिन शरफ़ नववी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : وَهُوَ اَوَّلُ مَنِ اتَّخَذَ الدُّرَّةَ "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

---

1 ......مجمع الزوائد، كتاب الخلافة، باب كيف يدعى الامام، ج٥، ص ٢٣٩، حديث: ٩٠١٣۔

الاستيعاب، عمر بن الخطاب، ج٣، ص ٢٣٩۔

2 ......الاستيعاب، عمر بن الخطاب، ج٣، ص ٢٣٩۔

ने सब से पहले दुर्रा बनाया।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह दुर्रा इतना मश्हूर था कि इस के मुतअ़ल्लिक़ अ़रबों में ज़रबुल मसल मश्हूर हो गई कि لَدُرَّةُ عُمَرَ اَهْيَبُ مِنْ سَيْفِكُمْ या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दुर्रा तुम्हारी तल्वारों से भी ज़ियादा हैबत वाला है।(1)

(6).....सब से पहले हिजरी तारीख़ की इब्तिदा करने वाले

ह़ज़रते अ़ल्लामा अबू ज़करिय्या मुह़्युद्दीन यह़्या बिन शरफ़ नववी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : اَوَّلُ مَنْ اَرَّخَ بِالْهِجْرَةِ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ "या'नी जिन्हों ने सब से पहले हिजरी तारीख़ की बुन्याद डाली वोह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।"(2)

चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी व इमाम शा'बी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا से मरवी है कि का'बतुल्लाह शरीफ़ की ता'मीर से क़ब्ल बनू इस्माईल ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के आग में डाले जाने के दिन से तारीख़ का ह़िसाब करते और ता'मीरे का'बा के बा'द ता'मीरे का'बा से। फिर जो क़बीलए तिहामा से बाहर चला जाता वोह अपनी अ़लाह़िदगी के दिन से तारीख़ का शुमार करता और जो तिहामा में रह जाते वोह सा'द, हिन्द और जुहैना बनी ज़ैद के तिहामा के ख़ुरूज से ह़िसाब रखते। येह सिलसिला ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन लुअय (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की वफ़ात तक जारी रहा फिर उन की वफ़ात के दिन से ह़िसाब होने लगा। इस के बा'द वाक़िअ़ए फ़ील पेश आया तो बनू इस्माईल ने उस वाक़िअ़ए फ़ील से तारीख़ का ह़िसाब रखना शुरूअ़ कर दिया और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़माने से हिजरते नबवी से मुसलमानों ने ह़िसाब रखना शुरूअ़ किया।(3)

एक अहम वज़ाह़त

बा'ज़ उ़लमाए किराम ने हिजरी तक़्वीम की वज़्अ़ की निस्बत अ़ह्दे नबवी की त़रफ़ की है और बा'ज़ उ़लमा ने अ़ह्दे फ़ारूक़ी की त़रफ़ की है। इस की वज्ह येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब मदीनए मुनव्वरा हिजरत कर के तशरीफ़ लाए तो

---

1. ......تہذیب الاسماء، عمر بن الخطاب، ج ۲، ص ۳۳۲۔
الاستیعاب، عمر بن الخطاب، ج ۳، ص ۲۳۶، تاریخ الخلفاء، ص ۱۰۸۔
2. ......تہذیب الاسماء، فصل بدء التاریخ الهجری، ج ۱، ص ۴۷۔
3. ......تاریخ طبری، ج ۲، ص ۴۔

अव्वलन मक़ामे क़ुबा में क़ियाम फ़रमाया। अभी क़ुबा में क़ियाम फ़रमा थे कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नई तक़्वीमे हिजरी की वज़्अ़ का हुक्म दिया चुनान्चे, सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने उसे हिजरत से शुरूअ़ किया और उस सिन की इब्तिदा मुहर्रमुल ह़राम से की क्यूंकि हुज्जाज इसी महीने अपने घरों को वापस लौटते हैं। वाज़ेह़ रहे कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हिजरी तक़्वीम की वज़्अ़ का हुक्म दिया था जब कि इसी वज़्अ़ की हुई हिजरी तक़्वीम का बा क़ाइदा ह़िसाब किताब मुसलमानों ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के दौर से रखना शुरूअ़ किया। लिहाज़ा दोनों अक़्वाल में कोई तज़ाद नहीं।(1)

(7).....सब से पहले रातों को दौरा करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه वोह पहले ख़लीफ़ा हैं जिन का येह मा'मूल था कि वोह रातों को मदीनए मुनव्वरा का दौरा करते ताकि रिआ़या के ह़ालात मा'लूम कर सकें कि कहीं कोई किसी तक्लीफ़ या मुसीबत में तो नहीं अगर बिलफ़र्ज़ कहीं ऐसा हो तो उस की मदद फ़रमाएं। इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : اَوَّلُ مَنْ عَسَّ بِاللَّيْلِ "या'नी आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه वोह पहले ख़लीफ़ा हैं जो रिआ़या के ह़ालात से आगाही के लिये रातों को दौरा किया करते थे।"(2)

आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का मदीनए मुनव्वरा के दौरे के दौरान पेश आने वाला एक मश्हूर वाक़िआ़ भी है जिस में एक ख़ातून अपने नन्हे मुन्ने बच्चों के साथ उन का दिल बहलाने के लिये रात के अन्धेरे में हन्डिया पका रही थी आप दौरा फ़रमाते हुवे उस के पास पहुंचे और उस ख़ातून की मदद फ़रमाई।(3)

(8).....सब से पहले ख़लीफ़ा जिन के दौर में बे शुमार फ़ुतूह़ात हुईं

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه वोह सब से पहले ख़लीफ़ा हैं जिन के दौरे ख़िलाफ़त में बेशुमार फ़ुतूह़ात हुईं। अ़ल्लामा अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन सा'द बिन मनीअ़ बसरी ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : هُوَ اَوَّلُ مَنْ فَتَحَ الْفُتُوْحَ "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ही वोह पहले ख़लीफ़ा हैं जिन्हों ने सब

1.....सीरते सय्यिदुल अम्बिया, स. 245 تاریخ طبری، ج ۲، ص ۴۔

2.....تاریخ الخلفاء، ص ۱۰۸، الاوائل للعسکری، ص ۳۰۲۔

3.....तफ़्सीली वाक़िआ़ इसी किताब के सफ़ह़ा नम्बर 33 पर मुलाह़ज़ा कीजिये।

से ज़ियादा फ़ुतूहात कीं।" आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ की फ़ुतूहात में मुख़्तलिफ़ जाईदादें, अ़लाक़े सूबे, मुख़्तलिफ़ क़स्बे नीज़ वोह ज़मीनें भी शामिल हैं जिन से "ख़िराज" और "फ़ै" वुसूल किया जाता था।[1] आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान علیہ رحمۃ الرحمٰن सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ के मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों की ता'दाद बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं: "फ़ारूक़े आ'ज़म के दौर में एक हज़ार छत्तीस 1036 शहर मअ़ मुज़ाफ़ात फ़त्ह़ हुवे।"[2]

(9).....सब से पहले दराज़िये उ़म्र की दुआ़ देने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने सब से पहले मौला अ़ली رضی اللہ تعالیٰ عنہ को दराज़िये उ़म्र की दुआ़ दी। इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी علیہ رحمۃ اللہ القوی फ़रमाते हैं: सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ वोह पहले शख़्स हैं जिन्हों ने किसी को यूं दराज़िये उ़म्र की दुआ़ दी: اَطَالَ اللّٰہُ بَقَاءَکَ "या'नी अल्लाह عزوجل आप को लम्बी उ़म्र अ़त़ा फ़रमाए।"[3]

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन रफ़ाआ़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं एक बार सह़ाबए किराम علیہم الرضوان का इ़ल्मी ह़ल्क़ा लगा हुवा था और अ़ज़्ल (या'नी ज़ौजा से जिमाअ़ करने के बा'द मनी को बाहर ख़ारिज कर देना) के बारे में गुफ़्तगू हो रही थी, बा'ज़ सह़ाबए किराम علیہم الرضوان का येह मौक़िफ़ था कि इस में कोई ह़रज नहीं, जब कि बा'ज़ सह़ाबए किराम علیہم الرضوان का येह गुमान था कि अ़ज़्ल "मौऊदए सुग़रा" है। (या'नी ज़मानए जाहिलिय्यत में कुफ़्फ़ार अपनी बच्चियों को ज़िन्दा दरगोर कर देते थे येह भी उसी की एक सूरत है।) तो मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने इस का जवाब देते हुवे इरशाद फ़रमाया: "येह हुक्म उसी सूरत में लग सकता है जब तक येह सात सूरतें पूरी न हो जाएं: سُلَالَۃً مِّنْ طِیْنٍ، نُطْفَۃ، عَلَقَۃ، مُضْغَۃ، عِظَامًا، لَحْمًا، خَلْقًا آخَر येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने इरशाद फ़रमाया: صَدَقْتَ "या'नी ऐ अ़ली! आप ने सच कहा।" फिर मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) को दराज़िये उ़म्र की दुआ़ देते हुवे इरशाद फ़रमाया: اَطَالَ اللّٰہُ بَقَاءَکَ "या'नी अल्लाह عزوجل आप को लम्बी उ़म्र अ़त़ा फ़रमाए।"[4]

1.....طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۱۳ ملتقطا۔

2.....फ़तावा रज़विय्या, जि. 5, स. 560।

3.....تاریخ الخلفاء، ص ۱۰۸۔

4.....مرقاۃ المفاتیح، کتاب النکاح، باب المباشرۃ، ج ۶، ص ۳۴۷، تحت الحدیث: ۳۱۸۹۔

कुरआने पाक में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्सान की तख़्लीक़ के सात मराहिल बयान फ़रमाए हैं मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने इन ही सात मराहिल को बयान फ़रमाया।

चुनान्चे, इरशाद होता है :

﴿وَ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِیْنٍ ﴿۱۲﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِیْ قَرَارٍ مَّكِیْنٍ ﴿۱۳﴾ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ۗ ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِیْنَ ﴿۱۴﴾﴾ (پ۱۸، المؤمنون: ۱۲ تا ۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और बेशक हम ने आदमी को चुनी हुई मिट्टी से बनाया फिर उसे पानी की बूंद किया एक मज़बूत़ ठहराव में फिर हम ने उस पानी की बूंद को ख़ून की फटक किया फिर ख़ून की फटक को गोश्त की बोटी फिर गोश्त की बोटी को हड्डियां फिर उन हड्डियों पर गोश्त पहनाया फिर उसे और सूरत में उठान दी तो बड़ी बरकत वाला है अल्लाह सब से बेहतर बनाने वाला है।"

(10).....सब से पहले ताईदे इलाही की दुआ़ देने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ही सब से पहले किसी को ताईदे इलाही की दुआ़ दी। जिन्हें ताईदे इलाही की दुआ़ दी वोह भी मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ही हैं। चुनान्चे, इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه वोह पहले शख़्स हैं जिन्हों ने किसी को यूं ताईदे इलाही की दुआ़ दी اَیَّدَکَ اللّٰهُ "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी ताईद फ़रमाए।" और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने येह दुआ़ भी मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) को दी।[1]

(11).....सब से पहले हिजू करने पर सज़ा देने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने सब से पहले अश्आ़र में हिजू करने पर सज़ा दी। क्यूंकि अ़रबों में इस बात का रवाज था कि जब वोह क़बीले की हिजू या'नी मज़म्मत बयान करते तो फिर उस क़बीले के किसी फ़र्द की इ़ज़्ज़त व शराफ़त का क़त़्अ़न ख़याल न करते यहां तक कि शरीफ़ औ़रतों के नाम ले कर उन की मज़म्मत बयान करते। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को येह बात सख़्त ना गवार थी इस लिये आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इस पर सख़्ती से पाबन्दी लगा दी बल्कि अ़रब के एक मश्हूर शाइ़र "ह़ुत़ीआ" को इसी जुर्म में एक कुंवें के अन्दर क़ैद कर दिया।

1 .....تاریخ الخلفاء، ص۱۰۸۔

उस ने कुंवें के अन्दर ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शफ़्क़त त़लब करने के लिये चन्द अश्आ़र कहे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे बाहर निकाला तो उस ने उ़ज़्र बयान करते हुवे कहा कि हु़ज़ूर किसी की हिजू या'नी मज़म्मत में अश्आ़र कहना तो मेरी आ़दत है फिर उस ने अपने वालिदैन, बहन भाइयों और खु़द अपनी मज़म्मत में भी चन्द अश्आ़र कहे तो सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुस्कुरा दिये और उसे इस शर्त़ पर छोड़ा कि आइन्दा किसी की हिजू नहीं करेगा और साथ ही उसे तीन हज़ार दिरहम भी अ़त़ा फ़रमाए।

इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : اَوَّلُ مَنْ عَاقَبَ عَلَى الْهِجَاءِ "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह पहले शख़्स हैं जिन्हों ने मज़म्मत वाले अश्आ़र कहने पर सज़ा दी।"(1)

(12).....सब से पहले जिला वत़नी की सज़ा देने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले जिला वत़नी की सज़ा जारी फ़रमाई। मुजरिम को उस के जुर्म की वज्ह से किसी और मुल्क भेज देना ताकि उसे तक्लीफ़ हो और दूसरे लोग भी उस के शर से बचें जिला वत़नी कहलाता है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले "अबू मिह़जन"(2) नामी शख़्स को मुल्क बदर कर के एक गुन्जान जज़ीरे में भेज दिया।(3)

(13).....सब से पहले अहले अ़रब की अ़दमे गुलामी का क़ाइदा मुक़र्रर करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले येह उसूल बनाया कि अहले अ़रब कभी गुलाम नहीं बनेंगे। अगर्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने गुलामी को मा'दूम नहीं किया लेकिन इस में कोई शको शुबा नहीं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों से इस के रवाज को कम कर दिया। अ़रब में तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस का इस्तीसाल (ख़ातिमा) फ़रमा दिया और इरशाद फ़रमाया : لَا يُسْتَرَقُّ عَرَبِيٌّ "या'नी अ़रबी को गुलाम नहीं बनाया जाएगा।"(4)

1.....الاوائل للعسکری، ص۱۵۷، تاریخ الخلفاء، ص۱۰۸، مفاکهة الخلان، ص۲۴۳۔

2.....वाज़ेह़ रहे कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मिह़जन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सिने 9 हिजरी को अपने क़बीले बनू सक़ीफ़ के साथ इस्लाम ले आए थे, आप बेहतरीन शाइर, ज़मानए इस्लाम और ज़मानए जाहिलिय्यत दोनों में बहादुरी और शुजाअ़त के ह़वाले से बड़े मश्हूर थे। (اسد الغابة، ابومحجن الثقفی، ج۶، ص۲۹۰)

3.....اسد الغابة، ابومحجن الثقفی، ج۶، ص۲۹۱ ملتقطا۔

4.....سنن کبری، کتاب السیر، باب من یجری علیه الرق، ج۹، ص۱۲۵، حدیث:۱۸۰۶۸ ملتقطا۔

(14).....सब से पहले यहूद को अ़रब से निकालने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले यहूदियों को जज़ीरए अ़रब से मुल्के शाम की त़रफ़ निकाल दिया। मुह़म्मद बिन सा'द बसरी ज़ोहरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''هُوَ اَخْرَجَ الْيَهُوْدَ مِنَ الْحِجَازِ وَاَجْلَاهُمْ مِنْ جَزِيْرَةِ الْعَرَبِ اِلَى الشَّامِ وَاَخْرَجَ اَهْلَ نَجْرَانَ وَاَنْزَلَهُمْ نَاحِيَةَ الْكُوْفَةَ ''या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यहूदियों को ह़िजाज़ (जज़ीरए अ़रब) से निकाल कर मुल्के शाम की त़रफ़ और अहले नजरान को कूफ़ा भेज दिया।''[1]

(15).....सब से पहले वारिस बनने वाले दादा

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अव्वलिय्यात में से येह भी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लाम में सब से पहले वारिस हैं जिन्हों ने अपने पोते की विरासत पाई। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़ीम बिन ग़नम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं : اَوَّلُ جَدٍّ وَرِثَ فِي الْاِسْلَامِ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ ''या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लाम में पहले दादा हैं जिन्हों ने अपने पोते (ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन आ़सिम बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की विरासत पाई।''[2]

(16).....सब से पहले वारिस बनने वाले आक़ा

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अव्वलिय्यात में से येह भी है आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लाम में सब से पहले वारिस हैं जिन्हों ने अपने ग़ुलाम की विरासत पाई। चुनान्चे, सय्यिदुना कसीर बिन हिशाम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इमाम ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से इस्तिफ़्सार किया : مَنْ أَوَّلُ مَنْ وَرَّثَ الْعَرَبُ مِنَ الْمَوَالِي ''या'नी वोह पहला शख़्स कौन है जिसे अ़रबों ने उस के ग़ुलाम का वारिस बनाया ?'' तो इमाम ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने फ़रमाया : ''वोह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।''[3]

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص ۲۱۴ ملتقطاً۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الاوائل، باب اول مافعل ومن فعل، ج۸، ص ۳۳۱، حدیث: ۵۵ ملتقطاً۔

3 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الاوائل، باب اول مافعل ومن فعل، ج۸، ص ۳۳۰، حدیث: ۴۹۔

सिने 2 हिजरी में जंगे बद्र में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म के गुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना मिहजअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सब से पहले शहीद हुवे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही उन के वारिस हुवे।[1]

(17).....सब से पहले इमाम जिन्हों ने शहादत पाई

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अव्वलिय्यात में से येह भी है कि इस्लाम में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह पहले इमाम हैं जिन्हों ने शहादत पाई। एक मजूसी गुलाम "अबू लुअ लुअ" ने नमाज़े फ़ज्र में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़हर आलूद ख़न्जर से ज़ख़्मी किया जिस के सबब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत वाक़ेअ़ हुई। बा'दे अज़ां उस गुलाम ने ख़ुदकुशी कर ली।[2]

फ़ारूक़े आ'ज़म की मज़हबी अव्वलिय्यात

(18).....सब से पहले जम्ए क़ुरआन का मश्वरा देने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में मुसैलमा कज़्ज़ाब के ख़िलाफ़ जंग लड़ी गई जिसे जंगे यमामा कहते हैं, उस जंग में कसीर ता'दाद में हुफ़्फ़ाज़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان शहीद हुवे। येह सूरते ह़ाल देख कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सब से पहले इस बात का मश्वरा दिया कि जो हुफ़्फ़ाज़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ह़यात हैं उन की मुआ़वनत से मुतफ़र्रिक़ क़ुरआनी सह़ाइफ़ को जम्अ़ कर लिया जाए, चुनान्चे, सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस मश्वरे पर अ़मल कर के क़ुरआन जम्अ़ फ़रमा दिया।[3]

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الاوائل، باب اول مافعل مؤمن فعلہ، ج۸، ص ۳۲۹، حدیث: ۳۹۔

2 ......تاریخ الخلفاء، ص ۱۰۶۔

3 ......بخاری، کتاب فضائل القرآن، باب جمع القرآن، ج ۳، ص ۳۹۸، حدیث: ۴۹۸۶۔

इस मस्अले की तफ़्सील के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 723 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर" स. 415 का मुत़ालआ़ कीजिये।

(19).....सब से पहले जमाअ़ते तरावीह़ क़ाइम कराने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले बा क़ाइदा तरावीह़ की जमाअ़त क़ाइम करवाई। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल क़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं रमज़ानुल मुबारक में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ मस्जिद में आया तो लोग वहां मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में नमाज़े तरावीह़ अदा कर रहे थे। कोई अपनी नमाज़ इनफ़िरादी त़ौर पर पढ़ रहा था और बा'ज़ ने जमाअ़त क़ाइम की हुई थी। येह देख कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : **إِنِّي أَرَى لَوْ جَمَعْتُ هَؤُلَاءِ عَلَى قَارِئٍ وَاحِدٍ لَكَانَ أَمْثَلَ** "या'नी मेरा ख़याल है अगर मैं इन सब को एक ही इमाम के पीछे जम्अ़ कर दूं तो बहुत अच्छा रहेगा।" चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ारिये कुरआन ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इमाम मुक़र्रर फ़रमा कर तमाम लोगों को उन की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ने का हुक्म दे दिया। फिर एक रात मैं अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ मस्जिद में जाने के लिये निकला मस्जिद पहुंचने पर देखा कि सब लोग एक ही इमाम के साथ नमाज़ में मश्ग़ूल हैं। येह मन्ज़र देख कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत खुश हुवे और इरशाद फ़रमाया : **نِعْمَ الْبِدْعَةُ هَذِهِ** "या'नी येह नया त़रीक़ा कितना अच्छा है।"[1]

अ़ल्लामा अबू बक्र अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद बिन अबी शैबा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

أَوَّلُ مَنْ جَمَعَ النَّاسَ عَلَى الصَّلَاةِ فِي رَمَضَانَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ جَمَعَهُمْ عَلَى أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ

"या'नी रमज़ानुल मुबारक में बा जमाअ़त नमाज़े तरावीह़ में तमाम लोगों को एक इमाम ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पीछे जिस ने सब से पहले जम्अ़ फ़रमाया वोह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।"[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन सा'द رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ व इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **هُوَ أَوَّلُ مَنْ سَنَّ قِيَامَ شَهْرِ رَمَضَانَ** "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह पहले शख़्स हैं जिन्हों ने रमज़ानुल मुबारक के महीने में रातों को क़ियाम (बा जमाअ़त नमाज़े तरावीह़) का एहतिमाम फ़रमाया।"[3]

---

1 ......بخاری، صلاۃ التراویح، فضل من قام رمضان، ج ۱، ص ۶۵۸، حدیث: ۲۰۱۰۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الاوائل، باب اول مافعل ومن فعلہ، ج ۸، ص ۳۳۵، حدیث: ۹۲۔

3 ......الاوائل للعسکری، ص ۱۵۲، تاریخ الخلفاء، ص ۱۰۸۔

(20).....सब से पहले नमाज़े जनाज़ा की चार तक्बीरात पर इजमाअ़ क़ाइम कराने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले नमाज़े जनाज़ा की चार तक्बीरात पर इजमाअ़ क़ाइम कराया। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू वाइल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में तमाम अस्ह़ाब को जम्अ़ फ़रमाया और उन से इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि "हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़े जनाज़ा में कितनी तक्बीरात कहते थे ?" बा'ज़ ने कहा : "पांच", बा'ज़ ने कहा : "सात", बा'ज़ ने कहा : "चार"। जिस ने जो जो सुना था वोह उस ने बता दिया। लेकिन ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चूंकि आख़िरी जनाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैल बिन बरसा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का पढ़ाया था और उन की नमाज़े जनाज़ा में चार तक्बीरात कही थीं इस लिये तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का चार तक्बीरात पर इजमाअ़ हो गया।(1)

इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं :

اَوَّلُ مَنْ جَمَعَ النَّاسَ فِي صَلَاةِ الْجَنَائِزِ عَلٰى اَرْبَعِ تَكْبِيْرَاتٍ "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ही नमाज़े जनाज़ा में चार तक्बीरात पर लोगों को जम्अ़ फ़रमाया।"(2)

(21).....सब से पहले अज़ान के अल्फ़ाज़ में इज़ाफ़ा करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले अज़ान के कलिमात में अ़ह्दे नबवी ही में इज़ाफ़ा फ़रमाया। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मुअज़्ज़िने रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इब्तिदाअन अज़ान में "اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا الله" के बा'द "حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ" कहा करते थे। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ बिलाल ! "اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا الله" के बा'द اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ الله कहा करो।" येह सुन कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुक्म इरशाद फ़रमाया : قُلْ كَمَا اَمَرَكَ عُمَرُ "या'नी ऐ बिलाल ! जैसा उ़मर ने तुम्हें हुक्म दिया है वैसा ही कहो।"(3)

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الجنائز، باب من کان یکبر علی الجنازۃ خمسا، ج ۳، ص ۱۸۶، حدیث: ۳۰، الاوائل للعسکری، ص ۱۶۴۔

2 ......تاریخ الخلفاء، ص ۱۰۸۔

3 ......صحیح ابن خزیمۃ، کتاب الصلوۃ، باب فی بدء الاذان والاقامۃ، ج ۱، ص ۱۸۸، حدیث: ۳۶۲۔

(22).....सब से पहले अस्हाबे फ़राइज़ में मस्अलए औ़ल ईजाद करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले अस्ह़ाबे फ़राइज़ में मस्अलए औ़ल ईजाद किया। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : اَوَّلُ مَنْ اَعَالَ الْفَرَائِضَ عُمَرُ "या'नी अस्ह़ाबे फ़राइज़ में जिस ने सब से पहले मस्अलए औ़ल ईजाद किया वोह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।"(1)

इ़ल्मे मीरास की इस्तिलाह़ में "मख़रजे मस्अला जब वुरसा के ह़िस्सों पर पूरा न होता हो या'नी ह़िस्से ज़ाइद हों और मख़रज का अ़दद ह़िस्सों के मजमूई आ'दाद से कम हो तो मख़रजे मस्अला के अ़दद में इज़ाफ़ा कर दिया जाता है इसे औ़ल कहा जाता है।"(2)

(23).....सब से पहले शराब पर अस्सी कोड़े लगाने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले शराब की ह़द क़ाइम करते हुवे शराबी को अस्सी कोड़े लगवाए। दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दौर में बत़ौरे सज़ा शराबी की पिटाई लगाई जाती थी। जब सय्यिदुना सिद्दीके अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दौर आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शराबी की ह़द चालीस कोड़े मुक़र्रर फ़रमा दी और उसी के मुत़ाबिक़ आप के अ़ह्द में शराबी को सज़ा दी जाती, लेकिन जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दौर आया तो ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ मक्तूब लिखा जिस का मज़मून येह था : اِنَّ النَّاسَ قَدْ اِنْهَمَكُوا فِي الشُّرْبِ وَتَحَاقَرُوا الْحَدَّ وَالْعُقُوبَةَ "या'नी लोग बहुत ज़ियादा शराब पीने में मुन्हमिक हो गए हैं शायद इस की वज्ह येह है कि वोह शराब की सज़ा को ह़क़ीर समझते हैं।" फिर सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मश्वरा देते हुवे अ़र्ज़ किया : "ह़ुज़ूर ! आप के पास जय्यिद किबार सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان हैं उन से मश्वरा कीजिये।" सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुहाजिरीने अव्वलीन किबार सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मश्वरा किया तो तमाम सह़ाबए किराम का अस्सी कोड़े की सज़ा पर इजमाअ़ हो गया।(3)

---

1 ......مستدرک حاکم، کتاب الفرائض، اول من اعال الفرائض عمر، ج۵، ص۴۸۶، حدیث: ۸۰۵۲ ملتقطاً۔

2 .....बहारे शरीअ़त, जि. 3 ह़िस्सा 20, स. 1138।

3 ......ابو داود، کتاب الحدود، باب اذا تتابع فی شرب الخمر، ج۴، ص۲۲۱، حدیث: ۴۴۸۹ ملخصاً۔

अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफे़ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : اَوَّلُ مَنْ ضَرَبَ فِي الْخَمْرِ ثَمَانِيْنَ "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه वोह पहले ख़लीफ़ा हैं जिन्हों ने शराब की ह़द अस्सी कोड़े मुक़र्रर फ़रमाई ।"(1)

(24).....सब से पहले माल को मिल्किय्यत में रख कर सदक़ा करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्म से सब से पहले माल को अपनी मिल्किय्यत में रख कर राहे ख़ुदा में उस के मनाफे़अ़ को सदक़ा किया । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है फ़रमाते हैं कि ख़ैबर की कुछ ज़मीन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के हिस्से में आई तो आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे और मुशावरत करते हुवे अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : اِنِّيْ قَدْ اَصَبْتُ مَالًا لَمْ اُصِبْ مِثْلَهٗ وَقَدْ اَرَدْتُّ اَنْ اَتَقَرَّبَ بِهٖ اِلَى اللهِ تَعَالٰى "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे हिस्से में जो माल आया है इस से पहले ऐसा माल नहीं आया या'नी येह मुझे बहुत मह़बूब है और मैं चाहता हूं कि राहे ख़ुदा में इसे सदक़ा कर के रब عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल करूं" आप इस बारे में क्या इरशाद फ़रमाते हैं ? तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِحْبِسِ الْاَصْلَ وَسَبِّلِ الثَّمَرَ "या'नी ऐ उ़मर ! अस्ल ज़मीन अपनी मिल्किय्यत में रखो और उस के मनाफे़अ़ को सदक़ा कर दो ।" तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने उस ज़मीन को इस त़रह़ सदक़ा किया कि न तो उसे बेचा जाएगा, न हिबा किया जाएगा, न ही उस में मीरास जारी होगी । उस के मनाफे़अ़ फ़ुक़रा, रिश्तेदारों, ग़ुलामों, राहे ख़ुदा में जिहाद करने वालों, मेहमानों वग़ैरा पर ख़र्च किया जाएगा ।(2)

(25).....सब से पहले अइम्मा व मुअज़्ज़िनीन की तनख़्वाहें जारी करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने सब से पहले अइम्मा व मुअज़्ज़िनीन के मुशाहरे मुक़र्रर फ़रमाए । ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है :

1 ......تاریخ الخلفاء، ص۱۰۸۔

2 ......دارقطنی، کتاب الاحباس، باب فی حبس المشاع، ج۴، ص۲۲۸، حدیث:۴۳۸۳۔

شعب الایمان، باب فی الزکاۃ، فصل فی الاختیار فی صدقۃ التطوع، ج۳، ص۲۴۶، حدیث:۳۴۴۶۔

اِنَّ عُمَرَبْنَ الْخَطَّابِ وَعُثْمَانَ بْنَ عَفَّانَ كَانَا يَرْزُقَانِ الْمُؤَذِّنِيْنَ وَالْاَئِمَّةَ "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुअज़्ज़िनीन व अइम्मए किराम को तनख़्वाहें देते थे।"(1)

(26).....सब से पहले मस्जिदे ह़राम की तौसीअ़ व कुशादगी करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले मस्जिदे ह़राम की तौसीअ़ का एहतिमाम फ़रमाया। चुनान्चे, शाह वलिय्युल्लाह मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अव्वलिय्यात में से एक येह भी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक साल उ़मरह करने की निय्यत से मस्जिदे ह़राम का क़स्द फ़रमाया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मस्जिदे ह़राम को वसीअ़ करने और कुशादा करने का एहतिमाम फ़रमाया।"(2)

(27).....सब से पहले मस्जिदे ह़राम की बैरूनी दीवार बनाने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले मस्जिदे ह़राम की बैरूनी दीवार ता'मीर फ़रमाई। चुनान्चे, मरवी है कि : "अ़ह्दे रिसालत में मस्जिदे ह़राम की कोई बैरूनी दीवार नहीं थी, जब अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मन्सबे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन हुवे तो आप ने मस्जिद के क़रीब के घरों को ख़रीद कर उन्हें मस्जिद में शामिल कर दिया और फिर पूरी मस्जिद के गिर्द एक छोटी दीवार ता'मीर फ़रमा दी जिस पर चराग़ रखे जाते थे।"(3)

(28).....सब से पहले मस्जिदों को रौशन करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले अपने दौर में मसाजिद को आबाद करने के लिये उन्हें रौशन करने का ख़ुसूसी एहतिमाम फ़रमाया ताकि लोग रमज़ानुल मुबारक की रातों में आसानी से नमाज़े तरावीह़ वग़ैरा इबादात का एहतिमाम कर सकें। चुनान्चे, अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान फ़रमाते हैं :

---

(1)......تاریخ بغداد، ذکر من اسمہ محمد واسم ابیہ ابان، ج ۲، ص ۹۷، الرقم: ۴۰ ۲۔

(2)......ازالۃ الخفاء، ج ۳، ص ۲۳۵۔

(3)......روح المعانی، پ ۱۷، الحج، تحت الآیۃ: ۲۶، ج ۱۷، ص ۱۸۵،
فتح الباری، کتاب مناقب الانصار، باب بنیان الکعبۃ، ج ۸، ص ۱۲۵، تحت الحدیث: ۳۸۳۰۔

اَوَّلُ مَنْ جَعَلَ فِی الْمَسْجِدِ الْمَصَابِیْحَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ ''या'नी मसाजिद में सब से पहले अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रौशनी के लिये चराग़ जलाए।''(1)

और तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने इसे बहुत पसन्द फ़रमाया : मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये इस फे़'ल पर ख़ुसूसी दुआ़ भी फ़रमाई। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्ह़ाक़ हमदानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि : ''अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) रमज़ानुल मुबारक की पहली रात बाहर निकले तो देखा कि मसाजिद पर क़िन्दीलें चमक रही हैं और लोग किताबुल्लाह की तिलावत कर रहे हैं। येह देख कर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : نَوَّرَ اللّٰهُ لِعُمَرَ فِيْ قَبْرِه كَمَا نَوَّرَ مَسَاجِدَ اللّٰهِ تَعَالٰى بِالْقُرْآنِ ''या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्र को वैसा ही मुनव्वर कर दे जैसा आप ने मसाजिद को कुरआन से मुनव्वर किया।''(2)

(29).....सब से पहले मस्जिदे नबवी का फ़र्श पक्का कराने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले मस्जिद का फ़र्श पक्का करवाया। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन इब्राहीम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं : اَوَّلُ مَنْ اَلْقَى الْحَصٰى فِيْ مَسْجِدِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّاب ''या'नी मस्जिदे नबवी में सब से पहले पथ्थर बिछाने वाले अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं कि मस्जिदे नबवी का फ़र्श कच्चा होने के सबब लोग जब सजदे से सर उठाते तो मिट्टी लगने के सबब अपने हाथों को झाड़ते, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मस्जिद के फ़र्श को पक्का करने के लिये रेती बिछाने का हुक्म दिया चुनान्चे, मक़ामे अ़क़ीक़ से बजरी लाई गई और मस्जिदे नबवी में बिछा कर उस के फ़र्श को पक्का कर दिया गया।''(3)

(30).....सब से पहले मस्जिद में चटाइयां बिछाने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले मस्जिदे नबवी में नमाज़ियों के लिये चटाइयां बिछाईं। जब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मस्जिदे नबवी के फ़र्श को पक्का

1 ......روح البیان، پ ۱۰، التوبۃ، تحت الآیۃ:۱۸، ج ۳، ص ۴۰۰۔

2 ......مناقب امیر المومنین عمر بن الخطاب، الباب الحادی والثلاثون، ص ۶۲۔

3 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الاوائل، باب اول ما فعل ومن فعلہ، ج ۸، ص ۳۴۵، حدیث:۱۷۶۔

طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۸۴۔

फ़रमाया तो उस के बा'द चटाइयां बिछाने का हुक्म दिया। चुनान्चे, अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं : اَوَّلُ مَنْ فَرَّشَ الْحَصِيْرَ فِى الْمَسَاجِدَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ وَ كَانَتْ قَبْلَ ذٰلِكَ مَفْرُوْشَةً بِالْحِصِيِّ "या'नी जिस ने सब से पहले मसाजिद में नमाज़ियों के लिये चटाइयां बिछाईं वोह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه हैं। चटाइयां बिछाने से क़ब्ल मस्जिदे नबवी का फ़र्श पक्का था।"[1]

(31).....सब से पहले मस्जिदे नबवी की तौसीअ़ करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने सब से पहले मस्जिदे नबवी की तौसीअ़ फ़रमाई और उस में कंकरियों का फ़र्श बिछा कर उसे पक्का किया। इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं : هَدَمَ الْمَسْجِدَ النَّبَوِىَّ، وَزَادَفِيْهِ وَوَسَّعَهُ وَفَرَّشَهُ بِالْحُصْبَاء "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने मस्जिदे नबवी को शहीद करा के नए सिरे से उस की ता'मीर की और उस के रक़्बे में इज़ाफ़ा किया, नीज़ आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने मस्जिदे नबवी के फ़र्श को पक्का करवाने के लिये वहां बजरी बिछाई।"[2]

फ़ारूके़ आ'ज़म की फ़लाही़ अव्वलिय्यात

(32).....सब से पहले नहरें खुदवाने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने सब से पहले ज़राअ़त व दीगर फ़वाइद के लिये नहरें खुदवाईं। आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने जो नहरें खुदवाईं उन में नहरे अबी मूसा, नहरे मा'क़िल, नहरे सा'द और नहरे अमीरुल मोमिनीन बहुत ही मशहूरो मा'रूफ़ हैं।[3]

(33).....सब से पहले शहरों की ता'मीर कराने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने सब से पहले शहरों को ता'मीर करवाया। चुनान्चे, अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं :

---

1 ......روح البيان، پ ١٠، التوبة، تحت الآية: ١٨، ج ٣، ص ٣٩٩۔

2 ......تاريخ الخلفاء، ص ١٠٩۔

3 ......فتوح البلدان، ص ٣٥٧، حسن المحاضرة، ذكر خليج مصر، ج ٢، ص ٣٢٦۔

اَوَّلُ مَنْ مَصَّرَ الْاَمْصَارَ فِي الْاِسْلَامِ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ ''या'नी जिस ने इस्लाम में सब से पहले शहर ता'मीर कराए वोह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।''(1)

(34).....सब से पहले मफ़्तूह़ा मुमालिक को तक़्सीम करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले मफ़्तूह़ा मुमालिक के निज़ाम को ब त़रीक़े अह़्सन मुनज़्ज़म करने के लिये मुख़्तलिफ़ ह़िस्सों में तक़्सीम फ़रमा दिया। नीज़ उन की तक़्सीम के बा'द हर ह़िस्से पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपना ह़ाकिम मुक़र्रर फ़रमा देते जो उस अ़लाक़े के तमाम मुआ़मलात का निज़ाम संभाल लेता।(2)

(35).....सब से पहले मर्दुम शुमारी कराने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले मरदुम शुमारी करवा के लोगों के नामों की फ़ेहरिस्तें मुरत्तब फ़रमाईं। चुनान्चे, अ़ल्लामा अबू जा'फ़र मुह़म्मद बिन जरीर त़बरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : كَتَبَ النَّاسَ عَلٰى قَبَائِلِهِمْ ''या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने (सब से पहले) लोगों (के नामों) को उन के क़बाइल के मुत़ाबिक़ लिखा।'' (या'नी मर्दुम शुमारी करवा कर उन्हें मुरत्तब फ़रमाया।)(3)

(36).....सब से पहले मुअ़ल्लिमों और मुदर्रिसों के मुशाहरे मुक़र्रर करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले मुअ़ल्लिमीन और मुदर्रिसीन के मुशाहरे मुक़र्रर फ़रमाए। ख़त़ीबे बग़दादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं :

اِنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ وَعُثْمَانَ بْنَ الْعَفَّانِ كَانَا يَرْزُقَانِ الْمُؤَذِّنِيْنَ وَالْاَئِمَّةَ وَالْمُعَلِّمِيْنَ وَالْقُضَاةَ

''या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुअज़्ज़िनों, इमामों और मुअ़ल्लिमों या'नी कुरआनो सुन्नत की ता'लीम देने वालों और क़ाज़ियों को वज़ाइफ़ दिया करते थे।''(4)

1 ......تلقیح فھوم اھل الاثر، ذکر الاوائل، ص ۳۳۷۔
2 ......تاریخ طبری، ج ۲، ص ۴۴۹۔
3 ......تاریخ طبری، ج ۲، ص ۵۷۰۔
4 ......تاریخ بغداد، ذکر من اسمه محمد واسم ابیه ابان، ج ۲، ص ۷۹، الرقم: ۴۶۰۔

(37).....सब से पहले गवर्नरों की तनख़्वाहें मुक़र्रर करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले आ़मिलों, गवर्नरों की तनख़्वाहें, वज़ाइफ़ और सह माही व सालाना बोनस मुक़र्रर फ़रमाए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने गवर्नरों को इस बात की नसीह़त कर रखी थी कि अव्वलन मन्सबे क़ज़ा के लिये नेक लोगों का इन्तिख़ाब किया जाए और फिर उन की ज़रूरत के मुत़ाबिक़ तनख़्वाहें भी दी जाएं। नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ गवर्नरों, क़ाज़ियों और फ़ौजियों को सह माही व सालाना बोनस भी दिया करते थे।(1)

(38).....सब से पहले लोगों के लिये वज़ाइफ़ मुक़र्रर करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले लोगों के लिये मुख़्तलिफ़ वज़ाइफ़ मुक़र्रर फ़रमाए। चुनान्चे, अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन सा'द बसरी ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : اَوَّلُ مَنْ فَرَضَ لَهُمُ الْاَعْطِيَة "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ही सब से पहले वज़ाइफ़ मुक़र्रर फ़रमाए।"(2)

(39).....सब से पहले शीर ख़्वार बच्चों के वज़ाइफ़ मुक़र्रर करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले शीर ख़्वार बच्चों के वज़ाइफ़ उन की पैदाइश ही से मुक़र्रर फ़रमाए। मश्हूर वाक़िआ़ है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ एक तिजारती क़ाफ़िले की निगरानी करते हुवे रात को एक ख़ैमे के पास से गुज़रे जिस से बच्चे की रोने की आवाज़ आ रही थी, मा'लूम करने पर पता चला कि उस की मां बच्चे को दूध छुड़ाना चाहती है क्यूंकि जो बच्चे दूध छोड़ चुके हों उन को वज़ीफ़ा जारी किया जाता है तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़े फ़ज्र के बा'द येह हुक्म जारी फ़रमाया कि कोई औ़रत बच्चों को दूध छुड़ाने में जल्दी न करे अब से बच्चे की पैदाइश ही से उस का वज़ीफ़ा जारी कर दिया जाएगा।(3)

(40).....सब से पहले लावारिस बच्चों की परवरिश का इन्तिज़ाम करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले "लक़ीत़" या'नी लावारिस बच्चों की परवरिश के लिये उन का वज़ीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया। चुनान्चे,

1 ......تاریخ طبری، ج۲، ص۴۷۸۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۱۴۔

3 ......البدایۃ والنہایۃ، ج۵، ص۱۴۰۔

हज़्रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़्रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में जब किसी लावारिस बच्चे को लाया जाता तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस के लिये सौ दिरहम वज़ीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाते जो उस के सर परस्त हर महीने ले जाते। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन्हें उस बच्चे के साथ हुस्ने सुलूक की वसिय्यत फ़रमाते नीज़ उस के दूध और खाने वगै़रा का ख़र्चा भी बैतुल माल से देते।(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म की इदारती अव्वलिय्यात

(41).....सब से पहले बैतुल माल क़ाइम करने वाले

हज़्रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई़ عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **اَوَّلُ مَنِ اتَّخَذَ بَيْتَ الْمَالِ** या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़्रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले बैतुल माल क़ाइम फ़रमाया।

हज़्रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन अबुल फ़रज इब्ने जौज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : हज़्रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में जो सब से आख़िरी माल आया वोह बह़रैन के आठ लाख दिरहम थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सारे दिरहम तक़्सीम फ़रमा दिये। लिहाज़ा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में बैतुल माल नहीं था न ही हज़्रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़माने में था और जिस ने सब से पहले बैतुल माल क़ाइम फ़रमाया वोह अमीरुल मोमिनीन हज़्रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।(2)

एक अहम वज़ाहत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ उ़लमाए किराम ने येह भी लिखा है कि अ़ह्दे नबवी व अ़ह्दे रिसालत में कोई बैतुल माल नहीं था ? इस की वज्ह येह है कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में जब भी कोई माल आता तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे मुस्तह़िक़ीन में तक़्सीम फ़रमा देते जैसा कि सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रिवायत गुज़री, येही

1. ......موطاامام مالک، کتاب الاقضیۃ، باب القضاء فی المنبوذ، ج۲، ص۲۶۰، حدیث:۱۴۸۲ ملخصاً۔
2. ......مناقب امیر المومنین عمر بن الخطاب، الباب التاسع والثلاثون، ص۹۷، تاریخ الخلفاء، ص۱۰۸ ملتقطاً۔

हाल अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का भी था कि जब भी कोई माल आता तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ौरन उसे तक़्सीम फ़रमा देते, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अव्वलन अपने घर (मक़ामे सुख़) में बैतुल माल क़ाइम किया हुवा था, बा'दे अज़ां उसे मदीनए मुनव्वरा मुन्तक़िल कर दिया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ उसी बैतुल माल में गए जब दरवाज़ा खोला तो येह देख कर ह़ैरान रह गए कि बैतुल माल बिल्कुल ख़ाली था और कोई दिरहमो दीनार न था क्यूंकि आप सब तक़्सीम कर दिया करते थे । बा'दे अज़ां अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में फ़ुतूह़ात की कसरत हुई तो माल भी बढ़ने लगा इसी लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बा क़ाइदा बैतुल माल क़ाइम फ़रमा दिया । लिहाज़ा दोनों अक़्वाल में कोई तज़ाद नहीं ।[1]

(42).....सब से पहले दीवान बनाने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले दीवान मुरत्तब फ़रमाया । इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **اَوَّلُ مَنِ اتَّخَذَ الدِّیْوَانَ** "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले दीवान बनाया ।"[2]

दीवान उस रजिस्टर को कहते हैं जिस में उन तमाम लोगों की फ़ेहरिस्त दर्ज होती है जिन्हें बैतुल माल से अ़त़िय्यात और वज़ाइफ़ वग़ैरा दिये जाते थे । या उस दफ़्तर या मक्तब (Office) को कहते हैं जिस में येह काम सर अन्जाम दिया जाए । अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दीवान बनाने के मुतअ़ल्लिक़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मश्वरा किया तो मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने अ़र्ज़ किया : "ह़ुज़ूर ! जो माल आप के पास जम्अ़ हो उसे हाथों हाथ हर साल तक़्सीम कर दिया करें और उस से कुछ न बचाएं ।" सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "ह़ुज़ूर मेरे ख़याल से माल बहुत ज़ियादा है जो लोगों की ज़रूरत पूरी करने के बा'द भी बच जाएगा और अगर मुस्तह़िक़ीन की फ़ेहरिस्त तय्यार न की गई तो अन्देशा है कि ग़ैर

1 ......تاریخ الخلفاء، ص ٢٠ ملخصا۔

2 ......تاریخ الخلفاء، ص ١٠٨۔

मुस्तहिक़ीन भी शामिल न हो जाएं।" बहर हाल सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दीवान मुरत्तब करने का हुक्म दे दिया।(1)

(43).....सब से पहले जेलख़ाना क़ाइम करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले जेल क़ाइम फ़रमाई और उस में मुजरिमों को क़ैद फ़रमाया। आप से पहले इस्लाम में जेल का कोई तसव्वुर न था, मुजरिमों को दीगर सख़्त सज़ाएं दी जाती थीं। सब से पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मक्कए मुकर्रमा में सफ़्वान बिन उमय्या का घर चार हज़ार दिरहम में ख़रीद कर उसे जेल बनाया फिर दूसरे अज़्लाअ़ में भी जेलें बनाने का हुक्म जारी फ़रमाया। अ़ल्लामा बग़वी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इमाम मक्ह़ूल के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं : اَوَّلُ مَنْ حَبَسَ فِي السِّجُوْنِ "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले जेल में किसी मुजरिम को क़ैद किया।" और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किसी मुजरिम को क़ैद करने के बा'द इरशाद फ़रमाया करते थे : اَحْبِسُهٗ حَتّٰى اَعْلَمَ مِنْهُ التَّوْبَةَ، وَلَا اَنْفِيْهِ اِلٰى بَلَدٍ فَيُؤْذِيْهِم "या'नी मैं इसे उस वक़्त तक क़ैद कर के रखूंगा जब तक मुझे येह इ़ल्म न हो जाए कि इस ने अपने जुर्म से तौबा कर ली है और हां मैं इसे किसी दूसरे शहर भी मुन्तक़िल नहीं करूंगा क्यूंकि येह वहां के लोगों को भी अपने शर से तक्लीफ़ पहुंचाएगा।"(2)

(44).....सब से पहले पोलीस का मोह़कमा क़ाइम फ़रमाने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले पोलीस का मोह़कमा क़ाइम फ़रमाया। मुख़्तलिफ़ अक़्साम के मुक़द्दमात मसलन ज़िना, सर्क़ा वग़ैरा की इब्तिदाई तमाम कारवाइयां इसी मोह़कमे से मुतअ़ल्लिक़ थीं। नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस मोह़कमे के चन्द ओफ़ीसर्ज़ को बाज़ारों में भी तअ़य्युनात फ़रमाया था ताकि वोह ताजिरों की बाज़ारी ख़ियानतों पर नज़र रखें। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बाज़ार में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुक़र्रर फ़रमाया था।(3)

---

(1)......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۲۴۔
كنز العمال، كتاب الجهاد، الارزاق والعطايا، الجزء: ۴، ج ۲، ص ۲۴۰، حديث: ۱۱۶۵۳ ملتقطا۔

(2)......تفسير البغوى، پ ۶، المائدة، تحت الآية: ۳۳، ج ۲، ص ۲۷۔

(3)......طبقات کبری، عبد الله بن عتبة، ج ۵، ص ۴۳۔

(45).....सब से पहले मुसाफ़िर ख़ाने और गोदाम बनवाने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले मुसाफ़िर ख़ाने और ग़ल्ले के गोदाम बनवाए जिन से मुसाफ़िरों की मदद की जाती। चुनान्चे, अ़ल्लामा मह़मूद बिन सा'द बसरी ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं :

اِتَّخَذَ عُمَرُ دَارَ الدَّقِيْقِ فَجَعَلَ فِيْهَا الدَّقِيْقَ وَالسَّوِيْقَ وَالتَّمَرَ وَالزَّبِيْبَ وَمَا يَحْتَاجُ اِلَيْهِ يُعِيْنُ بِهِ الْمُنْقَطِعَ بِهِ وَالضَّيْفَ يَنْزِلُ بِعُمَرَ وَوَضَعَ عُمَرُ فِيْ طَرِيْقِ السُّبُلِ مَابَيْنَ مَكَّةَ وَالْمَدِيْنَةِ مَايَصْلَحُ مَنْ يُنْقَطَعُ بِهٖ

"या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक गोदाम क़ाइम फ़रमाया और उस में आटा, सत्तू, खजूर, किशमिश व दीगर ज़रूरियात की अश्या रखते थे। जब कोई मुसाफ़िर और मेहमान आप के पास आता तो उस की मदद फ़रमाते। इसी त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मक्का से मदीनए मुनव्वरा के दरमियानी रास्तों पर ऐसे वसाइल क़ाइम फ़रमाए जिन से मुसाफ़िरों को मदद मिलती।"[1]

(46).....सब से पहले शहरों में मेहमान ख़ाने क़ाइम करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले मुख़्तलिफ़ शहरों में मेहमान ख़ाने व मुसाफ़िर ख़ाने क़ाइम फ़रमाए। क्यूंकि दूर दराज़ अ़लाक़ों से आने वाले लोगों को रिहाइश, क़ियाम, त़आ़म वग़ैरा में सख़्त मुश्किलात पेश आती थीं, इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मेहमान ख़ाने क़ाइम करने के लिये ख़ुसूसी हिदायात जारी फ़रमाईं। कूफ़ा और ह़ीरा के दरमियान एक बस्ती जिस का नाम "मिल्त़ात़" था वहां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुसाफ़िर ख़ाने बनवाने के लिये एक हुक्म नामा भेजा कि मुसाफ़िरों और राहगीरों के लिये एक मेहमान ख़ाना बनाया जाए तो वहां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हुक्म की ता'मील करते हुवे एक मुसाफ़िर ख़ाना व मेहमान ख़ाना क़ाइम कर दिया गया।[2]

(47).....सब से पहले ख़बर रसानी का निज़ाम बनाने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले अख़्बारी निज़ाम बनाया। क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह कोशिश होती थी कि सल्त़नत की कोई भी बात आप से

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۱۴۔

2 ......فتوح البلدان، القسم الرابع، ذکر تمصیر الکوفۃ، ص ۳۹۱۔

किसी त़रह़ पोशीदा न रहे तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों में ऐसे अफ़राद को मुतअ़य्यन किया जो पल पल की ख़बर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को पहुंचाते थे। इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन जरीर त़बरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं : وَكَانَ عُمَرُ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِيْ عَمَلِهٖ كُتِبَ اِلَيْهِ مِنَ الْعِرَاقِ بِخُرُوْجِ مَنْ خَرَجَ وَمِنَ الشَّامِ بِجَائِزَةِ مَنْ اُجِيْزَ فِيْهَا ''या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर कोई बात मख़्फ़ी नहीं रहती थी, इराक़ में जिन लोगों ने ख़ुरूज किया और शाम में जिन लोगों को इन्आ़म दिये गए सब की तह़रीरी व मुफ़स्सल रिपोर्ट आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को पहुंचा दी गई।''(1)

(48).....सब से पहले शूराई निज़ाम क़ाइम फ़रमाने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले शूराई निज़ाम क़ाइम फ़रमाया। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बा'द ख़लीफ़ा मुक़र्रर करने के लिये छे अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان पर मुश्तमिल एक शूरा क़ाइम फ़रमाई जिस का फ़ैसला आप ही का फ़ैसला था। वक़्ते वफ़ात आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : ''अगर मुझे जल्दी मौत आ जाए तो इन छे अफ़राद पर मुश्तमिल मजलिसे शूरा मेरे बा'द ख़लीफ़ा का तक़र्रुर करेगी कि इन से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने विसाले ज़ाहिरी तक राज़ी थे।''(2)

(49).....सब से पहले शहरों में क़ाज़ी मुक़र्रर करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले शहरों में क़ाज़ी मुक़र्रर फ़रमाए। चुनान्चे, इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं : هُوَ اَوَّلُ مَنِ اسْتَقْضَى الْقُضَاءَ فِي الْاَمْصَارِ ''या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले शहरों में क़ाज़ी मुक़र्रर फ़रमाए।''(3)

(50).....सब से पहले उ़म्माल के कामों को बयान करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले उ़म्माल के कामों को वाज़ेह़ फ़रमाया। चुनान्चे, शाह वलिय्युल्लाह मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی

---

1 ......تاریخ طبری، ج۲، ص۴۹۱۔

2 ......مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلوۃ، باب نھی من اکل ثوما وبصلا۔۔۔الخ، ص۲۸۳، حدیث:۷۸ ملتقطا۔

3 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۱۴۔

फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अव्वलिय्यात में से एक येह भी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक खुत़बा दिया जिस का मज़्मून येह था कि उन के आ़मिलों को क्या क्या काम करने हैं।(1)

(51).....सब से पहले उ़म्माल का एह़तिसाब मक्तब बनाने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले उ़म्माल के लिये एह़तिसाब मक्तब बनाया जहां अ़वाम में से कोई भी किसी भी आ़मिल (या'नी गवर्नर या ह़ाकिम) के ख़िलाफ़ शिकायत कर सकता था। जिस के ख़िलाफ़ शिकायत होती अगर वोह आ़मिल क़रीब होता तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उसे फ़ौरन बुलाते और पूछगछ फ़रमाते और अगर वोह कहीं दूर अ़लाक़े में होता तो ब ज़रीअ़ए मक्तूब उस से पूछगछ फ़रमाते।(2)

(52).....सब से पहले जंगलात की पैमाइश कराने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले जंगलात की पैमाइश करवाई। आ़म ज़मीन के मुक़ाबले में चूंकि जंगलात बहुत वसीअ़ होते हैं इस लिये जब सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में फ़ुतूह़ात की वुस्अ़त हुई तो उस में बे शुमार जंगलात भी आए, उन में ख़िराज वग़ैरा के मुआ़मले में सख़्त मुश्किलात पेश आईं तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जंगलात की पैमाइश का हुक्म दिया और यूं येह मस्अला ब त़रीक़े अह़सन ह़ल हो गया।(3)

(53).....सब से पहले पहाड़ों की पैमाइश करवाने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले जंगलों और पहाड़ों की पैमाइश करवाई। चुनान्चे, अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन सा'द बसरी ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

(1)......ازالۃ الخفاء، ج ۳، ص ۱۲۳۔

(2)......الاوائل للعسکری، ص ۱۷۲۔

(3)......تاریخ الخلفاء، ص ۱۰۸، الاوائل للعسکری، ص ۱۲۶ ملتقطاً۔

फ़रमाते हैं : اَوَّلُ مَنْ مَسَحَ السَّوَادَ وَاَرْضَ الْجَبَلِ "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले जंगलात और पहाड़ों की पैमाइश करवाई।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म की मआ़शी अव्वलिय्यात

(54).....सब से पहले मिस्र से मदीना अनाज मंगवाने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले मिस्र से मदीनए मुनव्वरा अनाज मंगवाया। अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : اَوَّلُ مَنْ حَمَلَ الطَّعَامَ مِنْ مِصْرَ فِيْ بَحْرِ اِيْلَةَ اِلَى الْمَدِيْنَةِ "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले मिस्र से मदीनए मुनव्वरा अनाज मंगवाया।"(2)

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में एक साल मदीनए मुनव्वरा में क़ह़त़े अ़ज़ीम पड़ा, उस का नाम "आ़मुर्रमादह" (हलाकत व बरबादी या राख वाला साल) रखा गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आ़मिले मिस्र ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक मक्तूब भेजा जिस में मिस्र से मदीनए मुनव्वरा के रहने वालों के लिये अनाज भेजने का हुक्म इरशाद फ़रमाया। उन्हों ने जवाबन अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर मैं अनाज के ऊंट भेज रहा हूं जिस का पहला ऊंट आप के पास होगा और आख़िरी ऊंट मेरे पास।" और सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मिस्र से ग़ल्ले से लदे हुवे इतने ऊंट भेजे कि वाक़ेई उन की क़त़ार का पहला ऊंट मदीनए मुनव्वरा में था और आख़िरी ऊंट मिस्र में था। अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह तमाम ऊंट तक़्सीम फ़रमा दिये, हर घर को एक एक ऊंट मअ़ अनाज अ़त़ा किया और हुक्म दिया कि अनाज खाओ और ऊंट ज़ब्ह़ कर के उस का गोश्त खाओ, चर्बी खाओ, खाल के जूते बनाओ, जिस कपड़े में अनाज भरा था उस का लिह़ाफ़ वग़ैरा बनाओ। यूं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सबब पूरे मदीनए मुनव्वरा के लोगों की मुश्किल दूर फ़रमाई।(3)

---

1 .....طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۱۴ ملتقطا۔

2 .....تاریخ الخلفاء، ص ۱۰۸ ، طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۱۴۔

3 .....مستدرک حاکم، کتاب الزکاۃ، لایدخل صاحب مکس الجنۃ، ج ۲، ص ۲۵، حدیث: ۱۵۱۱ ملتقطا۔

صحیح ابن خزیمۃ، باب ذکر الدلیل علی ان العامل۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۶۸، حدیث: ۲۳۶۸ ملتقطا۔

(55).....सब से पहले दरयाई क़ीमती माल पर महसूल मुक़र्रर करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले दरया से निकलने वाली चीज़ें जैसे ज़ुमुर्रुद, अम्बर वग़ैरा पर ख़ुमुस (पांचवां ह़िस्सा) मुक़र्रर फ़रमाया। शाह वलिय्युल्लाह मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अव्वलिय्यात में से एक येह भी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरया पर उ़म्माल मुक़र्रर फ़रमाए ताकि वोह उस से निकलने वाले माल का ख़ुमुस वुसूल करें। इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत किया है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना या'ला बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दरया पर आ़मिल मुक़र्रर फ़रमाया।[1]

(56).....सब से पहले इस्लामी सिक्के राइज करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले इस्लामी सिक्के राइज फ़रमाए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुल्के शाम व इराक़ की फ़ुतूह़ात तक क़दीम सिक्कों को चलने दिया बा'दे अज़ां 18 सिने हिजरी में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नए इस्लामी सिक्कों का इजरा किया जो पुराने सिक्कों के मुशाबेह थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो सिक्के राइज फ़रमाए उन पर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ और बा'ज़ सिक्कों पर مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ और बा'ज़ पर لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ लिखा होता था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त के आख़िर तक दस दिरहम का मजमूई वज़्न छे मिस्क़ाल के बराबर होता था।[2]

(57).....सब से पहले ह़र्बी ताजिरों पर उ़श्र मुक़र्रर करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले ह़र्बी ताजिरों को दारुल इस्लाम में आ कर मुसलमानों के साथ ख़रीदो फ़रोख़्त की इजाज़त अ़ता फ़रमाई। इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन शोऐब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत करते हैं फ़रमाया कि اَهْلِ مَنْبِج जो दरया पार के ह़र्बी थे उन्हों ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर

1 ......ازالة الخفاء، ج٣، ص ٢٤٩۔

2 ......النقود الاسلامیہ للمقریزی، فصل فی ذکر النقود الاسلامیة، ص ٤۔

फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मक्तूब लिखा कि आप हमें अपनी सर ज़मीन में तिजारत की इजाज़त अ़ता फ़रमाएं और इस के बदले हम से उ़श्र ले लें।" आप ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मश्वरा किया तो उन्हों ने इसे क़बूल कर लिया, लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें उ़श्र के साथ तिजारत की इजाज़त अ़ता फ़रमा दी।[1]

(58).....सब से पहले तिजारत के घोड़ों पर ज़कात मुक़र्रर करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले तिजारत के घोड़ों पर ज़कात मुक़र्रर फ़रमाई। अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं : اَوَّلُ مَنْ اَخَذَ زَكَاةَ الْخَيْلِ "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले तिजारती घोड़ों की ज़कात ली।" एक मरतबा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में एक ऐसा घोड़ा पेश किया गया जिसे सौ ऊंटनियों की क़ीमत में बेचा जा रहा था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : مَا ظَنَنْتُ اَنَّ اَثْمَانَ الْخَيْلِ تَبْلُغُ هٰذَا الْمَبْلَغَ "या'नी मुझे यक़ीन नहीं था कि घोड़ों की क़ीमत यहां तक पहुंच जाएगी।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह भी ख़बर दी गई कि मुल्के शाम में चराई के घोड़े भी हैं। तो इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने घोड़ों की भी ज़कात का हुक्म दे दिया।[2]

(59).....सब से पहले बनू तग़्लिब के ईसाइयों से मह़सूल वुसूल करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले बनू तग़्लिब के ईसाइयों से मह़सूल (टेक्स) वुसूल फ़रमाया। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ियाद बिन जुदैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जिस शख़्स को सब से पहले सड़कों के नाकों पर मह़सूल वुसूल करने के लिये भेजा वोह मैं ही हूं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे हुक्म दिया कि मैं किसी की तलाशी न लूं और जो चीज़ मेरे सामने गुज़रे मैं चालीस दिरहम पर एक दिरहम के ह़िसाब से मुसलमानों से लूं और ज़िम्मियों से बीस दिरहम, ग़ैर ज़िम्मी से दसवां ह़िस्सा, नीज़ बनू तग़्लिब के नसारा से खरेपन से पेश आऊं क्यूंकि वोह अहले किताब नहीं हैं शायद वोह इस्लाम ले आएं।[3]

---

1 ......كتاب الخراج، ص ١٣٥۔

2 ......تاريخ الخلفاء، ص ١٠٨، الاوائل للعسكرى، ص ١٧٧۔

3 ......كتاب الخراج، ص ١٢٠۔

(60).....सब से पहले किताबियों से ब त़रीके़ मईशत जिज़्या लेने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले ब त़रीके़ मईशत किताबियों से जिज़्या लिया। चुनान्चे, अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन सा'द बसरी ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं :

اَلْجِزْيَةُ عَلٰى جَمَاجِمِ اَهْلِ الذِّمَّةِ فِيْمَا فَتَحَ مِنَ الْبُلْدَانِ فَوَضَعَ عَلَى الْغَنِيِّ ثَمَانِيَةً وَّ اَرْبَعِيْنَ دِرْهَماً وَعَلَى الْوَسْطِ اَرْبَعَةً وَّعِشْرِيْنَ دِرْهَماً وَعَلَى الْفَقِيْرِ اِثْنَيْ عَشَرَ دِرْهَماً

"या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों के किताबियों से इस त़रह़ जिज़्या लिया कि ग़नी से अड़तालीस दिरहम, मुतवस्सित़ से चौबीस दिरहम जब कि फ़क़ीर से बारह दिरहम।"(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म की जंगी अव्वलिय्यात

(61).....सब से पहले फ़ौजी छावनियां क़ाइम करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों में फ़ौजी छावनियां क़ाइम फ़रमाईं। मफ़्तूह़ा मुमालिक के तमाम शहरों में और ख़ुसूसन मुल्के शाम के शहरों में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जिन फ़ौजी छावनियों को क़ाइम किया आप ने उन्हें "अजनाद" (या'नी लश्कर के रहने की जगह) का नाम दिया। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन शहरों में फ़ौजी छावनियां इस त़रह़ बनाईं कि उन में फ़ौजियों के रहने के लिये बैरकें बनाईं, घोड़ों के अस्त़बल बनाए, जिन में बयक वक़्त कम अज़ कम चार हज़ार घोड़े मअ़ साज़ो सामान और पूरी जंगी तय्यारी के साथ हर वक़्त तय्यार रहते थे।(2)

(62).....सब से पहले फ़ौजियों की घरों से जुदाई की मुद्दत मुअ़य्यन करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले जंग में जाने वाले फ़ौजियों की अपने घरों में वापस आने की मुद्दत मुअ़य्यन की, इस का सबब एक फ़ौजी की ज़ौजा बनी जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रात को शहर का दौरा करते हुवे उस के घर के क़रीब से गुज़रे तो

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۱۴۔

2 ......تاریخ طبری، ج ۲، ص ۴۸۳۔۴۹۰۔

उस ने अपने शोहर की जुदाई से मुतअ़ल्लिक़ा दर्द भरे कलिमात कहे तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी बेटी ज़ौजए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मुशावरत के बा'द हुक्म जारी फ़रमा दिया कि मैदाने जंग में कम अज़ कम तीन माह और ज़ियादा से ज़ियादा चार माह तक फ़ौजी रह सकता है इस के बा'द वोह फ़िलफ़ौर अपने घर छुट्टी ले कर आ जाए।[1]

(63).....सब से पहले जंगी घोड़े का ह़िस्सा नाफ़िज़ करने वाले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले जंग में ह़िस्सा लेने फ़ौजियों के घोड़ों का ह़िस्सा भी नाफ़िज़ फ़रमाया। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जंगी घोड़े के लिये दो ह़िस्से मुक़र्रर फ़रमाए और घोड़ सुवार के लिये एक ह़िस्सा। और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं : **اَوَّلُ مَنْ جَعَلَ لِلْفَرَسِ سَهْمَيْنِ عُمَرُ** ''या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले जंगी घोड़ों के दो ह़िस्सों को नाफ़िज़ फ़रमाया।''[2]

फ़ारूके़ आ'ज़म की उख़रवी अव्वलिय्यात

(64).....सब से पहले नामए आ'माल दाएं हाथ में दिये जाने वाले

कल बरोजे़ क़ियामत सब से पहले अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को दाएं हाथ में नामए आ'माल दिया जाएगा। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना जै़द बिन साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اَوَّلُ مَنْ يُعْطٰى كِتَابُهٗ بِيَمِيْنِهٖ مِنْ هٰذِهِ الْاُمَّةِ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ

''या'नी इस उम्मते मुह़म्मदिय्या में से कल बरोजे़ क़ियामत जिसे सब से पहले दाएं हाथ में नामए आ'माल दिया जाएगा वोह उ़मर है।''[3]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ......درمنثور، پ ۲، البقرة، تحت الآية: ۲۲۷، ج ۱، ص ۶۵۳۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الجهاد، باب فی الفارس کم یقسم له، ج ۷، ص ۶۶۲، حدیث: ۷۔

3 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۳۰، ص ۱۵۴۔

सत्तरहवां बाब

विसाले फ़ारूके़ आ'ज़म

इस बाब में मुलाह़ज़ा कीजिये......................

.....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और शहादत की दुआ़

.....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत पर लोगों का मुत्त़लअ़ होना

.....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अपनी शहादत की ख़बर देना

.....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर क़ातिलाना ह़म्ला

.....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत से क़ब्ल वसिय्यतें, रोने और नौह़ा करने की मुमानअ़त

.....इन्तिख़ाबे ख़लीफ़ा के लिये मजलिसे शूरा का क़ियाम, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत

.....शाने फ़ारूके़ आ'ज़म ब ज़बाने मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم)

.....फ़ारूके़ आ'ज़म का ग़ुस्ल मुबारक, कफ़न मुबारक, नमाज़े जनाज़ा और तदफ़ीन

.....शहादते फ़ारूके़ आ'ज़म के बा'द मुख़्तलिफ़ अस्ह़ाब के तअस्सुरात, विसाले फ़ारूके़ आ'ज़म और जिन्नात

.....फ़ैज़ाने मज़ाराते सलासा, तीनों मज़ाराते मुबारका से मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ उमूर का तफ़्सीली बयान

विसाले फ़ारूक़े आ'ज़म

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज अगर दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक के निज़ाम पर नज़र डाली जाए तो येह बात सामने आती है कि इन्हें चलाने के लिये बीसियों बड़े बड़े वज़ीरों और मुशीरों की ज़रूरत पड़ती है, जहां दाख़िली उमूर के लिये एक वज़ीर मुक़र्रर होगा तो वहीं ख़ारिजी मुआ़मलात के लिये भी अ़लाहिदा से एक वज़ीर मुक़र्रर होगा, इसी त़रह़ मुल्क के दीगर मुआ़मलात पानी, बिजली, गेस, तिजारत, ज़राअ़त, सक़ाफ़त, ता'लीम, मआ़शी, मुआ़शरती तमाम उमूर के लिये अ़लाहिदा अ़लाहिदा वुज़रा मुक़र्रर किये जाते हैं, जिस शो'बे की बात की जाए इस के पीछे अ़लाहिदा से एक वज़ीर मुक़र्रर होगा, लेकिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुकम्मल ख़िलाफ़त और इस के मुख़्तलिफ़ निज़ाम देखें जाएं तो बड़े बड़े दानिशवर ह़ैरानो परेशान हो जाते हैं कि अगर्चे बा'ज़ मुआ़मलात में ब ज़ाहिर ज़िम्मेदारान का तक़र्रुर नज़र आता है लेकिन इस के तमाम मुआ़मलात के पीछे सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही की ज़ाते मुबारका कार फ़रमा थी, बीसियों शो'बाजात में ज़िम्मेदारान के बजाए फ़क़त़ आप ही का हुक्म जारी होता था, आप की ज़ाते मुबारका हमा जिहत शख़्सिय्यत होने के साथ साथ हमा जिहत ह़ाकिम भी थी, सल्त़नत के दाख़िली, ख़ारिजी, मआ़शी, ता'लीमी और जंगी दिफ़ाई तमाम मुआ़मलात पर बयक वक़्त आप की नज़र होती थी, जिस मज़बूत़ और मुस्तह़कम अन्दाज़ में आप ने उमूरे सल्त़नत को सर अन्जाम दिया अगर इसे आप की करामत कहा जाए तो बेजा न होगा। इसी वज्ह से आप की ज़ाते मुबारका की कमी को ता क़ियामत मह़सूस किया जाता रहेगा। यक़ीनन काइनात को जिस हस्ती की ज़रूरत है वोह नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही की है लेकिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी दुन्या से वा'दए इलाही के मुत़ाबिक़ विसाले ज़ाहिरी फ़रमा गए और आप के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप के ख़लीफ़ा मुक़र्रर हुवे वोह भी दुन्या से विसाल फ़रमा गए मशिय्यते इलाही येह है कि كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ "या'नी हर जान को मौत का मज़ा चखना है।" यक़ीनन अब सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी दुन्या से तशरीफ़ ले जाना था। एक मजूसी गुलाम ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को नमाज़े फ़ज्र में ख़न्जर के वार से शदीद ज़ख़्मी किया, और वोही ज़ख़्म आप की शहादत का सबब बना, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दाइये अजल को लब्बैक कहा और दुन्या से तशरीफ़ ले गए।

اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّاۤ اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ

फ़ारूक़े आ'ज़म का आख़िरी हज

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आख़िरी ह़ज सिने 23 हिजरी में फ़रमाया और उसी साल ह़ज्जे बैतुल्लाह से वापसी के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद कर दिया गया।(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म और शहादत की दुआ़

मदीनए मुनव्वरा में शहादत की दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के गुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बयान करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी शहादत की दुआ़ यूं मांगी :

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِيْ شَهَادَةً فِيْ سَبِيْلِكَ وَاجْعَلْ مَوْتِيْ فِيْ بَلَدِ رَسُوْلِكَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم

''या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू मुझे अपनी राह में शहादत की मौत अ़त़ा फ़रमा और अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शहर मदीनए मुनव्वरा में शहादत अ़त़ा फ़रमा।''(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म की शहादत की दुआ़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिना से वादिये अब्त़ह़ तशरीफ़ ले गए और यूं दुआ़ मांगी :

اَللّٰهُمَّ كَبُرَتْ سِنِّيْ وَضَعُفَتْ قُوَّتِيْ وَانْتَشَرَتْ رَعِيَّتِيْ فَاقْبِضْنِيْ اِلَيْكَ غَيْرَ مُضَيِّعٍ وَلَا مُفَرِّطٍ ''या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अब मैं बूढ़ा हो चुका हूं, मेरी कुव्वत भी कमज़ोर हो चुकी है, मेरी रिआ़या बहुत बढ़ गई है, तू मुझे ज़ाएअ़ और नाकारा किये बिग़ैर अपनी बारगाह में बुला ले।'' फिर आप मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाए और लोगों को एक नसीह़त आमोज़ ख़ुत़बा दिया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप की दुआ़ को शरफ़े क़बूलिय्यत बख़्शा और ज़ुल ह़िज्जा का महीना ख़त्म होने से पहले ही आप को शहादत अ़त़ा फ़रमाई।(3)

तौरात में फ़ारूक़े आ'ज़म की शहादत का ज़िक्र

ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि उन्हों ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ किया : اَجِدُكَ فِي التَّوْرَاةِ تُقْتَلُ شَهِيْدًا

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۱۵۔

2 ......بخاری، کتاب فضائل المدینۃ، ج ۱، ص ۶۲۲، حدیث: ۱۸۹۰۔

3 ......موطا امام مالک، کتاب الحدود، باب ماجاء فی الرجم، ج ۲، ص ۳۳۴، حدیث: ۱۵۸۵ ملخصاً۔

"या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं ने तौरात शरीफ़ में आप के मुतअ़ल्लिक़ येह लिखा हुवा देखा है कि आप को शहीद किया जाएगा।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : اَنّٰی لِیْ بِالشَّھَادَۃِ وَاَنَا بِجَزِیْرَۃِ الْعَرَبِ "या'नी मेरे नसीब में शहादत कहां ? मैं तो यहां जज़ीरए अ़रब में मौजूद हूं।"(1)

अल्लाह चाहे तो शहादत से नवाज़ सकता है

एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और येह आयते मुबारका पढ़ी : ﴿جَنّٰتُ عَدْنٍ یَّدْخُلُوْنَھَا﴾(پ۱۴، النحل: ۳۱) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "बसने के बाग़ जिन में जाएंगे।" फिर फ़रमाया : "ऐ लोगो ! मा'लूम है **जन्नाते अ़द्न** क्या है ?" फिर खुद ही इस की तफ़्सीर बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाने लगे : "येह जन्नत का एक मह़ल है जिस के पांच हज़ार दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े पर पच्चीस हज़ार (25000) हूरे ऐ़न खड़ी हैं। इस में या तो अम्बिया जा सकते हैं।" और साथ ही आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर की त़रफ़ इशारा करते हुवे फ़रमाया : "इस क़ब्र के मकीन के लिये मुबारक है।" फिर फ़रमाया : "या तो सिद्दीक़ जा सकते हैं।" और साथ ही आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्रे मुनव्वर की त़रफ़ इशारा किया।" फिर फ़रमाया : "या शहीद जा सकते हैं और मेरे लिये शहादत कहां ? ताहम जिस रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे मेरी मां ह़न्तमा के पेट से निकाला है अगर वोह चाहे तो मुझे शहादत भी अ़त़ा फ़रमा सकता है।"(2)

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत के बारे में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बहुत पहले अपनी ह़याते त़य्यिबा ही में ख़बर दे दी थी। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि : "मैं नौ आदमियों के बारे में जन्नती होने की गवाही देता हूं और अगर मैं दसवें आदमी के बारे में भी गवाही दूं तो गुनहगार न होऊंगा।" लोगों ने पूछा : "वोह कैसे ?" फ़रमाया : "एक बार हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ जबले ह़िरा पर मौजूद थे कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया : ऐ ह़िरा ! ठहर जा क्यूंकि तुझ पे नबी, सिद्दीक़ और शहीद ही तो हैं।" लोगों ने पूछा

1 ......تاریخ الاسلام، ج۳، ص۲۷۶۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الجنۃ، ماذکر فی الجنۃ۔۔۔الخ، ج۸، ص۸۰، حدیث: ۹۷۔

कि "उस वक़्त पहाड़ पर कौन कौन थे ?" फ़रमाया : "रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه, सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه, सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه, सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم), सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه, सय्यिदुना जुबैर बिन अ़व्वाम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه, सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه और सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه।" लोगों ने अ़र्ज़ किया : "येह तो नौ (9) हुवे, दसवां कौन था ?" फ़रमाया : "मैं।" (या'नी सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه)(1)

शहादते फ़ारूके आ'ज़म पर लोगों को इत्तिलाअ़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की शहादत से क़ब्ल कई लागों को आप की शहादत के बारे में पता चल गया था। चन्द वाक़िआ़त पेशे ख़िदमत हैं :

सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री का ख़्वाब

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि : "मैं ने ख़्वाब में बहुत सारे रास्ते देखे, फिर एक रास्ते के इ़लावा सारे ख़त्म हो गए। मैं उसी रास्ते पर चलता हुवा एक पहाड़ तक जा पहुंचा, मैं ने देखा कि उस पहाड़ पर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه जल्वा अफ़रोज़ हैं और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को इशारे से अपने पास बुला रहे हैं। (येह ख़्वाब देख कर) मैं ने اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ पढ़ा और समझ गया कि सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का इन्तिक़ाल हो चुका है।"(2)

सय्यिदुना हुज़ैफ़ा और ज़िक्रे शहादते फ़ारूके आ'ज़म

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है फ़रमाते हैं कि मैं अ़रफ़ात के मैदान में सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के साथ मौजूद था, मेरी सुवारी आप की सुवारी के बिल्कुल साथ और मेरा कन्धा आप के कन्धे से मिला हुवा था, हम सूरज ग़ुरूब होने का इन्तिज़ार कर रहे थे ताकि अपना सफ़र शुरूअ़ करें। सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने वहां मौजूद लोगों की तक्बीर

---

(1)......ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب عبد الرحمن بن عوف۔۔۔الخ، ج۵، ص۴۱۶، حدیث: ۳۷۶۹۔

(2)......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۵۳۔

की सदाएं, दुआएं, वग़ैरा मुलाहज़ा कीं तो मुझ से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ हुज़ैफ़ा ! तुम्हारा क्या ख़याल है येह तमाम मुआमलात कब तक बाक़ी रहेंगे ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! अभी फ़ितनों पर एक दरवाज़ा है, जब उस दरवाज़े को तोड़ दिया जाएगा या वोह दरवाज़ा खोल दिया जाएगा तो फ़ितने बाहर आ जाएंगे।" येह सुन कर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हैरानी से पूछा : "ऐ हुज़ैफ़ा ! वोह दरवाज़ा क्या है, उस के तोड़ने या खुलने से क्या मुराद है ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "दरवाज़े से मुराद एक मर्द है जिस का इन्तिक़ाल हो जाएगा या उसे शहीद कर दिया जाएगा।" फ़रमाया : "ऐ हुज़ैफ़ा ! तुम्हारा क्या ख़याल है मेरे बा'द लोग किस को अमीर बनाएंगे ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "मैं ने लोगों को देखा है कि आप के बा'द वोह सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सहारा लेंगे।"(1)

अजनबी शख़्स और शहादते फ़ारूक़े आ'ज़म

हज़रते सय्यिदुना जुबैर बिन मुत़्इम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि हम अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ जबले अ़रफ़ात पर खड़े थे कि एक शख़्स चीख़ चीख़ कर आप को यूं पुकारने लगा : "ऐ ख़लीफ़ा ! ऐ ख़लीफ़ा !" वहां मौजूद तमाम लोगों ने इस को सुना और उसे डांटने लगे, एक शख़्स ने उसे डांटते हुवे कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरा हल्क़ बन्द करे तुझे क्या हुवा है ?" सय्यिदुना जुबैर बिन मुत़्इम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं आगे बढ़ा और उस शख़्स को बुरा भला कहने से लोगों को रोका। फिर दूसरे दिन मैं सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ अ़क़्बा के पास खड़ा था, आप शैत़ान को कंकरियां मार रहे थे कि एक कंकरी आ कर आप के सर में लगी जिस से आप का सर ज़ख़्मी हो गया और ख़ून बहने लगा, फिर मैं ने पहाड़ से एक शख़्स को येह कहते हुवे सुना : "रब्बे का'बा की क़सम ! मुझे मा'लूम हो गया है कि इस साल के बा'द सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कभी भी इस जगह खड़े नहीं होंगे।" (या'नी इसी साल उन की शहादत हो जाएगी।) सय्यिदुना जुबैर बिन मुत़्ईम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि जब मैं ने उस शख़्स की त़रफ़ देखा तो पता चला कि येह वोही शख़्स है जो कल ज़ोर ज़ोर से चीख़ रहा था और लोग उसे डांट रहे थे।(2)

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۵۳۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۵۴۔

फ़ारूके आ'ज़म और शहादत की ख़बर

फ़ारूके आ'ज़म ने अपनी शहादत की ख़बर दी

हज़रते सय्यिदुना मा'दान बिन अबू त़ल्ह़ा या'मुरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिम्बर पर तशरीफ़ लाए, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना बयान की, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़िक्रे ख़ैर फ़रमाया, फिर इरशाद फ़रमाया : ''ऐ लोगो ! मैं ने ख़्वाब देखा कि एक मुर्ग़ ने मुझे एक या दो ठोंगें मारीं हैं, मैं इस की ता'बीर येह समझा हूं कि मेरी वफ़ात का वक़्त क़रीब आ चुका है।''[1]

जिन्न और शहादते फ़ारूके आ'ज़म की ख़बर

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से आख़िरी ह़ज उम्महातुल मोमिनीन के साथ किया, जब हम सब वादिये अ़रफ़ा से वादिये मुह़स्सब पहुंचे तो एक शख़्स की आवाज़ सुनी जो अपनी सुवारी पर बैठा किसी दूसरे शख़्स से सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में पूछ रहा था वोह उसे बता रहा था कि अमीरुल मोमिनीन येहीं हैं। येह सुन कर वोह बुलन्द आवाज़ से येह अश्आ़र पढ़ने लगा :

عَلَيْكَ سَلامٌ مِنْ اِمَامٍ وَبَارَكَتْ ... يَدُ اللّٰهِ فِي ذَاكَ الاَدِيمِ الْمُمَزَّقِ

तर्जमा : ''ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सलाम हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस मुबारक जान में बरकत दे जो अ़न क़रीब टूट फूट का शिकार (या'नी शहीद) होने वाली है।''

فَمَنْ يَسْعَ اَوْ يَرْكَبْ جَنَاحَيْ نَعَامَةٍ ... لِيُدْرِكَ مَا قَدَّمْتَ بِالاَمْسِ يُسْبَقِ

तर्जमा : ''कौन है ऐसा शख़्स जो शुतर मुर्ग़ के परों पर सुवार हो कर उन उमूर को ह़ासिल कर ले जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी दौरे ख़िलाफ़त में अन्जाम दिये।''

قَضَيْتَ اُمُورًا ثُمَّ غَادَرْتَ بَعْدَهَا ... بَوَائِقَ فِي اَكْمَامِهَا لَمْ تُفَتَّقِ

तर्जमा : ''आप ने बे शुमार उमूर अन्जाम दिये, फिर मुसीबतों और परेशानियों को उन की गुठलियों में ऐसे रख दिया कि वोह खुल ही न सकें।''

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب المغازی، ماجاء فی خلافۃ عمر بن الخطاب، ج ۸، ص ۵۷۸، حدیث: ۷۔

फिर उस सुवार ने वहां से कोई ह़रकत न की और न ही किसी को येह पता चला कि वोह कौन है, हम आपस में गुफ़्त्गू किया करती थीं कि शायद वोह कोई जिन्न था। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالی عنہ उस ह़ज से वापस आए तो आप को शहीद कर दिया गया।[1]

फ़ारूके़ आ'ज़म पर क़ातिलाना ह़म्ला

अबू लुअलुअ का फ़ारूके़ आ'ज़म पर क़ातिलाना ह़म्ला

एक बार सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शुअ़बा رضی اللہ تعالی عنہ ने एक गुलाम अबू लुअलुअ के बारे में सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالی عنہ को बताया जो कई हुनर जानता था, आप ने उसे मदीनए मुनव्वरा में दाखि़ल होने की इजाज़त दे दी। सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शुअ़बा رضی اللہ تعالی عنہ उस से माहाना सौ (100) दिरहम लिया करते थे। उस ने बारगाहे फ़ारूके़ आ'ज़म में ह़ाज़िर हो कर शिकायत की तो आप ने उस से पूछा : "तुम क्या काम करते हो ?" उस ने कहा : "चक्कियां बनाता हूं।" फ़रमाया : "अपने मालिक के मुआ़मले में **अल्लाह** عزوجل से डरो।" बा'ज़ रिवायात में यूं है कि आप ने फ़रमाया : "येह चार (4) दिरहम तुम्हारे लिये ज़ियादा नहीं हैं क्यूंकि इस अ़लाके़ में तुम ही चक्कियां बनाना जानते हो, तुम्हारे इ़लावा येह काम कोई नहीं जानता।" सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالی عنہ का येही इरादा था कि बा'द में सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शुअ़बा رضی اللہ تعالی عنہ को उस के मुआ़मले में तख़्फ़ीफ़ करने का फ़रमाएंगे लेकिन उसे येह बात सख़्त ना गवार गुज़री और उस ने आप से इन्तिक़ाम लेने का सोच लिया। एक रिवायत में यूं है कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالی عنہ ने उसे अपने लिये चक्की बनाने का फ़रमाया तो उस ने मुंह बिगाड़ते हुवे कहा : "मैं तुम्हारे लिये ऐसी चक्की बनाऊंगा जिसे हमेशा लोग याद रखेंगे।" येह कह कर वोह चला गया। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالی عنہ ने अपने अस्ह़ाब से फ़रमाया : "इस गुलाम ने मुझे अभी धमकी दी है।" बहर ह़ाल अबू लुअलुअ ने वहां से जाने के बा'द एक दो (2) मुंह और तेज़ धार वाला ख़न्जर तय्यार किया, फिर उसे ज़ह्र आलूद कर के रख लिया।

बा'ज़ रिवायात में यूं है कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالی عنہ अपने घर से जब नमाज़े फ़ज्र के लिये निकलते तो सदाए मदीना लगाते हुवे निकलते या'नी रास्ते में लोगों को नमाज़ के लिये जगाते हुवे आते, अबू लुअलुअ रास्ते में ही छुपा हुवा था और उस ने मौक़अ़ देख कर आप पर ख़न्जर

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۵۴۔

के तीन क़ातिलाना वार कर दिये जो मोहलिक साबित हुवे। जब कि बा'ज़ रिवायात में यूं है कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ़दते मुबारका थी कि नमाज़ शुरूअ़ करने से पहले ए'लान फ़रमाते : اَقِیْمُوْا صُفُوْفَکُمْ "या'नी अपनी सफ़ें सीधी कर लो।" फिर नमाज़ शुरूअ़ करते। अबू लुअलुअ भी सफ़ में मौजूद था, जैसे ही सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़ शुरूअ़ की तो उस ने आप पर उस ख़न्जर से ह़म्ला किया और तीन (3) शदीद वार लगाए। आप ज़ख़्मी ह़ालत में नीचे तशरीफ़ ले आए।[1]

क़ातिल ने ख़ुदकुशी कर ली

अबू लुअलुअ आप को ज़ख़्मी कर के भाग खड़ा हुवा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "उस कुत्ते को पकड़ो, उस ने मुझे क़त्ल कर दिया है।" पूरी मस्जिद में शोर बर्पा हो गया, लोग उस के पीछे भागे तो उस ने तक़रीबन बारह अफ़राद को ज़ख़्मी कर दिया, जिन में से छे (6) अफ़राद बा'द में शहीद हो गए, एक साहि़ब ने उस पर कपड़ा डाल कर उसे दबोच लिया। जब उसे यक़ीन हो गया कि अब मैं फ़िरार नहीं हो सकता तो उस ने उसी ख़न्जर से अपने आप को क़त्ल कर दिया।[2]

अमीर की इत़ाअ़त में ही बेहतरी है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम हुक्मरानों को हुक्म दे दिया था कि "हमारे पास मायूस कुन अ़जमी काफ़िरों को न लाया करो।" जब अबू लुअलुअ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़ख़्मी कर दिया तो आप ने पूछा : "येह कौन है ?" बताया गया कि सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शुअ़बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ग़ुलाम अबू लुअलुअ है। फ़रमाया : اَلَمْ اَقُلْ لَکُمْ لَاتَجْلِبُوا عَلَیْنَا مِنَ الْعُلُوجِ اَحَدًا فَغَلَبْتُمُوْنِیْ "या'नी मैं न कहता था कि मायूस कुन अ़जमी ग़ुलामों को हमारे पास न लाया करो, लेकिन अफ़्सोस तुम लोग मुझ पर ग़ालिब आ गए।"[3]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि अपने ह़ाकिम की इत़ाअ़त ही में भलाई है, जब कि उस का हुक्म शरीअ़त के मुत़ाबिक़ हो, बिला वज्हे शरई फ़क़त़ ज़ाती व नफ़्सानी ख़्वाहिशात

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۴۱۱، طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۶۲۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۵۹۔

3 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۶۵۔

की बिना पर हाकिम या निगरान की बात न मानने में बहुत सी ख़राबियां पैदा होने का इम्कान है, अगर हर शख़्स अपनी मरज़ी चलाएगा तो यक़ीनन सारा निज़ाम दरहम बरहम हो जाएगा।

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म को घर लाया गया

जब सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ शदीद ज़ख़्मी हो गए तो सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुख़्तसर सूरतें पढ़ कर तमाम लोगों को नमाज़े फ़ज्र पढ़ा दी और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को घर लाया गया। आप ने फ़रमाया : "मेरे लिये किसी त़बीब को लाओ।" एक त़बीब को लाया गया उस ने पूछा : "आप को क्या चीज़ पसन्द है?" फ़रमाया : "नबीज़।" जब आप को नबीज़ पिलाया गया तो वोह ज़ख़्मों के ज़रीए़ बाहर आ गया, लोगों ने येह समझा कि शायद ज़ख़्मों से ख़ून वग़ैरा निकला है। लिहाज़ा उन्हों ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को दूध पिलाया तो वोह भी ज़ख़्मों से बाहर आ गया। त़बीब ने कहा : "मेरे ख़याल में येह शाम तक ज़िन्दा न रह सकेंगे, आप लोगो ने जो मुआ़मलात करने हैं कर लें।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म का क़ातिल कौन था ?

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद करने वाले शख़्स का नाम अबू लुअलुअ फ़ीरोज़ था, जलीलुल क़द्र सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शुअ़बा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह ग़ुलाम था, जंगे निहावन्द के क़ैदियों में से था, इस के बारे में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं अलबत्ता येह बात मुतह़क़्क़क़ है कि येह मुसलमान नहीं था बल्कि ग़ैर मुस्लिम था। अ़ल्लामा त़बरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं कि अबू लुअलुअ नसरानी था जब कि अ़ल्लामा ज़हबी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की रिवायत के मुत़ाबिक़ वोह मजूसी था।(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म का शुक्र अदा करना

ज़ख़्मी होने के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को घर लाया गया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को भेजा ताकि वोह पता कर के आएं कि उन का क़ातिल कौन है? वोह गए और लोगों से मा'लूम करने के

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۵۹۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۶۴، تاریخ طبری، ج ۲، ص ۵۵۹۔

سیر اعلام النبلاء، عمر بن الخطاب، ج ۱، ص ۵۲۹، الرقم: ۳۔

बा'द आ कर अ़र्ज़ किया कि : "आप का क़ातिल सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शुअ़बा का ग़ुलाम अबू लुअलुअ है और उस ने दीगर लोगों को भी ज़ख़्मी किया है और बिल आख़िर अपने आप को मार कर ख़ुदकुशी कर ली ।" येह सुन कर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है कि जिस ने मेरे क़ातिल को अपनी बारगाह का कभी साजिद न बनाया ।"(1)

सय्यिदुना का'ब की शहादत की याद दहानी

जब त़बीब ने इस बात की तस्दीक़ कर दी कि आप शहीद हो जाएंगे तो वहां मौजूद ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उन की शहादत की याद दहानी कराते हुवे अ़र्ज़ किया : "ह़ुज़ूर ! याद करें मैं ने आप से न कहा था कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को ज़रूर शहादत अ़त़ा फ़रमाएगा । लेकिन आप ने फ़रमाया था कि मेरे नसीब में शहादत की मौत कहां ? क्यूंकि मैं तो यहां जज़ीरए अ़रब में मौजूद हूं ।"(2)

अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ ने नमाज़े फ़ज्र पढ़ाई

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने चूंकि नमाज़े फ़ज्र अभी शुरूअ़ ही की थी कि आप को ज़ख़्मी कर दिया गया इस लिये किसी ने भी नमाज़ अदा न की थी, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुक्म से ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम लोगों को मुख़्तसर सूरतों की तिलावत कर के नमाज़े फ़ज्र पढ़ाई । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सूरए अ़स्र और सूरए कौसर की तिलावत फ़रमाई । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चूंकि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़रीबी साथियों में से थे इस लिये आप पर ग़म की शदीद कैफ़िय्यत त़ारी थी जिसे दौराने नमाज़ आप की तिलावत में भी दीगर लोगों ने मह़सूस किया ।(3)

हमारी उ़म्रें भी फ़ारूक़े आ'ज़म को लग जाएं

ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुह़म्मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़ख़्मी किया गया तो बदरी मुहाजिरीन व अन्सार तमाम लोग जम्अ़ हो गए । सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۶۳۔
2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۵۹۔
3 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۵۹، ۲۶۳۔

सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : ''तुम बाहर जाओ और उन से पूछो कि क्या मुझ पर ह़म्ला उन की रिज़ा और मश्वरे से हुवा है ?'' सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बाहर आ कर पूछा तो तमाम लोगों ने अ़र्ज़ किया : لَا وَاللّٰہِ وَلَوَدِدْنَا اَنَّ اللّٰہَ زَادَ فِیْ عُمُرِکَ مِنْ اَعْمَارِنَا ''या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह सब कुछ हमारी रिज़ा व मश्वरे से नहीं हुवा बल्कि हम तो येह चाहते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी उ़म्रें भी सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को लगा दे।''(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म ने नमाज़े फ़ज्र अदा की

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि : ''अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़ख़्मी होने के बा'द जब घर लाया गया तो मुसलसल ख़ून बहने के सबब आप पर ग़शी त़ारी हो गई, जब होश आया तो मैं ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हाथ थाम लिया, फिर उन्हों ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे अपने पीठ पीछे बिठा लिया। वुज़ू किया और नमाज़े फ़ज्र अदा की।'' एक रिवायत में यूं है कि जब आप को होश आया तो पूछा कि : ''लोगों ने नमाज़े फ़ज्र अदा कर ली है ?'' बताया गया कि सब ने नमाज़ अदा कर ली है तो इरशाद फ़रमाया : لَا اِسْلَامَ لِمَنْ تَرَکَ الصَّلَاۃَ ''या'नी तारिके नमाज़ ह़क़ीक़ी मुसलमान नहीं हो सकता।'' फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वुज़ू किया और नमाज़े फ़ज्र अदा की।''(2)

तीन दिन तक नमाज़ अदा फ़रमाई

ह़ज़रते सय्यिदुना मुत्त़लिब बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ह़न्त़ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तीन दिन तक उन्ही कपड़ों में नमाज़ अदा की जिन में आप को ज़ख़्मी किया गया था।(3)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़त़ई जन्नती और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दोस्त होने के बा वुजूद अह़कामे शरइय्या पर कितनी सख़्ती से अ़मल करने वाले थे, आप ने जांकनी के आ़लम में भी

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۶۵۔
2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۶۳، ۲۶۶۔
3 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۷۶۔

नमाज़ तर्क न फ़रमाई, एक हम हैं कि सिरे से नमाज़ पढ़ते ही नहीं और अगर बिलफ़र्ज़ किसी को नमाज़ पढ़ने की तौफ़ीक़ मिल भी जाए तो कमा ह़क़्क़ुहू नमाज़ अदा नहीं करते, थोड़ी सी तक्लीफ़ पहुंच जाए तो हमें नमाज़ तर्क करने का एक बहाना मिल जाता है ह़ालांकि नमाज़ किसी ह़ाल में मुआ़फ़ नहीं। लेकिन अफ़्सोस हमारी तो पूरी की पूरी नमाज़ें फ़ौत हो जाती हैं लेकिन हमें इस की कोई फ़िक्र ही नहीं होती, काश! हमें भी सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसा मदनी ज़ेह्न मिल जाएं, हम भी अपनी नमाज़ों की ह़िफ़ाज़त करने वाले बन जाएं, काश! हमारी कोई भी नमाज़ तो कुजा जमाअ़त भी क़ज़ा न होने पाए।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इ़यादत के लिये लोगों की बे ताबी

चूंकि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़िल ह़िज्जा के महीने में ज़ख़्मी किया गया था लिहाज़ा ह़ज से फ़राग़त के बा'द शाम और इ़राक़ से आने वाले ज़ाइरीने मदीना क़ाफ़िले की सूरत में जूक़ दर जूक़ आप की इ़यादत के लिये ह़ाज़िर होने लगे। जब ह़ज़रते सय्यिदुना जुवैरिय्या बिन क़ुदामा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने क़ाफ़िले के हमराह आप की इ़यादत के लिये ह़ाज़िर हुवे तो आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते फ़ारूके़ आ'ज़म के पेट के गिर्द सियाह इ़मामा लिपटा हुवा देखा।(1)

इन्तिक़ाल के वक़्त भी फ़िक्रे आख़िरत

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़ख़्मी होने के बा'द लोग आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुबारक किरदार की ता'रीफ़ें करने लगे तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया: "जिस की ज़िन्दगी ने उसे धोका दिया, वोह वाक़ेई धोके में है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम! मैं तो दुन्या से इस त़रह़ जाना चाहता हूं जिस त़रह़ दुन्या में आया था। ख़ुदा की क़सम! क़ियामत की हौलनाकियों से बचने के लिये मैं हर उस चीज़ को फ़िदया कर दूं जिस पर सूरज तुलूअ़ होता है।" एक रिवायत में यूं है कि "क़ियामत की हौलनाकियों से बचने के लिये मैं दुन्या की हर चीज़ फ़िदया कर दूं।"(2)

---

1 ......مسند امام احمد، مسند عمر بن الخطاب، ج ۱، ص ۱۱۴، حدیث ۳۶۲ ملخصا۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۷۰۔

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई दुन्या तो एक धोका है, जो शख़्स दुन्यवी लज़्ज़तों में गुम हो गया वोह अपनी आख़िरत से ग़ाफ़िल हो गया, और जो आख़िरत के मुआमले में ग़ाफ़िल है यक़ीनन वोह ख़सारे में है, समझदार वोही है जिसे जितना दुन्या में रहना है उतना दुन्या के लिये और जितना अ़र्सा क़ब्रो आख़िरत में रहना है उतना उख़रवी तय्यारी में मश्ग़ूल रहे, कई हंसते बोलते इन्सान अचानक मौत का शिकार हो कर अन्धेरी क़ब्र में पहुंच जाते हैं, इसी त़रह़ हर शख़्स को मरना पड़ेगा, अपनी करनी का फल भुगतना पड़ेगा। काश हम दुन्या से रुख़्सत होने से क़ब्ल ही अपनी आख़िरत की तय्यारी कर लें।

मौत आ कर ही रहेगी याद रख, जान जा कर ही रहेगी याद रख
क़ब्र में मय्यित उतरनी है ज़रूर, जैसी करनी वैसी भरनी है ज़रूर

अल्लाह का हुक्म पूरा हो कर रहेगा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मैमून رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने ज़ख़्मी होने के बा'द ज़र्द रंग का लिह़ाफ़ ओढ़ा हुवा था, आप ने अपने ज़ख़्म पर हाथ रख कर फ़रमाया : كَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا مَّقْدُوْرًا "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का हुक्म पूरा हो कर रहेगा।"(1)

शहादत से क़ब्ल चन्द वसिय्यतें

(1) "तमाम सरकारी ग़ुलामों को आज़ाद कर दिया जाए जो नमाज़ अदा करते हैं अलबत्ता मेरे बा'द वाले ख़लीफ़ा को इस बात का इख़्तियार है कि वोह उन से दो साल तक ख़िदमत ले।" (2) "मेरे बा'द आने वाला ख़लीफ़ा मेरे मुक़र्रर कर्दा उ़म्माल को एक साल तक बर क़रार रखे।" (3) "अगर तुम सा'द बिन अबी वक़्क़ास को वाली बना दो तो ठीक वरना जो वाली बने वोह उन्हें अपना मुशीर बनाए।"(2)

मौत मुअख़्ख़र करने की दुआ़ की दरख़्वास्त

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को जब नेज़ा मार कर ज़ख़्मी किया गया और लोगों को पता चला तो लोग आप के पास इ़यादत के लिये आने लगे, ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब अह़बार رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه आए और दरवाज़े पर रोने लग गए, साथ ही फ़रमाने लगे : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मौत को मुअख़्ख़र

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۵۱۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۷۴۔

करने की दुआ़ करें तो वोह ज़रूर इन से मौत को मुअख़्ख़र फ़रमा देगा।" फिर सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास हाज़िर हुवे और सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में बताया कि वोह ऐसा ऐसा कह रहे हैं। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अगर ऐसा है तो मैं कभी भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मौत को मुअख़्ख़र करने का सुवाल नहीं करूंगा, क्यूंकि अगर मेरी मग़्फ़िरत न हुई तो मेरे लिये और मेरी मां के लिये हलाकत है।"(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म और बनी इस्राईल का आ़दिल बादशाह

हज़रते सय्यिदुना का'ब अह़बार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि बनी इस्राईल में एक अ़द्लो इन्साफ़ करने वाला नेक बादशाह था, जब हम उस का ज़िक्र करते तो सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का भी ज़िक्र करते। (क्यूंकि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उम्मते मुस्लिमा के अ़द्लो इन्साफ़ करने वाले बादशाह थे।) उस बादशाह के पड़ोस में एक नबी عَلَیْہِ السَّلَام रहते थे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की त़रफ़ वह़्य नाज़िल फ़रमाई कि "उस बादशाह को फ़रमा दीजिये कि वोह अपना वलिये अ़ह्द मुक़र्रर कर ले, मेरे हुज़ूर अपनी वसिय्यत भी पेश कर दे क्यूंकि उस की ह़यात के फ़क़त़ तीन दिन रह गए हैं, तीन दिन बा'द वोह दुन्या से रुख़्सत होने वाला है।" उस नबी عَلَیْہِ السَّلَام ने येह ख़बर उस बादशाह को दे दी। जब तीसरा दिन आया तो वोह बादशाह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सजदा रेज़ हो गया और यूं इल्तिजा की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! बेशक तू जानता है कि मैं अपनी रिआ़या के फ़ैसलों में अ़द्लो इन्साफ़ से काम लेता हूं और जब मुआ़मलात पेचीदा हों तो तेरी बारगाह में रुजूअ़ करता हूं, मैं ने फ़ुलां फ़ुलां काम फ़क़त़ तेरी रिज़ा के लिये किये हैं, ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मेरा बेटा और मेरी बेटी अभी बहुत छोटे हैं, तू उन के बड़े होने तक मेरी उ़म्र में इज़ाफ़ा फ़रमा।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस बादशाह की दुआ़ को क़बूल फ़रमाया और उस नबी عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वह़्य भेजी कि उस बादशाह से फ़रमा दीजिये कि "उस ने बिल्कुल सच कहा और मैं ने उस की उ़म्र में मज़ीद पन्दरह साल का इज़ाफ़ा कर दिया है। इतने अ़र्से में उस का बेटा और बेटी दोनों बड़े हो जाएंगे।" जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़न्जर के वार से ज़ख़्मी किया गया तो सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से दरख़्वास्त की, कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी अपने रब عَزَّوَجَلَّ से दराज़िये उ़म्र की दुआ़ करें। (यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस बादशाह की त़रह़ आप की दुआ़ भी क़बूल फ़रमाएगा।) लेकिन

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۷۵۔

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اَللّٰھُمَّ اقْبِضْنِي اِلَیْکَ غَیْرَ عَاجِزٍ وَلَا مَلُوْمٍ "या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू मुझे अपनी बारगाह में इस हाल में बुला ले कि न तो मैं आ़जिज़ होऊं और न ही मलामत किया हुवा।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म जन्नती, मौला अ़ली की गवाही

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) फ़रमाते हैं कि अबू लुअलुअ ने जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़ख़्मी किया तो आप रोने लगे। मैं ने अ़र्ज़ किया : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप को क्या चीज़ रुला रही है ?" फ़रमाया : "ऐ अ़ली ! मुझे येह बात रुला रही है कि मा'लूम नहीं मैं जन्नत में जाऊंगा या जहन्नम में।" मैं ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! आप को जन्नत की ख़ुश ख़बरी हो क्यूंकि मैं ने दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बारहा येह फ़रमाते सुना है कि : "अबू बक्र व उ़मर अधेड़ उ़म्र जन्नतियों के सरदार हैं।" फ़रमाया : "क्या तुम मेरे जन्नती होने की गवाही देते हो ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "जी हां।" फ़रमाया : "ऐ ह़सन ! तुम भी अपने वालिद की गवाही में शरीक हो जाओ कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है उ़मर जन्नती है।"(2)

रब तआ़ला फ़ारूक़े आ'ज़म को अ़ज़ाब न देगा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जिस दिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़ख़्मी हुवे तो उन्हों ने मुझ से फ़रमाया : "ऐ इब्ने अ़ब्बास ! मेरी तीन बातें याद कर लो, जो मेरे बारे में इन के मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्तगू करे समझ लेना वोह झूटा है : (1) जो कहे कि मैं ने अपने पीछे कोई ग़ुलाम छोड़ा है तो उस ने झूट बोला। (2) जो कहे कि मैं ने كَلَالَۃ के मुतअ़ल्लिक़ कोई फ़ैसला किया है तो उस ने भी झूट बोला। (3) जो कहे कि मैं ने अपने बा'द किसी को ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया है तो उस ने भी झूट बोला।" येह कह कर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोने लगे। मैं ने रोने का सबब पूछा तो फ़रमाया : "मुझे आख़िरत का मुआ़मला रुला रहा है।" मैं ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! आप की ज़ात में तीन बातें ऐसी हैं, मुझे यक़ीन है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन के सबब आप को कभी अ़ज़ाब नहीं देगा।" फ़रमाया : "वोह कौन

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۶۹۔

2 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۱۲۸۔

सी तीन बातें हैं ?" मैंने अ़र्ज़ किया : "(1) आप जब बात करते हैं तो सच बोलते हैं। (2) जब आप से रह़्म की अपील की जाए तो रह़्म करते हैं। (3) जब आप कोई फ़ैसला करते हैं तो इन्साफ़ के साथ करते हैं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ इब्ने अ़ब्बास ! क्या तुम कल बरोज़े क़ियामत रब्बुल आ़लमीन की बारगाह में इन तीनों बातों की गवाही दोगे ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "जी।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला रिवायत से जहां सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बुलन्द शान ज़ाहिर हुई वहीं येह भी मा'लूम हुवा कि आ'माले सालिह़ा उख़रवी नजात का सबब और अ़ज़ाबे आख़िरत में रुकावट बनते हैं। येह भी मा'लूम हुवा कि किसी भी ह़ाकिम या निगरान को अपने अन्दर कम अज़ कम येह तीनों सिफ़ात ज़रूर पैदा करनी चाहिये कि झूट से इजतिनाब करे, रह़्म दिल हो और फ़रीक़ैन के दरमियान अ़द्लो इन्साफ़ से काम ले कि येह तीनों सिफ़ात हु़क़ूक़ुल इ़बाद से बहुत गहरा तअ़ल्लुक़ रखती हैं और जिस ह़ाकिम या निगरान ने अपने आप को हु़क़ूक़ुल इ़बाद के मुआ़मले में बरी करवा लिया वोह आख़िरत की एक बड़ी आज़्माइश से बच गया।

क़ियामत के दिन गवाही दोगे ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़बैद बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़ख़्मी किया गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आए और अ़र्ज़ किया : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! बेशक आप का इस्लाम लाना मुसलमानों की मदद था, आप की ख़िलाफ़त एक अ़ज़ीम फ़त्ह़ थी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ज़रूर आप ने ज़मीन को अ़द्ल से भर दिया है यहां तक कि जब दो शख़्स आपस में लड़ते थे तो उन दोनों का मुआ़मला आप की बारगाह में आ कर ख़त्म हो जाता था।" येह सुन कर सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मुझे बिठाओ।" आप को बिठाया गया तो आप ने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : "अभी थोड़ी देर पहले जो तुम ने मेरे बारे में कहा वोह दोबारा कहो।" उन्हों ने दोबारा वोही बातें कह डालीं। फ़रमाया : "क्या तुम इन तमाम बातों की गवाही क़ियामत में दोगे ?" अ़र्ज़ किया : "जी हु़ज़ूर।" येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत ख़ुश व मसरूर हो गए।(2)

---

1 ......كنز العمال، كتاب الفضائل، وفاته، الجزء: ١٢، ج٦، ص٣٠٧، حديث: ٣٦٠٢٨۔

2 ......مصنف ابن ابی شيبه، كتاب الفضائل، ماذكر فی فضل عمر بن الخطاب، ج٧، ص٤٨٥، حديث: ٤٨۔

रोने और नौहा करने की मुमानअ़त

फ़िरिश्ते गुस्सा करते हैं

हज़रते सय्यिदुना मिक़्दाम बिन मा'दी करिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़ख़्मी कर दिया गया तो आप के पास आप की लख़्ते जिगर उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आईं और (रोते हुवे) यूं अपने ग़म का इज़्हार करने लगीं : "ऐ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दोस्त, ऐ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजा के वालिदे गिरामी, ऐ अमीरुल मोमिनीन।" आप ने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दुल्लाह ! मुझे बिठाओ क्यूंकि जो अल्फ़ाज़ मैं सुन रहा हूं उन पर सब्र नहीं कर सकता।" उन्हों ने आप को बिठाया तो आप ने सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया : "मेरे मरने के बा'द वोह ख़ूबियां बयान कर के ह़रज का बाइ़स न बनना जो मुझ में नहीं हैं, अलबत्ता तुम्हारे बे इख़्तियार आंसूओं को मैं नहीं रोक सकता, क्यूंकि जिस मय्यित पर उस के मुख़्तलिफ़ औसाफ़ बयान कर के नौहा किया जाए फ़िरिश्ते उस पर ग़ुस्सा करते हैं।"(1)

मय्यित पर रोने से मय्यित को अ़ज़ाब

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़ख़्मी किया गया तो सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रोने लगीं, तो आप ने इन से फ़रमाया : "ऐ ह़फ़्सा ! क्या तुम ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान नहीं सुना कि मय्यित के घर वालों के रोने से मय्यित को अ़ज़ाब दिया जाता है।" हज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोने लगे तो आप ने उन से भी येही फ़रमाया।(2)

मय्यित को अ़ज़ाब दिये जाने की वुजूहात

अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने अहले मय्यित के रोने से मय्यित को अ़ज़ाब दिये जाने की दर्जे ज़ैल पांच वुजूहात बयान की हैं : "(1) मय्यित को घर वालों के उस पर रोने से उस वक़्त अ़ज़ाब होगा जब कि उस ने रोने की वसिय्यत की हो। (2) जब मय्यित पर नौहा करने और रोने

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۷۵۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۷۵۔

की रस्म उस ने डाली हो। (3) जब घर वाले उस के सामने किसी मय्यित पर नौहा करते हों और वोह उन को मन्अ़ न करता हो और येह न बताता हो कि येह फ़े'ल ह़राम है। (4) जब उस के घर वाले उस के किये हुवे नाजाइज़ कामों पर उस की मदद कर रहे हों और उसे क़ब्र में अ़ज़ाब हो रहा हो। (5) जब घर वाले मय्यित के ऐसे औसाफ़ बयान कर रहे हों जो उस में न हों तो क़ब्र में फ़िरिश्ते उस को झिड़कते हैं कि "क्या तू ऐसा था ?" मसलन : जब नौहा करने वाले कहें : "हाए तुम पहाड़ थे ! तुम दरया थे !" तो फ़िरिश्ते मय्यित को डांट कर कहेंगे : "क्या तुम पहाड़ थे ? क्या तुम दरया थे ?"[1]

जनाज़े को जल्दी ले कर चलने की वसिय्यत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : "ऐ बेटे ! जब मेरी मौत का वक़्त क़रीब आए तो मुझे ज़मीन पर लिटा देना, फिर अपने दोनों घुटने मेरी पीठ से लगा देना, अपना दायां हाथ मेरे एक पहलू पर या पेशानी पर रखना, बायां हाथ मेरी ठोड़ी पर रखना, जब मेरी रूह़ क़ब्ज़ हो जाए तो मेरी आंखें बन्द कर देना। मेरे कफ़न में ज़ियादती न करना क्यूंकि अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां मेरे लिये भलाई हुई तो वोह इसे बेहतरीन कफ़न में तब्दील फ़रमा देगा और अगर इस के इ़लावा कोई मुआ़मला हुवा तो येह कफ़न भी मुझ से छीन लिया जाएगा, मेरी क़ब्र भी मुख़्तसर ही रखना कि अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां मेरे लिये भलाई हुई तो वोह ता ह़द्दे निगाह वसीअ़ हो जाएगी वरना मेरी पस्लियां टूट फूट कर एक दूसरे में पैवस्त हो जाएगी, मेरे जनाज़े के साथ कोई औ़रत न हो, जो औसाफ़ मेरी ज़ात में मौजूद नहीं उन के ज़रीए़ मेरी ता'रीफ़ बयान न करना क्यूंकि मेरी ज़ात को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही बेहतर जानता है, जब तुम मेरा जनाज़ा ले कर जाना तो तेज़ तेज़ चलना क्यूंकि अगर मेरे लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां ख़ैर हो तो मुझे उस ख़ैर की त़रफ़ जल्दी ले चलना और अगर इस के इ़लावा कोई मुआ़मला हुवा तो तुम अपने कन्धों से एक बुरी शै को जल्दी जल्दी उतार देना।"[2]

---

1 ......فتح الباری، کتاب الجنائز، باب قول النبی یعذب المیت۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۱۳۴، تحت حدیث: ۱۲۸۸ ملخصاً۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۷۳۔

जनाज़े के साथ आग व औ़रत की मुमानअ़त

हज़रते सय्यिदुना फु़ज़ैल बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ''अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस बात की वसिय्यत की, कि उन के जनाज़े में न तो आग हो, न ही कोई औ़रत साथ जाए और न ही उन को मुश्क से लेप किया जाए।''(1)

रुख़्सार ज़मीन से मिला देने की वसिय्यत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे वसिय्यत की, कि ''जब तुम मुझे क़ब्र में रख दो तो मेरा गाल ज़मीन से इस त़रह़ मिला देना कि मेरे गाल और ज़मीन के दरमियान कोई चीज़ ह़ाइल न हो।''(2)

क़र्ज़ की अदाएगी की वसिय्यत

हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन उ़र्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बैतुल माल से अस्सी हज़ार (80,000) क़र्ज़ लिया हुवा था, आप ने अपनी वफ़ात से क़ब्ल सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलाया और उन्हें क़र्ज़ की अदाएगी की वसिय्यत करते हुवे इरशाद फ़रमाया : ''ऐ बेटे ! मेरे मरने के बा'द सब से पहले मेरा ज़ाती माल बेच के क़र्ज़ की अदाएगी करना, अगर इस से पूरा हो जाए तो ठीक वरना मेरे क़बीले बनू अ़दी से ले कर अदाएगी करना, अगर इस से पूरा हो जाए तो ठीक वरना कु़रैश से ले कर इस की अदाएगी कर देना और किसी से न लेना।'' येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : ''हु़ज़ूर ! आप बैतुल माल से हमारे हि़स्से का माल ले कर क़र्ज़ की अदाएगी क्यूं नहीं कर देते ?'' फ़रमाया : ''मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगता हूं इस बात से कि तुम और तुम्हारे दोस्त मेरे बा'द येह कहें कि हम ने उ़मर के लिये अपना हि़स्सा छोड़ दिया था, इस के ज़रीए तुम मुझे इ़ज़्ज़त दोगे लेकिन मेरे बा'द कुछ लोग इसे त़रीक़ा बना लेंगे और मैं एक ऐसे काम में पड़ जाऊंगा जिस से निकलने के इ़लावा नजात की कोई राह नहीं।'' फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़र्ज़ की अदाएगी का ज़ामिन बना लिया। सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۸۰۔

2 ......الزھد لامام احمد، زھد عمر بن الخطاب، ص ۱۴۸، الرقم: ۶۳۴۔

बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़लीफ़ा के इन्तिख़ाब के लिये क़ाइम की गई मजलिसे शूरा और दीगर चन्द अन्सार को अपने ऊपर गवाह बना लिया और सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल को एक जुमुआ़ भी न गुज़रा था कि आप ने क़र्ज़ की रक़म सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में पेश कर दी और इस पर चन्द गवाह भी बना लिये।(1)

इन्तिख़ाबे ख़लीफ़ा के लिये मजलिसे शूरा का क़ियाम

जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो आप को आप के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ समेत मुख़्तलिफ़ लोगों के ख़लीफ़ा बनाने का मश्वरा दिया गया लेकिन आप ने मन्अ़ फ़रमा दिया।

इन्तिख़ाबे ख़लीफ़ा में फ़ारूके़ आ'ज़म की ख़्वाहिश

मुल्के शाम में जब ताऊ़न की वबा फैली और सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वहां तशरीफ़ ले गए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "अगर मुझे मौत आ जाए और अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़िन्दा हों तो मैं उन्हें इस उम्मत का ख़लीफ़ा बना दूं और अगर रब عَزَّوَجَلَّ मुझ से इस्तिफ़्सार फ़रमाता कि ऐ उ़मर ! तू ने अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ को उम्मते मुह़म्मदिय्या का ख़लीफ़ा क्यूं बनाया ? तो मैं कहता कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने तेरे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है कि "हर नबी का एक अमीन होता है और मेरा अमीन अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ है।" लोगों ने इस बात को ना पसन्द किया और अ़र्ज़ किया कि "हु़ज़ूर ! आप कु़रैश में से किसी और का भी इन्तिख़ाब फ़रमा सकते हैं।" मुराद येह थी कि अपने क़बीले बनी अ़दी बिन का'ब से किसी को ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाएं। फ़रमाया : "अगर मुझे मौत आ जाती और मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़िन्दा होते तो मैं उन्हें ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर देता। अगर रब عَزَّوَجَلَّ मुझ से इस्तिफ़्सार फ़रमाता कि ऐ उ़मर ! तू ने मुआ़ज़ बिन जबल को क्यूं ख़लीफ़ा बनाया ? तो मैं कहता कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने तेरे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है कि "कल बरोज़े क़ियामत मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उ़लमाए किराम के सामने बड़े मक़ामो मर्तबे के साथ लाया जाएगा।" सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दोनों का पहले ही मुल्के शाम में इन्तिक़ाल हो गया था।(2)

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۷۳۔

2 ......مسند امام احمد، مسند عمر بن الخطاب، ج ۱، ص ۴۸، حدیث: ۱۰۸۔

रसूलुल्लाह की सुन्नत पर अ़मल

जब सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो फ़रमाया : "अगर मैं ख़लीफ़ा न मुक़र्रर करूं तो भी सुन्नत पर अ़मल होगा और मुक़र्रर कर दूं तो भी सुन्नत पर अ़मल होगा, क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़लीफ़ा मुक़र्रर नहीं फ़रमाया और सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया।" मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे मा'लूम हो गया कि आप रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत पर अ़मल करेंगे।" चुनान्चे, ऐसा ही हुवा कि आप ने कोई ख़लीफ़ा मुक़र्रर न फ़रमाया बल्कि ख़लीफ़ा के तक़र्रुर के लिये छे (6) जय्यिद और अकाबिर सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان पर मुश्तमिल मजलिसे शूरा क़ाइम फ़रमाई। जिन में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم), ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शामिल थे। सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को नमाज़ें पढ़ाने का हुक्म दिया। इस मजलिसे शूरा के इन छे अराकीन ने सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तदफ़ीन के बा'द मदनी मश्वरा किया। ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इन तीनों ने अपना मुआ़मला बक़िय्या तीनों सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के सिपुर्द कर दिया। सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) से अ़र्ज़ किया कि "मैं तो ख़लीफ़ा नहीं बनना चाहता।" इन दोनों ने आप को इन्तिख़ाबे ख़लीफ़ा का इख़्तियार दे दिया। आप ने दोनों अफ़राद से अ़लाह़िदा अ़लाह़िदा अ़द्लो इन्साफ़ के क़ियाम का ह़लफ़ लिया और फिर सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ पर बैअ़त कर ली, येह देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने भी उन की बैअ़त कर ली।[1]

---

1 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب قصۃ بیعۃ۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۵۳۳، حدیث: ۳۷۰۰۔
طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۶۰، ۲۶۲۔

फ़ारूक़े आ'ज़म की ख़लीफ़ा को वसिय्यत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया कि मैं अपने बा'द होने वाले ख़लीफ़ा को वसिय्यत करता हूं कि वोह मुहाजिरीने अव्वलीन से भलाई करे, उन का ह़क़ पहचाने, उन की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त करे, अन्सार के साथ भी नेक सुलूक की वसिय्यत करता हूं जिन्हों ने अपने घरों में मुहाजिरीन को पनाह दी, सिद्क़े दिल से ईमान क़बूल किया, ख़लीफ़ा उन के अच्छे कामों को क़बूल करे, उन की ग़लतियों से दर गुज़र करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़िम्मे की भी वसिय्यत करता हूं कि वोह रिआ़या से किये गए अ़ह्द को पूरा करे, उन की ह़िफ़ाज़त के लिये लड़े, और उन्हें उन की त़ाक़त से बढ़ कर तक्लीफ़ न दे।''(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म की क़ब्रे अन्वर की खुदाई

ह़ज़रते सय्यिदुना मुत्तलिब बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ह़न्तब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ दफ़्न होने की इजाज़त त़लब की और इन्हें इजाज़त मिल गई तो आप ने फ़रमाया कि येह हुजरा बहुत तंग है, फिर एक छड़ी मंगवाई और उस से उस की लम्बाई का अन्दाज़ा लगाया फिर फ़रमाया कि इतनी क़ब्र खोदो।''(2)

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म की शहादत

मग़फ़िरत न हुई तो हलाकत है

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने विसाल के वक़्त फ़रमाया :

وَیْلٌ لِیْ وَوَیْلٌ لِاُمِّیْ اِنْ لَّمْ یَغْفِرِ اللّٰہُ لِیْ

''या'नी अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़फ़िरत न फ़रमाई तो मेरी और मेरी मां की हलाकत है।'' बस येह फ़रमाते हुवे आप का इन्तिक़ाल हो गया।(3)

---

1 ......بخاری، کتاب الجنائز، باب ماجاء۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۴۷۰، حدیث: ۱۳۹۲ ملتقطا۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۷۷۔

3 ......الزھد لابن مبارک، باب تعظیم ذکر اللہ، ص ۸۰۔

शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने मौला अ़ली

फ़ारूक़े आ'ज़म महबूबे शेरे ख़ुदा

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का जसदे मुबारक चारपाई पर रखा हुवा था और आप को कफ़न दे दिया गया था, तमाम लोग आप के इर्द गिर्द खड़े हो कर दुआ़ मांग रहे थे, आप के औसाफ़ बयान कर रहे थे और आप के लिये रह़मत की दुआ़ कर रहे थे कि अचानक पीछे से किसी ने मेरे कन्धे पर हाथ रखा, मैं ने मुड़ कर देखा तो वोह मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) थे, उन्हों ने भी सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये रह़मत की दुआ़ की और आप की त़रफ़ देख कर फ़रमाने लगे : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप ने अपने बा'द कोई ऐसा न छोड़ा जो मुझे आप से ज़ियादा मह़बूब हो कि मैं उस के नामए आ'माल के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिलूं, और ख़ुदा की क़सम ! मुझे यक़ीन है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को आप के दोनों दोस्तों या'नी सय्यिदुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم व अमीरुल मोमिनीन सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रफ़ाक़त नसीब फ़रमाएगा। क्यूंकि मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अक्सर येह फ़रमाते सुना करता था कि मैं, अबू बक्र और उ़मर आए ! मैं, अबू बक्र और उ़मर दाख़िल हुवे ! मैं, अबू बक्र और उ़मर बाहर निकले !"[(1)]

मौला अ़ली की पसन्दीदा शख़्सिय्यत

जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कफ़न देने के बा'द चारपाई पर रख दिया गया तो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) तशरीफ़ लाए और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मद्ह़ सराई की और इरशाद फ़रमाया : مَا اَحَدٌ اَلْقَى اللّٰہَ بِصَحِیْفَتِہٖ اَحَبَّ اِلَیَّ مِنْ ھٰذَا الْمُسَجّٰى بَیْنَکُمْ "या'नी रूए ज़मीन पर मुझे इन चादर ओढ़े हुवे अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ज़ियादा कोई शख़्स इतना मह़बूब नहीं है कि जिस के नामए आ'माल के साथ मैं रब عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात करूं।"[(2)]

---

1 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عمر۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۵۲۷، حدیث: ۳۶۸۵۔
مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، باب من فضائل عمر۔۔۔الخ، ص ۱۳۰۲، حدیث: ۱۴۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۸۲۔

रसूलुल्लाह के बा'द सब से ज़ियादा महबूब

हज़रते सय्यिदुना औ़न बिन अबी हुजैफ़ा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कफ़नाया गया तो मैं वहीं मौजूद था। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे खु़दा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) तशरीफ़ लाए और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के चेहरए मुबारका से कपड़ा हटाया और इरशाद फ़रमाया : رَحِمَکَ اللّٰهُ اَبَا حَفْصٍ مَا اَحَدٌ اَحَبَّ اِلَيَّ بَعْدَ النَّبِيِّ ''या'नी ऐ अबू हफ़्स ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़म फ़रमाए, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द आप मेरे नज़दीक सब से ज़ियादा महबूब हैं।''[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म का ग़ुस्ल मुबारक

फ़ारूक़े आ'ज़म को किस ने ग़ुस्ल दिया

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बड़े बेटे और जलीलुल क़द्र सहाबिये रसूल हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ग़ुस्ल दिया।[2]

कितनी बार और किस पानी से ग़ुस्ल दिया गया ?

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि : ''अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बेरी के पत्तों वाले पानी से तीन बार ग़ुस्ल दिया गया।''[3]

मुश्क से ग़ुस्ल की मुमानअ़त

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मा'क़िल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ''अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वसिय्यत की, कि मेरे जिस्म पर मुश्क न मली जाए।''[4]

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۸۳۔
2 ......اسد الغابۃ، عمر بن الخطاب، ج ۱، ص ۱۹۰۔
3 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۷۹۔
4 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۷۹۔

फ़ारूके़ आ'ज़म का कफ़न मुबारक

किन कपड़ों में तक्फ़ीन की गई ?

हज़रते सय्यिदुना मुत्तलिब बिन अ़ब्दुल्लाह बिन हन्तब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ''अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का उन्हीं कपड़ों में जनाज़ा पढ़ाया गया जिन में आप को ज़ख़्मी किया गया था।''[1]

कितने कपड़ों में तक्फ़ीन की गई ?

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ''अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को तीन कपड़ों में कफ़न दिया गया।'' सय्यिदुना वकीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ''आप को दो सूती कपड़ों में कफ़न दिया गया।'' हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह असदी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ''आप को दो कथ्थई रंग के कपड़ों और जो क़मीस आप ने पहनी हुई थी उस में कफ़न दिया गया।'' जब कि हज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि आप को कुर्ते और हुल्ले में कफ़नाया गया।[2]

फ़ारूके़ आ'ज़म की नमाज़े जनाज़ा

रसूलुल्लाह की चारपाई पर जनाज़ा

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का जसदे मुबारक तजहीज़ो तक्फ़ीन के बा'द रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक चारपाई पर रखा गया और उसी पर जनाज़ा पढ़ा गया।[3]

चार तक्बीरों के साथ नमाज़े जनाज़ा

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वसिय्यत के मुताबिक़ आप का जनाज़ा हज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने चार तक्बीरों के साथ पढ़ाया।[4]

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۷۶۔
2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۷۹۔
3 ......اسد الغابۃ، عمر بن الخطاب، ج ۴، ص ۱۹۰۔
4 ......اسد الغابۃ، عمر بن الخطاب، ج ۴، ص ۱۸۹۔

फ़ारूके़ आ'ज़म का जनाज़ा पढ़ाने वाले सहाबी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की नमाजे़ जनाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पढ़ाई, आप क़दीमुल इस्लाम और मुहाजिरीने अव्वलीन सह़ाबा में से थे, तमाम गज़्वात में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ शरीक हुवे। आप के नमाजे़ जनाज़ा पढ़ाने की वज्ह येह थी कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने इन्तिक़ाल से क़ब्ल नया ख़लीफ़ा मुन्तख़ब होने तक आप ही को नमाजे़ं पढ़ाने की वसिय्यत फ़रमाई थी। येही वज्ह है कि जब सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के जसदे मुबारक को गु़स्ल व कफ़न देने के बा'द नमाजे़ जनाज़ा के लिये चारपाई पर रखा गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी व सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) इस सआ़दत को ह़ासिल करने के लिये आगे बढ़े लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दोनों को मन्अ़ फ़रमा दिया क्यूंकि अभी नए ख़लीफ़ा का इन्तिख़ाब न हुवा था, अगर उन दोनों में से कोई नमाजे़ जनाज़ा पढ़ाता तो हो सकता था कि लोग उसी को ख़लीफ़ा समझते इसी लिये सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वसिय्यत के मुताबिक़ सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को नमाजे़ जनाज़ा पढ़ाने का हुक्म दिया।(1)

क़ब्र व मिम्बर के दरमियान जनाज़ा

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की नमाजे़ जनाज़ा जब अदा की गई तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का जसदे मुबारक रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार व मिम्बरे रसूल के दरमियान था।(2)

जनाजे़ के बा'द मद्ह़ो सना

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सारिया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के जनाजे़ के बा'द तशरीफ़ लाए तो आप ने वहां मौजूद लोगों से फ़रमाया : اِنْ كُنْتُمْ سَبَقْتُمُوْنِيْ بِالصَّلَاةِ عَلَيْهِ فَلَا تَسْبِقُوْنِيْ بِالثَّنَاءِ "या'नी अगर्चे तुम लोग नमाज़ की अदाएगी में मुझ से सब्क़त ले गए हो लेकिन इन की मद्ह़ो सना या'नी ता'रीफ़ करने में सब्क़त न करना।" फिर सय्यिदुना

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۸۰، ۱۷۲۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۸۱۔

फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के औसाफे़ ह़मीदा बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया : ''ऐ उ़मर ! यक़ीनन आप इस्लाम के बेहतरीन भाई थे, ह़क़ व सच बात कहने में सख़ी और बात़िल व झूटी बात कहने में बख़ील थे, न तो किसी की झूटी ता'रीफ़ करते और न ही किसी की सच्ची ता'रीफ़ से रुकते थे, निहायत ही आ'ला ज़र्फ़ और अ़फ़्वो दर गुज़र से काम लेने वाले थे।''(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म की तदफ़ीन

सय्यिदा आ़इशा से तदफ़ीन की इजाज़त

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से फ़रमाया : ''ऐ बेटे ! जाओ और उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से इस बात की इजाज़त ले कर आओ कि उ़मर अपने दोनों साथियों के साथ दफ़्न होना चाहता है।'' मैं उम्मुल मोमिनीन की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो देखा कि आप बैठी हुई रो रही हैं। मैं ने आप को सलाम किया और अ़र्ज़ किया कि ''सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने दोनों दोस्तों के साथ तदफ़ीन की इजाज़त मांग रहे हैं।'' उन्हों ने फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह जगह मैं ने अपने लिये रखी थी लेकिन आज मैं अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपने ऊपर तरजीह़ देती हूं और उन्हें यहां तदफ़ीन की इजाज़त देती हूं।'' मैं वापस आया और अमीरुल मोमिनीन को बताया कि उम्मुल मोमिनीन ने तदफ़ीन की इजाज़त अ़त़ा फ़रमा दी है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : مَا كَانَ شَيْءٌ اَهَمَّ اِلَيَّ مِنْ ذٰلِكَ الْمَضْجَعِ ''या'नी ऐ अ़ब्दुल्लाह ! मेरे नज़्दीक उस जगह से ज़ियादा कोई जगह मुबारक नहीं है।'' फिर फ़रमाया : ''ऐ अ़ब्दुल्लाह ! जब मेरा इन्तिक़ाल हो जाए तो मेरी मय्यित को चारपाई पर रख कर उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के दरवाजे़ पर रख देना और फिर अ़र्ज़ करना कि : ''उ़मर बिन ख़त़्त़ाब इजाज़त त़लब करता है, अगर इजाज़त मिल जाए तो मुझे वहीं दफ़्ना देना वरना मुसलमानों के क़ब्रिस्तान जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्ना देना।'' चुनान्चे, इजाज़त मिल गई और आप को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पहलू में दफ़्न कर दिया गया।(2)

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۸۲۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۵۷۔

चार सहाबा ने क़ब्र में उतारा

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को नमाज़े जनाज़ा के बा'द रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पहलू में दफ़्न किया गया, आप के बड़े बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इन चार सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने क़ब्र में उतारा। बा'ज़ रिवायात में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम भी आया है।[1]

क़ब्र में फ़ारूके़ आ'ज़म का जसदे मुबारक

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़ब्र में इस त़रह़ रखा गया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सर मुबारक अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कन्धे के बराबर था और सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सर मुबारक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कन्धे मुबारक के बराबर था।[2]

फ़ारूके़ आ'ज़म का पाउं मुबारक ज़ाहिर हो गया

ह़ज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन उ़र्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक के ज़माने में मज़ाराते सलासा की ता'मीरे नौ के दरमियान एक पाउं ज़ाहिर हो गया, तमाम लोग घबरा गए कि कहीं येह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुक़द्दस पाउं तो नहीं है। कोई ऐसा शख़्स न मिला जिस से इस बात की तस्दीक़ की जाती, बिल आख़िर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिले जिन्हों ने इस बात की वज़ाह़त की, कि येह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुक़द्दस पाउं नहीं बल्कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुबारक पाउं है।[3]

---

1. ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۸۱، اسد الغابۃ، ج ۴، ص ۱۹۰۔
2. ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۸۱۔
3. ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۸۱۔

शहादत के बा'द आप के अस्हा़ब के तअस्सुरात

मुसलमानों पर सब से बड़ी मुसीबत

हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मैमून رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : لَمَّا حُمِلَ فَكَانَّ الْمُسْلِمِيْنَ لَمْ تُصِبْهُمْ مُصِيبَةٌ اِلَّا يَوْمَئِذٍ "या'नी जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मय्यित को तदफ़ीन के लिये उठाया गया तो तमाम मुसलमानों पर ऐसी शदीद ग़म की कैफ़िय्यत त़ारी थी गोया इस से पहले मुसलमानों पर कभी बड़ी मुसीबत आई ही नहीं है।"(1)

आप की शहादत में बद तरीन मख़्लूक़ का हाथ

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपनी बद तरीन मख़्लूक़ के हाथों आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहादत दी।"(2)

फ़ारूके़ आ'ज़म, इस्लाम का मज़बूत़ क़ल्आ़

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार हम हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आए तो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़िक्रे ख़ैर हुवा तो आप ज़ारो क़ित़ार रोने लगे यहां तक कि आप के आंसूओं से चटाई तर हो गई। फिर इरशाद फ़रमाया : "बेशक सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लाम के लिये एक ऐसा मज़बूत़ और मह़फ़ूज़ क़ल्आ़ थे जिस में लोग दाख़िल तो हो सकते थे लेकिन निकल न सकते थे। लेकिन जैसे ही आप का इन्तिक़ाल हुवा तो लोग इस्लाम से बाहर निकलने लगे।"(3)

फ़ारूके़ आ'ज़म के चाहने वाले कुत्ते से महब्बत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "अगर मुझे मा'लूम हो जाए कि फ़ुलां कुत्ता सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मह़ब्बत करता है तो मैं उस कुत्ते से मह़ब्बत करूं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं समझता हूं कि ख़ारदार दरख़्त भी सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल पर ग़मज़दा हैं।"(4)

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۵۸ ملتقطا۔

2 ......معجم اوسط، من اسمه الهيثم، ج ٦، ص ٦٨ ٤، حديث: ٩٤٣٠ ملتقطا۔

3 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۸۳۔

4 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۸۴۔

इस्लाम आज कमज़ोर हो गया

हज़रते सय्यिदुना तारिक़ बिन शिहाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इन्तिक़ाल के दिन हज़रते सय्यिदतुना उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : اَلْیَوْمَ وَھِیَ الْاِسْلَامُ ''या'नी आज इस्लाम कमज़ोर हो गया।''(1)

हक़ व अहले हक़ दूर न होते थे

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल के बा'द हज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोने लगे, जब इस का सबब पूछा गया तो फ़रमाया : ''सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के होते हुवे हक़ और अहले हक़ दूर न होते थे लेकिन आज इस्लाम कमज़ोर हो गया है।''(2)

गोया क़ियामत क़ाइम हो गई

हज़रते सय्यिदुना जरीर बिन अ़ब्दुल ह़मीद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपनी दादी से रिवायत करते हैं कि जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद किया गया तो लोग येह समझे कि शायद क़ियामत क़ाइम हो गई है, मुख़्तलिफ़ लोग अपनी वसिय्यतें ऐसे करने लगे कि वाक़ेई क़ियामत क़ाइम हो गई है।''(3)

दुन्या से तिहाई इल्म चला गया

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''अब तुम पर जो भी साल आएगा वोह गुज़श्ता साल से बुरा होगा।'' लोगों ने पूछा : ''क्या वोह साल सर सब्ज़ो शादाब नहीं होगा ?'' फ़रमाया : ''मेरी येह मुराद नहीं है बल्कि मैं येह कहना चाहता हूं कि उ़लमा ख़त्म हो जाएंगे और मेरा येह गुमान है कि जिस दिन अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस दुन्या से तशरीफ़ ले गए उस दिन तिहाई इल्म चला गया।''(4)

---

1 ......معجم کبیر، ام ایمن۔۔۔الخ، ج ۲۵، ص ۸۶، حدیث: ۲۲۱۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۸۴۔

3 ......معرفۃ الصحابۃ، معرفۃ نسبۃ الفاروق، ج ۱، ص ۷۵، الرقم: ۲۰۵۔

4 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۲۸۵۔

इस्लाम आगे बढ़ने वाला था लेकिन.....

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं : "अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़माने में इस्लाम उस शख़्स की त़रह़ था जो आगे ही बढ़ता जाए, लेकिन आप के विसाल के बा'द पीठ फेर कर भागने वाले शख़्स की त़रह़ हो गया।"(1)

हर घर में नक़्स दाख़िल हो गया

हज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल के सबब हर मुसलमान के घर में दीनी व दुन्यवी नक़्स दाख़िल हो गया।"(2)

अमीरुल मोमिनीन की वफ़ात का लोगों पर असर

हज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अबू जा'फ़र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि जिस दिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद किया गया उस दिन पूरी ज़मीन तारीक हो गई, बच्चे अपने माओं से कहने लगे : "ऐ मां ! क्या क़ियामत क़ाइम हो गई है ?" तो वोह कहतीं : "नहीं बेटा, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद कर दिया गया है।"(3)

मौला अ़ली और ख़ुलफ़ाए राशिदीन

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) जब जंगे सिफ़्फ़ीन से लौटे तो आप ने अपने ख़ुत़बे में येह अल्फ़ाज़ कहे : اَللّٰھُمَّ اَصْلِحْنَا بِمَا اَصْلَحْتَ بِهِ الْخُلَفَاءَ الرَّاشِدِيْنَ "या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें भी उन ख़ूबियों के साथ आरास्ता फ़रमा जिन के साथ तू ने हिदायत याफ़्ता और हिदायत देने वाले ख़ुलफ़ा को आरास्ता फ़रमाया।" पूछा गया कि ख़ुलफ़ाए राशिदीन से आप की मुराद कौन लोग हैं ? तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर रिक़्क़त त़ारी हो गई, आंखें भर आईं और इरशाद फ़रमाया : "मेरी मुराद सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं, जो **इमामुल हुदा** या'नी हिदायत के इमाम, **शैख़ुल इस्लाम** या'नी इस्लाम के बड़े बुज़ुर्ग हैं, जिन के वसीले से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द हिदायत त़लब की जाती है, सीधे

---

(1) ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۸۵۔

(2) ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۸۵۔

(3) ......معرفة الصحابة، معرفة نسبة الفاروق، ج ۱، ص ۷۵، الرقم: ۲۰۵۔

रास्ते पर चलने के लिये जिन की इत्तिबाअ़ की जाती है, जो इन की इत्तिबाअ़ करेगा हिदायत पा जाएगा और जिस ने इन दोनों को मज़बूती से थामा वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के गुरौह से है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही का गुरौह कामयाब है।"(1)

मौला अ़ली और अफ़्ज़लिय्यते शैख़ैन

हज़रते सय्यिदुना अबू मख़्लद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात से क़ब्ल हम जानते थे कि आप के बा'द सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه सब से अफ़्ज़ल हैं और सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की वफ़ात से क़ब्ल हम जानते थे कि आप के बा'द सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه सब से अफ़्ज़ल हैं।"(2)

सहाबए किराम की फ़ारूके़ आ'ज़म से महब्बत

जिस रात अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का विसाल हुवा उसी रात हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा और हज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन मा'मर तैमी (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم) के हां मदनी मुन्नों की विलादत हुई, इन तीनों ने अपने मदनी मुन्नों का नाम "उ़मर" रखा।(3)

विसाले फ़ारूके़ आ'ज़म और जिन्नात

फ़ारूके़ आ'ज़म की वफ़ात पर एक जिन्न के अश्आ़र

हज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन जुबैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत करते हैं कि एक जिन्न सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की शहादत से क़ब्ल तीन (3) बार रोया और फिर उस ने येह अश्आ़र पढ़े :

اَبَعْدَ قَتِيلٍ بِالْمَدِيْنَةِ اَصْبَحَتْ ... لَهُ الْاَرْضُ تَهْتَزُّ الْعِضَاهُ بِاَسْوُقٍ

तर्जमा : "क्या मदीनए मुनव्वरा में एक शहीद (या'नी सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) के बा'द भी ज़मीन अपनी शाख़ों के साथ हिलेगी।"

---

1 ......شرح اصول اعتقاد السنة، سياق ماروى عن النبى ـــ الخ، ج ۴، الجزء: ۷، ص ۱۳۸۱، الرقم: ۲۵۰۱۔

2 ......مناقب امير المؤمنين عمر بن الخطاب، الباب الثامن والسبعون، ص ۲۳۳۔

3 ......المنتظم، ذكر من توفى فى ـــ الخ، ج ۴، ص ۳۲۹۔

جَزَی اللّٰہ خَیْرًا مِنْ اَمِیرٍ وَبَارَکَتْ ... یَدُ اللّٰہِ فِي ذَاکَ الاَدِیمِ الْمُمَزَّقِ

तर्जमा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए और अपने दस्ते क़ुदरत से उस ज़ात में बरकत अ़ता फ़रमाए जो अ़न क़रीब टूट फूट का शिकार (या'नी शहीद) होने वाली है।"

مَنْ یَسْعٰی اَوْ یَرْکَبْ جَنَاحَيْ نَعَامَۃٍ ... لِیُدْرِکَ مَا اسْدَیْتَ بِالْاَمْسِ یُسْبَقِ

तर्जमा : "कौन है ऐसा शख़्स जो शुतर मुर्ग़ के परों पर सुवार हो कर उन उमूर को ह़ासिल कर ले जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में अन्जाम दिये।"

قَضَیْتَ اُمُورًا ثُمَّ غَادَرْتَ بَعْدَھَا ... بَوَائِقَ فِيْ اَکْمَامِھَا لَمْ تُفَتَّقِ

तर्जमा : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बे शुमार उमूर सर अन्जाम दिये, फिर मुसीबतों और परेशानियों को उन की घुठलियों में ऐसे रख दिया कि वोह खुल ही न सकीं।"

وَمَا کُنْتُ اَخْشٰی اَنْ تَکُونَ وَفَاتُہٗ ... بِکَفَّيْ سَبَنْتٰی اَخْضَرِ الْعَیْنِ مُطْرِقِ

तर्जमा : "पस मुझे इस बात का कोई ख़ौफ़ नहीं है कि उन (या'नी सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की शहादत एक सब्ज़ रंग की आंखों वाले शख़्स के साथ होगी।"(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म की वफ़ात पर दो ग़ैबी अश्आ़र

ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ बिन अबू मा'रूफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि जिस दिन सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत हुई उस दिन येह दो ग़ैबी अश्आ़र सुने गए :

لِیَبْکِ عَلَی الاِسْلَامِ مَنْ کَانَ بَاکِیًا ... فَقَدْ اَوْشَکُوا ھَلْکٰی وَمَا قَدُمَ الْعَھْدُ

तर्जमा : "जो रो रहा है उसे चाहिये कि वोह इस्लाम पर रोए क्यूंकि इस्लाम की आज़माइश का वक़्त क़रीब आ चुका है ह़ालांकि अभी इस्लाम को थोड़ा ही अ़र्सा गुज़रा है।"

وَاَدْبَرَتِ الدُّنْیَا وَاَدْبَرَ خَیْرُھَا ... وَقَدْ مَلَّھَا مَنْ کَانَ یُوقِنُ بِالْوَعْدِ

तर्जमा : "दुन्या और इस की भलाइयां मुंह फेर के चली गईं क्यूंकि अब इसे उन लोगों ने भर दिया है जो झूटे वा'दे करते हैं।"(2)

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الفضائل، ماذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۸۳، حدیث: ۳۹۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الفضائل، ماذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۸۵، حدیث: ۴۷۔

तदफ़ीन के बा'द सय्यिदा आइशा सिद्दीक़ा का पर्दा करना

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है फ़रमाती हैं कि "अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तदफ़ीन से क़ब्ल मैं अपने हुजरे में या'नी जहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदफ़ून हैं बिग़ैर पर्दे के आया करती थी (क्यूंकि एक तो मेरे सरताज व ज़ौज रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم थे जब कि दूसरे मेरे वालिदे गिरामी थे) लेकिन जब सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को वहां दफ़्न किया गया तो मैं (आप से शर्मो ह़या की वज्ह से) कभी बिग़ैर पर्दे के वहां न आई, फिर मेरी रिहाइश और तीनों मज़ारात के दरमियान एक दीवार क़ाइम कर दी गई तो मैं अपने हुजरे में बिग़ैर पर्दे के रहा करती थी।"[1]

सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा का अ़क़ीदए ह़यातुन्नबी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا तदफ़ीने फ़ारूके़ आ'ज़म से पहले बिग़ैर पर्दे के जाया करती थीं लेकिन आप की तदफ़ीन के बा'द पर्दा किया करती थी, आप के इस मुबारक अ़मल से साबित होता है कि आप का अ़क़ीदा था कि ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तीनों अपने अपने मज़ारात में ज़िन्दा हैं, क्यूंकि पर्दा करने या न करने का तअ़ल्लुक़ ज़िन्दों के साथ है न कि मुर्दों के साथ। आप के इस मुबारक अ़मल को कई मुह़द्दिसीन व शारेह़ीन व मुअर्रिख़ीन और सीरत निगारों ने बयान किया है लेकिन किसी ने भी इस अ़मल को ग़लत़ नहीं क़रार दिया जो इस बात पर दलालत करता है कि येह उम्मते मुस्लिमा का इजमाई अ़क़ीदा और क़ुरआनो सुन्नत के बिल्कुल मुत़ाबिक़ है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज भी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के उ़श्शाक़, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को चाहने वाले, उन की मद्ह़ सराई करने वाले येही अ़क़ीदा रखते हैं और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ज़्लो करम, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के फ़ैज़ान से फ़ैज़याब होते हैं और क़ियामत तक फ़ैज़याब होते रहेंगे। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۷۷۔

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म की उ़म्र और ज़मानए ख़िलाफ़त

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ 26 ज़िल हि़ज्जतिल ह़राम बरोज़ बुध ज़ख़्मी हुवे और यकुम मुह़र्रमुल ह़राम की शब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की तदफ़ीन की गई। आप की उ़म्र मुबारक 63 साल थी। 66, 61 और 60 साल के मुख़्तलिफ़ अक़्वाल भी बयान किये गए हैं। आप की ख़िलाफ़त दस साल पांच माह और इक्कीस रोज़ रही।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ैज़ाने मज़ाराते सलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे : **عِنْدَ ذِکْرِ الصَّالِحِیْنَ تَنْزِلُ الرَّحْمَةُ** "या'नी नेक लोगों का ज़िक्र करते वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत नाज़िल होती है।" (الزهد لاحمد بن حنبل، ج ۱، ص ۳۲۶) ज़रा ग़ौर फ़रमाइये कि फ़क़त़ नेक लोगों का ज़िक्र करते वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत नाज़िल होती है तो जहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे ख़ुद मौजूद हों उस मक़ाम पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतों का कैसा नुज़ूल होता होगा ? काइनात की मुक़द्दस व मुबारक जगह सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मज़ारे मुबारक है जहां आप के साथ आप के दोनों रफ़ीक़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी आराम फ़रमा हैं। कल बरोज़े क़ियामत सब से पहले येही जगह शक़ होगी और रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस त़रह़ बाहर तशरीफ़ लाएंगे कि आप के दाईं जानिब सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और बाईं जानिब सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ होंगे। इस मुक़द्दस मक़ाम की अन्दरूनी व बैरूनी कैफ़िय्यत का इजमाली बयान पेशे ख़िदमत है :

तीनों क़ुबूरे मुबारका की अन्दरूनी कैफ़िय्यत

हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जसदे मुबारक से तक़रीबन एक हाथ के फ़ासिले पर सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का जसदे मुबारक तशरीफ़ फ़रमा है,

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۷۸۔

या'नी आप का सरे अक़्दस रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दौशे अन्वर के मुक़ाबिल है, फिर सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के जसदे मुबारक से तक़रीबन एक हाथ के फ़ासिले पर सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का जसदे मुबारक तशरीफ़ फ़रमा है, या'नी आप का सरे अक़्दस सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के कन्धों के मुक़ाबिल है।(1)

तीनों क़ुबूरे मुबारका की बैरूनी कैफ़िय्यत

वाज़ेह़ रहे कि तीनों क़ुबूरे मुबारका न तो पुख़्ता हैं और न ही उन पर ईंटें वग़ैरा लगाई गई हैं बल्कि कच्ची और सुर्ख़ रंग की मिट्टी से तीनों क़ुबूरे मुबारका को बनाया गया था। चुनान्चे, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के पोते ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुह़म्मद बिन अबू बक्र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم फ़रमाते हैं कि : "एक बार मैं उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और तीनों मज़ारात की अन्दर से ज़ियारत की इजाज़त त़लब की, आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने जब पर्दा हटाया तो मैं ने देखा कि तीनों क़ब्रें न तो बहुत ऊंची थीं और न ही बिल्कुल ज़मीन से मिली हुई थीं, इसी त़रह़ वोह बत़्ह़ा की सुर्ख़ मिट्टी से बनाई गई थीं।"(2)

तीनों क़ुबूरे मुबारका की वज़्अ़ व साख़्त

आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या जिल्द 21, स. 442 पर फ़रमाते हैं कि : तीनों तुर्बतों या'नी क़ुबूरे मुबारका की ज़ाहिरी वज़्अ़ और साख़्त के ह़वाले से सात रिवायात हैं जिन में से फ़क़त़ दो ही रिवायात बिल्कुल सह़ीह़ हैं :

.....पहली रिवायत सुनने अबू दावूद शरीफ़ की सह़ीह़ ह़दीसे मुबारका में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के पोते ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुह़म्मद बिन अबू बक्र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم की है जिस में इन्हों ने तीनों क़ुबूरे मुबारका की ज़ियारत करने के बा'द उन की

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۸۱، فتاوٰی رضویہ، ج۹، ص۸۸۷۔

2 ......ابوداود، کتاب الجنائز، باب فی سویة القبر، ج ۳، ص ۲۸۸، حدیث: ۳۲۲۰۔

कैफ़िय्यत को कुछ इस त़रह़ बयान किया कि सब से आगे हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर थी, जब कि शैख़ैन की क़ुबूरे मुबारका की तरतीब कुछ इस त़रह़ थी कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का सरे मुबारक रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक कन्धों के पास था, जब कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का सरे मुबारक हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दमैने मुबारका के मुतवाज़ी व मुत्तसिल था, इस सूरत में तीनों क़ुबूरे मुबारका का नक़्शा कुछ यूं होगा :

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه	रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم
	सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه

.....दूसरी रिवायत वोह है जिस पर मुह़द्दिसे रज़ीन वग़ैरा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم ने इज़्हारे ए'तिमाद किया है, अ़ल्लामा नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के नज़्दीक भी येही मश्हूर है, अ़ल्लामा समहूदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने फ़रमाया : "ज़ियादा मश्हूर रिवायत येह है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर दीवारे क़िब्ला से मुत्तसिल सब से आगे है और हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस शानों के बिल मुक़ाबिल सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की क़ब्र है, फिर सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के दोनों कन्धों के बिल मुक़ाबिल सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की क़ब्रे मुबारक है। इस सूरत में तीनों क़ुबूरे मुबारका का नक़्शा कुछ यूं होगा :

		रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم
	सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه	
सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه		

चौथी क़ब्र की जगह ख़ाली है

अह़ादीस व आसार से पता चलता है कि जिस हुजरए मुबारका में येह तीनों क़ुबूरे मुबारका हैं इस में एक और क़ब्र की जगह भी ख़ाली है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़फ़्स बिन उ़मर बिन

अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इन्तिक़ाल का वक़्त क़रीब आया तो उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उन के पास पैग़ाम भेजा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक क़ब्र की जगह है जिसे मैं ने आप के लिये बचा के रखा है अगर आप चाहें तो यहां तदफ़ीन करवा लें।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाबन इरशाद फ़रमाया : "ऐ उम्मुल मोमिनीन ! मुझे मा'लूम है कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तदफ़ीन के बा'द से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا घर में पर्दे के साथ आती जाती हैं, मैं यहां अपनी तदफ़ीन कर के रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के घर को मज़ीद तंग नहीं करना चाहता, दूसरी वज्ह येह भी है कि मैं ने अपने दोस्त ह़ज़रते उ़स्मान बिन मज़ऊ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ येह अ़ह्द किया है कि हम दोनों इकठ्ठे एक ही जगह मदफ़ून होंगे।" जब कि उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने वसिय्यत फ़रमाई थी कि मुझे जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न किया जाए लिहाज़ा आप को वहीं दफ़्न किया गया।(1)

सय्यिदुना ईसा عَلَیْہِ السَّلَام की तदफ़ीन

मुख़्तलिफ़ रिवायात से मा'लूम होता है कि हुजरए मुबारका में जो एक क़ब्र की जगह ख़ाली है उस में क़ुर्बे क़ियामत में नाज़िल होने वाले नबी ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام दफ़्न होंगे जो शरीअ़ते मुह़म्मदी के मुत्तबेअ़ होंगे। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि तौरात शरीफ़ में जहां रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सिफ़ाते मुबारका का ज़िक्र है वहीं सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की येह सिफ़त भी मज़कूर है कि आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मदफ़ून होंगे। अ़ल्लामा अबू मौदूद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَدُوْد फ़रमाते हैं कि : "इसी वज्ह से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुजरए मुबारका में एक क़ब्र की जगह ख़ाली है।"(2)

1 ......تاریخ مدینۂ منورہ، ج ۱، ص ۱۱۵۔

2 ......ترمذی، کتاب المناقب، باب ماجاء فی فضل النبی، ج ۵، ص ۳۵۵، حدیث: ۳۶۳۷۔

सय्यिदुना ईसा عَلَیْہِ السَّلَام सब्ज़ इमामा शरीफ़ में

आ़रिफ़ बिल्लाह, नासिहुल उम्मह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना इमाम अ़ब्दुल ग़नी बिन इस्माईल नाबुलुसी ह़नफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि : "ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जब दुन्या में दोबारा तशरीफ़ लाएंगे तो आप के सरे अक़्दस पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा जगमगा रहा होगा।"(1)

पांच कोनों वाली दीवार

दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़ह्दे मुबारका में हुजरए मुबारका खजूरों की शाख़ों से बना हुवा था, बा'द में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौर में इस की दीवारें कच्ची ईंटों से बनाई गईं, अलबत्ता इस की छतें अब भी खजूर की शाख़ों ही की थीं। फिर लोग रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर से बतौरे तबर्रुक मिट्टी लिया करते थे इस लिये सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हुक्म से इस के सामने दीवार बना कर इस को बन्द कर दिया गया लेकिन इस में एक सूराख़ छोड़ दिया गया लोग इस से मिट्टी लेने लगे तो इसे भी बा'द में बन्द कर दिया गया। सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे मुबारका में जब एक दीवार गिरी और इस की ता'मीरे नौ की गई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़िफ़ाज़त की ग़रज़ से पांच कोनों वाली दीवार बना दी, पांचवां कोना बनाने की वज्ह का'बतुल्लाह से अ़द्मे मुशाबहत थी। इस पंज गोशा दीवार में न तो कोई दरवाज़ा रखा गया और न ही कोई और रास्ता।"(2)

सीसा पिलाई हुई मज़बूत़ दीवार

सुल्त़ान नूरुद्दीन ज़ंगी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के अ़ह्दे मुबारक में नसरानियों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक जसद को चोरी करने की नापाक साज़िश तय्यार की, जिस के लिये उन्हों ने दो अफ़राद को मदीनए मुनव्वरा में पूरी तय्यारी के साथ रवाना किया। उन्हों ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जसदे अत़हर तक पहुंचने के लिये ज़मीनी सुरंग खोदी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गु़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

1 ......فیض القدیر، فصل فی المحلی۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۸ ۱ ۷، تحت الحدیث: ۰ ۵ ۲ ۴، الحدیقۃ الندیۃ، ج ۱، ص ۲۷۳۔

2 ......وفاء الوفاء، الفصل الثانی والعشرون۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۵۴۴، ۵۶۳، الدرۃ الثمینۃ لابن النجار، ذکر وفاۃ عمر، ص ۲۰۷۔

ने सुल्तान नूरुद्दीन ज़ंगी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی के ख़्वाब में आ कर उन्हें मुत्तलअ़ किया और उन दोनों ख़बीस नसरानियों का चेहरा भी दिखाया सुल्तान नूरुद्दीन ज़ंगी ज़बरदस्त आ़शिक़े रसूल थे, अपने महबूब के जसदे अत़हर के साथ गुस्ताख़ी के तसव्वुर से ही कांप उठे, फ़ौरन मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ रवाना हुवे, पूरे शहर के लोगों को बुला कर सदक़ात दिये ताकि उन दोनों नसरानियों की शनाख़्त हो सके, बा'दे अज़ां उन दोनों को गिरिफ़्तार कर लिया गया, उन के हुजरे से ज़मीन खोदने के औज़ार वग़ैरा बर आमद हुवे, इब्तिदाई तफ़्तीश के बा'द उन्हों ने अपने जुर्म का इक़रार कर लिया। सुल्तान नूरुद्दीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उन दोनों की गर्दनें उड़ाने का हुक्म दिया। बा'दे अज़ां आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उस हुजरए मुबारका के बाहर जिस में तीनों क़ुबूर मौजूद हैं गहरी खुदाई करवा के सीसा पिलाई ज़मीनी दीवार खड़ी कर दी ताकि आइन्दा कोई भी ऐसी नापाक जसारत करने की कोशिश न करे।[1]

मक़्सूरा शरीफ़ की वज़ाहत

मक़्सूरा शरीफ़ उस लोहे और पीतल से बनाई हुई जाली मुबारका को कहा जाता है जो पांच कोनों वाली दीवार के इर्द गिर्द है, सब से पहले येह जाली मुबारका सुल्तान रुक्नुद्दीन बीबर्स ने सिने 668 हिजरी में बनवाई थी, उस ने येह जाली लकड़ी की बनवाई थी, इन जालियों की लम्बाई दो आदमियों के क़द के बराबर थी, बा'द में आने वाले बादशाह ने इस में मज़ीद इज़ाफ़ा किया और इसे छत से लगा दिया। बा'दे अज़ां मुख़्तलिफ़ अदवार में इन की ता'मीरे नौ की जाती रही नीज़ इन पर मुख़्तलिफ़ रंग भी किये जाते रहे, ह़त्ता कि अब भी वोही जालियां मौजूद हैं जिन के सामने उ़श्शाक़, ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और शैख़ैने करीमैन (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) के मज़ारात पर दुरूदो सलाम अ़र्ज़ करते हैं और फ़ैज़ाने मज़ाराते सलासा से फ़ैज़याब होते हैं।[2]

तेरी जालियों के पीछे तेरी रह़मतों के साए
जिसे देखनी हो जन्नत वोह मदीना देख आए
सुन्हरी जालियां हों आप हों और मुझ सा आ़सी हो
मिले सीने से सीना जाने जानां या रसूलल्लाह

---

1 ......وفاء الوفاء، الفصل السابع والعشرون۔۔۔الخ، خاتمة، ج ۱، ص ۴۸ ۶۔

2 ......وفاء الوفاء، الفصل السابع والعشرون۔۔۔الخ، المقصورة الدائرة، ج ۱، ص ۱ ۱ ۶۔

रसूलुल्लाह की क़ब्रे अन्वर की मौजूदा तसावीर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला तमाम रिवायात से दर्जे ज़ैल उमूर सामने आए :

.....रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم व शैख़ैने करीमैन के मज़ारात के गिर्द चार दीवारी है।

.....येह चार दीवारी बिल्कुल बन्द है इस में आने जाने का कोई भी रास्ता नहीं है।

.....इस चार दीवारी के गिर्द भी एक पांच कोनों वाली मज़्बूत़ दीवार है जिस पर चादर डाल दी गई है।

.....येह पांच कोनों वाली दीवार भी बिल्कुल बन्द है इस में भी आने जाने का कोई रास्ता नहीं है।

.....इस पांच कोनों वाली दीवार के बाहर अब सुन्हरी जालियां हैं जिन के अन्दर पर्दे लगे हैं।

.....ख़ास हुजरए मुबारका और पांच कोनों वाली दीवार के बिल्कुल नीचे सुल्त़ान नूरुद्दीन ज़ंगी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى की बनाई हुई सीसा पिलाई मज़्बूत़ ज़मीनी दीवार मौजूद है।

.....ख़ास हुजरए मुबारका और पांच कोनों वाली दीवार के ऐन ऊपर सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद मज़ाराते सलासा से बरकतें लूट रहा है और वोह बरकतें पूरे आ़लम में लुटा रहा है।

.....अब कोई भी ऐसा रास्ता नहीं है कि बराहे रास्त कोई रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم व शैख़ैने करीमैन के मज़ारात तक पहुंच सके और येह तमाम उमूर पहली सदी से ले कर ज़ियादा से ज़ियादा छटी सदी तक मुकम्मल कर लिये गए थे।

.....येह जो आए दिन अख़्बारात में या टी वी चेनल्ज़ पर ख़बरें नश्र की जाती हैं कि फुलां बादशाह या सद्र या कोई भी मख़्सूस शख़्सिय्यत या किसी और के लिये रौज़ए मुबारका का दरवाज़ा खोला गया या बा'ज़ ह़ज़रात का येह दा'वा करना कि वोह रौज़ए मुबारका के अन्दर गए हैं तो येह तमाम ह़ज़रात फ़क़त़ उसी पांच कोनों वाली दीवार के बाहर तक ही गए हैं जिस पर सब्ज़ रंग का ग़िलाफ़ चढ़ा हुवा है न कि ख़ास क़ुबूरे मुबारका तक। इस से आगे कोई भी नहीं जा सकता क्यूंकि वोह दीवार हर त़रफ़ से बिल्कुल बन्द है। ह़त्ता कि गुम्बदे ख़ज़रा के ख़ुद्दाम भी उसी पांच कोनों वाली दीवार के बाहर तक ही जा सकते हैं।

.....वाज़ेह़ रहे कि पांच कोनों वाली दीवार के बनने से क़ब्ल या जब तक इस के ज़रीए ख़ास क़ुबूरे मुबारका तक जाने का रास्ता था तो उस वक़्त केमेरा न था, जब केमेरा ईजाद हुवा तो अन्दर जाने का रास्ता बन्द कर दिया गया था। लिहाज़ा ख़ास क़ुबूरे मुबारका की तस्वीर लेना फ़िल ह़ाल ना

मुमकिन है। आज कल बा'ज़ कुतुब, मज़ामीन, कतबों और स्टीकर्ज़ वग़ैरा पर चन्द कुबूर की तसावीर हैं जिन्हें रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मन्सूब किया जाता है ह़ालांकि वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्र मुबारका नहीं है, क्यूंकि अब उस की तसावीर बनाना मुमकिन नहीं है और जब उस की तसावीर बनाना मुमकिन था उस वक़्त केमेरा मौजूद न था। मौजूदा तस्वीरें बुज़ुर्गाने दीन की कुबूर शरीफ़ की हैं, एक तस्वीर तो ह़ज़रते सय्यिदुना जलालुद्दीन रूमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की क़ब्रे मुबारक की है। लिहाज़ा ऐसी तमाम तसावीर को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मन्सूब करना दुरुस्त नहीं। मज़ाराते सलासा के हुजरए मुबारका, पांच कोनों वाली दीवार, उस के ऊपर सब्ज़ गुम्बद का क़लमी नक़्शा अगले सफ़ह़े पर मुलाह़ज़ा कीजिये

मज़ारात पर ह़ाज़िरी देना सुन्नत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी हम ने काइनात के मुक़द्दस तरीन मज़ारात की तफ़्सीलात पढ़ीं, वाज़ेह़ रहे कि मज़ारात पर ह़ाज़िरी देना, वहां बुज़ुर्गों के वसीले से दुआ करना, ख़ुद उन के लिये दुआए रह़मत करना येह तमाम बातें न सिर्फ़ क़ुरआनो सुन्नत के ऐन मुत़ाबिक़ हैं बल्कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की सुन्नते मुबारका भी हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व दीगर कई सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की आ़दते मुबारका थी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िरी दिया करते थे, नीज़ सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में भी सलाम पेश किया करते थे, क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर की ज़ियारत प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त के वाजिब होने की ज़मानत है। चुनान्चे,

शफ़ाअ़त वाजिब हो गई

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **مَنْ زَارَ قَبْرِیْ وَجَبَتْ لَہٗ شَفَاعَتِیْ** "या'नी जिस ने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की उस पर मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो गई।"[1]

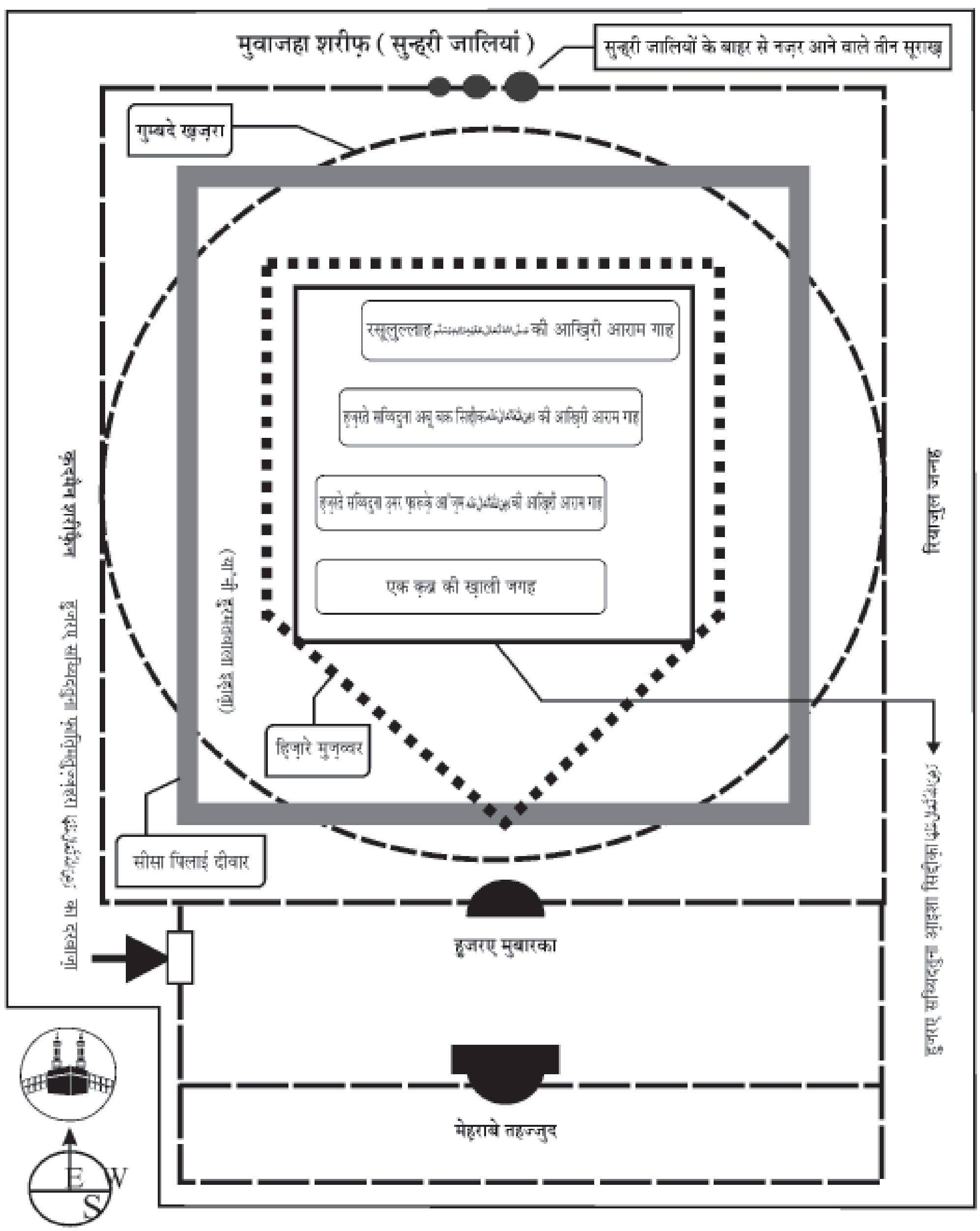
सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर की रौज़ए रसूल पर ह़ाज़िरी

ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि : "जलीलुल क़द्र सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह आ़दते मुबारका थी कि आप

1 ......شعب الایمان، باب فی المناسک، فضل الحج والعمرۃ، ج ۳، ص ۴۹۰، حدیث: ۴۱۵۹۔

नक़्शए मज़ाराते रसूलुल्लाह, सिद्दीक़े अक्बर व फ़ारूक़े आ'ज़म

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم وَ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا



रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर हाज़िरी दिया करते और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में सलातो सलाम पेश करते, सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दोनों की बारगाह में भी सलाम पेश करते।"[1]

सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह की रौज़ए रसूल पर हाज़िरी

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मुन्कदिर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि मैं ने जलीलुल क़द्र सहाबिये रसूल हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा कि आप रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर के क़रीब रो रहे हैं और साथ ही अ़र्ज़ कर रहे हैं : "येही वोह मुबारक जगह है जहां आंसू बहाए जाते हैं, क्यूंकि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है कि मेरी क़ब्र और मिम्बर के दरमियान का हिस्सा जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है।"[2]

सय्यिदुना अनस बिन मालिक की रौज़ए रसूल पर हाज़िरी

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुनीब عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَسِیْب अपने वालिदे मोह़तरम से रिवायत करते हैं कि मैं ने जलीलुल क़द्र सहाबिये रसूल हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर हाज़िर हुवे, वहां थोड़ी देर ठहरे और फिर अपने दोनों हाथ उठाए तो मैं ने सोचा कि शायद आप नमाज़ शुरूअ़ करने लगे हैं लेकिन मैं ने देखा कि आप ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में सलातो सलाम पेश किया और फिर तशरीफ़ ले गए।"[3]

.....**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मा'लूम हुवा कि सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार, सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मज़ारात पर हाज़िर हो कर सलातो सलाम पेश किया करते थे, **بِحَمْدِ اللّٰہِ تَعَالٰی** आज चौदह सौ साल के बा'द भी सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की सीरते तय्यिबा पर अ़मल करने वाले उ़श्शाक़, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार की हाज़िरी को अ़ज़ीम सआदत बल्कि रूहानी मे'राज समझते हैं। नीज़ सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان, औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام के मज़ारात पर हाज़िर हो कर उन के फ़ैज़ से फ़ैज़याब होते हैं।

---

1 ......شعب الایمان، باب فی المناسک، فضل الحج والعمرۃ، ج ۳، ص ۴۹۰، حدیث: ۴۱۶۱۔

2 ......شعب الایمان، باب فی المناسک، فضل الحج والعمرۃ، ج ۳، ص ۴۹۱، حدیث: ۴۱۶۳۔

3 ......شعب الایمان، باب فی المناسک، فضل الحج والعمرۃ، ج ۳، ص ۴۹۱، حدیث: ۴۱۶۴۔

.....अगर आप भी अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام, सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان व औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की महब्बत को अपने दिल में बसाना चाहते हैं, इन के मुबारक और बा बरकत मज़ारात से फ़ैज़ हासिल करना चाहते हैं, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की महब्बत व उल्फ़त को अपने क़ुलूबो अज़्हान में रासिख़ करना चाहते हैं तो तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माहो़ल से वाबस्ता हो जाइये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप के दिल का मदनी गुलदस्ता मुक़द्दस मज़ारात की ख़ुश्बूओं से महक उठेगा । तरग़ीब के लिये एक बहार पेशे ख़ि़दमत है :

सरकार का सलाम अ़त्तार के नाम

बाबुल इस्लाम सिन्ध के मश्हूर शहर है़दराबाद के मुक़ीम इस्लामी भाई ने ह़ल्फ़िय्या (या'नी ख़ुदा की क़सम खा कर) बयान किया है कि मुझे 4 रमज़ानुल मुबारक सिने 1429 हिजरी मदीने शरीफ़ हाज़िरी की सआ़दत नसीब हुई । 5 शव्वालुल मुकर्रम सिने 1429 हिजरी बरोज़ पीर शरीफ़ या मंगल दोपहर तक़रीबन ढाई बजे अलवदाई हाज़िरी के लिये बारगाहे रिसालत में ऐ़न सुन्हरी जालियों के सामने अपना और दीगर ह़ज़रात का सलाम पेश कर रहा था । इस दौरान जब मैं ने अपने पीरो मुर्शिद, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सलाम बारगाहे रिसालत में पेश किया तो जाली मुबारक के पीछे से आवाज़ आई : **"मेरे इल्यास को भी सलाम कहना ।"** मैं एक दम चौंका और इधर उधर देखा तो हर त़रफ़ माहो़ल पुर सुकून था ईद गुज़र जाने के बाइ़स वहां बहुत कम लोग थे । मैं ने एक बार फिर अपने पीरो मुर्शिद अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सलाम बारगाहे रिसालत में पेश किया तो दोबारा जाली मुबारका के पीछे से आवाज़ आई : **"मेरे इल्यास को भी मेरा सलाम कहना ।"** येह सुन कर मुझ पर रिक़्क़त त़ारी हो गई और बे इख़्तियार मैं ने एक बार फिर अपने पीरो मुर्शिद अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सलाम बारगाहे रिसालत में पेश किया तो ख़ुदा की क़सम ! मैं ने बेदारी के आ़लम में तीसरी बार फिर येह सुना कि : **"मेरे इल्यास को भी मेरा सलाम कहना ।"** मैं काफ़ी देर खड़ा रोता रहा । कुछ दिनों बा'द मैं पाकिस्तान लौट आया । चूंकि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन दिनों मुल्क से बाहर थे लिहाज़ा मैं आप को सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सलाम न पहुंचा सका । अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की वत़न वापसी के बा'द भी मैं काफ़ी अ़र्सा

सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सलाम आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को न पहुंचा सका। सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सिने 1430 हिजरी बरोज़ जुमा'रात जब मैं ने मदनी चैनल पर सुन्हरी जालियों का रूह़ परवर मन्ज़र देखा तो यका यक वोही आवाज़ मुझे फिर सुनाई दी, अल्फ़ाज़ कुछ यूं थे : **''मेरे इल्यास को तुम ने अभी तक मेरा पैग़ाम नहीं पहुंचाया ?''** मैं बे क़रार हो गया और आख़िरे कार 3 रबीउ़न्नूर शरीफ़ बरोज़ इतवार बा'द नमाज़े इशा वालिद साहिब के हमराह आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना (कराची) में होने वाले मदनी मुज़ाकरे में शिर्कत के लिये जा पहुंचा। नसीब से सह़री में पीरो मुर्शिद دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में ह़ाज़िरी की सआ़दत मिली तो मौक़अ़ मिलने पर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सलाम पेश करने की सआ़दत ह़ासिल की और सुकून का सांस लिया कि मरने से पहले पहले मैं ने सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अपने पीरो मुर्शिद अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه तक पहुंचा दिया।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه पन्दरहवीं सदी की वोह अ़ज़ीम इल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत हैं जिन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब, हम गुनहगारों के त़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ास करम की बदौलत इ़ल्म की रौशनी फैला कर जहालत की घटाओं को दूर कर दिया, सुन्नतों की बहारें आ़म कर के बे राह-रवी की चलती आंधियों का ज़ोर तोड़ दिया, ह़यादारी के पुर असर दर्स के ज़रीए़ बे ह़याई के दरयाओं का रुख़ मोड़ दिया, लाखों मुसलमानों को आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मुख़्लिसाना काविशों की बरकत से तौबा की सआ़दत मिली और वोह अपनी आख़िरत संवारने की कोशिश में लग गए। आप भी अमीरे अहले सुन्नत के दामन से वाबस्ता हो कर फ़िक्रे आख़िरत कीजिये और दोनों जहां की भलाइयां पाइये।

या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और तमाम औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की ह़क़ीक़ी मह़ब्बत व उन की सीरते त़य्यिबा पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अठ्ठारहवां बाब

शाने फ़ारूके आ'ज़म ब ज़बाने औलियाए उम्मत

इस बाब में मुलाहज़ा कीजिये...........

.....शाने फ़ारूके आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

.....शाने फ़ारूके आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आबिदीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

.....शाने फ़ारूके आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

.....शाने फ़ारूके आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

.....शाने फ़ारूके आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना इमामे ह़सन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

.....शाने फ़ारूके आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना ज़ैद बिन अ़ली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

.....शाने फ़ारूके आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना मालिक बिन अनस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

.....शाने फ़ारूके आ'ज़म ब ज़बाने हु़ज़ूर दाता गंज बख़्श رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

.....शाने फ़ारूके आ'ज़म ब ज़बाने आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

.....शाने फ़ारूके आ'ज़म ब ज़बाने बरादरे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

.....शाने फ़ारूके आ'ज़म ब ज़बाने मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

.....शाने फ़ारूके आ'ज़म ब ज़बाने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

शाने फ़ारूके आ'ज़म ब ज़बाने औलियाए उम्मत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ज़ाइल व मनाक़िब से मुतअ़ल्लिक़ अहादीसे मुबारका, सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के महब्बत व अ़क़ीदत भरे अक़्वाल इसी किताब के बाब **"इश्क़े रसूल"** सफ़्हा 419 पर मुलाहज़ा किये जा सकते हैं, अब यहां सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के इलावा दीगर अकाबिरीने उम्मत के वोह अक़्वाल बयान किये जाते हैं जो बिला वासिता या बिल वासिता सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान में हैं।

शाने फ़ारूके आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक़

मेरा उस से कोई वासिता नहीं

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْخَالِق फ़रमाते हैं :

اَنَابَرِیْءٌ مِمَّنْ ذَکَرَ اَبَابَکْرٍ وَعُمَرَ اِلَّا بِخَیْرٍ

"या'नी उस शख़्स से मेरा कोई वासिता नहीं जो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ व सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़िक्र ख़ैर व ख़ूबी के साथ न करे।"[1]

जो अबू बक्र व उ़मर की फ़ज़ीलत नहीं जानता वोह जाहिल है

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْخَالِق फ़रमाते हैं :

مَنْ لَمْ یَعْرِفْ فَضْلَ اَبِیْ بَکْرٍ وَعُمَرَ فَقَدْ جَھَلَ السُّنَّۃَ

"या'नी जो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ज़ीलत की मा'रिफ़त नहीं रखता वोह सुन्नत से जाहिल है।"[2]

शाने फ़ारूके आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन

अ़हदे रिसालत में शैख़ैन का मक़ाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन हुसैन इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और

---

1 ......تاریخ الخلفاء، ص ۹۲۔

2 ......مناقب امیر المومنین عمر بن الخطاب، الباب العشرون، ص ۴۲۔

अ़र्ज़ किया : مَا كَانَ مَنْزِلَةُ اَبِیْ بَكْرٍ وَعُمَرَ مِنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में क्या मक़ामो मर्तबा था ?" फ़रमाया : كَمَنْزِلِهِمَا الْيَوْمَ هُمَا ضَجِيْعَاهُ "या'नी अ़ह्दे रिसालत में इन का मक़ामो मर्तबा वोही था जो आज है कि दोनों उस वक़्त भी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दोस्त थे और आज मज़ार में भी दोनों रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दोस्त हैं।"(1)

शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सीरीन

फ़ारूक़े आ'ज़म की शान घटाने वाला मुह़िब्बे नबी नहीं

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सीरीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं :

مَا اَظُنُّ رَجُلًا يَنْتَقِصُ اَبَا بَكْرٍ وَعُمَرَ يُحِبُّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

"या'नी जो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान घटाता है वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत नहीं करता।"(2)

शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी

तमाम मुहाजिरीन व अन्सार सह़ाबा को ख़त़ावार ठहराने वाला

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद फ़िरयाबी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को येह फ़रमाते सुना :

مَنْ زَعَمَ اَنَّ عَلِيًّا عَلَيْهِ السَّلَام كَانَ اَحَقَّ بِالْوِلَايَةِ مِنْهُمَا فَقَدْ خَطَّاَ اَبَا بَكْرٍ وَعُمَرَ وَالْمُهَاجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارَ

"या'नी जिस ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ब निस्बत मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) को ख़िलाफ़त का ज़ियादा मुस्तह़िक़ जाना उस ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व तमाम मुहाजिरीन व अन्सार सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को ख़त़ावार ठहराया।"(3)

1 ......مناقب امیر المومنین عمر بن الخطاب، الباب العشرون، ص ۴۳۔
2 ......ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی ۔۔۔ الخ، ج۵، ص ۳۸۴، حدیث: ۳۷۰۵۔
3 ......ابوداود، کتاب السنة، باب فی التفضیل، ج۴، ص ۲۷۳، حدیث: ۴۶۳۰۔

शाने फ़ारूके़ आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना शरीक

मौला अ़ली को शैख़ैन पर मुक़द्दम करने वाले में कोई ख़ैर नहीं

हज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुईन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना शरीक رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : لَيْسَ يُقَدِّمُ عَلِيًّا عَلٰى اَبِيْ بَكْرٍ وَعُمَرَ اَحَدٌ فِيْهِ خَيْرٌ ''या'नी जिस शख़्स में थोड़ी सी भी ख़ैर व भलाई होगी वोह अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) को शैख़ैन या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه पर मुक़द्दम नहीं करेगा।''(1)

शाने फ़ारूके़ आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना उसामा

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर इस्लाम के मां-बाप हैं

हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन आ़सिम رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना उसामा رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : اَتَدْرُوْنَ مَنْ اَبُوْ بَكْرٍ وَعُمَرُ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا هُمَا اَبُو الْاِسْلَامِ وَاُمُّهٗ ''या'नी ऐ लोगो ! क्या तुम जानते हो कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه व अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه कौन हैं ? वोह दोनों तो इस्लाम के मां-बाप हैं।''(2)

शाने फ़ारूके़ आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना मुजाहिद

फ़ारूके़ आ'ज़म की राए के मुत़ाबिक़ नुज़ूले क़ुरआन

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन मुहाजिर رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : كَانَ عُمَرُ اِذَا رَاٰى الرَّأْيَ نَزَلَ بِهِ الْقُرْآنُ ''या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जब कोई राए देते तो उसी के मुत़ाबिक़ क़ुरआने पाक नाज़िल हो जाता।''(3)

---

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۳۸۵، تاریخ الاسلام، ج ۳، ص ۲۷۴۔

2 ......تاریخ الخلفاء، ص ۹۲۔

3 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الفضائل، ما ذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۷۹، حدیث: ۱۳۔

शयातीन को बेड़ियां लगी हुई थीं

हज़रते सय्यिदुना वासिल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : كُنَّا نَتَحَدَّثُ اَنَّ الشَّيَاطِيْنَ كَانَتْ مُصَفَّدَةً فِي زَمَانِ عُمَرَ فَلَمَّا اُصِيْبَ بُثَّتْ "या'नी हम यूं कहा करते थे कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जब तक ह़यात रहे तमाम शयातीन को बेड़ियां लगी रहीं और जैसे ही आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का विसाल हुवा शयातीन आज़ाद हो गए ।"(1)

शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना इमाम मालिक

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर का मक़ामे क़ुर्ब

हज़रते सय्यिदुना अ़तकी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद ने एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से पूछा : كَيْفَ كَانَتْ مَنْزِلَةُ اَبِیْ بَكْرٍ وَعُمَرَ مِنْ رَّسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ؟ "या'नी प्यारे आक़ा की बारगाह में आप दोनों का क्या मक़ाम था ?" आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : كَقُرْبِ قَبْرَيْهِمَا مِنْ قَبْرِهٖ بَعْدَ وَفَاتِهٖ "या'नी रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अ़ह्द में उन्हें वैसी ही क़ुर्बत ह़ासिल थी जैसी बा'दे वफ़ात उन दोनों के मज़ार को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ार से क़ुर्बत है ।"(2)

शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना शक़ीक़

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म की महब्बत सुन्नत है

हज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह से रिवायत करते हैं, फ़रमाया : حُبُّ اَبِیْ بَكْرٍ وَعُمَرَ وَمَعْرِفَةُ فَضْلِهِمَا مِنَ السُّنَّةِ "या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه व अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से महब्बत करना और उन की फ़ज़ीलत की मा'रिफ़त रखना दोनों बातें सुन्नत हैं ।"(3)

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الفضائل، ما ذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۸۰، حدیث: ۱۵ ۔

2 ......مناقب امیر المومنین عمر بن الخطاب، الباب العشرون، ص ۴۳ ۔

3 ......مناقب امیر المومنین عمر بن الخطاب، الباب العشرون، ص ۴۲ ۔

शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने इमाम ह़सन

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म की मह़ब्बत फ़र्ज़ है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन जा'फ़र लुअलुई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से पूछा : "सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) की मह़ब्बत सुन्नत है ?" तो आप ने फ़रमाया : لَا فَرِيْضَةٌ "या'नी सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) की मह़ब्बत सुन्नत नहीं बल्कि फ़र्ज़ है।"(1)

शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना ज़ैद बिन अ़ली

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर से बराअत मौला अ़ली से बराअत है

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अ़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : اَلْبَرَاءَةُ مِنْ اَبِیْ بَكْرٍ وَعُمَرَ اَلْبَرَاءَةُ مِنْ عَلِیٍّ "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه व सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से बराअत का इज़्हार करना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से बराअत का इज़्हार करना है।"(2)

शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना मालिक बिन मिग़्वल

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर की मह़ब्बत की वसिय्यत

ह़ज़रते सय्यिदुना शुऐ़ब बिन ह़र्ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन मिग़्वल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बारगाह में अ़र्ज़ की : "ह़ुज़ूर कुछ वसिय्यत इरशाद फ़रमाइये।" फ़रमाया : اُوْصِيْكَ بِحُبِّ الشَّيْخَيْنِ اَبِیْ بَكْرٍ وَعُمَرَ "या'नी मैं तुम्हें शैख़ैन या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) की मह़ब्बत की वसिय्यत करता हूं।"(3)

शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना मालिक बिन अनस

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है, फ़रमाते हैं :

1 ......مناقب امیر المومنین عمر بن الخطاب، الباب العشرون، ص ۴۲۔
2 ......مناقب امیر المومنین عمر بن الخطاب، الباب العشرون، ص ۴۳۔
3 ......مناقب امیر المومنین عمر بن الخطاب، الباب العشرون، ص ۴۳۔

كَانَ صَالِحُوا السَّلَفِ يُعَلِّمُوْنَ اَوْلَادَهُمْ حُبَّ اَبِیْ بَكْرٍ وَعُمَرَ كَمَا يُعَلِّمُوْنَ السُّوْرَةَ مِنَ الْقُرْآنِ

"या'नी बुज़ुर्गाने दीन अपनी औलाद को शैख़ैन या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) की मह़ब्बत इस त़रह़ सिखाते थे जैसे क़ुरआन की कोई सूरत सिखाते।"(1)

शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना जिब्रीले अमीन

फ़ारूक़े आ'ज़म की रिज़ा हुक्म और जलाल इ़ज़्ज़त है

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : اَقْرِئْ عُمَرَ السَّلَامَ وَاَخْبِرْهُ اَنَّ رِضَاهُ حُكْمٌ وَغَضَبَهُ عِزٌّ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! उ़मर को सलाम कहिये और उन्हें येह भी बता दीजिये कि उन की रिज़ामन्दी को हुक्म का दरजा ह़ासिल है और उन का जलाल बाइ़से इ़ज़्ज़त है।"(2)

शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने हुज़ूर दाता गंज बख़्श

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म के औसाफ़े ह़मीदा

हुज़ूर दाता गंज बख़्श अ़ली हिजवेरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की शाने अक़्दस में मद्ह़ सराई करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं :

"दूसरे ख़लीफ़ए राशिद सरहंगे अहले ईमान, मुक़्तदाए अहले एह़सान, इमामे अहले तह़क़ीक़, दरयाए मह़ब्बत के ग़रीक़ सय्यिदुना अबू ह़फ़्स उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हैं। आप के फ़ज़ाइल व करामात और फ़िरासत व दानाई मश्हूरो मा'रूफ़ हैं। आप फ़िरासत व सलाबत के साथ मख़्सूस हैं। त़रीक़त में आप के मुतअ़द्दद लत़ाइफ़ व दक़ाइक़ हैं। इसी मा'ना व मुराद में दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह इरशाद है कि اَلْحَقُّ يَنْطِقُ عَلٰى لِسَانِ عُمَرَ "या'नी ह़क़ उ़मर (फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) की ज़बान पर बोलता है।" येह भी फ़रमाया कि قَدْ كَانَ فِى الْاُمَمِ مُحَدَّثُوْنَ فَاِنْ يَّكُ مِنْهُمْ فِیْ اُمَّتِیْ فَعُمَرُ "या'नी गुज़श्ता उम्मतों में **मुह़द्दसीन** गुज़रे हैं, अगर मेरी

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۳۸۳۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الفضائل، ماذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۸۶، الحدیث: ۵۲۔

उम्मत में कोई **मुहद्दस** है तो वोह उ़मर हैं।'' त़रीक़त के ब कसरत रुमूज़ व लत़ाइफ़ आप رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी हैं इस किताब में इन का जम्अ़ करना दुश्वार है। अलबत्ता इन में से एक येह है कि आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : اَلْعُزْلَةُ رَاحَةٌ مِّنْ خُلَطَاءِ السُّوْءِ ''या'नी बुरे लोगों की हम नशीनी से गोशा नशीनी में चैन व राह़त है।''

गोशा नशीनी के दो त़रीके़

गोशा नशीनी दो त़रीके़ से होती है : (1) एक ख़ल्क़त से किनारा कशी करने पर। ख़ल्क़त से किनारा कशी की सूरत येह है कि उन से मुंह मोड़ कर ख़ल्वत में बैठ जाए और हम जिन्सों की सोह़बत से ज़ाहिरी त़ौर पर बेज़ार हो जाए और अपने आ'माल के उ़यूब पर निगाह रखने से राह़त पाए। ख़ुद को लोगों के मिलने जुलने से बचाए और अपनी बुराइयों से उन को मह़फ़ूज़ रखे। (2) दूसरा त़रीक़ा येह कि ख़ल्क़त से तअ़ल्लुक़ मुन्क़तेअ़ करे। इस की सूरत येह है कि उस के दिल की कैफ़िय्यत येह हो जाए कि वोह ज़ाहिर से कोई अ़लाक़ा न रखे। जब किसी का दिल ख़ल्क़ से मुन्क़तेअ़ हो जाता है तो उसे किसी मख़्लूक़ का अन्देशा नहीं रहता। और उसे कोई ख़त़रा नहीं रहता कि कोई उस के दिल पर ग़लबा पा सकेगा उस वक़्त ऐसा शख़्स अगर्चे ख़ल्क़त के दरमियान होता है लेकिन वोह ख़ल्क़त से जुदा होता है और उस के इरादे उन से मुन्फ़रिद होते हैं। येह दरजा अगर्चे बहुत बुलन्द है लेकिन बईद अज़ क़ियास नहीं मगर येही त़रीक़ा सीधा और मुस्तक़ीम है। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ इसी मक़ाम पर फ़ाइज़ थे। ज़ाहिर में तो सरीर आराए ख़िलाफ़त और ख़ल्क़त में मिले जुले नज़र आते थे लेकिन ह़क़ीक़त में आप का दिल उ़ज़्लत व तन्हाई से राह़त पाता था। येह दलील वाज़ेह़ है कि अहले बात़िन अगर्चे ब ज़ाहिर ख़ल्के़ ख़ुदा के साथ मिले जुले होते हैं लेकिन उन का दिल ह़क़ के साथ वाबस्ता होता है और हर ह़ाल में ख़ुदा ही की त़रफ़ रुजूअ़ होता है और जितना वक़्त ख़ल्के़ ख़ुदा से मिलने जुलने में सर्फ़ होता है वोह इसे ह़क़ की जानिब बला व इम्तिह़ान शुमार करते हैं। वोह ख़ल्के़ ख़ुदा की हम नशीनी से ह़क़ तआ़ला की त़रफ़ भागते हैं। वोह ख़याल करते हैं कि दुन्या ख़ुदा के मह़बूबों के लिये हरगिज़ पाको साफ़ नहीं होती। क्यूंकि अह़वाले दुन्या मुकद्दर होते हैं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : دَارٌ اُسِّسَتْ عَلَى الْبَلْوٰى بِلَا بَلْوٰى مَحَالٌ ''या'नी दुन्या ऐसा घर है जिस की बुन्याद आज़माइश पर रखी गई है, आज़माइश के बिग़ैर इस में रहना मुह़ाल है।''

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मख़्सूस सह़ाबा में से हैं और बारगाहे इलाही में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के तमाम अफ़्आ़ल मक़्बूल हैं ह़त्ता कि इब्तिदाअन जब मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे तो जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : **قَدْ اِسْتَبْشَرَ یَا مُحَمَّدُ اَھْلُ السَّمَاءِ بِاِسْلَامِ عُمَرَ** ''या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आस्मान वाले आज ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुशर्रफ़ ब इस्लाम होने पर बिशारत व तहनियत दे रहे हैं और ख़ुशियां मना रहे हैं। सूफ़ियाए किराम गुदड़ी पहनते और दीन में सलाबत व सख़्ती इख़्तियार करने में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की पैरवी करते हैं इस लिये कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ तमाम उमूर में सारे जहान के इमाम हैं।''(1)

शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने सय्यिदुना सिराज तूसी

सूफ़ियों के बहुत बड़े इमाम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू नस्र अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ली सिराज तूसी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی अपनी मायानाज़ तस्नीफ़ ''**अल्लुमउ़-फ़ी तारीख़ित्तसव्वुफ़िल इस्लामी**'' में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़याते त़य्यिबा के मुख़्तलिफ़ गोशों को सूफ़ियाना नज़र से कुछ इस त़रह़ बयान फ़रमाया है :

.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सब से नुमायां ख़ुसूसिय्यत येह है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बारगाहे रिसालत से ''**मुह़द्दस**'' होने की सनद अ़ता हुई। एक सूफ़ी से पूछा गया कि ''**मुह़द्दस**'' कौन होता है? तो उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : ''येह सिद्दीक़ लोगों का एक मर्तबा होता है।''

.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते मुबारका में मर्तबए सिद्दीक़िय्यत की अ़लामात नज़र आती हैं। मसलन ''सेंकड़ों मील दूर ह़ज़रते सारिय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के लश्कर की दौराने ख़ुत़बा मदद फ़रमाना।'' ''इन्तिहाई सादगी के साथ ख़ुत़बा इरशाद फ़रमाना कि एक दफ़्आ़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस क़मीस में ख़ुत़बा दिया जिस में बारह पैवन्द लगे हुवे थे।'' ''अपनी ऐ़बजूई पर ख़ुश होना कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद फ़रमाते हैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स पर रह़मत फ़रमाए जो मेरे ऐ़ब मुझे बता दिया करता है।''

1 ..... کشف المحجوب، ص ٦٩ ۔

۞ "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साए से भी शैतान का डर कर भाग जाना।" ۞ "ख़ौफ़े ख़ुदा व फ़िक्रे आख़िरत दामन गीर रहना कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक तिन्का उठा कर फ़रमाया कि काश मैं येह तिन्का होता, काश ! मेरी मां ने मुझ को न जना होता।" येह तमाम अ़लामाते सिद्दीक़िय्यत हैं।

.....आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के औसाफ़ में से येह भी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद इरशाद फ़रमाया करते कि मुझे जब भी कोई तक्लीफ़ पहुंची तो **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से चार इन्आ़माते इलाहिय्या मिल जाया करते थे। एक तो येह कि किसी दीनी मुआ़मले में कोई तक्लीफ़ नहीं आई। दूसरा येह कि जो भी तक्लीफ़ आई वोह ने'मत कि इस से बड़ी तक्लीफ़ नहीं आई। तीसरा येह कि किसी तक्लीफ़ पर रिज़ाए इलाही से मह़रूम नहीं रहा। चौथा येह कि मुझे हर तक्लीफ़ पर अज्र का पक्का यक़ीन है। फ़रमाया करते थे कि अगर सब्रो शुक्र दो ऊंट होते तो मैं जिस पर चाहता बे धड़क सुवार हो जाया करता।

.....आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के औसाफ़ में से येह भी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ब त़रीक़े अह़सन नादार और ग़रीब शख़्स की इस्लाह़ फ़रमाई कि एक शख़्स ने आप से अ़र्ज़ किया कि मैं बिल्कुल मोह़ताज हो चुका हूं। फ़रमाया : आज रात तुम्हारे पास खाने के लिये कुछ है या नहीं ? अ़र्ज़ किया : जी है। फ़रमाया : फिर तुम बिल्कुल मोह़ताज कैसे हुवे ?

.....आप की इम्तियाज़ी शान येह भी है, ख़ुद मौला अ़ली (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) आप की ता'रीफ़ फ़रमाते हैं कि एक दफ़्आ़ देखा कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहीं दौड़े जा रहे हैं सबब दरयाफ़्त किया तो पता चला कि सदक़े के ऊंट चुरा लिये गए हैं उन्हें तलाश करने जा रहे हैं। मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया अमीरुल मोमिनीन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बा'द आने वाले ख़ुलफ़ा को बहुत मुश्किल में डाल दिया है।

.....सूफ़ियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام को अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से एक ख़ास निस्बत होती है कि उन में भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसी ख़स्लतों का अ़क्स मौजूद होता है मसलन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसे पैवन्द लगे कपड़े पहनना, जलाली त़बीअ़त रखना, ख़्वाहिशाते नफ़्सानी तर्क कर देना, शुबे वाली चीज़ों से परहेज़ करना, करामात का ज़ाहिर करना, ह़क़ की ह़िमायत और बात़िल की मुख़ालफ़त में किसी की मलामत की परवा न करना, ह़ुक़ूक़ुल इ़बाद के मुआ़मले में यक्सां सुलूक करना, हमेशा सख़्त क़िस्म की इ़बादतें करना, जिन कामों से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बचते थे सूफ़िया भी उन से बचते हैं।

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का तवक्कुल भी बहुत बुलन्द दरजे का था कि मैदाने जंग में अपने भाई सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी ज़िह की पेशकश की लेकिन वोह आप के मक़्सद को समझ गए और अ़र्ज़ किया कि मैं भी शहादत पसन्द करता हूं जैसे आप पसन्द फ़रमाते हैं। इस में तवक्कुले ह़क़ीक़ी की त़रफ़ बहुत बड़ा इशारा है।

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे मैं ने इ़बादत की लज़्ज़त को चार चीज़ों में पाया : (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़राइज़ की अदाएगी के वक़्त। (2) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा चीज़ों से बचते वक़्त। (3) सवाबे इलाही ह़ासिल करने के लिये लोगों को भलाई का कहते वक़्त। (4) चौथा ग़ज़बे इलाही की ख़ातिर लोगों को बुरे कामों से रोकते वक़्त।[1]

शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने आ'ला ह़ज़रत

आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की मद्ह़ सराई करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं :

वोह उ़मर जिस के आ'दा पे शैदा सक़र
उस ख़ुदा दोस्त ह़ज़रत पे लाखों सलाम

शर्ह़ : अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दुश्मनों का जहन्नम आ़शिक़ है, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे ख़ुदावन्दी के मुक़र्रब और रब عَزَّوَجَلَّ के साथ दोस्ती रखने वाले हैं आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर लाखों सलाम हों।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

مَنْ اَبْغَضَ عُمَرَ فَقَدْ اَبْغَضَنِي وَمَنْ اَحَبَّ عُمَرَ فَقَدْ اَحَبَّنِي "या'नी जिस ने उ़मर से बुग़्ज़ रखा उस ने मुझ से बुग़्ज़ रखा और जिस ने उ़मर से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की।"[2]

एक और रिवायत में इरशाद फ़रमाया :

مَنْ اَحَبَّنِي اَحَبَّهُ اللّٰهُ وَ مَنْ اَحَبَّهُ اللّٰهُ اَدْخَلَهُ الْجَنَّةَ وَ مَنْ اَبْغَضَنِي اَبْغَضَهُ اللّٰهُ وَ مَنْ اَبْغَضَهُ اللّٰهُ اَدْخَلَهُ النَّارَ

---

1 ......اللمع فی تاریخ التصوف الاسلامی، ص ۱۷۵۔

2 ......مجمع الزوائد، کتاب المناقب، باب منزلة عمر عند الله، ج ۹، ص ۶۹، الحدیث: ۱۴۴۳۹ ملتقطاً۔

या'नी जिस ने मुझ से महब्बत की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से महब्बत फ़रमाएगा और जिस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने महब्बत की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और जिस ने मुझ से बुग़्ज़ रखा उस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बुग़्ज़ रखेगा और जिस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बुग़्ज़ रखा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम में दाख़िल फ़रमाएगा।[1]

मा'लूम हुवा कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की महब्बत ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से बुग़्ज़, रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बुग़्ज़ है और जिस ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से महब्बत की यक़ीनन वोह जन्नती है और जिस ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बुग़्ज़ रखा यक़ीनन वोह जहन्नमी है। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने शे'र में इन ही दोनों अह़ादीसे मुबारका की त़रफ़ इशारा फ़रमाया है :

फ़ारिक़े ह़क़्क़ो बात़िल इमामुल हुदा
तैग़े मस्लूले शिद्दत पे लाखों सलाम

शर्ह़ : ह़क़ को बात़िल व गुमराही से जुदा करने और हिदायत देने वाले इमामे बर ह़क़ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उस तल्वार की मिस्ल हैं जो इस्लाम की ह़िमायत में सख़्ती से बुलन्द की जाती है आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर लाखों सलाम हों।

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जब इस्लाम ले आए तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की, कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अब हम छुप कर नमाज़ वग़ैरा अदा नहीं करेंगे, लिहाज़ा तमाम मुसलमानों ने का'बतुल्लाह शरीफ़ में जा कर नमाज़ अदा की तो सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़क़ को बात़िल से जुदा करने के सबब आप को **"फ़ारूक़"** लक़ब अ़त़ा फ़रमाया। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों को हिदायत का रास्ता दिखाया और कुफ़्रो शिर्क की गुमराहियों के ख़िलाफ़ और दीने इस्लाम की रौशनियों व रा'नाइयों की ह़िमायत में सख़्ती से तल्वार बुलन्द फ़रमाई जिस से चहार सू इस्लाम का बोल बाला हो गया। आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت ने इन तमाम वाक़िआ़त की त़रफ़ इशारा फ़रमाया है।

तर्जुमाने नबी हम ज़बाने नबी
जाने शाने अ़दालत पे लाखों सलाम

[1] ......مستدرک حاکم، کتاب معرفة الصحابة، حديث تسمية الحسن والحسين، ج ۴، ص ۱۵۵، الحديث: ۴۸۲۹ ملتقطاً۔

शर्ह : आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हम ज़बान हैं कि कई दफ़्आ़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुने बिग़ैर कोई बात कही और वोह बि ऐ़निही वैसी ही निकली जैसा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया था । इसी त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तर्जुमान हैं कि कोई मस्अला बयान फ़रमाया और बा'द में सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से जब उस के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो आप को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बि ऐ़निही वोही ह़दीसे मुबारका मिली जैसा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मस्अला बयान फ़रमाया था । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़द्लो इन्साफ़ की रूह़ को शानो शौकत ह़ासिल हुई, बल्कि अपने दौरे ख़िलाफ़त में ऐसा अ़द्लो इन्साफ़ क़ाइम फ़रमाया जो क़ियामत तक आने वाले हुक्मरानों के लिये मश्अ़ले राह है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर लाखों सलाम हों ।(1)

शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने बरादरे आ'ला ह़ज़रत

आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن के छोटे भाई उस्ताज़े ज़मन मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मद्ह़ सराई करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं :

नहीं ख़ुश बख़्त मोह़ताजाने आ़लम में कोई हम सा
मिला तक़्दीर से ह़ाजत रवा फ़ारूक़े आ'ज़म सा

तेरा रिश्ता बना शीराज़ा जमइय्यत ख़ातिर
पड़ा था दफ़्तरे दीन किताबुल्लाह बर्हम सा

मुराद आई मुरादें मिलने की प्यारी घड़ी आई
मिला ह़ाजत रवा हम को दरे सुल्त़ाने आ़लम सा

तेरे जूदो करम का कोई अन्दाज़ा करे क्यूं कर
तेरा इक गदा फ़ैज़ो सख़ावत में है ह़ातिम सा

1.....सुख़ने रज़ा, स. 368 ।

ख़ुदारा महर कर ऐ ज़र्रा परवर महरे नूरानी
सिया बख़्ती से है रोज़ सिया शब ग़म सा

तुम्हारे दर से झोली भर मुरादें ले कर उठेंगे
न कोई बादशाह तुम सा न कोई बे नवा हम सा

फ़िदा ऐ उम्मे कुल्सूम आप की तक़्दीर यावर के
अ़ली बाबा हुवा दुल्हा हुवा फ़ारूके अकरम सा

ग़ज़ब में दुश्मनों की जान है तैग़ सरा अफ़गन से
ख़ुरूजो रफ़्ज़ के घर में न क्यूं बरपा हो मातम सा

शयातीन मुज़्महिल हैं तेरे नामे पाक के डर से
निकल जाए न क्यूं रफ़ाज़ बद अत्वार का दम सा

मनाएं ईद जो ज़िल हिज्जा में तेरी शहादत का
इलाही रोज़ व माहो सिन उन्हें गुज़रे मुहर्रम सा

हसन दर आ़लमे पस्ती सरे रिफ़्अ़त अगर दारी
बया फ़र्क़े इरादत बर दर फ़ारूके आ'ज़म सा[1]

शाने फ़ारूके आ'ज़म ब ज़बाने मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मद्ह़ सराई करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं :

बहारे बाग़े ईमां ह़ज़रते फ़ारूके आ'ज़म हैं
चराग़े बज़्मे इरफ़ां ह़ज़रते फ़ारूके आ'ज़म हैं

नुमायां आप की हर अदा से शाने फ़ारूक़ी
ख़ुदा की तैग़े बरां ह़ज़रते फ़ारूके आ'ज़म हैं

---

1 .....ज़ौक़े ना'त, स. 55 ।

اَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّار के मुसद्दके़ आ'ला हैं
मुज़िल्ले कुफ़्रो तुग़्यां ह़ज़रते फ़ारूके़ आ'ज़म हैं

रसूलुल्लाह ने फ़ारूक़ को अल्लाह से मांगा
अ़ताए रब्बे सुब्ह़ान ह़ज़रते फ़ारूके़ आ'ज़म हैं

चुना उस पाक ने दीं के लिये इस पाक सुथरे को
ह़बीबे दीन दारां ह़ज़रते फ़ारूके़ आ'ज़म हैं

ह़बीबे ह़क़ हैं त़य्यिब उन के साथी भी त़ाहिर हैं
चुनीदा बहरे पाकां ह़ज़रते फ़ारूके़ आ'ज़म हैं

न क्यूं वोह ज़ात चमके जिस ने दीने पाक चमकाया
जहां के महरे ताबां ह़ज़रते फ़ारूके़ आ'ज़म हैं

उ़मर आ़मिर हैं दीन के ह़क़ तआ़ला उन का नासिर है
दिले मोमिन के ताबां ह़ज़रते फ़ारूके़ आ'ज़म हैं

रहेगा नाम उन का ता अबद कौनैन में रौशन
सिपहरे दीन पे दरख़्शां ह़ज़रते फ़ारूके़ आ'ज़म हैं

उ़मर काफ़ी नबी को ह़स्बुकल्लाह से येह साबित है
है शाहिद जिन पे कु़रआं ह़ज़रते फ़ारूके़ आ'ज़म हैं

वोह आ़लम दबदबा का कांपते हैं कै़सरो किस्रा
है जिन से दीन की शां ह़ज़रते फ़ारूके़ आ'ज़म हैं

ख़ज़ाने रूमो फ़ारिस के लुटाते हैं मदीने में
फ़ुयूज़े ह़क़ के बारां ह़ज़रते फ़ारूके़ आ'ज़म हैं

मगर इस ह़ाल में धो धो कर इक कुर्ता पहनते हैं
है नाज़ां जिन पे तक़्वा ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म हैं

मुसलमां रात भर सोएं उ़मर फ़ारूक़ पहरा दें
रिआ़या के निगहबान ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म हैं

पुकारा सारिया को इक महीने की मसाफ़त से
जिसे हर जा हो यक्सां ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म हैं

हैं दामादे अ़ली व नाज़िनीने ह़ज़रते ज़ह्रा
है सालिक जिन पे नाज़ां ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म हैं(1)

शाने फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने अमीरे अहले सुन्नत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़्बूआ़ 56 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले **"करामाते फ़ारूक़े आ'ज़म"** सफ़ह़ा 7 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, ह़ामिये सुन्नत, माहिये बिदअ़त मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान में यूं मद्ह़ सराई करते हैं :

ख़ुदा के फ़ज़्ल से मैं हूं गदा फ़ारूक़े आ'ज़म का
ख़ुदा उन का मुह़म्मद मुस्त़फ़ा फ़ारूक़े आ'ज़म का

करम अल्लाह का हर दम नबी की मुझ पे रह़मत है
मुझे है दो जहां में आसरा फ़ारूक़े आ'ज़म का

---

1 .....रसाइले नईमिय्या, दीवाने सालिक, स. 27 ।

पसे सिद्दीक़े अक्बर मुस्त़फ़ा के सब सह़ाबा में
है बेशक सब से ऊंचा मर्तबा फ़ारूक़े आ'ज़म का

गली से उन की शैत़ां दुम दबा कर भाग जाता है
है ऐसा रो'ब ऐसा दबदबा फ़ारूक़े आ'ज़म का

सह़ाबा और अहले बैत की दिल में मह़ब्बत है
ब फ़ैज़ाने रज़ा मैं हूं गदा फ़ारूक़े आ'ज़म का

रहे तेरी अ़त़ा से या ख़ुदा ! तेरी इनायत से
हमारे हाथ में दामन सदा फ़ारूक़े आ'ज़म का

भटक सकता नहीं हरगिज़ कभी वोह सीधे रस्ते से
करम जिस बख़्त वर पर हो गया फ़ारूक़े आ'ज़म का

ख़ुदा की ख़ास रह़मत से मुह़म्मद की इनायत से
जहन्नम में न जाएगा गदा फ़ारूक़े आ'ज़म का

सदा आंसू बहाए जो ग़मे इ़श्क़े मुह़म्मद में
दे ऐसी आंख या रब ! वासित़ा फ़ारूक़े आ'ज़म का

मुझे ह़ज्जो ज़ियारत की सआ़दत अब इनायत हो
वसीला पेश करता हूं ख़ुदा फ़ारूक़े आ'ज़म का

इलाही ! एक मुद्दत से मेरी आंखें तरसती हैं
दिखा दे सब्ज़ गुम्बद वासित़ा फ़ारूक़े आ'ज़म का

शहादत ऐ ख़ुदा "अ़त्त़ार" को दे दे मदीने में
करम फ़रमा इलाही ! वासित़ा फ़ारूक़े आ'ज़म का

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

उन्नीसवां बाब

शाने फ़ारूके़ आ'ज़म

ब ज़बाने मुस्तशरिक़ीन

इस बाब में मुलाहज़ा कीजिये..........

.....सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक तारीख़ साज़ शख़्सिय्यत

.....बड़े बड़े ग़ैर मुस्लिम भी आप की ता'रीफ़ किये बिग़ैर न रह सके।

.....सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म के बारे में ग़ैर मुस्लिमों के तअस्सुरात

.....माईकल एच हार्ट का ख़िराजे तह़सीन

.....स्टेनले लेन पोल का ख़िराजे तह़सीन

.....विलियम म्यूर का ख़िराजे तह़सीन

.....एम. एन रॉय का ख़िराजे तह़सीन

.....ड्यूश वेंलन्दीज़ी फ़ाज़िल का ख़िराजे तह़सीन

.....पंडित हंस राज का ख़िराजे तह़सीन

.....लाला लजपत रॉय का ख़िराजे तह़सीन

.....गांधी का ख़िराजे तह़सीन

शाने फ़ारूके़ आ'ज़म ब ज़बाने मुस्तशरिक़ीन व ग़ैर मुस्लिम लीडर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते गिरामी, पैकरे जलालत, मजमूअ़ए अ़ज़मत और एक तारीख़ साज़ शख़्सिय्यत है। हज़ारों लोग ऐसे गुज़रे कि जिन की शख़्सिय्यत को तारीख़ ने इस त़रह़ बयान किया कि लोगों के सामने सिर्फ़ वोह शख़्सिय्यत ही रही, लोग उसी शख़्सिय्यत के गिर्द घूमते रहे, लेकिन सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शख़्सिय्यत ऐसी है जिस का तज़्किरा पढ़ते ही ऐसे लगता है गोया इस्लाम के हर हर गोशे से किसी ने पर्दा उठा दिया हो। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शख़्सिय्यत किसी एक पहलू की तर्जुमान नहीं, पूरे आ़लमे इस्लाम की तर्जुमान है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शख़्सिय्यत तो वोह है कि जिन की ताईद में क़ुरआने पाक नाज़िल हुवा, जिन के मनाक़िब ख़ुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बयान फ़रमाए, जिन के औसाफ़ ख़ुद सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने बयान फ़रमाए, اَللّٰہُ اَکْبَر जिन के औसाफ़ बयान करने के लिये ख़ुद सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام को भी 950 साल कम हो जाएं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़याते त़य्यिबा किसी अफ़्साने का नाम नहीं बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़याते त़य्यिबा का हर गोशा, हर कारनामा ह़क़ीक़ी, वाके़ई और तारीखे़ इस्लाम का एक अ़ज़ीम बाब है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हर पैग़ाम व इक़्दाम रुश्दो हिदायत का बेहतरीन निसाब है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अक़्वाल व अफ़्आ़ल दीनी व दुन्यवी मह़ासिन का एक बेहतरीन मजमूआ़ हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अ़ज़मतों और रिफ़्अ़तों का एक बहुत बड़ा सुबूत येह भी है अपने तो अपने अग़्यार भी इस्लाम दुश्मनी के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में नज़रानए अ़क़ीदत पेश करने पर मजबूर हुवे। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान में अह़ादीसे मुबारका व फ़रामीने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان व मुख़्तलिफ़ अक़्वाले अइम्मए इस्लाम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام बयान करने के बा'द इस बाब में मुस्तशरिक़ीन व मा'रूफ़ तजज़िया निगारों के वोह अक़्वाल पेश किये जाते हैं जो उन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ता'रीफ़ व मद्ह़ सराई में कहे।

"माईकल एच हार्ट का ख़िराजे तह़सीन"

मशहूर ईसाई मुअर्रिख़ व तजज़िया निगार "*Michael H. Hart*" (माईकल एच हार्ट) ने एक किताब लिखी जिस का नाम है : "*The 100 Ranking of Most Influential People in History*" (या'नी तारीख़ की 100 अहम तरीन शख़्सिय्यात) इस किताब में उस ने पूरी दुन्या की उन सौ शख़्सिय्यात की ह़यात पर मुख़्तसर तब्सेरा किया है जिन्हों ने तारीख़ और दुन्या के निज़ाम को सब से

ज़ियादा मुतअस्सिर करने के साथ साथ इन्सानी तारीख़ और दीगर इन्सानों की रोज़ मर्रा ज़िन्दगी पर भी बहुत गहरा असर डाला। इन सौ शख़्सिय्यात में सब से पहले इस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल मुह़म्मद मुस्त़फ़ा अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र किया और 52 नम्बर पर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आ़शिक़े ह़क़ीक़ी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की ह़याते त़य्यिबा के मुख़्तलिफ़ पहलूओं का तज़किरा किया, चन्द इक़्तिबासात पेशे ख़िदमत हैं :

۞....."उ़मर बिन ख़त्ताब दूसरे और ग़ालिबन अ़ज़ीम तरीन मुस्लिम ख़लीफ़ा थे। येह मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के हम अ़स्र नौजवान थे और मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से बहुत मह़ब्बत करते थे। शहरे मक्का में पैदा हुवे। क़बूले इस्लाम से क़ब्ल उ़मर बिन ख़त्ताब मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के नए मज़हब (दीने इस्लाम) के सख़्त तरीन दुश्मन थे। जब वोह दाइरए इस्लाम में दाख़िल हुवे तो उसी दीने इस्लाम के मज़बूत़ तरीन ह़ामी व मददगार बन गए। उ़मर बिन ख़त्ताब मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के क़रीबी मुशीर भी बन गए और उन की ह़यात में वोह उसी ए'ज़ाज़ के साथ ज़िन्दा रहे।"

۞....."632 ईसवी में पैग़म्बर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) किसी को अपना जा नशीन मुक़र्रर किये बिग़ैर दुन्या से रुख़्सत हुवे। उ़मर बिन ख़त्ताब ने फ़ौरन ही पैग़म्बर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के क़रीबी दोस्त और उन की ज़ौजा के वालिदे गिरामी अबू बक्र सिद्दीक़ के ह़क़्क़े जा नशीनी की ह़िमायत कर दी। उ़मर बिन ख़त्ताब के इस फ़े'ल से सर्द जंग का इम्कान ख़त्म हो गया और उ़मूमी त़ौर पर अबू बक्र सिद्दीक़ को मुसलमानों का अव्वलीन ख़लीफ़ा (पैग़म्बर का जा नशीन) तस्लीम कर लिया गया।"

۞....."अबू बक्र सिद्दीक़ बिलाशुबा एक कामयाब ख़लीफ़ा थे लेकिन वोह दो साल बा'द ही फ़ौत हो गए। उन्हों ने उ़मर बिन ख़त्ताब का नाम अपनी जा नशीनी के लिये मुन्तख़ब कर दिया था। इस त़रह़ एक बार फिर इक़्तिदार के लिये तनाज़ुआ़ का इमकान मुस्तरद हो गया। 634 ईसवी में उ़मर बिन ख़त्ताब ख़लीफ़ा बने और उन की ह़ुकूमत 644 ईसवी तक क़ाइम रही, बा'दे अज़ां एक मजूसी ग़ुलाम ने मदीने में उन पर क़ातिलाना ह़म्ला किया। बिस्तरे मर्ग पर उन्हों ने छे अफ़राद की एक मजलिसे (शूरा) बनाने की तजवीज़ दी, जो उन के जा नशीन का फ़ैसला करेगी यूं एक बार फिर इक़्तिदार के ह़ुसूल के लिये मुसल्लह़ चपक़लिश का ख़ातिमा कर दिया गया।"

۞....."उ़मर बिन ख़त्ताब की दस सालह ख़िलाफ़त के दौरान अ़रबों ने इन्तिहाई अहम फ़ुतूह़ात ह़ासिल कीं। जिस क़दर उ़मर बिन ख़त्ताब की फ़ुतूह़ात अहम हैं इसी क़दर उन की मन्सबे

ख़िलाफ़त पर बर क़रारी भी अहम्मिय्यत की ह़ामिल है। बिलाशुबा उ़मर बिन ख़त्ताब को उस अ़ज़ीम सल्त़नत का इन्तिज़ाम संभालने के लिये जो उन की फ़ौजों ने फ़त्ह़ की थी मख़्सूस ह़िक्मते अ़मली वज़्अ़ करना पड़ी थीं। उन्हों ने फ़ैसला किया कि उन मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों में अ़रब ख़ास अ़स्करी रिआ़यात के साथ रहेंगे और येह कि उन का क़ियाम मक़ामी लोगों से अ़लाह़िदा फ़ौजी शहरों में होगा। जब कि मफ़्तूह़ा लोग मुसलमानों को जिज़्या अदा करेंगे और उन्हें पुर अम्न ह़ालात में रहने दिया जाएगा। ख़ास त़ौर पर उन्हें क़त़अ़न जबरन मुसलमान करने की कोशिश नहीं की जाएगी।"

❁....."उ़मर बिन ख़त्ताब की कामयाबियां मुअस्सिर साबित हुईं। मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के बा'द फ़रोग़े इस्लाम में उ़मर बिन ख़त्ताब का नाम निहायत अहम है। इन तेज़ रफ़्तार फ़ुतूह़ात के बिग़ैर शायद आज इस्लाम का फ़ैलाव इस क़दर मुमकिन न होता। मज़ीद येह कि उस के दौर में मफ़्तूह़ होने वाले अ़लाक़ों में से बेशतर अ़रब तमद्दुन ही का ह़िस्सा बन गए। ज़ाहिर है इन तमाम कामयाबियों के अस्ल मुह़र्रिक तो मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ही थे। लेकिन इस में उ़मर बिन ख़त्ताब के ह़िस्से से सर्फ़े नज़र करना भी एक बड़ी ग़लती होगी।"

❁....."इस बात में कुछ लोगों को ज़रूर तअ़ज्जुब होगा कि मग़रिब में उ़मर बिन ख़त्ताब की शख़्सिय्यत इस त़रह़ मा'रूफ़ नहीं है, ताहम यहां इस फ़ेहरिस्त में इसे "चार्ली मैगनी" और "जूलियस सीज़र" जैसी मश्हूर शख़्सिय्यात से भी बुलन्द मक़ाम दिया गया है। इस की वज्ह येह है कि वोह तमाम फ़ुतूह़ात जो उ़मर बिन ख़त्ताब के दौरे ख़िलाफ़त में वाक़ेअ़ हुईं अपनी वुस्अ़त और पाईदारी में उन तमाम फ़ुतूह़ात की निस्बत कहीं ज़ियादा अहम थीं जो "सीज़र" या "चार्ली मैगनी" की ज़ेरे क़ियादत हुईं।"(1)

"स्टेनले लेन पोल का ख़िराजे तह़सीन

मश्हूर मग़रिबी मुसन्निफ़ "*Stanley Lane Poole*" (स्टेनले लेन पोल) ने इस्लाम और सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर एक किताब लिखी जिस का नाम है "*The prophet & Islam*" (पैग़म्बर और इस्लाम) इस में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के बारे में लिखता है :

"या'नी उ़मर बिन ख़त्ताब त़बीअ़त के बड़े तेज़ थे, बड़े जज़्बाती क़िस्म के इन्सान थे, शुरूअ़ में इस्लाम के शदीद दुश्मन थे लेकिन जब मुसलमान हो गए तो आप ने ख़ुद को इस्लाम का एक मज़बूत़ और बुन्यादी सुतून साबित कर दिया।"(2)

1.....The 100 Ranking of Most Influential People In History, Page 261.
2.....The Prophet & Islam , Page : 31

विलियम म्यूर का ख़िराजे तह़सीन

मशहूर मग़रिबी मुसन्निफ़ व मुअर्रिख़ "*William muir*" (विलियम म्यूर) इस्लाम के बारे में इन्तिहाई दरजे का मुतअ़स्सिब और शदीद दुश्मन था। यू पी का गवर्नर बन कर आया और दो किताबें लिखीं। एक किताब का नाम "*Life of Muhammad*" (ह़याते पैग़म्बर) और दूसरी किताब का नाम "*Caliphate*" (ख़िलाफ़त) है। दोनों किताबें तस्नीफ़ करने का मक़्सद येह था कि ईसाई मुबल्लिग़ीन मुसलमानों से मुनाज़रों में इन कुतुब से मदद लें और फ़ाइदा उठाएं। नसरानिय्यत की इशाअ़त इस का मक़्सदे ह़यात था लेकिन इस्लाम का बुग़्ज़ रखने के बा वुजूद इस ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अ़ज़मत का ए'तिराफ़ किया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ुतूह़ात के बारे में लिखता है :

"अबू बक्र सिद्दीक़ ने अ़रब के मुर्तद्द क़बाइल का ज़ोर तोड़ा। इन के विसाल पर इस्लामी अफ़्वाज ने भी शाम की सरह़द को उ़बूर किया था। जब उ़मर बिन ख़त्ताब ने हुकूमत का आग़ाज़ किया उस वक़्त तमाम अ़रब आप के तसर्रुफ़ में था लेकिन आप ने अपनी फ़िरासत से, अपने सब्रो तह़म्मुल और अपने ही बलबूते पर शाम मिस्र और ईरान पर तसर्रुफ़ ह़ासिल कर लिया और इसी ह़ैसिय्यत में अपनी जान जाने आफ़रीन के सिपुर्द कर दी। आप उस अ़ज़ीम ममलुकत के अमीरुल मोमिनीन थे जिस में बाज़ नत़ीनी हुकूमत और ईरानी सल्त़नत के बा'ज़ उ़म्दा तरीन सूबे शामिल थे।"(1)

येही "*William Muir*" (विलियम म्यूर) अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुख़्तलिफ़ सिफ़ात को बयान करते हुवे लिखता है :

"उ़मर का हर फ़ैसला दानिश व तदब्बुर व दूर अन्देशी के मीज़ान व पैमाने का आईना था। वोह एक आ़म शैख़े अ़रब की मानिन्द किफ़ायत शिआ़र थे। मन्ज़िल पर पहुंचने के लिये उन के ख़िज़्रे राह दो उसूल थे एक तो सादगी और दूसरा फ़र्ज़ शनासी। उन के नज़्मो नसक़ के इम्तियाज़ी ख़द्दो ख़ाल भी दो ही थे एक तो अ़द्ल और दूसरा इख़्लास।"

येही "*William Muir*" (विलियम म्यूर) अपनी किताब "*The caliphate its rise decline and fall*" (ख़िलाफ़त और इस का उ़रूज व ज़वाल) अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुख़्तलिफ़ सिफ़ात को बयान करते हुवे लिखता है :

---

1 .....Caliphate, Page : 190.

"उ़मर बिन ख़त़्त़ाब की ह़यात के चन्द गोशे येह हैं। सादगी और फ़र्ज़ शनासी इन के दो रहनुमा उसूल थे। इन्तिज़ामी मुआ़मलात को संभालने के रौशन तरीन जोहरे ग़ैर जानिब दारी और बे इन्तिहा इख़्लास थे। आप का एह़सासे मा'दिलत (इन्साफ़ क़ाइम करने का एह़सास) बड़ा मज़्बूत़ था। सिपह सालारों और ह़ाकिमों के बाब में आप का इन्तिख़ाब रू रिआ़यत से बिल्कुल पाक था। आप हाथ में दुर्रा ले कर मदीने की गलियों में घूमते थे। मुजरिमों को सरे आ़म सज़ा देते थे इसी वज्ह से येह मुह़ावरा बन गया कि **उ़मर के दुर्रे की हैबत तल्वार से ज़ियादा सख़्त है**। इस के बा वुजूद आप का दिल बहुत नर्म और शफ़ीक़ था। येह ह़क़ीक़त अन गिनत शवाहिद पर मब्नी है। बेवा ख़्वातीन और यतीमों के दुखों का मदावा करना और उन के लिये सहूलतें फ़राहम करना आप का नस्बुल ऐ़न था। एक ही ह़िकायत इन ह़क़ाइक़ को वाज़ेह़ करने के लिये काफ़ी है कि क़ह़्त़ का ज़माना था आप अ़रब में सफ़र कर रहे थे आप की नज़र एक ग़रीब औ़रत और उस के भूके रोते बच्चों पर पड़ी, कैफ़िय्यत येह थी कि आग जल रही थी बच्चे उस के इर्द गिर्द बैठे थे। चुल्हे पर एक बरतन था जो ख़ाली था, उ़मर बिन ख़त़्त़ाब उस से आगाह हुवे। रोटी ख़रीदी, गोश्त ख़रीदा, ज़रूरत मन्द ख़ानदान में आ कर अपने हाथ से गोश्त भूना, शोरबा तय्यार किया और भूके बच्चों को खिलाया बच्चे खा पी कर हंसने और खेलने में मसरूफ़ हो गए उ़मर बिन ख़त़्त़ाब उन्हें इस ख़ुशी की ह़ालत में छोड़ कर दोबारा वापस चले गए।"

"एम, एन रॉय का ख़िराजे तह़सीन"

हिन्द का माया नाज़ मुसन्निफ़ "*M. N. Roy*" (एम एन रॉय) अपनी मश्हूर तस्नीफ़ "*Historical Role Of Islam*" (इस्लाम का तारीख़ी किरदार) में लिखता है :

"रूमा की सल्त़नत जिस की दाग़ बील अगस्तस ने डाली, जांबाज़ तराजिनों ने जिस को वसीअ़ किया उस अक़लीम की वुस्अ़त व अ़ज़्मत, सात सौ साल की अ़ज़ीमुश्शान और रफ़ीउ़ल वक़ार फ़ुतूह़ात का समरा थी, ताहम इस की वुस्अ़त उस अ़रब ह़ुकूमत के चन्द ह़िसिस के बराबर भी न थी जो उ़मर बिन ख़त़्त़ाब के ज़माने में क़ाइम हुई। ह़ालांकि येह अ़रबी ह़ुकूमत सौ साल से कम अ़र्सा में क़ियाम पज़ीर हुई। इस त़रह़ सिकन्दरे आ'ज़म की अक़लीम ख़ुलफ़ाए इस्लाम की सल्त़नत की पिन्हाइयों के एक गोशे के बराबर भी न थी, ईरान की विलादत ने रूमा के अस्लिह़े की तक़रीबन एक हज़ार साल तक कामयाबी से रोक थाम की मगर उसी विलायते फ़ारिसी की गर्दन दस साल के क़लील अ़र्से में **सैफ़ुल्लाह** के सामने इत़ाअ़त के लिये झुक गई।"(1)

1.....Historical Role of Islam, Page : 6.

''*M. N. Roy*'' (एम एन रॉय) अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़त्हे बैतुल मुक़द्दस के मौक़अ़ पर बैतुल मुक़द्दस में दाख़िले के हसीन मन्ज़र को ख़िराजे तह़सीन पेश करते हुवे लिखता है :

''इस्लाम के दूसरे ख़लीफ़ा उमर बिन ख़त्ताब के बैतुल मुक़द्दस में फ़ातिहाना दाख़िले का मन्ज़र येह है कि आप ने मदीनए मुनव्वरा से शाम का सफ़र एक ऊंट पर किया जिस पर दीगर बादशाहों की त़रह़ शाहाना साज़ो सामान के बजाए ऊंट के बालों का बना हुवा एक ख़ैमा, सत्तू और जव का एक थैला, खजूरों का दूसरा थैला, एक चोबी, प्याला और पानी पीने का एक चर्मी कटोरा था।''[1]

''ड्यूश वेलन्दीज़ी फ़ाज़िल का ख़िराजे तह़सीन''

''*Deutsch*'' (ड्यूश) वेलन्दीज़ी फ़ाज़िल अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ुतूहात का सबब बयान करते हुवे लिखता है : ''क़ुरआने मजीद वोह किताब है जिस की इआनत से अ़रबों से सिकन्दरे आ'ज़म रूमा की दुन्या से ज़ियादा दुन्या फ़त्ह़ कर ली, रूमा ने जिस काम को सदियों में किया, अ़रबों (बरादराने इस्लाम या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और आप के फ़ौजियों) ने दस साल में सर अन्जाम दे दिया।''

''पंडित हंसराज का ख़िराजे तह़सीन''

डी ए वी कॉलेज लाहौर का प्रिन्सिपल ''*Pindit Hans Raaj*'' (पंडित हंसराज) अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ुतूहात का सबब बयान करते हुवे लिखता है :

इस्लाम और अ़रबों के उ़रूज का सबब मुह़म्मद साहिब (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की ता'लीम है। (या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो इतने कम अ़र्से में इतने वसीअ़ रक़्बे पर परचमे इस्लाम लहराया इस का सबबे ह़क़ीक़ी सिर्फ़ और सिर्फ़ येह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तरबिय्यत याफ़्ता थे।)

''लाला लजपत रॉय का ख़िराजे तह़सीन''

हिन्दुओं का मुमताज़ फ़ाज़िल ''*Lala Lajpat Roy*'' (लाला लजपत रॉय) अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शख़्सिय्यत को ख़िराजे तह़सीन पेश करते हुवे लिखता है :

---

1 .....Historical Role of Islam, Page : 15.

"हिन्दुस्तान को उ़मर जैसी शख़्सिय्यत की ज़रूरत है।" (येह जुम्ला लाला लजपत रॉय का अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़बरदस्त ख़िराजे तह़सीन है कि इस ने अपने मज़हब की किसी नामवर शख़्सिय्यत का नाम न लिया कि अगर फ़ुलां होता तो हिन्दुस्तान का निज़ाम दुरुस्त हो जाता क्यूंकि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते त़य्यिबा, आप के अ़द्लो इन्साफ़ के येह हिन्दू भी मो'तरिफ़ थे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नस्ली व मज़हबी फ़र्क़ से बाला तर हो कर अपनी सल्त़नत में मुकम्मल इन्साफ़ फ़रमाया इसी वज्ह से लाला लजपत रॉय येह कहने पर मजबूर हो गया।)

"गांधी का ख़िराजे तह़सीन"

हिन्दुओं के "*Mohandas gandhi*" (मोहन दास गांधी) की तक़रीरों से येह बात सामने आती है वोह जितना अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते त़य्यिबा से मुतअस्सिर था इतना किसी और से मुतअस्सिर नहीं था ख़ुसूसन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सादगी को इस ने अपनी ज़िन्दगी के लिये मे'यार बना लिया था। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सादगी व फ़क़ीराना ज़िन्दगी को बयान करते हुवे कहता है : "आओ उ़मर की मिसाली ज़िन्दगी को आईनए तवज्जोह के सामने लाएं क्यूंकि वोह वसीअ़ सल्त़नत के फ़रमां रवा थे मगर उन की ज़िन्दगी एक मुफ़्लिस की ज़िन्दगी थी।"(1)

मोहन दास गांधी ने 27 जुलाई 1937 ईसवी को मक़ामे पूना (हिन्द) में एक तक़रीर की जिस का मौज़ूअ़ सादगी था। इस ने वाज़ेह़ अल्फ़ाज़ों में किसी हिन्दू पंडित या हिन्दुओं की किसी मश्हूर शख़्सिय्यत का नाम न लिया बल्कि उन का नाम ले कर रद किया और शैख़ैने करीमैन या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नाम ले कर उन्हें ख़िराजे तह़सीन पेश किया। वोह कहता है :

"सादगी अरबाबे कॉंग्रेस का ख़ास्सा व इजारा नहीं है मैं रामचन्द्र और कृष्ण का नाम नहीं ले सकता वज्ह येह है कि इन दोनों की शख़्सिय्यतें तारीख़ी शख़्सिय्यतें नहीं हैं। मैं मजबूर हूं कि अबू बक्र और उ़मर के नाम लूं क्यूंकि वोह अ़ज़ीमुश्शान फ़रमा रवां या'नी बेहतरीन हुक्मरान थे मगर उन्हों ने हुक्मरानी के बा वुजूद सादा और फ़क़ीराना ज़िन्दगी बसर की।"(2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1.....Young India 1935 2.....Harigon, 1937

हयाते फ़ारूक़े आ'ज़म तारीख़ के आईने में

583 ईसवी 41 साल क़ब्ले हिजरत	सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आमुल फ़ील के 13 साल बा'द पैदा हुवे।
6 बिअ़्सते नबवी, 614 ईसवी	आप का क़बूले इस्लाम
6 बिअ़्सते नबवी, 614 ईसवी	क़बूले इस्लाम के बा'द ए'लानिय्या इज़्हारे इस्लाम
6 बिअ़्सते नबवी, 614 ईसवी	बारगाहे रिसालत से अ़ज़ीमुश्शान लक़ब "फ़ारूक़" इनायत हुवा।
14 बिअ़्सते नबवी, 622 ईसवी	जुरअत व बहादुरी के साथ मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ ए'लानिय्या और तारीख़ी हिजरत
14 बिअ़्सते नबवी, 622 ईसवी	बा'दे हिजरत मक़ामे क़ुबा में क़ियाम
14 बिअ़्सते नबवी, 622 ईसवी	आप की मदीनए मुनव्वरा में तीसरे नम्बर पर आमद हुई।
1 हिजरी, 622 ईसवी	आप ने मदीनए मुनव्वरा के अत़राफ़ में रिहाइश इख़्तियार फ़रमाई।
1 हिजरी, 622 ईसवी	मुअज़्ज़िन के तक़र्रुर में आप की मुवाफ़िक़त
2 हिजरी, 623 ईसवी	ग़ज़्वए बद्र में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ शिर्कत।
2 हिजरी, 623 ईसवी	आप के दामाद सय्यिदुना ख़ुनैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत
2 हिजरी, 623 ईसवी	ग़ज़्वए बद्र में आप के ग़ुलाम सय्यिदुना मिह्जअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत
2 हिजरी, 623 ईसवी	ग़ज़्वए बद्र में आप के साथ मलाइका की रफ़ाक़त
2 हिजरी, 623 ईसवी	बद्र के क़ैदियों के बारे में आप की राए की क़ुरआने पाक से मुवाफ़िक़त
3 हिजरी, 624 ईसवी	ग़ज़्वए उहुद में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ शिर्कत
3 हिजरी, 624 ईसवी	ग़ज़्वए उहुद में बारगाहे रिसालत से आप को दिफ़ाई जवाब देने का हुक्म
3 हिजरी, 624 ईसवी	अपनी बेटी को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक निकाह़ में दिया।
4 हिजरी, 625 ईसवी	ग़ज़्वए बनू नज़ीर में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ शिर्कत
4 हिजरी, 625 ईसवी	ग़ज़्वए मौइद में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ शिर्कत

5 हिजरी, 625 ईसवी	ग़ज़वए ख़न्दक़ में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ शिर्कत
6 हिजरी, 627 ईसवी	ग़ज़वए हुदैबिय्या में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ शिर्कत
7 हिजरी, 628 ईसवी	ग़ज़वए ख़ैबर में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ शिर्कत
7 हिजरी, 628 ईसवी	सरिय्या (जंगी मुहिम) तरबत में ब हैसिय्यते कमान्डर शिर्कत
8 हिजरी, 629 ईसवी	ग़ज़वए फ़त्हे मक्का में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ शिर्कत
8 हिजरी, 629 ईसवी	शानो शौकत से रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ दुख़ूले मक्कए मुकर्रमा
8 हिजरी, 629 ईसवी	रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का आप को का'बा में मौजूद तसावीर मिटाने का हुक्म
8 हिजरी, 629 ईसवी	ग़ज़वए हुनैन में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ शिर्कत
8 हिजरी, 629 ईसवी	सरिय्या (जंगी मुहिम) "ज़ातुस्सलासिल" में शिर्कत
9 हिजरी, 630 ईसवी	ग़ज़वए तबूक के मौक़ए पर अपना आधा माल बारगाहे रिसालत में पेश कर दिया।
9 हिजरी, 630 ईसवी	ग़ज़वए ताइफ़ में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ शिर्कत
11 हिजरी, 632 ईसवी	"जैशे उसामा बिन ज़ैद" में शिर्कत
11 हिजरी, 632 ईसवी	ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअ़त
11 हिजरी, 632 ईसवी	जम्ए़ क़ुरआन के लिये सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को मश्वरा दिया।
24 हिजरी, 643 ईसवी	मुख़्तलिफ़ वसाया व नसीहतों के बा'द मन्सबे शहादत पर फ़ाइज़ हुवे।

वाज़ेह रहे कि मज़्कूरा तमाम तवारीख़ कुतुबे मो'तबिरा और (*Hijri Date Converter*) की मदद से ली गई हैं, चूंकि हिजरी और ईसवी साल के अय्याम मुख़्तलिफ़ होते हैं इसी सबब से तारीख़ों में बा'ज़ औक़ात शदीद इख़्तिलाफ़ भी वाक़ेअ़ हो जाता है, इस लिये मज़्कूरा तमाम तवारीख़ में कमी बेशी मुमकिन है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللّٰه

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

ماخذ و مراجع

نمبر شمار	نام کتاب	مؤلف/مصنف/ متوفی	مطبوعات
	قرآن پاک، ترجمہ قرآن وتفاسیر		
1	قرآن مجید	کلام الٰہی	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۲ھ
2	کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۲ھ
3	تفسیر مقاتل بن سلیمان	ابوالحسن مقاتل بن سلیمان بن بشیر الازدی، متوفی ۱۵۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
4	الکشف والبیان	ابواسحاق احمد بن محمد بن ابراہیم الثعلبی النیسابوری، متوفی ۴۲۷ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۲ھ
5	تفسیر البغوی	امام ابومحمد حسین بن مسعود فراء بغوی، متوفی ۵۱۶ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۴ھ
6	المحرر الوجیز	قاضی ابومحمد بن غالب بن عطیہ اندلسی، متوفی ۵۴۶ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۳ھ
7	زادالمسیر	امام ابوفرج عبدالرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	المکتب الاسلامی بیروت ۱۴۰۴ھ
8	التفسیر الکبیر	امام فخرالدین محمد بن عمر بن حسین رازی، متوفی ۶۰۶ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۰ھ
9	تفسیر ابن عبدالسلام	عبدالعزیز بن عبدالسلام بن ابی القاسم بن الحسن السلمی، متوفی ۶۶۰ھ	دارابن حزم بیروت ۱۴۲۰ھ
10	تفسیر قرطبی	ابوعبداللہ محمد بن احمد انصاری قرطبی، متوفی ۶۷۱ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۹ھ
11	تفسیر مدارک	ابوالبرکات عبداللہ بن احمد بن محمود النسفی، متوفی ۷۱۰ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۲۱ھ
12	تفسیر خازن	علاءالدین علی بن محمد بغدادی، متوفی ۷۴۱ھ	المطبعۃ المیمنیہ مصر ۱۳۱۷ھ
13	البحر المحیط	ابوحیان محمد بن یوسف بن علی بن یوسف اندلسی، المتوفی ۷۴۵ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ
14	تفسیر ابن کثیر	عمادالدین اسماعیل بن عمر ابن کثیر دمشقی، متوفی ۷۷۴ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
15	تفسیر البیضاوی	ابوسعید ناصرالدین عبداللہ شیرازی بیضاوی، متوفی ۷۹۱ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۲۰ھ
16	تفسیر نظم الدرر	ابراہیم بن عمر البقاعی متوفی ۸۸۵ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۵ھ
17	الدر المنثور	امام جلال الدین بن ابوبکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالفکر بیروت ۱۹۹۳ء
18	روح البیان	مولی الروم شیخ اسماعیل حقی بروسی، متوفی ۱۱۳۷ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۰۵ھ
19	روح المعانی	ابوالفضل شہاب الدین سید محمود آلوسی، متوفی ۱۲۷۰ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۰ھ
20	خزائن العرفان	صدرالافاضل مفتی نعیم الدین مرادآبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
21	نورالعرفان	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	پیر بھائی کمپنی کراچی
22	انوار الحرمین علی تفسیر الجلالین	مفتی دعوتِ اسلامی محمد فاروق بن عبدالرشید المدنی، متوفی ۱۴۲۷ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ

نمبر	کتاب	مصنف	مطبوعہ
	علوم القرآن		
23	فضائل القرآن	ابوعبید قاسم بن سلام بن عبد اللہ الہروی البغدادی، المتوفی ۲۲۴ھ	دار ابن کثیر، دمشق
24	علم القرآن	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۲۸ھ
25	عجائب القرآن مع غرائب القرآن	مولانا عبد المصطفےٰ اعظمی، متوفی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۲۶ھ
	کتب احادیث		
26	الموطا	امام مالک بن انس اصبحی المدنی، متوفی ۱۷۹ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
27	مصنف عبد الرزاق	امام ابوبکر عبد الرزاق بن ہمام بن نافع صنعانی، متوفی ۲۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
28	مصنف ابن ابی شیبة	حافظ عبد اللہ بن محمد بن ابی شیبہ کوفی عبسی، متوفی ۲۳۵ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
29	مصنف ابن ابی شیبة	حافظ عبد اللہ بن محمد بن ابی شیبہ کوفی عبسی، متوفی ۲۳۵ھ	المجلس العلمی بیروت ۱۴۲۶ھ
30	الادب المفرد	امام ابوعبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	تاشقند ازبکستان ۱۳۹۰ھ
31	مسند امام احمد	ابوعبد اللہ امام احمد بن محمد بن حنبل الشیبانی، متوفی ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
32	فضائل الصحابة	ابوعبد اللہ امام احمد بن محمد بن حنبل الشیبانی، متوفی ۲۴۱ھ	موسسۃ الرسالہ بیروت ۱۴۲۰ھ
33	سنن الدارمي	امام حافظ عبد اللہ بن عبد الرحمن دارمی، متوفی ۲۵۵ھ	دار الکتاب العربی بیروت ۱۴۰۷ھ
34	صحیح البخاري	امام ابوعبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹
35	صحیح مسلم	امام ابوحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دار المغنی عرب شریف ۱۴۱۹ھ
36	سنن ابن ماجه	امام ابوعبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۷۳ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
37	سنن ابی داود	امام ابوداؤد سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۱ھ
38	سنن الترمذی	امام ابوعیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
39	مسند البزار	امام ابوبکر احمد عمرو بن عبد الخالق بزار، متوفی ۲۹۲ھ	مکتبۃ العلوم والحکم مدینہ منورہ ۱۴۲۴ھ
40	سنن النسائی	امام ابوعبد الرحمن احمد بن شعیب نسائی، متوفی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۶ھ
41	السنن الکبری	امام ابوعبد الرحمٰن احمد بن شعیب نسائی، متوفی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۱ھ
42	مسند ابی یعلی	شیخ الاسلام ابویعلی احمد بن علی بن مثنی موصلی، متوفی ۳۰۷ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
43	تهذیب الآثار	ابوجعفر محمد بن جریر الطبری، متوفی ۳۱۰ھ	مطبع المدنی القاہرہ مصر
44	صحیح ابن خزیمة	امام محمد بن اسحاق بن خزیمہ نیشاپوری، متوفی ۳۱۱ھ	المکتب الاسلامی بیروت ۱۴۱۲ھ
45	نوادر الاصول	ابوعبد اللہ محمد بن علی بن حسن حکیم ترمذی، متوفی ۳۲۰ھ	مکتبہ امام بخاری القاہرہ مصر ۱۴۲۹ھ
46	شرح معاني الآثار	امام ابوجعفر احمد بن محمد طحاوی، متوفی ۳۲۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ
47	صحیح ابن حبان	ابوحاتم محمد بن حبان تمیمی الدارمی، متوفی ۳۵۴ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۷ھ

48	المعجم الصغیر	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۰۳ھ
49	المعجم الکبیر	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۲ھ
50	المعجم الاوسط	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۰ھ
51	سنن الدارقطنی	ابوالحسن علی بن عمر الدارقطنی البغدادی متوفی ۳۸۵ھ	مدینۃ الاولیاء ملتان
52	المستدرک	امام ابوعبد اللہ محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری، متوفی ۴۰۵ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۱۸ھ
53	حلیۃ الاولیاء	حافظ ابونعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
54	شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
55	السنن الکبری	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
56	تاریخ بغداد	حافظ ابوبکر علی بن احمد خطیب بغدادی، متوفی ۴۶۳ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۷ھ
57	المتفق و المفترق	حافظ ابوبکر علی بن احمد خطیب بغدادی، متوفی ۴۶۳ھ	دارالقادری دمشق ۱۴۱۷ھ
58	شرح السنۃ	امام ابومحمد حسین بن مسعود بغوی، متوفی ۵۱۶ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
59	تاریخ ابن عساکر	امام علی بن حسن المعروف ابن عساکر، متوفی ۵۷۱ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۵
60	جامع الاصول	امام مبارک بن محمد شیبانی المعروف بابن اثیر جزری، متوفی ۶۰۶ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
61	جامع المسانید و السنن	عماد الدین اسماعیل بن عمر ابن کثیر دمشقی، متوفی ۷۷۴ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۵ھ
62	مجمع الزوائد	حافظ نورالدین علی بن ابی بکر ہیثمی، متوفی ۸۰۷ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۲ھ
63	اتحاف الخیرۃ المہرۃ	امام احمد بن ابی بکر بن اسماعیل بوصیری، متوفی ۸۴۰ھ	مکتبۃ الرشد ریاض ۱۴۱۹ھ
64	التلخیص الحبیر	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
65	جمع الجوامع	امام جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
66	الجامع الصغیر	امام جلال الدین بن ابوبکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۵ھ
67	کنز العمال	علامہ علی متقی بن حسام الدین ہندی برہان پوری، متوفی ۹۷۵ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
68	موسوعۃ آثار الصحابۃ	ابوعبد اللہ سید کسروی حسن	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
		کتب شروح احادیث	
69	کشف المشکل	امام ابوفرج عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دارالوطن ریاض ۱۴۱۸ھ
70	شرح صحیح مسلم	امام ابوزکریا محی الدین بن شرف نووی، متوفی ۶۷۶ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۰۱ھ
71	فتح الباری	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۵ھ
72	عمدۃ القاری	امام بدرالدین ابومحمد محمود بن احمد عینی، متوفی ۸۵۵ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۸ھ
73	اللآلی المصنوعۃ	امام جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۷ھ

74	ارشاد الساری	شہاب الدین احمد بن محمد قسطلانی، متوفی ۹۲۳ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۱ھ
75	مرقاۃ المفاتیح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
76	فیض القدیر	علامہ محمد عبد الرءوف مناوی، متوفی ۱۰۳۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ
77	شرح الزرقانی علی الموطا	محمد زرقانی بن عبد الباقی بن یوسف، متوفی ۱۱۲۲ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۱۷ھ
78	حاشیۃ علی ابن ماجۃ	ابو الحسن نور الدین محمد بن عبد الہادی السندی، المتوفی ۱۱۳۸ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
79	المسوی شرح موطا	شاہ ولی اللہ محدث دہلوی، متوفی ۱۱۷۶ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۰۳ھ
80	مرآۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
	کتب عقائد و کلام		
81	الرد علی الجہمیۃ	ابو سعید عثمان بن سعید الدارمی السجستانی، متوفی ۲۸۰ھ	دار ابن الاثیر کویت ۱۴۰۵ھ
82	السنۃ	امام ابو بکر احمد بن عمرو ابن ابی عاصم، متوفی ۲۸۷ھ	دار ابن حزم بیروت ۱۴۲۳ھ
83	شرح اصول اعتقاد اہل السنۃ	ابو القاسم ہبۃ اللہ بن الحسن اللالکائی، متوفی ۴۱۸ھ	دار البصیرۃ اسکندریہ مصر
84	الصواعق المحرقۃ	حافظ احمد بن حجر مکی ہیتمی، متوفی ۹۷۳ھ	مدینۃ الاولیاء ملتان
85	منح الروض الازہر	علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	دار البشائر الاسلامیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
86	عقیدۂ ختم نبوت	مفتی محمد امین عطاری، متوفی ۱۴۳۶ھ	ادارہ تحفظ عقائد اسلامیہ ۱۴۲۶ھ
	کتب فقہ		
87	کتاب الخراج	ابو یوسف یعقوب بن ابراہیم الانصاری، متوفی ۱۸۲ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۰۲ھ
88	کتاب الاموال	ابو عبید قاسم بن سلام بن عبد اللہ الہروی البغدادی، المتوفی ۲۲۴ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۰۶ھ
89	رد المحتار مع الدر المختار	محمد امین ابن عابدین شامی، متوفی ۱۲۵۲ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
90	فتاویٰ رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن لاہور ۱۴۱۲ھ
91	بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
	کتب تصوف		
92	الزہد	شیخ الاسلام عبد اللہ بن مبارک المروزی، متوفی ۱۸۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
93	الزہد	ابو عبد اللہ امام احمد بن محمد بن حنبل الشیبانی، متوفی ۲۴۱ھ	دار الغد الجدید بیروت ۱۴۲۶ھ
94	البعث	عبد اللہ بن ابو داود سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
95	الموسوعۃ لابن ابی الدنیا	عبد اللہ بن محمد البغدادی المعروف بابن ابی الدنیا، المتوفی ۲۸۱ھ	المکتبۃ العصریہ بیروت ۱۴۲۲ھ
96	المجالسۃ وجواہر العلم	ابو بکر احمد بن مروان الدینوری المالکی، متوفی ۳۳۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
97	کتاب الدعاء	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ

98	اللمع فی التصوف	ابونصر عبد اللہ بن علی سراج طوسی، متوفی ۳۷۸ھ	دار الکتب الحدیثہ مصر ۱۳۸۰ھ
99	جامع بیان العلم وفضلہ	ابو عمر یوسف عبد اللہ بن محمد بن عبد البر قرطبی، متوفی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۸ھ
100	العمدۃ فی محاسن شعر الہ و آدابہ	ابو علی الحسن بن رشیق القیر وانی الازدی، متوفی ۴۶۳ھ	دار الجیل بیروت
101	کشف المحجوب	علی ہجویری المعروف داتا گنج بخش متوفی ۵۰۰ھ	مرکز الاولیاء لاہور
102	مکاشفۃ القلوب	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
103	إحیاء علوم الدین	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار صادر بیروت ۲۰۰۰ء
104	لباب الاحیاء	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
105	احیاء العلوم	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
106	بحر الدموع	امام ابو الفرج عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دار الفجر للتراث دمشق ۱۴۲۴ھ
107	عیون الحکایات	امام ابو الفرج عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۲۸ھ
108	بستان الواعظین	امام ابو الفرج عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
109	الروض الفائق	الشیخ شعیب حریفیش، متوفی ۸۱۰ھ	کوئٹہ پاکستان ۱۴۱۶ھ
110	حکایتیں اور نصیحتیں	الشیخ شعیب حریفیش، متوفی ۸۱۰ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
111	المنبہات	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	پشاور پاکستان
112	شرح الصدور	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند ۱۴۲۳ھ
113	الزواجر عن اقتراف الکبائر	ابو العباس احمد بن محمد بن علی بن حجر ہیتمی متوفی ۹۷۴ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۱۹ھ
114	الحدیقۃ الندیۃ	عبد الغنی بن اسماعیل نابلسی، متوفی ۱۱۴۳ھ	پشاور پاکستان ۱۹۷۷ء
115	إصلاحِ اعمال	عبد الغنی بن اسماعیل نابلسی، متوفی ۱۱۴۳ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۳۱ھ
116	اتحاف السادۃ المتقین	محمد بن محمد بن عبد الرزّاق المعروف بمرتضی الزبیدی، متوفی ۱۲۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
117	إسلامی زندگی	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
118	الزہد وقصر العمل	الشیخ اسعد محمد سعید الصاغرجی	مکتبۃ الغزالی دمشق ۱۴۱۷ھ
119	نیکی کی دعوت	امیر اہلسنت بانی دعوت اسلامی مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
کتب سیر و تاریخ و مغازی			
120	فتوح الشام	علامہ محمد بن عمر بن واقدی، متوفی ۲۰۷ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۶ھ
121	السیرۃ النبویۃ	ابو محمد عبد الملک بن ہشام، متوفی ۲۱۳ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۱ھ
122	الطبقات الکبری	محمد بن سعد بن منیع ہاشمی، متوفی ۲۳۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
123	اخبار مکۃ	ابو الولید محمد بن عبد اللہ بن احمد الازرقی، متوفی ۲۵۰ھ	مکہ مکرمہ عرب شریف ۱۴۲۵ھ

124	تاریخ المدینۃ المنورۃ	ابوزید عمر بن شبۃ النمیری البصری، متوفی ۲۶۲ھ	دار الفکر قم ایران ۱۴۱۰ھ
125	المعارف	ابو محمد عبد اللہ بن مسلم المعروف بابن قتیبہ، متوفی ۲۷۶ھ	باب المدینہ کراچی ۱۳۹۶ھ
126	انساب الاشراف	احمد بن یحیی بن جابر بن داود البلاذری، متوفی ۲۷۹ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۷ھ
127	تاریخ واسط	اسلم بن سہل الرزاز الواسطی، متوفی ۲۹۲ھ	مکتبۃ العلوم والحکم مدینہ منورۃ ۱۴۰۶ھ
128	فضائل الصحابۃ	امام ابو عبد الرحمن احمد بن شعیب نسائی، متوفی ۳۰۳ھ	دار السلام مصر ۱۴۲۸ھ
129	تاریخ الطبری	ابو جعفر محمد بن جریر الطبری، متوفی ۳۱۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۰۷ھ
130	الاوائل	ابو ہلال الحسن بن عبد اللہ بن سہل العسکری، متوفی ۳۹۵ھ	دار البشیر مصر ۱۴۰۸ھ
131	فضائل الخلفاء الراشدین	حافظ ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ	دار البخاری مدینہ منورہ
132	دلائل النبوۃ	حافظ ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ	المکتبۃ العصریہ بیروت ۱۴۲۰ھ
133	دلائل النبوۃ	امام ابو بکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۳ھ
134	الشفا	قاضی ابو الفضل عیاض مالکی، متوفی ۵۴۴ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند
135	مناقب امیر المومنین عمر بن الخطاب	امام ابو الفرج عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دار العقیدہ للتراث بیروت
136	المنتظم	امام ابو الفرج عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	مکہ مکرمہ عرب شریف ۱۴۱۵ھ
137	عمر بن عبد العزیز	امام ابو الفرج عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۰۳ھ
138	تلقیح فحوم اھل الاثر	امام ابو الفرج عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	شرکۃ دار الارقم بیروت ۱۹۹۷ھ
139	الکامل فی التاریخ	ابو الحسن علی بن محمد بن اثیر جزری متوفی ۶۳۰ھ	مکتبۃ الآداب قاہرہ مصر ۱۴۱۸ھ
140	الریاض النضرۃ	امام شیخ ابو جعفر احمد طبری، متوفی ۶۹۴ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
141	تاریخ الاسلام	امام محمد بن احمد بن عثمان ذہبی، متوفی ۷۴۸ھ	دار الکتاب العربی بیروت ۱۴۰۷ھ
142	البدایۃ والنہایۃ	عماد الدین اسماعیل بن عمر ابن کثیر دمشقی، متوفی ۷۷۴ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۸ھ
143	تاریخ الخلفاء	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	باب المدینہ کراچی
144	وفاء الوفاء	نور الدین ابو الحسن علی بن عبد اللہ الشافعی السمہودی، متوفی ۹۱۱ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت
145	السیرۃ الحلبیۃ	برہان الدین علی بن ابراہیم بن احمد الحلبی، متوفی ۱۰۴۴ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۲ھ
146	مدارج النبوۃ	شیخ محقق عبد الحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند
147	نسیم الریاض	شہاب الدین احمد بن محمد خفاجی، متوفی ۱۰۶۹ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
148	شرح الزرقانی علی المواھب	محمد زرقانی بن عبد الباقی بن یوسف، متوفی ۱۱۲۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۷ھ

149	سیرت سید الانبیاء	مولانا مخدوم محمد ہاشم ٹھٹھوی، متوفی ۱۱۷۴ھ	مظہر علم لاہور ۱۴۲۱ھ
150	ازالۃ الخفاء	شاہ ولی اللہ محدث دہلوی، متوفی ۱۱۷۶ھ	باب المدینہ کراچی
151	فیوض الحرمین	شاہ ولی اللہ محدث دہلوی، متوفی ۱۱۷۶ھ	مدرسہ عزیزی دھلی، ہند
152	انوار جمال مصطفٰے	والد اعلیٰ حضرت مولانا نقی علی خان، متوفی ۱۲۹۷ھ	شبیر برادرز لاہور
153	حجۃ اللہ علی العالمین	امام یوسف بن اسماعیل نبہانی، متوفی ۱۳۵۰ھ	مرکز اہل سنت برکات رضا ہند ۱۴۲۱ھ
154	جامع کرامات اولیاء	امام یوسف بن اسماعیل نبہانی، متوفی ۱۳۵۰ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند ۱۴۲۲ھ
155	حیاتِ اعلیٰ حضرت	ملک العلماء ظفر الدین بہاری، متوفی ۱۳۸۲ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
156	کراماتِ صحابہ	مولانا عبد المصطفیٰ اعظمی، متوفی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
157	کراماتِ فاروقِ اعظم	امیر اہلسنت بانیٔ دعوت اسلامی مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی
158	فیضانِ صدیق اکبر	شعبہ فیضان صحابہ واہل بیت، المدینۃ العلمیہ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
159	مولانا نقی علی خان	ڈاکٹر محمد حسن	ادارہ تحقیقات امام احمد رضا ۱۴۲۶ھ
160	ذکر اُویس	مولانا مفتی محمد فیض احمد اویسی، متوفی ۱۴۳۱ھ	مکتبہ اُویسیہ بہاولپور ۱۴۰۵ھ
161	خواجہ اُویس قرنی صحابی یا تابعی؟	مولانا مفتی محمد فیض احمد اویسی، متوفی ۱۴۳۱ھ	حلقہ اُویسیہ رضویہ ملتان
162	تذکرہ محدث سورتی	خواجہ رضی حیدر	سورتی اکیڈمی کراچی
		کتب اسماء الرجال	
163	کتاب الضعفاء	ابو جعفر محمد بن عمرو بن موسیٰ بن حماد العقیلی، متوفی ۳۲۲ھ	دار الصمیعی ریاض ۱۴۲۰ھ
164	کتاب الثقات	ابو حاتم محمد بن حبان تمیمی الدارمی، متوفی ۳۵۴ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
165	معرفۃ الصحابۃ	حافظ ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ
166	الاستیعاب	ابو عمر یوسف عبد اللہ بن محمد بن عبد البر قرطبی، متوفی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۵ھ
167	صفۃ الصفوۃ	امام ابو فرج عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۷ھ
168	اسد الغابۃ	ابو الحسن علی بن محمد المعروف بابن الاثیر الجزری، متوفی ۶۳۰ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۱۷ھ
169	اللباب فی تھذیب الانساب	ابو الحسن علی بن محمد المعروف بابن الاثیر الجزری، متوفی ۶۳۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۰ھ
170	تھذیب الاسماء واللغات	امام ابو زکریا محی الدین بن شرف نووی، متوفی ۶۷۶ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۶ھ
171	سیر اعلام النبلاء	امام محمد بن احمد بن عثمان ذہبی، متوفی ۷۴۸ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۷ھ
172	تذکرۃ الحفاظ	امام محمد بن احمد بن عثمان ذہبی، متوفی ۷۴۸ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ

173	الوافی بالوفیات	صلاح الدین خلیل بن ایبک بن عبد اللہ الصفدی متوفی ٧٦٤ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت ١٤٢٠ھ
174	تہذیب التہذیب	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ٨٥٢ھ	دارالفکر بیروت ١٤١٥ھ
175	الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ٨٥٢ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ١٤١٥ھ
176	الایثار بمعرفۃ رواۃ الآثار	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ٨٥٢ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ١٤١٢ھ
177	لسان المیزان	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ٨٥٢ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت ١٤١٦ھ
178	انوار علماء اہلسنت سندھ	سید محمد زین العابدین شاہ راشدی	زاویہ پبلشرز لاہور ٢٠٠٦ء
179	تذکرۂ علماء ہند	رحمان علی	باب المدینہ کراچی [illegible]
کتب لغت معاجم وبلدان			
180	فتوح البلدان	احمد بن یحییٰ بن جابر بن داود البلاذری، متوفی ٢٧٩ھ	موسسۃ المعارف بیروت ١٤٠٧ھ
181	معجم البلدان	الامام شہاب الدین ابی عبد اللہ الحموی، متوفی ٦٢٦ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت
182	الدرۃ الثمینۃ	ابو عبد اللہ محمد بن محمود المعروف بابن النجار، متوفی ٦٤٣ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند
متفرق کتب			
183	البیان و التبیین	ابوعثمان عمرو بن بحر المعروف بالجاحظ، متوفی ٢٥٥ھ	مکتبۃ الخانجی قاہرہ مصر ١٤١٧ھ
184	النقود الاسلامیۃ	ابوالعباس تقی الدین احمد بن علی مقریزی، متوفی ٨٤٥ھ	قسطنطنیہ ترکی ١٢٩٨ھ
185	کف الرعاع عن محرمات اللھو و السماع	حافظ احمد بن حجر مکی ہیتمی، متوفی ٩٧٤ھ	مکتبۃ القرآن قاہرہ مصر
186	حجۃ اللہ البالغۃ	شاہ ولی اللہ محدث دہلوی، متوفی ١١٧٦ھ	باب المدینہ کراچی
187	فضائل دعا	والد اعلیٰ حضرت مولانا نقی علی خان، متوفی ١٢٩٧ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ١٤٣٠ھ
188	انوار آفتاب صداقت	مولانا قاضی فضل احمد چشتی نقشبندی لدھیانوی، متوفی	کتب خانہ سمنانی ہند
189	ذوق نعت	مولانا حسن رضا خان، متوفی ١٣٢٠ھ	باب المدینہ کراچی ١٩٩٣ء
190	رسائل نعیمیہ	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ١٣٩١ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
191	ملفوظات اعلیٰ حضرت	مولانا مصطفےٰ رضا خان، متوفی ١٤٠٢ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ١٤٣٠ھ
192	اردو دائرہ معارف اسلامیہ	باہتمام دانش گاہ لاہور	مرکز الاولیاء لاہور ١٤٠٩ھ
193	نصاب المنطق	شعبہ درسی کتب، المدینۃ العلمیہ	مکتبۃ المدینہ کراچی ١٤٣٠ھ
194	سخن رضا	صوفی محمد اول قادری رضوی سنبھلی	مرکز الاولیاء لاہور

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेशकर्दा कुतुबो रसाइल

शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत

(उर्दू कुतुब)

01....राहे खुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (رَادُّ الْقَحْطِ وَالْوَبَاء بِدَعْوَةِ الْجِيْرَانِ وَمُوَاسَاةِ الْفُقَرَاء) (कुल सफ़ह़ात : 40)

02....करन्सी नोट के शरई अह़कामात (كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم فِيْ اَحْكَامِ قِرْطَاسِ الدَّرَاهِم) (कुल सफ़ह़ात : 199)

03....फ़ज़ाइले दुआ (اَحْسَنُ الْوِعَاء لِآدَابِ الدُّعَاء مَعَهٗ ذَيْلُ الْمُدَّعَاء لِاَحْسَنِ الْوِعَاء) (कुल सफ़ह़ात : 326)

04....ईदैन में गले मिलना कैसा ? (وِشَاحُ الْجِيْدفِيْ تَحْلِيْلِ مُعَانَقَةِ الْعِيْد) (कुल सफ़ह़ात : 55)

05....वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ (اَلْحُقُوق لِطَرْحِ الْعُقُوْق) (कुल सफ़ह़ात : 125)

06....अल मल्फ़ूज़ अल मा'रूफ़ बिह मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत (मुकम्मल चार ह़िस्से) (कुल सफ़ह़ात : 561)

07....शरीअ़त व त़रीक़त (مَقَالُ الْعُرَفَاء بِإِعْزَازِشَرْعٍ وَّعُلَمَاء) (कुल सफ़ह़ात : 57)

08....विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (اَلْيَاقُوْتَةُ الْوَاسِطَة) (कुल सफ़ह़ात : 60)

09....मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ व नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

10....आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (إِظْهَارُ الْحَقِّ الْجَلِي) (कुल सफ़ह़ात : 100)

11....हुक़ूक़ुल इ़बाद कैसे मुआ़फ़ हों (اَعْجَبُ الْاِمْدَاد) (कुल सफ़ह़ात : 47)

12....सुबूते हिलाल के त़रीक़े (طُرُقُ إِثْبَاتِ هِلَال) (कुल सफ़ह़ात : 63)

13....अवलाद के हुक़ूक़ (مَشْعَلَةُ الْاِرْشَاد) (कुल सफ़ह़ात : 31)

14....ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदुल ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

15....अल वज़ीफ़तुल करीमा (कुल सफ़ह़ात : 46)

16....कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान (कुल सफ़ह़ात : 1185)

(अ़रबी कुतुब)

17, 18, 19, 20, 21.....جَدُّ الْمُمْتَارِعَلٰى رَدِّالْمُحْتَار (المجلد الاول والثانی والثالث والرابع والخامس)

(कुल सफ़हात : 570, 672, 713, 650, 483)

22..... اَلتَّعْلِيْقُ الرَّضَوِی عَلٰی صَحِيْحِ الْبُخَارِی (कुल सफ़हात : 458)

23..... كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم (कुल सफ़हात : 74)

24..... اَلْاِجَازَاتُ الْمَتِيْنَة (कुल सफ़हात : 62)

25... اَلزَّمْزَمَةُ الْقَمَرِيَّة (कुल सफ़हात : 93)

26.....اَلْفَضْلُ الْمَوْهَبِی (कुल सफ़हात : 46)

27.....تَمْهِيْدُ الْاِيْمَان (कुल सफ़हात : 77)

28.....اَجْلَى الْاِعْلَام (कुल सफ़हात : 70)

29.....اِقَامَةُ الْقِيَامَة (कुल सफ़हात : 60)

30..... जद्दुल मुमतार जिल्द 6, 7 (कुल सफ़हात : 722, 723)

शो'बए तराजिमे कुतुब (अ़रबी से उर्दू तराजुम)

01..... अल्लाह वालों की बातें (حِلْيَةُالْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء) पहली जिल्द (कुल सफ़हात : 896)

02.....मदनी आक़ा के रोशन फ़ैसले (اَلْبَاهِرفِی حُکْمِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ بِالْبَاطِنِ وَالظَّاهِر) (कुल सफ़हात : 112)

03.....सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा....? (تَمْهِيْدُ الْفَرْش فِی الْخِصَالِ الْمُوْجِبَةِ لِظِلِّ الْعَرْش) (कुल सफ़हात : 28)

04.....नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (قُرَّةُالْعُيُوْن وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن) (कुल सफ़हात : 142)

05.....नसीहतों के मदनी फूल ब वसीलए अहादीसे रसूल (اَلْمَوَاعِظ فِی الْاَحَادِيْثِ الْقُدْسِيَّة) (कुल सफ़हात : 54)

06.....जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (اَلْمَتْجَرُ الرَّابِح فِیْ ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِح) (कुल सफ़हात : 743)

07.....इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की वसिय्यतें (وَصَايَااِمَامِ اَعْظَمعَلَيْهِ الرَّحْمَة) (कुल सफ़हात : 46)

08.....जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द अव्वल) (اَلزَّوَاجِرعَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر) (कुल सफ़हात : 853)

09.....जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द दुवुम) (اَلزَّوَاجِرعَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر) (कुल सफ़हात : 1012)

10.....फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया (كَشْفُ النُّوْرعَنْ اَصْحَابِ الْقُبُوْر) (कुल सफ़हात : 144)

11.....दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी (اَلزُّهْدوَقَصْرُالْاَمَل) (कुल सफ़हात : 85)

12.....राहे इल्म (تَعْلِيْمُ الْمُتَعَلِّم طَرِيْقَ التَّعَلُّم) (कुल सफ़हात : 102)

शो'बए दर्सी कुतुब

01....مراح الارواح مع حاشیۃضیاء الاصباح (कुल सफ़्हात : 241)

02....الاربعين النووية فى الأحاديث النبوية (कुल सफ़्हात : 155)

03....اتقان الفراسة شرح ديوان الحماسه (कुल सफ़्हात : 325)

04....اصول الشاشی مع احسن الحواشی (कुल सफ़्हात : 299)

05....نورالايضاح مع حاشيةالنورو الضياء (कुल सफ़्हात : 392)

06....شرح العقائدمع حاشيةجمع الفرائد (कुल सफ़्हात : 384)

07....الفرح الكامل على شرح مئة عامل (कुल सफ़्हात : 158)

08....عناية النحو فى شرح هداية النحو (कुल सफ़्हात : 280)

09....صرف بهائى مع حاشية صرف بنائى (कुल सफ़्हात : 55)

10....دروس البلاغة مع شموس البراعة (कुल सफ़्हात : 241)

11....مقدمةالشيخ مع التحفةالمرضية (कुल सफ़्हात : 119)

12....نزهة النظر شرح نخبة الفكر (कुल सफ़्हात : 175)

13....نحو ميرمع حاشية نحو منير (कुल सफ़्हात : 203)

14....تلخيص اصول الشاشى (कुल सफ़्हात : 144)

15....نصاب النحو (कुल सफ़्हात : 288)

16....نصاب اصولِ حديث (कुल सफ़्हात : 95)

17....نصاب التجويد (कुल सफ़्हात : 79)

18....المحادثة العربية (कुल सफ़्हात : 101)

19....تعريفاتِ نحوية (कुल सफ़्हात : 45)

20....خاصيات ابواب (कुल सफ़्हात : 141)

21....شرح مئة عامل (कुल सफ़्हात : 44)

22....نصاب الصرف (कुल सफ़्हात : 343)

23....نصاب المنطق (कुल सफ़्हात : 168)

24....انوارالحديث (कुल सफ़्हात : 466)

25....نصاب الادب (कुल सफ़्हात : 184)

26....تفسير الجلالين مع حاشيةانوار الحرمين (कुल सफ़्हात : 364)

शो'बए तख़रीज

01....सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن का इश्क़े रसूल (कुल सफ़हात : 274)

02....बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (हिस्सा : 1 ता 6, कुल सफ़हात : 1360)

03....बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (हिस्सा : 7 ता 13) (कुल सफ़हात : 1304)

04....बहारे शरीअ़त जिल्द सिवुम (हिस्सा : 14 ता 20) (कुल सफ़हात : 1332)

05....अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन (कुल सफ़हात : 422)

06....गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़हात : 244)

07....बहारे शरीअ़त, (सोलहवां हिस्सा, कुल सफ़हात 312)

08....तह़क़ीक़ात (कुल सफ़हात : 142)

09....अच्छे माहोल की बरकतें (कुल सफ़हात : 56)

10....जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़हात : 679)

11....इल्मुल क़ुरआन (कुल सफ़हात : 244)

12....सवानहे करबला (कुल सफ़हात : 192)

13....अरबईने ह़नफ़िय्या (कुल सफ़हात : 112)

14....किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़हात : 64)

15....मुन्तख़ब ह़दीसें (कुल सफ़हात : 246)

16....इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़हात : 170)

17....आईनए क़ियामत (कुल सफ़हात : 108)

18 ता 24....फ़तावा अहले सुन्नत (सात हिस्से)

25.... ह़क़ व बातिल का फ़र्क़ (कुल सफ़हात : 50)

26....बिहिश्त की कुन्जियां (कुल सफ़हात : 249)

27....जहन्नम के ख़तरात (कुल सफ़हात : 207)

28....करामाते सहाबा (कुल सफ़हात : 346)

29....अख़्लाक़ुस्सालिहीन (कुल सफ़हात : 78)

30....सीरते मुस्तफ़ा (कुल सफ़हात : 875)

31....आईनए इब्रत (कुल सफ़हात : 133)

32....उम्महातुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ (कुल सफ़हात : 59)

33....जन्नत के त़लबगारों के लिये मदनी गुलदस्ता (कुल सफ़हात : 470)

34....फ़ैज़ाने नमाज़ (कुल सफ़हात : 49)

35....19 दुरूदो सलाम (कुल सफ़हात : 16)

36....फ़ैज़ाने यासीन शरीफ़ मअ़ दुआए निस्फ़ शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म (कुल सफ़हात : 20)

﴾शो'बए फ़ैज़ाने सहाबा﴿

﴾शो'बए इस्लाही़ कुतुब﴿

अ़न क़रीब आने वाली कुतुब

«शो'बए अमीरे अहले सुन्नत»

30....हैरोइंची की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
31....नौ मुस्लिम की दर्दभरी दास्तान (कुल सफ़हात : 32)
32....मदीने का मुसाफ़िर (कुल सफ़हात : 32)
33....ख़ौफ़नाक दांतों वाला बच्चा (कुल सफ़हात : 32)
34....फ़िल्मी अदाकार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
35....सास बहू में सुल्ह का राज़ (कुल सफ़हात : 32)
36....क़ब्रिस्तान की चुड़ेल (कुल सफ़हात : 24)
37....फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 101)
38....हैरत अंगेज़ हादिसा (कुल सफ़हात : 32)
39....मॉडर्न नौ जवान की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
40....क्रिस्चैन का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 32)
41....सलातो सलाम की आ़शिक़ा (कुल सफ़हात : 33)
42....क्रिस्चैन मुसलमान हो गया (कुल सफ़हात : 32)
43....म्यूज़िकल शो का मतवाला (कुल सफ़हात : 32)
44....नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग (कुल सफ़हात : 32)
45....आंखों का तारा (कुल सफ़हात : 32)
46....वली से निस्बत की बरकत (कुल सफ़हात : 32)
47....बा बरकत रोटी (कुल सफ़हात : 32)
48....इग़्वाशुदा बच्चों की वापसी (कुल सफ़हात : 32)
49....मैं नेक कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)
50....शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)
51....बद किरदार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
52....खुश नसीबी की किरनें (कुल सफ़हात : 32)
53....नाकाम आ़शिक़ (कुल सफ़हात : 32)
54....मैं ने वीडियो सेन्टर क्यूं बन्द किया ? (कुल सफ़हात : 32)
55....चमकती आंखों वाले बुर्ज़ुग (कुल सफ़हात : 32)
56....इल्मो हिक्मत के 125 मदनी फूल (तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ 5) (कुल सफ़हात : 102)
57....हुक़ूक़ुल इबाद की एहतियातें (तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ 6) (कुल सफ़हात : 47)
58....नादान आ़शिक़ (कुल सफ़हात : 32)
59....सीनेमा घर का शैदाई (कुल सफ़हात : 32)
60....गूंगे बहरों के बारे में सुवाल जवाब, क़िस्त़ पन्जुम (कुल सफ़हात : 23)
61....डान्सर ना'त ख़्वान बन गया (कुल सफ़हात : 32)
62....गुलूकार कैसे सुधरा ? (कुल सफ़हात : 32)
63....नशे बाज़ की इस्लाह़ का राज़ (कुल सफ़हात : 32)
64....काले बिच्छू का ख़ौफ़ (कुल सफ़हात : 32)
65....ब्रेक डान्सर कैसे सुधरा ? (कुल सफ़हात : 32)
66....अ़जीबुल ख़ल्क़त बच्ची (कुल सफ़हात : 32)
67....बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़हात : 32)
68....चल मदीना की सआ़दत मिल गई (कुल सफ़हात : 32)

अ़न क़रीब आने वाली कुतुब

01....अजनबी का तोहूफ़ा
02....जेल का गवय्या

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ









ISBN 978-969-631-352-6
0101917

MC 1286

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6 ☎ 011-23284560
❁ अहमदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदाबाद-1, गुजरात ☎ 9327168200
❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र ☎ 09022177997
❁ हैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना ☎ (040) 2 45 72 786

Web : www.dawateislami.net / E- mail : maktabadelhi@gmail.com